Downloaded from https:// www.studiestoday.com

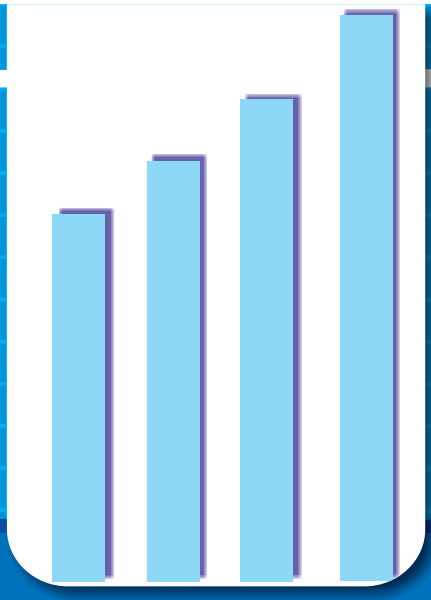

कक्षा 12

लेखाशास्त्र

माध्यमिक शिक्षा बोर्ड राजस्थान, अजमेर

लेखाशास्त्र

कक्षा 12

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

लेखाशास्त्र

कक्षा 12

माध्यमिक शिक्षा बोर्ड राजस्थान, अजमेर

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

पाठ्यपुस्तक निर्माण समिति

लेखाशास्त्र

कक्षा 12

संयोजक

डॉ. राधेश्याम अग्रवाल
पूर्व संयुक्त निदेशक,
कॉलेज शिक्षा राजस्थान, जयपुर

लेखकगण

प्रोफेसर जी. सोरल
अधिष्ठाता एवं संकायाध्यक्ष
विश्वविद्यालय वाणिज्य एवं प्रबन्ध अध्ययन महाविद्यालय
मोहनलाल सुखाड़िया विश्वविद्यालय, उदयपुर

डॉ. सुनील कुमार गर्ग
वरिष्ठ प्रवक्ता, लेखाशास्त्र
बी.बी.डी. राजकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय
चिमनपुरा (शाहपुरा) जयपुर

डॉ. पुष्पकान्त शाकद्वीपी
सह आचार्य, प्रबन्ध अध्ययन संकाय
पेसेफिक विश्वविद्यालय, उदयपुर

रोशनलाल तोतला
पूर्व अतिरिक्त जिला शिक्षा अधिकारी
प्रधानाचार्य, श्री महेश शिक्षा सदन उ.मा.विद्यालय
भीलवाड़ा

कृष्णकान्त पानेरी
प्रधानाचार्य
राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय
सलूम्बर (उदयपुर)

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

पाठ्यक्रम समिति

लेखाशास्त्र

कक्षा 12

संयोजक

प्रोफेसर जी. सोरल
अधिष्ठाता एवं संकायाध्यक्ष
विश्वविद्यालय वाणिज्य एवं प्रबन्ध अध्ययन महाविद्यालय
मोहनलाल सुखाड़िया विश्वविद्यालय, उदयपुर

लेखकगण

डॉ. अशोक गुप्ता
वरिष्ठ प्राध्यापक, लेखा एवं व्यावसायिक सांख्यिकी
राजकीय वाणिज्य महाविद्यालय, कोटा

डॉ. पृथ्वीराज मीणा
राजकीय महाविद्यालय,
गंगापुर सिटी (सवाई माधोपुर)

डॉ. कैलाश चन्द्र शर्मा
राजकीय महाविद्यालय,
चौमूं (जयपुर)

कृष्णकांत पानेरी
प्रधानाचार्य
राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय,
सलूम्बर (उदयपुर)

प्रकाश चन्द्र पाठक
प्रधानाचार्य, राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय,
बालाकुण्डा, कोटा

मोतीलाल गोयल
प्रधानाचार्य, राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय,
सांतपुर, तहसील–आबूरोड (सिरोही)

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

प्रस्तावना

माध्यमिक शिक्षा बोर्ड, राजस्थान, अजमेर 10 + 2 योजना के अन्तर्गत कक्षा 12 के वाणिज्य वर्ग के लेखाशास्त्र विषय के लिए स्वीकृत नवीनतम पाठ्यक्रमानुसार पुस्तक का प्रथम संस्करण पाठकों के समक्ष प्रस्तुत करते हुए हमें अत्यन्त प्रसन्नता का अनुभव हो रहा है।

लेखाशास्त्र वाणिज्य अध्ययन का एक महत्वपूर्ण अंग है। प्राचीन काल में लेखाशास्त्र का क्षेत्र अत्यन्त सीमित था परन्तु व्यापार एवं उद्योग, परिवहन, बैंकिंग, बीमा आदि के लिए लेखांकन एक अनिवार्य आवश्यकता बन गया है। अतः वाणिज्य वर्ग के विद्यार्थियों के लिए लेखाशास्त्र का गहन अध्ययन करना आवश्यक है। इसके अतिरिक्त वर्तमान में उच्च अध्ययन की विभिन्न शाखाओं का विस्तार व्यापक रूप से हो रहा है। इन तथ्यों को ध्यान में रखते हुए बोर्ड के नये पाठ्यक्रम में निर्दिष्ट अध्यायों का समावेश किया गया हैं। उसी अनुरूप लेखाशास्त्र की इस पुस्तक की रचना की गई हैं। प्रस्तुत पुस्तक की प्रमुख विशेषताएं निम्न प्रकार हैं–

1. पाठ्यक्रम से सम्बन्धित सम्पूर्ण सामग्री का समावेश तथा विषय वस्तु में सामंजस्य रखने का प्रयास किया गया है।
2. विद्यार्थियों में विषय के प्रति रुचि उत्पन्न करने एवं विषय की व्यापकता को ध्यान में रखते हुए छोटे–छोटे उदाहरणों के माध्यम से लेखांकन के सैद्धान्तिक पहलुओं को समझाया गया है।
3. लेखांकन के व्यावहारिक पहलूओं को समझने के लिए सरल से कठिन के क्रम में पर्याप्त उदाहरणों का समावेश विस्तृत कार्यशील टिप्पणियों सहित किया गया है।
4. प्रत्येक अध्याय के अन्त में विद्यार्थियों के अभ्यासार्थ बोर्ड के नवीन निर्देशानुसार बहुचयनात्मक, अति लघूत्तरात्मक, लघूत्तरात्मक, निबन्धात्मक तथा आंकिक प्रश्नों का पर्याप्त संख्या में समावेश किया गया है।
5. तकनीकी शब्दों को अंग्रेजी भाषा में भी लिखा गया है।
6. सीनियर सैकेण्डरी की पूर्व परीक्षाओं के प्रश्न–पत्रों में से भी प्रश्नों का चयन किया गया है।
7. पुस्तक को यथासम्भव त्रुटि रहित बनाने का प्रयास किया गया है।
8. स्थानाभाव व प्रस्तुतिकरण की सरलता हेतु इस पुस्तक में कतिपय स्थानों पर निर्धारित लेखा प्रारूप में हल नहीं दिये गये हैं किन्तु विद्यार्थियों को निर्धारित प्रारूपों का ही उपयोग करना होगा।
9. भारतीय चार्टर्ड लेखापाल संस्थान द्वारा जारी किये गये अनिवार्य लेखा मानकों के निर्देशों का भी यथास्थान पालन किया गया है।

अन्त में, हम अपने समस्त सहयोगियों, शुभचिन्तकों एवं परिजनों के प्रति कृतज्ञता ज्ञापित करते हैं जिनके मार्गदर्शन एवं शुभकामनाओं से यह कार्य सम्पन्न हो सका। माध्यमिक शिक्षा बोर्ड, राजस्थान, के अध्यक्ष प्रो. बी. एल. चौधरी के कुशल मार्गदर्शन एवं नेतृत्व में यह कार्य सम्पन्न हो सका, एतदर्थ हम आपके आभारी है।

हमें पूर्ण विश्वास है कि हमारा यह प्रयास लेखाशास्त्र के ज्ञान–पिपासु विद्यार्थियों के लिए उपयोगी होगा। अध्ययन, अध्यापन व लेखन क्रिया अनन्त व अनवरत है। अतः शिक्षक बन्धुओं एवं विद्यार्थियों से अनुरोध है कि वे समय–समय पर अपने सकारात्मक सुझाव देकर पुस्तक को परिमार्जित करने में हमें सहयोग प्रदान करें।

लेखकगण

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

लेखाशास्त्र (ACCOUNTANCY)

समय 3.15 घण्टे | पूर्णांक–80

	अंक
भाग–(क)	
1. साझेदारी का सामान्य परिचय	
2. नये साझेदार का प्रवेश	
3. साझेदारी का अवकाश ग्रहण एवं मृत्यु पर लेखे	
4. साझेदारी फर्म का समापन	25
5. कम्पनी खाते, अंश एवं ऋण पत्रों का निर्गमन	
6. कम्पनी के वित्तीय विवरण परिचय	12
7. संयुक्त साहस खाते	7
8. प्रेषण खाता	8
9. गैर व्यापारिक संस्थाओं तथा पेशेवर व्यक्तियों के लेखे	8
भाग–(ख)	
1. वित्तीय विवरणों का विश्लेषण	7
2. अनुपात विश्लेषण	9
3. लेखाशास्त्र में नैतिकता	4
अथवा	
भाग–(ग)	
1. इलैक्ट्रॉनिक स्प्रैडशीट का लेखांकन में प्रयोग	10
2. कम्प्यूटरीकृत लेखांकन पद्धति	5
3. डेटाबेस मैनेजमेंट सिस्टम	5

नोट : खण्ड–ख अथवा ग में से एक का चयन करना है।

Details of the Syllabus

भाग–(क)

1. साझेदारी का सामान्य परिचय– अर्थ, आवश्यकताएं, साझेदारी के प्रकार, साझेदारी संलेख, संलेख के अभाव में सर्वमान्य नियम, साझेदारों के पूंजी खाते, स्थिर पूँजी पद्धति एवं परिवर्तनशील पूँजी पद्धति, पूँजी पर ब्याज की गणना, आहरण पर ब्याज की गणना, माह की प्रथम, अन्तिम एवं मध्य दिनांक से तथा गुणनफल विधि से, लाभों का बंटवारा, नये साझेदार को लाभ की गारन्टी, साझेदारी खाते बंद करने से पूर्व एवं खाते बंद करने के पश्चात समायोजन : एकल प्रविष्टि एवं प्रविष्टियों द्वारा, लाभ–हानि समायोजन खाता।

2. नये साझेदार का प्रवेश – नये साझेदार के अधिकार, लाभ–हानि विभाजन अनुपात, त्याग अनुपात, ख्याति का अर्थ एवं परिभाषा, ख्याति के प्रकार, ख्याति का मूल्यांकन एवं लेखांकन (गुप्त ख्याति सहित), अवितरित लाभ हानियों का बंटवारा, सम्पत्ति एवं दायित्वों का पुनर्मूल्यांकन, सम्पत्ति एवं दायित्वों के पुस्तक मूल्य में परिवर्तन न करने पर लेखे, पूँजी का समायोजन : नये साझेदार की पूँजी के आधार पर पुराने साझेदारों की पूँजी का समायोजन एवं पुराने साझेदारों की पूँजी के आधार पर नये साझेदार की पूँजी का निर्धारण, प्रवेश के बाद स्थिति विवरण, वर्तमान साझेदारों के लाभ विभाजन अनुपात में परिवर्तन एवं परिवर्तन के प्रभावों का लेखा।

3. साझेदारी का अवकाश ग्रहण एवं मृत्यु पर लेखे– समस्याएं एवं उनका लेखांकन, साझेदार के अवकाश ग्रहण करने या मृत्यु होने पर देय राशि का निर्धारण, देय राशि का भुगतान, फायदे का अनुपात, नया लाभ–हानि विभाजन अनुपात, ख्याति का लेखांकन, अवितरित लाभ एवं हानियों का बंटवारा, सम्पत्ति एवं दायित्वों का पुनर्मूल्यांकन, अवकाश/मृत्यु तक साझेदार को पूँजी पर ब्याज, पारिश्रमिक, लाभ में हिस्सा, संयुक्त बीमा पॉलिसी एवं पृथक–पृथक बीमा पॉलिसी की दशा में समायोजन (समर्पण मूल्य सहित), मृतक साझेदार के उत्तराधिकारी का पूंजी खाता एवं लेखे, देय राशि के भुगतान की विधियां– एकमुश्त भुगतान, किश्तों में भुगतान व वार्षिक विधि द्वारा भुगतान, किसी साझेदार के अवकाश ग्रहण या मृत्यु पर देय राशि का निस्तारण न करने पर धारा–37 के प्रावधान।

4. साझेदारी फर्म का समापन– फर्म के समापन के प्रकार, फर्म एवं साझेदारी के समापन में अन्तर, वसूली खाते एवं पुनर्मूल्यांकन खाते में अन्तर, फर्म के समापन पर की जाने वाली लेखांकन–(i) वसूली खाता, (ii) बैंक एवं रोकड़ खाता, (iii) साझेदारों के पूँजी खाते (iv) अन्य आवश्यक खाते।

सम्पत्ति एवं दायित्वों का हस्तान्तरण, दायित्वों का भुगतान, पुस्तकों में दर्ज नहीं हुई सम्पत्ति एवं दायित्वों का लेखा, साझेदार के दिवालिया होने पर लेखे (गार्नर बनाम मर्रे नियम सहित)

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

5. कम्पनी लेखे : **अंश एवं ऋण पत्रों का निर्गमन– अंश निर्गमन** : अंशों के प्रकार, अंश पूँजी के प्रकार एवं चिट्ठे में प्रकटीकरण। **अंश निर्गमन की प्रक्रिया** : अंश निर्गमन– सम मूल्य व प्रीमियम पर, रोकड़ के अतिरिक्त अन्य प्रतिफल में अंश निर्गमन, बकाया मांग, अग्रिम मांग, अधिकार अंश, स्वेट समता अंश, **ऋण पत्र का निर्गमन** : ऋण पत्र का अर्थ, प्रकार, अंश व ऋण पत्र में अंतर, ऋण पत्र का निर्गमन–सम मूल्य, बट्टा, प्रीमियम एवं समपार्श्विक प्रतिभूति के रूप में, निर्गमन पर बट्टा या हानि को अपलिखित करना, ऋण पत्र पर ब्याज का लेखांकन, चिट्ठे में प्रकटीकरण।

6. कम्पनी के वित्तीय विवरण परिचय–कम्पनी वित्तीय विवरण परिचय तथा उनमें दर्शायी जाने वाली विभिन्न मदों का अर्थ, लाभ–हानि विवरण का प्रारूप एवं इसे तैयार करने के लिए सामान्य निर्देश, चिट्ठा/स्थिति विवरण का प्रारूप एवं इसे तैयार करने के लिए सामान्य निर्देश।

7. संयुक्त साहस खाते–संयुक्त साहस का अर्थ, विशेषतायें, संयुक्त साहस व साझेदारी में अंतर, संयुक्त साहस सम्बन्धी व्यवहारों के लेखांकन की विधियां : **(i)** संयुक्त साहस का लेखा करने हेतु पृथक पुस्तकें रखना, **(ii)** पृथक लेखा पुस्तकें नहीं रखना–प्रत्येक सह साहसी द्वारा केवल स्वयं के व्यवहारों का लेखा करना, प्रत्येक सह साहसी द्वारा सभी व्यवहारों का लेखा करना।

8. प्रेषण खाता– प्रेषण का अर्थ, विशेषताएं, प्रेषण से सम्बंधी शब्दावली, सूचनार्थ बीजक व बीजक में अन्तर, प्रेषण तथा विक्रय में अंतर, प्रेषण व संयुक्त साहस में अंतर, प्रेषण सम्बंधी व्यवहारों का लेखा, प्रेषणी के पास बिना बिके स्टॉक का मूल्यांकन, प्रेषण पर भेजे माल की हानि : सामान्य व असामान्य, क्षतिग्रस्त माल, प्रेषणी की लापरवाही के कारण हानि, स्टॉक के बाजार मूल्य में कमी, आंशिक रुप से क्षतिग्रस्त माल की मरम्मत, क्षतिग्रस्त माल का प्रेषणी द्वारा विक्रय, बीजक मूल्य पर माल का प्रेषण व लेखा, प्रेषणी को लाभ में हिस्सा या विशेष कमीशन, प्रेषण का संयुक्त साहस में परिवर्तन।

9. गैर व्यापारिक संस्थाओं तथा पेशेवर व्यक्तियों के लेखे– परिचय, प्रयुक्त अभिलेख, सदस्यता रजिस्टर, स्टॉक रजिस्टर व रोकड़ बही, विशिष्ट मदें, **प्राप्ति एवं भुगतान खाता** : अर्थ, तैयार करने की विधि व बनाना, प्राप्ति एवं भुगतान खाता तथा रोकड़ बही में अंतर, **आय व्यय खाता** : अर्थ, तैयार करने की विधि व बनाना, चिट्ठा तैयार करना, प्राप्ति एवं भुगतान खाता व आय व्यय खाते में अंतर, प्राप्ति व भुगतान खाता एवं आय व्यय खाते से प्रारम्भिक व अन्तिम चिट्ठा तैयार करना, आय व्यय खाते एवं चिट्ठे से प्राप्ति एवं भुगतान खाता बनाना।

भाग–(ख)

1. वित्तीय विवरणों का विश्लेषण– प्रस्तावना, वित्तीय विवरणों का अर्थ, परिभाषा, उद्देश्य, प्रकृति विशेषताएं, उपयोगिता एवं सीमाएं। **वित्तीय विवरणों का विश्लेषण की प्रक्रिया** : वित्तीय विवरणों का विश्लेषण की तकनीकें, तुलनात्मक वित्तीय विवरण, समानाकार वित्तीय विवरण, प्रवृति विश्लेषण, अनुपात विश्लेषण।

2. अनुपात विश्लेषण– अनुपात विश्लेषण का अर्थ, अनुपातों की अभिव्यक्ति, उद्देश्य या महत्व, सीमाएं, अनुपातों के प्रयोग में सावधानियां, **अनुपातों का वर्गीकरण** : संरचनात्मक वर्गीकरण, कार्यात्मक वर्गीकरण, **अग्रलिखित के प्रमुख अनुपातों की गणना** : तरलता अनुपात, शोधन क्षमता अनुपात, क्रियाशीलता अनुपात, लाभदायकता अनुपात एवं विनियोग विश्लेषण अनुपात।

3. लेखाशास्त्र में नैतिकता– परिचय, नैतिकता की अवधारणा एवं अर्थ, स्वभाव, स्रोत, नैतिकता एवं पेशेवर लेखाकार, **लेखांकन में नैतिकता** : रोकड़ प्राप्ति के सम्बंध में, रोकड़ भुगतान के सम्बंध में, माल के सम्बंध में, अन्य सम्पत्तियों व दायित्वों के सम्बन्ध में दिखावटी लेनदेन।

अथवा

भाग–(ग)

1. इलैक्ट्रॉनिक स्प्रैडशीट का लेखांकन में प्रयोग : अवधारणा, उपयोगिता, विशेषताएं, पैरोल तैयार करना, तालिका, ग्राफ, फार्मूले, कर की गणना, ऋण पर ब्याज व किस्त की राशि की गणना, ह्रास की गणना, वित्तीय पूर्वानुमान।

2. कम्प्यूटरीकृत लेखांकन पद्धति : पद्धति की स्थापना की प्रक्रिया, लेखांकन सूचना प्रणाली, मानवीय व कम्प्यूटर लेखा प्रणाली में अंतर, विशेषाएं एवं सीमाएं, मूल संरचना सॉफ्टवेयर के प्रकार, कोडिंग एवं खातों का अनुक्रम, डेटा : लाभ–हानि खाता एवं चिट्ठा।

3. डेटाबेस मैनेजमेंट सिस्टम : उद्भव, अवधारणा, विशेषताएं, संरचना, लाभ, तत्व प्रकार,, व्यावसायिक उपयोग, तत्व–सारणी, क्वैरी एवं प्रतिवेदन (एम.एस.एक्सेस), विभिन्न लेखांकन सूचनाएं उत्पन्न करना, एस.क्यू.एल.।

निर्धारित पुस्तकें :

लेखाशास्त्र – मा.शि.बोर्ड, राज., अजमेर द्वारा प्रकाशित।

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

अनुक्रमणिका

	अध्याय	पृष्ठ
	भाग–क	
1.	साझेदारी का सामान्य परिचय (General Introduction of Partnership)	1–29
2.	नये साझेदार का प्रवेश (Admission of a New Partner)	30–94
3.	साझेदार का अवकाश ग्रहण एवं मृत्यु पर लेखे (Accounting for Retirement & Death of Partner)	95–156
4.	फर्म का समापन (Dissolution of Firm)	157–177
5.	कम्पनी लेखे : अंशों व ऋण पत्रों का निर्गमन (Company Accounts : Issue of Shares & Debentures)	178–227
6.	कम्पनी के वित्तीय विवरण परिचय (Introduction of Financial Statements of Company)	228–254
7.	संयुक्त साहस खाते (Joint Venture Accounts)	255–279
8.	प्रेषण खाते (Consignment Accounts)	280–304
9.	गैर व्यापारिक संस्थाओं तथा पेशेवर व्यक्तियों के लेखे (Accounting for Non Trading Organisations & Professional Persons)	305–346
	भाग–ख	
10.	वित्तीय विवरणों का विश्लेषण (Analysis of Financial Statements)	347–378
11.	अनुपात विश्लेषण (Ratio Analysis)	379–410
12.	लेखाशास्त्र में नैतिकता (Ethics in Accounting)	411–416
	अथवा	
	भाग–ग	
13.	इलेक्ट्रॉनिक स्प्रेडशीट का लेखांकन में प्रयोग (Application of Electronic Spreadsheet in Accounting)	417–437
14.	कम्प्यूटरीकृत लेखांकन पद्धति (Computerised Accounting System)	438–455
15.	डेटाबेस मैनेजमेन्ट सिस्टम (Database Managment System)	456–475

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

1

साझेदारी का सामान्य परिचय
(General Introduction of Partnership)

अध्ययन उद्देश्य

इस अध्याय का अध्ययन करने के पश्चात्, आप यह समझने योग्य हो जाते हैः

- साझेदारी का अर्थ, परिभाषा, आवश्यकता, विशेषतायें व प्रकार
- साझेदारी संलेख का अर्थ, विषय–वस्तु, अभाव में लागू होने वाले नियम
- साझेदारों के पूँजी खाते, स्थिर परिवर्तनशील विधि से बनाना, अन्तर करना
- साझेदारों में लाभों का विभाजन तथा लाभ–हानि नियोजन खाता
- पूँजी तथा आहरणों पर विभिन्न स्थितियों के अन्तर्गत ब्याज का परिकलन व लेखा
- साझेदारी फर्म के बन्द हुए खातों का समायोजन
- साझेदार को न्यनूतम लाभ का आश्वासन या गारण्टी का समायोजन

साझेदारी का अर्थ और परिभाषा (Meaning & Definition of Partnership)

साझेदारी से सम्बंधित प्रावधान भारतीय साझेदारी अधिनियम 1932 में दिये गये है। भारतीय साझेदारी अधिनियम 1 अक्टूबर 1932 को लागू हुआ जो जम्मू कश्मीर को छोडकर सम्पूर्ण भारत पर लागू होता है। इस अधिनियम के लागू होने से पूर्व साझेदारी से संबंधित प्रावधान भारतीय संविदा (अनुबंध) अधिनियम 1872 में दिये गये थे।

साझेदारी का आशय व्यावसायिक संगठन के ऐसे स्वरूप से है जिसमें दो या दो से अधिक व्यक्ति स्वेच्छा से किसी वैधानिक व्यापार को चलाने के लिए सहमत होते है। व्यवसाय में पूँजी लगाते है, प्रबंधकीय योग्यता का सामूहिक प्रयोग करते है तथा लाभों को आपस में बांटते है।

सर फ्रेडरिक पालाक (**Sir Fredrick pollock**) के अनुसार "साझेदारी उन व्यक्तियों के बीच का संबंध है जिन्होंने सबके द्वारा अथवा सबकी ओर से उनमें से किसी के द्वारा किये जाने वाले व्यापार के लाभों में हिस्सा बंटाने के लिए ठहराव किया है।" भारतीय साझेदारी अधिनियम 1932 की धारा 4 के अनुसार "साझेदारी उन व्यक्तियों के मध्य पारस्परिक संबंध है जो किसी ऐसे व्यवसाय के लाभों को बांटने के लिए सहमत हुए है जिसका संचालन उन सभी के द्वारा या उन सभी की ओर से किसी एक के द्वारा किया जाता है।" साझेदारी में जो व्यक्ति शामिल होते है व्यक्तिगत रूप से साझेदार कहलाते हैं और सामूहिक रूप से फर्म कहलाते है। जिस नाम से साझेदारी का व्यवसाय किया जाता है, उसे फर्म का नाम कहा जाता है।

साझेदारी की आवश्यकता (Need of Partnership)

सीमित पूँजी, सीमित प्रबंध, क्षमता व चातुर्य, अनिश्चित अस्तित्व आदि एकाकी व्यापार की कमियों को दूर करने के लिए साझेदारी का उद्भव हुआ है। पूँजी, कार्यकुशलता, अनुभव की पूर्ति के लिए साझेदारी की स्थापना की जाती है। वास्तव में यह विकेंद्रित साधनों का केंद्रीयकरण है जैसे कहीं पर पूँजी है तो कहीं पर प्रतिभा। संक्षेप में साझेदारी की आवश्यकता एकाकी व्यापार की कमियों को दूर करने के लिए हुई हैं।

साझेदारी की विशेषताएँ (Characteristics of Partnership)

साझेदारी में निम्नलिखित विशेषताएं होती हैं –

1. दो या दो से अधिक व्यक्ति का होना (Two or More than Two Persons) : साझेदारी की स्थापना के लिए कम से कम दो व्यक्तियों का होना आवश्यक है क्योंकि कोई भी अकेला व्यक्ति स्वयं का 1. साझेदार नही हो सकता। साथ ही ऐसे व्यक्ति अनुबंध करने की क्षमता रखते हो । अतः भारतीय अनुबंध अधिनियम 1872 के अनुसार एक अवयस्क, पागल व कानून द्वारा अयोग्य घोषित व्यक्ति फर्म में साझेदार के रूप में शामिल नहीं हो सकते है। इसी विशेषता के आधार पर यदि भविष्य में साझेदारों की संख्या घटकर एक रह जाये तो साझेदारी स्वतः समाप्त हो जाती है।

भारतीय साझेदारी अधिनियम में साझेदारों की अधिकतम संख्या का कहीं उल्लेख नहीं किया गया है । कम्पनी अधिनियम की धारा 464 के अनुसार एक साझेदारी संस्था में साझेदारो की अधिकतम संख्या वह होगी जो निर्धारित की जायेगी, जो 100 से अधिक नहीं होगी। लेकिन कम्पनी (विविध) नियम 2014 के नियम 10 के अंतर्गत यह संख्या 50 तक सीमित कर दी गयी हैं।

2. साझेदारों के मध्य समझौता या अनुबंध होना (Agreement Among Partners): – साझेदारी का जन्म समझौते द्वारा होता है अतः साझेदारों के मध्य समझौता होना आवश्यक है । समझौता लिखित अथवा मौखिक हो सकता है लेकिन भविष्य में किसी भी विवाद से बचने के लिए लिखित समझौता उचित रहता है। भारतीय अनुंबध अधिनियम की धारा 5 के अनुसार

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

''साझेदारी का जन्म अनुबंध से होता है किसी स्थिति के कारण नही'' बिना ठहराव के साझेदारी का जन्म नहीं हो सकता है। केवल दो पक्षकारों द्वारा मिलकर कारोबार करने मात्र से वे साझेदार नही बन जाते हैं। इसी प्रकार साझेदारी का जन्म कानून के प्रभाव से तथा उत्तराधिकार से भी नही होता है । यह तो केवल ठहराव से ही उत्पन्न होता है।

3. लाभों का विभाजन (sharing of profits):– साझेदारी का प्रमुख उद्देश्य लाभ कमाना व उसे साझेदारों के मध्य बांटना हैं। कोई भी संस्था जिसका उद्देश्य लाभ कमाना नही हो अर्थात परोपकार करना हो, कानूनी रूप से साझेदारी नहीं हो सकती है। साझेदार का लाभ में हिस्सा होना महत्वपूर्ण है, परन्तु हानि में हिस्सा होना आवश्यक नहीं है। जैसे अवयस्क साझेदार का केवल फर्म के लाभों में हिस्सा होता है हानियों में नही। विपरीत अनुबंध के अभाव में हानियों को भी लाभों के अनुपात में बांटा जाता है।

4. व्यवसाय का होना (carrying on a business) :– साझेदारी के गठन का उद्देश्य किसी वैध व्यवसाय को चलाना होना चाहिए। व्यवसाय शब्द में प्रत्येक व्यापार, धंधा व पेशा (Trade, Vocation & Profession) शामिल है। यदि किसी भी संस्था का गठन धार्मिक या सामूहिक कार्यो के लिए किया जाता है तब उसे साझेदारी नही माना जाता है ।

5. व्यवसाय का संचालन सभी के द्वारा या उन सभी की और से किसी एक द्वारा किया जा सकता है (Business carried on by all or any of them acting for all) :– कानूनी रूप से व्यवसाय के संचालन में सभी साझेदार भाग ले सकते हैं परन्तु व्यवसाय का संचालन उन सभी की सहमति से कोई भी साझेदार कर सकता है। क्योंकि प्रत्येक साझेदार फर्म का ऐजेन्ट भी होता है और स्वामी भी। ऐजेन्ट इसलिए क्योंकि वह अपने कार्यो सें अन्य साझेदारों को बाध्य कर सकता है और स्वामी इसलिए क्योंकि वह स्वयं अन्य साझेदारों के कार्यों से बाध्य होता हैं।

6. अधिनियम (Act) :– साझेदारी व्यवसाय भारतीय साझेदारी अधिनियम, 1932 द्वारा संचालित होता है।

7. असीमित दायित्व (Unlimited liability) :– साझेदारी में प्रत्येक साझेदार का दायित्व असीमित होता है। अन्य शब्दों में साझेदार के समस्त दायित्व के लिए प्रत्येक साझेदार संयुक्त व पृथक दोनो प्रकार से उत्तरदायी होता है ।

8. पृथक अस्तित्व नहीं (No Separate Existence) :– साझेदारी फर्म का साझेदारों से पृथक अस्तित्व नहीं होता है। अस्तित्व अलग न होने से आशय यह है कि फर्म से संबंधित सभी अनुबंध फर्म पर लागू होने के साथ – साथ प्रत्येक साझेदार पर भी संयुक्त व व्यक्तिगत रूप से लागू होते है ।

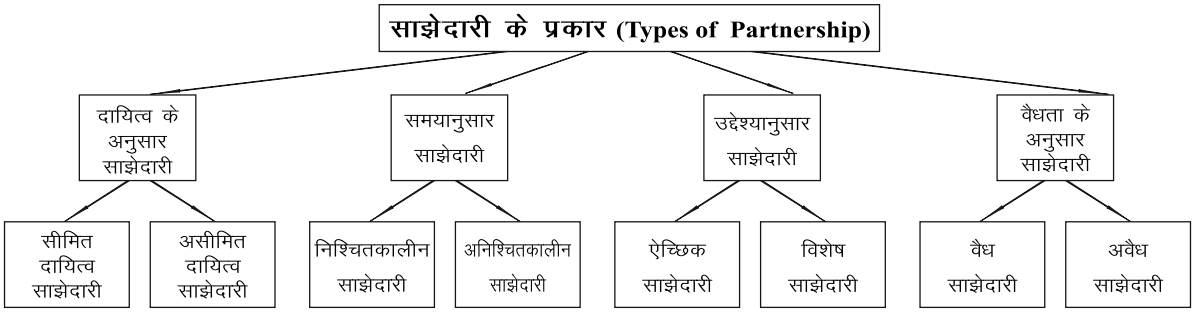

1. दायित्व के अनुसार साझेदारी:

(अ) सीमित दायित्व साझेदारी (Limited Liability Partnership) LLP- सीमित दायित्व साझेदारी अधिनियम 2008 के अन्तर्गत स्थापित एक निगम हैं। यह एक कृत्रिम व्यक्ति है, इसका पृथक वैधानिक अस्तित्व है तथा शाश्वत जीवन है, जिसकी सार्व–मुद्रा है जो सीमित दायित्व पर आधारित है, सीमित दायित्व साझेदारी में साझेदारों का दायित्व सीमित होता है। साझेदारों की निजी सम्पत्तियों पर साझेदारी फर्म का कोई अधिकार नहीं होता हैं।

(ब) असीमित दायित्व साझेदारी (Unlimited Liability Partnership) जिस साझेदारी में सभी साझेदारों का दायित्व असीमित होता है अर्थात जब फर्म के दायित्वों को चुकाने के लिए सभी साझेदार सयुंक्त व व्यक्तिगत रूप से उत्तरदायी होते है तो ऐसी साझेदारी असीमित दायित्व साझेदारी कहलाती हैं।

2. समयानुसार साझेदारी (Partnership According to Time)

(अ) निश्चितकालीन साझेदारी (Fixed Time Partnership)

ऐसी साझेदारी जिसकी स्थापना एक निश्चित समय के लिए की गई हो, निश्चितकालीन साझेदारी कहलाती हैं तथा उस समय के समाप्त होते ही साझेदारी स्वतः समाप्त हो जाती हैं।

(ब) अनिश्चितकालीन साझेदारी (Non Fixed Time Partnership)

ऐसी साझेदारी जिसकी स्थापना निश्चित समय के लिए नहीं की जाती अनिश्चितकालीन साझेदारी कहलाती हैं।

3. उद्देश्यानुसार साझेदारी (Partnership according to objects)

(अ) ऐच्छिक साझेदारी (Partnership at will)

यदि सभी साझेदार निश्चित अवधि की साझेदारी को अवधि समाप्त होने के बाद भी जारी रखना चाहते है तो वह साझेदारी ऐच्छिक साझेदारी बन जाती हैं।

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

(ब) विशेष साझेदारी (Particular Partnership)
किसी विशेष कार्य अथवा उद्देश्य के लिए स्थापित साझेदारी विशेष साझेदारी कहलाती हैं। उद्देश्य के पूर्ण होने पर ऐसी साझेदारी स्वतः समाप्त हो जाती हैं।

4. वैधता के अनुसार साझेदारी (Partnership According to Legality)
(अ) वैध साझेदारी (Legal Partnership) देश के प्रचलित नियमों से अनुसार स्थापित साझेदारी वैध साझेदारी कहलाती है।
(ब) अवैध साझेदारी (Illegal Partnership) यदि किसी साझेदारी की स्थापना प्रचलित नियमों के अनुसार न हो तो ऐसी साझेदारी अवैध साझेदारी कहलाती है। निम्न दशाओं में एक साझेदारी अवैध कहलाती है।

(1) जबकि साझेदारी की स्थापना का उद्देश्य गैर कानूनी हो।
(2) जबकि साझेदारों की संख्या दो से कम हो जाये व अधिकतम संख्या 50 से अधिक हो जाये।
(3) जबकि साझेदारी का व्यापार लोक नीति या अंतर्राष्ट्रीय नीति के विरूद्ध हो।
(4) जबकि किसी साझेदार में शत्रु राष्ट्र का नागरिक बना दिया जाये।

साझेदारी संलेख में सम्मिलित होने वाली बातें **(Contents of Partnership Deed)** : साझेदारों के मध्य लिखित समझौता साझेदारी संलेख कहलाता है। साझेदारी संलेख में निम्न बातों का उल्लेख किया जाता है।

(1) फर्म का नाम व पता।
(2) साझेदारों के नाम व पते।
(3) साझेदारी व्यवसाय की प्रकृति व कार्यक्षेत्र।
(4) लाभ विभाजन अनुपात।
(5) साझेदारों की पूँजी।
(6) पूँजी पर ब्याज के संबंध में प्रावधान।
(7) आहरण की राशि।
(8) आहरण पर ब्याज के संबंध में प्रावधान।
(9) फर्म की लेखा पुस्तके रखने की विधि।
(10) साझेदारों को देय वेतन, बोनस व कमीशन आदि।
(11) खातों का अंकेक्षण
(12) साझेदारी की अवधि
(14) साझेदारों के ऋण व उस पर ब्याज की दर
(14) पूँजी खाते रखने की विधि
(15) साझेदारों के अधिकार, कर्तव्य व दायित्व
(16) विवादों के निपटारे की विधि
(17) नये साझेदार के प्रवेश पर प्रावधान
(18) नये साझेदार के प्रवेश, अवकाश ग्रहण करने, मृत्यु होने व लाभ विभाजन अनुपात में परिवर्तन होने पर ख्याति का मूल्यांकन व लेखा।
(19) किसी साझेदार के अवकाश ग्रहण करने या मृत्यु पर हिसाब के निपटारे की विधि।
(20) फर्म के समापन की विधि व परिस्थितियां
(21) फर्म के समापन पर हिसाब के निपटारे की विधि
(22) किसी साझेदार के दिवालिया होने पर गॉर्नर v/s मर्रे नियम का प्रयोग

साझेदारी संलेख के अभाव में लागू होने वाले नियम (Rules applicable in absence of Partnership Deed)

1. लाभ विभाजन अनुपात– साझेदारों के मध्य लाभ विभाजन समान अनुपात (बराबर 2) में होगा।
2. पूँजी पर ब्याज– साझेदारों को पूँजी पर ब्याज नहीं दिया जायेगा।
3. आहरण पर ब्याज– साझेदारों द्वारा किये गये आहरण पर फर्म ब्याज नहीं लेगी।
4. साझेदारों को पारिश्रमिक– साझेदारों को पारिश्रमिक (वेतन, कमीशन) नहीं दिया जायेगा।
5. साझेदारों के ऋणो पर ब्याज– 6 प्रतिशत वार्षिक की दर से ब्याज दिया जायेगा।
6. प्रत्येक साझेदार को व्यापार संचालन व प्रबंध में हिस्सा लेने का अधिकार होगा।
7. प्रत्येक साझेदार को फर्म की पुस्तकों को देखने, निरीक्षण करने व उनकी प्रतिलिपि लेने का अधिकार होगा।

साझेदारों के पूँजी खाते (Capital A/c of Partners)
साझेदारों के पूँजी खाते बनाने की दो विधियां हैं
पूँजी खाते (Capital Accounts)

- **स्थिर (अपरिवर्तनशील) पूँजी खाता विधि**
  Fixed Capital A/c Method
  - **साझेदारों के पूँजी खाते**
    Partners Capital A/c
  - **साझेदारों के चालू खाते**
    Partners Current A/c
- **परिवर्तनशील पूँजी खाता विधि**
  Fluctuating Capital A/c Method
  - **साझेदारों के चालू खाते**
    Partners Current A/c

साझेदारों के पूँजी खाते (Partners Capital Accouts) –

1. स्थिर पूंजी खाता विधि–जब सभी साझेदार यह निश्चित कर लेते है कि उनकी पूँजी में कोई परिवर्तन नहीं किया जायेगा, तो ऐसी दशा में साझेदारों के पूँजी खाते स्थायी पूँजी खाते कहलाते हैं स्थायी पूंजी खाता विधि में साझेदारों के पूँजी से सम्बन्धित दो खाते खोले जाते है।

1. साझेदारों के पूँजी खाते **2.** साझेदारों के चालू खाते

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

1.साझेदारो के पूँजी खाते – इस खाते में केवल साझेदार द्वारा फर्म में लगायी गयी पूँजी का ही लेखा किया जाता हैं पूँजी खाते का शेष प्रतिवर्ष एक समान रहता है उस विशेष परिस्थिति को छोड़कर जब साझेदार अतिरिक्त पूँजी लगाये व स्थायी रुप से पूँजी निकाले अन्यथा साझेदारों के पूँजी खातों के प्रारम्भिक व अंतिम शेषों में कोई परिवर्तन नहीं होता है इस कारण से इस खाते का शेष सदैव क्रेडिट होता हैं।

2.साझेदारों के चालू खाते –साझेदारों के पूँजी लगाने व निकालने के अतिरिक्त अन्य सभी मदों का लेखा इस खाते में करते हैं। इस खाते के क्रेडिट पक्ष पर साझेदारों का वेतन, कमीशन, पूँजी पर ब्याज व लाभों में हिस्से का लेखा किया जाता है। इस खाते के डेबिट पक्ष पर साझेदारों के आहरण, आहरण पर ब्याज व हानि में हिस्से का लेखा किया जाता हैं। इस खाते का शेष डेबिट अथवा क्रेडिट हो सकता हैं।

Format

Dr. Partner's Current A/c Cr.

Particulars	A ₹	B ₹	Particulars	A ₹	B ₹
To Cash/Bank A/c (Permanent withdraw of Capital)	xx	xx	By Balance b/d	xx	xx
			By Cash/Bank (Additional Capital introduced)	xx	xx
To Balance c/d	xx	xx			
	xx	**xx**		**xx**	**xx**

Dr. Partner's Capital A/c Cr.

Particulars	A ₹	B ₹	Particulars	A ₹	B ₹
To Balance b/d	xx	xx	By Balance b/d	xx	xx
To Drawings	xx	xx	By interest on Capital	xx	xx
To interest on Drawings	xx	xx	By Salary	xx	xx
To P&L Appropriation A/c (Loss)	xx	xx	By Commission	xx	xx
To Balance c/d	xx	xx	By P & L Appropriation A/c	xx	xx
	xx	**xx**	(Profit)	**xx**	**xx**

नोटः यदि प्रश्न में चिट्ठे के अंतर्गत साझेदारों के चालू खातों का शेष दिया जाता है तो इसका आशय यह है कि साझेदारों के पूँजी खाते स्थिर पूँजी खाता विधि से रखे जाते हैं।

2..परिवर्तनशील पूंजी खाता विधिः–जब साझेदारों के पूँजी खातों के शेष प्रतिवर्ष बदलते रहते हैं तो उन्हें परिवर्तनशील पूँजी खाते कहते हैं। पूँजी तथा पूँजी को बढ़ाने वाली मदें (साझेदारों का वेतन, कमीशन, पूँजी पर ब्याज, लाभ में हिस्सा) क्रेडिट पक्ष में तथा पूँजी को घटाने वाली मदें (आहरण, आहरण पर ब्याज, हानि में हिस्सा) डेबिट पक्ष में दिखाते हैं जिसके परिणाम स्वरूप पूँजी खाते के प्रारम्भिक व अंतिम शेष हमेशा परिवर्तित होते रहते हैं।

नोट : प्रश्न में स्पष्ट सूचना के अभाव में साझेदारों के पूँजी खाते परिवर्तनशील पूँजी खाता विधि के अनुसार ही रखे जाते हैं।

Dr. Partner's Capital A/c Cr.

Particulars	A ₹	B ₹	Particulars	A ₹	B ₹
To Balance b/d	xx	xx	By Balance b/d	xx	xx
To Drawings	xx	xx	By Cash / Bank A/c	xx	xx
To Cash / Bank (Permanent withdrawl of Capital)	xx	xx	(Additional Capital introduced)		
To Interest on Drawing	xx	xx	By Interest on Capital	xx	xx
To P&L Appropriation A/c (Loss)	xx	xx	By Salary	xx	xx
			By Commission	xx	xx
To Balance c/d	xx	xx	By P & L Appropriation A/c	xx	xx
	xx	**xx**	(Profit)	**xx**	**xx**

नोटः अंतिम शेष विपरीत पक्ष में भी आ सकता है।

स्थिर व परिवर्तनशील पूँजी खाता विधियों में अंतर
Difference between Fixed Capital A/c & Fluctuating Capital A/c Method

अन्तर का आधार	स्थिर पूँजी खाता विधि	परिवर्तनशील पूँजी खाता विधि
1. खातों की संख्या	इस विधि में प्रत्येक साझेदार के दो खाते खोले जाते हैं (i) पूँजी खाता (ii) चालू खाता	इसमें प्रत्येक साझेदार के लिए केवल एक खाता है। अर्थात् पूँजी खाता ही बनाया जाता हैं।
2. पूँजी खाते के शेष में परिवर्तन	इसमें पूँजी खाते का शेष सामान्यतः अपरिवर्तित रहता हैं। जब तक कि अतिरिक्त पूँजी न लगायी जाये अथवा स्थायी रूप से पूँजी वापस न निकाली जाये।	इसमे पूँजी खाते का शेष प्रतिवर्ष बदलता रहता

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

3. पूँजी खातों का शेष	पूँजी खाते का शेष सदैव क्रेडिट होता है।	समायोजन लेखों के कारण पूँजी खाते का शेष क्रेडिट अथवा डेबिट हो सकता है।
4. व्यवहारों का लेखांकन	इसमें केवल पूँजी का लेखा किया जाता है। फर्म व साझेदारों के मध्य होने वाले पूँजी के अतिरिक्त अन्य व्यवहारों का लेखा चालू खाते में होता है।	इसमें फर्म व साझेदारों के मध्य होने वाले पूँजी सहित सभी व्यवहारों का लेखा पूँजी खातों में होता है।

साझेदारों के मध्य लाभों का बँटवारा (Distribution of Profits among the Partners)

साझेदारी फर्म की दशा में लाभ– हानि खाते द्वारा प्रकट शुद्ध लाभ / शुद्ध हानि का साझेदारी संलेख के अनुसार साझेदारों में विभाजन करने के लिए लाभ–हानि नियोजन खाता (P&L Appropiation A/c) बनाया जाता है।

लाभ–हानि नियोजन खाता : इस खाते में साझेदारी संलेख के अनुसार लाभों का नियोजन किया जाता है इसलिए इसे लाभ –हानि नियोजन खाता कहते है। यह एक नाममात्र का खाता होता हैं। और इसे लाभ–हानि खाते की तरह ही बनाया जाता है। यह खाता लाभ– हानि खाते का ही विस्तार है। इस खाते के क्रेडिट पक्ष पर चालू वर्ष का शुद्ध लाभ व आहरण पर ब्याज का लेखा करते है। इस खाते के डेबिट पक्ष पर चालू वर्ष की शुद्ध हानि, साझेदारी की पूँजी पर ब्याज, साझेदारी का पारिश्रमिक (वेतन, कमीशन आदि) संचय में हस्तान्तरण का लेखा करते है। दोनों पक्षों का अन्तर विभाजन योग्य लाभ–हानि होता है जिसे साझेदारों के मध्य लाभ विभाजन अनुपात में बांटा जाता है।

Format

Pofit & Loss Appropriation Account

For the year ended.....

Dr. **Cr.**

Particulars		Amount ₹	Particulars		Amount ₹
To P&L A/c (Net Loss for the year)			By P&L A/c (Net profit for the year)		
To Interest on Capital			By Interest on Drawings		
A	xx		A	xx	xx
B	xx	xx	B	xx	
To Partner's Salary			By Partner's Capital A/c /		
A	xx		Current A/c (share of Loss)		
B	xx	xx	A	xx	xx
To Partner's Commission			B	xx	
A	xx		(Balancing Figure)		
B	xx				
To Reserve A/c (Transfer)		xx			
To Partner's Capital A/c / Current A/c (share of Profit) (Balancing Figure)		xx			
A	xx				
B	xx				
		xx			xx

नोटः 1. यदि प्रश्न में किसी मद को चार्ज करने के पश्चात् (After charging) लाभ दिये गये है तो उस मद का लेखा लाभ–हानि नियोजन खाते में नहीं करते है। लेकिन साझेदार के पूँजी खाते या चालू खाते में उस मद का लेखा किया जायेगा।

2. यदि प्रश्न में किसी मद को चार्ज करने के पूर्व के लाभ (Before charging) लाभ दिये गये है तो उस मद का लेखा लाभ हानि नियोजन खाते व साझेदार के पूँजी खाते/चालू खाते में किया जाता हैं।

3. निम्न मदें लाभों पर प्रभार (charge on Profit) मानी जाती हैं अतः इन मदों को लाभ–हानि खाते में लिखा जाता है। (न कि लाभ–हानि नियोजन खाते में) मैनेजर कमीशन, साझेदारों के ऋण पर ब्याज व उस भवन का किराया जिसमें फर्म का व्यापार चलाया जाता हैं। **4.** यदि लेखे स्थिर पूँजी खाता विधि से बनाये जाते है तो पूँजी के अतिरिक्त अन्य सभी मदों का लेखा साझेदारों के चालू खातों के माध्यम से होगा।

जर्नल प्रविष्टियाँ (Journal Entries)

लाभ–हानि नियोजन खाते के सम्बन्ध में निम्नलिखित जर्नल प्रविष्टियाँ की जाती हैः

	लेन–देन (Transactions)	लेखांकन प्रविष्टियाँ (Accounting Entries)
1)	पूँजी पर ब्याज के लिए–	Interest on Capital A/c Dr. To Partner's Capital A/c (Being interest allowed on capital)

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

2)	ब्याज की रकम को लाभ–हानि नियोजन खाते में हस्तान्तरित करने के लिए–	Profit & Loss Appropiation A/c Dr. To Interest on Capital A/c (Being transfer of interest to P/L App. A/c)
	प्रविष्टि सं. 1 और 2 को मिलाकर एक प्रविष्टि की जा सकती है–	Profit and Loss Appropriation A/c Dr. To Partner's Capital A/c (Being interest on capital allowed to partners)
3)	आहरण पर ब्याज के लिए–	Partner's Capital A/c Dr. To Interest on Drawings A/c (Being interest on drawings transferred to Capital A/c)
4)	आहरण पर ब्याज को लाभ–हानि नियोजन खाते में हस्तान्तरित करने के लिए–	Interest on Drawings A/c Dr. To Profit & Loss Appropriation A/c (Being transfer of interest on drawings to P/L Appropriation A/c)
5)	प्रविष्टि सं. 3 और 4 को मिलाकर एक प्रविष्टि की जा सकती है–	Partner's Capital A/c Dr. To Profit & Loss Appropriation A/c (Being interest on drawings charged)
6)	साझेदारों को दिय गये वेतन/कमीशन के लिए–	Partner's Salary/Commission A/c Dr. To Partner's Capital A/c (Being Partner's Capital A/c credited with salary……..)
7)	साझेदारों को दिय गये वेतन/कमीशन को लाभ–हानि नियोजन खाते में हस्तान्तरित करने के लिए–	Profit and Loss Appropriation A/c Dr. To Partner's Salary A/c To Partner's Commission A/c (Being transfer of partner's salary/commission to P/L Appropriation A/c)
8)	संचय खाते में हस्तान्तरण के लिए–	Profit and Loss Appropriation A/c Dr. To Reserve/Reserve Fund A/c (Being transfer of profit to Reserve A/c)
9)	शुद्ध लाभ बांटने के लिए–	Profit and Loss Appropriation A/c Dr. To Partner's Capital A/c (Being profit distributed among/between partners)
10)	शुद्ध हानि को बांटने के लिए–	Partner's Capital A/c Dr. To Profit and Loss Appropriation A/c (Being Partner's Capital A/c debited with loss on P/L Appropriation A/c)

नोटः (1) यदि साझेदारों के पूँजी खाते स्थिर विधि से रखे गये है, तो साझेदारों के पूँजी खातों (Partners capital A/c) के स्थान पर साझेदारों के चालू खातों (Partners current A/c) का प्रयोग किया जायेगा।

उदाहरण 1:– अजय तथा विजय ने 1 अप्रेल 2016 को साझेदारी व्यवसाय शुरू किया। उनकी पूँजी क्रमशः ₹ 2,00,000 तथा ₹ 3,00,000 थी।

साझेदारी संलेख में निम्न बातों का वर्णन है:

(i) पूँजी पर 10 प्रतिशत वार्षिक दर से ब्याज दिया जाएगा। **(ii)** अजय को ₹ 2,000 प्रतिमास तथा विजय को ₹ 36,000 वार्षिक वेतन दिया जाएगा। **(iii)** आहरण पर ब्याज अजय से ₹ 2,000 तथा विजय से ₹ 3,000 वसूल किया जाएगा। (iv) लाभों को 3:2 के अनुपात में विभाजित किया जाएगा। **(v)** वर्ष के दौरान अजय और विजय के आहरण क्रमशः ₹ 30,000 तथा ₹ 40,000 थे। 31 मार्च 2017 को समाप्त होने वाले वर्ष के लिए उपरोक्त समायोजन करने से पहले फर्म को ₹ 2,45,000 का लाभ हुआ। लाभ–हानि नियोजन खाता बनाइए।

Ajay and Vijay started a partnership business on 1st April, 2016 their capital contributions were ₹ 2,00,000 and 3,00,000 respectively, The partnership deed provided:
(i) Interest on capital at 10% p.a.**(ii)** Ajay to get a salary of ₹ 2000 p.m. and Vijay ₹ 36000 p.a.**(iii)** Interest on drawing amounted ₹ 2000 for Ajay and ₹ 3000 for Vijay. **(iv)** Profits are to be shared in the ratio of 3:2 **(v)** During the year drawing of Ajay and Vijay amounted to ₹ 30000 and ₹ 40000 respectively. The profits for the year ended 31st March 2017 before making above appropriations ₹ 2,45,000. Prepare Profit and Loss Appropriation Account.

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

हल:

Profit and Loss Appropriation A/c

Dr. *For the year ending 31st March, 2016* **Cr.**

Particulars		Amount ₹	Particulars		Amount ₹
To Interest on Capital:			By Profit before Adjustments		2,45,000
Ajay	20, 000		By Interest on Drawings:		
Vijay	30, 000	50, 000	Ajay	2,000	
To Partner's Salaries:			Vijay	3,000	5,000
Ajay	24, 000				
Vijay	36, 000	60, 000			
To Partner's Capital:					
Ajay	84, 000				
Vijay	56, 000	1,40,000			
		2,50,000			**2,50,000**

उदाहरण 2: K और R 3:2 अनुपात में लाभ विभाजन करते हुए साझेदार थे, साझेदारों के मध्य निम्न शर्तें तय हुई – (1) पूँजी पर ब्याज 10 प्रतिशत वार्षिक की दर से (2) आहरण पर ब्याज 5 प्रतिशत वार्षिक की दर से (3) व्यापार को संचालित करने हेतु K को वेतन ₹ 5000 प्रति माह । 31-03-2017 को समाप्त होने वाले लेखा वर्ष के लिए निम्न सूचनाएं उपलब्ध है:

1-4-2016 को K की पूँजी ₹ 2,00,000 1-4-2016 को R की पूँजी ₹ 1,20,000
1-4-2016 को K का चालू खाता ₹ 1,2,000 (Cr.) 1-4-2016 को R का चालू खाता ₹ 4,000 (Dr.)
K द्वारा 1-10-2016 को अतिरिक्त पूँजी लगाई गई ₹ 80,000
वर्ष के दौरान आहरण –K ₹ 20,000, वर्ष के दौरान आहरण –R ₹ 20,000 वर्ष के लाभ ₹ 1,34,000

जर्नल प्रविष्टियाँ दीजिए तथा लाभ–हानि नियोजन खाता बनाईये। पूँजी खाते भी बनाईये यह मानते हुए कि स्थिर पूँजी खाता विधि अपनाई जाती हैं।

K and R were partners sharing profits in the ratio of 3:2. Following terms were agreed upon between the partners.

(1) Interest on Capital @ 10% per annum (2) Interest on drawings @ 5% per annum. (3) Salary to K for conducting business of the firm ₹5000 per month. Following informations are available for the accounting year ending 31st March, 2017

Capital of K on 01.04.2016 **₹ 2,00,000** Capital of Ron 01.04.2016 **₹ 1,20,000**
Current Account of K on 01.04.2016 **₹ 12,000 (Cr.)** Current Account of Ron 01.04.2016 **₹ 4,000 (Dr.)**
Additional Capital by K on 01.10.2016 **₹ 80,000** Drawings during the year by K **₹ 20,000**
Drawings during the year by R **₹ 20,000** Profit for the year` **₹ 1,34,000**

Pass journal entries, prepare Profit and Loss Appropriation Account and show Capital Accounts of Partners assuming capital are fixed.

हल :

Journal

Date	Particulars		L.F.	Dr. Amount ₹	Cr. Amount ₹
2016 Oct.,1	Bank A/c	Dr.		80,000	
	To K's Capital A/c				80,000
	(Additional capital contributed)				
	K's Drawings A/c	Dr.		20,000	
	R's Drawings A/c	Dr.		20,000	
	To Bank				40,000
	(Drawing Made)				
2017 Mar., 31	Interest on Capital A/c	Dr.		36,000	
	To K's Current A/c				24,000
	To R's Current A/c				12,000
	(Interest charged)				

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

K's Current A/c	Dr.		1,000	
R's Current A/c	Dr.		1,000	
To Interest on Drawings				2,000
(Interest charged on Drawings)				
K's Current A/c	Dr.		20,000	
To K's Drawings A/c				20,000
(Transfer Drawings to Partner's Current Accounts)				
R's Current A/c	Dr.		20,000	
To R's Drawings A/c				20,000
(Transfer Drawings to Partner's Current Accounts)				
K's Salary A/c	Dr.		60,000	
To K's Current A/c				60,000
(Salary payable to K)				
Profit and Loss A/c	Dr.		1,34,000	
To Profit and Loss Appropriation A/c				1,34,000
(Net Profit transferred to Profit and Loss Appropriation A/c)				
Profit and Loss Appropriation A/c	Dr.		96,000	
To Interest on Capital A/c				36,000
To K's Salary A/c				60,000
(Interest on Capital and salary transferrred to Profit and Loss Appropriation A/c)				
Interest on Drawings A/c	Dr.		2,000	
To Profit and Loss Appropriation A/c				2,000
(Interest on Drawings transferred)				
Profit and Loss Appropriation A/c	Dr.		40,000	
To K's Current A/c				24,000
To Rs Current A/c				16,000
(Balance of P & L Appropriation Account Transferred to Partners Current Account)				

Profit and Loss Appropriation A/c for the year ended 31st March 2017

Dr. **Cr.**

Particulars		Amount ₹	Particulars		Amount ₹
To Interest on Capital A/c			By Profit & Loss A/c (Net Profit)		1,34,000
K	24,000		By Interest on Drawings A/c		
R	12,000	36,000			
To K's Salary A/c		60,000	K	1,000	
To Profit Transferred to Current A/c			R	1,000	2,000
To K	24,000				
To R	16,000	40,000			
		1,36,000			1,36,000

Partner's Capital Account

Date	Particulars	K ₹	R ₹	Date	Particulars	K ₹	R ₹
2017				2016			
Mar.,31	To Balance c/d	2,80,000	1,20,000	Apr.,01	By Balance b/d	2,00,000	1,20,000
				Oct.,01	By Bank A/c	80,000	
		2,80,000	**1,20,000**			**2,80,000**	**1,20,000**

Partner's Current A/c

Dr. **Cr.**

Date	Particulars	K ₹	R ₹	Date	Particulars	K ₹	R ₹
2016				2016			
Apr.,1	To Balance b/d		4,000	Apr., 01	By Balance b/d	12,000	--
2017				2017			
Mar.,31	To Drawings A/c	20,000	20,000	Mar.,31	By Int. on capital A/c	24,000	12,000
Mar.,31	To Interest on			Mar.,31	By Salary A/c	60,000	--

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

	Drawings A/c	1,000	1,000	Mar.,31	By Profit & Loss Appropriation A/c (Share of Profit)	24,000	16,000
Mar,31	To Balance c/d	99,000	3,000				
		1,20,000	**28,000**			**1,20,000**	**28,000**

साझेदारों की पूँजी पर ब्याज
Interest on Partner's Capital

साझेदारी संलेख में स्पष्टतः उल्लेख होने पर ही पूँजी पर ब्याज दिया जाता है। पूँजी पर ब्याज समय के आधार पर प्रारम्भिक पूँजी पर लगाया जाता है। यदि वर्ष के दौरान अतिरिक्त पूँजी लगाई जाती हैं तो उस पर उसकी समय अवधि के अनुसार ब्याज की गणना की जायेगी। यदि अन्तिम पूँजी दी गयी हो तो प्रारम्भिक पूँजी की गणना निम्न प्रकार से की जायेगी।

	अन्तिम पूँजी (Capital at the end)	xxx
Add:	आहरण (Drawings)	xxx
Less:	अतिरिक्त पूँजी (Additional Capital)	xxx
Less	चालू वर्ष का लाभ (Current year Profit)	xxx
	प्रारम्भिक पूँजी Opening Capital)	xxx

पूँजी पर ब्याज = $\frac{\text{पूँजी की राशि x दर x अवधि}}{100 \text{ x } 12}$, Interest on Capital= $\frac{\text{Amount of Capital x Rate x Period}}{100 \text{ x } 12}$

यदि साझेदारों द्वारा वर्ष के दौरान अतिरिक्त पूँजी लगायी गयी है या पूँजी निकाली गयी है तो पूँजी पर ब्याज की गणना गुणनफल विधि से की जा सकती हैं।

Interest on Capital = $\frac{\text{Total of Products x Rate}}{100 \text{ x } 12}$, पूँजी पर ब्याज = $\frac{\text{गुणनफलों का योग x दर}}{100 \text{ x } 12}$

नोट –: यदि पूँजी स्थिर है तो ब्याज की गणना स्थिर पूँजी पर की जायेगी।

पूँजी पर ब्याज की गणना सम्बन्धी प्रावधान–:

स्थिति (Situation)	प्रावधान (Provision)
I. जब साझेदारी संलेख में पूँजी पर ब्याज देने के बारे में कोई उल्लेख न हो।	ऐसी दशा में पूँजी पर कोई ब्याज नहीं दिया जायेगा।
II. जबकि साझेदारी संलेख में पूँजी पर ब्याज देने का उल्लेख तो है किन्तु यह स्पष्ट नहीं है कि पूँजी पर ब्याज लाभों पर प्रभार (Charge on Profits) माना जायेगा या लाभों का नियोजन माना जायेगा।	इस स्थिति में पूँजी पर ब्याज तभी दिया जायेगा जबकि फर्म में लाभ हो। इसमें निम्न तीन परिस्थितियां हो सकती है– **i.** हानि की दशा में : पूँजी पर ब्याज नहीं दिया जायेगा **ii.** यदि फर्म के लाभ (ब्याज देने से पूर्व) ब्याज के बराबर है अथवा ब्याज से अधिक है : पूँजी पर पूरा ब्याज दिया जायेगा। **iii.** यदि फर्म का लाभ (ब्याज देने से पूर्व) ब्याज से कम हो: इस दशा में लाभों को पूँजी पर ब्याज के अनुपात में बांट लिया जायेगा।
III. जबकि साझेदारी संलेख में पूँजी पर ब्याज को लाभों पर प्रभार मानने का उल्लेख हो	इस स्थिति में फर्म को चाहे लाभ हो अथवा हानि पूँजी पर ब्याज ब्याज दिया जायेगा व लेखा लाभ–हानि खाते में Dr. में होगा।

उदाहरण 3: X और Y साझेदार है, जिनका लाभ विभाजन अनुपात 3:2 है तथा पूँजी क्रमशः ₹ 2,00,000 तथा ₹ 1,00,000 है। निम्न दशाओं में लाभ का विभाजन दिखाइए: –

(1) यदि साझेदारी संलेख में पूँजी पर ब्याज के सम्बन्ध में कोई प्रावधान नहीं है तथा वर्ष के लाभ ₹ 60,000 है।
(2) यदि साझेदारी संलेख में पूँजी पर ब्याज के लिए 10% प्रति वर्ष का प्रावधान है तथा वर्ष की हानि ₹ 60,000 है।
(3) यदि साझेदारी संलेख में पूँजी पर ब्याज के लिए 10% प्रति वर्ष का प्रावधान है तथा वर्ष के लाभ ₹ 60,000 है।
(4) यदि साझेदारी संलेख में पूँजी पर ब्याज के लिए 10% प्रति वर्ष का प्रावधान है तथा वर्ष के लाभ ₹ 18,000 है।
(5) यदि साझेदारी संलेख में पूँजी पर ब्याज के लिए 10% प्रति वर्ष का प्रावधान है तथा वर्ष के लाभ ₹ 18,000 है। पूँजी पर ब्याज को लाभों का प्रभार माना गया है। केवल पांचवीं दशा में।

X and Y are partners sharing the profits and lossed in the ratio of 3 : 2 with capitals of ₹ 2,00,000 and ₹ 1,00,000 respectively. Show the distribution of profits in each of the following alternative cases:

(1) If the partnership deed is silent as to the Interest on Capital and the profits for the year are ₹ 60,000.
(2) If the partnership deed provides for Interest on Capital @ 10% p.a. and the losses for the year are ₹ 60,000.
(3) If the partnership deed provides for Interest on Capital @ 10% p.a. and the profits for the year are ₹ 60,000.

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

(4) If the partnership deed provides for Interest on Capital @ 10% p.a. and the profits for the year are ₹ 18,000.
(5) If the partnership deed provides for Interest on Capital @ 10% p.a. and the profits for the year are ₹ 18,000. Interest on Capital is charged on Profit. in (5) Conditions only.

हल :

(1) **Dr.** **Profit and Loss Appropriation A/c** **Cr.**

Particulars	Amount ₹	Particulars	Amount ₹
To Partner's Capital (Profit)		By Profit & Loss A/c	60,000
X 36,000			
Y 24,000	60,000		
	60,000		60,000

(2) **Dr.** **Profit and Loss Appropriation A/c** **Cr.**

Particulars	Amount ₹	Particulars	Amount ₹
To P&L A/c (Loss)	60,000	By Partner's Capital A/c	
		X 36,000	
		Y 24,000	60,000
	60,000		60,000

नोटः पूँजी पर ब्याज लाभों में से ही दिया जाता है। हानि होने के कारण पूँजी पर ब्याज नहीं दिया गया है।

(3) **Dr.** **Profit and Loss Appropriation A/c** **Cr.**

Particulars		Amount ₹	Particulars	Amount ₹
To Interest on Capital			By P&L A/c	60,000
X	20,000			
Y	10,000	30,000		
To Partner's Capital A/c				
X	18,000			
Y	12,000	30,000		
		60,000		60,000

(4) **Dr.** **Profit and Loss Appropriation A/c** **Cr.**

Particulars	Amount ₹	Particulars	Amount ₹
To Interest on Capital A/c		By P&L A/c	18,000
X 18,000 x $\frac{2}{3}$	12,000		
Y 18,000 x $\frac{1}{3}$	6,000		
	18,000		18,000

नोटः कुल लाभ को साझेदारों के मध्य देय ब्याज के अनुपात में बांटा गया है।

(5) **Dr.** **Profit and Loss Appropriation A/c** **Cr.**

Particulars	Amount ₹	Particulars	Amount ₹
To Interest on Capital		By Profit for the year	18,000
X 20,000			
Y 10,000	30,000	By Partner's Capital A/c	
		X 12,000 x $\frac{3}{5}$	7,200
		Y 12,000 x $\frac{2}{5}$	4,800
	30,000		**30,000**

नोटः पूँजी पर ब्याज लाभों का प्रभार माना गया है। अतः लाभ–हानि खाते में पूँजी पर ब्याज दिखाया गया है।

उदाहरण : 4 राम, श्याम तथा मोहन ने साझेदारी में एक व्यवसाय प्रारम्भ किया, जिसमें राम ने पूरे वर्ष के लिए ₹ 1,00,000 लगाये, श्याम ने प्रारम्भ में ₹ 50,000 लगाए और 3 माह के अन्त में इस राशि को ₹ 60,000 तक बढ़ाया तथा 8 माह के अन्त में ₹ 5,000 निकाले। मोहन ने प्रारम्भ में ₹ 70,000 लगाए और 4 माह बाद ₹ 20,000 निकाले। फर्म का वर्ष भर का लाभ ₹ 5,10,000 है। साझेदारों में वर्ष भर में उनकी पूँजी के आधार पर लाभ का विभाजन कीजिए।

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

हल : Calculation the ratio of effective Capital Employed during the year

Ram:	₹ 1,00,000	for 12 months	₹ 12,00,000
Shyam:	₹ 50,000	for 3 months	₹ 1,50,000
	₹ 60,000	for 5 months	₹ 3,00,000
	₹ 55,000	for 4 months	₹ 2,20,000
			₹ 6,70,000
Mohan:	₹ 70,000	for 4 months	₹ 2,80,000
	₹ 50,000	for 8 months	₹ 4,00,000
			₹ 6,80,000

Capital ratio = 120:67:68

Dr. **Profit and Loss Appropriation A/c** **Cr.**

Particulars	Amount ₹	Particulars	Amount ₹
To Partner's Capital		By Net Profit	5,10,000
Ram $\frac{5,10,000 \times 120}{255}$	2,40,000		
Shyam $\frac{5,10,000 \times 67}{255}$	1,34,000		
Mohan $\frac{5,10,000 \times 68}{255}$	1,36,000		
	5,10,000		5,10,000

आहरण पर ब्याज
(Interest on Drawings)

साझेदारों द्वारा फर्म से अपने निजी प्रयोग के लिए निकाली गयी नकद राशि या वस्तुएँ आहरण कहलाती है। साझेदारी संलेख में उल्लेख होने पर साझेदारों द्वारा किये गये आहरणों पर ब्याज वसूल किया जाता है। आहरण पर ब्याज फर्म की आय होती है।

आहरण पर ब्याज की गणना करने की विधियाँ
(Methods of calculation of Interest on Drawings)

- जबकि विभिन्न तिथियों पर असमान राशि आहरित की गयी हो
  - सरल विधि — Simple Methods
  - गुणनफल विधि — Product Methods
- जबकि नियमित अन्तराल पर समान राशि आहरित की गयी हो
  - औसत अवधि विधि
    - मासिक आधार पर आहरण
    - त्रैमासिक आधार पर आहरण

I जबकि विभिन्न तिथियों पर असमान राशि आहरित की गयी हो:

(1) सरल विधि– इस विधि में प्रत्येक आहरण की राशि पर दी गयी ब्याज दर से आहरण की तिथि से अंतिम खाते बनाने की तिथि तक की अवधि का ब्याज निकाला जाता है।

$$\text{ब्याज} = \frac{\text{आहरण की राशि}}{} \times \frac{\text{ब्याज की दर}}{100} \times \frac{\text{महीने}}{12} \text{ or } \frac{\text{दिनों की संख्या}}{365}$$

$$\text{Interest} = \frac{\text{Amount withdrawn}}{} \times \frac{\text{Rate of Interest}}{100} \times \frac{\text{months}}{12} \text{ or } \frac{\text{days}}{365}$$

(2) गुणनफल विधि – इस विधि में निम्नांकित तालिका बनाकर गणना की जाती है

आहरण की तिथि Date of Drawings	राशि ₹ Amount ₹	अवधि माह/दिनों में (आहरण की तिथि से अंतिम खाते बनाने की तिथि तक) Period (months/ days) from date of drawing to date of year ending	गुणनफल (राशि x अवधि) Product (Amount x Period)
			Total Product

Steps: i. अवधि की गणनाः आहरण की तिथि से खाते बन्द करने की तिथि की अवधि

ii. अवधि को संबंधित धनराशि से गुणा करके गुणनफल ज्ञात करते है एवं उनका योग लगाते है।

iii. $\text{ब्याज} = \frac{\text{गुणनफल का योग x ब्याज की दर}}{100 \text{ x } 12 \text{ or } 365}$

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

उदाहरण 5: राम एक फर्म में साझेदार है उसके द्वारा निम्न राशियां आहरित की गयी है। 31-05-2016 को ₹ 2,000 व 30-09-2016 को ₹ 3,000 आहरण पर ब्याज की दर 12% वार्षिक है, खाते 31-12-2016 को बन्द किये जाते है। सरल विधि से आहरण पर ब्याज की गणना कीजिये।

हल : $2,000 \times \frac{7}{12} \times \frac{12}{100} = 140$ $\quad$ $3,000 \times \frac{7}{12} \times \frac{12}{100} = 90$

उदाहरण 6:

एक साझेदार ने विभिन्न तिथियों को निम्न आहरण किये:–

Date of Drawings	Amount ₹	Date of Drawings	Amount ₹
01-04-16	1,000	30-06-16	1,200
31-12-16	1,500	31-03-17	2,0000

आहरण पर ब्याज की दर 12% वार्षिक है, खाते 31-3-17 को बन्द किये जाते है।

हल :

Date of Drawings	Amount ₹	Months	Product
01-04-16	1,000	12	12,000
30-06-16	1,200	9	10,800
31-12-16	1,500	3	4,500
31-03-17	20,000	0	0
			27,300

आहरण पर ब्याज $= \frac{\text{गुणनफल का योग x ब्याज की दर}}{100 \quad x \quad 12}$

= ₹ 273

II जबकि नियमित अन्तराल पर समान राशि आहरित की गयी हो: तब आहरण पर ब्याज की गणना औसत अवधि विधि के आधार पर की जाती है।

आहरण पर ब्याज $= \frac{\text{कुल आहरण} \quad x \quad \text{ब्याज की दर} \quad x \quad \text{औसत अवधि}}{100 \quad x \quad 12}$

औसत अवधि गणना करने के सूत्र: –

Situation	**n=No. of months in a year**	आहरण 12 माह के लिए किये गये हो	आहरण 9 माह के लिए किये गये हो	आहरण 6 माह के लिए किये गये हो
I. <u>मासिक आहरण</u>		(माह)	(माह)	(माह)
a) प्रत्येक माह के प्रारम्भ में	$\frac{n+1}{2}$	$\frac{12+1}{2} = 6.5$	$\frac{9+1}{2} = 5$	$\frac{6+1}{2} = 3.5$
b) प्रत्येक माह के अंत में	$\frac{n-1}{2}$	$\frac{12-1}{2} = 5.5$	$\frac{9-1}{2} = 4$	$\frac{6-1}{2} = 2.5$
c) प्रत्येक माह के मध्य में	$\frac{n}{2}$	$\frac{12}{2} = 6$	$\frac{9}{2} = 4.5$	$\frac{6}{2} = 3$
II. <u>त्रैमासिक आहरण</u>				
a) प्रत्येक तिमाही के प्रारम्भ में	$\frac{n+3}{2}$	$\frac{12+3}{2} = 7.5$	$\frac{9+3}{2} = 6$	$\frac{6+3}{2} = 4.5$
b) प्रत्येक तिमाही के अंत में	$\frac{n-3}{2}$	$\frac{12-3}{2} = 4.5$	$\frac{9-3}{2} = 3$	$\frac{6-3}{2} = 1.5$
c) प्रत्येक तिमाही के मध्य में	$\frac{n}{2}$	$\frac{12}{2} = 6$	$\frac{9}{2} = 4.5$	$\frac{6}{2} = 3$
III. जब आहरण की तिथि न दी गयी है	$\frac{n}{2}$	$\frac{12}{2} = 6$	$\frac{9}{2} = 4.5$	$\frac{6}{2} = 3$

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Note: (1) जब ब्याज की दर के साथ प्रतिवर्ष (p.a.) शब्द न लिखा हो, तो ब्याज की गणना पूरे एक वर्ष के लिए की जायेगी। अर्थात् समय तत्व (Time factor) को ध्यान में नहीं रखा जायेगा।

उदाहरण 7: G,S,T एक फर्म में साझेदार है वह निम्न प्रकार आहरण करते हैं।

a. G प्रत्येक माह के प्रारम्भ में ₹ 2,000 का आहरण करता हैं। **b.** S प्रत्येक माह के अन्त में ₹ 3,000 का आहरण करता हैं। **c.** T प्रत्येक माह के मध्य में ₹ 1,000 का आहरण करता हैं।

आहरण पर 12% वार्षिक की दर से ब्याज लगाया जायेगा। वर्ष 2017 के लिए साझेदारों के आहरण पर ब्याज ज्ञात कीजिये।

हल : G कुल आहरण 2,000 x 12 = ₹ 24,000 आहरण पर ब्याज = ₹ 24,000 x $\frac{6.5}{12}$ x $\frac{12}{100}$ = ₹ 1,560

S कुल आहरण 3,000 x 12 = ₹ 36,000 आहरण पर ब्याज = ₹ 36,000 x $\frac{5.5}{12}$ x $\frac{12}{100}$ = ₹ 1,980

T कुल आहरण 1,000 x 12 = ₹ 12,000 आहरण पर ब्याज = ₹ 12,000 x $\frac{6}{12}$ x $\frac{12}{100}$ = ₹ 720

उदाहरण 8:

P,Q व R ने 01.07.2016 को साझेदारी व्यवसाय प्रारम्भ किया। 31 मार्च 2017 को समाप्त होने वाले वर्ष के लिए निम्न आहरणों पर 12% वार्षिक की दर से ब्याज की गणना कीजिये।

a. P प्रत्येक माह के प्रारम्भ में ₹ 500 आहरित किये। **b.** Q प्रत्येक माह के मध्य में ₹ 600 आहरित किये।
c. R प्रत्येक माह के अन्त में ₹ 700 आहरित किये।

हलः P कुल आहरण 500 x 9 = ₹ 4,500 आहरण पर ब्याज = 45,00 x $\frac{5}{12}$ x $\frac{12}{100}$ = ₹ 220

R कुल आहरण 600 x 9 = ₹ 5,400 आहरण पर ब्याज = 46,00 x $\frac{5.5}{12}$ x $\frac{12}{100}$ = ₹ 243

S कुल आहरण 700 x 9 = ₹ 6300 आहरण पर ब्याज = 63,00 x $\frac{4}{12}$ x $\frac{12}{100}$ = ₹ 252

उदाहरण 9:

R,S व T एक फर्म में साझेदार है। प्रत्येक साझेदार ने 01.01.2017 से 30.06.2017 तक ₹ 2,000 प्रतिमाह आहरण किया। आहरण पर ब्याज की दर 10% वार्षिक आहरण पर ब्याज ज्ञात करों। जबकि

a. R प्रत्येक माह के प्रारम्भ में आहरण किया हो। **b.** S प्रत्येक माह के मध्य में आहरण किया हो।
c. T प्रत्येक माह के अन्त में आहरण किया हो।

हल : 01.01.2017 से 30.06.2017 तक 6 माह इसलिये n=6

R कुल आहरण 2,000 x 6 = ₹12,000 आहरण पर ब्याज = 12,000 x $\frac{3.5}{12}$ x $\frac{10}{100}$ = ₹ 350

S कुल आहरण 2,000 x 6 = ₹12,000 आहरण पर ब्याज = 12,000 x $\frac{3}{12}$ x $\frac{10}{100}$ = ₹ 300

T कुल आहरण 2,000 x 6 = ₹12,000 आहरण पर ब्याज = 12,000 x $\frac{3.5}{12}$ x $\frac{10}{100}$ = ₹ 250

उदाहरण 10:

A,B व C एक फर्म में साझेदार है। 31.03.2017 को समाप्त होने वाले वर्ष के लिए साझेदारों द्वारा किये गये आहरणों पर 12% वार्षिक की दर से ब्याज की गणना कीजिये।

a. A ने प्रत्येक तिमाही के प्रारम्भ में ₹ 3,000 का आहरण किया। **b.** B ने प्रत्येक तिमाही के मध्य में ₹4,000 का आहरण किया। **c.** C ने प्रत्येक तिमाही के अन्त में ₹ 2,500 का आहरण किया।

हल : n=12

A कुल आहरण 3,000 x 4 = ₹ 12,000 औसत अवधि = 7.5 माह, आहरण पर ब्याज = 12,000 x $\frac{7.5}{12}$ x $\frac{12}{100}$ = ₹ 900

B कुल आहरण 4,000 x 4 = ₹ 16,000 औसत अवधि = 6 माह, आहरण पर ब्याज = 16,000 x $\frac{65}{12}$ x $\frac{12}{100}$ = ₹ 960

C कुल आहरण 2,500 x 4 = ₹10,000 औसत अवधि = 4.5 माह, आहरण पर ब्याज = 10,00 0 x $\frac{4.5}{12}$ x $\frac{12}{100}$ = ₹ 450

उदाहरण 11:

31.03.2017 को समाप्त होने वाले वर्ष के लिए विराट ने निम्न आहरण किये। आहरण पर ब्याज की दर 10% है।

a.उसने वर्ष के दौरान ₹ 20,000 आहरित किये हो। **b.**उसने ₹ 2,000 प्रतिमाह आहरित किये हो।

हल : **a.** आहरण पर ब्याज = $\frac{20,000 \times 10}{100}$ = ₹ 2,000 **b.** आहरण पर ब्याज = $\frac{24,000 \times 10}{100}$ = ₹ 2,400

नोट: ब्याज की दर के साथ वार्षिक शब्द नहीं होने के कारण पूरे वर्ष के ब्याज की गणना की गयी है।

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

उदाहरण 12: R और S साझेदार हैं। वे लाभ को 3 : 2 के अनुपात में बाँटते है। R निष्क्रिय साझेदार है। उसने ₹ 5,00,000 पूँजी का अंशदान किया है। S ने कोई पूँजी नहीं दी। साझेदारी संलेख में पूँजी पर 10% वार्षिक ब्याज और S को ₹ 2,500 प्रतिमाह वेतन देने का प्रावधान है। 31 मार्च, 2017 को समाप्त वर्ष के लिए, पूँजी पर ब्याज और वेतन का प्रावधान करने से पहले, ₹ 40,000 का लाभ है। वर्ष के लिए लाभों का विभाजन दिखाइए।

R and S are partners sharing profits in the ratio of 3 : 2. R is a non-working partner. He contributed ₹ 5,00,000 as his capital. S did not contribute any capital. The partnership deed provides interest on capital @ 10% p.a. and salary to S as ₹ 2,500 p.m. The net profit before providing interest on capital and salary amounts to ₹ 40,000 for the year ended 31st March 2017. Show the distribution of profits for the year.

हल :

Profit & Loss Appropriation A/c

Dr. *For the year ending 31st March 2017* ***Cr.***

Particulars	**Amount ₹**	***Particulars***	**Amount ₹**
To Interest on R's Capital	25,000	By Net Profit (as per P & L A/c)	40,000
To S's Salary	15,000		
	40,000		40,000

नोटः— पूँजी पर ब्याज व वेतन का योग ₹ 80,000 बनता है जबकि लाभ ₹ 40,000 है। अतः लाभों को पूँजी पर ब्याज व वेतन के अनुपात 5 : 3 में बांटा गया है।

उदाहरण 13 : R और S क्रमशः ₹ 80,000 एवं ₹ 60,000 की पूँजी के साथ साझेदार है। 31 मार्च, 2017 को समाप्त वर्ष के लिए निम्न पर विचार करने के पूर्व लाभ ₹ 47,500 था।

i) पूँजी पर 5% प्रति वर्ष की दर से ब्याज लिया जाना हैं। **ii)** आहरणों पर 5% प्रति वर्ष की दर से ब्याज दिया जाना है। आहरण R के ₹ 16,000, S के ₹ 12,000 **iii)** R ने फर्म को ₹ 20,000 अग्रिम दिये है। **iv)** R को विक्रय पर, जो ₹ 2,00,000 पर 2% कमीशन दिया जाना है, जबकि S को वितरण योग्य लाभ का 10% कमीशन (कमीशन काटने के पूर्व किन्तु R के कमीशन को काटने के पश्चात्) दिया जाना हैं। **v)** यह निर्णय किया गया कि विभाजन योग्य लाभ का 10% संचय खाता में अन्तरित किया जाये।

R and S are partners with capitals of ₹ 80,000 and ₹ 60,000 respectively. The profit for the ended 31st March, 2017 amounted to ₹ 47,500 before considering the following :

i) Interest on capital be allowed @ 5% p.a. **ii)** Interest on drawings be charged @ 5% p.a. Drawings R – ₹ 16,000, S- ₹ 12000 **iii)** R had advanced loan to the firm amounting to ₹ 20,000 **iv)** R was allowed commission @ 2% on sales which was ₹ 2,00,000. S allowed commission @ 10% on divisible profit (before charging his commission but after charging R's commission.) **v)** It was decided to transfer 10% of divisible profit to Reserve Account.

Prepare Profit & Loss Appropriation Account.

हल :

Profit & Loss Account

Dr. *for the year ended 31st March, 2017* ***Cr.***

Particulars	***Amount ₹***	***Particulars***	***Amount ₹***
To Interest on R's Loan	1,200		
To Net Profit trans. to P. & L. App. A/c	46,300	By Profit for the year	47,500
	47,500		**47,500**

Profit & Loss Appropriation Account

Dr. *for the year ended 31st March,2017* ***Cr.***

Particulars		***Amount ₹***	***Particulars***		***Amount ₹***
To Interest on Capital :			By Profit and Loss A/c		46,300
R	4,000		By Interest on Drawings :		
S	3,000	7,000	R	400	
To Commission to R 2,00,000 x 2%		4,000	S	300	700
To Commission to S 36,000 x 10%		3,600			
To Reserve 32,400 x 10%		3,240			
To Capital Accounts					
R	14,580				
S	14,580	29,160			
		47,000			**47,000**

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

बंद हुये साझेदारी खातों में समायोजन
Past Adjustments in Closed Partnership Accounts

कभी– कभी साझेदारी फर्म की पुस्तकों को बन्द करने के बाद यह ज्ञात होता है कि इन खातों में कोई गलती रह गयी हैं या साझेदारी संलेख में दी गयी शर्तों का पूरी तरह पालन नहीं हुआ हैं। अतः लेखांकन अवधि की समाप्ति के बाद इन शर्तों के पालन हेतु चूंकों (Ommission) अथवा गलतियों (Errors) के सुधार हेतु समायोजन की आवश्यकता होती हैं। इसके लिए किये गये लेखांकन व्यवहार को बंद हुये साझेदारी खातों में समायोजन कहा जाता है। प्रायः निम्न मदों के लिए समायोजन किये जाते हैं।

1. पूँजी पर ब्याज का लेखा न किया जाना या कम/अधिक लगा देना
2. आहरण पर ब्याज का लेखा न किया जाना
3. साझेदारों के पारिश्रमिक (वेतन, फीस व कमीशन) का लेखा न करना
4. गलत अनुपात में लाभों का विभाजन होना
5. लाभ–विभाजन अनुपात में परिवर्तन होना।

समायोजन की विधियाँ

एकल प्रविष्टि द्वारा समायोजन (Past Adjustment by Passing Single Entry)	लाभ–हानि समायोजन खाता खोलकर (Past Adjustment by P & L Adjustments A/c)

I. एकल प्रविष्टि द्वारा समायोजनः – जो साझेदारों को देना हैं, उनके खाते में (Cr) व जो राशि उनसे वसूल करनी हैं उसे उनके खाते में डेबिट करके एक विश्लेषण तालिका तैयार की जाती है। अन्त में शुद्ध प्रभाव के आधार पर समायोजन प्रविष्टि की जाती है।

Gaining Partner's Capital A/c Dr. (जिसे अधिक राशि मिली है)
To Sacrificing Partner's Capital A/c (जिसे कम राशि मिली है)

II. लाभ हानि समायोजन खाता खोलकर समायोजनः –

(i) साझेदारों की पूँजी पर ब्याज, वेतन, कमीशन आदि के छूट जाने के लिए
P & L Adjustment A/c Dr.
To Partner's Capital/Current Account

(ii) आहरण पर ब्याज छूट जाने के लिए
Partner's Capital/Current A/c Dr.
To P & L Adjustment A/c

(iii) अन्त में P & L Adjustment A/c बनाकर उसके शेष को साझेदारों में उनके लाभ विभाजन अनुपात में बांटते हैं।

a. P & L Adjustment A/c का Cr. शेष (अर्थात् लाभ होने पर)
P & L Adjustment A/c Dr.
To Partner's Capital/Current Account

b. P & L Adjustment A/c का Dr. शेष (अर्थात् हानि होने पर): विपरीत प्रविष्ठियां बनाएंगे

Profit & Loss Adjustment A/c
For the year ended.....

Particulars		Amount ₹	Particulars		Amount ₹
To Interest on Capital			By Interest on Drawings		
A	xx		A	xx	
B	xx	xx	B	xx	xx
To Partner's Salary			By Partner's Capital A/c		
A	xx		Current A/c (share of Loss)		
B	xx	xx	A	xx	
To Partner's Commission			B	xx	xx
A	xx		(Balancing Figure)		
B	xx	xx			
		xx			xx

नोट :– यदि पूँजी खाते स्थिर पूँजी खाता पद्धति पर रख गये है तो लेखा पूँजी खाते के स्थान पर चालू खाते के माध्यम से करेंगे।

उदाहरणः 14 : R, S तथा T एक फर्म में साझेदार है। 3 : 2 : 1 के अनुपात में लाभ–हानि बाँटते हैं। उनके पूँजी खातों के शेष 31 मार्च 2017 को आहरण तथा लाभ का समायोजन करने के पश्चात् इस प्रकार है :

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

R ₹ 1,15,000 S ₹ 70,000 तथा T ₹ 42,000 वर्ष के खाते बन्द करने के पश्चात् ज्ञात हुआ कि पूँजी तथा आहरण पर 10% p.a. ब्याज की दर से ब्याज लगाना रह गया। उनके आहरण इस प्रकार थे – R ₹ 15,000, S ₹ 10,000 तथा T ₹ 8,000 जिन पर ब्याज क्रमशः ₹ 1,000, ₹ 600 तथा ₹ 400 बना। वर्ष का लाभ, बिना पूँजी व आहरण पर ब्याज के समायोजन के पूर्व ₹ 60,000 था। इन समायोजनों के लिए जर्नल प्रविष्टियाँ दीजिए तथा लाभ–हानि समायोजन खाता और साझेदारों के पूँजी खाते तैयार कीजिये।

R, S and T are partners in a firm sharing profits and losses in the ratio of 3 : 2 : 1. On March 31st 2017 their capital accounts show balances-R ₹ 1,15,000, S ₹ 70,000 and T ₹ 42,000, after making all the necessary adjustments in connection with drawings and net profit. After closing the books of accounts it was found that interest on capital and drawings @ 10% was not provided. The drawings of the partners were- ₹ 15,000, S ₹ 10,000 and T ₹ 8,000 and the interest thereon amounted to ₹ 1000, 600 and 400 respectively. The net profit for the year before considering above interest on capital and drawings amounted to ₹ 60,000.

हल : प्रश्न में दी गई साझेदारों की पूँजी वर्ष के अन्त की पूँजी है, जबकि पूँजी पर ब्याज की गणना करने हेतु वर्ष के आरम्भ की पूँजी ज्ञात होनी चाहिए।

1 अप्रैल 2016 को पूँजी का शेष होगा :

Particulars	R ₹	S ₹	T ₹
Capital as on 31.03.2017	1,15,000	70,000	42,000
Add : Drawings during the year	15,000	10,000	8,000
	1,30,000	80,000	50,000
Less: Profit already credited	30,000	20,000	10,000
Capital as on 01.04.2016	1,00,000	60,000	40,000
Interest on Capital @ 10 % p.a.	10,000	6,000	4,000

Journal (Adjustment Entries)

2017				₹	₹
Mar,31	P & L Adjustment A/c	Dr.		20,000	
	To R's Capital A/c				10,000
	To S's Capital A/c				6,000
	To T's Capital A/c				4,000
	(Adjustment of Interest on Capital not written in the Profit & Loss Account)				
Mar,31	R's Capital A/c	Dr.		1,000	
	S's Capital A/c	Dr.		600	
	T's Capital A/c	Dr.		400	
	To P & L Adjustment A/c				2,000
	(Adjustment of Interest on drawings not written in the P & L Account)				
Mar,31	R's Capital A/c	Dr.		9,000	
	S's Capital A/c	Dr.		6,000	
	T's Capital A/c	Dr.		3,000	
	To P & L Adjustment A/c				18,000
	(Loss on account of adjustment distributed to partners in their profit sharing ratio.)				

Profit and Loss Adjustment Account (For the year ended on 31st March 2017)

Dr. **Cr.**

Particulars		Amount ₹	Particulars		Amount ₹
To Interest on Capital :			By Interest on Drawings:		
R	10,000		R	1,000	
S	6,000		S	600	
T	4,000	20,000	T	400	2,000
			By Partner's Capital A/c :		
			R	9,000	
			S	6,000	
			T	3,000	18,000
		20,000			**20,000**

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Partner's Capital Account

Dr. **Cr.**

Particulars	Amount ₹			Particulars	Amount ₹		
	R	S	T		R	S	T
To P & L Adjustment a/c (Interest on Drawings)	1,000	600	400	By Balance b/d	1,15,000	70,000	42,000
				By P&L Adjustment a/c (Interest on Capital)	10,000	6,000	4,000
To P & L Adjustment a/c (Loss on Adjustments)	9,000	6,000	3,000				
To Balance c/d	1,15,000	69,400	42,600				
	1,25,000	**76,000**	**46,000**		**1,25,000**	**76,000**	**46,000**

उपर्युक्त समायोजन केवल एक प्रविष्टि द्वारा भी किया जा सकता है। ऐसी दशा में निम्नलिखित तालिका से समायोजन की राशि निकाली जायेगी तथा फिर नीचे दी गई प्रविष्टि की जायेगी (जब प्रश्न में केवल एक समायोजन प्रविष्टि करने के लिये ही कहा जाये) :

Analytical Table (विश्लेषण तालिका)

Particulars	R		S		T		Firm	
	Dr. ₹	Cr. ₹	Dr. ₹	Cr. ₹	Dr. ₹	Cr. ₹	Dr. ₹	Cr. ₹
Interest on Capital	--	10,000	--	6,000	--	4,000	20,000	
Interest on Drawings	1,000	--	600	--	400	--	--	2,000
							20,000	2,000
Loss of ₹ 18,000 debited to partners in the ratio 3: 2 : 1	9,000	--	6,000	--	3,000	--	--	18,000
Total	10,000	10000	6,600	6,000	3,400	4,000	20,000	20,000
Final Adjustment		--	600 (Dr.)	--		600 (Cr.)		

Particulars			Amount ₹	
			Dr.	Cr.
S's Capital A/c		Dr.	600	
To T's Capital A/c				600
(Adjustment of Partner's Accounts made)			**600**	**600**

Dr. **Partner's Capital Account** **Cr.**

Particulars	Amount ₹			Particulars	Amount ₹		
	R	S	T		R	S	T
To T's Capital A/c		600		By Balance b/d	1,15,000	70,000	42,000
To Balance c/d	1,15,000	69,400	42,600	By S's Capital A/c			600
	1,15,000	**70,000**	**42,600**		**1,15,000**	**70,000**	**42,600**

साझेदार को लाभ का आश्वासन या गारंटी
(Guarantee of Profit to a Partner)

कभी–कभी फर्म के हित में किसी ऐसे व्यक्ति को साझेदार बना लिया जाता है, जो किसी क्षेत्र विशेष में विशिष्ट योग्यता रखता हैं। ऐसा साझेदार न्यूनतम लाभ के संबंध में पुराने साझेदारों से आश्वासन चाहता हैं, ताकि उसे भविष्य में किसी प्रकार की हानि न हों। इसे ही लाभ की गारन्टी या आश्वासन कहते है। यह गारन्टी चार प्रकार की हो सकती है–

1.फर्म द्वारा गारन्टी (Gurantee by firm) 2. साझेदार द्वारा गारन्टी (Gurantee by Partners) 3. साझेदार द्वारा फर्म को गांरटी (guarantee by partner to firm) 4.साझेदार द्वारा फर्म को और फर्म द्वारा साझेदार को एक साथ गांरटी (Simultaneous gurantee by the partner to the firm and by the firm to the partner)

1.फर्म द्वारा गारन्टी या सभी साझेदारों द्वारा गारन्टी– वितरण योग्य लाभों में गारन्टी प्राप्त साझेदार का हिस्सा उसके लाभ विभाजन अनुपात में ज्ञात कर शेष लाभ शेष साझेदारों में उनके लाभ विभाजन अनुपात में बांट दिया जायेगा। तत्पश्चात् गारन्टी प्राप्त साझेदार का हिस्सा गारन्टी की राशि से जितना कम होता है, उसकी पूर्ति शेष साझेदारों के लाभ–हानि अनुपात में की जायेगी।

नोटः (1) गारन्टी प्राप्त साझेदार का हिस्सा गारन्टी की राशि से अधिक है तो वह अधिक राशि ही प्राप्त करेगा।

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

(2) यदि फर्म को हानि हो तो भी गारन्टी प्राप्त साझेदार गारन्टी की राशि प्राप्त करेगा। (3) कभी–कभी प्रश्न में शेष साझेदारों द्वारा गारन्टी की राशि वहन करने का अनुपात दिया रहता है, तो उसी अनुपात में शेष साझेदारों द्वारा गारन्टी की राशि की पूर्ति की जायेगी।

2.साझेदार द्वारा गारन्टी – यदि गारन्टी किसी साझेदार विशेष द्वारा दी गयी है, तो फर्म के वितरण योग्य लाभों जो समस्त साझेदारों में उनके लाभ–हानि अनुपात में बांट दिया जाायेगा। गारन्टी प्राप्त साझेदार का हिस्सा गारन्टी की राशि से जितना कम होता है, उतनी राशि गारन्टी देने वाले साझेदार के हिस्से में से घटा दी जायेगी तथा गारन्टी प्राप्त करने वाले साझेदार के हिस्से में जोड़ दी जायेगी।

उदाहरण 15: X तथा Y 3 : 2 के अनुपात में एक फर्म में साझेदार है। Z को लाभ 1/5 के भाग के लिए साझेदार बनाया तथा फर्म द्वारा ₹ 50,000 के न्यनूतम लाभ की गारन्टी दी गई। उन्होने तय किया कि X तथा Y के लाभ विभाजन अनुपात में कोई परिवर्तन नहीं होगा। वर्ष 2016-2017 में ₹ 1,50,000 का लाभ हुआ। लाभ–हानि नियोजन खाता बनाइए यदि,
(1) गारन्टी फर्म द्वारा दी गयी हो। (2) जब गारन्टी X द्वारा दी गयी हो।

X and Y are partners in a firm sharing profit and loss in the ratio of 3 : 2. They decided to admit Z with 1/5 the share in profits with a guaranteed amount of ₹ 50,000. They decided that the profit sharing ratio between X and Y will not change. The firm earned profits of ₹ 1,50,000 for the year 2016-17. Prepare Profit & Loss Appropriation Account when -: (1) Guarantee is provided by firm (2) Guarantee is provided only by X

हल: 1 **Profit & Loss Appropriation A/c** (for the year ending 31st March 2017)

Particulars		Amount ₹	Particulars	Amount ₹
To X's Capital	72,000		By Profit for the year	1,50,000
Less guarantee to Z	12,000	60,000		
To Y's Capital	48000			
Less guarantee to Z	8,000	40,000		
To Z's Capital	30,000			
Add guarantee by X	12,000			
Add guarantee by Y	8,000	50,000		
		1,50,000		**1,50,000**

अनुपात = 12:8:5

वैकल्पिक रीति : 31 मार्च 2017 को समाप्त होने वाले वर्ष का लाभ ₹ 1,50,000 है। इस लाभ में Z का भाग ₹ 30,000 उसे दी गयी न्यूनतम लाभ की गारन्टी ₹ 50,000 से कम है। अतः सर्वप्रथम उपलब्ध लाभ में से Z को ₹ 50,000 लाभ दिया जायेगा। शेष लाभ ₹ 1,00,000 Z और Y में उनके लाभ विभाजन अनुपात (3 : 2) में बांट दिया जायेगा। अर्थात् X को ₹ 60,000 व Y को ₹ 40,000 लाभ प्राप्त होगा।

P & L Appropriation A/c

Dr. **Cr.**

Particulars		Amount ₹	Particulars	Amount ₹
To Capital			By Net Profit	1,50,000
X	60,000			
Y	40,000			
Z	50,000	1,50,000		
		1,50,000		1,50,000

2. जब गारन्टी X द्वारा दी गयी हो

Dr. **P & L Appropriation A/c** **Cr.**

Particulars		Amount ₹	Particulars	Amount ₹
To Capital			By Net Profit	1,50,000
X	72,000			
Less guarantee to Z	20,000	52,000		
Y		48,000		
Z	30,000			
Add guarantee from X	20,000	50,000		
		1,50,000		1,50,000

3) साझेदार द्वारा फर्म को गांरटी (Guarantee by partner to Firm) कोई साझेदार फर्म के लिए किसी निश्चित न्यूनतम आय के कमाने की गांरटी दे। यदि साझेदार गांरटी की राशि फर्म के लिए नहीं कमा पाता है। तो कमी की राशि उसके पूँजी खाते से

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

ले ली जाती है।

उदाहरण 16: अ, ब, व स 5:3:2 के अनुपात में लाभ विभाजन करते हुए साझेदार है। सी फर्म को न्यूनतम ₹ 60,000 कमाने की गारंटी देता है। लेकिन स फर्म के लिए केवल ₹ 40,000 ही अर्जित करता है। फर्म द्वारा कुल कमाया गया लाभ ₹ 1,00,000 साझेदारों मे लाभ के बटंवारे हेतु लाभ हानि नियोजन खाता बनाइए।

A,B and C are partner, sharing profit in ratio 5:3:2 C gives guarantee to firm of minimum ₹ 60,000 earnings but C could earn only ₹ 40,000 for the firm. Total profit earned by the firm is ₹ 1,00,000. Prepare Profit & Loss appropriation account for distribution of profit among partners.

Dr. **Profit and Loss Appropriation Account** **Cr.**

Particulars	Amount ₹	Particulars	Amount ₹
To Partners capital A/c		By Profit & Loss Account	1,00,000
A	60,000	By C' s capital A/c	20,000
B	36,000	(guaranteed amount)	
C	24,000		
	1,20,000		1,20,000

टिप्पणी – इस प्रकार वास्तव में स को केवल ₹ 4000 का लाभ ही प्राप्त हुआ है । क्योंकि उसके द्वारा गारन्टी की गई राशि में कमी ₹ 60000 - 40000 = ₹ 20000 उसके पूँजी खाते से चार्ज की गई है ।

4. साझेदार द्वारा फर्म को और फर्म द्वारा साझेदार को एक साथ गारंटी (Simultaneous gurantee by the partner to the firm and by the firm to the partner) साझेदार द्वारा दी गई गारन्टी दिये गए लाभ से उसने कम आय कमा कर दी है तो अन्तर की राशि उससे वसूल कर लाभ हानि नियोजन खाते में क्रेडिट करेंगे तथा फर्म ने जिस साझेदार को न्यूनतम लाभ की गारन्टी दी है उसे न्यूनतम राशि देने के बाद शेष साझेदार बचे हुए लाभ को अपने लाभ विभाजन अनुपात में बांटेगे यदि लाभ अपर्याप्त है।

उदाहरण 17. अ, ब, तथा स 3 : 2 : 1 के अनुपात में लाभ बांटते हुए साझेदार है उनके बीच तय हुआ कि **1.** स को न्यूनतम ₹ 1,50,000 लाभ के हिस्से के रूप में दिया जायेगा। **2.** ब ने फर्म को गारंटी दी कि न्यूनतम ₹ 2,40,000 फर्म को कमा कर देगा। फर्म ने चालू वर्ष में ₹ 7,60,000 की आय अर्जित की। इसमें ब द्वारा फर्म को कमा कर दी गई राशि ₹ 1,60,000 शामिल है।

A, B and C are Partner, sharing profit in ratio 3:2:1. It was agreed that **1.** C would get minimum profits ₹ 1,50,000 **2.** B made guarantee to the firm that he would earn minimum ₹ 2,40,000 Firm earned ₹ 7,60,000 for the current year it included ₹ 1,60,000 earned by B.

Dr. **Profit and Loss Appropriation Account** **Cr.**

Particulars	Amount ₹	Particulars	Amount ₹
To Partners Capital A/c		By Profit & Loss Account	7,60,000
A	4,14,000	By B' s capital A/c	80,000
B	2,76,000	(guaranteed amount)	
C	1,50,000		
	8,40,000		**8,40,000**

कार्यशील टिप्पणियां : **1.** ब ने न्यूनतम ₹ 2,40,000 कमाने की गारन्टी दी जबकि केवल ₹ 1,60,000 कमाये। अतः शेष ₹ 80,000 ब के पूँजी खाते से चार्ज किये गये हैं।

2.. फर्म के लाभ 7,60,000+80,000=8,40,000 में स का 1/6 हिस्सा ₹ 1,40,000. है। जबकि फर्म ने उसे ₹ 1,50,000 भुगतान की गारन्टी दी है अतः शेष लाभ ? (8,40,000 –1,50,000) 6,90,000 अ व ब 3:2 के अनुपात में बाटेंगे।

उदाहरण 18 :

1 जनवरी 2016 को एक फर्म में 'अ', 'ब', और 'स' की पूँजी खातों का शेष क्रमशः ₹ 10,000, ₹ 18,000, एवं ₹ 15,000 था। उन्होंने लाभ हानि बाटने से पूर्व निम्न समायोजन करने का निश्चय किया : **1.** अ को प्रति माह ₹ 1000 वेतन के दिये जायें। **2.** सभी साझेदारों को 10 प्रतिशत वार्षिक ब्याज पूँजी पर दिया जायें। **3.** एक से तीन तक समायोजन करने के बाद 'अ' को शेष लाभ पर 10 प्रतिशत कमीशन दिया जायेगा। **4.** एक से चार तक समायोजन करने के बाद 'ब' को शेष लाभ का 1/4 भाग दिया जायेगा। **5.** शेष लाभ 'अ' एवम् 'स' में 3 : 2 के अनुपात में बॉटा जाये। उपरोक्त समायोजनों को करने से पूर्व फर्म का लाभ 31 दिसम्बर 2016, को ₹ 44,900 था।

फर्म का लाभ –हानि नियोजन खाता एवं साझेदारों के पूँजी खाते बनाइये।

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

on 1st January 2016 the balances of capital a/cs of A, B and C were ₹ 10,000, ₹ 18,000, and ₹ 15,000 respectively. They decided to make following adjustments before distributing profit & loss.
(i) ₹ 1000 per months is to be given to A as salary. **(ii)** 10% P.A. interest on capital is to be given to all partners. **(iii)** After adjusting one to three adjustments, 10% commission is to be given to A on Balance profit. **(iv)** After adjusting one to four adjustments, 1/4 part of balance of profit is to given to B. **(v)** Balance of profit is to divided in 3:2 ratio to A and C On 31st December, 2016, the profit of the firm was ₹ 44,900 before above adjustment. Prepare Profit and Loss Appropriation Account of the Firm and partners Capital Accounts.

हल:

Profit and Loss Appropriation Account
for the year ended 31 December, 2016

Dr. **Cr.**

Particulars		Amount ₹	Particulars	Amount ₹
To Salary to A		12,000	By Profit & Loss A/c	44,900
To Interest on Capital:				
A	1,000			
B	1,800			
C	1,500	4,300		
To Commission to A $(28,600 \times \frac{10}{110})$		2,600		
To Partner's Capital A/c				
B $(26,000 \times \frac{1}{5})$	5,200			
C $(20,800 \times \frac{3}{5})$	12,480			
D $(20,800 \times \frac{2}{5})$	8,320	26,000		
		44,900		**44,900**

Dr. **Partners Capitals Accounts** **Cr.**

Date	Particulars	A ₹	B ₹	C ₹	Date	Particulars	A ₹	B ₹	C ₹
2016	To Balance c/d	38,080	25,000	24,820	2016	By Balance b/d	10,000	18,000	15,000
31Dec,					31Dec,	By Salary A/c	12,000	-	-
					31Dec,	By Int. on Capital A/c	1,000	1,800	1,500
					31Dec,	By Commission A/c	2,600	-	-
					31Dec,	By P&L App. a/c	12,480	5,200	8,320
		38,080	**25,000**	**24,820**			**38,080**	**25,000**	**24,820**

उदाहरण 19 : 1 जनवरी, 2016 को अ,ब व स 2 : 1 : 1 के अनुपात में लाभ हानि बांटते हुये साझेदारी में सम्मिलित हुये। साझेदारी संलेख में स को लाभों की न्यनूतम ₹ 70,000 लाभ की गारण्टी की व्यवस्था की गयी। 31 दिसम्बर, 2016 को अन्त होने वाले वर्ष में अ के ऋण पर ₹ 9,000 ब्याज चार्ज करने से पूर्व फर्म को हानि ₹ 2,00,000 की हुई। 31 दिसम्बर 2016 को फर्म का लाभ–हानि नियोजन खाता तैयार कीजिये।

A, B and C entered into partnership on 1st January 2016 to share profit in the ratio of 2 : 1 :1. It was provided in the deed that C's share of profit will not be less than ₹ 70,000 p.a.. The loss for the year ended 31st December 2016 where ₹ 2,00,000 before allowing interest ₹ 9,000 A loss which is due for the current year. Prepare Profit and Loss Appropriation A/c for the year ended 31st December 2016.

हल : हानि की दशा में लाभ – हानि खाता बनाया जाएगा ना कि लाभ– हानि नियोजन खाता।

Profit and Loss Account
for the year ended 31 Dec., 2016

Dr. **Cr.**

Particulars	Amount ₹	Particulars	Amount ₹
To Loss before Interest on A's Loan	2,00,000	By Net Loss transferred to:	
To interst on A's Loan	9,000	A's Capital A/c (2/3)	1,86,000
To C's Capital A/c (Minimum share of Profit)	70,000	B's Capital A/c (1/3)	93,000
	2,79,000		**2,79,000**

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

महत्त्वपूर्ण बिन्दु

–भारतीय साझेदारी अधिनियम 1932 की धारा के अनुसार '' साझेदारी उन व्यक्तियों का पारस्परिक सम्बन्ध है जो ऐसे व्यापार के लाभों को विभाजित करने के लिए सहमत हुऐ है, जिसका संचालन उन सबके द्वारा या उन सबकी ओर से किसी के द्वारा किया जाता है।''

–जो व्यक्ति किसी व्यापार या व्यवसाय को करने का समझौता करते है, उन्हे साझेदार तथा साझेदारों के समूह को फर्म कहा जाता है। फर्म का व्यवसाय फर्म के नाम से किया जाता है।

–सीमित पूँजी, सीमित प्रबन्ध क्षमता व चातुर्य, अनिश्चित अस्तित्व आदि एकाकी व्यापार की कमियों को दूर करने के लिए साझेदारी की आवश्यकता हुई।

– **साझेदारी की विशेषतायें:**

(1) दो या दो से अधिक व्यक्तियों का होना, अधिकतम संख्या 50 तक सीमित **(2)** साझेदारों के मध्य समझौता या अनुबन्ध होना **(3)** लाभों का विभाजन में प्रत्येक साझेदार का भाग होना, हानि में प्रत्येक का भाग आवश्यक नहीं **(4)** व्यवसाय का होना (5) व्यवसाय का संचालन सभी के द्वारा अथवा उन सभी की ओर से किसी एक द्वारा किया जाना **(6)** साझेदारी का संचालन भारतीय साझेदारी अधिनियम 1932 द्वारा होना **(7)** साझेदारों का असीमित दायित्व होता है **(8)** साझेदारी फर्म का साझेदारों से पृथक अस्तित्व नहीं होता। साझेदारों के मध्य लिखित समझौता साझेदारी संलेख कहलाता है। इसमें साझेदारों के पारस्परिक अधिकार एवं कर्तव्यों का उल्लेख होता है तथा भविष्य में साझेदारों के मध्य किसी भी प्रकार का मतभेद होने पर इस संलेख द्वारा उसे आसानी से दूर किया जा सकता है। साझेदारी संलेख के अभाव में लेखांकन की दृष्टि से निम्न नियम लागू होते है **(9)** साझेदारों को पूँजी पर ब्याज नहीं दिया जाएगा, साझेदारों के आहरण पर कोई ब्याज नहीं लिया जाऐगा। कार्य व अतिरिक्त कार्य का कोई पारिश्रमिक (वेतन आदि) नहीं दिया जायेगा। समस्त साझेदार अपना लाभ हानि समान अनुपात में बांटेंगे। साझेदार द्वारा फर्म को दिये गये ऋण पर 6% वार्षिक दर से ब्याज दिया जायेगा।

– **साझेदारों के पूँजी खाते रखने की दो विधियां है–**

(1) परिवर्तनशील पूँजी खाता विधि : इसमें प्रत्येक साझेदार का एक ही पूँजी खाता बनाया जाता है, पूँजी से सम्बन्धित सभी मदों के लेखा उसी पूँजी खाते में किया जाता है। **(2) अपरिवर्तनशील पूँजी खाता विधि** : इस विधि में प्रत्येक साझेदार के दो खाते बनाये जाते है साझेदारों के चालू खाते, पूँजी खाते व साझेदारों के चालू खाते, पूँजी लगाने व पूँजी में कमी को छोड़कर पूँजी सम्बन्धी अन्य सभी मदों का लेखा चालू खातों में किया जाता हैं।

– **लाभ हानि का विभाजन** :

लाभ हानि खाता बनाने के बाद लाभ हानि नियोजन खाता बनाया जाता हैं, जो लाभ हानि खाते का विस्तार मात्र है। इस खाते में साझेदारों को देय वेतन पारिश्रमिक, कमीशन पूँजी पर ब्याज आदि को डेबिट पक्ष में दिखाया जाता है। शुद्ध लाभ तथा आहरण पर ब्याज को क्रेडिट पक्ष में दर्शाया जाता है, और इस खाते को शेष साझेदारों के पूँजी खाते में लाभ विभाजन अनुपात में में हस्तान्तरित कर दिया जाता है।

– **पूँजी पर ब्याजः** पूँजी पर ब्याज निर्धारित दर से समय के अनुसार तभी दिया जाता है जब साझेदारी संलेख में इसका स्पष्ट उल्लेख हो, यदि पूँजी पर ब्याज देने का प्रावधान है तब भी पूँजी पर ब्याज लाभों में से ही दिया जायेगा। जब तक की इसे लाभों पर प्रभार (Charge) न माना गया हो।

– **आहरण पर ब्याजः** साझेदारी संलेख में व्यवस्था होने पर आहरण पर ब्याज लिया जा सकता हैं आहरण पर ब्याज ज्ञात करने की दो प्रमुख विधियां है। **(1)** गुणनफल विधि **(2)** मासिक आहरण विधि

– **साझेदारी खातों को बन्द करने के पश्चात् समायोजनः** यदि अन्तिम लेखा तैयार करने के पश्चात कोई समायोजन करना बाकी रहना ध्यान में आता है, तो एक प्रविष्टि द्वारा या लाभ – हानि समायोजन खाता बनाकर आवश्यक प्रविष्टियों द्वारा समायोजन/सुधार किया जाता है। साझेदार को लाभ का आश्वासन या गारण्टी कभी–कभी किसी साझेदार को फर्म की ओर से न्यूनतम लाभ की गारण्टी दी जाती है, ऐसी स्थिति में गारण्टी से कम प्राप्त राशि सम्बन्धी गारण्टी देने वाले साझेदार या फर्म से उसी कमी की पूर्ति की जाती है।

शब्दावली (Glossary)

साझेदारी	Partnership	साझेदारी उन व्यक्तियों के बीच एक संबध है जो एक ऐसे व्यवसाय के लाभ को बॉटने के लिए सहमत है, जिसका संचालन उन सबके द्वारा या उनमें से किसी एक के द्वारा किया जाता है ।
साझेदार	Partners	साझेदारी में जो व्यक्ति शामिल होते है, वे साझेदार कहलाते है ।
फर्म का नाम	Name of Firm	जिस नाम से व्यवसाय संचालित होता है उसे फर्म का नाम कहते है।
सझेदारी संलेख	Partnership Deed	साझेदारों में मध्य जो लिखित समझौता होता है, उसे साझेदारी संलेख कहते है ।
साझेदारों की पूँजी	Partners Capital	साझेदारों द्वारा फर्म में लगाया गया धन साझेदारों की पूँजी कहलाते है ।

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

स्थायी पूँजी	Fixed Capital	जब साझेदारी फर्म के जीवनकाल में पूँजी को अपरिवर्तित रखने का निर्णय लिया जाते है, तो इसे स्थायी पूँजी कहते है ।
परिवर्तनशील पूँजी	Fluctuating Capital	जब पूँजी से सम्बन्धित सभी मदों का लेखा पूँजी खाते में किया जात है तो पूँजी खाते का शेष परिवर्तित होता रहता है इस लिए इस प्रकार रखा गया पूँजी खाता परिवर्तनशील पूँजी खाता कहलाता है ।
आहरण	Drawings	साझेदारों द्वारा व्यवसाय से निजी उपयोग के लिए निकाला गया धन आहरण कहलाता है ।
लाभ विभाजन अनुपात	Profit Sharing Ratio	जिस अनुपात में साझेदार लाभ बांटने के लिए सहमत हुए है।
लाभ– हानि नियोजन खाता	Profit & Loss Appropriation Account	ये लाभ हानि खाते का विस्तार है साझेदारों से सम्बन्धित समायोजन जैसे साझेदारो का वेतन, कमीशन, पूँजी पर ब्याज, आहरण पर ब्याज आदि का लेखा करने के बाद इस खाते का शेष साझेदारों में लाभ विभाजन अनुपात में वितरित किया जाता है ।

अभ्यासार्थ प्रश्न
(Questions for Exercise)

बहुचयनात्मक प्रश्न (Multiple choice questions)

1. साझेदारी संलेख के अभाव में ऋण पर ब्याज की दर होगी :–

अ) 6 प्रतिशत प्रतिमाह **ब)** 0. 50 प्रतिशत प्रतिमाह **स)** 5 प्रतिशत वार्षिक दर **द)** 4 प्रतिशत वार्षिक दर

In the absence of Partnership Deed the interest on loan is payable at:

(a) 6% p.m. **(b)** 0. 50% p.m. **(c)** 5% p.a. **(d)** 4% p.a.

2. साझेदारी संलेख के अभाव में लाभ–हानि अनुपात होगा :–

अ) पूँजी के अनुपात में **ब)** बराबर–बराबर **स)** त्याग अनुपात में **द)** जैसा साझेदारों ने तय किया हो

In absence of Partnership deed profit sharing ratio is:

(a) in capital ratio **(b)** equally **(c)** sacrificing ratio **(d)** as decided by the partners

3. आहरण पर ब्याज की गणना 10 प्रतिशत की वार्षिक दर से कीजिए। यदि उसने वर्ष के दौरान ₹ 24,000 आहरण किए।

अ) ₹ 1,200 **ब)** ₹ 1,800 **स)** ₹ 2,400 द) ₹ 1,600

Calculate the Interest on Ram's drawings @ 10% if he withdrew ₹ 24,000 during the year.

(a) ₹ 1,200 **(b)** ₹ 1,800 **(c)** ₹ 2,400 **(d)** ₹. 1,600

4. साझेदारी संलेख के अभाव में

अ) पूंजी पर ब्याज दिया जायेगा **ब)** आहरण पर ब्याज चार्ज किया जायेगा

स) वेतन दिया जायेगा **द)** लाभों में हिस्सा दिया जायेगा।

In absence of partnership deed:

(a) Interest on capital is given **(b)** Interest on Drawing is charged

(c) Salary is given **(d)** Provided share in profits

5. एक साझेदारी में साझेदारों की अधिकतम संख्या होती है

अ) 2 **ब)** 10 **स)** 20 **द)** 50

In a firm maximum numbers of partners are:

(a) 2 **(b)** 10 **(c)** 20 **(d)** 50

6. साझेदारी संलेख के अभाव में साझेदार ..... पाने का हकदार नहीं है

अ) वेतन **ब)** पूँजी पर ब्याज **स)** फीस व कमीशन **द)** उपर्युक्त सभी

Partners are not entitled to receive -------- in the absence of partnership agreement:

(a) salaries **(b)** interest on capital **(c)** fees and commission **(d)** all the above

7. साझेदारों के पूँजी खातों का शेष कम होगा –

अ) पूंजी पर ब्याज से **ब)** आहरण पर ब्याज से **स)** वेतन से **द)** साझेदारों के ऋण पर ब्याज से

The balance of partners capital account will reduce with ------

(a) Interest on capital **(b)** Interest on drawings **(c)** Salaries **(d)** Interest on partners loan

8. साझेदारी संलेख साझेदारों के मध्य ..... समझौता है

अ) मौखिक **ब)** लिखित **स)** गर्भित **द)** इनमें से कोई नहीं

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Partnership Deed is the agreement between the partners in:
(a) Oral **(b)** written **(c)** Implied **(d)** None of these
9. वे व्यक्ति जो साझेदारी का निर्माण करते है व्यक्तिगत रूप से ..... कहलाते है।
अ) फर्म **ब)** साझेदार **स)** एकाकी व्यापारी **द)** संयुक्त साहसी
The persons who forms the partnership are individually known as :
(a) Firm **(b)** Partners **(c)** Sole trader **(d)** Coventurers
10. आहरण पर ब्याज फर्म के लिए ..... है।
अ) आय **ब)** व्यय **स)** आय व व्यय दोनों **द)** इनमें से कोई नहीं
Interest on Drawings is ---------- for firm:
(a) Income **(b)** Expenses **(c)** Income and Expense both **(d)** none of these

अति लघूत्तरात्मक प्रश्न (Very Short Answer type Questions)

1. एक फर्म में साझेदारों की न्यूनतम और अधिकतम सदस्यों की सीमा क्या हैं ?
What is the minimum and maximum limit on number of partners in a firm?

2. साझेदारी फर्म से आप क्या समझते हैं ?
What do you understand by Partnership Firm?

3. लाभ हानि नियोजन खाते से आप क्या समझते हैं ?
What do you mean by Profit and Loss Appropriation Account ?

4. ऐसी दो दशाएं बताइए जिससे साझेदारों के स्थायी पूँजी खाते में परिवर्तन हो सकता है।
Give two circumstances in which fixed capital of partners may change.

5. फर्म की पुस्तकों में खोले जाने वाले खातों के नाम बताइए–
a.जबकि पूँजी स्थिर हो। **b.**जबकि पूँजी अस्थिर हो।
What Account are opened:
(a) When the Capitals are fixed. **(b)** When the capitals are fluctuatring.

6. साझेदार की असीमित देयता का क्या अर्थ है ?
What is meant by unlimited liabilities of partner ?

7. लाभों पर प्रभार की तीन मदें बताइये।
State any three items of charges on Profits.

8. साझेदारी की आवश्यकता के कोई दो बिन्दु लिखो।
State any two points regarding need of partnership.

9. परिवर्तनशील पूँजी खाते के क्रेडिट पक्ष में कौन–कौन सी मद दिखाई जाती है ?
What items shown on the credit side of Fluctuating Capital Account ?

10. परिवर्तनशील पूँजी खाते के डेबिट पक्ष में कौन–कौन सी मदे दिखाई जाती हैं ?
What items core shown on the Debit side of Fluctuating Capital Account ?

11. दो मदें लिखिए जो लाभ–हानि नियोजन खाते के क्रेडिट में लिखी जाती है।
Name any two items which are shown the credit of Profit and Loss Appropriation Account.

12. दो मदें लिखिए जो लाभ, हानि नियोजन के डेबिट में लिखी जाती है।
Name any two items which are shown the debit of profit and Loss Appropriation Account.

13. शिप्रा और श्रुति एक फर्म में साझेदार है। फर्म के अन्तिम खाते बनाने के बाद यह ज्ञात हुआ कि शिप्रा को 2000 रूपये वेतन नहीं दिया। सुधार हेतु जर्नल प्रविष्टि दीजिये।
Shipra and Shruti are partners in a firm. After preparing the Final Account. It was found that salary of 2000 was not given to shipra. Give Journal entry for rectification.

14. A, B व C फर्म ने वर्ष के दौरान ₹ 20,000 का लाभ कमाया जिसे साझेदारों में 2 : 1 : 1 के अनुपात में विभाजित कर दिया गया जबकि यह 1 : 2 : 2 के अनुपात में होना चाहिए था। इसके सुधार हेतु एक जर्नल प्रविष्टि दीजिए।(RBSE 2001)
The Firm of A, B & C earned a profit of ₹ 20,000 during the year which was distributed among the partners in the ratio of 2 : 1 : 1, whereas it should be in the ratio of 1 : 2 : 2. Give a Journal entry for rectification.

15. बन्द साझेदारी खातों में समायोजन की विधियों के नाम लिखिए। (RBSE 2008)
Write the names of methods regarding adjustment in closed partnership Accounts.

16. प्रत्येक महीने के मध्य में निकाली गई बराबर राशियों के आहरण पर ब्याज गणना कैसे करेंगे ?
How would you calculate interest on drawings of equal amounts drawn in the middle of every month?

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

लघूत्तरात्मक प्रश्न (Very Short Answer type Questions)

1. दो मदें लिखिए जो लाभ–हानि नियोजन खाते के क्रेडिट में लिखी जाती है।
Name any two items which are shown the credit of Profit and Loss Appropriation Account.

2. साझेदारी संलेख की अनुपस्थिति में निम्न सम्बन्धित नियम बताइए ?
(A) साझेदारों की पूँजी पर ब्याज **(B)** साझेदारों के आहरण पर ब्याज **(C)** साझेदारों के ऋण पर ब्याज
(D) साझेदारों का लाभ विभाजन अनुपात **(E)** साझेदारों का वेतन
In the absence of partnership deed, what are the rules relating to :
(A) Interest on partner's Capital **(B)** Interest on partner's Drawing **(C)** Interest on partner's Loan
(D) Partner's profit sharing Ratio **(E)** Salaries of Partners.

3. एक फर्म के दो साझेदार रश्मि व आशीष है। रश्मि प्रत्येक माह की प्रथम तिथि को ₹ 1000 तथा आशीष प्रत्येक माह की अन्तिम तिथि को ₹ 2000 वर्ष पर्यन्त आहरण करते हैं। आहरण पर 12% वार्षिक दर से ब्याज लगाया जाता है। (RBSE 2005)
Rashmi & Ashish are two partners of a firm. Rashmi withdraws ₹ 1000 at the beginning of each month. Whereas, Ashish withdraw ₹ 2000 at the end of each months during the whole year. Interest on drawing is charged @ 12% per annum calculate the amount of interest at the end of the year.

4. किसी साझेदार को लाभ की गारंटी से क्या तात्पर्य है ?
What is meant by Guarantee of profit to a Partner?

5. यदि **(i)** प्रत्येक महीने के पहले दिन **(ii)** प्रत्येक महीने के अंत में **(iii)** प्रत्येक महीने के मध्य में 6 महीने तक समान राशि निकाली जाए, तो आहरण पर ब्याज की गणना कितनी अवधि के लिए की जाएगी ?
For how much period, interest on drawings will be calculated if the equal amounts are drawn for 6 months ending on **(i)** Ist date of every month. **(ii)** end of every month. **(iii)** Middle of every month?

6. चन्द्र, सूर्य और किरण एक फर्म में साझेदार है। वर्ष 2016 के दौरान उनके आहरण निम्न प्रकार थे
Chandra, Surya and Kiran are partners in a firm, during the year 2016, their drawings were as follows -:

दिनांक (Date)	चन्द्र (Chandra) ₹	सूर्य (Surya) ₹	किरण (Kiran) ₹
01-02-16	1,000	-	2,000
01-05-16	3,000	4,000	1000
01-08-16	-	4,000	3,000
01-12-16	6,000	2,000	4,000

31 दिसम्बर, 2016 को समाप्त वर्ष के लिए आहरण पर 6 प्रतिशत वार्षिक दर से ब्याज की गणना ''गुणनफल विधि'' से कीजिए।
Calculate the interest on drawings @6% p.a. for the year ending on 31st December, 2016 by 'Product Method'
(Ans:- Interest on Drawings ₹ 205; ₹ 270 and ₹ 245)

7. राम, रहीम और रोजा 3 : 2: 1 के अनुपात में लाभ–हानि विभाजित करते हुये साझेदार है। साझेदारी संलेख के अनुसार रोजा का न्यनूतम लाभ ₹ 10,000 वार्षिक होगा। 31 मार्च 2017 को समाप्त हुए अर्द्ध–वर्ष का लाभ ₹ 24,000 था। लाभ–विभाजन हेतु आवश्यक जर्नल प्रविष्टि कीजिए और लाभ एवं हानि नियोजन खाता बनाइये। (RBSE2001)
Ram, Rahim and Roja are partners sharing profit and loss in the ratio of 3 : 2: 1 As per partnership deed Roja's minimum profit will be ₹ 10,000 p.a. The profit for the half year ending on 31st March 2017 was ₹ 24,000. Pass necessary Journal entry for the distribution of the profit and prepare Profit and Loss Appropriation Account.
(Ans. N.P. Divided ₹ 11,400, ₹ 7,600 and ₹ 5,000).

8. X, Y तथा Z की पूँजी क्रमशः ₹ 40,000, ₹ 30,000 तथा ₹ 20,000 है। वर्ष 2016 के लिए उन्हें पूँजी राशियों पर 10% वार्षिक दर की जगह 12% वार्षिक दर से ब्याज दे दिया गया है। सुधार हेतु समायोजन प्रविष्टि दीजिए।
X, Y and Z have Capital of ₹ 40,000, ₹ 30,000 and ₹ 20,000. For the year 2016, Interest was credited to them @ 12% p.a. instead of @ 10% p.a. with what amount you will pass the adjustment entry. (Ans: - A's Capital A/c Dr. ₹ 200 ; C's capital A/c Cr ₹ 200)

9. X, Y और Z 5 :3:2 के अनुपात में लाभ हानि बाँटते हुए साझेदार है। Z फर्म को न्यूनतम ₹ 1,20,000 कमाने की गारंटी देता है। लेकिन Z फर्म के लिए केवल ₹ 80,000 ही अर्जित करता है। फर्म द्वारा कुल कमाया गया लाभ ₹ 2,00,000. साझे दारों में लाभ के बटवारे हेतु लाभ नियोजन खाता बनाइए।
X,Y and Z are partner,s sharing profit in ratio 5 :3:2 Z gives guarantee to firm of minimum ₹ 1,20,000 earnings but Z could earn only ?. 80,000 for the firm. Total profit earned by the firm is ₹ 2,00,000. Prepare Profit & Loss Appropriation Account for distribution of profit among partners.
(Ans. Profit X ₹ 1,20,000, Y ₹ 72,000, Z ₹ 48,000)

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

10. P, Q और R 3:2:1. के अनुपात में लाभ बांटते हुए साझेदार है उनके बीच तय हुआ की 1- R को न्यूनतम ₹ 3,00,000 लाभ के हिस्से के रूप में दिया जायेगा 2- Q ने फर्म को गारंटी दी कि न्यूनतम ₹ 4,80,000 फर्म को कमा कर देगा। फर्म ने चालू वर्ष में ₹ 15,20,000. की आय अर्जित की। इसमें Q द्वारा फर्म को कमा कर दी गई राशि ₹ 3,20,000 शामिल है। साझेदारों मे लाभ के बंटवारे हेतु लाभ नियोजन खाता बनाइए।

P, Q and R are Partner, sharing profit in ratio 3 : 2 : 1 It was agreed that 1. R would get minimum profits ₹ 3,00,000 2. Q made guarantee to the firm that he would earn minimum ₹ 4,80,000 Firm earned ₹ 15,20,000 for the current year it included ₹ 3,20,000 earned by Q. Prepare Profit & Loss Appropriation Account for distribution of profit among partners.(Ans. Profit P ₹. 8,28,000, Q ₹ 5,52,000, R ₹ 3,00,000)

निबन्धात्मक प्रश्न (Essay type Questions)

1. साझेदारी की परिभाषा दीजिए एवं इसकी विशेषताएं बताइए।
Define partnership and discuss it's characterstics.

2. स्थिर तथा परिवर्तनशील पूँजी खातों से आप क्या समझते है? स्थिर तथा परिवर्तनशील पूँजी खातों का अन्तर स्पष्ट कीजिए। काल्पनिक अंकों के आधार पर साझियों के चालू खाते बनाइए।
What do you mean by fixed and fluctuating Capital Accounts? Point out the difference between the fixed and fluctuation Capital Accounts. Prepare partner's current account by using imaginary figures.

3. साझेदारी संलेख क्या है? लेखांकन की दृष्टि से इसमें किन–किन बातों का समावेश किया जाता है?
What is partnership deed? What points are included in it from accounting point of view?

4. साझेदारी के विभिन्न प्रकारों का वर्णन कीजिए।
Describe various types of partnership.

5. साझेदारों को लाभों का आश्वासन (गारन्टी) से आप क्या समझते है? इसके दो प्रकारों का वर्णन कीजिए।
What do you mean by gurantee of profit to a partner? Explain the two types of such guarantee.

6. साझेदारी खाते बन्द करने के बाद किसी भूल का पता चले तो उसका समायोजन आप कैसे करेंगे?
How would you adjust the omission disclosed after closing the partnership accounts?

बहुचयनात्मक प्रश्नों के उत्तर

Q.1	Q.2	Q.3	Q.4	Q.5	Q.6	Q.7	Q.8	Q.9	Q.10
B	B	A	D	D	D	B	B	B	A

आंकिक प्रश्न (Numerical Questions)

1. राम, मोहन और सोहन एक फर्म में साझेदार थे। उनकी पूँजी 1 जनवरी, 2016 को क्रमशः ₹ 40,000, ₹ 60,000 और ₹ 1,00,000 थी। लाभ वितरण से पूर्व राम को ₹ 12,000. और मोहन को ₹ 18,000 प्रतिवर्ष वेतन लेने का अधिकार है। पूँजी पर 10 प्रतिशत प्रतिवर्ष की दर से ब्याज दिया जाता है। शुद्ध वितरण–योग्य लाभ में से प्रथम ₹ 40,000 पूँजी के अनुपात में व शेष लाभ बराबर–बराबर बाँटना है। वर्ष के अन्त में 31 दिसम्बर 2016 को उपर्युक्त सभी समायोजन करने से पूर्व फर्म का लाभ ₹ 1,20,000. था। 31 दिसम्बर, 2016 को लाभ एवं हानि नियोजन खाता साझेदारों के पूँजी खाते बनाइए तथा लाभ–वितरण को एक जर्नल प्रविष्टि दीजिए।

Ram, Mohan and Sohan were partners ?. Their capital on 1st january 2016 were ₹ 40,000, ₹ 60,000 and ₹ 1,00,000 respectively. Before division of profit, Ram is entitled for salary of ₹ 12,000 and Mohan ₹ 18,000 per annum. Interest is allowed on Capital @ 10% per annum. Out of net divisible profits, first ₹ 40,000 will be divided in their captial ratio and the balance of profits is to be divided equally. The profit of the firm for the year ending on 31st December, 2016 amounted to ₹ 1,20,000 before making all the above adjustments. Prepare Profit & Loss Appropriation A/c the partner's capital account on 31st December 2016 and Pass a Journal entry for distribution of profit.

Ans. (Profit divided Ram ₹ 18,000, Mohan ₹ 22,000 and Sohan ₹ 30,000 respectively).

2.राम, श्याम और मोहन साझेदार थे। उनकी पूँजी 1 जनवरी, 2016 को क्रमशः ₹ 50,000, ₹ 30,000 और ₹ 20,000 थी। लाभ वितरण से पूर्व, श्याम को ₹ 3,000. और मोहन को ₹ 2,000 . प्रतिवर्ष वेतन लेने का अधिकार है। पूँजी पर 10 प्रतिशत की दर से ब्याज दिया जाता है। शुद्ध वितरण–योग्य लाभ में से प्रथम ₹ 50,000 पूँजी के अनुपात में व शेष लाभ बराबर–बराबर बाँटना है। वर्ष के अन्त में 31दिसम्बर 2016 को उपर्युक्त सभी समायोजन करने से पूर्व फर्म का लाभ ₹ 95,000 था। लाभ एवं हानि नियोजन खाता बनाइए, तथा जर्नल प्रविष्टियां दीजिए।

Ram, Shyam and Mohan were partners, their capital on 1st January 2016 were ₹ 50,000, ₹ 30,000 and ₹ 20,000 respectively. Before division of profit, Shyam is entitled for salary of ₹ 3,000 and Mohan ₹ 2,000

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

per annum. Interest is allowed on Capital @ 10% per annum. Out of net divisible profits, first ₹ 50,000 will be divided in their captial ratio and the balance of profits is to be divided equally. The profit of the firm for the year ending on 31st December, 2016 amounted to ₹ 95,000 before making all the above adjustments. Prepare P & L appropriation A/c and give Journal entries.

(**Ans.** N.P. divided Ram ₹ 35,000, Shyam ₹ 25,000 and Mohan ₹ 20,000.)

3. ए,बी और सी साझेदार थे। उनकी पूँजी 1 जनवरी, 2016 को क्रमशः ₹ 40,000, ₹ 27,800 और ₹ 15,900 थी। लाभ वितरण से पूर्व, बी को ₹ 2,500 और सी को ₹ 2,000 प्रति वर्ष लेने का अधिकार है। पूँजी पर 5 प्रतिशत प्रति वर्ष की दर से ब्याज देना है। शुद्ध वितरण–योग्य लाभ में से पहले ₹ 10,000, में ए को 40 प्रतिशत, बी को 35 प्रतिशत और सी को 25 प्रतिशत मिलेगा। उससे अधिक लाभ बराबर–बराबर बाँटना है। वर्ष के अन्त में 31 दिसम्बर 2016 को वेतन को डेबिट करने के बाद किन्तु ब्याज देने से पूर्व लाभ ₹ 23,170. था। लाभ–हानि विभाजन खाता तैयार कीजिए।

A, B and C were partners, Their capital as on 1st january 2016 was ₹ 40,000, ₹ 27,800 and ₹ 15,900 respectively. Before division of profit, B is entitled for salary of ₹ 2,500 and C for ₹ 2,000 per annum. Interest is allowed on Capital @ 5% per annum. Out of net divisible profits, first ₹ 10,000, A will receive 40%, B-35% and C-25%. Profits in excesses to that are shared equally. For the year ending on 31st December, 2016 after debiting salary but before charging interest the profits were ₹ 23,170. Prepare Profit & Loss Appropriation A/c. (**Ans.** N.P. divided A ₹ 6,995, B ₹ 6,495 and C ₹ 5,495.)

4. 'पी' और 'एस' ने 1 जनवरी 2016 को क्रमशः ₹ 1,000, ₹ 10,000 की पूँजी के साथ साझेदारी फर्म शुरू की। 1 मार्च, 2016 को 'पी' ने ₹ 4,000 की अतिरिक्त पूँजी लगायी। उस दिन 'एस' ने अपनी पूँजी से ₹ 3,000 निकाले। 'सी' ने 1 जुलाई, 2016 को ₹ 15,000 की पूँजी के साथ फर्म में प्रवेश किया। उस दिन 'पी' और 'एस' क्रमशः ₹ 6,000 और ₹ 5,000. की अतिरिक्त पूँजी लगायी। लाभ–हानि पूँजी अनुपात में विभाजित किये जाते है। वर्ष 2016 के लाभ ₹ 29,800 थे। पूरी गणना देते हुए लाभ एवं हानि विनियोजन (विभाजन) खाता बनाइए।

P and S started a partnership firm on 1st January 2016 with a capital of ₹ 10,000 respectively. On 1st March, 2016 P introduced additional capital of ₹ 4,000. On that day S withdrew ₹ 3,000 from his capital. C entered in the firm on 1st July 2016 with a capital of ₹ 15,000. On that day P and S introduced additional capital of ₹ 6,000 and ₹ 5,000 respectively. Profit-Loss are distributed in capital ratio. The profits for the year 2016 were ₹ 29,800. Prepare Profit & Loss Appropriation A/c by giving detailed calculations.

(**Ans**.Capital Ratio- 44 : 60 : 45, N.P. divided P ₹ 8,800, S ₹ 12,000 and C ₹ 9,000).

5. अ और ब 7 : 3 के अनुपात में लाभ बाटँते हुए साझेदार है। 1 अप्रैल 2016 को उनकी पूँजी क्रमशः ₹ 1,00,000 और ₹ 40,000 थी। पूँजी एवं आहरण पर 10 प्रतिशत वार्षिक ब्याज लगाया जाना था। ब को ₹ 1,000 प्रति माह वेतन दिया जाता है। प्रत्येक माह की प्रथम तारीख को अ ने ₹ 1,000 प्रति माह एवं ब ने ₹ 600 प्रति माह आहरण किया। पूँजी एवं आहरण पर ब्याज लगाने से पूर्व, परन्तु ब का वेतन घटाने के बाद, वर्ष का लाभ ₹ 54,960 था। शुद्ध लाभ (ऐसा कमीशन घटाने के बाद) पर 5 प्रतिशत की दर से अ को कमीशन का प्रावधान करना है। उपर्युक्त सूचनाओं से 31 मार्च, 2017 का लाभ–हानि नियोजन खाता बनाइए।

A and B are partners sharing profits in the ratio of 7 : 3. On 1st April 2016, their capitals were ₹ 1,00,000, ₹ 40,000 respectively. Interest is to be charged on capital and drawings at 10% per annum. B is to be allowed salary ₹ 1,000 per month. A and B withdrew ₹ 1,000 and ₹ 600 per month respectively on the first day of every month. The profits for the year, prior to calculation of interest on capitals and drawings, but after charging B's salary, amounted to ₹ 54,960. A provision for A commission at 5% on net profit (after charging such commission) is to be made. Prepare Profit & Loss Appropriation Account for the year ending 31st March 2017. (**Ans.:** Interest on Drawings ₹ 650 and ₹ 390, N.P. A ₹ 28000, B ₹ 12000 and A's Commission ₹ 2000)

6- X और Y साझेदार है व लाभों को 3 : 2 के अनुपात में बाँटते है। 1 अप्रैल 2016 को उनकी पूँजी क्रमशः ₹ 3,00,000 व ₹ 2,00,000 है। साझेदारी संलेख में पूँजी पर 10% वार्षिक ब्याज और Y को ₹ 1,250 प्रतिमाह वेतन का प्रावधान है। 31 मार्च, 2017 को समाप्त वर्ष के लिए, पूँजी पर ब्याज और वेतन का प्रावधान करने से पहले, ₹ 40,000 का लाभ है। वर्ष के लिए लाभों का विभाजन दिखाइए।

X and Y are partners sharing profits in the ratio of 3 : 2. On 01st April 2016 their capital is respectively ₹ 3,00,000 and ₹ 2,00,000 respectively. The partnership deed provided interest on capital @10% p.a. and salary to Y as ₹ 1,250 p.m. the net profit before providing interest on capital and salary amounts to ₹ 40,000 for the year ended 31st March, 2017. Show the distribution of profit for the year.

(**Ans.:** X Interest on Capital ₹ 15,000, Y Interest on Capital ₹ 10,000, Y's Salary ₹ 15,000)

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

7. रूचि व प्रशान्त साझेदार है और लाभ हानि को 3 : 1 के अनुपात में बॉटते है । 1 अप्रैल, 2016 को उनकी पूँजियॉ क्रमशः ₹ 50,000 तथा ₹ 40,000 है। 31 मार्च 2017 को समाप्त हुए वर्ष के दौरान निम्नलिखित पर ध्यान देने के पूर्व फर्म का लाभ ₹ 57,500 था।

1. पूँजी पर 5 प्रतिशत प्रति वर्ष की दर से ब्याज दिया जाना है। **2.** रूचि बिक्री पर 2 प्रतिशत कमीशन प्राप्त करेगी। वर्ष की बिक्री ₹ 1,25,000 थी। 3. प्रशान्त को प्रति माह ₹ 250. वेतन प्राप्त होगा। **4.** प्रशान्त उसके भवन का फर्म द्वारा प्रयोग किये जाने के लिए ₹ 625 प्रतिमाह किराया पाने का अधिकारी है। **5.** विभाजन योग्य लाभ का 10 प्रतिशत सामान्य संचय खाता में अन्तरित किया जाना है। आपको लाभ–हानि विनियोजन खाता तैयार करना है।

Ruchi and Prashant are partners sharing profits and losses in the ratio of 3:1. On 1st April 2016 their capitals were ₹ 50000, and ₹ 40,000 respectively . During the year ended 31st March 2017 The profit of the firm amounted to ? ₹ 57,500 before taking into consideration the following :

1- Interest on capital is to be allowed @ 5 % p.a. 2- Ruchi will get commission of 2% on sales. Sales for the year were ₹ 1,25,000 3- Prashant will get a salary of ₹ 250 p.m. 4- Prashant is entitled to a rent of ₹ 625 per month for the use of his premises by the firm 5-10% of the divisible profit is to be transferred to General Reserve. You are required to prepare the Profit and Loss Appropriation Account.

उत्तरः Profit Before P&L Appropriation ₹ 50,000, Profit Ruchi ₹ 27,000, Prashant ₹ 9000)

8. ए., बी. व सी. 3 : 2 : 1 के अनुपात में लाभ बांटते हुए साझेदार है। ए ने प्रत्येक माह के प्रारम्भ में ₹ 2,000, बी ने ₹ 1,000 प्रत्येक माह के मध्य में तथा सी ने ₹ 1,000 प्रत्येक माह के अन्त में आहरण किये। पूँजी व आहरण पर 10 प्रतिशत वार्षिक दर से ब्याज चार्ज किया जाता है। सी को ₹ 800 प्रति माह वेतन स्वीकृत किया गया है । वेतन घटाने के बाद किन्तु सभी तरह का ब्याज चार्ज करने से पूर्व 31 दिसम्बर, 2016 को लाभ ₹ 1,22,150 था लाभ हानि नियोजन खाता, साझेदारों के पूँजी व चालू खाते निम्नाकिंत अतिरिक्त सूचनाओं के आधार पर बनाइए :

	ए ₹	बी ₹	सी ₹
पूँजी 1 जनवरी 2016 को	2,00,000	1,50,000	1,00,000
अतिरिक्त पूँजी 1 अप्रेल, 2016 को लगाई गई	50,000	30,000	–
1 अक्टूबर, 2016 को पूँजी निकाली	–	–	20,000
चालू खाते का शेष 1 जनवरी, 2016 को	12,200(जमा)	5,500(जमा)	4,100(नाम)
ऋण खाते का शेष 1 जनवरी 2016 को	40,000		

A, B and C are partners sharing profit & loss in 3 : 2 : 1 ratio. , A withdraws ₹ 2,000 at the beginning of every month, B withdraws ₹ 1,500 in the middle of every month, whereas, C withdraws ₹ 1,000 at the end of every month. Interest on Capitals and drawings is to be charged @ 10% p.a.. C is also to be allowed a salary of ₹ 800 per month. After deducting salary but before allowing all types of interest, the profit for the year ending 31st December 2016 was ₹ 1,22,150. Prepare Profit and Loss Account and Capital Accounts and Current Accounts of the partners from the additional informations given below.

	A ₹	B ₹	C ₹
Capital as on 1st Jan., 2016	2,00,000	1,50,000	1,00,000
Additional Capital introduced on 1st April 2016	50,000	30,000	-
Withdraw on 1st Oct., 2016	-	-	20,000
Current Account on 1st Jan. 2016	12,200	5,500	4,100 (Dr.)
Loan Accounts on 1st Jan. 2016	40,000	-	-

(**उत्तरः** Profit before P&L Appropriation ₹ 1,19,750, Profit A ₹ 36,000 , B ₹ 24,000, C ₹12,000, Current A/c Balance A ₹ 46,650, B ₹ 27,850, C ₹ 14,450)

9. मनीष, नवन, तथा वैभव एक फर्म के साझेदार है। 1 अप्रैल 2016 को उनके पूँजी खातों के शेष क्रमशः ₹ 4,00,000, ₹ 3,00,000 तथा ₹ 2,00,000 थे। साझेदारी संलेख में यह व्यवस्था है –

अ) वैभव को ₹ 40,000. वेतन से प्रति वर्ष जमा किया जाएगा ।

ब) वैभव को वेतन, सभी साझेदारों को पूँजी पर 10 प्रतिशत वार्षिक ब्याज तथा इस पैराग्राफ ''ब'' में वर्णित अतिरिक्त पारिश्रमिक का प्रावधान करने के बाद वैभव ₹ 35,000 वार्षिक से अधिक समस्त लाभ पर 10 प्रतिशत का अधिकारी होगा ।

स) 'अ' ,'ब' एवं 'स' में वर्णित समस्त राशियों को चार्ज करने के बाद बचे हुए लाभ का 1/3 भाग नवन को मिलेगा ।

द) शेष लाभों को मनीष तथा वैभव में 4 :1 के अनुपात में बांटा जायेगा ।

31 मार्च 2017 को समाप्त हुये वर्ष के लिए (उपरोक्त का प्रावधान करने से पूर्व) लाभ ₹ 3,30,000 था। 31 मार्च 2017 को समाप्त होने वाले वर्ष के लिए आपको लाभ–हानि नियोजन खाता तथा साझेदारों के पूँजी खाते बनाने है । वर्ष भर में मनीष, नवन तथा वैभव के व्यक्तिगत उपयोग के लिए क्रमशः ₹ 20,000, ₹ 15,000, तथा ₹ 10,000 का आहरण किया है।

Manish, Navan and Vaibhav are partners in a firm, balance of their capital accounts as on 1st Aapril, 2016 were : ₹ 4,00,000, ₹ 3,00,000 and ₹ 2,00,000 respectively. The partnership agreement provides A.Vaibhav shall be credited for ₹ 40,000 of salary per annum.

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

B. After providing Vaibhav salary, 10% p.a. interest on capital to all partners and extra remuneration to Vaibhav as provided in this paragraph 'B' Vaibhav shall be entitled to 10% of all profits in excess of ₹ 35,000 p.a.. **C.** Navan is to have one third of the profits after charging all amount under 'A', 'B', 'C', **D** .The Balance is to be divided between Manish and Vaibhav in the ratio 4 : 1. The profits for the year ended 31st March, 2017 (before making any provision for the above) was ₹ 3,30,000. You have to prepare Profit & Loss Appropriation account and partners, Capital Accounts for the year ending 31st March, 2017. During the year Manish, Navan and Vaibhav withdrew the amount for personal use ₹ 20,000, ₹ 15,000 & ₹ 10,000 respectively.

(**उत्तर**: Vaibhav Remuneration ₹ 15,000, Profit Navan ₹. 46,250, Manish ₹ 1,11,000, Vaibhav ₹ 27,750, Capital Balance Manish ₹ 4,66,250, Navans ₹ 4,26,000, Vaibhav ₹ 2,92,750)

10. अ, ब और स एक फर्म में बराबर के साझेदार है। 1 जनवरी, 2016 को उनकी पूँजी क्रमशः ₹ 50,000, ₹ 40,000 तथा ₹ 30,000 थी । वर्ष 2016 के खाते बन्द करने के बाद यह पता चला कि साझेदारी समझौते के अनुसार साझेदारों की पूँजी पर 10 प्रतिशत वार्षिक दर से ब्याज, अ को ₹ 30,000 वार्षिक वेतन तथा स को ₹ 6,000 कमीशन का प्रावधान लाभ बॉटने से पूर्व नहीं किया गया है। साझेदारों में यह समझौता हुआ कि चिट्ठे को बदलने के बजाय अगले वर्ष के प्रारम्भ में समायोजन प्रविष्टि कर दी जाये।

यह मानते हुए कि पूँजी स्थिर है, समायोजन हेतु क्रिया दिखाते हुए, फर्म की पुस्तकों में एक जर्नल प्रविष्टि दीजिए।

A, B and C are equal partners in a firm. Their capitals on 1st January 2016 were ₹ 50,000, ₹ 40,000 and ₹ 30,000 respectively. After closing the accounts of the year 2016, it was found that according to the partnership agreement interest at 10% per annum on partners capitals, a salary of ₹ 3,000 per year to A and a commission of ₹ 6,000 to C were not provided before distribution of profits. It was agreed among the partners to make the adjustment entry at the beginning of the next year rather than to alter the Balance Sheet. Pass one Jounal entry in the books of the firm showing the working of Adjustments assuming that capitals are fixed.

(उत्तर: 'B' Dr. ₹ 3,000, 'A' Cr. ₹ 1,000, 'C' Cr. ₹ 2,000)

11. एक्स, वाई, जेड 2 : 2 : 1 के अनुपात में लाभ– हानि बॉटते हुये साझेदार है। 31मार्च 2017 को ₹ 30,000 रू. का लाभ बांटने एवं आहरणों का लेखा करने के बाद उनकी पूँजी क्रमशः ₹ 60,000, ₹ 45,000 व ₹ 30,000 है । बाद में ज्ञात हुआ कि पूँजी पर 5 प्रतिशत वार्षिक ब्याज आहरणों पर ब्याज लगाना भूल गये । आहरण इस प्रकार थे – एक्स के ₹ 6000., वाई के ₹ 4500 तथा जेड के ₹ 3600 जिन पर ब्याज क्रमशः ₹ 120., ₹ 90. तथा ₹ 45 होता है ं उपरोक्त भूलों को सुधारने हेतु 1 अप्रैल 2017 को आवश्यक जर्नल प्रविष्टियां दीजिए एवं साझेदारों के समायोजित पूँजी खाते बनाइये।

X, Y, and Z are partners in a firm sharing profit & loss in the ratio of 2 : 2: 1. On 31st March, 2006 after recording Drawings and distribution of profits ₹ 30,000, their capitals were ₹ 60,000, ₹ 45,000, and ₹ 30,000 respecively. After this it was found that 5% Interest on capital and Interest on Drawings was omitted to be recorded. Drawing were as follows X- ₹ 6,000, Y- ₹ 4,500, and Z- ₹ 3,600. Interest on which is to be charged ₹ 120, ₹ 90 and ₹ 45 respectively. Pass necessary Journal entries for the above ommissions and prepare adjusted partners capital accounts.

उत्तर : Opening Capital X ₹ 54,000, Y ₹ 37,500 and Z ₹ 27,600, Loss X ₹ 2,280, Y ₹ 2,280, Z ₹ 1,140 Capital Balance X ₹ 60,300, Y ₹ 44,505, Z ₹ 30,195)

12. पी, क्यू तथा आर एक फर्म में साझेदार है। 31 मार्च 2017 को उनके पूँजी खाते क्रमशः ₹ 90,000, ₹ 45,000, ₹ 45,000 थे। साझेदारी संलेख की व्यवस्थानुसार : **1**. आर को ₹ 9,000 प्रति वर्ष पारिश्रमिक दिया जाना था **2**. पूँजी पर 5 प्रतिशत प्रति वर्ष की दर से ब्याज दिया जाना था **3**. लाभों को 2 :2:1 के अनुपात में बॉटा जाना था। उपर्युक्त मदों पर ध्यान न देते हुए, 31.3.2017 को समाप्त होने वाले वर्ष के लिए ₹ 54,000 के शुद्ध लाभ को तीनों साझेदारों में समान रूप से बॉट दिया गया। अशुद्धि के सुधार हेतु एक समायोजन प्रविष्टि कीजिए, कार्यशील टिप्पणी दर्शायें।

P, Q and R partners in a firm. Their capital accounts stood at ₹ 90,000, ₹ 45,000 and ₹ 45,000 respectively on 31st March, 2017. 1- R was to be allowed a remuneration of ₹ 9000 p.a.. 2- Interest at 5% p.a. was to be provided on capitals 3- Profits were to be divided in the ratio of 2 : 2 : 1. Ignoring the above items, net profit of ₹ 54000 for the year ended 31.03.2017, It was divided among the three partners equally. Make journal entry for rectification & show workings.

(**उत्तर** : Opening Capital P ₹ 72000, Q ₹ 27000, R ₹ 27000, Q Dr. ₹ 1170, P Cr ₹ 1080, R Cr. ₹ 90)

13. सतीश, नितिन तथा अजय स्थिर पूँजी क्रमशः ₹ 1,00,000, ₹ 75,000 तथा ₹ 75,000 के साथ साझेदार है। उनके चालू खाते का शेष था सतीश – ₹ 5,000 (क्रेडिट), नितिन – ₹ 4,000 (क्रेडिट), तथा अजय – ₹ 2,500 (डेबिट)। साझेदारी संलेख में निम्नवत व्यवस्था थी।

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

1. पूँजी पर 5 प्रतिशत प्रति वर्ष की दर से ब्याज। 2. नितिन अपने भवन को फर्म को देने के लिए ₹ 500 प्रति माह किराया पाने का अधिकारी है। 3. अजय ₹ 1,000 प्रति माह वेतन पाने के अधिकारी है।
फर्म के लाभों का वितरण निम्न प्रकार किया जाना था।
अ. प्रथम ₹ 20,000 उनकी पूँजी के अनुपात में, **ब**. अगले ₹ 20,000 2:2:1 के अनुपात में, **स**. शेष लाभों का विभाजन बराबर –बराबर, उपर्युक्त समायोजन से पूर्व वर्ष का लाभ ₹ 85,500 था। लाभ–हानि विनियोजन खाता, साझेदारों के पूँजी खाते व चालू खाते बनाइए।
Satish, Nitin and Ajay are partners with a fixed capital ₹ 1,00,000, ₹ 75,000, and ₹ 75,000 respectively. Their current account balances were Satish ₹ 5,000 (Cr.), Nitin ₹ 4,000 (Cr.), and Ajay ₹ 2,500 (Dr.). The partnership deed provided as under :
1. Interest on capital @ 5% p.a. **2.** Nitin was entitled for rent @ ₹ 500 p.m. for providing his premises to the firm.
3. Ajay was entitled to a salary of ₹ 1,000 p.m. The profits of the firm were to be distributed as follows:
A-The first ₹ 20,000 in proportion to their capitals. **B**-Next ₹ 20,000 in the ratio 2:2:1. **C**- Remaining profits to be shared equally. The net profit before the above adjustments for the year was ₹ 85,500. Prepare profit & Loss Appropriation Account, Capital Account and Current Accounts of the partners.
(**उत्तरः** Profit before P& L Appropritation ₹ 79,500, Profit Satish ₹ 21,000, Nititn ₹ 19,000, Ajay ₹ 15,000, Current Account Balance Satish ₹ 31,000, Nitin ₹ 32,750, Ajay ₹ 28,250)
14. एक्स, वाई व जेड एक फर्म में साझेदार है । उनके लाभ विभाजन का अनुपात 5 : 3: 2 था । जेड का प्रत्येक वर्ष लाभ में हिस्से के रूप में न्यूनतम राशि ₹ 10,000 की गारण्टी दी जाती है । कोई भी कमी होने पर इसकी भरपाई वाई के द्वारा की जायेगी। 31 दिसम्बर, 2015 तथा 2016 को समाप्त होने वाले वर्ष के लिए लाभ क्रमशः ₹ 40,000 तथा ₹ 60,000 था। दो वर्षो के लिए लाभ हानि नियोजन खाता बनाइए ।
X, Y and Z are partners in a firm. Their profit sharing ratio is 5 : 3: 2. However, Z is guaranteed a minimum amount of ₹ 10,000 as share of profit every year. Any deficiency arising on that account shall be met by Y. The profit for the two year ending 31st December, 2015 and 2016 were ₹ 40,000 and ₹ 60,000 respectively. Prepare Profit & Loss Appropriation Account for the two years. Share of Profit 2015 - X ₹ 20,000 , Y ₹ 10,000, Z ₹ 10,000 ; 2016 -X ₹ 30,000, Y ₹ 18,000, Z ₹ 12,000

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

2
नये साझेदार का प्रवेश
(Admission of a New Partner)

अध्ययन के उद्देश्य

इस अध्याय का अध्ययन करने पश्चात् आप यह समझने योग्य हो जाते है –

- साझेदारी फर्म के पुनर्गठन की अवधारणा और विधियों का ज्ञान
- नये साझेदार के प्रवेश के प्रभाव
- नये लाभ विभाजन अनुपात व त्याग का अनुपात की गणना
- ख्याति – अर्थ, विशेषताएं, प्रभावित करने वाले कारण, स्वभाव, प्रकार, मूल्यांकन की विधियाँ व लेखांकन व्यवहार
- सम्पत्तियों का पुनर्मूल्यांकन एवं दायित्वों का पुनर्निधारण, पुनर्मूल्यांकन खाता व स्मरणार्थ पुनर्मूल्यांकन खाता
- अवितरित लाभों/हानियों व संचयों का बँटवारा
- पूँजी का समायोजन, नये के आधार पर पुराने साझेदारों की पूँजी का समायोजन, पुराने के आधार पर नये साझेदार की पूँजी का निर्धारण
- विद्यमान साझेदारों के लाभ विभाजन अनुपात में परिवर्तन का आशय व लेखा

साझेदारी फर्म का पुनर्गठन (Reconstruction of Partnership firm)

साझेदारों के मध्य विद्यमान समझौते में किसी प्रकार का परिवर्तन साझेदारी फर्म का पुनर्गठन कहलाता हैं। साझेदारी फर्म का पुनर्गठन निम्न परिस्थितियों में हो सकता हैं।

(i) नये साझेदार के प्रवेश पर
(ii) वर्तमान साझेदारों के मध्य लाभ विभाजन अनुपात में परिवर्तन होने पर
(iii) वर्तमान साझेदार के अवकाश ग्रहण करने पर
(iv) साझेदार की मृत्यु पर
(v) दो साझेदारी फर्मों का एकीकरण होने पर

नये साझेदार का प्रवेश (Admission of a new partner)

नये साझेदार के प्रवेश का अर्थ है साझेदारी के व्यवसाय में नये सदस्य का स्वामी के रुप में प्रवेश करना और साझेदारों की संख्या में वृद्धि होना। **भारतीय साझेदारी अधिनियम, 1932 की धारा 31** के अनुसार वर्तमान साझेदारों की सहमति से ही एक नये व्यक्ति को फर्म में साझेदार बनाया जा सकता हैं। एक नया साझेदार, साझेदार बनने के बाद फर्म द्वारा किये गये समस्त कार्यों के लिए उत्तरदायी हो जाता है, परन्तु वह साझेदार बनने से पूर्व फर्म द्वारा किये गये किसी कार्य के लिए उत्तरदायी नहीं होता।

नये साझेदार के अधिकार : एक नये साझेदार को निम्न दो अधिकार प्राप्त होते हैं।

1. फर्म की संपत्तियों में हिस्सा प्राप्त करने का अधिकार।
2. फर्म के भावी लाभों में हिस्सा प्राप्त करने का अधिकार।

सम्पत्तियों में हिस्सा प्राप्त करने के लिए नया साझेदार जो धनराशि लाता है, उसे पूँजी कहते हैं तथा भावी लाभों में हिस्सा प्राप्त करने के लिए, जो धनराशि लाता हैं। उसे ख्याति (प्रीमियम) कहते हैं।

नये साझेदार के प्रवेश पर मुख्य समायोजन (Main Adjustments at the time of Admission of a New Partner)

1. नये लाभ विभाजन अनुपात की गणना 2. त्याग अनुपात की गणना 3. ख्याति का मूल्यांकन व लेखांकन 4. संपत्तियों का पुनर्मूल्यांकन व दायित्वों का पुनर्निर्धारण 5. संचय, अवितरित लाभों व हानियों का समायोजन 6. पूँजी का समायोजन

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

नये लाभ विभाजन अनुपात व त्याग अनुपात की गणना

(Calculation of new profit sharing ratio & sacrificing ratio)

नया लाभ विभाजन अनुपात New Profit Sharing Ratio (NPSR):- नये साझेदार सहित सभी साझेदार जिस अनुपात में फर्म के भावी लाभों को आपस में बांटते है, उसे नया लाभ विभाजन अनुपात कहा जाता हैं। नया साझेदार अपना लाभ का हिस्सा पुराने साझेदारों से प्राप्त करता है, इस कारण उनका लाभ विभाजन अनुपात परिवर्तित हो जाता हैं। अतः नये लाभ विभाजन अनुपात की गणना की जाती है ।

त्याग अनुपात(Sacrificing Ratio):-नये साझेदार के प्रवेश पर पुराने साझेदार अपने लाभ के हिस्से का जिस अनुपात में त्याग करते है उसे त्याग अनुपात कहते हैं। नये साझेदार के प्रवेश पर ख्याति का बँटवारा त्याग अनुपात में ही करना होता हैं।

त्याग अनुपात =पुराना लाभ विभाजन अनुपात –नया लाभ विभाजन अनुपात

Sacrificing Ratio(S.R.)= Old Profit Sharing Ratio(OPSR)–New Profit Sharing Ratio (NPSR)

नया लाभ विभाजन अनुपात = पुराना लाभ विभाजन अनुपात – त्याग अनुपात

New Profit Sharing Ratio = Old Profit sharing Ratio – Sacrificing Ratio

नये लाभ विभाजन अनुपात व त्याग अनुपात की गणना विभिन्न परिस्थितियों में निम्न प्रकार की जाती है–

1 जब प्रश्न मे केवल नये साझेदार का अनुपात दिया गया हो –

i) Aव Bएक फर्म में साझेदार है जो 3 : 1 के अनुपात में लाभ विभाजन करते है । C लाभ में 1/4 हिस्से के लिए फर्म में प्रवेश करता हैं। नया लाभ विभाजन अनुपात व त्याग अनुपात ज्ञात करो।

माना कि फर्म का कुल लाभ 1 हैं। Cका हिस्सा 1/4 शेष लाभ 1 – 1/4 = 3/4

Aका हिस्सा = $\frac{3}{4}X\frac{3}{4}=\frac{9}{16}$ Bका हिस्सा = $\frac{3}{4}X\frac{1}{4}=\frac{3}{16}$

नया लाभ विभाजन अनुपात= $\frac{9}{16}:\frac{3}{16}:\frac{1}{4}=\frac{9:3:4}{16}$ = 9 : 3 : 4

त्याग अनुपात = पुराना लाभ विभाजन अनुपात – नया लाभ विभाजन अनुपात

A $\frac{3}{4}-\frac{9}{16}=\frac{3}{16}$; B $\frac{1}{4}-\frac{3}{16}=\frac{1}{6}$ = त्याग अनुपात 3 : 1

नोट – जब नये साझेदार का हिस्सा दिया गया हो व पुराने साझेदारों के त्याग का विवरण न हो तो पुराना अनुपात ही त्याग अनुपात कहलाता है ।

ii) जब नया साझेदार पुराने साझेदारों से समान अनुपात में अपना हिस्सा प्राप्त कर रहा हैं तो इस दशा में पुराने साझेदारों ने जितना त्याग किया है उसे उनके पुराने अनुपात में से घटाकर नया अनुपात ज्ञात करेगें।

जैसे A व B एक फर्म में साझेदार है जो 7 : 5 के अनुपात में लाभ बांटतें है । C को लाभों में 1/6 हिस्सा देकर साझेदार बनाया । C अपना हिस्सा A व B से बराबर –बराबर प्राप्त करता हैं। नया लाभ विभाजन अनुपात व त्याग अनुपात ज्ञात करों।

Cका हिस्सा 1/6 ; Aका त्याग = $\frac{1}{6}X\frac{1}{2}=\frac{1}{12}$; B का त्याग = $\frac{1}{6}X\frac{1}{2}=\frac{1}{12}$

नया लाभ विभाजन अनुपात = पुराना लाभ विभाजन अनुपात – त्याग अनुपात

Aका नया लाभ विभाजन अनुपात = $\frac{7}{12}-\frac{1}{12}=\frac{6}{12}$

Bका नया लाभ विभाजन अनुपात= $\frac{5}{12}-\frac{1}{12}=\frac{4}{12}$

तीनों का नया लाभ विभाजन अनुपात= $\frac{6}{12}:\frac{4}{12}:\frac{1}{6}=\frac{6:4:2}{12}=3:2:1$; त्याग का अनुपात= $\frac{1}{12}:\frac{1}{12}=1:1$

iii).जब नया साझेदार लाभों में अपना हिस्सा असमान अनुपात में प्राप्त करता है :

जैसे: A व B एक फर्म में साझेदार है, जो 3 : 2 के अनुपात में लाभ विभाजन करते है । वे C को लाभों में 1/5 हिस्से के लिए प्रवेश देते है जिसे वह A व B से 1 : 2 के अनुपात में प्राप्त करता है । नया लाभ विभाजन अनुपात व त्याग अनुपात ज्ञात करों।

Aका त्याग =$\frac{1}{5}X\frac{1}{3}=\frac{1}{15}$ Bका त्याग =$\frac{1}{5}X\frac{2}{3}=\frac{2}{15}$; त्याग का अनुपात = 1: 2

नया लाभ विभाजन अनुपात = पुराना लाभ विभाजन अनुपात – त्याग अनुपात

A = $\frac{3}{5}-\frac{1}{15}=\frac{8}{15}$; B = $\frac{2}{5}-\frac{2}{15}=\frac{4}{15}$

नया लाभ विभाजन अनुपात= $\frac{8}{15}:\frac{4}{15}:\frac{1}{5}=\frac{8:4:3}{15}$ = 8 : 4 : 3

iv). जब नया साझेदार अपना हिस्सा पूर्णतया किसी एक साझेदार से प्राप्त करता है :

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

1. Aव B एक फर्म में साझेदार है जो 7 : 3 में लाभ विभाजन करते हैं।C को प्रवेश दिया जाता है, Cअपना 1/10 हिस्सा पूर्णतः A से प्राप्त करता है । नये लाभ विभाजन अनुपात व त्याग अनुपात की गणना करो ।

   Aका त्याग $=\frac{1}{10}$ Aका नया लाभ विभाजन अनुपात $=\frac{7}{10}-\frac{1}{10}=\frac{6}{10}$

   तीनों का नया लाभ विभाजन अनुपात= $\frac{6}{10}:\frac{3}{10}:\frac{1}{10}=\frac{6:3:1}{10}=6:3:1$; त्याग का अनुपात= $\frac{1}{10}:0=1:0$

2. Aव B एक फर्म में साझेदार है जो 3 : 2 के अनुपात में लाभ विभाजन करते है, उन्होने C व Dको क्रमशः 1/5, 1/5 हिस्से के लिऐ प्रवेश दिया । C अपना पूरा हिस्सा Aसे व D अपना पूरा हिस्सा Bसे प्राप्त करता है, तो नया लाभ विभाजन अनुपात होगा।

Aका त्याग = $\frac{1}{5}$Bका त्याग = $\frac{1}{5}$; Aका नया अनुपात= $\frac{3}{5}-\frac{1}{5}=\frac{2}{5}$;Bका नया अनुपात= $\frac{2}{5}-\frac{1}{5}=\frac{1}{5}$

सभी का नया लाभ विभाजन अनुपात= $\frac{2}{5}:\frac{1}{5}:\frac{1}{5}:\frac{1}{5}=\frac{2:1:1:1}{5}=2:1:1:1$

v). जब नया साझेदार अपना हिस्सा पुराने साझेदारों से एक निश्चित अनुपात में प्राप्त करता है :

जैसे:A व B 3 : 2 के अनुपात में लाभ विभाजन करते हैं।वेC को 1/4 हिस्सा देकर प्रवेश देते है, जिसे वह 4/24 A से व 2/24 B से प्राप्त करता है । नया लाभ विभाजन अनुपात व त्याग का अनुपात होगा ।

Aका त्याग $=\frac{4}{24}$ Bका त्याग $=\frac{2}{24}$ त्याग का अनुपात = 4 : 2 = 2 : 1

नया लाभ विभाजन अनुपात= पुराना लाभ विभाजन अनुपात − त्याग अनुपात

A = $\frac{3}{5}-\frac{4}{24}=\frac{52}{120}$ B = $\frac{2}{5}-\frac{2}{24}=\frac{38}{120}$

नया लाभ विभाजन अनुपात= $\frac{52}{120}:\frac{38}{120}:\frac{1}{4}=\frac{52:38:30}{120}$ = 26 : 19 : 15

vi).जब पुराने साझेदार अपने हिस्से का एक निश्चित भाग नये साझेदार के पक्ष में त्याग(समर्पण) करते है :

1. A व B एक फर्म में साझेदार है जो 3 : 2 में लाभ विभाजन करते हैं। C को प्रवेश देते हैं। अपने हिस्से का 1/5 व B अपने हिस्से का 2/5 C के पक्ष में त्याग करते है । नया लाभ विभाजन अनुपात व त्याग अनुपात होगा ।

   A का त्याग $\frac{3}{5}X\frac{1}{5}=\frac{3}{25}$; B का त्याग $\frac{2}{5}X\frac{2}{5}=\frac{4}{25}$; त्याग अनुपात = 3 : 4

   नया लाभ विभाजन अनुपात = पुराना लाभ विभाजन अनुपात − त्याग अनुपात

   A$\frac{3}{5}-\frac{3}{25}=\frac{15-3}{25}=\frac{12}{25}$; B $\frac{2}{5}-\frac{4}{25}=\frac{10-4}{25}=\frac{6}{25}$; C का हिस्सा $\frac{3}{25}+\frac{4}{25}=\frac{7}{25}$

   नया लाभ विभाजन अनुपात= $\frac{12}{25}:\frac{6}{25}:\frac{7}{25}=\frac{12:6:7}{25}$= 12 : 6 : 7

2. AवBसाझेदार है जो 3 : 2 में लाभ विभाजन करते है । वे Cको प्रवेश देते है,Aअपने हिस्से का 1/3 व Bअपने हिस्से में से 1/10 C को देते हैं। नया लाभ विभाजन अनुपात व त्याग का अनुपात होगा।

   Aका त्याग $\frac{3}{5}X\frac{1}{3}=\frac{3}{15}=\frac{1}{5}$; Bका त्याग $\frac{1}{10}$; त्याग अनुपात 2 : 1

   नया लाभ विभाजन अनुपात = पुराना लाभ विभाजन अनुपात − त्याग अनुपात

   A$\frac{3}{5}-\frac{1}{5}=\frac{2}{5}$; B$\frac{2}{5}-\frac{1}{10}=\frac{3}{10}$; Cका हिस्सा $\frac{1}{5}+\frac{1}{10}=\frac{3}{10}$

   = $\frac{2}{5}:\frac{3}{10}:\frac{3}{10}$ नया लाभ विभाजन अनुपात 4 : 3 : 3

विविध उदाहरण

1. **अ, ब** व **स** एक फर्म में साझेदार है, जो 3 : 2 : 1 के अनुपात में लाभ विभाजन करते हैं।**द** लाभ में 1/6 हिस्से के लिए प्रवेश करता हैं।**स** का हिस्सा पहले जितना ही रहेगा । नया लाभ विभाजन अनुपात ज्ञात करो।

   CवD का हिस्सा $\frac{1}{6}+\frac{1}{6}=\frac{2}{6}$;$1-\frac{2}{6}=\frac{4}{6}$(AवBका हिस्सा)

   Aका हिस्सा= $\frac{4}{6}X\frac{3}{5}=\frac{12}{30}$; Bका हिस्सा= $\frac{4}{6}X\frac{2}{5}=\frac{8}{30}$

   नया लाभ विभाजन अनुपात = $\frac{12}{30}:\frac{8}{30}:\frac{1}{6}:\frac{1}{6}$; $\frac{12:8:5:5}{30}$; = 12:8:5:5

2. अ व ब एक फर्म में साझेदार है जो 3 : 2 के लाभ विभाजन करते हैं। स लाभों में 1/4 हिस्से के लिए प्रवेश करता हैं। अ व ब भविष्य में लाभ बराबर बांटते हैं। नया लाभ विभाजन अनुपात व त्याग का अनुपात होगा।

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

$1-\frac{1}{4}=\frac{3}{4}$; Aका नया अनुपात= $\frac{3}{4}X\frac{1}{2}=\frac{3}{8}$; Bका नया अनुपात = $\frac{3}{4}X\frac{1}{2}=\frac{3}{8}$

नया लाभ विभाजन अनुपात = $\frac{3}{8}:\frac{3}{8}:\frac{1}{4}$ = 3 : 3 : 2

त्याग अनुपात = पुराना लाभ विभाजन अनुपात –नया लाभ विभाजन अनुपात

त्याग का अनुपात A= $\frac{3}{5}-\frac{3}{8}=\frac{24-15}{40}=\frac{9}{40}$; B= $\frac{2}{5}-\frac{3}{8}=\frac{16-15}{40}=\frac{1}{40}$; त्याग अनुपात= 9 : 1

3. अ व ब एक फर्म में 3 : 2 में लाभ विभाजित करते हुए साझेदार है, स को प्रवेश देते है । ब व स के मध्य वही अनुपात होगा जो अ व ब के मध्य है ।

A	:	B		B	:	C		
3	:	2		3	:	2		
	x 3				x 2			
9	:	6		6	:	4	=	नया लाभ विभाजन अनुपात 9 : 6 : 4

4. अ व ब एक फर्म में 3 : 2 में लाभ विभाजित करते हुए साझेदार है स को लाभों में 1/5 हिस्से के लिए प्रवेश देते है स अपना 1/2 हिस्सा अ से व शेष हिस्सा अ व ब से बराबर–बराबर प्राप्त करता है, नया लाभ विभाजन अनुपात व त्याग का अनुपात होगा।

A का त्याग $\frac{1}{5}X\frac{1}{2}=\frac{1}{10}$; C का शेष हिस्सा $\frac{1}{5}-\frac{1}{10}=\frac{1}{10}$; शेष हिस्से में A का त्याग $\frac{1}{10}X\frac{1}{2}=\frac{1}{20}$

A का कुल त्याग $\frac{1}{10}+\frac{1}{20}=\frac{3}{20}$; B का त्याग $\frac{1}{10}X\frac{1}{2}=\frac{1}{20}$; त्याग अनुपात $\frac{3}{20}:\frac{1}{20}$ = 3 : 1

नया लाभ विभाजन अनुपात = पुराना लाभ विभाजन अनुपात – त्याग अनुपात

A= $\frac{3}{5}-\frac{3}{20}=\frac{12-3}{20}=\frac{9}{20}$; B= $\frac{2}{5}-\frac{1}{20}=\frac{8-1}{20}=\frac{7}{20}$

नया लाभ विभाजन अनुपात होगा = $\frac{9}{20}:\frac{7}{20}:\frac{1}{5}$; $\frac{9:7:4}{20}$; नया लाभ विभाजन अनुपात 9 : 7 : 4

5. अ, ब व स एक फर्म में साझेदार है जो 3 : 2 : 1 में लाभ विभाजन करते है । वे द को प्रवेश देते है । द अपने हिस्से का 1/4 भाग अ से प्राप्त करता हैं। ब अपने हिस्से का 1/4 व स अपने हिस्से का 1/5 द के पक्ष में समर्पण करते हैं। नया लाभ विभाजन अनुपात होगा ।

B का त्याग $\frac{2}{6}x\frac{1}{4}=\frac{2}{24}$; Cका त्याग $\frac{1}{6}x\frac{1}{5}=\frac{1}{30}$; B व Cका कुल त्याग $\frac{2}{24}+\frac{1}{30}$; $\frac{10+4}{120}=\frac{14}{120}$

चूंकि Aने Dके हिस्से का $\frac{1}{4}$ त्याग किया अर्थात् Bव Cने Dके हिस्से का $\frac{3}{4}$ भाग त्याग किया।

अतः Aका त्याग होगा $\frac{14}{120}X\frac{4}{3}X\frac{1}{4}=\frac{14}{360}$

त्याग का अनुपात A B C

$\frac{14}{360}:\frac{2}{24}:\frac{1}{30}$; $\frac{14:30:12}{360}$ = त्याग का अनुपात 7 : 15 : 6

नया लाभ विभाजन अनुपात = पुराना लाभ विभाजन अनुपात – त्याग अनुपात

A= $\frac{3}{6}-\frac{14}{360}=\frac{180-14}{360}=\frac{166}{360}$; B= $\frac{2}{6}-\frac{2}{24}=\frac{8-2}{24}=\frac{6}{24}$

C= $\frac{1}{6}-\frac{1}{30}=\frac{5-1}{30}=\frac{4}{30}$; Dका हिस्सा $\frac{14}{360}+\frac{2}{24}+\frac{1}{30}=\frac{56}{360}$

= $\frac{166}{360}:\frac{6}{24}:\frac{4}{30}:\frac{56}{360}$ = $\frac{166:90:48:56}{360}$ नया लाभ विभाजन अनुपात 83 : 45 : 24 : 28

6. अ व ब 3 :2 में लाभ विभाजित करते हुये साझेदार है, वे स को प्रवेश देते है । नया लाभ विभाजन अनुपात 5 : 3 : 2 है तो त्याग अनुपात होगा

त्याग का अनुपात = पुराना लाभ विभाजन अनुपात – नया लाभ विभाजन अनुपात

A= $\frac{3}{5}-\frac{5}{10}=\frac{1}{10}$; B= $\frac{2}{5}-\frac{3}{10}=\frac{1}{10}$; त्याग का अनुपात= 1 : 1

ख्याति (Goodwill)

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

ख्याति एक अदृश्य संपत्ति है, जिसका वर्णन करना सरल है लेकिन परिभाषा देना कठिन हैं। यह व्यवसाय के अच्छे नाम, प्रतिष्ठा एवं संबंधों से मिलने वाला लाभ है, यह वह आकर्षण शक्ति है जो ग्राहकों को लाती हैं। व्यवसाय की प्रतिष्ठा का मौद्रिक मूल्यांकन ही ख्याति हैं।

लार्ड एल्डनः "ख्याति इस संभावना के अतिरिक्त और कुछ नहीं है कि पुराने ग्राहक पुराने स्थान को ही चुनते हैं।"

लार्ड लिण्डलेः "ख्याति संबंधों तथा प्रसिद्धि से होने वाला लाभ हैं।"

ख्याति की विशेषताएं (Characteristics of Goodwill)

1. ख्याति व्यवसाय की अदृश्य (अमूर्त) सम्पत्ति है
2. यह एक मूल्यवान संपत्ति है
3. यह अधिक लाभार्जन में सहायक होती हैं।
4. यह एक ऐसी आकर्षण शक्ति है जो कि ग्राहकों को उनके पुराने स्थान पर लाती हैं।
5. इसका मूल्य परिवर्तित होता रहता हैं।

ख्याति के मूल्य को प्रभावित करने वाले तत्त्व (Factors affecting the value of Goodwill)

1. व्यवसाय का सुविधाजनक स्थान,
2. प्रबंध की कुशलता
3. व्यवसाय की दीर्घकालीन अवधि,
4. वस्तु की प्रकृति
5. लाइसेंस का होना,
6. एकाधिकार
7. जोखिम की मात्रा
8. लाभों की प्रवृति,
9. भावी प्रतिस्पर्धा
10. पूँजी की मात्रा
11. उत्पाद की किस्म

ख्याति के मूल्यांकन की आवश्यकता(need for the valuation of Goodwill)

एक साझेदारी फर्म में निम्न दशाओं में ख्याति के मूल्यांकन की आवश्यकता होती हैं।

1. जब एक नया साझेदार प्रवेश करता हैं।
2. जब वर्तमान साझेदारों के मध्य लाभ–विभाजन अनुपात में परिवर्तन होता हैं।
3. जब कोई साझेदार अवकाश ग्रहण करता है अथवा साझेदार की मृत्यु हो जाती हैं।
4. जब फर्म का व्यवसाय बेचा जाता हैं।
5. जब दो फर्मों का एकीकरण हो जाता हैं।

ख्याति के प्रकार (Types of Goodwill)

- क्रय की गई ख्याति (Purchased Goodwill)
- स्वअर्जित ख्याति (Self Generated Goodwill)

1. **क्रय की गई ख्याति–** किसी व्यवसाय को क्रय करते समय यदि क्रय प्रतिफल व्यवसाय की शुद्ध सम्पत्तियों के मूल्य से अधिक है तो यह आधिक्य ही क्रय की गई ख्याति कहलाती हैं।Goodwill=Purchase consideration - Net Assets
   - **(a)** यह किसी व्यवसाय के क्रय करने पर उत्पन्न होती हैं।
   - **(b)** पुस्तकों में इसका लेखा किया जाता है, क्योंकि इसके लिये प्रतिफल का भुगतान किया गया हैं।
   - **(c)** इसे चिट्ठे में संपत्ति के रूप में दिखाया जाता हैं।
2. **स्वअर्जित ख्याति–**
   - **(a)** यह एक व्यवसायिक संस्था के अच्छे सम्बंधों और यश का मूल्य है जो व्यवसाय में सृजित किया जाता हैं।
   - **(b)** लेखा मानक 26 व Indian A.S.38 के अनुसार इसका लेखा पुस्तकों में नहीं किया जाता हैं।
   - **(c)** इस प्रकार की ख्याति के मूल्यांकन का प्रश्न फर्म के पुनर्गठन के समय उत्पन्न होता है।

ख्याति की प्रकृति (Nature of Goodwill)

- **1. संस्थागत ख्याति या बिल्ली के स्वभाव की ख्याति (Institutional Goodwill or Cat Goodwill)**
- **2. व्यक्तिगत ख्याति या कुत्ते के स्वभाव की ख्याति (Personal Goodwill or Dog Goodwill)**
- **3. आकस्मिक घटना सम्बन्धी ख्याति या चूहे के स्वभाव वाली ख्याति (Goodwill related to casual event or Rat Goodwill)**

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

1.**संस्थागत ख्यातिः–** ऐसी ख्याति संस्था की प्रतिष्ठा अच्छे नाम, उसके माल की प्रसिद्धि के कारण बनती हैं। संस्था के स्वामी के परिवर्तन का उस पर कोई प्रभाव नहीं पड़ता हैं। इस प्रकार की ख्याति का मूल्य सबसे अधिक होता हैं। इसे बिल्ली के स्वभाव की ख्याति भी कहा जाता है, क्योंकि बिल्ली अपना स्थान (घर) नहीं छोड़ती, चाहे उसका स्वामी बदल जाये।

2.**व्यक्तिगत ख्यातिः–** जब किसी व्यवसाय की ख्याति उसके स्वामी के व्यक्तित्व, कुशलता व व्यवहार आदि के कारण होती है, तो उसे व्यक्तिगत ख्याति कहते हैं। व्यवसाय के मालिक बदल जाने पर ख्याति भी उनके साथ चली जाती हैं। ग्राहक उस संस्था से संबंध बना लेते है, जहां पुराना स्वामी चला जाता हैं। ऐसी ख्याति को कुत्ते के स्वभाव वाली ख्याति कहा जाता है, क्योंकि कुत्ता स्वामीभक्त होता है, जहां स्वामी जाता है, कुत्ता भी वहां चला जाता हैं। इस तरह की ख्याति का मूल्य संस्थागत ख्याति से कम होता हैं। ऐसी ख्याति पेशे (Profession) वाले व्यवसाय में होती हैं। जैसे डॉक्टर, सी.ए., एडवोकेट इत्यादि।

3.**आकस्मिक घटना सम्बंधी ख्यातिः–** ऐसे व्यवसाय जिनकी ख्याति स्थिर नहीं होती हैं। अर्थात् छोटी–बड़ी घटना के साथ ख्याति का मूल्य बढ़ जाता है अथवा कम हो जाता है, आकस्मिक घटना संबंधी ख्याति कहलाती हैं। इसे चूहे के स्वभाव वाली ख्याति भी कहते हैं। चूहा न तो स्वामी का भक्त होता है और न ही किसी स्थान का। वह एक स्थान से दूसरे स्थान पर घूमता रहता हैं। चूहे के स्वभाव के ग्राहक किसी विशेष दुकान अथवा किसी विशेष व्यक्ति से लगाव नहीं रखते हैं। इस तरह की ख्याति का मूल्य बहुत कम होता हैं।

ख्याति के मूल्यांकन की विधियां :–

(1) **वर्षों की क्रय विधि (Year's Purchase Method) :–** ख्याति का मूल्यांकन व्यवसाय के लाभों के कुछ वर्षों के गुणा के आधार पर किया जाता हैं, जिसे वर्षों की क्रय विधि कहते हैं। इसके लिए व्यवसाय के लाभों की गणना दो आधारों पर की जाती है :–

1. **औसत लाभ आधार (Average Profit Base): -**

अ. सरल औसत लाभ (Simple Average Profit):– इस विधि के अन्तर्गत ख्याति का मूल्याकंन पिछले कुछ वर्षों के औसत लाभों (हानियों सहित) के आधार पर किया जाता हैं। औसत लाभों की गणना करते समय पिछले वर्षों के लाभों में निम्न समायोजन किये जाने चाहिए–

i. **असामान्य आय/लाभ :–** संबंधित वर्ष की आय में से कम कर देना चाहिए।
ii. **असामान्य व्यय/हानियां :–** संबंधित वर्ष की आय में जोड़ देना चाहिए।
iii. **गैर व्यापारिक विनियोगों पर आय :–** संबंधित वर्ष की आय में से कम कर देना चाहिए।

Average Profit (AP) = $\frac{\text{Total Adjusted Profits}}{\text{No. of years}}$ **औसत लाभ** = $\frac{\text{कुल समायोजित लाभ}}{\text{वर्षों की संख्या}}$

वास्तविक औसत लाभ Actual Average Profit (AAP)= औसत लाभ – साझेदारों का पारिश्रमिक (वेतन)

Goodwill = Actual Average Profit x No. of year's purchase
ख्याति = वास्तविक औसत लाभ xवर्षों के क्रय की संख्या

इसे निम्नांकित उदाहरणों से समझ सकते हैं–

(1) एक फर्म की ख्याति गत 5 वर्षों के औसत लाभ के दो वर्षीय क्रय (दोगुने) के आधार पर मूल्यांकित की जाती हैं।

Years	2012	2013	2014	2015	2016
Profits (₹)	15,000	18,000	7,000 (Loss)	10,000	14,000

ख्याति की गणना कीजिए।

औसत लाभ = $\frac{15000 + 18000 - 7000 + 10000 + 14000}{5}$ = $\frac{50000}{5}$ = 10000

Goodwill = A.P. X No. of years purchased = ₹ 10000 X 2 = ₹ 20,000

(2) फर्म की ख्याति का मूल्यांकन पिछले 3 वर्षों के औसत लाभ के दो वर्षों के क्रय के आधार पर करना है।

Years	Profits ₹	
2014	40000	(इसमें ₹10000 असामान्य लाभ शामिल हैं।)
2015	30000	(इसमें ₹ 5000 असामान्य हानि चार्ज की गई हैं।)
2016	33000	(इसमें ₹ 8000 विनियोगों पर ब्याज शामिल हैं।)

औसत लाभ=$\frac{30000 + 35000 + 25000}{3}$=$\frac{90000}{3}$ = 30,000

Goodwill = A.P. X No. of years purchase = 30000 X 2 = ₹ 60,000

(3)

Years	Profits ₹

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

2012	25000	(₹ 5000 सट्टे के लाभ शामिल)
2013	(–)5000	(₹40000 स्टॉक हानि चार्ज की गई)
2014	22000	(₹ 2000 सम्पत्ति के विक्रय के लाभ शामिल)

साझेदारों का वेतन₹5000 वार्षिक हैं। औसत लाभों के तीन वर्षों के क्रय के आधार पर ख्याति की गणना कीजिए।

$$\text{औसत लाभ} = \frac{20000 + 35000 + 20000}{3} = \frac{75000}{3} = ₹\ 25000$$

वास्तविक औसत लाभ=₹25,000–₹5,000=₹20,000; ख्याति=₹20,000x3=60,000

(ब) भारित औसत लाभ (Weighted Average Profit):- जब पिछले वर्षों के लाभों में निरन्तर घटने या बढ़ने की प्रवृत्ति हो तो साधारण औसत के बजाय भारित औसत के आधार पर ख्याति की गणना की जाती है। इस विधि में प्रत्येक वर्ष के लाभों का भार क्रमशः 1, 2, 3,4..... देकर गुणनफल ज्ञात किया जाता हैं। इसे निम्नांकित उदाहरणों से समझ सकते हैं :–

(i)

Years	Profits₹		Weight		Product (P X W)
2012	10000	X	1	=	10000
2013	12000	X	2	=	24000
2014	15000	X	3	=	45000
2015	20000	X	4	=	80000
2016	30000	X	5	=	150000
	Total of Weights →		15	Total Product of profits →	309000

$$\text{Weighted Average Profit (W.A.P.)} = \frac{\text{Total Product of profits}}{\text{Total of Weights}} = \frac{309000}{15} = ₹\ 20600$$

Goodwill = 20600 X 2 = ₹ 41200

(ii)एक फर्म के पिछले चार वर्षों के लाभ इस प्रकार हैं।भारित औसत लाभों के तीन वर्षों के क्रय के आधार पर ख्याति की गणना करें।

Years	Profits₹		Weight		Product (P X W)
2013	5000	X	1	=	5000
2014	7000	X	2	=	14000
2015	10000	X	3	=	30000
2016	15000	X	4	=	60000
			∑W 10		∑P 1,09,000

$$\text{Weighted Average Profit (W.A.P.)} = \frac{\text{Total Product of profits}}{\text{Total of Weights}} = \frac{109000}{10} = ₹10900$$

Goodwill = 10900 X 3 = ₹32700

(iii)एक फर्म की ख्याति का मूल्याकंन पिछले चार वर्षों के भारित औसत लाभ के तीन वर्षों के क्रय के आधार पर करें।

Years	Profits₹	Weight
2012-13	20200	1
2013-14	24800	2
2014-15	20000	3
2015-16	30000	4

लेखों के जांच से निम्नलिखित बातें प्रकट हुई– **(a)** 01 दिसम्बर, 2014 को प्लाट के संबंध में एक बड़ा मरम्मत का काम किया गया था जिस पर ₹ 6000 खर्च हुए थे। इस राशि को लाभ हानि खाते से चार्ज कर लिया गया था। यह तय हुआ कि ख्याति का मूल्यांकन करने के लिए इस राशि का पूँजीकरण किया जाए। लेकिन इस पर क्रमागत ह्रास विधि से 10 प्रतिशत वार्षिक दर से ह्रास का समायोजन करना हैं। **(b)** वर्ष 2013–14 में अंतिम स्टॉक का मूल्यांकन ₹2400 से अधिक किया गया। **(c)** ख्याति के मूल्यांकन के लिए प्रबंधकीय लागत के संबंध में ₹4800 वार्षिक चार्ज लगाना हैं।

हल :

Years	2012-13₹	2013-14₹	2014-15₹	2015-16₹
Profits	20200	24800	20000	30000
(-) Managerial Cost	4800	4800	4800	4800
(+) Capital Expenditure Charge to revenue	-	-	6000	-
(-) Dep. (Not Provided)	-	-	200	580

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

(-) Over Valuation of closing Stock	-	2400	-	-
(+) Over Valuation of Opening stock	-	-	2400	-
Adjusted Profits	**15400**	**17600**	**23400**	**24620**

Years	Profits₹	Weight		Product (P X W)
2012-13	15400 X	1	=	15400
2013-14	17600 X	2	=	35200
2014-15	23400 X	3	=	70200
2015-16	24620 X	4	=	98480
	Total of Weights→	10	Total Product of profits→	219280

भारित औसत लाभ (W.A.P.) = Total Product of profits / Total of Weights = 219280 / 10 = ₹ 21928;

Goodwill = 21928 x 3 = ₹ 65,784

2. **अधिलाभ आधार (Super profit base):**—यदि फर्म सामान्य लाभ से अधिक लाभ कमाती है, तो उसे फर्म का अधिलाभ कहते हैं। व्यापार के वास्तविक औसत लाभ और सामान्य लाभ का अंतर अधिलाभ कहलाता हैं।

Super profit = Actual average profit - Normal Profit ; S.P. = A.A.P. - N.P.

अधिलाभ = वास्तविक औसत लाभ — सामान्य लाभ

सामान्य लाभ = विनियोजित पूँजी **x** सामान्य प्रत्याय दर Normal Profit = Capital Employed x NRR

Capital Employed Assets Employed – Outside Liabilities ; विनियोजित पूँजी= प्रयुक्त सम्पत्तियां — बाह्य दायित्व

प्रत्याय की सामान्य दर से आशय, उद्योग में लगी अन्य फर्मों द्वारा अर्जित लाभ की सामान्य दर जो प्रायः प्रश्न में दी गई होगी। प्रश्न विशेष में :

Normal Rate of return (NRR) = Rate of Interest + Risk Factor

सामान्य प्रत्याय दर = ब्याज की दर + जोखिम का तत्व

नोटः—यदि अधिलाभ **(S.P.)** शून्य हो या ऋणात्मक हो तो ख्याति का मूल्य शून्य होगा।

Goodwill = super profit x no. of year's purchase; ख्याति = अधिलाभ x वर्षों के क्रय की संख्या

विविध उदाहरण :

(1) एक फर्म की पूँजी ₹ 50000 हैं तथा सामान्य प्रत्याय दर 10 प्रतिशत हैं। फर्म के वास्तविक औसत लाभ ₹ 9000 हैं। अधिलाभों के चार गुने के बराबर ख्याति की गणना कीजिए।

Normal profit = Capital Employed x N.R.R. = 50000 X 10 /100 = ₹ 5000

S.P. = AAP - NP ; अधिलाभ = 9000 - 5000 = ₹ 4000

ख्याति = SP X 4 = 4000 X 4 = ₹ 16000

(2) ए व बी फर्म की पूँजी ₹2,00,000 और सामान्य प्रत्याय दर 10 प्रतिशत हैं। प्रत्येक साझेदार का वार्षिक वेतन ₹ 6000 है। फर्म के पिछले तीन वर्षों के लाभ इस प्रकार है—₹ 40000, ₹35000,₹45000 अधिलाभ के दो वर्ष के क्रय के आधार पर ख्याति की गणना करें —

वास्तविक औसत लाभ=(40000 + 35000 + 45000) / 3 = 120000 / 3 = 40000-12000 (Salary to partners) = ₹ 28000

Normal profit = Capital Employed x N.R.R. → = 2,00,000 x 10 /100 = ₹ 20000

अधिलाभ = 28000 - 20000 = ₹ 8000 ; ख्याति = SP X 2 = 8000 X 2 = ₹16000

(3) 1 अप्रैल 2017 को एक फर्म की सम्पत्तियां ₹2,00,000 थी, जिसमें ₹ 10000 रोकड़ भी शामिल थी। इस तिथि को लेनदार ₹ 10,000 के थे। साझेदारों के पूँजी खातों में ₹1,60,000 का शेष व संचय कोष ₹30000 का था। ब्याज की दर 8 प्रतिशत व जोखिम तत्व दो प्रतिशत था। अधिलाभों के तीन वर्षीय क्रय पर फर्म की ख्याति का मूल्य₹ 33000 हो तो वास्तविक औसत लाभ की राशि होगी।

Capital Employed = Assets - Liabilities =200000 - 10000 = ₹ 190000

Normal rate of return = rate of interest + Risk factor = 8% + 2% = 10%

Normal profit = Capital Employed x N.R.R. = 190000 X 10 /100 = ₹19000

अधिलाभ = वास्तविक औसत लाभ — सामान्य लाभ

11000 =वास्तविक औसत लाभ + ₹ 19000

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

19000 + 11000 = ₹ 30000 (वास्तविक औसत लाभ)

कार्यशील टिप्पणी

ख्याति = SP X 3 = 33000 ; 33000 = SP X 3 ; S.P. = 33000/3 = ₹ 11000

(4) एक फर्म के पिछले तीन वर्षों के लाभ इस प्रकार है–₹ 20000, ₹ 17000, ₹23000 विनियोजित पूँजी, ₹1,00,000 व सामान्य प्रत्याय दर 12 प्रतिशत हैं। अधिलाभों के तीन वर्षों के क्रय के आधार पर ख्याति की गणना कीजिए।

औसत लाभ $= \frac{20000 + 17000 + 23000}{3} = \frac{60000}{3} =$ ₹ 20000

सामान्य लाभ = Capital Employed x N.R.R. = 100000 x 12 /100 = ₹ 12000

अधिलाभ = AAP - NP = 20000 - 12000 = ₹ 8000; ख्याति = SP x 2 = 8000 x 3 = ₹ 24000

नोट : उपरोक्त दोनों आधार (औसत लाभ एवं अधिलाभ) अन्य विधियों में भी प्रयोग किये जाते हैं।

(2) पूँजीकरण विधि (Capitalisation method):– इस विधि के अन्तर्गत व्यवसाय द्वारा अर्जित लाभों का पूँजीकरण करके ख्याति का मूल्य ज्ञात किया जाता हैं। इस विधि की अन्तर्गत ख्याति का मूल्यांकन दो आधारों पर किया जा सकता हैं।

(अ) औसत लाभों की पूँजीकरण विधि

औसत लाभों का पूँजीकरण मूल्य $= \frac{\text{औसत लाभ} \times 100}{\text{सामान्य प्रत्याय की दर}}$

ख्याति=लाभों का पूँजीकृत मूल्य – विनियोजित पूँजी Goodwill = capitalised value of profits - Capitalemployed

नोटः– यदि औसत लाभों का पूँजीकृत मूल्य व विनियोजित पूँजी का अन्तर शून्य या ऋणात्मक है तो ख्याति का मूल्य शून्य होगा।

(i) एक फर्म का औसत लाभ ₹15000 है और फर्म की पूँजी ₹1,00,000 हैं। सामान्य प्रत्याय दर 10 प्रतिशत हैं। औसत लाभों की पूँजीकरण विधि से ख्याति की गणना कीजिए।

ख्याति= $\frac{\text{औसत लाभ} \times 100}{\text{सामान्य प्रत्याय की दर}}$ -विनियोजित पूँजी

Goodwill = $\frac{\{15000 \times 100\}}{10}$ - 100000 = 150000 - 100000 = ₹ 50000

(ii) वास्तविक औसत लाभ ₹46000; सामान्य प्रत्याय की दर =10%; सम्पत्तियां = ₹500000; दायित्व= ₹ 100000 औसत लाभों की पूँजीकरण विधि से ख्याति की गणना कीजिए।

ख्याति=$\left(\frac{46000 \times 100}{10}\right)$ - 400000 = ₹ 60000

(ब) अधिलाभों की पूँजीकरण विधि :– ख्याति = $\frac{\text{औसत लाभ} \times 100}{\text{सामान्य प्रत्याय की दर}}$ Goodwill = $\frac{\text{S.P.} \times 100}{\text{N.R.R}}$

(i) औसत लाभ = ₹100000, सामान्य प्रत्याय की दर 10%; विनियोजित पूँजी ₹ 800000

Normal profit = Capital Employed x N.R.R. = 800000 x 10 /100 = ₹ 80,000

अधिलाभ = औसत लाभ – सामान्य लाभ

S.P.=100000 - 80000 = ₹20000 ; ख्याति = $\frac{\text{S.P.} \times 100}{\text{NRR}} = \frac{20000 \times 100}{10}$ = ₹ 2,00,000

(ii) Assets ₹ 300000, Liabilities ₹ 50000, NRR 10%, AAP ₹30000

Normal profit = Capital Employed x N.R.R. = 250000 X 10 /100 = ₹25,000

Capital Employed = Assets - Liabilities = 300000- 50000 = ₹ 2,50,000

अधिलाभ = औसत लाभ – सामान्य लाभ = 30000 . 25000 = ₹ 5000

ख्याति = $\frac{\text{S.P.} \times 100}{\text{NRR}} = \frac{5000 \times 100}{10}$ = ₹ 50000

(iii) औसत लाभ ₹50,000, NRR 10%, Capital Employed ₹ 3,00,000

औसत लाभों की पूँजीकरण विधि व अधिलाभों की पूँजीकरण विधि से ख्याति की गणना करो।

(a) on the basis of Average Profit

ख्याति = $\left(\frac{\text{AP X 100}}{\text{NRR}}\right)$ – Capital Employed = $\left(\frac{50000 \text{ X } 100}{10}\right)$ - 300000 = ₹ 2,00,000

(b) on the basis of Super Profit

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

सामान्य लाभ = Capital Employed x N.R.R. = 300000 x 10 /100 = ₹ 30000

अधिलाभ = AP - NP = 50000 - 30000 = ₹ 20000

ख्याति = $\frac{\text{S.P. x 100}}{\text{NRR}}$ = $\frac{20000 \text{ x } 100}{10}$ = ₹ 200000

(3) गुप्त (छिपी हुई) या अनुमानित ख्याति विधि (Hidden Goodwill Method):–

नये साझेदार के लाभ के हिस्से व उसके द्वारा लाई गई पूँजी के आधार पर फर्म की कुल पूँजी ज्ञात करते हैं।

फर्म की ख्याति = कुल पूँजी– पुराने साझेदारों की समायोजित पूँजी– नये साझेदार की पूँजी

समायोजित पूँजी का आशय : पूँजी शेष + संचय + लाभ – हानि

(i) ए, बी एक फर्म में साझेदार है जिनकी पूँजी क्रमशः₹20,000 व ₹30,000 हैं। सी को लाभों में 1/5 हिस्से के लिए प्रवेश दिया, जो पूंजी के रूप में ₹ 15,000 लाता हैं। उक्त सूचनाओं से ख्याति का मूल्य ज्ञात कीजिए।

सी की पूँजी के आधार पर फर्म की कुल पूँजी $15000 \text{ X} \frac{5}{1}$ = ₹75000

फर्म की ख्याति = फर्म की कुल पूँजी – ए व बी की समायोजित पूँजी – सी की पूँजी

75000 - 50000 – 15000 = ₹ 10000

(ii) ए व बी साझेदार है जिनकी पूँजी खातों के शेष ₹ 10,000 व ₹ 20,000 हैं। चिट्ठे में अवतरित संचय ₹10,000 का हैं। सी को 1/4 हिस्से के लिए फर्म में प्रवेश देते हैं। जो ₹ 20,000 पूँजी लाता हैं। उक्त सूचनाओं से ख्याति का मूल्य ज्ञात कीजिए।

सी की पूँजी के आधार पर फर्म की कुल पूँजी ₹

$20000 \times \frac{4}{1} = 80000$

(–) ए व बी की समायोजित पूंजी

(10000 + 5000) + (20000 + 5000) = 40000

(–) सी की पूंजी = 20000

फर्म की ख्याति = 20000

(4) क्रय प्रतिफल विधि (Purchased Consideraton Method): -

ख्याति = क्रय प्रतिफल – शुद्ध सम्पत्तियां

उदाहरण : एक व्यवसाय की सम्पत्तियां ₹2,00,000 व दायित्व ₹ 50,000 के हैं। व्यवसाय का क्रय प्रतिफल ₹1,70,000 तय हुआ। तो ख्याति का मूल्य कितना होगा।

Net Assest = Assets - Liabilities = 200000 - 50000 = ₹ 1,50,000

ख्याति = Purchase Consideration - Net Assets = 170000 - 150000 = ₹ 20000

(5) वार्षिकी विधि (Annuity Method):–

ख्याति = Super Profit X Present value of Annuity

यदि वार्षिकी का वर्तमान मूल्य नहीं दिया गया है, तो उसकी गणना निम्न सूत्र से की जाती हैं।

$$\text{Present Value of Annuity} = \frac{1 - \left(\frac{100}{100+r}\right)n}{\frac{r}{100}}$$

n = वर्षों की संख्या r = सामान्य प्रत्याय दर

जैसे n = 3, r = 10% तो

$$\text{Present Value of Annuity} = \frac{1 - \left(\frac{100}{100+10}\right)^3}{\frac{10}{100}} = 2.487$$

(i) औसत लाभ = ₹20,000, विनियोजित पूँजी = ₹1,50,000, सामान्य प्रत्याय की दर=10%, वर्तमान मूल्य=2.487वार्षिकी विधि से ख्याति का मूल्य ज्ञात करों।

Normal profit = Capital Employed x N.R.R. = 150000 X 10 /10 = ₹15000

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

S.P. = AP - NP = 20000 - 15000 = ₹ 5000
ख्याति = S.P. x P.V. = 5000 x 2.487 = ₹ 12435

ख्याति (प्रीमियम) का लेखांकन व्यवहार (Accounting Treatment of Goodwill)

नये साझेदार के प्रवेश के समय ख्याति के व्यवहार से सम्बन्धित निम्नलिखित परिस्थितियाँ हो सकती है –

1. जब ख्याति की राशि का भुगतान निजी रूप से किया जाये।
2. जब नया साझेदार अपने हिस्से की ख्याति की राशि नकद लेकर आता हैं।
3. जब नया साझेदार अपने हिस्से की ख्याति की राशि नकद लेकर नहीं आता हैं।
4. जब नया साझेदार अपने हिस्से की ख्याति आंशिक रूप से नकद में लाता हैं।
5. जब नया साझेदार अपने हिस्से की ख्याति सम्पत्ति (In Kind)के रूप में लाता हैं।
6. छिपी हुई ख्याति का लेखा।
7. लाभ विभाजन अनुपात में परिवर्तन होने पर ख्याति का लेखा।

टिप्पणी: उपर्युक्त सभी परिस्थितियों में यदि पुस्तकों में ख्याति खाता खुला हुआ (विद्यमान) है तो उसे अपलिखित (बन्द) किया जायेगा।

Old Partner's Capital A/c Dr. (OPSR)
To Goodwill A/c
(Being Existing Goodwill A/c is written off in old profit sharing ratio)

(1) जब ख्याति की राशि का भुगतान निजी रूप से किया जाये (When amount of Goodwill is paid privately)– यदि नया साझेदार अपने हिस्से की ख्याति की राशि का भुगतान पुराने साझेदारों को निजी रूप से कर देता है तो फर्म की पुस्तकों में कोई प्रविष्टि नहीं की जायेगी, क्योंकि ख्याति की राशि फर्म में नहीं लिखी जाती हैं।

(2) जब नया साझेदार अपने हिस्से की राशि नकद लेकर आता हैं। इस स्थिति में निम्न प्रविष्टियां की जाती है –

(i) ख्याति की राशि नकद लाने पर

Cash A/c Dr.
To Goodwill A/c
(Being amount of goodwill brought in cash)

(ii) ख्याति की राशि त्याग करने वाले साझेदारों के खातों में त्याग अनुपात में हस्तांतरित करने पर

Goodwill A/c Dr.
To Sacrificing partner's capital A/c
(Being amount of goodwill transferred to sacrificing partner's capital A/c)

(iii) ख्याति की राशि व्यापार से निकालने पर

Sacrificing partner's capital A/c Dr.
To Cash A/c
(Being amount of goodwill withdrawn by sacrificing partners)

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

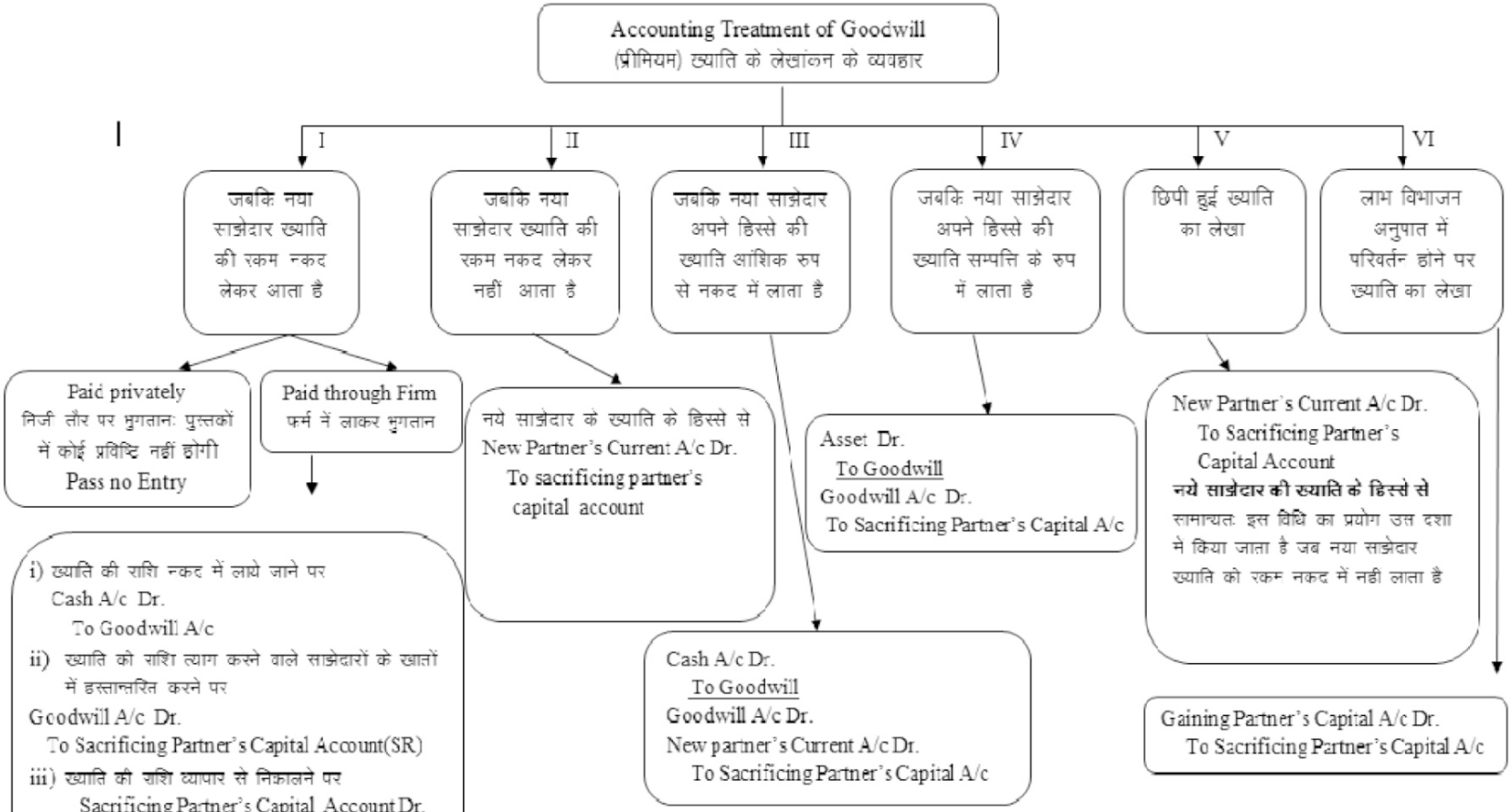

नोटः– उपर्युक्त सभी परिस्थितियों में यदि पुस्तकों में ख्याति खाता खुला हुआ है तो उसे अपलिखित (बंद) किया जायेगा। जिसके लिए निम्न प्रविष्टि होगी।

Old Partner's Capital A/c Dr. (OPSR)
To Goodwill A/c

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

(3) जब नया साझेदार अपने हिस्से की ख्याति नकद लेकर नहीं आता है, इस दशा में त्याग अनुपात में निम्न प्रविष्टि होगी –

New partner's current A/c Dr.
To Sacrificing partner's capital A/c
(Being share of goodwill of new partner is adjusted through capital A/c)

टिप्पणी – इस दशा में नये साझेदार के पूँजी खाते के स्थान पर उसके चालू खाते को डेबिट किया गया है, ताकि उसकी पूँजी कम न हो।

(4) जब नया साझेदार अपने हिस्से की ख्याति आंशिक रूप से नकद में लाता है, इस दशा में निम्न प्रविष्टियां होगी –

(i) ख्याति का जो हिस्सा नकद लेकर आया है –

Cash A/c Dr.
To Goodwill A/c
(Being amount of goodwill brought in cash)

(ii) त्याग करने वाले साझेदारों के खातों में त्याग अनुपात में ख्याति का हस्तांतरण करने पर

Goodwill A/c Dr. (नकद लाया)
New partner's current A/c Dr. (नकद नहीं लाया)
To Sacrificing partner's capital A/c
(Being amount of goodwill is transferred to sacrificing partner's capital A/c)

(5) जब नया साझेदार अपने हिस्से की ख्याति सम्पत्ति (kind) के रूप में लाता है, इस दशा में निम्न प्रविष्टियां होगी –

(i) ख्याति के लिये सम्पत्ति लाने पर –

Asset A/c Dr.
To Goodwill A/c
(Being asset contribute by new partner for his share of goodwill)

(ii) ख्याति को त्याग करने वाले साझेदारों के पूँजी खातों में त्याग अनुपात में हस्तांतरित करने पर –

Goodwill A/c Dr.
To Sacrificing partner's capital A/c
(Being goodwill transfer to sacrificing partner's capital A/c)

(6) छिपी हुई ख्याति (Hidden Goodwill) का लेखा :–

सामान्यतः इस विधि का प्रयोग उस दशा में किया जाता है जब नया साझेदार ख्याति की राशि नकद लेकर नहीं आता हैं। नये साझेदार के ख्याति के हिस्से से :

New partner's current A/c Dr.
To Sacrificing partner's capital A/c
(Being amount of goodwill adjusted through sacrificing partner's capital A/c)

(7) साझेदारों के लाभ विभाजन अनुपात में परिवर्तन होने पर ख्याति के लिए लेखांकन प्रविष्टि :

Gaining partner's current A/c Dr.
To Sacrificing partner's capital A/c
(Being adjustment goodwill due to change in profit sharing ratio)

नोटः– (1) ख्याति के लिए प्रीमियम शब्द का भी उपयोग किया जा सकता हैं।

(2) नये साझेदार द्वारा लाई गयी ख्याति की राशि त्याग करने वाले साझेदारों में उनके त्याग अनुपात में बांटी जाएगी।

(3) **लेखा मानक 10, 26/Indian A.S. 38 के अनुसार ख्याति को पुस्तकों में तभी लिखा जाता हैं। जबकि इसको क्रय करने हेतु मुद्रा या मुद्रा तुल्य कोई प्रतिफल चुकाया गया हों। अतः केवल क्रय की गई ख्याति का लेखा पुस्तकों में होगा।**

स्वअर्जित ख्याति (Self Generated Goodwill) जो किसी साझेदार के प्रवेश अवकाश ग्रहण, मृत्यु अथवा वर्तमान साझेदारों के लाभ विभाजन अनुपात में परिवर्तन होने पर अर्जित होती है, का समायोजन साझेदारों के पूँजी खातों/ चालू खातों के माध्यम से किया जाना चाहिए। इस आधार पर पुस्तकों में ख्याति खाता नहीं खोला जा सकता हैं। क्योंकि इस दशा में कोई प्रतिफल नहीं चुकाया जाता हैं।

(i) ए व बी एक फर्म में साझेदार हैं। जो 3 : 2 के अनुपात में लाभ विभाजन करते हैं। सी को लाभ में 1/4 हिस्से के लिए प्रवेश देते हैं। सी ख्याति के लिए ₹ 20,000 नकद लाता हैं। यह मानते हुए जर्नल प्रविष्टियां कीजिए कि

(a) ख्याति को व्यवसाय में रहने दिया जाता हैं।

(b) ख्याति को व्यवसाय से निकाल दिया जाता हैं।

a. (i) Cash A/c Dr. 20000

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

To Goodwill A/c 20000
(Being amount of goodwill brought in cash)

(ii) Goodwill A/c Dr. 20000
To A'S Capital A/c 12000
To B'S Capital A/c 8000
(Being amount G/W distributed between sacrificing partners)

b. उपर्युक्त (i) & (ii) के अतिरिक्त, एक प्रविष्टि और होगी।

A'S Capital A/c Dr. 12000
B'S Capital A/c Dr. 8000
To Cash A/c 20000
(Amount of goodwill withdrawn by the sacrificing partners)

(ii) ए व बी एक फर्म में साझेदार हैं। जो 3 : 2 में लाभ विभाजन करते हैं। सी साझेदार के रूप में प्रवेश पाता हैं। ए व बी अपने लाभ के अंश का आधा भाग सी के पक्ष में समर्पित करते हैं। सी के प्रवेश की तिथि को फर्म की ख्याति का मूल्य ₹40,000 हैं। सी अपना हिस्सा नकद लाता हैं।
ए व बी ख्याति की तीन–चौथाई राशि व्यापार से निकाल लेते हैं। जर्नल प्रविष्टियाँ कीजिए।
सी का ख्याति में हिस्सा = 40000 X 1/2 = ₹ 20000

$A = \frac{3}{5} x \frac{1}{2} = \frac{3}{10}$ $B = \frac{2}{5} x \frac{1}{2} = \frac{2}{10}$ त्याग अनुपात 3 : 2 सी का लाभों में हिस्सा $\frac{3}{10} + \frac{2}{10} = \frac{5}{10} = \frac{1}{2}$

जर्नल प्रविष्टियां

Cash A/c Dr. 20000
To Goodwill A/C 20000
(Being amount of goodwill brought in cash)
Goodwill A/C Dr. 20000
To A'S Capital A/c 12000
To B'S Capital A/c 8000
(Being amount of goodwill distributed between sacrificing partners)
A'S Capital A/c Dr. 9000
B'S Capital A/c Dr. 6000
To Cash 15000
(Being goodwill withdrawn by sacrificing partners)

(iii) ए व बी लाभों को 2 : 3 के अनुपात में बांटते हुए साझेदार हैं। वे सी को लाभों में 3/7 हिस्से के लिए प्रवेश देते हैं। सी 2/7 भाग ए से व 1/7 भाग बी से प्राप्त करता हैं। सी अपने हिस्से की ख्याति के लिए ₹30,000 नकद लाता हैं। सी के प्रवेश की तिथि को पुस्तकों में ख्याति खाता ₹ 20,000 पर प्रकट होता हैं। जर्नल प्रविष्टियां कीजिए।
त्याग का अनुपात = 2/7 : 1/7 = 2 : 1

Cash A/c Dr. 30000
To Goodwill A/c 30000
(Being amount of Goodwill brought in cash)
Goodwill A/c Dr. 30000
To A'S Capital A/c 20000
To B'S Capital A/c 10000
(Being amount of Goodwill distributed in sacrifice ratio)
A'S Capital A/c Dr. 12000
B'S Capital A/c Dr. 8000
To Goodwill 20000
(Goodwill A/c written off.)

(IV) ए व बी साझेदार है जो 3:2 में लाभ विभाजन करते हैं। सी को नया साझेदार बनाया जाता हैं। सी ख्याति के लिए ₹ 20,000 नकद लाता हैं। निम्न दशाओं में ख्याति का लेखा कीजिए।

(a) सी को 1/5 भाग के लिए शामिल किया जाता हैं। जिसे वह पूर्ण रूप से ए से प्राप्त करता हैं।

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

(b) सी को 1/5 भाग के लिए शामिल किया जाता हैं। जिसे वह पूर्ण रूप से बी से प्राप्त करता हैं।
(c) सी को 1/5 भाग के लिए शामिल किया जाता हैं।
(d) सी को 1/5 भाग के लिए शामिल किया जाता हैं। जिसे वह ए व बी से समान रूप से प्राप्त करता हैं।
(e) ए, बी व सी का नया अनुपात 1 : 1 : 3 निर्धारित होता हैं।
(f) सी 3/20 भाग ए से व 1/20 भाग बी से प्राप्त करता हैं।

Following Entry is common in all case:

Cash A/c	Dr.	20000	
To Goodwill A/c			20000
(Being amount of goodwill brought in cash)			

(a) सी अपना हिस्सा 1/5 पूर्ण रूप से ए से प्राप्त करता हैं।

Goodwill A/c	Dr.	20000	
To A'S Capital A/c			20000
(Being amount of goodwill transferred to A's Capital A/c)			

(b) सी अपना हिस्सा 1/5 पूर्ण रूप से बी से प्राप्त करता हैं।

Goodwill A/c	Dr.	20000	
To B'S Capital			20000
(Being amount of goodwill transferred to B's Capital A/c)			

(c) सी को 1/5 भाग के लिए शामिल किया जाता हैं। (इस दशा में OPSR व SR समान होता हैं।) अतः त्याग का अनुपात 3 : 2

Goodwill A/c	Dr.	20000	
To A's Capital			12000
To B's Capital			8000
(Being amount of goodwill distributed between A and B in their sacrificing ratio)			

(d) सी अपना हिस्सा 1/5 ए व बी से बराबर–बराबर प्राप्त करता हैं। इस दशा में त्याग अनुपात 1 : 1 होगा

Goodwill A/c	Dr.	20000	
To A's Capital			10000
To B's Capital			10000
(Being amount of goodwill distributed between A and B in their sacrificing ratio)			

(e) इस दशा में ए और बी का त्याग 2 : 1 है

Goodwill A/c	Dr.	20000	
To A's Capital			13333
To B's Capital			6667
(Being amount of goodwill distributed between A and B in their sacrificing ratio)			

(f) सी 3/20 भाग ए से व 1/20 भाग बी से प्राप्त करता हैं। इस दशा में त्याग अनुपात 3 : 1 है

Goodwill A/c	Dr.	20000	
To A's Capital A/c			15000
To B's Capital A/c			5000
(Being amount of goodwill distributed between A and B in their sacrificing ratio)			

(5) ए व बी एक फर्म में साझेदार हैं। जो 4 : 3 में लाभ विभाजन करते हैं। सी को नया साझेदार बनाते हैं। नया अनुपात 3 : 2 : 2 हैं। सी अपने हिस्से की ख्याति नकद लाने में असमर्थ हैं। सी के प्रवेश की तिथि को फर्म की ख्याति का मूल्यांकन ₹ 28,000 पर किया गया। आवश्यक जर्नल प्रविष्टियां कीजिए।

त्याग का अनुपात = पुराना लाभ विभाजन अनुपात – नया लाभ विभाजन अनुपात

$A = \frac{4}{7} - \frac{3}{7} = \frac{1}{7}$; $B = \frac{3}{7} - \frac{2}{7} = \frac{1}{7}$;ए बी का त्याग अनुपात 1:1 ; सी का ख्याति में हिस्सा $28000 \times \frac{2}{7} = ₹8000$

C's Current Account	Dr.	8000	
To A's Capital A/c			4000
To B's Capital A/c			4000

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

(Being C's share of goodwill adjusted)

(6) ए व बी एक फर्म में 2 : 1 के अनुपात में लाभ विभाजन करते हुए साझेदार हैं। सी को फर्म में प्रवेश देते हैं। नया लाभ विभाजन अनुपात 2 : 1 : 1 हैं। सी के प्रवेश की तिथि को ख्याति का मूल्यांकन ₹ 30,000 पर किया गया। सी अपना हिस्सा नकद लाने में असमर्थ हैं। सी के प्रवेश की तिथि को पुस्तकों में ख्याति खाता ₹15,000 पर दिखाया गया हैं। आवश्यक जर्नल प्रविष्टियां कीजिए।

त्याग का अनुपात = पुराना लाभ विभाजन अनुपात – नया लाभ विभाजन अनुपात

$A = \frac{2}{3} - \frac{2}{4} = \frac{2}{12}$; $B = \frac{1}{3} - \frac{1}{4} = \frac{1}{12}$ए, बी का त्याग अनुपात 2 : 1

A's Capital	Dr.	10000	
B's Capital	Dr.	5000	
To Goodwill A/c			15000

(Being goodwill account written off)

सी का ख्याति में हिस्सा 30000 x 1 /4 = ₹ 7500

C's Current Account	Dr.	7500	
To A's Capital A/c			5000
To B's Capital A/c			2500

(Being goodwill adjusted between A & B)

नोटः– जबकि नया साझेदार ख्याति की रकम नकद लाने में असमर्थ हैं तो उस दशा में नये साझेदार के पूँजी खाते के स्थान पर उसके चालू खाते को डेबिट किया गया हैं ताकि उसकी पूँजी कम न हो।

(7) ए व बी एक फर्म में साझेदार है जो 2 : 1 में लाभ विभाजन करते हैं। सी को लाभ में 1/4 हिस्से के लिए प्रवेश देते हैं। सी अपने हिस्से की ख्याति के ₹ 4,200 में से ₹ 3000 नकद लाता हैं। नया लाभ विभाजन अनुपात 5 : 3 : 2 हैं। आवश्यक जर्नल प्रविष्टियां कीजिए।

1.

Cash A/c	Dr.	3000	
To Goodwill			3000

(Amount of goodwill brought in by C)

2.

Goodwill	Dr.	3000	
C's Current A/c	Dr.	1200	
To A's Capital A/c			3500
To B's Capital A/c			700

(Being goodwill distributed between A & B)

त्याग का अनुपात = पुराना लाभ विभाजन अनुपात – नया लाभ विभाजन अनुपात

$A = \frac{2}{3} - \frac{5}{10} = \frac{5}{30}$;$B = \frac{1}{3} - \frac{3}{10} = \frac{1}{30}$; ए बी का त्याग अनुपात 5 : 1

(8) ए व बी एक फर्म में साझेदार हैं। सी को लाभ में 1/4 हिस्से के लिए प्रवेश देते हैं। सी अपने हिस्से की ख्याति के ₹1800 में से ₹1000 नकद लाता हैं। पुस्तकों में ख्याति खाता ₹ 6,000 से विद्यमान हैं। आवश्यक जर्नल प्रविष्टियां कीजिए।

1.

Cash A/c	Dr.	1000	
To Goodwill			1000

(Being goodwill brought in cash)

2.

Goodwill	Dr.	1000	
C's Current A/c	Dr.	800	
To A's Capital A/c			900
To B's Capital A/c			900

(Being goodwill distributed between A & B)

3.

A's Capital A/c	Dr.	3000	
B's Capital A/c	Dr.	3000	
To Goodwill			6000

(Being goodwill account written off)

(9) ए व बी 3 : 2 के अनुपात में लाभ विभाजन करते हुए साझेदार हैं। सी लाभ में 3/13 हिस्से के लिए प्रवेश करता हैं। नया लाभ विभाजन अनुपात 5 : 5 : 3 हैं। सी ने अपनी पूँजी व ख्याति के लिए निम्न सम्पत्तियों का योगदान दिया।स्टॉक ₹ 20,000, फर्नीचर ₹ 30,000, मशीनरी ₹ 80,000, सी के प्रवेश की तिथि को फर्म की ख्याति का मूल्याकंन ₹2,60,000 पर किया गया। आवश्यक जर्नल प्रविष्टियां कीजिए।

त्याग का अनुपात = पुराना लाभ विभाजन अनुपात – नया लाभ विभाजन अनुपात

$A = \frac{3}{5} - \frac{5}{13} = \frac{14}{65}$;$B = \frac{2}{5} - \frac{5}{13} = \frac{1}{65} = 14 : 1$

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

सी का ख्याति में हिस्सा 2,60,000 x 3 /13 = ₹ 60,000

Stock	Dr.	20,000	
Furniture	Dr.	30,000	
Machine	Dr.	80,000	
To C's Capital A/c			70,000
To Goodwill A/c			60,000

(Being sundry Assets Contributed by new partner, as his capital & his share of Goodwill)

Goodwill A/c	Dr.	60,000	
To A's Capital A/c			56,000
To B's Capital A/c			4,000

(Being goodwill transferred to sacrificing partner's capital A/c)

(10) ए : बी एक फर्म में साझेदार हैं। जो 7 : 5 के अनुपात में लाभ विभाजन करते हैं। सी को लाभ में 1/6 हिस्से के लिए प्रवेश देते हैं। नया लाभ विभाजन अनुपात 13 : 7 : 4 हैं। सी अपनी पूँजी व ख्याति के हिस्से के लिए निम्न सम्पत्तियों का योगदान करता हैं।

Stock ₹ 60,000, Land & Building ₹ 2,80,000, Plant ₹ 1,20,000

सी के प्रवेश की तिथि को फर्म की ख्याति का मूल्यांकन ₹7,50,000 पर किया गया। आवश्यक जर्नल प्रविष्टियां कीजिए।

त्याग का अनुपात = पुराना लाभ विभाजन अनुपात – नया लाभ विभाजन अनुपात

$$A = \frac{7}{12} - \frac{13}{24} = \frac{01}{24} \quad ; \quad B = \frac{5}{12} - \frac{7}{24} = \frac{03}{24} = 1 : 3$$

सी का ख्याति में हिस्सा 7,50,000 x 1 /6 = ₹ 1,25,000

Stock	Dr.	60,000	
Land & Building	Dr.	2,80,000	
Plant A/c	Dr.	1,20,000	
To C's Capital A/c			3,35,000
To Goodwill A/c			1,25,000

(Being sundry assets contributed by new partner, as his capital & his share of Goodwill)

Goodwill A/c	Dr.	1,25,000	
To A's Capital A/c			31,250
To B's Capital A/c			93,750

(Being Goodwill transferred to sacrificing partner's capital A/c)

(11) ए व बी साझेदार हैं। जिनकी पूँजी क्रमशः ₹ 40,000 व ₹ 30,000 हैं। वे सी को लाभ में 1/5 हिस्से के लिए प्रवेश देते हैं। जो पूँजी के लिए ₹ 20,000 लाता हैं। ख्याति की गणना कीजिए व ख्याति सम्बन्धी प्रविष्टियां कीजिए।

फर्म की ख्याति= सी की पूँजी के आधार पर नई फर्म की कुल पूँजी–(पुराने साझेदारों की समायोजित पूँजी+नये साझेदार की पूँजी)

$\left[20000 \times \frac{5}{1} - (70000 + 20000)\right] = ₹\ 10000$

सी का ख्याति में हिस्सा 10000 x 1 /5 = ₹ 2000

C's Current A/c	Dr.	2000	
To A's Capital A/c			1000
To B's Capital A/c			1000

(Being C's share of goodwill adjusted to sacrificing partner's capital)

(12) ए : बी एक फर्म में साझेदार हैं। जो 3 : 2 के अनुपात में लाभ विभाजन करते हैं। भविष्य में बराबर बराबर लाभ बांटने का निश्चय करते हैं। फर्म की ख्याति का मूल्याकंन ₹ 60,000 पर किया गया। ख्याति के व्यवहार की जर्नल प्रविष्टियां कीजिए।

त्याग का अनुपात = पुराना लाभ विभाजन अनुपात – नया लाभ विभाजन अनुपात

$$A = \frac{3}{5} - \frac{1}{2} = \frac{1}{10}\ (SR); B = \frac{2}{5} - \frac{1}{2} = \left(\frac{1}{10}\right)(GR) = 1 : 1$$

B's Capital A/c	Dr.	6000	
To A's Capital A/c			6000

(Being the goodwill adjusted on change in profit sharing ratio)

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

नये साझेदार द्वारा पूंजी लाना–

(a) नकद में लाना

Cash / Bank A/c Dr.
To New Partner's Capital A/c
(Being cash brought in by a new partner's capital)

(b) जब नया साझेदार अपना स्वयं का व्यापार लेकर फर्म में प्रवेश करता हैं।

Sundry Assets A/c Dr.
To Sundry Liabilities A/c
To New Partner's Capital A/c
(Being Assets & Liabilities brought in by new partner)

यदि पूंजी की राशि पूर्व निर्धारित हो तथा स्वयं का व्यापार मिलाकर प्रवेश करता है तो जितनी राशि पूंजी में कम पड़ती है, नकद लाई जाती हैं।

Sundry Assets A/c Dr.
Cash/Bank A/c Dr.
To Sundry Liabilities A/c
To New Partner's Capital A/c
(Being Assets & Liabilities brought in by new partner for his share of capital)

सम्पत्तियों का पुनर्मूल्यांकन व दायित्वों का पुनः निर्धारण
(Revaluation of Assets and Reassessment of Liabilities)

नयेसाझेदार के प्रवेश के समय जब सम्पत्तियों व दायित्वों को नये मूल्य पर दिखलाने के लिए उनका पुनर्मूल्यांकन किया जाता हैं। क्योंकि सम्पत्तियों के मूल्यों में वृद्धि होने व दायित्त्वों के मूल्यों में कमी होने पर लाभ होता हैं। और सम्पत्तियों के मूल्य में कमी होने व दायित्वों के मूल्य में वृद्धि होने पर हानि होती हैं। लाभ होने पर पुराने साझेदार नये को नहीं देना चाहेंगे। ठीक उसी प्रकार हानि होने पर नया साझेदार वहन नहीं करना चाहेगा। इसलिए पुनर्मूल्यांकन के लाभ हानि को पुराने साझेदारों में पुराने लाभ विभाजन अनुपात में बांट दिया जाता हैं। इस स्थिति में एक विशेष खाता खोला जाता हैं। जिसे पुनर्मूल्यांकन खाता (Revaluation Account) या लाभ हानि समायोजन खाता (P&L Adjustment A/c) कहते हैं। इस खाते की प्रकृति अवास्तविक खाते की होती हैं।

पुर्नमूल्यांकन खाते के लिए जर्नल प्रविष्टियां

(1) सम्पत्तियों के मूल्य में वृद्धि होने पर	**Assets A/c Dr.** **To Revaluation A/c** **(Being increase value of assets)**	वृद्धि की राशि से
(2) सम्पत्तियों के मूल्य में कमी होने पर	**Revaluation A/c Dr.** **To Assets A/c** **(Being decrease value of assets)**	कमी की राशि से
(3) सम्पत्तियां जिन्हे चिट्ठे में प्रदर्शित नहीं किया गया है **(Unrecorded Assets)**	**Unrecorded Assets Dr.** **To Revaluation A/c** **(Being unrecorded assets taken into account)**	सम्पत्तियों के मूल्य से
(4) दायित्वों के मूल्य में वृद्धि होने पर व आयोजन बढ़ने पर	**Revaluation A/c Dr.** **To Liabilities/Provision A/c** **(Being increase in value of liabilities/provision)**	वृद्धि की राशि से
(5) दायित्वों के मूल्यों में कमी व आयोजन के मूल्य में कमी होने पर	**Liabilities/Provision A/c Dr.** **To Revaluation A/c** **(Being decrease in value of liabilities/provision)**	कमी की राशि से
(6) दायित्व जिन्हे चिट्ठे में प्रदर्शित नहीं किया गया है **(Unrecorded Liabilities)**	**Revaluation A/c Dr.** **To Unrecorded Liabilities** **(Being unrecorded liabilities taken into account)**	दायित्व की राशि से
(7) पुनर्मूल्यांकन खाते का क्रेडिट शेष (लाभ) होने पर	**Revaluation A/c Dr.** **To Old Partner's Capital** **(Being profit on revaluation credited to Old Partner's Capital A/c in their OPSR)**	लाभ की राशि से पुराने लाभ विभाजन अनुपात में

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

(8) पुनर्मूल्यांकन खाते का डेबिट शेष (हानि) होने पर	**Old Partner's Capital A/c Dr.** **To Revaluation A/c** **(Being loss on revaluation debited to Old Partner's Capital A/c in their OPSR)**	हानि की राशि से पुराने लाभ विभाजन अनुपात में

पुनर्मूल्यांकन खाते का प्रारूप **(Format of Revaluation Account)**

Dr. Revaluation / P & L Adjustment Account Cr.

Particulars	Amount₹	Particulars	Amount₹
To Decrease in value of Assets		By Increase in value of Assets	
To Increase in the value of Liabilities/provision		By Decrease in the value of Liabilities/provision	
To Unrecorded Liabilities		By Unrecorded Assets	
To Profit on Revaluation Transfer to old Partner's Capital A/c (In OPSR)		By Loss on Revaluation Transfer to old Partner's Capital A/c (In OPSR)	

Note:1. Assets Undervalued by --%सम्पत्तियां.....प्रतिशत से कम मूल्यांकित= $\frac{\text{Value as given x rate}}{100 - \text{Rate}}$

2. Assets Overvalued by --%सम्पत्तियां...प्रतिशत से अधिक मूल्यांकित= $\frac{\text{Value of assets as given x rate}}{100 + \text{Rate}}$

3. यदि प्रश्न में "से बढ़ाइये" (Increased by) दिया गया हो तो उतनी ही राशि से बढ़ायेंगे।

4. यदि प्रश्न में "तक " (To) दिया गया है, तो अंतर की राशि से लेखा करते हैं।

5. जैसे प्लांट के मूल्य में 5 प्रतिशत कमी करनी है, (Reduced by) तो चिट्ठे के मूल्य का 5 प्रतिशत ज्ञात कर पुनर्मूल्यांकन खाते में दिखायेंगे।

6. यदि ये लिखा हो कि प्लांट को ₹ 5000 तक रखना है तो चिट्ठे के मूल्य में से ₹5000 घटाकर शेष पुनर्मूल्यांकन खाते में ले जायेंगे।

अवितरित लाभ संचय व अवतरित हानियां व कृत्रिम सम्पत्तियां

(Undistributed Profits Reserves and Undistributed Loss and Fictitious Assets)

इनका बंटवारा पुराने साझेदारों में उनके पुराने लाभ विभाजन अनुपात में किया जाता हैं। अवितरित लाभ संचय कोषों को बांटने के लिए

P&L A/c (Credit Balance) Dr.
Reserve Fund / General Reserve A/c Dr.
Workman Compensation Reserve A/c Dr. (Excess of reserve over actual liability)
Investment Fluctuation Reserve A/c Dr. (Excess of reserve over the difference between book value & market value)
To Old Partner's Capital A/c (In OPSR)

अवितरित हानियां एवं कृत्रिम सम्पत्तियों को अपलिखित करने पर

Old Partner's Capital A/c Dr. (in OPSR)
To P & L (Dr. Balance)
To Deferred Revenue Expenditure A/c

नोट : 1. Employees Provident Fund (E.P.F.) कर्मचारी भविष्य निधि फर्म का दायित्व होता है अतः उसका साझेदारों में बंटवारा नहीं होता है। 2. Deferred Revenue Expenditure जैसे– विज्ञापन व्यय

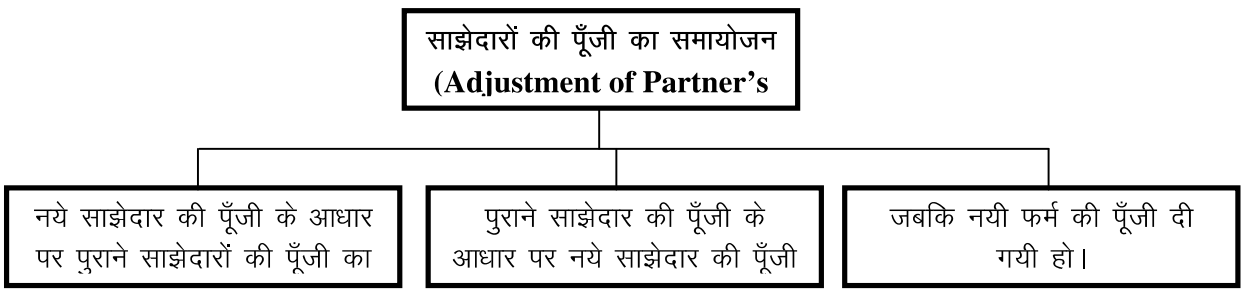

(1) नये साझेदार की पूँजी के आधार पर पुराने साझेदारों की पूँजी समायोजित करना

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Step (i) नये साझेदार की पूँजी के आधार पर फर्म की कुल पूँजी ज्ञात की जाएगी।
Step (ii) फर्म की कुल पूँजी का बंटवारा नये लाभ विभाजन में करना होगा।
Step (iii)पुराने साझदारों की समायोजित पूँजी की तुलना ज्ञात नयी पूँजी से की जाएगी। व अंतर की राशि का समायोजन नकद खाते (Cash A/c) या साझदारों के चालू खातों (Partner's Current A/c) के माध्यम से होगा।
नोटः सूचना के अभाव में समायोजन नकद खाते के माध्यम से होगा।
विविध उदाहरण :
(i) ए व बी एक फर्म में साझेदार हैं। जो लाभ 3 : 1 के अनुपात में बांटते हैं। सी को लाभ में 1/4 हिस्सा देकर प्रवेश देते हैं। सी पूँजी के लिए ₹ 40,000 लाता हैं। ए व बी की समायोजित पूँजी क्रमशः ₹1,00,000 व ₹25,000 हैं। यह निश्चित हुआ कि पुराने साझेदारों की पूँजी सी की पूँजी के आधार पर समायोजित की जाएगी।
हलः– सी की पूँजी के आधार पर फर्म की कुल पूँजी 40000 $x\frac{4}{1}$ = ₹ 1,60,000

ए का नया अनुपात $\frac{3}{4}X\frac{3}{4}=\frac{9}{16}$; बी का नया अनुपात $\frac{3}{4}X\frac{1}{4}=\frac{3}{16}$;

ए, बी व सी का नया अनुपात $\frac{9}{16}:\frac{3}{16}:\frac{1}{4}$= 9 : 3 : 4

तीनों साझेदारों की पूँजी = 160000 x 9/16 = ₹ 90,000 ; B = 160000 x 3/16 = ₹ 30,000;
C = 160000 x 4/16= ₹ 40,000 ; ए आधिक्य पूँजी ले जायेगा = 100000 - 90000 = ₹ 10000; बी कमी की राशि लायेगा = 25000 - 30000 = ₹ 5000

A's Capital A/c	Dr.	10000
To Cash		10000
(Being cash withdrawn by A)		
Cash A/c	Dr.	5000
To B's Capital		5000
(Being cash brought in by B)		

(2) पुराने साझेदारों की पूँजी के आधार पर नये साझेदार की पूँजी ज्ञात करना–
Step (i) पुराने साझेदारों की समायोजित पूँजी ज्ञात करेंगे।
Step (ii) समायोजित पूँजी के आधार पर फर्म की कुल पूँजी ज्ञात करेंगे।
Step (iii) फर्म की कुल पूँजी के आधार पर नये साझेदार की पूँजी ज्ञात करेंगे।
(I) ए व बी एक फर्म में साझेदार हैं। सी को लाभ में 1/6 हिस्से के लिए प्रवेश देते हैं। ए व बी की समायोजित पूँजी क्रमशः ₹ 40000 व ₹ 20000 हैं। सी फर्म की कुल पूंजी का 1/6 हिस्सा पूँजी के रूप में लायेगा।
ए व बी की कुल समायोजित पूँजी 40000 + 20000= ₹ 60000
सी का लाभों का हिस्सा $\frac{1}{6}$; ए व बी का हिस्सा $1-\frac{1}{6}=\frac{5}{6}$
फर्म की कुल पूँजी 60000 $X\frac{6}{5}$ = ₹72000 ; सी का पूँजी में आनुपातिक हिस्सा 72000 $X\frac{1}{6}$ = ₹12000

(II) सी, ए व बी की संयुक्त पूँजी का 1/6 अंशदान करेगा। तो सी की पूँजी होगी 60000 $X\frac{1}{6}$ = ₹10000
(iii) नयी फर्म की पूँजी दी गयी हो।

Step I-पूँजी का बंटवारा नये अनुपात में होगा।
II- नया साझेदार अपने हिस्से की पूँजी लायेगा।
III-पुराने साझेदार अपनी नयी पूँजी व समायोजित पूँजी का अंतर नकद लायेंगे या ले जायेंगे। या चालू खातों के माध्यम से समायोजन होगा।

उदाहरण 1. A व B एक फर्म में साझेदार है जो 3 : 1 के में लाभ विभाजन करते हैं। उनका चिट्ठा इस प्रकार हैः (A and B are partners sharing profits in ratio 3:1 Their Balance Sheet is as follows :)

Balance Sheet as on 31st March, 2017

Liabilities	Amount₹	Assets	Amount₹
Creditors	30,000	Cash at Bank	22,000
Bills Payable	6,000	Debtors	40,000

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

O/S Expenses		2,000	Stock	15,000
Employee's Provident Fund		6,000	Investment	12,000
General Reserve		12,000	Land & Building	50,000
Capitals			Plant & Machinery	30,000
A	80000		Furniture	16,000
B	70000	1,50,000	Trademark	5,000
			Patent	6,000
			Goodwill	10,000
		2,06,000		**2,06,000**

वे C को 1–4–2017 को प्रवेश देते हैं। नया लाभ विभाजन अनुपात बराबर–बराबर होगा।

(i) C ₹ 50,000 पूँजी व ₹10,000 ख्याति के लिए लेकर आता है **(ii)** लेनदारो में शामिल ₹4,000 का भुगतान नहीं करना पडेगा। **(iii)** विनियोगों का मूल्यांकन ₹ 15,000 पर किया गया। **(iv)** संदिग्ध ऋणों के लिए 5 प्रतिशत आयोजन व देनदारों पर बट्टे के लिए आयोजन 2 प्रतिशत बनाये। **(v)** भूमि व भवन ₹5,000 से कम मूल्यांकित हैं। **(vi)** प्लांट मशीन ₹10,000 से अधिमूल्यांकित है **(vii)** फर्नीचर 10 प्रतिशत से ह्रासित किया जाये। **(viii)** ट्रेडमार्क का मूल्यांकन ₹ 3,000 पर किया गया। **(ix)** एकस्व का मूल्य ₹ 2,000 तक कम करना हैं। **(x)** बकाया वेतन ₹ 2,000 **(xi)** पूर्वदत बीमा ₹ 2,000 **(xii)** एक ग्राहक का दावा ₹ 2,000 स्वीकार किया **(xiii)** अज्ञात दायित्वों के लिए प्रावधान ₹ 5,000 **(xiv)** स्टोक मूल्यांकन ₹ 13,000 पर किया गया। **(xv)** सम्पति जो पुस्तकों में नहीं लिखी गयी ₹ 10,000 **(xvi)** एक देनदार जिसमें ₹ 500 बकाया थे, डूबत ऋण के रूप में अपलिखित कर दिये गये, उसनें पूर्ण भुगतान में ₹ 400 दिये। पुनर्मूल्यांकन खाता बनाइये।

They decided to admit C on April 1st 2017. New Profit Sharing Ratio will be equal :

(i) C Shall bring ₹10,000 share of premium (Goodwill) and ₹ 50,000 as his capital. **(ii)** A Liability of ₹ 4,000 included in creditors was not likely to arise **(iii)** investments valued at ₹15,000 **(iv)** Create P.B.D. 5% & Provision For Discount on Debtors 2%. **(v)** Land & Building undervalued by ₹5,000 **(vi)** Plant & Machinery overvalued by ₹10,000 **(vii)** Furniture is depreciated by 10% **(viii)** Trademark valued at ₹ 3000. **(ix)** Patent reduced to ₹2,000. **(x)** O/s salary ₹2,000 **(xi)** Prepaid Insurance ₹ 2,000. **(xii)** Claim for damages ₹2,000 is accepted **(xiii)** There is also a unforeseen liability for ₹ 5,000. **(xiv)** Stock is valued at ₹13,000 **(xv)** Unrecorded Assets ₹10,000 **(xvi)** A debtor whose dues of ₹500 was written off as bad debts, paid ₹400 in full settlement. Prepare Revaluation Account.

हल:

Dr. Revaluation Account Cr.

Particulars	Amount(₹)	Particulars	Amount (₹)
To P.B.D. A/c	2000	By Creditors A/c	4000
To P.D.D. A/c	760	By Investments A/c	3000
To Plant & Machine A/c	10000	By Land & Building A/c	5000
To Furniture A/c	1600	By Prepaid Insurance	2000
To Trade Mark A/c	2000	By Unrecorded Assets	10000
To Patent A/c	4000	By Bad-debts recovered	400
To Outstanding Salary	2000	By Loss transfered to	
To Claim For damages	2000	A's Capital A/c 5220	
To Unforseen liability	5000	B's Capital A/c 1740	6960
To Stock A/c	2000		
	31360		**31360**

स्मरणार्थ पुनर्मूल्यांकन खाता (Memorandum Revaluation Account)

कभी कभी साझेदारों में मध्य यह समझौता हो जाता है कि नये साझेदार के प्रवेश के समय सम्पत्तियों का पुनर्मूल्यांकन व दायित्वों का पुनर्निधारण तो किया जायेगा लेकिन इसके प्रभाव को सम्पत्तियों एवं दायित्वों के खातों में दर्ज नही किया जायेगा। ऐसी स्थिति में पुनर्मूल्यांकन खाते के माध्यम से फर्म की सम्पत्तियों एवं दायित्वों के मूल्यों में कोई परिवर्तन नहीं किया जायेगा, परन्तु पुनर्मूल्यांकन के कारण लाभ या हानि की राशि का समायोजन साझेदारों के पूँजी खातो में स्मरणार्थ पुनर्मूल्यांकन

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

खाता बनाकर निम्न प्रकार से किया जायेगा। स्मरणार्थ पुनर्मूल्यांकन खाता दो भागों में बनाया जायेगा। प्रथम में सम्पत्तियों एवम् दायित्वों पर हानि होने की दशा में डेबिट किया जाता है तथा लाभों की दशा में इसे क्रेडिट किया जाता हैं। इस खाते का शेष कुल लाभ अथवा हानि को प्रदर्शित करता हैं। द्वितीय भाग में प्रथम भाग की लाभ हानि को पुराने साझेदारों में पुराने लाभ विभाजन अनुपात में बाँट दिया जाता है व इसके पश्चात् इसी राशि से सभी साझेदारों के पूँजी खातों में नए लाभ विभाजन अनुपात में विपरीत प्रविष्टि कर दी जाती हैं।

पुनर्मूल्यांकन पर लाभ की स्थिति में

1. Memorandum Revaluation A/c Dr.
   To Old Partner's Capital A/c
   (Profit on revaluation transferred to old partner's capital A/c)
2. All Partner's Capital A/c Dr.
   To Memorandum Revaluation A/c
   (Memorandum Revaluation Account closed by transferring to capital A/c's in NPSR)

इस सम्बन्ध में उपरोक्त दो प्रविष्टियों के स्थान पर निम्नांकित एक प्रविष्टि भी की जा सकती है –

3. All Partner's Capital A/c Dr.
   To Old Partners Capital A/c
   (Adjustment of revaluation made)

नोट – पुनर्मूल्यांकन पर हानि की स्थिति में उपरोक्त की विपरीत प्रविष्टि की जायेगी।

उदाहरण 2 : A व B एक फर्म में उनके पूँजी अनुपात में लाभ बाँटते हुए साझेदार हैं। 31 मार्च 2017 को उनका चिट्ठा इस प्रकार है: (A and B are partners in a firm sharing profits in their capital ratio. Their Balance Sheet is as on 31st March,2017 is as under:)

Balance Sheet as on 31st March,2017

Liabilities	Amount ₹	Assets	Amount ₹
Capital:		Building	25,000
A 30,000		Stock	12,500
B 20,000	50,000	Debtors	7,000
Creditors	7,000	Profit & Loss A/c	2,500
		Cash Balance	10,000
	57,000		**57,000**

1 अप्रैल, 2017 को उन्होंने C को 1/5 हिस्से के लिए निम्न शर्तो पर प्रवेश देने का निर्णय लिया :

(i) C अपना हिस्सा A व B से बराबर प्राप्त करेगा। वह पूँजी के लिए ₹ 20,000 नकद लाता हैं। **(ii)** फर्म की ख्याति का मूल्यांकन ₹ 15,000 पर किया गया C अपना ख्याति का हिस्सा नकद लेकर आता हैं। **(iii)** देनदारों पर 10 प्रतिशत डूबत ऋण के लिए आयोजन बनाये। **(iv)** रहतिये का मूल्यांकन ₹ 12,000 पर किया गया तथा भवन का मूल्य ₹ 3,200 से बढ़ाया जाये। **(v)** सम्पतियों व दायित्वों के पुस्तक मूल्य में परिवर्तन नहीं करना हैं। (लाभ–हानि खाते को छोड़कर) स्मरणार्थ पुनर्मूल्यांकन खाता, साझेदारों के पूँजी खाते तथा चिट्ठा बनाइये।

On 1st April,2017 they decide to admit C for 1/5th share on the following terms : **(i)** C will get his share equally from A and B. He brings cash ₹ 20,000 for capital. **(ii)** Firm's goodwill is valued at ₹ 15,000 and C brings his share in cash. **(iii)** Make a provision for Bad debts @ 10% on debtors. **(iv)** Stock is to be valued ₹ 12,000 and the value of building is to be increased by ₹ 3,200 **(v)** Book values of Assets and Liabilities are not to be changed (Excluding Profit and Loss Account)

Prepare Memorandum Revaluation Account, Partner's Capital Account & Balance Sheet.

Dr. Memorandum Revaluation A/c Cr.

Particulars	Amount(₹)	Particulars	Amount(₹)
To P.B.D.		By Building A/c	3,200
To Stock A/c	700		
To Profit	500		
	2,000		3,200
To A's Capital A/c	3,200	By A's Capital A/c	1000
To B's Capital A/c	1,200	By B's Capital A/c	600

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

	800	By C's Capital A/c	400
	2,000		**2,000**

Dr. **Partner's Capital A/c** **Cr.**

Particulars	A (₹)	B (₹)	C (₹)	Particulars	A (₹)	B (₹)	C (₹)
To Memorandum Revaluation A/c	1000	600	400	By Balance b/d	30,000	20,000	--
	1,500	1,000	--	By Memorandum Revaluation	1,200	800	--
To P & L	30,200	20,700	19,600	By Cash A/c	--	--	20,000
To Balance c/d				By Goodwill A/c	1,500	1,500	--
	32,700	**22,300**	**20,000**		**32,700**	**22,300**	**20,000**

Balance Sheet as on 01st April, 2017

Liabilities	Amount(₹)	Assets	Amount (₹)
Capital A/c		Building	25,000
A 30,200		Stock	12,500
B 20700		Debtors	7,000
C 19,600	70,500	Cash Balance	33,000
Creditors	7,000		
	77,500		**77,500**

Working Notes (कार्यशील टिप्पणियां)

(1) Cash Balance 10,000 + 20,000 + 3,000 = ₹33,000

(2) स अपना हिस्सा अ व ब से बराबर – बराबर प्राप्त करेगा

A का त्याग $= \frac{1}{5} X \frac{1}{2} = \frac{1}{10}$; B का त्याग $= \frac{1}{5} X \frac{1}{2} = \frac{1}{10}$

नया लाभ विभाजन अनुपात = पुराना लाभ विभाजन अनुपात – त्याग अनुपात

अ $= \frac{3}{5} - \frac{1}{10} = \frac{5}{10}$; ब $= \frac{2}{5} - \frac{1}{10} = \frac{3}{10}$; नया लाभ विभाजन अनुपात होगा $\frac{5}{10} : \frac{3}{10} : \frac{1}{5}$ = 5 : 3 : 2

कर्मचारी क्षतिपूर्ति संचय Worksmen Compensation Reserve (WCR)

इसका निर्माण कर्मचारियों की संभावित क्षतिपूर्ति (जैसे दुर्घटना दावा) के लिए फर्म के लाभों में से किया जाता हैं। इसके लेखांकन व्यवहार की विभिन्न परिस्थितियां निम्न हो सकती हैं।

उदाहरण : A व B एक फर्म में साझेदार है जो 5 : 4 के अनुपात में लाभ विभाजन करते हैं। वे 1–4–17 को C को लाभों में $\frac{1}{5}$ हिस्से के लिए प्रवेश देते हैं।

Balance sheet As on 31st March, 2017

Liabilities	Amount (₹)	Assets	Amount (₹)
Workmen Compensation Reserve	9,000		

निम्नांकित पांच स्थितियों में कर्मचारी क्षतिपूर्ति संचय के सम्बन्ध में प्रवेश पर लेखांकन व्यवहार इस प्रकार होंगे –

(i) यदि अन्य कोई सूचना नहीं है

Workmen Compensation Reserve A/c	Dr.	9,000	
To A's Capital A/c			5,000
To B's Capital A/c			4,000

(Being W.C.R. transfer to old Partner's Capital A/c in their old profit sharing ratio)

यदि कर्मचारी क्षतिपूर्ति का दावा ₹ 2,700 हैं।

Workmen Compensation Reserve A/c	Dr.	9,000	
To Liability for worksmen compensation			2,700
To A's Capital A/c			3,500
To B's Capital A/c			2,800

(Being transfer the surplus of WCR to Old Partner's Capital A/c in their old profit sharing ratio)

(ii) यदि कर्मचारी क्षतिपूर्ति का दावा ₹13,500 है।

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

(a) Workmen Compensation Reserve A/c Dr. 9,000
Revaluation A/c Dr. 4,500
To Liability for worksmen compensation 13,500
(Being liability created & short fall charged to revaluation)

(b) A's Capital A/c Dr. 2,500
B's Capital A/c Dr. 2,000
To Revaluation A/c 4,500
(Being loss on revaluation transfer to Old Partner's Capital A/c)

(iii) यदि कर्मचारी क्षतिपूर्ति का दावा ₹9,000 हो।

Workmen Compensation Reserve A/c Dr. 9,000
To Liability for worksmen compensation A/c 9,000
(Being liability created for workmen compensation)

(iv) यदि चिट्ठे में कर्मचारी क्षतिपूर्ति संचय का शेष न हो। लेकिन अतिरिक्त सूचना में ₹ 3,600 का दावा किया गया हो।

(a) Revaluation A/c Dr. 3,600
To Liability for workmen compensation A/c 3,600
(Being liability created)

(b) A's Capital A/c Dr. 2,000
B's Capital A/c Dr. 1,600
To Revaluation A/c 3600
(Being loss on revaluation transfer to Old Partner's Capital A/c)

निवेश (विनियोग) उतार चढ़ाव संचय Investment Fluctuation Reserve (IFR) :

इस संचय का निर्माण निवेश के बाजार मूल्य की हुई कमी की पूर्ति के समायोजन के लिए किया जाता हैं। इससे संबंधित लेखांकन व्यवहार की विभिन्न परिस्थितियां निम्नानुसार है–

उदाहरण : A व B 3 : 2 के अनुपात में लाभ विभाजन करते हुए साझेदार हैं। वे C को 1–4–17 को लाभों में $\frac{1}{5}$ हिस्से के लिए प्रवेश देते हैं।

Balance Sheet As on 31 March, 2017

Liabilities	Amount(₹)	Assets	Amount(₹)
Investment Fluctuation Reserve	5,000	Investment	25,000

पांच परिस्थितियों में विनियोग उतार चढ़ाव संचय के सम्बन्ध में प्रवेश पर किये जाने वाली प्रविष्टि/प्रविष्टियां निम्न प्रकार होगी–

(i) यदि अन्य कोई सूचना नहीं है

Investment Fluctuation Reserve A/c Dr. 5,000
To A's Capital A/c 3,000
To B's Capital A/c 2,000
(Being IFR transfer to old Partner's Capital A/c in their old Ratio)

(ii) यदि विनियोगों का बाजार मूल्य ₹ 25,000 हैं।

(Same solution as given in Case (i))

(iii) यदि विनियोगों का बाजार मूल्य ₹ 22,000 हैं।

Investment Fluctuation Reserve A/c Dr. 5,000
To Investment A/c 3,000
To A's Capital A/c 1,200
To B's Capital A/c 800
(Being excess IFR transfer the surplus of WCR to Old Partner's Capital A/c)

(iv) यदि विनियोगों का बाजार मूल्य ₹ 30,000 हैं।

(a) Investment Fluctuation Reserve A/c Dr. 5,000

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

	To A's Capital A/c			3,000
	To B's Capital A/c			2,000
	(Being IFR transfer to old Partner's Capital A/c in their old Ratio)			
(b)	Investment A/c	Dr.	5,000	
	To Revaluation A/c			5,000
	(Being value of Investment brought upto market value)			
(c)	Revaluation A/c	Dr.	5,000	
	To A's Capital A/c			3,000
	To B's Capital A/c			2,000
	(Being Profit on Revaluation transferred to Old Partner's Capital A/c)			

(v) यदि विनियोगों का बाजार मूल्य ₹ 18,000 हैं।

(a)	Investment Fluctuation Reserve A/c	Dr.	5,000	
	Revaluation A/c	Dr.	2,000	
	To Investment A/c			7,000
	(Being IFR transfer to old Partner's Capital A/c in their old Ratio)			
(b)	A's Capital A/c	Dr.	1,200	
	B's Capital A/c	Dr.	800	
	To Revaluation A/c			2000
	(Being loss on revaluation transfer to Old Partner's Capital A/c)			

उदाहरण 3. रमेश और सुरेश साझेदार है जो कि लाभों को क्रमशः 5 : 3 के अनुपात में बांटते हैं। उनका स्थिति विवरण निम्न प्रकार है (Ramesh and Suresh are partners sharing profits in ratio of 5 : 3 respectively. Their Balance Sheet is as follows :)

Balance Sheet

Liabilities	Amount ₹	Assets		Amount ₹
Creditors	28,000	Cash		8,000
General Reserve	4,000	Debtors	40,000	
Munesh's Loan	30,000	Less Provision	1,600	38,400
Capital:		Stock		56,000
Ramesh	50,000	Investments		8,000
Suresh	40,000	P & L A/c		16,000
		Plant		25,600
	1,52,000			**1,52,000**

मुनेश निम्न शर्तो पर साझेदारी में प्रवेश करता है :

(i) नया लाभ विभाजन अनुपात क्रमशः 3 : 3 : 2 होगा। **(ii)** मुनेश के ऋण को उसकी पूँजी माना जायेगा **(iii)** फर्म की ख्याति की मूल्यांकन ₹ 24,000 किया गया। मुनेश अपना हिस्सा नकद लाता हैं। **(iv)** रमेश और सुरेश ने विनियोग अपने लाभ विभाजन अनुपात में ले लिये। **(v)** रहतिये का मूल्य ₹ 50,000 तक कम कर दिया जाए। **(vi)** संदिग्ध ऋणों का प्रावधान देनदारों पर 5 प्रतिशत की दर से कर दिया जाए। **(vii)** सुरेश ₹ 10,000 नकद लायेगा। **(viii)** अर्जित आय ₹ 800 **(ix)** ख्याति व्यवसाय में रखी जाएगी। उपरोक्त के लिए जर्नल प्रविष्टियां कीजिए।

Munesh is admitted into partnership on the following terms : **(i)** The new profit sharing ratio will be 3:3:2 respectively. **(ii)** Munesh's loan should be treated as his capital. **(iii)** Goodwill of the firm is valued at ₹ 24,000 and he brings his share in cash. **(iv)** Investments were to be taken over by Ramesh and Suresh in their profit sharing ratio. **(v)** Stock be reduced upto ₹ 50,000 **(vi)** Provision for Doubtful debts should be @ 5% on debtors. **(vii)** Suresh is to bring ₹ 10,000 **(viii)** Accrued Income ₹ 800 **(ix)** Goodwill retained in the business. Give Journal entries to record the above.

हल : **Dr.** **Journal** **Cr.**

Date	Particulars		L.F.	Amount Dr. (₹)	Amount Cr.(₹)
1-4-17	Munesh's Loan A/c	Dr.		30,000	
	To Munesh's Capital A/c				30,000
	(Being Munesh's Loan A/c is transferred				

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

	to his capital A/c)				
	Cash A/c	Dr.		6,000	
	To Goodwill A/c				6,000
	(Being cash brought in for goodwill)				
	Goodwill A/c	Dr.		6,000	
	To Ramesh's Capital A/c				6,000
	(Being goodwill credited to Ramesh A/c)				
	General Reserve A/c	Dr.		4,000	
	To Ramesh's Capital A/c				2,500
	To Suresh's Capital A/c				1,500
	(Being General Reserve distributed between old partner's in their OPSR)				
	Ramesh's Capital A/c	Dr.		10,000	
	Suresh's Capital A/c	Dr.		6,000	
	To P & L A/c				16,000
	(Being P & L A/c transferred to Old partner's capital A/c)				
	Ramesh's Capital A/c	Dr.		5000	
	Suresh 's Capital A/c	Dr.		3000	
	To Investments				8000
	(Being investments take over by Partners)				
	Revaluation A/c	Dr.		6,400	
	To Stock A/c				6,000
	To P.B.D. A/c				400
	(Being decreasing value of stock & increased in PBD)				
	Accrued Income A/c	Dr.		800	
	To Revaluation A/c				800
	(Being Accrued income transfer to Revaluation A/c)				
	Ramesh's Capital A/c	Dr.		3,500	
	Suresh's Capital A/c	Dr.		2,100	
	To Revaluation A/c				5,600
	(Being Loss on revaluation transferred to Old partner's Capital A/c)				
	Cash A/c	Dr.		10,000	
	To Suresh's Capital A/c				10,000
	(Being Cash brought in by Suresh)				

उदाहरण 4. P तथा Q साझेदार थे जो कि लाभों को 7 : 5 के अनुपात में लाभ विभाजन करते थे। 31 मार्च, 2017 को उनका स्थिति विवरण निम्न था (P and Q were partners in a firm sharing profits in the ratio of 7 : 5. Their Balance Sheet as on 31.3.2017 was as follows :)

Balance Sheet

Liabilities	Amount ₹	Assets	Amount ₹
Bank Overdraft	70,000	Cash	18,000
Creditors	40,000	Debtors	1,00,000
Provision For Bad Debts	2,000	Bills Receivable	38,000
General Reserve	48,000	Stock	44,000
S's Loan	80,000	Building	2,00,000
Capitals :		Land	60,000
P	1,20,000		

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Q	1,00,000		
	4,60,000		**4,60,000**

1 अप्रैल, 2017 को उन्होंने S को निम्न शर्तों पर नये साझेदार के रूप में शामिल किया। **(i)** एस को फर्म के लाभों में 1/4 भाग दिया जायेगा। **(ii)** एस के ऋण खाते को उसका पूँजी खाता मान लिया जायेगा। **(iii)** फर्म की ख्याति का मूल्यांकन ₹ 96,000 किया गया तथा एस अपने हिस्से की ख्याति नकद लायेगा। **(iv)** देनदारों पर 5 प्रतिशत की दर से अप्राप्य ऋण आयोजन बनाया जायेगा। **(v)** स्टॉक 10 प्रतिशत से अधिमूल्यांकित हैं। **(vi)** भूमि के मूल्य को 10 प्रतिशत से बढ़ाया जाये। **(vii)** भवन के मूल्य में 12.5 प्रतिशत से वृद्धि करें। पुनर्मूल्यांकन खाता, साझेदारो के पूँजी खाते एवं नयी फर्म का चिट्ठा तैयार कीजिए।

On 1-4-2017 they admitted S as a new partner on the following conditions : **(i)** S will get 1/4th share in the profits of the firm. **(ii)** S's Loan will be converted into his capital. **(iii)** The goodwill of the firm was valued at ₹ 96,000 and S brought his share of goodwill (premium) in cash. **(iv)** Provision for bad debts was made equal to 5% on Debtors. **(v)** Stock was overvalued by 10% **(vi)** Land was to be appreciated by 10% **(vii)** Building was to be appreciated by 12.5%. Prepare Revaluation Account, Capital Accounts of P, Q & S and the Balance Sheet of the new firm as on 1-4-2017.

हल :

Revaluation A/c

Particulars	Amount ₹	Particulars	Amount ₹
To P.B.D. A/c	3,000	By Land A/c	6,000
To Stock	4,000	By Building A/c	25,000
To profits transfer to Capital A/c:	24,000		
P 14,000			
Q 10,000			
	31,000		**31,000**

Dr. **Partner's Capital A/c** **Cr.**

Particulars	P (₹)	Q (₹)	S (₹)	Particulars	P (₹)	Q (₹)	S (₹)
To Balance c/d	1,76,000	1,40,000	80,000	By Balance b/d	1,20,000	1,00,000	-
				By S'S Loan A/c	-	-	80,000
				By General Res.	28,000	20,000	-
				By Revaluation	14,000	10,000	-
				By Goodwill	14,000	10,000	-
	1,76,000	**1,40,000**	**80,000**		**1,76,000**	**1,40,000**	**80,000**

Balance Sheet of the new firm
As on 1 April, 2017

Liabilities	Amount ₹	Assets	Amount₹
Bank Overdraft	70,000	Cash	42,000
Creditors	40,000	Debtors	1,00,000
Provision For Bad Debts	5,000	Bills Receivables	38,000
Capital A/c		Stock	40,000
P 1,76,000		Building	2,25,000
Q 1,40,000		Land	66,000
S 80,000	3,96,000		
	5,11,000		**5,11,000**

कार्यशील टिप्पणी: (1) रोकड़ शेष 18,000+24,000=42,000 (2) प्रश्न में पुराना लाभ विभाजन अनुपात व त्याग अनुपात समान होगा।

उदाहरण 5. X तथा Y एक फर्म में साझेदार है और लाभ को 3 : 2 के अनुपात में बाँटते हैं। वे Z को साझेदार के रुप में सम्मिलित करते हैं और नया लाभ विभाजन अनुपात 5 : 3 : 2 तय करते हैं। Z के प्रवेश से पहले उनका स्थिति विवरण इस

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

प्रकार है: (X and Y are partners in a firm sharing profits in the ratio 3 : 2 They admit Z as a partner and decide the new profit sharing ration as 5 : 3 : 2 Their Balance Sheet is as under before admission of Z:)

Balance Sheet

Liabilities		Amount₹	Assets		Amount₹
Creditors		33,000	Bank		4,000
General Reserve		10,000	Debtors	32,000	
Capital Accounts:			Less:Provision For D.D.	(1,000)	31,000
X	60,000		Stock		32,000
Y	40,000	1,00,000	Furniture		20,000
			Plant & Machinery		56,000
		1,43,000			**1,43,000**

मानी गई अन्य शर्ते थी : **(i)** जेड अपनी पूँजी के रुप में ₹ 40,000 लाएगा। **(ii)** जेड ख्याति का अपना हिस्सा नकद लाने में असमर्थ है, अतः यह निर्णय किया कि ख्याति की गणना लाभ में जेड़ के हिस्से और फर्म में उसके द्वारा लाई गई पूँजी के आधार पर की जाए। **(iii)** प्लांट तथा मशीनरी का मूल्यांकन ₹ 60,000 और स्टॉक का ₹ 35,000 किया गया हैं। परंतु संदिग्ध ऋणों के लिए प्रावधान देनदारों के 5 प्रतिशत पर रखा जाए और फर्नीचर में 10 प्रतिशत का ह्रास किया जाए। **(iv)** ₹ 1,400 का बकाया किराया लेखे में नहीं लिया गया था। पुनर्मूल्यांकन खाता, साझेदारों के पूँजी खाते एवं नयी फर्म का स्थिति विवरण बनाइए।

Other terms agreed were: **(i)** Z will bring ₹ 40,000 as his capital. **(ii)** Z is unable to bring his share of goodwill in cash, it is therefore, decided to compute goodwill on the basis of Z's share in profit and capital contributed by him in the firm. **(iii)** Plant and machinery is valued at ₹ 60,000 and stock at ₹35,000 however, provision for doubtful debt be maintained at 5% on debtors and furniture be depreciated by 10%. **(iv)** Rent outstanding ₹ 1,400 remained unrecorded. Prepare Revaluation Account, Partners' Capital Accounts and the Balance Sheet of the new firm.

हल:

Dr. Revaluation A/c Cr.

Particulars		Amount (₹)	Particulars	Amount(₹)
To P.B.D		600	By Plant & Machine A/c	4,000
To Outstanding Rent		1,400	By Stock A/c	3,000
To Furniture		2,000		
To Profit Transfer to Capital A/c				
X	1,800			
Y	1,200	3,000		
		7,000		**7,000**

Dr. Partner's Capital A/c Cr.

Particulars	X (₹)	Y (₹)	Z (₹)	Particulars	X (₹)	Y (₹)	Z (₹)
To Balance c/d	72,500	49,900	40,000	By Balance b/d	60,000	40,000	-
				By Cash A/c	-	-	40,000
				By General Reserve	6,000	4,000	-
				By Revaluation A/c	1,800	1,200	-
				By Z'S Current A/c	4,700	4,700	-
	72,500	**49,900**	**40,000**		**72,500**	**49,900**	**40,000**

Balance Sheet of the new firm

Liabilities		Amount(₹)	Assets		Amount(₹)
Creditors		33,000	Bank		4,000
Capital A/c			Cash		40,000
X	72,500		Debtors	32,000	
Y	49,900		Less - Provision	1600	30,400

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Z 40,000	1,62,400	Stock	35,000
Out standing Rent	1,400	Furniture	18,000
		Plant & Machine	60,000
		Z'S Current A/c	9,400
	1,96,800		**1,96,800**

कार्यशील टिप्पणी : (1) त्याग अनुपात की गणना :–

त्याग अनुपात = पुराना लाभ विभाजन अनुपात – नया लाभ विभाजन अनुपात

$X : \frac{3}{5} - \frac{5}{10} = \frac{5}{50} Y : \frac{2}{5} - \frac{3}{10} = \frac{5}{50}$ 5 : 5 Or 1 : 1

(2) (ख्याति की गणना (छिपी हुई ख्याति) : Z की $\frac{1}{5}$ हिस्से के लिए पूँजी ₹40,000

X व Y की समायोजित पूँजी $X : 60,000 + 6,000 + 1,800 = 67,800; Y : 40,000 + 4,000 + 1,200 =$ ₹ 45000

Z की पूँजी= ₹ 40,000; फर्म की ख्याति=200000–67800–45200–40000= ₹ 47,000; Z का हिस्सा $47,000 \times \frac{1}{5}$ = ₹ 9,400

Z ख्याति की राशि नकद लेकर नहीं आ रहा हैं। अतः समायोजन Z के चालू खाते के माध्यम से किया गया हैं।

उदाहरण 6. A तथा B समान साझेदार हैं। 1 जनवरी, 2017 को निम्न स्थिति विवरण तथा शर्तो के आधार पर वह C को साझेदारी में शामिल करते हैः (A and B are partners. On 1st Jan,2017 they decide to admit C into partnership on the basis of the following Balance Sheet.)

Balance Sheet

Liabilities	**Amount₹**	**Assets**	**Amount₹**
Creditors	6,000	Cash at Bank	12,000
Outstanding Expenses	2,000	Debtors	16,000
Employee's Provident Fund	3,000	Stock	22,000
Workmen's Compensation Fund	4,000	Fixed Assets	43,000
Capital A/c A 50,000		Profit & Loss A/c	2,000
B 30,000	80,000		
	95,000		**95,000**

निम्नलिखित बातों पर सहमति होती है : **(i)** नया लाभ विभाजन अनुपात 2 : 1 : 1 होगा तथा C ₹ 20,000 पूँजी के लिये लायेगा। **(ii)** स्थायी सम्पातियों का मूल्य ₹ 12,000 से बढ़ाया जायेगा। **(iii)** ₹ 2,000 अप्राप्य–ऋणों के अपलिखित किये जायेगें। **(iv)** लेनदारों पर कटौती के लिये 2 प्रतिशत की दर से आयोजन बनाया जायेगा। **(v)** अदत्त व्ययों को ₹ 1,800 तक कम करना हैं। **(vi)** कर्मचारी क्षतिपूर्ति कोष के दायित्व का अनुमान ₹ 1,000 हैं। **(vii)** कर्मचारी प्रोविडेन्ट फण्ड को ₹ 500 से बढ़ाया जायेगा। **(viii)** C अपने हिस्से की ख्याति नकद लाने में असमर्थ हैं। ख्याति का मूल्यांकन ₹ 8,000 किया गया। **(ix)** स्टॉक का मूल्यांकन ₹ 24,180 पर किया गया। साझेदारों के पूँजी खाते तथा नया स्थिति विवरण बनाइये।

The following terms were agreed upon: (i) New profit sharing ratio should be 2 : 1 : 1 respectively and C brought in ₹ 20,000 as capital. (ii) Fixed Assets is to be appreciated by ₹ 12,000. (iii) Bad debts amounting to ₹ 2,000 to be written off. (iv) A Provision of 2% was to be made for discount on creditors. (v) Outstanding expenses be brought down to ₹ 1,800. (vi) The liability on Workman's compensation fund is determined at ₹ 1,000. (vii) Employee's provident fund be raised by ₹ 500. (viii) C is unable to bring goodwill in cash. Goodwill valued at ₹ 8,000. (ix) Stock is valued at ₹24,180. Prepare Partner's Capital Accounts and Balance Sheet of the new firm.

हलः **Dr.** **Revaluation Account** **Cr.**

Particulars	**Amount(₹)**	**Particulars**	**Amount(₹)**
To Debtors A/c	2,000	By Fixed Assets A/c	12,000
To Employee's Provident fund A/c	500	By Reserve for discount on Creditors	120
To Profit transferred to:		By Outstanding Exp.	200
A's Capital A/c 6,000		By Stock	2,180
B's Capital A/c 6,000	12,000		

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

			14,500				14,500

Dr. Partner's Capital A/c Cr.

Particulars	A (₹)	B (₹)	C (₹)	Particulars	A (₹)	B (₹)	C (₹)
To P & L	1,000	1,000	--	By Balance b/d	50,000	30,000	--
To Balance c/d	56,500	38,500	20,000	By Cash A/c	--	--	20,000
				By C's Current A/c	--	2,000	--
				By WCR	1,500	1,500	--
				By Revaluation	6,000	6,000	--
	57,500	**39,500**	**20,000**		**57,500**	**39,500**	**20,000**

Balance Sheet of the new firm as on 01st January 2017

Liabilities		Amount(₹)	Assets	Amount(₹)
Creditors	6,000		Cash at Bank	12,000
(-) Reserve for Discount	120	5,880	Cash in Hand	20,000
Outstanding Exp.		1,800	Debtors	14,000
workmen Compensation Liabilities		1,000	Stock	24,180
Employee's Provident Fund		3,500	Fixed Assets	55,000
Capital A/c			C's current A/c	2,000
A 56500, B 38500, C 20,000		1,15,000		
		1,27,180		**1,27,180**

कार्यशील टिप्पणी :

(1) त्याग अनुपात = पुराना लाभ विभाजन अनुपात–नया लाभ विभाजन अनुपात Sacrificing Ratio = OPSR – NPSR

A $\frac{1}{2} - \frac{2}{4} = Nil$; B $\frac{1}{2} - \frac{1}{4} = \frac{1}{4}$

(2) कर्मचारी क्षतिपूर्ति संचय में से सम्बन्धित दायित्व को घटाकर शेष राशि को पुराने साझेदारों में उनके पुराने लाभ विभाजन अनुपात में बांटा गया हैं।

(3) Cash Balance: 20,000

उदाहरण 7. P तथा Q साझेदार है और लाभ को 3 : 1 के अनुपात में बाँटते हैं। 31 मार्च, 2017 को उनका स्थिति विवरण इस प्रकार था (P and Q were partners sharing profits in the ratio 3 : 1. Their Balance Sheet is as follows on 31st March, 2017 was as follows :)

Balance Sheet

Liabilities		Amount₹	Assets		Amount₹
Creditors		40,000	Bank		7,000
Bills Payable		15,000	Debtors	30,000	
Capital			Less:Provision	1,000	29,000
P	85,000		Stock		40,000
Q	40,000	1,25,000	Fixed Assets		86,000
			Goodwill		8,000
			Profit & Loss A/c		10,000
		1,80,000			**1,80,000**

उस तिथि को R को साझेदार के रूप में सम्मिलित किया जाता है और नया लाभ विभाजन अनुपात 5 : 3 : 2 हैं। नियत की गई अन्य शर्ते थी : **(i)** देनदारों पर संदिग्ध ऋणों के लिए 5 प्रतिशत की दर से और देनदारों पर छूट के लिए 2 प्रतिशत का प्रावधान कीजिए। **(ii)** स्थायी सम्पत्तियों का मूल्य ₹ 80,000 तय किया। **(iii)** लेनदारों में पिछले 4 वर्षो से अजय को देय ₹ 2,500 की राशि शामिल है, जिसके माँगने की आशा नहीं हैं। **(iv)** लेनदारों पर 2 प्रतिशत की दर से छूट का प्रावधान अपेक्षित हैं। **(v)** फर्म की ख्याति का मूल्यांकन ₹ 20,000 किया गया हैं। **(vi)** R पूँजी के रूप में ₹ 30,000 देगा एवं ख्याति नकद लाएगा और P तथा Q की पूँजी का समायोजन R की पूँजी के आधार पर किया जाएगा। पूँजी का समायोजन नकद के आधार पर किया जाएगा। पुनर्मूल्यांकन खाता, साझेदारों के पूँजी खाते और नई फर्म का स्थिति विवरण बनाइए।

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

R is admitted as a partner on that date and new profit sharing ratio was agreed as 5:3:2. Other terms agreed were:**(i)** Create provision for doubtful debts on debtors @5% and 2% provision for discount on debtors. **(ii)** Fixed Assets were valued at ₹ 80,000. **(iii)** Creditors includes sum due to Ajay ₹ 2,500 for the last 4 years who is not likely to claim. **(iv)** A provision for discount is required@ 2% on creditors.**(v)** Goodwill of the firm is valued at ₹20,000. **(vi)** R will pay ₹ 30,000 as capital and will bring his share of goodwill in cash and capital of P and Q be adjusted on the basis of R's capital. Adjustments in capital be made on cash basis. Prepare Revaluation Account, Partner's Capital Accounts and Balance Sheet of new firm.

हल: **Dr.** **Revaluation A/c** **Cr.**

Particulars	Amount(₹)	Particulars	Amount(₹)
To P.B.D. A/c	500	By Creditors A/c	2,500
To P.D.D A/c	570	By Reserve for discount on Creditors A/c	750
To Fixed Assets A/c	6,000	By Loss transfer to caprital A/c	
		P 2,865	
		Q 955	3,820
	7,070		**7,070**

Dr. **Partner's Capital A/c** **Cr.**

Particulars	P (₹)	Q (₹)	R (₹)	Particulars	P (₹)	Q (₹)	R (₹)
To P's Capital	-	1,000	-	By Balance b/d	85,000	40,000	-
To P&L	7,500	2,500	-	By Cash A/c	-	-	30,000
To Revaluation	2,865	955	-	By Goodwill A/c	4,000	-	-
To Goodwill	6,000	2,000	-	By Q's Capital	1,000	-	-
To Balance c/d	75,000	45,000	30,000	By Cash A/c			-
				(Balancing figure)	1,365	11,455	-
	91,365	**51,455**	**30,000**		**91,365**	**51,455**	**30,000**

Balance Sheet of the new firm

Liabilities		Amount(₹)	Assets		Amount(₹)
Creditors			Bank		7,000
40,000 – 2,500 – 750		36,750	Cash		46,820
Bills payable		15,000	Debtors	30,000	
Capital A/c			Less P.B.D.	1,500	
X	75,000		Less P.D.D.	570	27,930
Y	45,000		Stock		40,000
Z	30,000	1,50,000	Fixed assets		80,000
		2,01,750			**2,01,750**

कार्यशील टिप्पणी : **(1)** रोकड़ शेष 30,000+4000+1,365+11,455 = ₹46,820;

(2) OPSR – NPSR = SR/GR; $P: \frac{3}{4}-\frac{5}{10}=\frac{5}{20}(SR) Q: \frac{1}{4}-\frac{3}{10}=(-)\frac{1}{20}(GR)$

(3) फर्म की ख्याति में R का हिस्सा : $20{,}000 \times \frac{2}{10} = 4{,}000$ यह P को दिया जायेगा।

$20{,}000 \times \frac{1}{10} = 1{,}000$ Q का खाता Dr. होगा। क्योंकि वह Gain कर रहा हैं।

उदाहरण 8. A व B साझेदार थे, लाभों को 5 : 3 के अनुपात में बाँटते थे। 31 मार्च, 2017 को उनका स्थिति विवरण इस प्रकार था (A and B were partnership sharing profits in proportion of 5 : 3. Their Balance Sheet on 31st March, 2017 was as follows:)

Balance Sheet

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Liabilities	Amount ₹	Assets	Amount ₹
Creditors	24,000	Bank	4,000
Bills Payable	10,500	Debtors	25,000
General Reserve	12,000	Stock	45,000
Capitals		Investment	10,500
A 75,000		Machinery	30,000
B 50,000	1,25,000	Building	60,000
Current Accounts:		Goodwill	20,000
A	15,000		
B	8,000		
	1,94,500		**1,94,500**

वे निम्नलिखित शर्तो पर C को सम्मिलित करते है : **(i)** साझेदारों का नया लाभ विभाजन अनुपात 4 : 2 : 1 होगा। C अपनी पूँजी के ₹ 30,000 लाएगा। **(ii)** C फर्म की ख्याति में अपने हिस्से के बराबर राशि नकद देगा ; ख्याति का मूल्यांकन गत तीन वर्षो के औसत लाभों का दोगुना किया जाएगा जो क्रमशः ₹ 25,000 ,₹ 36,000 और₹ 44,000 थे। **(iii)** सामान्य संचय कोष का 20% संदिग्ध ऋणों के लिए प्रावधान के रूप में रहेगा। **(iv)** स्टॉक का मूल्य ₹ 5,000 अधिक लगाया गया हैं। **(v)** ख्याति की राशि का 50 प्रतिशत पुराने साझेदारों ने निकाल लिया हैं।(vi) कमीशन के रूप में ₹ 1,000 मिलेंगे, अतः लेखा किया जाए। **(vii)** एक अप्रत्याशित (unforeseen) दायित्व के लिए ₹ 1,500 का प्रावधान किया जाए। **(viii)** निवेश, जिनका बाजार मूल्य स्थिति विवरण की तिथि को ₹ 8,000 हैं। पुनर्मूल्यांकन खाता,पूँजी खाते और संशोधित स्थिति विवरण बनाइए।

They admit C on the following terms: **(i)** New profit sharing ratio of partners will be 4 : 2 : 1. C will bring in ₹ 30,000 as his capital. **(ii)** C is to pay in cash an amount equal to his share in firm's goodwill,valued at twice the average profit of the last three years which were ₹ 25,000, ₹ 36,000 and ₹ 44,000 respectively. **(iii)** 20% of the general reserve is to remain as provision for doubtful debts. **(iv)** Value of stock is found over valued by ₹ 5,000. **(v)** 50% of the amount of goodwill is withdrawn by old partners. **(vi)** That ₹ 1,000 is to be received as commission, hence, to be accounted for. **(vii)** That ₹ 1,500 be provided for an unforeseen liability. **(viii)** Investments, the market value of which at the date of the balance sheet is ₹ 8,000. Prepare Revaluation Account, Capital Accounts and amended Balance Sheet.

हलः **Dr. Revaluation A/c Cr.**

Particulars	Amount (₹)	Particulars	Amount (₹)
To Stock A/c	5,000	By Accrued Commission	1,000
To Provision for		By Loss transfer to current A/c	8,000
Unforseen Liability	1,500	A 5,000	
To Investments	2,500	B 3,000	
	9,000		**9,000**

Dr. Partner's Capital A/c Cr.

Particulars	A (₹)	B (₹)	C (₹)	Particulars	A (₹)	B (₹)	C (₹)
To Balance c/d	75,000	50,000	30,000	By Balance b/d	75000	50000	-
				By Cash A/c	-	-	30000
	75,000	**50,000**	**30,000**		**75,000**	**50,000**	**30,000**

Dr. Partner's Current A/c Cr.

Particulars	A (₹)	B (₹)	Particulars	A (₹)	B (₹)
To Goodwill	12,500	7,500	By Balance b/d	15,000	8,000
To Revaluation	5,000	3,000	By Goodwill A/c	3,750	6,250
To Cash	1,875	3,125	By General Reserve	6,000	3,600
To Balance c/d	5,375	4,225			
	24,750	**17,850**		**24,750**	**17,850**

Balance sheet as on.....

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Liabilities	Amount(₹)	Assets		Amount(₹)
Creditors	24,000	Cash		35,000
Bills payable	10,500	Bank		4,000
Provision for		Debtors	25,000	
Un forseen Liability	1,500	Less – Provision	2400	22,600
Capital A/c		Stock		40,000
A 75,000		Investments		8,000
B 50,000		Machinery		30,000
C 30,000	1,55,000	Building		60,000
Current A/c		Accrued Commission		1,000
A 5,375				
B 4,225	9,600			
	2,00,600			**2,00,600**

कार्यशील टिप्पणी : **(1)** रोकड़ शेष 30,000+10,000-5,000 = ₹ 35,000 **(2)** सामान्य संचय में से 12,000 x 20% = ₹ 2,400 संदिग्ध ऋणों के लिए आयोजन बनाया गया है व शेष राशि पुराने साझेदारों में उनके पुराने लाभ विभाजन अनुपात में वितरित की गयी हैं।

General Reserve A/c	Dr.	12,000	
To P.B.D			2,400
To A's Current A/c			6,000
To B's Current A/c			3,600

(3) त्याग अनुपात की गणना : पुराना लाभ विभाजन अनुपात – नया लाभ विभाजन अनुपात

$$A: \frac{5}{8}-\frac{4}{7}=\frac{3}{56}\ ; B: \frac{3}{8}-\frac{2}{7}=\frac{5}{56}\ ; \quad 3:5$$

उदाहरण 9. A तथा B जो कि लाभों को 2 : 1 के अनुपात में बाँटते है का स्थिति विवरण निम्न है (The following is the Balance Sheet of A and B who share profits in the ratio of 2 : 1)

Balance Sheet

Liabilities	Amount₹	Assets	Amount₹
Bank Overdraft	12,000	Sundry Debtors	37,000
Reserve Fund	12,000	Stock	20,000
Investment Fluctuation Fund	3,000	Investment	33,000
Sundry Creditors	20,000	Building	25,000
Capitals		Patents	2,000
A	40,000		
B	30,000		
	1,17,000		**1,17,000**

वह C को साझेदारी में शामिल करते हैं। नया लाभ विभाजन अनुपात 3 : 2 : 1 होगा। निम्न समायोजनों के पश्चात् C आनुपातिक पूँजी की राशि लायेगा। **(i)** C अपने हिस्से की ख्याति ₹ 10,000 नकद लायेगा। **(ii)** एक ₹ 500 का देनदार मर गया उससे कुछ भी वसूल नहीं होगा। **(iii)** फर्म के पास ₹ 2,600 मूल्य का एक पुराना कम्प्यूटर है जिसे लेखा पुस्तकों में नहीं दिखाया हुआ। उसका पुस्तकों में लेखा किया जाएगा। **(iv)** पेटेंट मूल्यहीन हैं।**(v)** लेनदारों पर 2 प्रतिशत कटौती प्राप्त होगी। **(vi)** विनियोगों का मूल्यांकन ₹ 28,000 पर किया गया हैं। पुनर्मूल्यांकन खाता साझेदारों के पूँजी खाते एवं नयी फर्म का चिट्ठा तैयार कीजिए।

They admitted C into partnership on this date. New profit sharing ratio is agreed as 3 : 2 : 1. C brings proportionate capital after the following adjustments: **(i)** C brings ₹ 10,000 in cash as his share of Goodwill. **(ii)** One Debtor for ₹ 500 is dead. Nothing will be recovered from him. **(iii)** There is an old Computer valued ₹ 2,600. It does not appear in the books of the firm. It is now to be recorded. **(iv)** Patents are valueless. **(v)** 2% discount is to be received from creditors. **(vi)** Investment valued at ₹ 28,000. Prepare Revaluation A/c, Partner's Capital A/c and the opening Balance Sheet.

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

हल: **Dr. Revaluation A/c Cr.**

Particulars	Amount (₹)	Particulars	Amount(₹)
To Debtors	500	By Computer	2,600
To Patent	2,000	By Reserve for discount On creditors	400
To Investment	2,000	By Loss transfer to capital a /c's	1,500
		A 1000	
		B 500	
	4,500		**4,500**

Dr. Partner's Capital A/c Cr.

Particulars	A (₹)	B (₹)	C (₹)	Particulars	A (₹)	B (₹)	C (₹)
To Revaluation	1,000	500	-	By Balance b/d	40,000	30,000	-
To Balance c/d	57,000	33,500	18,100	By Cash A/c	-	-	18,100
				By Goodwill A/c	10,000	-	-
				By Reserve Fund	8,000	4,000	-
	58,000	**34,000**	**18,100**		**58,000**	**34,000**	**18,100**

Balance Sheet of the new firm

Liabilities		Amount(₹)	Assets	Amount(₹)
Bank overdraft		12,000	Debtors	36,500
Sundry Creditors	20,000		Stock	20,000
Less – Provision	400	19,600	Investments	28,000
Capital A/c			Building	25,000
A 57000			Cash (18,100 + 10,000)	28,100
B 33500			Computer	2,600
C 18100		1,08,600		
		1,40,200		**1,40,200**

कार्यशील टिप्पणियां : **(1)** त्याग अनुपात की गणना : पुराना लाभ विभाजन अनुपात – नया लाभ विभाजन अनुपात

$A: \frac{2}{3} - \frac{3}{6} = \frac{1}{6}$; $B: \frac{1}{3} - \frac{2}{6} = Nil$; Note:सम्पूर्ण त्याग A करेगा

(2) पूँजी का समायोजन : A व B की कुल समायोजित पूँजी 57,000+33,500 = ₹90,500 C का लाभों में हिस्सा $\frac{1}{6}$; अतः A व B का हिस्सा $1 - \frac{1}{6} = \frac{5}{6}$;C की पूँजी $= 90{,}500 \times \frac{6}{5} \times \frac{1}{6}$ =₹ 18,100

उदाहरण 10. साक्षी, सिन्धु तथा दीपा एक फर्म में साझेदार थे तथा 3 : 2 : 1 के अनुपात में लाभ बाँटते थे। 1 अप्रैल,2017 को उनका स्थिति विवरण निम्न प्रकार से था :(Sakshi,Sindhu and Deepa were partners in a firm sharing profits in the ratio of 3 : 2 : 1. On 1st April, 2017 their Balance Sheet was as follows :)

Balance Sheet

Liabilities		Amount₹	Assets	Amount₹
Capitals			Land & Building	3,64,000
Sakshi	3,58,000		Plant & Machinery	2,95,000
Sindhu	3,00,000		Furniture	2,33,000
Deepa	2,62,000	9,20,000	Bills Receivable	38,000
General Reserve		48,000	Sundry Debtors	90,000
Creditors		1,60,000	Stock	1,11,000
Bills Payable		90,000	Bank	87,000
		12,18,000		**12,18,000**

उपर्युक्त तिथि को निम्न शर्तों पर सानिया को एक नया साझेदार बनाया गया : **(i)** वह अपनी पूँजी के लिए ₹ 1,00,000 लायेगी तथा लाभ में उसका भाग 1/10 होगा। **(ii)** वह ख्याति (प्रीमियम) के अपने भाग के लिए आवश्यक राशि लायेगी। फर्म की ख्याति का मूल्यांकन ₹ 3,00,000 किया गया। **(iii)** बट्टे पर भुनाए गए प्राप्य बिलों के लिए ₹18,000 की

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

एक देयता बनाई जाएगी। **(iv)** स्टॉक तथा फर्नीचर के मूल्य को 20% से घटाया जाएगा। **(v)** भूमि तथा भवन के मूल्य को 10% से बढाया जाएगा। **(vi)** साझेदार सामान्य संचय की आधी राशि निकाल लेते हैं। **(vii)** साझेदारों के पूँजी खातों का समायोजन सानिया की पूँजी के आधार पर उनके लाभ विभाजन अनुपात में चालू खाता खोलकर किया जाएगा। पुनर्मूल्यांकन खाता साझेदारों के पूँजी खाते व नयी फर्म का चिट्ठा तैयार कीजिए। On the above date Saniya was admitted on the following terms: **(i)** She will bring ₹ 1,00,000 for her capital and will get 1/10th share in the profits. **(ii)** She will bring necessary cash for her share of goodwill (Premium).The goodwill of the film was valued at ₹ 3,00,000 **(iii)** A liability of ₹18,000 will be created against bills receivables discounted. **(iv)** The value of stock and furniture will be reduced by 20% **(v)** The value of land and building will be increased by 10% **(vi)** Half of the amount of General Reserve is withdrawn by the partners. **(vii)** Capital accounts of the partners will be adjusted on the basis of Saniya's capital in their profit sharing ratio by opening current accounts. Prepare Revaluation Account and Partner's Capital Account and Balance sheet of the new firm.

हल: **Dr.** **Revaluation A/c** **Cr.**

Particulars	Amount(₹)	Particulars	Amount(₹)
To Liability For Bills discounted	18,000 46,600	By Land & Building A/c By Loss transfer to Capital A/c	36,400 50,400
To Furniture A/c	22,200	Sakshi 25,200	
To Stock A/c		Sindhu 16,800	
		Deepa 8,400	
	86,800		**86,800**

Dr. **Partner's Capital A/c** **Cr.**

Particulars	Sakshi (₹)	Sindhu (₹)	Deepa (₹)	Saniya (₹)	Particulars	Sakshi (₹)	Sindhu (₹)	Deepa (₹)	Saniya (₹)
To Revaluation	25,200	16,800	8,400	-	By Balance b/d	3,58,000	3,00,000	2,62,000	
To Cash A/c	12,000	8,000	4,000	-	By Cash A/c	-	-	-	1,00,000
To Current A/c	-	1,200	1,12,600	-	By Goodwill A/c	15,000	10,000	5,000	
(Balancing figure)					By General Reserve	24,000	16,000	8,000	
To Balance c/d	450000	300000	1,50,000	1,00,000	By Current A/c (Balanceing figure)	90,200			
	487200	**326000**	**2,75,000**	**1,00,000**		**4,87,200**	**3,26,000**	**2,75,000**	**1,00,000**

Balance Sheet of the new firm as on 1st April 2017

Liabilities	Amount(₹)	Assets	Amount(₹)
Capital A/c		Land & Building	4,00,400
Sakshi 4,50,000		Plant & Machine	2,95,000
Sindhu 3,00,000		Furniture	1,86,400
Deepa 1,50,000		Bills Receivable	38,000
Saniya 1,00,000	10,00,000	Sundry Debtors	90,000
Creditors	1,60,000	Stock	88,800
Bills payable	90,000	Bank	87,000
Liability For Bills discounted	18,000	Cash	1,06,000
Current A/c		Sakshi's Current A/c	90,200
Sindhu 1,200			
Deepa 1,12,600	1,13,800		
	13,81,800		**13,81,800**

कार्यशील टिप्पणियां : **(1)** नया लाभ विभाजन अनुपात : शेष लाभ $= 1 - \frac{1}{10} = \frac{9}{10}$

साक्षी $= \frac{9}{10} \times \frac{3}{6} = \frac{27}{60}$ सिंधु $= \frac{9}{10} \times \frac{2}{6} = \frac{18}{60}$ दीपा $= \frac{9}{10} \times \frac{1}{6} = \frac{9}{60}$

नया लाभ विभाजन अनुपात : $\frac{27}{60} : \frac{18}{60} : \frac{9}{60} : \frac{1}{10} = 27:18:9:6$ *or* $9:6:3:2$

(2) सानिया की $\frac{1}{10}$ भाग के लिए पूँजी ₹ 1,00,000: अतः फर्म की कुल पूँजी $\frac{1,00,000 \times 10}{1}$ = ₹ 10,00,000

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

साक्षी 10,00,000 × $\frac{9}{20}$ = ₹ 4,50,000 , सिन्धु 10,00,000 × $\frac{6}{20}$ = ₹ 3,00,000, दीपा 10,00,000 × $\frac{3}{20}$ = ₹ 1,50,000 , सानिया = ₹ 1,00,000 ; **(3)** रोकड़ शेष 1,00,000 + 30,000 – 24,000 = ₹ 1,06,000

उदाहरण 11. सुरेन्द्र एंव महेन्द्र 5 : 3 के अनुपात में लाभ बाँटते हुए एक फर्म में साझेदार हैं। 31 दिसम्बर, 2016 को उनका चिट्ठा निम्न प्रकार था: (Surendra and Mahendra are partners in a firm sharing profits in the ratio of 5 : 3 Their Balance Sheet on 31st December, 2016 was as follows:)

Liabilities		Amount ₹	Assets	Amount ₹
Creditors		22,000	Cash	9,000
Provision For Doubtful Debts		1,000	Debtors	12,000
Bills Payable		18,000	Stock	25,000
Investment Fluctuation Reserve		2,000	Investment	10,000
General Reserve		16,000	Land & Building	55,000
Capitals			Goodwill	8,000
Surendra	35,000			
Mahendra	25,000	60,000		
		1,19,000		**1,19,000**

1 जनवरी, 2017 को अंकुर को साझेदार बनाया गया। वह पूँजी के रूप में ₹20,000 लाया। नया अनुपात 3 : 3 : 2 होगा। नए साझेदार के प्रवेश पर निम्न निर्णय लिये गये : **(i)** फर्म की ख्याति में अंकुर का हिस्सा ₹ 10,000 तय किया गया। वह ख्याति की राशि नकद लाया। **(ii)** सुरेन्द्र ने सम्पूर्ण विनियोग ₹ 8,000 में ले लिये। **(iii)** देनदारों पर डूबत एंव संदिग्ध ऋण के लिये आयोजन ₹ 2,000 का बनाया जाये। भूमि तथा भवन का मूल्यांकन ₹ 85,000 पर किया जाए। **(iv)** स्टॉक का मूल्यांकन ₹ 20,000 पर किया गया हैं। **(v)** लेनदारों ने ₹ 4,000 के दावे को छोड़ दिया। **(vi)** सभी साझेदारों की पूँजी का समायोजन नये लाभ विभाजन अनुपात में नकद से किया जाएगा। पुनर्मूल्यांकन खाता, साझेदारों के पूँजी खाते तथा चिट्ठा बनाइये।

On 1st January, 2017 Ankur was admitted as partner,He brought ₹ 20,000 as capital. New Ratio will be 3 : 3 : 2. On admission new partner, following decisions were taken: **(i)** Ankur's share in firm's goodwill was decided as ₹ 10,000. He brought amount of goodwill in cash. **(ii)** Surendra took all investments in ₹ 8,000 **(iii)** A provision for Bad & Doubtful debts of ₹ 2,000 is to be made on Debtors and Land & Building is to be valued at ₹ 85,000 **(iv)** Stock is valued at ₹ 20,000 **(v)** Creditors have given up claim of ₹ 4,000 **(vi)** Adjustment of all partners' capital is to be done out of cash in new profit sharing ratio. Prepare Revaluation Account and Capital Account & Balance Sheet of the new firm.

हल: **Dr. Revaluation A/c Cr.**

Particulars		Amount(₹)	Particulars	Amount(₹)
To Provision for Bad Debts A/c		1,000	By Land & Building	30,000
To Stock A/c		5,000	By Creditors	4,000
To Profit transferred to:				
Surender's Capital A/c	17,500			
Mahendra's Capital A/c	10,500	28,000		
		34,000		**34,000**

Dr. Partner's Capital A/c Cr.

Particulars	Surendra (₹)	Mahendra (₹)	Ankur (₹)	Particulars	Surendra (₹)	Mahendra (₹)	Ankur (₹)
To Investment	8,000	--	--	By Balance b/d	35,000	25,000	--
To Goodwill	5,000	3,000	--	By Cash A/c	--	--	20,000
To Cash A/c	29,500	8,500	--	By Goodwill A/c	10,000	--	--
(Balancing figure)				By General	10,000	6,000	--
To Balance c/d	30,000	30,000	20,000	Reserve	17,500	10,500	--
				By Revaluation A/c			
	72,500	**41,500**	**20,000**		**72,500**	**41,500**	**20,000**

Balance sheet of the new firm as on 01St January, 2017

Liabilities	Amount(₹)	Assets	Amount(₹)
Creditors	18,000	Cash	1,000

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Bills Payable		18,000	Debtors		12,000
Provision for Bad Debts		2,000	Stock		20,000
Capital A/c			Land & Building		85,000
Surendra	30,000				
Mahendra	30,000				
Ankur	20,000	80,000			
		1,18,000			**1,18,000**

कार्यशील टिप्पणियां :

(1) त्याग अनुपात = पुराना लाभ विभाजन अनुपात–नया लाभ विभाजन अनुपात; Surendra $\frac{5}{8}-\frac{3}{8}=\frac{2}{8}$; Mahendra $\frac{3}{8}-\frac{3}{8}=Nil$

(2) पूँजी का समायोजन– अंकुर की पूँजी $\frac{2}{8}$ हिस्से के लिए ₹ 20,000 फर्म की कुल पूँजी $20{,}000\ x\frac{8}{2}=₹\ 80{,}000$

अतः सुरेन्द्र की पूँजी $80{,}000\ x\frac{3}{8}=₹\ 30{,}000$; महेन्द्र की पूँजी $80{,}000\ x\frac{3}{8}=₹\ 30{,}000$; अंकुर की पूँजी ₹ 20,000

(3) रोकड़ शेष : 9,000 + 20,000 + 10,000 - 29,500 - 8,500 = ₹ 1,000

(4) निवेश उतार चढ़ाव खाते में दिया गया शेष विनियोग के मूल्य की कमी को पूरा करने में प्रयोग हुआ हैं।

Investment Fluctuation Reserve A/c Dr. 2,000

To Investment A/c 2,000

उदाहरण 12. अमित व आशीष 5 : 3 के अनुपात में लाभ बाँटते थे, श्रवण को लाभ में 1/5 हिस्से के लिए साझेदार बनाया। वह आनुपातिक पूँजी लगायेगा। वित्तीय स्थिति इस प्रकार थीः (Amit and Ashish who were sharing profits in the ratio of 5 : 3. They admitted Shravan as a partner with 1/5th share in profits. He had to contribute proportionate capital.The financial position was as under :)

Balance Sheet

Liabilities	Amount₹	Assets	Amount₹
Creditors	19,000	Goodwill	10,000
Bills Payable	8,000	Land & Building	25,000
Capital:		Plant & Machinery	35,000
Amit	55,000	Stock	20,000
Ashish	30,000	Debtors	25,000
General Reserve	16,000	Investment	14,000
Provision for Bad debts	1,500	Cash	2,400
Outstanding Salary	2,400	Prepaid Insurance	500
	1,31,900		**1,31,900**

उन्होंने श्रवण को निम्नांकित शर्तों पर प्रवेश देना स्वीकार किया : **(i)** फर्म को ख्याति ₹ 20,000 पर मूल्यांकित की गयी। वह अपना हिस्सा नकद लाएगा। **(ii)** भूमि व भवन ₹ 13,000 से बढ़ेंगे तथा मशीनरी ₹ 30,000 पर मूल्यांकित होगी। **(iii)** डूबत ऋण आयोजन ₹ 500 अधिक पाया गया हैं। **(iv)** ₹ 1,200 का एक दायित्व जो विविध लेनदारों में शामिल है, जिसके उत्पन्न होने की संभावना नहीं हैं। **(v)** एक ग्राहक ने ₹ 500 हानि के लिए मांगे है जो फर्म द्वारा स्वीकार नहीं किया गया हैं। ग्राहक व फर्म के मध्य समझौता हुआ है कि इसके लिए ₹ 100 निर्धारित किये जाए। **(vi)** ₹ 10,000 के विनियोग पुराने साझेदारों ने लाभ विभाजन अनुपात में ले लिए **(vii)** साझेदारों की पूँजी लाभ विभाजन अनुपात में समायोजित रहेगी। इसके लिए चालू खाते खोले जायेंगे। **(viii)** आशीष नकद में ₹ 2,400 आहरण करता हैं। पुनर्मूल्यांकन खाता साझेदारों के पूँजी खाते तथा पुनर्गठित फर्म का स्थिति विवरण तैयार कीजिए।

They agreed to admit Shravan on the following terms: **(i)** Goodwill of the firm was to be valued at ₹ 20,000. He will bring his share in cash. **(ii)** Land & Building was to be increased by ₹ 13,000 & Machinery was to be valued at ₹ 30,000 **(iii)** The provision for bad & doubtful debts was found in excess by ₹ 500. **(iv)** A liability for ₹ 1,200 included in sundry creditors was not likely to arise. **(v)** ₹ 500 For damages claimed by a customer had not been accepted by the firm, it was agreed at ₹ 100 by a compromise between the customer and the firm. **(vi)** ₹ 10,000 investments were taken over by old partners in their profit sharing ratio **(vii)** The capitals of the partners were to be adjusted in profit sharing ratio by opening current accounts.

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

(viii) Ashish is to withdraw ₹ 2,400 in cash.Prepare Revaluation Account, Partner's Capital Accounts & Balance Sheet of the New Firm.

हल:

Dr. Revaluation A/c Cr.

Particulars	Amount(₹)	Particulars	Amount(₹)
To Machinery A/c	5,000	By Land & Building A/c	13,000
To Provision For Claim	100	By P.B.D A/c	500
To Profit Transfer to Capital A/c		By Creditors A/c	1,200
Amit 6,000			
Ashish 3,600	9,600		
	14,700		**14,700**

Dr. Partner's Capital A/c Cr.

Particulars	Amit (₹)	Ashish (₹)	Shravan (₹)	Particulars	Amit (₹)	Ashish (₹)	Shravan (₹)
To Goodwill	6,250	3,750	-	By Balance b/d	55,000	30,000	-
To Cash A/c	-	2,400	-	By Cash A/c	-		23,050
To Investment	6,250	3,750	-	By Goodwill A/c	2,500	1,500	-
To Amit's Current A/c	3,375		-	By General Reserve	10,000	6,000	-
To Balance c/d	57,625	34,575	23,050	By Revaluation A/c	6,000	3,600	-
				By Ashish's current A/c	-	3,375	-
	73,500	**44,475**	**23,050**		**73,500**	**44,475**	**23,050**

Balance Sheet of the new firm

Liabilities	Amount(₹)	Assets	Amount(₹)
Creditors	17,800	Land & Building	38,000
Bills payable	8,000	Plant & Machine	30,000
Provision For Claim	100	Stock	20,000
Outstanding salary	2400	Debtors 25,000	
Capital A/c		Less – P.B.D 1,000	24,000
Amit 57,625		Investments	4,000
Ashish 34,575		Prepaid Insurance	500
Sharvan 23,050	1,15,250	Cash (2,400+23,050,+ 4,000 – 2,400)	27,050
Amit's Current A/c	3,375	Ashish's Current A/c	3,375
	1,46,925		**1,46,925**

कार्यशील टिप्पणियाँ : (1) नया लाभ विभाजन अनुपात : शेष लाभ $= 1 - \frac{1}{5} = \frac{4}{5}$

अमित $= \frac{4}{5} \times \frac{5}{8} = \frac{20}{40}$ आशीष $= \frac{4}{5} \times \frac{3}{8} = \frac{12}{40}$

नया लाभ विभाजन अनुपात : $\frac{20}{40} : \frac{12}{40} : \frac{1}{5} = 20:12:8 = 5:3:2$

(2) नये साझेदार श्रवण की पूँजी की गणना:– अमित की कुल पूँजी समायोजित पूँजी 73,500 – 12,500 = ₹ 61,000 , आशीष की कुल समायोजित पूँजी 41,100 – 9,900=₹31,200

61,000+31,200=₹ 92,200

$1 - \frac{1}{5} = \frac{4}{5}$ (अमित + आशीष)

श्रवण की कुल पूंजी : $92,200 \times \frac{5}{4} \times \frac{1}{5}$ =₹ 23,050

(3) फर्म की कुल पूँजी $92,200 \times \frac{5}{4}$ =₹ 1,15,250

अमित $1,15,250 \times \frac{5}{10}$ =₹ 57,625 ; आशीष $1,15,250 \times \frac{3}{10}$ =₹ 34,575 ; श्रवण $1,15,250 \times \frac{2}{10}$ =₹ 23,050

अतः तीनों साझेदारों की नये लाभ विभाजन अनुपात में पूँजी क्रमशः ₹57,625, ₹34,575, ₹ 23,050 होगी।

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

उदाहरण 13. सूरज और चंदा 2 : 1 के अनुपात में लाभ बाँटते हुए साझेदार हैं। 31 मार्च, 2017 को उनका चिट्ठा निम्न प्रकार था: (Suraj and Chanda are partners sharing profits in the ratio of 2 : 1. Their Balance Sheet as on 31st March, 2017 is as follows)

Balance Sheet as on 31st March, 2017

Liabilities	Amount₹	Assets	Amount₹
Creditors	30,000	Cash Balance	20,000
Bank Loan	10,000	Bank Balance	20,000
General Reserve	30,000	Sundry Debtors 60,000	
Capitals		Less:Provision 24,000	36,000
Suraj 1,20,000		Stock	90,000
Chanda 60,000	1,80,000	Machine	29,000
		Furniture	10,000
		Goodwill	36,000
		Pofit &Loss	9,000
	2,50,000		**2,50,000**

1 अप्रैल 2017 को वे तारा को 1/3 हिस्से के लिए प्रवेश देते हैं। वह अपने हिस्से की ख्याति के लिए व्यापार में नकद भुगतान करती है तथा इतनी पर्याप्त पूँजी लाती है जिससे कि उसे नई फर्म की कुल पूँजी का 1/3 भाग दिया जा सके। फर्म की ख्याति का मूल्यांकन गत तीन वर्षों के औसत लाभ के तीन गुने के आधार पर किया जाता है। इन वर्षो के लाभ या हानि क्रमशः ₹ 30,000 , ₹ 35,000 (हानि) और ₹ 50,000 थे। यह भी निश्चय किया गया कि देनदारों पर आयोजन को ₹ 9,000 तक घटाया जाये और रहतिये का पुनर्मूल्यांकन ₹ 1,20,000 पर किया जाये। मशीन को ₹ 20,000 तक घटाया जाये। बैंक ऋण का भुगतान कर दिया जाये। जर्नल प्रविष्टियां कीजिये और पुनर्मूल्यांकन खाता साझेदारों के पूँजी खाते तथा नई फर्म का चिट्ठा बनाइए

On 1st April, 2017 they admit Tara for 1/3rd share. She pays cash in the business for her share of goodwill and brings sufficient capital so that she can be given 1/3rd share of the total capital of the new firm. The goodwill of the firm is to be valued at three times of average profit of the last three years. Profit or loss of these three years were ₹ 30,000, ₹ 35,000 (Loss) and ₹ 50,000. It was also decided that the Provision on debtors be reduced up to ₹ 9,000 and Stock is to revalued at ₹ 1,20,000. The machine is to be reduced upto ₹ 20,000. Bank loan will be paid off. Pass Journal Entries and Prepare Revaluation account,Partner'sCapital accounts and Balance Sheet of the new firm.

हल: **Journal**

Date	Particulars		L.F.	Amount(Dr.) (₹)	Amount (Cr.) (₹)
1-4-17	Cash A/c	Dr.		1,23,000	
	To Tara's Capital A/c				1,08,000
	To Goodwill A/c				15,000
	(Being cash brought in by Tara towards goodwill & capital)				
	General Reserve A/c	Dr.		30,000	
	To Suraj's Capital A/c				20,000
	To Chanda's Capital A/c				10,000
	(Being General Reserve transferred to old Partner's Capital A/c in their old Profit sharing ratio)				
	Suraj's Capital A/c	Dr.		24,000	
	Chanda's Capital A/c	Dr.		12,000	36,000
	To Goodwill A/c				
	(Being existing goodwill A/c written off)				

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Bank Loan A/c	Dr.	10,000		
To Bank A/c			10,000	
(Being Bank Loan paid off)				
Suraj's Capital A/c	Dr.	6,000		
Chanda's Capital A/c	Dr.	3,000		
To P & L A/c			9,000	
(Being P & L transferred to Old partner's capital A/c)				
P.B.D. A/c	Dr.	15,000		
Stock A/c	Dr.	30,000		
To Revaluation A/c			45,000	
(Being decrease in PBD and increase in value of Stock)				
Revaluation A/c	Dr.	9,000		
To Machine A/c	Dr.		9,000	
(Being decrease in value of machine)				
Revaluation A/c	Dr.	36,000		
To Suraj's Capital A/c			24,000	
To Chanda's Capital A/c			12,000	
(Being Profit on revaluation transferred to old Partner's Capital A/c in their old profit sharing ratio)				
Goodwill A/c	Dr.	15,000		
To Suraj's Capital A/c			10,000	
To Chanda's Capital A/c			5,000	
(Being goodwill credited to old Partner's Capital A/c in their sacrificing ratio)				

Dr. **Revaluation A/c** **Cr.**

Particulars		Amount(₹)	Particulars	Amount(₹)
To Machinery		9,000	By P.B.D. A/c	15,000
To Profit transferred to:			By Stock A/c	30,000
Suraj's Capital A/c	24,000			
Chanda's Capital A/c	12,000	36,000		
		45,000		**45,000**

Dr. **Partner's Capital A/c** **Cr.**

Particulars	Suraj (₹)	Chanda (₹)	Tara (₹)	Particulars	Suraj (₹)	Chanda (₹)	Tara (₹)
To Goodwill A/c	24,000	12,000	---	By Balance b/d	1,20,000	60,000	--
To P & L A/c	6,000	3,000	---	By Cash A/c	---	---	1,08,000
To Balance c/d	1,44,000	72,000	1,08,000	By Goodwill A/c	10,000	5,000	--
				By General Reserve	20,000	10,000	--
				By Revaluation A/c	24,000	12,000	
	1,74,000	**87,000**	**1,08,000**		**1,74,000**	**87,000**	**1,08,000**

Balance Sheet of the new firm as on 01 April, 2017

Liabilities	Amount (₹)	Assets	Amount (₹)
Creditors	30,000	Cash at Bank	1,43,000

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Capital A/c			Bank Balance		10,000
Suraj	1,44,000		Debtors	60,000	
Chanda	72,000		(-) Provision	9,000	51,000
Tara	108,000	3,24,000	Stock		1,20,000
			Machine		20,000
			Furniture		10,000
		3,54,000			**3,54,000**

Working Notes:

(1) नया लाभ विभाजन अनुपात की गणना ; शेष लाभ $1-\frac{1}{3}=\frac{2}{3}$; Suraj $\frac{2}{3}X\frac{2}{3}=\frac{4}{9}$; Chanda $\frac{2}{3}X\frac{1}{3}=\frac{2}{9}$

अतः तीनों का नया लाभ विभाजन अनुपात होगा $\frac{4}{9}:\frac{2}{9}:\frac{1}{3}$ $=4:2:3$

(2) ख्याति की गणना – औसत लाभ $=\frac{30,000-35,000+50,000}{3}=\frac{45,000}{3}=$ ₹ 15000;

फर्म की ख्याति = 15000 x 3 = ₹ 45000 ; तारा का ख्याति मे हिस्सा $45,000\,x\frac{1}{3}=$₹ 15,000

(3) यदि प्रश्न में केवल नये साझेदार के लाभ का भाग दिया गया है तो पुराने साझेदारों का पुराना लाभ विभाजन अनुपात त्याग अनुपात समान होगा। पुराने साझेदारों का पुराना लाभ विभाजन अनुपात ही त्याग अनुपात होगा।

(4) तारा के हिस्से की पूँजी की गणना : सूरज व चन्दा की कुल समायोजित पूँजी1,44,000+72,000=₹ 2,16,000

(5) $1-\frac{1}{3}=\frac{2}{3}$(सूरज व चंदा का हिस्सा) ; तारा का हिस्सा $2,16,000\,x\frac{3}{2}x\frac{1}{3}=$ ₹ 1,08,000

(6) रोकड़ शेष 20,000 + 1,08,000 + 15,000 = ₹ 1,43,000

बैंक शेष 20,000 – 10,000 = ₹ 10,000

वर्तमान साझेदारों के मध्य लाभ विभाजन अनुपात में परिवर्तन

(Change in the profit sharing ratio among the existing partners)

लाभ विभाजन अनुपात में परिवर्तन से आशय यह है कि एक साझेदार दूसरे साझेदार से लाभ का अंश क्रय करता हैं। जिस साझेदार के लाभ के भाग में वृद्धि होती है उसे लाभान्वित साझेदार (Gaining Partner) कहते हैं। तथा जिस साझेदार के लाभ के भाग में कमी होती है उसे त्यागकर्ता साझेदार (Sacrificing Partner) कहते हैं। लाभ विभाजन अनुपात में परिवर्तन से लाभ प्राप्त करने वाले साझेदार, त्याग करने वाले साझेदार की क्षतिपूर्ति करते हैं।

लाभ विभाजन अनुपात में परिवर्तन पर लेखांकन में निम्न विषय विचारणीय है :

1. त्याग अनुपात व फायदे के अनुपात का निर्धारण
2. ख्याति का लेखांकन व्यवहार
3. संचय तथा अवितरित लाभ या हानि के लिये विभाजन का लेखांकन व्यवहार
4. सम्पत्तियों व दायित्वों का पुनर्मूल्यांकन
5. पूँजी का समायोजन

(1) त्याग अनुपात व फायदे के अनुपात का निर्धारण :

त्याग अनुपात = पुराना लाभ विभाजन अनुपात – नया लाभ विभाजन अनुपात

Sacrificing Ratio (SR) = Old Profit Sharing Ratio (OPSR) – New Profit Sharing Ratio (NPSR)

फायदे (लाभ प्राप्ति) का अनुपात :

फायदे का अनुपात = नया लाभ विभाजन अनुपात – पुराना लाभ विभाजन अनुपात

Gaining Ratio(GR) = New Profit Sharing Ratio (NPSR) – Old Profit Sharing Ratio (OPSR)

(2) ख्याति का लेखांकन व्यवहार

Gaining partner's capital/current A/c Dr.

To Sacrificing partner's capital/current A/c

(Being the adjustment made for goodwill on change in profit sharing ratio)

उदाहरण : A व B लाभ विभाजन 3 : 2 के अनुपात में करते थे। उन्होंने निर्णय किया कि भविष्य में लाभ बराबर बराबर बाँटेंगे। फर्म की ख्याति का मूल्यांकन ₹30,000 किया गया। ख्याति के व्यवहार के लिए आवश्यक जर्नल प्रविष्टि कीजिए।

B's Capital A/c	Dr.	3000	
To A's Capital A/c			3000

[Bing the adjustment made for goodwill on change in profit sharing ratio $\{30000\times\frac{1}{10}=3000\}$]

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

त्याग/फायदे SR/GR के अनुपात की गणना : $OPSR - NPSR$

$A = \frac{3}{5} - \frac{1}{2} = \frac{1}{10}$ त्याग ; $B = \frac{2}{5} - \frac{1}{2} = (-)\frac{1}{10}$ फायदा

विद्यमान ख्याति का लेखांकन व्यवहार – पुस्तकों में प्रदर्शित ख्याति को लाभ विभाजन अनुपात में परिवर्तन होने पर अपलिखित करना होता हैं।

All partners capital/current A/c Dr.
To Goodwill A/c (In OPSR)
(Being existing goodwill written off in old profit sharing ratio)

उदाहरण : A व B साझेदार हैं। जो लाभ को 5 : 3 के अनुपात में बाँटते हैं। उन्होंने भविष्य में लाभ विभाजन बराबर बराबर बाँटने का निर्णय किया। फर्म की ख्याति का मूल्यांकन ₹ 48,000 पर किया गया। पुस्तकों में ख्याति पहले से ₹ 16000 पर दिखाई गई हैं। ख्याति के लिए आवश्यक प्रविष्टियां कीजिए।

1.	A's Capital A/c	Dr.	10000	
	B's Capital A/c	Dr.	6000	
	To Goodwill A/c			16000
	(Being existing goodwill written off in old profit sharing ratio)			
2.	B's Capital A/c	Dr.	6000	
	To A's Capital A'/'c			6000
	(Being adjustment made for goodwill on change in profit sharing ratio $48000 \times \frac{1}{8} = 6000$)			

OPSR – NPSR = SR/GR; $A = \frac{5}{8} - \frac{1}{2} = \frac{1}{8}$ (SR) ; $B = \frac{3}{8} - \frac{1}{2} = (-)\frac{1}{8}$ (GR)

उदाहरण : X, Y व Z एक फर्म में साझेदार हैं। जो 3 : 2 : 1 के अनुपात में लाभ विभाजन करते हैं। वे निर्णय करते हैं। कि भविष्य में Z का हिस्सा $\frac{1}{3}$ होगा। फर्म की ख्याति का मूल्यांकन ₹ 30000 पर किया गया। इस परिवर्तन को लागू करने के लिए आवश्यक जर्नल प्रविष्टि कीजिए।

Z's Capital A/c		Dr.	5000	
To X's Capital A/c				3000
To Y"s Capital A/c				2000
(Being adjustment made for goodwill on change in profit sharing ratio)				

नये अनुपात की गणना : पुराना लाभ विभाजन अनुपात 3 : 2 : 1

Z का हिस्सा $\frac{1}{3}$; $1 - \frac{1}{3} = \frac{2}{3}$ (X व Y का हिस्सा)

$X = \frac{2}{3} \times \frac{3}{5} = \frac{6}{15}$; $Y = \frac{2}{3} \times \frac{2}{5} = \frac{4}{15}$; नया अनुपात $= \frac{6}{15} : \frac{4}{15} : \frac{1}{3} = 6 : 4 : 5$

त्याग/फायदे का अनुपात :$= \frac{3}{6} - \frac{6}{15} = \frac{3}{30}$; $= \frac{2}{6} - \frac{4}{15} = \frac{2}{30}$; $Z = \frac{1}{6} - \frac{5}{15} = (-)\frac{5}{30}$

X की राशि= $30000 \times \frac{3}{30} =$ ₹3000;Yकी राशि= $30000 \times \frac{2}{30} =$ ₹2000; Z की राशि= $30000 \times \frac{5}{30} =$ ₹5000

(3) संचय व अवितरित लाभ/हानि का व्यवहार

यदि साझेदारी के पुनर्गठन के समय फर्म के पास संचय व अवितरित लाभ/हानि हो तो उसे दो तरह से समायोजित किया जा सकता हैं। (i) संचय व लाभ/हानि को समाप्त कर दिया जाए। (ii) संचय व लाभ/हानि को समाप्त (बन्द) न किया जाए।

(i) संचय व लाभ/हानि को समाप्त कर दिया जाए (Reserves & Profits/Loss be cancelled) : संचय व अवितरित लाभ/हानि को वर्तमान साझेदारों के बीच उनके पुराने लाभ विभजन के अनुपात में बाँटा जाता हैं।

(a) संचय व अवितरित लाभों के लिए :

General Reserve A/c Dr.
P & L A/c Dr.
Workmen Compensation Reserve A/cDr. (दायित्व घटाने के बाद बचे आधिक्य से)
Investment Fluctuation Reserve A/c Dr. (विनियोगों के बाजार मूल्य में आई कमी को घटाने के बाद बचे)
To partner's capital/current A/c (In OPSR)
(Being Reserve & undistributed profits transferred to partner's capital A/c in OPSR)

(b) संचित हानियों व आस्थगित आयगत व्ययों के लिए

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Partner's capital/current A/c Dr. (In OPSR)
To P & L A/c
To Deferred Revenue Expenditure
(Being undistributed Loss transferred to partner's capital A/c in old Profit sharing Ratio)

(ii) संचय व लाभ/हानि को बन्द न किया जाए :

(a) संचय व संचित लाभों के लिए : Gaining Partner's Capital/Current A/c Dr.
To Sacrificing Partner's Capital/Current A/c
(Being Adjustments for profits on change in profit sharing ratio)

(b) संचित हानियों के लिए : Sacrificing Partner's Capital/Current A/c Dr.
To Gaining Partner's Capital/Current A/c
(Being Adjustment made for Losses on change in profit sharing ratio)

उदाहरण : एक फर्म में A, B व C साझेदार हैं। जो 3 : 2 : 1 के अनुपात में लाभ विभाजन करते हैं। उन्होंने भविष्य में लाभों को बराबर–बराबर बाँटने का निर्णय किया। इस तिथि को लाभ–हानि खाते में ₹60000 का क्रेडिट शेष व सामान्य संचय में ₹ 30,000 का शेष था। फर्म की पुस्तकों में आवश्यक जर्नल प्रविष्टियां कीजिए।

(a) फर्म ने लाभ–हानि खाते व सामान्य संचय को बन्द करने का निर्णय किया हो :

P & L A/c	Dr.	60000	
General Reserve A/c	Dr.	30000	
To A's Capital A/c			45000
To B's Capital A/c			30000
To C's Capital A/c			15000

(Being undistributed profits & General Reserve transferred to partner's capital A/c in OPSR)

(b) फर्म लाभ–हानि खाते व संचय को बन्द नहीं करना चाहती :

C's Capital A/c	Dr.	15000	
To A's Capital A/c			15000

(Being Adjustment made for P&L A/c & General Reserve on change in profit sharing ratio)

त्याग/फायदे का अनुपात :- $= \frac{3}{6} - \frac{1}{3} = \frac{1}{6}$; $B = \frac{2}{6} - \frac{1}{3} = 0$; $C = \frac{1}{6} - \frac{1}{3} = (-)\frac{1}{6}$

अतः संचय व लाभ–हानि खाते के क्रेडिट शेष के योग ₹ 90000 का $\frac{1}{6}$, A को देय होगा=₹15000

(4) सम्पत्तियों व दायित्वों के पुनर्मूल्यांकन का लेखा व्यवहार :

(a) यदि साझेदार फर्म के पुनर्गठन पर तैयार किये चिट्ठे में सम्पत्तियों व दायित्वों को संशोधित मूल्य (Revised Value) पर दिखाना तय करते हैं। तो इस दशा में पुनर्मूयांकन खाता बनाकर पुनर्मूल्यांकन पर हुए लाभ–हानि को वर्तमान साझेदारों के पुराने अनुपात में बाँट लिया जायेगा।

(i) पुनर्मूल्यांकन पर लाभ होने पर

Revaluation A/c Dr.
To partner's capital/current A/c (In OPSR)

(ii) पुनर्मूल्यांकन पर हानि होने पर

Partner's capital/current A/c Dr.
To Revaluation A/c

(b) जब सम्पत्तियों/दायित्वों के संशोधित मूल्य पुस्तकों में न लिखने हों या समायोजन साझेदारों के पूँजी खातों के माध्यम से करना हो –

(i) पुनर्मूल्यांकन पर लाभ होने पर

Gaining partner's capital/current A/c Dr. (in OPSR)
To Sacrificing partner's capital/current A/c

(ii) पुनर्मूल्यांकन पर हानि होने पर

Sacrificing partner's capital/current A/c Dr.
To Gaining partner's capital/current A/c

उदाहरण : A, B व C, 5 : 3 : 2 में लाभ विभाजन करते हुए साझेदार हैं। उन्होंने भविष्य में लाभों को 2 : 3 : 5 में बाँटने का निर्णय किया। सम्पत्तियों व दायित्वों के मूल्य में निम्नानुसार परिवर्तन हुए :

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

	पुस्तक मूल्य (₹ Book Value)	संशोधित मूल्य (₹ Revised Value)
Building	50000	60000
Plant	30000	50000
Creditors	20000	30000

निम्न में से प्रत्येक दशा में प्रविष्टि कीजिए जबकि साझेदार –

(a) संशोधित मूल्यों को चिट्ठे में बताना तय करते हैं। **(b)** संशोधित मूल्यों को चिट्ठे में न बताना तय करते हैं।

पुनर्मूल्यांकन पर लाभ = भवन में वृद्धि ₹10000 + प्लांट में वृद्धि ₹20000 लेनदारों में वृद्धि ₹10000 = ₹20000

(a)	Revaluation A/c	Dr.20000	
	To A's Capital A/c		10000
	To B's Capital A/c		6000
	To C's Capital A/c		4000
	(Being profit on Revaluation transfer to partner's capital A/c in their old Profit sharing ratio)		
(b)	C's capital A/c	Dr. 6000	
	To A's Capital A/c		6000
	(Being Adjustment 20000 $\times \frac{3}{10}$ = 6000 made for profit on Revaluation)		

त्याग / फायदे का अनुपात :- $\frac{5}{10} - \frac{2}{10} = \frac{3}{10}$; B = $\frac{3}{10} - \frac{3}{10} = 0$; C = $\frac{2}{10} - \frac{5}{10} = (-)\frac{3}{10}$

उदाहरण 14. लारा, प्रियंका तथा वसु 8 : 5 : 3 के अनुपात में लाभ बाँटते हुए एक फर्म में साझेदार हैं। 31 मार्च, 2017 को उनका चिट्ठा निम्न प्रकार था: (Lara,Priyanka and Vashu are partners in a firm sharing profit in the ratio of 8 : 5 : 3 respectively.Their Balance Sheet as on 31st March, 2017 was as follows)

Balance Sheet

Liabilities	Amount₹	Assets	Amount₹
Partner's Capital A/c		Cash at Bank	10,000
Lara	40,000	Investment	15,000
Priyanka	32,000	Stock	40,000
Vashu	28,000	Bill Receivable	8,000
Partner's Loan A/c		Debtors	40,000
Lara	16,000	Furniture	28,000
Priyanka	12,000	Patent	15,000
Provident Fund	18,000	Prepaid Insurance Premium	2,000
General Reserve	16,000	Plant & Machinery	62,000
Creditors	40,000		
Bank Loan	14,000		
Provision For Bad Debts	4,000		
	2,20,000		**2,20,000**

वे 1 अप्रैल,2017 से अपने लाभ विभाजन अनुपात को 5 : 6 : 5 के अनुपात में बदलने के लिए सहमत हुए। इस कार्य के लिए निश्चय किया गया कि : **(i)** फर्म की ख्याति पिछले चार वर्षो के औसत अधिलाभ के तीन गुने के आधार पर मूल्यांकित करनी हैं। पिछले चार वर्षो का औसत लाभ ₹ 40,000 है जबकि विनियोजित पूँजी पर सामान्य लाभ ₹ 24,000 हैं। **(ii)** भविष्य निधि में ₹ 2,000 की बढ़ोतरी करनी हैं। **(iii)** डूबत ऋण प्रावधान ₹ 3,000 तक बनाये रखना हैं। **(iv)** प्रियंका नकद में ₹ 5,000 का आहरण करती हैं।(v) फर्नीचर का मूल्य ₹ 25,000 तक घटाया जाये एवं रहतिये का मूल्यांकन ₹ 30,000 पर किया गया हैं।(vi) मजदूरी के बकाया ₹ 5,000 को पुस्तकों में दिखाया जाय। **(vii)** प्राप्य बिलों पर 5% की दर से डूबत ऋण के लिए प्रावधान किया जाये। **(viii)** एक पुराना ग्राहक सनी से जिसका खाते को अपलिखित कर दिया था, अब उसने अपने समस्त दावों के भुगतान में ₹ 800 देना तय किया हैं। **(ix)** एकस्व का मूल्य वर्तमान में शून्य हैं। सम्पतियों, दायित्वों और संचयों के पुस्तक मूल्यों में परिवर्तन नहीं करना हैं। पूँजी खाते तथा नया चिट्ठा भी बनाइये।

They agreed to change their profit sharing ratio as 5 : 6 : 5 from 1st April,2017. For this purpose it is decided that: (i) Goodwill of the firm has been valued at three times of the average super profits of last four years. Average profits of the last four years are₹ 40,000 while the normal profits that can be earned with the capital employed are ₹ 24,000. (ii)Provident Fund to be raised by ₹ 2,000. (iii)The provision for doubtful

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

debts was to be maintained upto ₹ 3,000 (iv) Priyanka is to withdrew ₹ 5,000 in cash. (v) The value of furniture is to be decreased upto ₹ 25,000 and stock is to be revalued at as ₹ 30,000 (vi) Outstanding wages ₹ 5,000 are to be shown in books (vii) A provision for bad debts on Bills Receivable be made 5% (viii) Sanni,an old customer whose account was written off as bad has promised to pay ₹ 800 in the settlement of his full claim. (ix) The present value of patent is NIL. The book values of the Assets, Liabilities and Reserves are not be altered. Prepare Capital Accounts and new Balance Sheet.

हल:

Dr. Partner's Capital A/c Cr.

Particulars	Lara (₹)	Priyanka (₹)	Vashu (₹)	Particulars	Lara (₹)	Priyanka (₹)	Vashu (₹)
To Lara	-	1,900	3,800	By Balance b/d	40,000	32000	28,000
To Cash	-	5,000	-	By Priyanka	1,900	-	-
To Balance c/d	45,700	25,100	24,200	By Vasu	3,800	-	-
	45,700	**32,000**	**28,000**		**45,700**	**32,000**	**28,000**

Balance sheet as on 1st April 2017

Liabilities	Amount(₹)	Assets	Amount(₹)
Creditors	40,000	Cash at Bank (10,000 – 5,000)	5,000
P.B.D	4,000	Investments	15,000
Bank Loan	14,000	Stock	40,000
Provident fund	18,000	Bills Receivable	8,000
General Reserve	16,000	Debtors	40,000
Partner's Loan		Furniture	28,000
Lara	16,000	Patent	15,000
Priyanka	12,000	Prepaid Insurance	2,000
Capital A/c		Plant & Machine	62,000
Lara 45,700			
Priyanka 25,100			
Vashu 24,200	95,000		
	2,15,000		**2,15,000**

कार्यशील टिप्पणियाँ

(1) त्याग/लाभ प्राप्ति अनुपात = पुराना लाभ विभाजन अनुपात – नया लाभ विभाजन अनुपात

लारा $= \frac{8}{16} - \frac{5}{16} = \frac{3}{16}$ प्रियंका $= \frac{5}{16} - \frac{6}{16} = -\frac{1}{16}$ वसू $= \frac{3}{16} - \frac{5}{16} = -\frac{2}{16}$

(2) ख्याति की गणना :

अधिलाभ = औसत लाभ – सामान्य लाभ =40,000 – 24,000= ₹16,000

ख्याति = अधिलाभ ×3 =16,000×3= ₹48,000

(3) पुनर्मूल्यांकन का शुद्व लाभ – हानि

हानि की मदें:	₹
फर्नीचर के मूल्य में कमी	3,000
स्टोक के मूल्य में कमी	10,000
बकाया मजदूरी	5,000
बिलों पर प्रावधान (8,000×5%)	400
एकस्व के मूल्य में कमी	15,000
भविष्य निधि में वृद्वि	2,000
	35,400

लाभ की मदे:	₹
डूबत ऋण के प्रावधान में कमी	1,000
देनदारों में वृद्वि	800
	1,800

35400 – 1800 = ₹33,600 पुर्नमूल्यांकन में शुद्व हानि

समायोजन से शुद्व लाभ = ख्याति व सामान्य संचय की राशि–पुनर्मूल्यांकन की शुद्व हानि =

48,000 + 16,000 – 33,600 = ₹30,400

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Priyanka's Capital A/c	Dr.	1,900	
Vashu's Capital A/c	Dr.	3,800	
To Lara Capital A/c			5,700

लारा $= 30,400 \times \frac{3}{16}$ =₹ 5,700 : प्रियंका= $30,400 \times \frac{1}{16}$ =₹ 1,900 :वसू $= 30,400 \times \frac{2}{16}$ =₹ 3,800

उदाहरण 15 : 31–3–2017 को धोनी व धवन का चिट्ठा निम्नवत हैं। Dhoni and Dhavan are partners. Their Balance Sheet as on 31-03-2017 was as follows:

Dr. Balance Sheet as on 3 March, 2017 Cr.

Liabilities	Amount (₹)	Assets		Amount (₹)
Creditors	20,000	Cash at Bank		9,500
Workmen Compensation Reserve	8,000	Debtors	20,000	
Investment fluctuation Reserve	3,000	(-) Provision	500	19,500
Bills Payable	3,000	Stock		6,000
Outstanding expenses	1,000	Investments		10,000
Employee's Provident fund	5,000	Land & Building		30,000
General Reserve	10,000	Plant & Machine		36,000
Capital		Furniture		10,000
Dhoni 40,000		Trade Mark		3,000
Dhavan 50,000	90,000	Patent		5,000
		Goodwill		5,000
		P & L (Dr.)		4,000
		Advertisement Expenses		2,000
	1,40,000			**1,40,000**

1–4–2017 को विराट को प्रवेश देते है व उनका नया लाभ विभाजन अनुपात बराबर–बराबर होगा। (i) विराट पूँजी के लिए ₹ 60,000 व ख्याति (प्रीमियम) के लिए ₹ 8,000 लेकर आता हैं। ख्याति की आधी राशि साझेदार निकाल लेते हैं। (ii) उपार्जित आय ₹ 500 जो पुस्तकों में नहीं दिखायी गयी है, उसे दिखाया जायेगा। (iii) विनियोगों का बाजार मूल्य ₹ 9,000 हैं। (iv) एक देनदार जिसमें ₹ 500 बकाया थे, डूबत ऋण के रूप में अपलिखित कर दिये। उसने पूर्ण भुगतान ₹ 400 दिये। (v) भूमि–भवन के मूल्य में 25% से वृद्धि करें। (vi) प्लॉट–मशीन 10% से कम मूल्यांकित हुई हैं। (vii) उपस्कर (फर्नीचर) 10% से ह्रासित किया जाये। (viii) व्यापारिक चिन्ह का मूल्यांकन ₹ 2,500 पर किया गया हैं। (ix) एकस्व का मूल्य ₹ 3,000 तक कम करना हैं। (x) कर्मचारी क्षतिपूर्ति संचय के विरुद्ध ₹ 3,000 का दायित्व निश्चित किया गया हैं। (xi) पूर्वदत्त बीमा व्यय ₹ 1,000। (xii) मरम्मत का बकाया बिल ₹ 1,000 (xiii) ₹ 4,000 पर मूल्यांकित एक पुराना कम्प्यूटर हैं। जो पुस्तकों में प्रदर्शित नहीं हैं। इसका अब लेखा किया जाता हैं। (xiv) देनदारों पर संदिग्ध ऋणों के लिए 5% आयोजन व देनदारों पर बट्टे के लिए आयोजन 2% बनाये। (xv) लेनदारों पर बट्टे के लिए आयोजन 2% (xvi) स्कंध 20% से अधिमूल्यांकित हैं। (xvii) विराट की पूँजी के आधार पर साझेदारों के पूँजी खाते समायोजित करने हैं। पुनर्मूल्यांकन खाता, साझेदारों के पूँजी खाते व नयी फर्म का चिट्ठा तैयार कीजिए।

They decided to admitVirat on April 1st 2017. New Profit Sharing Ratio will be equal: (i) Virat shall bring ₹ 60,000 as his Capital and ₹ 8,000 share of premium. & half of the goodwill is withdrawn by the partner (ii) That unaccounted accrued income of ₹ 500 be provided for. (iii) The market value of investments was ₹9,000. (iv) A debtor whose dues of ₹ 500 was written off as bad debts, paid ₹400 in full settlement. (v) Land & Building Appreciate by 25%. (vi) Plant & Machinery undervalued by 10%. (vii) Furniture is depreciated by 10%. (viii) Trademark valued at ₹2,500. (ix) Patent reduced to ₹ 3,000. (x) Liability against Workmen Compensation Reserve is ₹ 3,000 (xi) Prepaid Insurance ₹1,000. (xii) Outstanding Bills for Repair ₹1,000. (xiii) There is an old computer valued at ₹4,000. It does not appear in the books. It is now to be recorded. (xiv) Create Provision for Bad Debt 5% & Provision For Discount on Debtors 2%. (xv) Create Reserve for discount on creditors @ 5%. (xvi) Stock is overvalued by 20%. (xvii) Capital of the partners shall be adjusted on the basis of Virat's Capital. Prepare Revaluation A/c, Partners' Capital A/c's and the Balance Sheet of the new firm.

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

हल:

Dr. Revaluation A/c Cr.

Particulars	Amount(₹)	Particulars	Amount(₹)
To Furniture A/c	1000	By Accrued Income	500
To Trade mark A/c	500	By Bad debts Recovered	400
To Patent A/c	2000	By Land & Building A/c	7500
To Outstanding Repairs Bill	1000	By Plant & Machine A/c	4000
To P.B.D. A/c	500	By Prepaid Insurance A/c	1000
To P.D.D A/c	380	By Computer A/c	4000
To Stock A/C	1000	By Reserve for discount on creditors A/c	1000
To Profit Transfer to			
Dhoni's Capital 6010			
Dhavan's Capital 6010	12020		
	18400		**18400**

Dr. Partner's Capital A/c Cr.

Particulars	Dhoni (₹)	Dhavan (₹)	Virat (₹)	Particulars	Dhoni (₹)	Dhavan (₹)	Virat (₹)
To Cash	2000	2000	-	By Balance b/d	40000	50000	-
To Goodwill	2500	2500	-	By Cash A/c	-	-	60000
To P&L	2000	2000	-	By Goodwill A/c	4000	4000	-
To Adv. Exp.	1000	1000	-	By Worksmen Componsation ReserveA/c	2500	2500	-
To Cash A/c (Balancing figure)		1010	-	By Investment Fluctuation Reserve A/c	1000	1000	-
To Balance c/d	60000	60000	60000	By General Reserve	5000	5000	-
				By Revaluation A/c	6010	6010	-
				By Cash A/c (Balancing figure)	8990	-	-
	67500	**68510**	**60000**		**67500**	**68510**	**60000**

Balance sheet as on 1st April, 2017

Liabilities		Amount(₹)	Assets		Amount(₹)
Creditors	20000		Cash at Bank		9500
Less Provision	1000	19000	Cash in hand		72380
Liability for workmencompensation		3000	Debtors	20000	
Bills payable		3000	Less P.B.D.	1000	
Outstanding expenses		1000	Less P.D.D.	380	18620
Outstanding Repair bills		1000	Stock		5000
Employee's Provident Fund		5000	Investments		9000
Capital A/c			Land & Building		37500
Dhoni	60000		Plant & Machine		40000
Dhavan	60000		Furniture		9000
Virat	60000	180000	Trade Mark		2500
			Patent		3000
			Prepaid Insurance		1000
			Accrued Income		500
			Computer		4000
		212000			**212000**

कार्यशील टिप्पणियां

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

1. यदि प्रश्न में केवल नये साझेदार के लाभ का हिस्सा दिया गया है तो पुराने साझेदारों का पुराना अनुपात व त्याग अनुपात समान होगा
2. कर्मचारी क्षतिपूर्ति संचय की राशि में से सम्बन्धित दायित्व को घटाकर शेष राशि पुराने साझेदारों में पुराने लाभ विभाजन अनुपात में बांटी गयी है ।
3. निवेश उतार चढाव संचय के शेष में से विनियोग के बाजार मूल्य में हुयी कमी को घटाकर शेष राशि को पुराने साझेदारों में पुराने लाभ विभाजन अनुपात में बांटा गया है ।
4. लाभ हानि खाते के डेबिट शेष, विज्ञापन व्ययों व ख्याति की राशि को पुराने लाभ विभाजन अनुपात में अपलिखित किया है।
5. Provision For Bad debts 20000 x 5% = ₹ 1000 ;
   Provision for Discount on Debtors 20000-1000 = 19000 ; 19000 x 2% = ₹ 380
6. Stock $\frac{6000X20}{120}$ = ₹1000
7. Plant & Machine 36000 x $\frac{10}{90}$ = ₹ 4000
8. फर्म की कुल पूँजी विराट की पूँजी के आधार पर $\frac{60000 X 1}{3}$ =₹1,80,000 अतः प्रत्येक साझेदार की पूँजी नये अनुपात में ₹60,000 होगी
9. Cash in hand : 60000+8000 – 4000+400+8990-1010 = ₹72,380

सारांश (Summary)

साझेदारी का पुनर्गठन : साझेदारों के सम्बन्धों में होने वाले किसी भी परिवर्तन से साझेदारी फर्म का पुनर्गठन होता हैं। जैसे साझेदारों के मध्य लाभ विभाजन अनुपात में परिवर्तन, नये साझेदार का प्रवेश, किसी साझेदार के अवकाश ग्रहण या मृत्यु आदि।

नये साझेदार का प्रवेश : नये साझेदार के प्रवेश से अभिप्राय है, फर्म के साझेदारों की संख्या में वृद्धि होना। नये साझेदार को सम्पत्तियों में हिस्सा व लाभों में हिस्सा प्राप्त होता हैं।

नया लाभ विभाजन अनुपात : नये साझेदार सहित सभी साझेदारों में फर्म के लाभों का जिस अनुपात में बंटवारा होता उसे नया लाभ विभाजन अनुपात कहते हैं।

त्याग का अनुपात : पुराने साझेदार जिस अनुपात में अपने लाभ के हिस्से को नये साझेदार को देते है उसे त्याग अनुपात कहते हैं। त्याग अनुपात= पुराना लाभ विभाजन अनुपात –नया लाभ विभाजन अनुपात

ख्याति : व्यवसाय की प्रतिष्ठा का मौद्रिक मूल्यांकन ख्याति कहलाता हैं।

ख्याति के मूल्यांकन की विधियां 1. औसत लाभ विधि 2. अधि लाभ विधि 3. पूँजीकरण विधि आदि

भारतीय लेखांकन मानक 10/24/38 के अनुसार ख्याति को पुस्तकों में तब ही लिखा जाता है जब इसको क्रय करने हेतु मुद्रा में अथवा मुद्रा के समकक्ष कोई प्रतिफल दिया गया हैं।

सम्पत्तियों का पुनर्मूल्यांकन व दायित्वों का पुनर्निधारण : नये साझेदार के प्रवेश पर सम्पत्तियों का पुनर्मूल्यांकन व दायित्वों का पुनर्निधारण किया जाता है इस हेतु पुनर्मूल्यांकन खाता बनया जाता है और पुनर्मूल्यांकन का लाभ पुराने साझेदारों में पुराने लाभ विभाजन अनुपात में बाँटा जाता हैं। यदि पुनर्मूल्यांकन करते समय सम्पत्तियों दायित्वों के मूल्य को परिवर्तित नहीं करना हो तो स्मरणार्थ पुनर्मूल्यांकन खाता बनाया जाता हैं।

यदि फर्म के चिट्ठे में कोई अवितरित लाभ हानि या संचय दे रखे है तो उसे पुराने साझेदारों में पुराने लाभ विभाजन अनुपात में बांट देना चाहिये।

पूंजी खातों में समायोजन– प्रायः नये साझेदार के प्रवेश करने पर फर्म की कुल पूँजी का समायोजन किया जाता है इस के लियेः

1. पुराने साझेदारों के पूँजी शेषों को नये साझेदार की पूँजी के आधार पर समायोजित किया जाता है या फिर।
2. पुराने साझेदारों के पूँजी शेषों के आधार पर नये साझेदार की पूँजीकी राशि निर्धारित की जाती हैं।

शब्दावली (Glossary)

साझेदारी का पुनर्गठन	Reconstitution of Partnership	जब साझेदारी फर्म की विद्यमानता को प्रभावित किए बिना साझेदारों के सम्बन्धों में परिवर्तन हो जाए तो इसे साझेदारी का पुनर्गठन कहा जाता हैं।
साझेदार का प्रवेश	Admission of A Partner	साझेदारी के व्यवसाय में नये सदस्य का स्वामी के रूप में प्रवेश साझेदार का प्रवेश कहलाता हैं।
नया लाभ विभाजन अनुपात	New Profit Sharing Ratio	नये साझेदार सहित सभी साझेदार जिस अनुपात में फर्म के भावी लाभों को आपस में बांटते है, उसे नया लाभ विभाजन अनुपात कहते हैं।
त्याग का अनुपात	Sacrificing Ratio	नये साझेदार के प्रवेश पर पुराने साझेदारों के लाभ के भाग में जिस अनुपात में कमी होती है, उसे त्याग का अनुपात कहते हैं।

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

ख्याति	Goodwill	व्यवसाय की प्रतिष्ठा का मौद्रिक मूल्यांकन ख्याति कहलाता हैं।
क्रय की गई ख्याति	Purchased Goodwill	ऐसी ख्याति जिसे क्रय करने के लिए फर्म मूल्य देती हैं।
स्वयं सृजित ख्याति	Self-Generated Goodwill	यह ऐसी ख्याति है जो फर्म द्वारा अपने व्यापार तथा सेवाओं से उत्पन्न होती हैं। प्रतिफल नहीं दिया जाता हैं।
औसत लाभ	Average Profit	पिछले कुछ वर्षों के लाभों का औसत
अधि लाभ	Super Profit	सामान्य लाभ पर वास्तविक लाभ का आधिक्य
पूँजीकरण विधि	Capitalisation Method	व्यवसाय द्वारा अर्जित लाभों का पूँजीकरण कर के ख्याति का मूल्य ज्ञात किया जात हैं।
पुनर्मूल्यांकन खाता	RevaluationAccount	यह खाता सम्पत्तियों के पुनर्मूल्यांकन व दायित्वों के पुनर्निधारण के प्रभाव को दिखाता हैं।
संचय	Reserve	अवितरित या संचित लाभ
कर्मचारी क्षति पूर्ति संचय	Workmen Compensation Reserve	वह संचय जो कर्मचारियों की क्षतिपूर्ति हेतु प्रयोग किया जायेगा।
निवेश उतार–चढ़ाव संचय	Investments Fluctuation Reserve	यह संचय निवेश के मूल्य में होने वाले उतार चढाव के समायोजन के लिए लाभो से सृजित किया जाता हैं।

अभ्यासार्थ प्रश्न (Questions for Exercise)

बहुचयनात्मक प्रश्न (Multiple Choice Questions)

1. अधिलाभ है

अ. सामान्य लाभ – औसत लाभ ब. औसत लाभ – सामान्य लाभ

स सामान्य लाभ + औसत लाभ द. इनमें से कोई नहीं

Super Profit is :

a. normal Profit- Average Profit b. Average Profit- Normal Profit

c. Normal Profit +Average Profit d. none of these

2. अ व ब बराबर के साझेदार है जिनकी पूँजी क्रमशः ₹16000 व ₹12000 है, स 1/4 हिस्से के लिए प्रवेश करता है व ₹15000 पूँजी के लाता हैं। तो फर्म की ख्याति का मूल्य होगा।

अ. ₹60000 ब. ₹112000 स. ₹17000 द. ₹43000

A and b are equal partners with the capital of ₹ 16000 and ₹ 12000. C a new partner comes in for ¼ share and brings capital ₹ 15000. Find the value of the firm's Goodwill?

a. ₹60,000 b. ₹11200 c. ₹17000 d. ₹ 43000

3. कुल सम्पत्तियां ₹70,000, दायित्व ₹10,000, औसत लाभ ₹8000 सामान्य प्रत्याय दर 10 प्रतिशत अधिलाभ की राशि होगी।

अ. ₹1000 ब. ₹2000 स. ₹3000 द. ₹4000

Total Assets and Liabilities of the firm are ₹ 70000 and ₹10000. Average Profit is ₹8000. NRR 10%. Calculate Super profit?

a. ₹1000 b. ₹2000 c. ₹3000 d. ₹4000

4. लाभों में हिस्सा बंटाने के लिए नया साझेदार ..... लाता हैं।

अ) पूँजी ब) ऋण स) ख्याति द) इनमें से कोई नहीं

For getting share in profits, a new partners brings:

a. Capital b. Loan c. Goodwill d. None of these

5. फर्म की सम्पत्तियों में हिस्सा पाने के लिए नया साझेदार ..... चुकाता हैं।

अ) पूँजी ब) ऋण स) ख्याति द) अनुदान

For getting share in Assets of firm, a new partner brings:

a. Capital b. Loan c. Goodwill d. Subsidy

6. पुनर्मूल्यांकन खाते की प्रकृति

(अ) व्यक्तिगत खाता (ब) नाममात्र का खाता (स) वास्तविक खाता (द) इनमें से कोई नहीं

Nature of revaluation account is:

a. Personal account b. Nominal account c. Real Account d. None of these

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

7. नये साझेदार के प्रवेश पर जब सम्पत्तियों व दायित्वों का मूल्य बदलना चाहते है, तो बनाये जाने वाला खाता होता हैं।

अ. पुनमूर्ल्यांकन खाता — ब. वसूली खाता

स. स्मरणार्थ पुनर्मूल्यांकन खाता — द. इनमें से कोई नहीं

When the partners decide to change the value of Assets and Liabilities, then which a/c prepared is:

a. Revaluation a/c — b. Realisation A/c

c. Memorandum revaluation — d. None of these.

8. सभी अवितरित हानियों को पुराने साझेदारों के पूँजी खातों में किस अनुपात में हस्तांतरित किया जाता है –

अ. नये लाभ विभाजन अनुपात में — ब. फायदे के अनुपात में

स. पुराने लाभ विभाजन अनुपात — द. त्याग अनुपात में

All undistributed losses are transferred to capital account of the old partners in the ratio of:

a. New Profit Sharing Ratio — b. Gaining ratio

c. old Profit Sharing Ratio — d. Sacrificing ratio

9. ख्याति का स्वभाव होता हैं।

अ. बिल्ली के स्वभाव वाली — ब. कुत्ते के स्वभाव वाली

स. चूहे के स्वभाव वाली — द. उपर्युक्त सभी

Nature of goodwill is:

a. Cat Goodwill b. Dog Goodwill c. Rat Goodwill d. All of them

10. A व Bएक फर्म में 2 : 1 के अनुपात में साझेदार हैं। वे C को 1/3 हिस्से के लिए प्रवेश देते है तो उनका त्याग अनुपात होगा।

अ. 2 : 3 ब. 1 : 2 स. 2 : 1 द. 1 : 1

A and B are partners sharing profit in ratio of 2:1. They admit C for 1/3 share in profits, then sacrificing ratio of A and B is:

a. 2:3 b. 1:2 c. 2:1 d. 1:1

अतिलघूत्तरात्मक प्रश्न (Very Short Answer type Questions)

1. फर्म में नये साझेदार द्वारा ख्याति की रकम नकद लाने पर पुराने साझेदारों में किस अनुपात में बांटी जाती है?
In which ratio amount of goodwill is divided among the old partners when new partner brings cash for goodwill?

2. अधि–लाभ और औसत लाभ में एक अन्तर लिखें।
Write one difference between Super Profit and Average Profit.

3. साझेदारी फर्म के पुनर्गठन से क्या अभिप्राय है?
What is meant by reconstitution of Partnership?

4. पुनर्मूल्यांकन खाते की प्रकृति क्या है?
What is the nature of Revaluation Account?

5. एक फर्म में A व B साझेदार है जो 3 : 2 के अनुपात में लाभ विभाजन करते हैं। C लाभों में 20% हिस्से के लिए प्रवेश करता है तो नया लाभ विभाजन अनुपात व त्याग अनुपात क्या होगा?
A and B are partners in a firm, sharing profits in the ratio of 3 : 2. C is admitted for 20% share in profits of the firm. Calculate New Profit Sharing Ratio & Sacrificing Ratio. **Ans:** NPSR 12 : 8 : 5 SR 3 : 2

6. A, B व C एक फर्म में साझेदार है जो 5 : 3 : 2 के अनुपात में लाभ विभाजन करते हैं।D लाभ में $\frac{1}{5}$हिस्से के लिए प्रवेश करता हैं। नया लाभ विभाजन अनुपात व त्याग अनुपात ज्ञात करो।
A,B & C are partners in a firm, sharing profits in the ratio of 5:3:2. D is admitted for 1/5th share in profits of the firm.Calculate New Profit Sharing Ratio & Sacrificing Ratio.
Ans: NPSR 10:6:4:5 SR 5:3:2

7. A, B व C एक फर्म में साझेदार है, जिनका लाभ विभाजन अनुपात $\frac{3}{6}:\frac{2}{6}:\frac{1}{6}$ हैं। D लाभ में $\frac{1}{6}$ हिस्से के लिए प्रवेश करता हैं। नया लाभ विभाजन अनुपात व त्याग अनुपात ज्ञात करो।
A, B & C are partners in a firm, sharing profits in the ratio of 3/6 : 2/6 : 1/6 . D is admitted for 1/6th share in profits of the firm. Calculate New Profit Sharing Ratio & Sacrificing Ratio.

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Ans: NPSR 15 : 10 : 5 : 6 SR 3 : 2 : 1

8. A व B एक फर्म में साझेदार हैं। C को लाभ में $\frac{1}{4}$ हिस्से के लिए प्रवेश देते हैं। नया लाभ विभाजन अनुपात व त्याग अनुपात ज्ञात करो।
A and B are partners in a firm, sharing profits of the firm. C is admitted for 1/4th share in profits of the firm. Calculate New Profit Sharing Ratio & Sacrificing ratio.
Ans: NPSR 3 : 3 : 2 SR 1 : 1

9. A व B एक फर्म में साझेदार है जो 2 : 1 के अनुपात में लाभ विभाजन करते हैं।C को लाभों में $\frac{1}{4}$ हिस्से के लिए प्रवेश देते हैं। C के प्रवेश के बाद D को लाभों में 10% हिस्से के लिए प्रवेश देते हैं।D के प्रवेश के बाद नया लाभ विभाजन अनुपात ज्ञात करो?
A and B are partners in a firm, sharing profits in the ratio of 2 : 1. C is admitted for 1/4th share in profits of the firm. After admission of C, D is admitted for 10% share in profits of the firm. Find New Profit Sharing Ratio after admission of D.
Ans: NPSR 18 : 9 : 9:4

10. A व B एक फर्म में साझेदार है जो 3 : 2 के अनुपात में लाभ विभाजन करते हैं। C लाभों में $\frac{1}{5}$ हिस्से के लिए प्रवेश करता हैं। C को A व B से बराबर भाग प्राप्त होता हैं। नया लाभ विभाजन अनुपात व त्याग अनुपात ज्ञात करो।
A and B are partners in a firm, sharing profits in the ratio of 3 : 2. C is admitted for 1/5th share in profits of the firm which he acquired in equal proportions from both A & B. Calculate New Profit Sharing Ratio And Sacrificing Ratio.
Ans: NPSR 5 : 3 : 2 SR 1 : 1

11. A, B व C एक फर्म में साझेदार है जो 3 : 2 : 1 के अनुपात में लाभ विभाजन करते हैं। D लाभ में $\frac{1}{6}$ भाग के लिए प्रवेश करता हैं। वह अपना हिस्सा A, B व C से बराबर–बराबर प्राप्त करता हैं। नया लाभ विभाजन अनुपात ज्ञात करो।
A, B & C are partners in a firm, sharing profits in the ratio of 3 : 2 : 1 . D is admitted for 1/6th share in profits of the firm which he acquired in equal proportions from A,B & C. Calculate New Profit Sharing Ratio. **Ans:** NPSR 8 : 5 : 2 : 3

12. A व B 3 : 2 के अनुपात में लाभ विभाजन करते हुए साझेदार हैं। C लाभ में $\frac{1}{4}$ हिस्से के लिए प्रवेश करता हैं। C अपना हिस्सा A व B से 2 : 1 के अनुपात में प्राप्त करता हैं। नया लाभ विभाजन अनुपात ज्ञात करो।
A and B are partners in a firm, sharing profits in the ratio of 3 : 2. C is admitted for 1/4th share in profits of the firm which he acquired from A & B in the ratio of 2:1. Calculate New Profit Sharing Ratio. **Ans :** NPSR 26 : 19 : 15

13. A व B एक फर्म में साझेदार है जो 3 : 2 के अनुपात में लाभ विभाजन करते हैं। वे C को लाभ में $\frac{1}{5}$हिस्से के लिए प्रवेश देते हैं। C अपना पूरा हिस्सा B से प्राप्त करता हैं। नया लाभ विभाजन अनुपात ज्ञात करो।
A and B are partners in a firm, sharing profits in the ratio of 3 : 2. C is admitted for 1/5th share in profits of the firm which he acquired entirely from B. Calculate New Profit Sharing Ratio.
Ans: NPSR 3 : 1 : 1

14. A व B एक फर्म में साझेदार है जो 7 : 5 के अनुपात में लाभ विभाजन करते हैं।C को लाभ में $\frac{1}{6}$हिस्से के लिए प्रवेश देते हैं। C$\frac{1}{24}$ हिस्सा A से व $\frac{1}{8}$ हिस्सा B से प्राप्त करता हैं। नया लाभ विभाजन अनुपात व त्याग अनुपात ज्ञात करो।
A and B are partners in a firm, sharing profits in the ratio of 7 : 5. C is admitted for 1/6th share in profits of the firm. C acquires 1/24 from A and 1/8 from B. Calculate New Profit Sharing Ratio & Sacrificing Ratio. **Ans:** NPSR 13 : 7 : 4 SR 1 : 3

15. A व B एक फर्म में साझेदार है जो 3 : 1 के अनुपात में लाभ विभाजन करते हैं।C को प्रवेश देते हैं। अपने हिस्से का $\frac{2}{3}$व B अपने हिस्से का $\frac{1}{3}$ C के पक्ष में समर्पण करते हैं। नया लाभ विभाजन अनुपात व त्याग अनुपात ज्ञात करो।

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

A and B are partners in a firm, sharing profits in the ratio of 3 : 1. A new partner C is admitted A surrenders 2/3 of his share & B surrenders 1/3 of his share in favour of C. Calculate New Profit Sharing Ratio & Sacrificing Ratio. **Ans:** NPSR 3 : 2 : 7 SR 6 : 1

16. A व B एक फर्म में साझेदार है जो 2 : 1 के अनुपात में लाभ विभाजन करते हैं।C को प्रवेश देते हैं।अपने हिस्से में से $\frac{1}{3}$भाग व B अपने हिस्से का $\frac{1}{3}$ C के पक्ष में त्याग करते हैं। नया लाभ विभाजन अनुपात व त्याग अनुपात ज्ञात करो।

A and B are partners in a firm, sharing profits in the ratio of 2 : 1. A new partner C is admitted. A surrenders 1/3 from his share & B surrenders 1/3 of his share in favour of C. Calculate New Profit Sharing Ratio & Sacrificing Ratio. **Ans:** NPSR 3 : 2 : 4 SR 3 : 1

17. A, B व C एक फर्म में साझेदार है जो 5 : 3 : 2 के अनुपात में लाभ विभाजन करते हैं।D को लाभों में $\frac{2}{10}$हिस्से के लिए प्रवेश देते हैं। C का हिस्सा पूर्ववत रहेगा। नया लाभ विभाजन अनुपात ज्ञात करो।

A, B & C are partners in a firm, sharing profits in the ratio of 5 : 3 : 2 . D is admitted for 2/10 share in profits of the firm. C will retain his original share. Calculate New Profit Sharing Ratio.

Ans: NPSR 15 : 9 : 8 : 8

18. A व B एक फर्म में साझेदार हैं। वे C व D को लाभ में क्रमशः $\frac{1}{5}$ व $\frac{1}{6}$ हिस्सा देकर प्रवेश देते हैं। नया लाभ विभाजन अनुपात ज्ञात करो।

A and B are partners in a firm, sharing profits. They admitted C & D for 1/5th and 1/6th shares in profits respectively. Calculate New Profit Sharing Ratio. **Ans:** NPSR 19 : 19 : 12 : 10

19. A, B व C एक फर्म में साझेदार है जो 3 : 2 : 1 के अनुपात में लाभ विभाजन करते हैं।D को प्रवेश देते है, D अपने हिस्से का $\frac{1}{4}$ भाग Cसे प्राप्त करता है A अपने हिस्से का $\frac{3}{10}$ भाग व B अपने हिस्से का $\frac{1}{10}$ भाग D के पक्ष में त्याग करते हैं। नया लाभ विभाजन अनुपात व त्याग अनुपात ज्ञात करो।

A, B & C are partners in a firm, sharing profits in the ratio of 3 : 2 : 1 . D is admitted as a new partner. D acquires ¼ of his share from C and A surrenders 3/10 of his share and B surrenders 1/10 of his share. Calculate New Profit Sharing Ratio & Sacrificing Ratio.

Ans: NPSR 63:54:19:44 SR 27 : 6 : 11

लघूत्तरात्मक प्रश्न (Short Ans:wer type Questions)

1. एक नये प्रवेशित साझेदार द्वारा प्राप्त अधिकारों का उल्लेख कीजिए।

State the rights acquired by a newly admitted partner.

2. लाभ–हानि समायोजन खाता या पुनर्मुल्यांकन खाता क्यों बनाया जाता है?

Why Profit and Loss Adjustment account or Revaluation Account is prepared?

3. ख्याति के मूल्य की गणना गत पांच वर्षों के औसत लाभ के 3 वर्षों के क्रय के आधार पर की जाती हैं। लाभ इस प्रकार से है–₹30,000, ₹25,000, ₹40,000, ₹35,000, ₹20,000 फर्म की ख्याति की गणना कीजिए ।

Goodwill of the firm is valued at three year's purchase of average profits of last five years. The firm earned the following profits during last five years : ₹30,000, ₹ 25,000, ₹ 40,000, ₹ 35,000, ₹ 20,000. Calculate the value of goodwill of the firm. Ans: ₹90,000

4. एक फर्म की ख्याति गत चार वर्षों के औसत लाभ के दो वर्षीय क्रय के आधार पर की जाती हैं।

वर्ष	2013	2014	2015	2016
लाभ/हानि	₹10,000	₹16,000	₹(6,000)हानि	₹12,000

फर्म की ख्याति की गणना कीजिए ।

Goodwill of the firm is valued at two year's purchase of average profits of last four years. The firm earned the following profits during last four years : 2013 - ₹10,000, 2014 ₹ 16,000, 2015 - ₹ 6,000 (Loss), 2016 – ₹ 12,000. Calculate the value of goodwill of the firm. **Ans:** ₹16,000

5. एक फर्म के पिछले 4 वर्षों के लाभ–हानि निम्न थे।

2013	₹ 20,000	(सट्टे के लाभ ₹ 4,000 शामिल)
2014	₹–(2,000)	(असामान्य हानि चार्ज की गयी ₹16,000)
2015	₹ 17,000	(अंतिम स्टॉक का मूल्यांकन ₹2,000 से अधिक किया गया)

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

2016 ₹ 19,000 (मशीन विक्रय के लाभ ₹2,000 शामिल)

औसत लाभों के तीन गुने के आधार पर ख्याति की गणना करें।

Profits of the firm for last Four years-

2013 – ₹20,000 (including ₹ 4,000 speculative profits)

2014 – Loss ₹ 2,000 (after charging an abnormal loss of ₹ 16,000)

2015 - ₹17,000 (closing stock overvalued by ₹ 2,000).

2016 – ₹19,000 (including profit on sale of machine ₹. 2,000)

Goodwill of the firm is valued Three times of average profits of last Four years. **Ans:** ₹48,000

6. एक फर्म के गत पांच वर्षों के लाभ इस प्रकार हैं।

वर्ष	2012	2013	2014	2015	2016
लाभ(₹)	10,000	12,000	15,000	19,000	29,000
भार	1	2	3	4	5

ख्याति का मूल्य भारित औसत लाभ के 3 वर्षों के क्रय के आधार पर कीजिये।

Profits of the firm for last five years:

Year	2012	2013	2014	2015	2016
Profits(in ₹)	10,000	12,000	15,000	19,000	29,000
Weight	1	2	3	4	5

Calculate value of goodwill on the basis of three years purchase of weighted average profits.

Ans: ₹60,000

7. एक फर्म की पूँजी ₹2,00,000 है व औसत लाभ ₹30,000 सामान्य प्रत्याय दर 10%हैं। ख्याति का मूल्य अधिलाभों के तीन वर्षों के क्रय के आधार पर ज्ञात कीजिये।

Capital of the firm is ₹ 2,00,000. Normal Rate of Return is 10% and average profit of the firm is ₹ 30,000. Goodwill is to be valued at three years purchase of super profits. **Ans:** ₹30,000

8. एक फर्म की पूँजी ₹1,80,000 है व औसत लाभ ₹ 24,000 हैं। सामान्य प्रत्याय दर 12% मानते हुए पूँजीकरण विधि से ख्याति का मूल्य ज्ञात कीजिये।

Capital of the firm is ₹ 1,80,000. Normal Rate of Return is 12% and average profit of the firm is ₹24,000. Calculate value of goodwill by capitalisation method. **Ans:** ₹ 20,000

9. A व B एक फर्म में साझेदार हैं। फर्म की विनियोजित पूँजी ₹ 5,00,000 है और सामान्य प्रत्याय की दर 10% वार्षिक हैं। प्रत्येक साझेदार का वार्षिक वेतन ₹8,000 हैं। औसत लाभ ₹80,000 हैं। अधिलाभों के पूँजीकरण के आधार पर ख्याति की गणना करो।

A & B are partners in a firm. Capital employed of the firm is ₹ 5,00,000. Normal Rate of Return is 10% and average profit of the firm is ₹ 80,000. Salary of each partner is ₹ 8,000 pa. Calculate value of goodwill according to capitalisation of super profit method. **Ans:** ₹1,40,000

10. X व Y की समायोजित पूँजी क्रमशः₹30,000 व ₹ 25,000 हैं। Z के लाभों में $\frac{1}{4}$ हिस्से के लिए ₹ 25,000 पूँजी लाता हैं। ख्याति की गणना कीजिये।

Adjusted capital of X and Y is ₹ 30,000 and ₹ 25,000 respectively. Z bring in ₹ 25,000 as capital for ¼ share of profits in the firm. Calculate value of goodwill. Ans: ₹ 20,000

11. 31–12–16 को समाप्त होने वाले वर्ष के चिट्ठे में A व B की पूँजी क्रमशः ₹ 40,000 व ₹ 30,000 है तथा सामान्य संचय में ₹ 20,000 का शेष हैं। C को लाभों में $\frac{1}{3}$ हिस्से के लिए 1–1–17 प्रवेश करता है और पूँजी ₹ 50,000 लेकर आता हैं। ख्याति की गणना कीजिये।

Balance of Capital A/cs of A & B were ₹ 40,000 & ₹ 30,000 respectively. For the year ended 31 – 12 – 2016. Balance of General Reserve Stood at ₹ 20,000. C is admitted on 1 – 01 -2017 for 1/3rd share in profits. C brings in ₹ 50,000 for his share of capital. Calculate value of goodwill.

Ans: ₹ 10,000

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

12. किसी फर्म के अधिलाभ ₹ 10,000 हैं। यदि 5 वर्ष के लिए 10% ब्याज दर पर एक रुपये की वार्षिकी का वर्तमान मूल्य 3.791 है तो ख्याति का मूल्य होगा।
Super Profit of a firm is ₹ 10,000. The present value of an annuity of ₹ 1 for five years at 10% per annum may taken at 3.791. Find the value of goodwill of the firm. **Ans:** ₹ 37,910

13. किसी व्यवसाय का क्रय प्रतिफल ₹ 3,50,000 तय हुआ। इस व्यवसाय की सम्पत्तियां ₹4,00,000 व दायित्व ₹80,000 है तो ख्याति का मूल्य होगा।
Purchase consideration of a business is determined at ₹ 3,50,000. Assets were ₹ 4,00,000 & Liabilities were worth ₹ 80,000. Find the value of goodwill of the firm. **Ans:** ₹ 30,000

14. A व B एक फर्म में 2 : 1 के अनुपात में लाभों को बाँटते हुए साझेदार है । वे C को लाभों का $\frac{1}{6}$ हिस्सा देकर प्रवेश देते हैं।C ₹40,000 पूँजी व ₹15,000 ख्याति के लिए नकद लेकर आता हैं व B ख्याति की राशि निकाल लेते हैं। C के प्रवेश की तिथि को पुस्तकों में ख्याति खाता ₹ 30,000 पर प्रकट होता हैं। आवश्यक प्रविष्टियां कीजिए।
A and B are partners in a firm sharing profits in the ratio of 2: 1. They admitted C as a new partner. C brought in ₹ 40,000 for his share of capital and ₹ 15,000 as Goodwill for 1/6th share in profits of the firm. Goodwill withdrawn by A & B from the firm. On C's admission goodwill appeared in the books of the firm at ₹ 30,000. Record necessary Journal entries.

15. A व B एक साझेदारी फर्म में 3 : 2 में लाभ विभाजन करते हैं। वे C को लाभों का $\frac{1}{5}$ हिस्से के लिए प्रवेश देते हैं। C अपना पूरा हिस्सा A से प्राप्त करता हैं।C ₹ 50,000 पूँजी व ₹ 10,000 ख्याति के लिए नकद लेकर आता हैं। C के प्रवेश की तिथि को पुस्तकों में ख्याति खाता ₹ 25,000 पर बताया गया हैं। आवश्यक प्रविष्टियां कीजिए।
A and B are partners in a firm sharing profits in the ratio of 3 : 2. They admitted C as a new partner for 1/5th share in profits of the firm. C acquires his entire share from A. C brought in ₹ 50,000 as his capital and ₹ 10,000 as goodwill. On C's admission goodwill appeared in the books of the firm at ₹. 25,000. Record necessary Journal entries.

16. A व B 3 : 2 के अनुपात में लाभ विभाजन करते हुए साझेदार है वे C को लाभों का $\frac{1}{5}$ हिस्से के लिए प्रवेश देते हैं। C के प्रवेश की तिथि को फर्म की ख्याति ₹25,000 पर मूल्यांकित की जाती हैं। C ने अपनी पूँजी व ख्याति के लिए निम्न सम्पत्तियों का योगदान दिया। देनदार ₹ 10000 स्टॉक ₹15,000 उपर्युक्त को प्रभावी करने के लिए आवश्यक प्रविष्टियां कीजिए।
A and B are partners in a firm sharing profits in the ratio of 3 : 2. They admitted C as a new partner for 1/5th share in profits of the firm. On the date of C's admission goodwill was valued at ₹ 25,000. C contributed the following assets to his capital and his share of goodwill. Debtors ₹ 10,000 & Stock ₹ 15,000. Record necessary Journal entries.

17. A, B व C एक फर्म में 3 : 2 : 1 के अनुपात में लाभ विभाजन करते हुए साझेदार हैं। वे D को लाभों में $\frac{1}{7}$ हिस्से के लिए प्रवेश देते हैं। D पूँजी के लिए ₹ 1,00,000 व ₹ 45,000 ख्याति के लिए लेकर आता हैं। आवश्यक प्रविष्टियां दीजिए।
A, B and C are partners in a firm sharing profits in the ratio of 3 : 2 : 1. They admitted D as a new partner for 1/7th share in profits of the firm. D brought in ₹ 1,00,000 as his capital and ₹ 45,000 as goodwill. Record necessary Journal entries.

18. L, M तथा N एक फर्म में साझेदार है और लाभ को 2:2:1 के अनुपात में बाँटते है । वे निर्णय लेते है कि भविष्य में N को लाभों में 1/4 हिस्सा मिलेगा । फर्म की ख्याति का मूल्यांकन ₹ 80,000 किया गया था। पुस्तकों में ख्याति ₹ 20000 दिखाई गई हैं। अपेक्षित जर्नल में प्रविष्टियां कीजिए ।
L, M and N are partners in a firm sharing profits in the ratio of 2:2:1. They decided that N will get 1/4th share in future profit. Goodwill of the firm was valued ₹ 80000. Goodwill already appeared in the books ₹ 20000. Pass necessary journal entries.
Ans: ₹20000 की ख्याति 2 : 2 : 1 के अनुपात में अपलिखित होगी; 2. L¼ (SR) ,M 1/40 (SR), N 2/40 (GR)

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

19. एक्स, वाई, तथा जेड साझेदार थे और लाभ को 5 : 3 : 2 के अनुपात में बाँटते थे । उन्होंने निर्णय लिया कि 1–04–2017 से लाभों का बँटवारा 2 : 3 : 5 के अनुपात में करेंगे । वे निम्नलिखित के प्रभाव को उनके पुस्तक मूल्य को बदले बिना दिखाना चाहते है ।

1. लाभ तथा हानि खाता ₹ 24000. 2 विज्ञापन उचन्ती खाता ₹ 12000 अपेक्षित समायोजन प्रविष्टि कीजिए।

X, Y and Z were parttners sharing profits in the ratio of 5:3:2. They decided to share future profits in the ratio of 2:3:5 with effect from 1-04-2017. They decide to record the effect of the following without affecting their book value.

1- Profit and Loss A/c ₹ 24000, **2.** Adevertisement Suspense A/c ₹ 12000. Pass the necessary adjustment entry.

Ans: Z(Dr.) ₹ 3600, X (Cr.) ₹ 3600

निबन्धात्मक प्रश्न (Essay type Questions)

1. नये साझेदार के प्रवेश से क्या समझते है? ख्याति की गणना की विभिन्न विधियों को उदाहरण सहित समझाइये।
What is meant by admission of a partner? Explain and illustrate the different methods of calculation of goodwill.

2. पुनर्मूल्यांकन खाता क्या है? यह क्यों बनाया जाता है? एक नये साझेदार के प्रवेश के समय सम्पत्तियों के पुनर्मूल्यांकन एवं दायित्वों के पुनः निर्धारण से सम्बन्धित जर्नल प्रविष्टियां दीजिये।
What is Revaluation account? Why is it prepared? What entries are passed for revaluation of Assets & Re-Assesment of Liabilities on admission of a new Partner?

3. एक नये साझेदार के प्रवेश के समय कौनसी समस्याएं आती है? उनके समाधान हेतु कौन–कौन से समायोजन किये जाते है? वर्णन कीजिए।
What problems occure at the time of admission of a new partner, for which what adjustments are made? Explain.

4. स्मरणार्थ पुनर्मूल्यांकन खाता क्या है? यह पुनः पुनर्मूल्यांकन खाते से किस प्रकार भिन्न है?
What is Memorandum Revaluation Account? How does it differ from Revaluation Account?

5. किसी साझेदार के प्रवेश के समय भारतीय AS- 26/ Indian AS-38 के अनुसार ख्याति का लेखांकन संव्यवहार बताये?
State the treatment of goodwill at the time of admission of a new partner as per accounting Indian AS-26/ Indian AS-38.

बहुचयनात्मक प्रश्नों के उत्तर

प्रश्न सं.	1	2	3	4	5	6	7	8	9	10
उत्तर	B	C	B	C	A	B	A	C	D	C

आंकिक प्रश्न (Numerical Questions)

1. A व B एक फर्म में 3 : 1 के अनुपात में लाभ विभाजन करते हुए साझेदार है । वे C को लाभों का $\frac{1}{4}$ हिस्से के लिए प्रवेश देते हैं। C के प्रवेश की तिथि को फर्म की ख्याति ₹ 40,000 पर मूल्यांकित की गयी। निम्न परिस्थितियों में ख्याति के लेखांकन हेतु प्रविष्टियां दीजिये।
(a) C अपने हिस्से की ख्याति निजी तौर पर A व B को देता हैं। **(b)** C अपने हिस्से की ख्याति नकद लेकर आता हैं। **(c)** C अपने हिस्से की ख्याति नकद लेकर आता हैं व B अपने हिस्से की $\frac{1}{2}$ ख्याति व्यवसाय से निकाल लेते हैं। **(d)** C अपने हिस्से की ख्याति में से ₹ 6,000 नकद लेकर आता हैं। **(e)** C अपने हिस्से की ख्याति नकद लेकर नहीं आता हैं।
A & B are partners sharing profits in the ratio of 3 : 1. They admit C for 1/4th share in profits of the firm. Goodwill of the firm is valued at ₹40,000 on the date of admission of C. Pass Journal Entries in the following cases:
(a) C pays for his share of Goowill privately to A & B. **(b)** C brings his share of goodwill in cash. **(c)** C brings his share of goodwill in cash. A & B withdraws half of the goodwill. **(d)** C brings ₹6,000 in cash out of his share of goodwill. **(e)** C is unable to bring his share of goodwill in cash.

2. अ और ब एक व्यवसाय के लाभों को 5 : 3 में बाँटते हैं। वे स को लाभ में 1/4 हिस्से के लिए शामिल करते हैं।, जो कि अ तथा ब द्वारा बराबर दिया जायेगा। स के प्रवेश के समय फर्म का चिट्ठा निम्न प्रकार था :

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

A and B shares the profits of a business in the ratio of 5: 3. They admitted C into the firm for 1/4th share in profits which is to be contributed equally by A and B. On the date of admission of C the Balance Sheet of the firm was as follows:

Liabilities	Amount ₹	Assets	Amount ₹
A's Capital	50,000	Goodwill	10,000
B's Capital	30,000	Machinery	35,000
General Reserve	16,000	Furniture	15,000
Creditors	14,000	Stock	10,000
Employee's Provident Fund	10,000	Debtors	10,000
		Bank	40,000
	1,20,000		**1,20,000**

स के प्रवेश की शर्तें निम्न थी :– (1) स अपने हिस्से की पूँजी तथा ख्याति के लिये ₹30,000लाएगा एवं पुराने साझेदारों द्वारा आधी ख्याति फर्म से निकाल ली जाएगी। (2) फर्म की ख्याति का मूल्यांकन अधिलाभ ₹8,000के तीन वर्षों के क्रय के बराबर किया गया हैं। (3) मशीन, फर्नीचर एवं स्टॉक का पुनर्मूल्यांकन क्रमशः ₹30,000, ₹12,000एवं ₹8,000पर किया गया हैं। (4) एक ग्राहक जिसका खाता डूबत ऋण मान लिया गया था वह ₹1,200देने के लिए सहमत हो जाता हैं। उपरोक्त के आधार पर पुनर्मूल्यांकन खाता, साझेदारों के पूँजी खाते तथा नई फर्म का चिट्ठा बनाइए। यदि यह तय किया गया कि सम्पत्तियों व दायित्वों को पुराने मूल्यों पर ही दिखाया जाये तो स्मरणार्थ पुनर्मूल्यांकन खाता, पूँजी खाते व चिट्ठा बनाइये।

Terms of C's admission were as follows: (i) C will bring ₹30,000 for his share of capital and goodwill. Half of the goodwill shall be withdrawn by the old partners. (ii) Goodwill of the firm has been valued at 3 years' purchase of the super profit ₹8,000. (iii) Machinery, furniture and stock are revalued at ₹30,000, ₹12,000 &₹8,000 respectively. (iv) An old customer whose account was written off as bad debts has promised to pay ₹1,200. From the above prepare Revaluation account, Partners' Capital accounts and Balance Sheet of the new firm. If it has been agreed that Assets and Liabilities are to be shown at old values. Prepare Memorandum Revaluation A/c, Partner's capital A/c and Balance Sheet.

Ans. (i) Loss on revaluation ₹8,800; A's capital ₹49,750; B's capital ₹30,450; C's capital ₹24,000; B/S ₹1, 28,200; (ii) B/S ₹1, 37,000; Capital A/c : A ₹54,250; B ₹32,550; ₹26,200.

3. एक्स व वाई 2:1के अनुपात में लाभ बाँटते हुए साझेदार हैं। 31मार्च, 2017 को उनकी फर्म का चिट्ठा निम्न प्रकार है :

X and Y are partners sharing profit in the ratio of 2: 1. Their Balance Sheet as on 31st March, 2017 is as under:

Balance Sheet (as on 31st March 2017)

Liabilities		Amount ₹	Assets		Amount ₹
Creditors		30,000	Bank Balance		17,200
Outstanding Salary		1,000	Debtors	16,000	
Workmen Compensation Reserve		6,000	Less:Provision	1,200	14,800
General Reserve		9,000	Stock		43,000
Capital:			Plant & Machinery		42,000
X	60,000		Building		36,000
Y	50,000	1,10,000	Goodwill		3,000
		1,56,000			**1,56,000**

1 अप्रैल, 2017 को उन्होंने जेड को ¼ हिस्से के लिए फर्म में प्रवेश दिया जिसे वह एक्स से प्राप्त करेगा। उस समय निम्न निर्णय लिये :

(i) जेड पूँजी के रूप में ₹36,000 नकद तथा ₹14,000 मूल्य के राम लि० के अंश लाता हैं। (ii) फर्म की ख्याति का वर्तमान मूल्य ₹12,000 हैं। जेड अपने हिस्से की ख्याति नकद लाता हैं। (iii) देनदारों पर डूबत ऋण आयोजन 10% तक बढाया जाये तथा अब अदत्त वेतन की आवश्यकता नहीं हैं। (iv) संयन्त्र व मशीनरी 5% से अधिमूल्यांकित किया गया हैं तथा रहतिया ₹2,400 से बढाया जाये। (v) भवन का मूल्य 10% से कम मूल्यांकित हैं। (vi) ₹4,000 के लेनदार अपलिखित करने हैं। (vii) कर्मचारी क्षतिपूर्ति संचय के विरुद्ध ₹9,000 का दायित्व निश्चित हो गया हैं।

जेड के प्रवेश पर लाभ हानि समायोजन खाता, साझेदारों के पूँजी खाते एवं चिट्ठा बनाइए।

They admitted Z in the firm from 1st April, 2017 for 1/4th share, which he will receive from X. Following decisions were taken on that time:(i) Z brings ₹36,000 in cash and share of Ram Ltd. Worth ₹14,000 as his

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

capital. (ii) The present value of firm's goodwill is ₹12,000. Z brings his share of goodwill in cash. (iii) Provision for Bad Debts on debtors be increased to 10% and outstanding salary is not required now. (iv) Plant and Machinery overvalued by 5% and stock to be increased by ₹2,400. (v) Building undervalued by 10%.(vi) Sundry Creditors were written back by ₹4,000. (vii) Liability against Workmen Compensation determined at ₹9,000. Prepare Profit & Loss Adjustment Account,Partners' Capital Accounts and Balance Sheet on the admission of Z.

Ans : (Profit on Revaluation ₹6,000; X's capital ₹71,000; Y's capital ₹54,000; Z's capital ₹50,000; B/S ₹2,10,000.)

4. एल, एम, तथा एन एक फर्म के साझेदार थे तथा 3: 2: 1 के अनुपात में लाभ बाँटते थे। 31-3-2017 को उनका स्थिति विवरण निम्न प्रकार से था :

L, M and N were partners in a firm sharing profits in the ratio of 3: 2: 1. Their Balance Sheet on 31.3.2017 was as follows:

Balance Sheet of L, M and N As on 31 March, 2017

Liabilities		Amount ₹	Assets	Amount ₹
Creditors		1,68,000	Bank	28,000
General Reserve		42,000	Debtors	40,000
Capitals:			Stock	2,20,000
L	1,20,000		Investments	60,000
M	80,000		Furniture	20,000
N	40,000	2,40,000	Machinery	70,000
			Profit & Loss	12,000
		4,50,000		**4,50,000**

उपरोक्त तिथि को ओ को एक नया साझेदार बनाया गया तथा यह निर्णय लिया कि :

(i) एल, एम, एन तथा ओ का नया लाभ अनुपात 2: 2 : 1 : 1होगा। (ii) फर्म की ख्याति का मूल्यांकन ₹1,80,000 किया गया तथा ओ अपने भाग की ख्याति (प्रीमियम) नकद लाया। (iii) निवेशों का बाजार मूल्य ₹36,000 था। (iv) मशीनरी को ₹58,000 तक घटाया जायेगा। (v) ₹6,000 का एक लेनदार दावा नहीं करेगा अतः उसे अपलिखित किया जायेगा। (vi) फर्म में लाभ के 1/6 भाग के लिए ओ आनुपातिक पूँजी लायेगा। (vii) देनदारों पर 5% की दर से संदिग्ध ऋणों के लिए आयोजन तथा 2% की दर से देनदारों पर बट्टे के लिए आयोजन किया जाये। पुनर्मूल्यांकन खाता, साझेदारों के पूँजी खाते तथा पुनर्गठित फर्म का स्थिति विवरण तैयार कीजिए ।

On the above date O was admitted as a new partner and it was decided that:

(i) The new profit sharing ratio between L, M, N and O will be 2: 2: 1: 1. (ii) Goodwill of the firm was valued at ₹1,80,000 and O brought his share of goodwill (premium) in cash. (iii) The market value of investments was ₹36,000. (iv) Machinery will be reduced to ₹58,000. (v) A creditor of ₹6,000 was not likely to claim the amount and hence was to be written off. (vi) O will bring proportionate capital so as to give him 1/6th share in the profits of the firm. (vii) Provision for doubtful debts to be maintained @ 5% and Provision for discount on debtors be made @ 2%. Prepare Revaluation Account, Partner's Capital Accounts & Balance Sheet of the New Firm.

Ans. Loss on Revaluation ₹32,760; B/S ₹4,82,688; Capital A/c L₹1,48,620; M ₹79,080; N ₹39,540; O ₹53,448.

5. ए व बी 5 : 3 में लाभ बाँटते हैं। उन्होंने सी को लाभ में ¼ भाग के लिए फर्म में प्रवेश दिया जो कि ए व बी द्वारा बराबर–बराबर देय होगा। सी के प्रवेश से तुरन्त पूर्व फर्म का चिट्ठा निम्नांकित है :

A and B shares the profits in the ratio of 5: 3. They admit C into firm for a 1/4th share in the profits to be contributed equally by A and B. Before admission of C, Balance Sheet of the firm is as follows:

Balance Sheet

Liabilities	Amount ₹	Assets	Amount ₹
A's Capital	40,000	Machinery	30,000
B's Capital	30,000	Furniture	20,000
Workmen Compensation Reserve	4,000	Stock	15,000

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Provision For Doubtful Debts	1,000	Debtors	15,000
Creditors	2,000	Bank	7,000
Provident fund	10,000		
	87,000		**87,000**

सी के प्रवेश पर निम्नांकित शर्तें है :

(i) सी ₹30,000 पूँजी व ख्याति के हिस्से के लिए लायेगा।(ii)फर्म की ख्याति पिछले चार वर्षों के औसत अधिलाभ के तीन गुने के आधार पर मूल्यांकित करनी हैं। पिछले चार वर्षों का औसत लाभ ₹20,000 है जबकि विनियोजित पूँजी पर सामान्य लाभ ₹12,000 हैं। (iii) फर्नीचर का मूल्य ₹6,000 से बढाना है, जबकि स्टॉक का मूल्य ₹2,000 से कम करना हैं। भविष्य निधि में ₹1,000 बढ़ोतरी करनी हैं। (iv) सभी देनदार अच्छे हैं। (v) कर्मचारी क्षतिपूर्ति संचय के विरुद्ध ₹2,000 का दायित्व निश्चित किया गया हैं।

पुनर्मूल्यांकन खाता, साझेदारों के पूँजी खाते एवं नयी फर्म का चिट्ठा तैयार कीजिए।

Terms of C's admission were as follows: (i) C will bring ₹30,000 as his share of Capital and Goodwill. (ii) Goodwill of the firm has been valued at 3 times of the average super-profits of last four years. Average profits of the last four years are ₹20,000, while the normal profits that can be earned with the capital employed are ₹12,000. (iii) Furniture to be appreciated by ₹ 6,000 and the value of stock is to be reduced by ₹2,000. Provident fund be raised by ₹1,000. (iv) All debtors are good. (v) Liability against Workmen Compensation Reserve is determined at ₹2,000.

Prepare Revaluation Account, Partners' Capital Accounts and the Balance Sheet of the new firm.

Ans. Profit on Revaluation ₹4,000; Capital A/c : A ₹47,500; B ₹34,500 & C ₹24,000. B/S ₹1,21,000.

6. अ तथा ब का 31 मार्च, 2017 का चिट्ठा निम्न है जो लाभ–हानि को 3 : 1 में विभाजित करते है :

The following is the Balance Sheet of A and B, who are sharing profit in the proportion of 3: 1 on 31st March, 2017:

Balance Sheet As on 31st March, 2017

Liabilities	Amount ₹	Assets	Amount ₹
Creditors	39,700	Cash at Bank	22,600
Provision For Bad Debts	300	Bills Receivable	3,000
General Reserve	4,000	Debtors	16,000
Capital:		Stock	20,000
A ₹ 30,000		Office Furniture	1,000
B ₹ 16,000	46,000	Land & Building	25,000
		Advertisement Expenses	2,400
	90,000		**90,000**

1 अप्रैल, 2017 को वे निम्न शर्तों, पर स को साझेदारी में शामिल करने को सहमत हो जाते हैं:

(i) स लाभों में 1/5 भाग के लिए ₹14,000 पूँजी व ख्याति के लाएगा। (ii) फर्म की ख्याति का मूल्यांकन ₹20,000 किया गया। (iii) स्टॉक तथा फर्नीचर का मूल्य 10% से कम किया जाये तथा देनदारों पर 5% की दर से संदिग्ध ऋणों के लिये प्रावधान बनाया जायेगा। (iv) भूमि और भवन का मूल्य 20% से बढाया जायेगा। (v) साझेदारों के पूँजी खाते को नये साझेदार की पूँजी के अनुपात में समायोजित किया जायेगा तथा किसी आधिक्य या कमी को उनके चालू खाते में हस्तान्तरित किया जायेगा।

पुनर्मूल्यांकन खाता, साझेदारों के पूँजी खाते तथा नई फर्म का चिट्ठा बनाइए।

They agreed to take C in partnership on 1st April, 2017 on the following terms: (i) C will pay ₹14,000 as his capital and goodwill for 1/5th share in the future profits. (ii) That the goodwill of the firm be valued at ₹20,000. (iii) The stock and furniture will be reduced by 10% and the provision for doubtful debts will be created @ 5% on debtors. (iv) Value of Land & building be appreciated by 20%. (v) That the capital accounts of the partners will be readjusted on the basis of new partners' capital and any excess or deficiency transferred to their current accounts. Prepare Revaluation account, Partner's Capital accounts and Balance Sheet of the new firm.

Ans. Profit on Revaluation ₹2,400; Capital A/c ; A ₹30,000; B ₹10,000 & C ₹10,000; B/S ₹1,04,500.

7. अ और ब लाभ 3 : 2 के अनुपात में बाँटते हैं। 31 मार्च, 2017 को उनका चिट्ठा निम्न प्रकार था :

A and B distributes profit in 3 : 2 ratio. On 31st March, 2017 their Balance Sheet is as follows:

Balance Sheet as on 31st March, 2017

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Liabilities	Amount ₹	Assets	Amount ₹
Bills Payable	60,000	Cash and bank balance	25,000
Reserve Fund	15,000	Debtors 30,000	
Workmen Compensation Reserve	10,000	Less: Provision 2,000	28,000
Capital: A	90,000	Stock	32,000
B	40,000	Goodwill	10,000
		Building	1,20,000
	2,15,000		**2,15,000**

1 अप्रैल, 2017 को निम्न शर्तों के आधार पर स को साझेदारी में शामिल किया :

(i) साझेदारों का नया अनुपात 2 : 2 : 1 होगा। (ii) स ₹40,000 अपनी पूँजी के चुकाता हैं। (iii) स्टॉक को ₹2,000 से कम किया जाये, संदिग्ध ऋणों के लिए आयोजन ₹3,000 तक रखा जाये। (iv) फर्म की ख्याति में स का हिस्सा ₹5,000 पर मूल्यांकित किया जाये। स ख्याति की नकद राशि लाता हैं। (v) पूर्वदत्त बीमा व्यय ₹1,000. (vi) बकाया बिजली के बिल ₹500. (vii) भवन ₹10,000 से कम मूल्यांकित हैं। (viii) सभी साझेदारों की पूँजी उनके लाभ विभाजन अनुपात में होगी। नकद से समायोजन किया जाये। नयी फर्म में पूँजी खाते एवं चिट्ठा तैयार कीजिये ।

On 1st April, 2017 C was admitted in partnership on the following conditions: (i) New ratio of partners will be 2: 2: 1. (ii) C pays ₹40,000 as his capital. (iii) Stock be decreased by ₹2,000. Provision for Doubtful debts is to be maintained up to ₹3,000. (iv) C's share in the Goodwill of the firm be valued at ₹5,000. C brings cash for Goodwill. (v) Prepaid Insurance ₹1,000. (vi) Outstanding Electricity Bills ₹500. (vii) Building undervalued by ₹10,000. (viii) The capitals of all partners will be in their profit sharing ratio. Adjustment is to be done by cash. Prepare CapitalAccounts and Balance Sheet of the new firm.

Ans. Profit on Revaluation ₹7,500; Capital A/c A ₹80,000; B ₹40,000 & C ₹40,000. B/S ₹2,60,500; Cash & Bank Balance ₹72,500.

8. एम एवं एन एक फर्म में समान अनुपात में साझेदार हैं। 31 मार्च, 2017 को उनका चिट्ठा निम्न प्रकार है :

M and N are partners in the firm in equal profit sharing ratio. On 31st March, 2017 their Balance Sheet was as follows:

Balance Sheet (As on 31st March, 2017)

Liabilities	Amount ₹	Assets	Amount ₹
General Reserve	8,000	Cash in hand	1,500
Investment Fluctuation Reserve	2,000	Investment	30,000
Bank Overdraft	40,000	Debtors	57,000
Creditors	36,000	Furniture	4,000
Capital:		Stock	10,500
M 30,000		Building	30,000
N 20,000	50,000	Patent	3,000
	1,36,000		**1,36,000**

उन्होंने ओ को निम्न शर्तों पर साझेदार बनाया : (i) देनदारों पर 10 % वार्षिक दर से डूबत ऋण आयोजन बनाया जाये। (ii) फर्नीचर का मूल्य 25% से कम किया जाये। (iii) विनियोंगो का मूल्य ₹5,000 से बढ़ाया जाये। (iv) ओ ₹25,000 पूँजी लायेगा तथा उसे लाभों में 1/3 हिस्सा दिया जायेगा और ₹5,000 ख्याति के लाएगा। (v) एक लेनदार ₹1,700 का है जो मृत हैं। भविष्य में इस खाते पर कोई दायित्त्व उत्पन्न नहीं होगा। (vi) एकस्व मूल्यहीन हैं। (vii) भवन का मूल्य 25% से बढ़ाया जाए। स्टॉक का मूल्य ₹9,000 तक कम करना हैं। पुराने साझेदारों की पूँजी उसी के आधार पर समायोजित की जाएगी। पुनर्मूल्यांकन खाता, साझेदारों के पूँजी खाते तथा चिट्ठा बनाइये।

They admit O in the partnership on the following terms: (i) Create provision for Doubtful Debts by 10% on Debtors. (ii) Furniture will be depreciated by 25%. (iii) Increase the value of Investment by ₹5,000. (iv) O shall bring ₹25,000 as his capital and his share in profit & loss will be 1/3rd and he will bring ₹5,000 as his share of goodwill. (v) A creditor for ₹1,700 is dead. No liability shall arise in future on this account. (vi) Patents are valueless. (vii) Building will be appreciated by 25%. Stockis reduced to ₹9,000. The capitals of old partners are also to be adjusted accordingly. Prepare Revaluation A/c, Partners' Capital A/c and Balance Sheet.

Ans. Profit on Revaluation ₹3,000; Capital A/c : M ₹25,000; N ₹25,000 & O ₹25,000
B/S ₹1,49,300; Cash Balance ₹13,500.

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

9. अटल तथा मदन एक फर्म के साझेदार थे तथा 5 : 3 के अनुपात में लाभ बाँटते थे। 31-3-2017 को उन्होंने लाभ के 1/5 वें भाग के लिए मेहरा को एक नया साझेदार बनाया। नया लाभ विभाजन अनुपात 5 : 3 : 2 था। मेहरा के प्रवेश के समय फर्म का स्थिति विवरण निम्न प्रकार से था :

Atal and Madan were partners in a firm sharing profits in the ratio of 5: 3. On 31.3.2017 they admitted Mehra as a new partner for 1/5th share in the profits. The new profit sharing ratio was 5: 3: 2. On Mehra's admission the Balance Sheet of the firm was as follows:

Balance Sheet As on 31st March, 2017

Liabilities		Amout ₹	Assets	Amount ₹
Capitals			Land and Building	1,50,000
Atal:	1,50,000		Machinery	40,000
Madan:	90,000	2,40,000	Patents	5,000
Provision for bad debts		1,200	Stock	27,000
Creditors		20,000	Debtors	47,000
Workmen Compensation Fund		32,000	Cash	4,200
			Profit and Loss Account	20,000
		2,93,200		**2,93,200**

मेहरा के प्रवेश के समय यह निर्णय लिया गया कि :

(i) मेहरा अपनी पूँजी के लिए ₹40,000 तथा ख्याति (प्रीमियम) के अपने भाग के लिए ₹16,000 लाएगा, जिसका आधा भाग अटल तथा मदन ने निकाल लिया। (ii) डूबत तथा संदिग्ध ऋणों के लिए $2\frac{1}{2}$ % का प्रावधान करना हैं। (iii) विविध लेनदारों में ₹2,500 की एक मद हैं जिसका भुगतान नहीं करना हैं। (iv) बिजली के अदत्त बिल के लिए ₹3,000 का प्रावधान करना हैं। (v) फर्म के विरुद्ध ₹325 के एक क्षतिपूर्ति दावे के मंजूर होने की सम्भावना हैं। उसके लिए प्रावधान करना हैं।

उपरोक्त समायोज़नों के पश्चात अटल तथा मदन की पूँजी को मेहरा की पूँजी के आधार पर समायोजित करना हैं। स्थिति अनुसार अटल तथा मदन द्वारा रोकड़ लाई जाएगी अथवा उनको भुगतान की जाएगी। पुनर्मूल्यांकन खाता, साझेदारों के पूँजी खाते तथा नई फर्म का स्थिति विवरण तैयार कीजिये।

On Mehra's admission it was agreed that:

(i) Mehra will bring ₹40,000 as his capital and ₹16,000 for his share of goodwill (premium), half of which was withdrawn by Atal and Madan. (ii) A provision of $2\frac{1}{2}$ % for bad and doubtful debts was to be created. (iii) Included in the sundry creditors was an item of ₹2,500 which was not to be paid. (iv) A provision was to be made for an outstanding bill for electricity ₹3,000. (v) A claim of ₹325 for damages against the firm was likely to be admitted. Provision for the same was to be made.

After the above adjustments, the capitals of Atal and Madan were to be adjusted on the basis of Mehra's capital. Actual cash was to be brought in or to be paid off to Atal and Madan as the case may be. Prepare Revaluation Account, Capital Accounts of the partners and the Balance Sheet of the new firm.

Ans. : Loss on Revaluation ₹800; B/S ₹2,69,000; Capital A/c : Atal ₹1,00,000; Madan ₹60,000; Mehra's₹40,000.

10. शिखर तथा रोहित एक फर्म में साझेदार थे तथा 7 : 3 के अनुपात में लाभ बाँटते थे। 1 अप्रैल, 2017 को उन्होंने कवि को फर्म के लाभों में ¼ भाग के लिए एक नए साझेदार के रूप में प्रविष्ट कराया। कवि ₹4,30,000 अपनी पूँजी के लिए तथा ₹25,000 अपने ख्याति प्रीमियम के भाग के लिए लाया। 1 अप्रैल, 2017 को शिखर तथा रोहित का स्थिति विवरण निम्नानुसार था :

Shikhar and Rohit were partners in a firm sharing profits in the ratio of 7: 3. On 1st April, 2017 they admitted Kavi as a new partner for 1/4 share in profits of the firm. Kavi brought ₹4,30,000 as his capital and ₹25,000 for his share of goodwill premium. The Balance Sheet of Shikhar and Rohit as on 1st April, 2017 was as follows:

Balance Sheet of Shikhar and Rohit As on 1st April, 2017

Liabilities		Amount ₹	Assets	Amount ₹
Capitals:			Land and Building	3,50,000
Shikhar	8,00,000		Machinery	4,50,000

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Rohit	3,50,000	11,50,000	Debtors	2,20,000	
General Reserve		1,00,000	Less: provision	20,000	2,00,000
Workmen's Compensation Fund		1,00,000	Stock		3,50,000
Creditors		1,50,000	Cash		1,50,000
		15,00,000			**15,00,000**

यह निर्णय लिया गया कि : (i) भूमि तथा भवन का मूल्य 20% से बढाया जाएगा। (ii) मशीनरी का मूल्य 10% से कम किया जाएगा। (iii) कर्मचारी क्षतिपूर्ति निधि की देयता ₹50,000 निश्चित की गई। (iv) शिखर तथा रोहित की पूँजी कवि द्वारा लाई गई पूँजी के आधार पर समायोजित की जाएगी और इसके लिए आवश्यकतानुसार रोकड़ लाया जाएगा तथा इसका भुगतान किया जाएगा। पुनर्मूल्यांकन खाता, साझेदारी के पूँजी खाते तथा नई फर्म का स्थिति विवरण तैयार कीजिए।

It was agreed that : (i) The value of Land and Building will be appreciated by 20%. (ii) The value of Machinery will be depreciated by 10%. (iii) The liabilities of Workmen's Compensation Fund was determined at ₹50,000. (iv) Capitals of Shikhar and Rohit will be adjusted on the basis of Kavi's capital and actual cash to be brought in or to be paid off as the case may be. Prepare Revaluation Account, Partners' Capital Accounts and the Balance Sheet of the new firm.

Ans. Profit on Revaluation ₹25,000. Capital A/c : Shikhar ₹ 9,03,000; Rohit ₹ 3,87,000; Kavi ₹ 4,30,000; B/S ₹ 19,20,000; Cash Balance ₹ 5,45,000.

11. A तथा B एक फ़र्म में साझेदार हैं और लाभ को 3 : 2 के अनुपात में बाँटते हैं। वे 1 अप्रेल 2017 को C को लाभ में 1/5 हिस्से के लिए साझेदारी में सम्मिलित करते हैं। उस दिन का उनका स्थिति विवरण इस प्रकार था :

A and B aren partners in the firm sharing profit in the ratio of 3 : 2. On 1st April 2017. They admit C in new firm for 1/5 share in profit. Their balance sheet was as follows:

Balance Sheet As on 31st March, 2017

Liabilities		Amount₹	Assets	Amount ₹
Capital Accounts:			Goodwill	5,000
A	60,000		Plant & Machinery	65,000
B	50,000	1,10,000	Furniture	15,000
General Reserve		10,000	Investments	20,000
Sundry Creditors		50,000	Stock	20,000
			Sundry Debtors	30,000
			Cash in hand	15,000
		1,70,000		**1,70,000**

C को निम्नलिखित शर्तों पर सम्मिलित किया गया था : (i) C ₹40,000 पूँजी के और ₹15,000 ख्याति के लाएगा। (ii) साझेदार भविष्य में लाभों को 5 : 3 : 2 के अनुपात में बाँटेंगे। (iii) निवेशों के मूल्य में 20% की वृद्धि की जाएगी और फ़र्नीचर में 10% का ह्रास किया जाएगा। (iv) एक ग्राहक, जिसे फ़र्म को ₹2,000 देने थे, दिवालिया हो गया और उससे कुछ नहीं मिल पाएगा। (v) लेनदारों के ₹2,000 कम किए जाएँगे। (vi) मरम्मत के ₹1,000 के बकाया बिल के लिए प्रावधान किया जाएगा। (vii) निवेश पर उपार्जित (accrued) ब्याज ₹ 2,000 था। (viii) साझेदारों की पूँजी उनके लाभ विभाजन अनुपात में होगी। इसके लिए समायोजन नकदी से किया जाएगा। पुनर्मूल्यांकन खाता, साझेदारो के पूँजी खाते एवं नयी फर्म का चिट्ठा तैयार कीजिए ।

C was admitted on the following terms: (i) C is to bring capital ₹40,000 and goodwill ₹15,000 (ii) Partners agreed to share the future profits in the ratio of 5 : 2 : 3 (iii) Investments will be appreciated by 20% and furniture depreciated by 10% (iv) One customer who owed the firm ₹2,000 becomes insolvent and nothing could be realised from him. (v) Creditors will be written off ₹2,000. (vi) Outstanding bills for repairs ₹1,000 will be provided for. (vii) Interest accrued on investment ₹2,000. (viii) Capitals of the partner's shall be in proportion to their profits sharing ratio. For this, adjustment be made through cash. Prepare Revaluation Account, Capital Accounts and the Balance Sheet of new firm.

Ans. : Profit on Revaluation ₹3,500. Capital A/c : A ₹1,00,000; B ₹60,000; C ₹40,000.

12. इशु और विशु 3 : 2 के अनुपात में लाभ बाँटते हुए साझेदार हैं। 31 मार्च 2017 को उनका चिट्ठा निम्न प्रकार था :

Ishu and Vishu are partners sharing profits in the ratio of 3 : 2. Their Balance Sheet as on 31st March 2017 was as follows:

Balance Sheet as on 31st March, 2017

Liabilities	Amount₹	Assets	Amount₹

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Creditors		66,000	Cash at Bank		87,000
General Reserve		10,000	Debtors	42,000	
Investment Fluctuation Fund		4,000	Less: Prov. For D.D.	7,000	35,000
Capital :			Investment (Market Price 19,000)		21,000
Ishu	1,19,000		Buildings		98,000
Vishu	1,12,000	2,31,000	Plant & Machinery		70,000
		3,11,000			**3,11,000**

नीशू को इस दिन 1/6 भाग पर निम्न शर्तों पर सम्मिलित किया : (i) नीशू ₹56,000 अपने हिस्से की पूँजी लाएगी। (ii) फर्म की ख्याति ₹84,000 आंकी गई और नीशू अपना ख्याति का हिस्सा नकद लाएगा। (iii) प्लांट व मशीन को 20% बढ़ा दिया जाए। (iv) देनदार सभी उत्तम हैं। (v) ₹9,800 का दायित्व जो लेनदारों में शामिल है, उसे नहीं देना पड़ेगा। (vi) नीशू की पूँजी के आधार पर इशु और विशु की पूँजी का समायोजन करें तथा कमी या अधिकता को नकद से पूरा करें। पुनर्मूल्यांकन खाता, साझेदारों के पूँजी खाते व फर्म का समायोजन के बाद स्थिति विवरण बनाएं–

Nishu was admitted on that date for 1/6th share on the following terms: (i) Nishu will bring ₹56,000 as his share of capital. (ii) Goodwill of the firm is valued at ₹84,000 and Nishu will bring his share of goodwill in cash. (iii) Plant and Machinery be appreciated by 20%. (iv) All debtors are good. (v) There is a liability of ₹9,800 included in Sundry creditors that is not likely to arise. (vi) Capital of lshu and Vishu will be adjusted on the basis of Nishu's capital and any excess or deficiency will be made by withdrawing or bringing in cash byconcerned partner. Prepare Revaluation Account, Partners' Capital Accounts and the Balance Sheet of the firm after the above adjustments.

Ans. Profit on Revaluation ₹30,800.

Capital A/c : Ishu ₹1,68,000; Vishu ₹1,12,000; Nishu ₹56,000; B/S ₹3,92,200.

13. A तथा B साझेदार हैं। लाभ को 3 :2 के अनुपात में बाँटते हैं। 31 दिसंबर 2016 को उनका स्थिति विवरण इस प्रकार था:

A and B, who are partners in a firm sharingprofits in the ratio of 3 : 2 on 31st December, 2016. The Balance Sheet was as follows:

Balance Sheet As on 31st December, 2016

Liabilities		Amount₹	Assets		Amount₹
Capital Accounts:			Plant & Machinery		10,000
A	10,000		Land & Building		8,000
B	8,000	18,000	Debtors	12,000	
General Reserve		15,000	Less: Prov. For D.D.	(1,000)	11,000
Workmen's Compensation Fund		5,000	Stock		12,000
Creditors		12,000	Cash		9,000
		50,000			**50,000**

उन्होंने C को लाभ में 1/5 हिस्से के लिए निम्नलिखित शर्तों पर साझेदारी में सम्मिलित करने का निर्णय लिया :

(i) संदिग्ध ऋण के लिए प्रावधान को ₹2,000 से बढ़ा दिया जाए। (ii) स्टॉक के मूल्य को ₹4,000 से बढ़ा दिया जाए और भूमि तथा भवन के मूल्य को ₹18,000 तक बढ़ा दिया जाए। (iii) कर्मचारी क्षतिपूर्ति कोष से दायित्व ₹2,000 निर्धारित किया गया हैं। (iv) C ख्याति का अपना हिस्सा ₹10,000 नकद लाया। (v) उपरोक्त पुनर्मूल्यांकन तथा समायोजन कर लेने के बाद,C अपनी पूँजी के लिए A व B की सयुंक्त पूँजी के 20% के बराबर राशि लाएगा। पुनर्मूल्यांकन खाता, साझेदारों के पूँजी खाते और C के प्रवेश के बाद फ़र्म का स्थिति विवरण बनाइए।

They agreed to admit C into partnership for 1/5th share of profits on the following terms: (i) Provision for doubtful debts be increased by ₹2,000. (ii) The value of stock be increased by ₹4,000 and Land & Building be increased to ₹18,000. (iii) The liability against workmen's compensation fund is determined at ₹2,000. (iv) C brought in as his share of goodwill ₹10,000 in cash. (v) C Would bring cash as would make his capital equal to 20% of combined capital of A & B, after the above revaluation and adjustments are carried out. Prepare Revaluation Account, Partners' Capital Accounts and the Balance Sheet of the firm after C's admission.

Ans. : Profit on Revaluation ₹12,000.

Capital A/c : A ₹34,000; B ₹24,000; C ₹11,600. B/S ₹83,600; Cash Balance ₹30,600.

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

14. P तथा Q एक फ़र्म में साझेदार हैं। लाभ को 3 : 1 के अनुपात में बाँटते हैं। उनका स्थिति विवरण इस प्रकार हैं:
P and Q are partners in a firm sharing profits in the ratio of 3 :1. Their Balance Sheet was as follows:

Liabilities		Amount₹	Assets		Amount₹
Creditors		11,000	Cash		4,000
Workmen's Compensation Fund		4,000	Debtors	16,000	
Investment Fluctuation Fund		1,000	Less: Prov. For D.D.	(500)	15,500
General Reserve		2,000	Stock		18,500
Capital A/c:			Investment		6,000
P	16,000		Goodwill		4,000
Q	14,000	30,000			
		48,000			48,000

R को निम्नलिखित शर्तों पर लाभ में 1/5 हिस्से के लिए सम्मिलित किया जाता है : (i) निवेशों का बाजार मूल्य ₹4,200 माना गया हैं। (ii) उपार्जित ब्याज की राशि ₹200 हैं। (iii) संदिग्ध ऋणों के लिए प्रावधान ₹200 अधिक हैं। (iv) कर्मचारी क्षतिपूर्ति के एक दावे के लिए ₹1,000 का प्रावधान किया जाए। (v) R ख्याति के हिस्से के रूप में ₹10,000 लाएगा। (vi) फ़र्म की कुल पूँजी ₹50,000 निर्धारित की गई, जो साझेदारों के लाभ विभाजन अनुपात में समायोजित की जानी हैं। R अपनी पूँजी नकद में लाता है, परंतु अन्य साझेदारों की पूँजी का समायोजन चालू खाते खोलकर किया जाए। पुनर्मूल्यांकन खाता, पूँजी खाते और नयी फर्म का स्थिति विवरण बनाइये।

R is admitted on 1/5th share in profit on the following terms: (i) Market value of investment is taken as ₹4,200 (ii) Accrued Interest amounts to ₹200. (iii) Provision for doubtful debt was in excess to ₹200. (iv) A claim of Workmen's Compensation for ₹1,000 be provided. (v) R is to bring ₹10,000 as goodwill share. (vi) Total capital of the firm was agreed as ₹50,000 to be adjusted in their profit sharing ratio. R brings his capital in cash but capital of other partners be adjusted byopening current accounts. Prepare Revaluation Account, Capital Accounts and the Balance Sheet of new firm.

Ans. Loss on Revaluation ₹ 400.
Capital A/c : P ₹ 30,000; Q ₹10,000 & R ₹ 10,000; B/ S ₹68,650. Cash Balance ₹24,000.

15. A, B तथा C साझेदार हैं और लाभ को 2:2:1 के अनुपात में बाँटते हैं। 31-3-2017 को उनका स्थिति विवरण इस प्रकार था :

A, B and C are partners sharing profits in the ratio 2 : 2 : 1. Their balance sheet on 31-3-2017 was as follows:

Liabilities		Amount₹	Assets		Amount₹
Creditors		30,000	Bank		30,000
General Reserve		68,000	Debtors	40,000	
Profit & Loss A/c		30,000	Less: Provision	2,000	38,000
Capital A/cs			Stock		50,000
A	40,000		Furniture		30,000
B	40,000		Plant		80,000
C	30,000	1,10,000	Deferred Revenue Expenditure		10,000
		2,38,000			**2,38,000**

साझेदारों ने 1-4-2017 से लाभ को 1 : 1 : 1 के अनुपात में बाँटने का निर्णय लिया। उन्होंने यह भी तय किया कि : (i) स्टॉक का मूल्य 20% बढ़ा दिया जाए। (ii) संदिग्ध ऋण के लिए प्रावधान ₹1,000से बढ़ा दिया जाए। (iii) फ़र्नीचर तथा प्लांट में 10% का ह्रास किया जाए। (iv) बकाया किराया ₹2,000 हैं। (v) फर्म की ख्याति का मूल्यांकन ₹51,000 किया गया हैं। साझेदारों ने निर्णय लिया कि सम्पत्तियों, दायित्वों और संचयों के मूल्य में कोई परिवर्तन न किया जाए। उन्होंने ख्याति को पुस्तकों में न दिखाने का भी निर्णय लिया। इन परिवर्तनों को लागू करने के लिए एकल प्रविष्टि कीजिए।

The partners agreed to share profits in the ratio 1 : 1 : 1 from 1-4-2017. They further agreed that: (i) Stock be valued at 20% more. (ii) Doubtful debt provision be increased by ₹1,000. (iii) Depreciate furniture and plant by 10%. (iv) Rent outstanding is ₹2,000. (v) Goodwill of the firm is valued at ₹51,000. Partners decided not to alter the values of assets, liabilities and reserves. They also decided not to show goodwill in the books.Pass a single entry to give the effect to above changes.

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Ans. समायोजन से शुद्ध लाभ ₹1,35,000

C's Capital A/c	Dr.	18000	
To A's Capital			9000
To B's Capital			9000

16. सुरेश, रमेश तथा महेश लाभों को क्रमशः 3:2:1 के अनुपात में बाँटते हैं। 1 अप्रैल,2017 को उनका चिट्ठा निम्नलिखित था:
Suresh, Ramesh and Mahesh share profits in the ratio of 3: 2: 1 respectively. Their Balance Sheet as on 1st April, 2017 was as-

Balance Sheet As on 1st April, 2017

Liabilities		Amount ₹	Assets	Amount ₹
Creditors		1,60,000	Cash	1,40,000
General Reserve		1,08,000	Sundry Assets	4,80,000
Capital A/c			Profit & Loss A/c	36,000
Suresh	1,80,000			
Ramesh	1,20,000			
Mahesh	88,000	3,88,000		
		6,56,000		**6,56,000**

इस तिथि को उन्होंने तय किया कि सुरेश, रमेश तथा महेश भविष्य में लाभों को 2 : 2 : 1 अनुपात में बाटेंगे। उस तिथि को फर्म की ख्याति का मूल्य ₹72,000 किया गया। फर्म की पुस्तकों में साझेदारों के पूँजी खाते बनाइये तथा फर्म का चिट्ठा बनाइये।
On that date they decided that Suresh, Ramesh and Mahesh will share profits in future in the ratio of 2: 2: 1 respectively. The goodwill of the firm was valued at ₹72,000 on that date. Prepare Partner's Capital Accounts and Balance Sheet of the firm.

Ans.: Capital A/c Suresh ₹2,23,200; Ramesh ₹1,39,200; Mahesh ₹97,600; B/S ₹6,20,000.
Suresh $\frac{3}{30}$ (SR); Ramesh $(-)\frac{2}{30}$ (G/R); Mahesh$(-)\frac{1}{30}$ (GR).

17. नरदीप, हरदीप तथा गगनदीप एक फर्म के साझेदार थे तथा 2 : 1 : 3 के अनुपात में लाभ बाँटते थे। 31-03-2017 को उनका स्थिति विवरण निम्न प्रकार से था :
Nardeep, Hardeep and Gagandeep were partners in a firm sharing profits in 2: 1: 3 ratio. Their Balance sheet as on 31.3.2017 was as follows:

Liabilities		Amount ₹	Assets	Amount ₹
Creditors		1,00,000	Land	1,00,000
Bills Payable		40,000	Building	1,00,000
General Reserve		60,000	Plant	2,00,000
Capital:			Stock	80,000
Nardeep	2,00,000		Debtors	60,000
Hardeep	1,00,000		Bank	10,000
Gagandeep	50,000	3,50,000		
		5,50,000		**5,50,000**

1-4-2017 से नरदीप, हरदीप तथा गगनदीप ने भविष्य में लाभ बराबर–बराबर बाँटने का निर्णय लिया इसके लिए यह समझौता हुआ कि : (क) फर्म की ख्याति का मूल्यांकन ₹3,00,000 किया जाये। (ख) भूमि का पुनर्मूल्यांकन ₹1,60,000 पर किया जाये तथा भवन पर 6% मूल्य ह्रास लगाया जाये। (ग) ₹12,000 के लेनदार दावा नहीं करेंगे अतः इन्हें अपलिखित कर दिया जाना चाहिए। पुनर्मूल्यांकन खाता, साझेदारों के पूँजी खाते तथा पुनर्गठित फर्म का स्थिति विवरण तैयार कीजिए।
From 1.4.2017, Nardeep, Hardeep and Gagandeep decided to share the future profits equally. For this purpose it was decided that : (a) Goodwill of the firm be valued at ₹3,00,000. (b) Land be revalued at ₹1,60,000 and building be depreciated by 6%. (c) Creditors of ₹12,000 were not likely to be claimed and hence be written off. Prepare, Revaluation Account, Partners Capital Accounts and the Balance Sheet of the reconstituted firm.

Ans. Profit on Revaluation ₹66,000. Capital A/c : Nardeep ₹2,42,000; Hardeep ₹71,000; Gagandeep ₹1,63,000; B/S ₹6,04,000; Hardeep $(-)\frac{1}{6}$ (GR); Gagandeep $\frac{1}{6}$ (SR).

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

18. A व B एक फर्म में 3 : 2 के अनुपात में लाभ विभाजन करते हुए साझेदार हैं। 31.03.17 को उनका स्थिति विवरण निम्न प्रकार था।

A & B are partners sharing profit in the ratio of 3 : 2 in a firm. On 31.3.2017 their Balance Sheet was as follows:

Balance sheet As on 31 March, 2017

Liabilities		Amount (₹)	Assets	Amount(₹)
Creditors		40,000	Cash at Bank	40,000
Provision for Bad-debts		2,000	Debtors	50,000
Employee's Provident fund		8,000	Stock	30,000
Bank Loan		40,000	Investments	10,000
P & L A/c		20,000	Building	1,00,000
General Reserve		10,000	Machinery	40,000
Capital			Furniture	4,000
A	1,00,000		Patent	6,000
B	80,000	1,80,000	Goodwill	15,000
			Deferred Revenue Expenditure	5,000
		3,00,000		**3,00,000**

वे C को लाभों में $\frac{1}{5}$ हिस्से के लिए प्रवेश देते हैं। C अपना पूरा हिस्सा A से प्राप्त करता हैं। C अपने लाभ के $\frac{1}{5}$ भाग के लिए आनुपातिक पूँजी लायेगा। (i) फर्म की ख्याति का मूल्यांकन पिछले 3 वर्षों के औसत लाभों ₹ 10,000 के दो वर्षों के क्रय के बराबर किया गया। C ख्याति की राशि नकद लाता हैं। (ii) ऐसी सम्पत्ति जिसका पुस्तकों में लेखा नहीं हुआ ₹ 10,000 (iii) विनियोगों का मूल्यांकन ₹ 12,000 पर किया गया व इसी मूल्य पर A ने ले लिए। (iv) सामान्य संचय की आधी राशि साझेदारों ने निकाल ली। (v) भवन के मूल्य में 10% से वृद्धि हो गयी। (vi) मशीन का मूल्य 10% अधिक करना हैं। (vii) फर्नीचर का मूल्य 10% कम करना हैं। (viii) अदत्त वेतन ₹2,000. (ix) एकस्व का मूल्य ₹ 3,000 से कम करें। (x) कर्मचारी क्षतिपूर्ति संचय के विरूद्ध ₹2,000 का दायित्व निश्चित किया गया। (xi) पूर्वदत्त बीमा ₹1,000. (xii) बैंक ऋण का भुगतान कर दिया गया हैं। (xiii) लेनदारों में शामिल ₹ 4,000 के दायित्व का भुगतान नहीं करना हैं। (xiv) डूबत ऋण ₹ 3,000. (xv) स्कंध को ₹26,000 तक कम करें। पुनर्मूल्यांकन खाता, साझेदारों के पूँजी खाते व नयी फर्म का चिट्ठा बनाइये।

They decided to admit C for 1/5th share. He takes his share entirely from A. He had to contribute the proportionate capital. (i) Goodwill of the firm is valued at 2 years purchase of average profit of last 3 years. Which was ₹10,000. C brings his share of goodwill in cash. (ii) Unrecorded Assets ₹10,000 (iii) Investment valued at ₹12,000 & taken by A. (iv) ½ of General Reserve withdrawn by the partners. (v) Land & Building appreciate by 10%. (xi) Plant & Machinery valued at 20% more. (vii) Furniture valued at 10% Less. (viii) Outstanding Salary ₹2,000. (ix) Patent reduced by ₹3,000. (x) Liability of Workmen compensation is ₹2,000. (xi) Prepaid Insurance ₹1,000. (xii) Bank Loan would be paid off. (xiii) A Liability of ₹4,000 included in creditors was not likely to arise. (xiv) Bad debts ₹3,000. (xv) Stock is reduced to ₹26,000. Prepare Revaluation A/c, Partner's Capital A/cs and the Balance Sheet of the new firm.

Ans: Profit on Revaluation ₹18,600; Capital A/c : A. ₹1,06,160; B. ₹89,400 C. ₹48,900; B/S ₹2,92,500; Cash Balance ₹47,900

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

3

साझेदार का अवकाश ग्रहण (निवृत्ति) व मृत्यु पर लेखे
(Accounting for Retirement and Death of Partner)

अध्ययन उद्देश्य (Learning Objectives)

इस अध्याय के अध्ययन करने के पश्चात् आप यह समझने योग्य हो जाते हैं:–

- साझेदार के अवकाश ग्रहण का अर्थ व विधियाँ
- किसी साझेदार के अवकाश ग्रहण या मृत्यु पर नये लाभ विभाजन अनुपात व फायदे(लाभ प्राप्ति) का अनुपात ज्ञात करना।
- त्याग अनुपात व फायदे के अनुपात में अन्तर ज्ञात करना
- किसी साझेदार के अवकाश ग्रहण या मृत्यु पर ख्याति संबंधी लेखा व्यवहार
- किसी साझेदार के अवकाश ग्रहण या मृत्यु पर सम्पतियों का पुनर्मूल्यांकन व दायित्वों के पुनः निर्धारण पर पुनर्मूल्याकन खाता बनाना
- किसी साझेदार के अवकाश ग्रहण या मृत्यु पर संचित लाभों–हानियों व संचयों का लेखा व्यवहार
- किसी साझेदार के अवकाश ग्रहण पर संयुक्त व पृथक जीवन बीमा पत्र का लेखा व्यवहार
- किसी साझेदार के अवकाश ग्रहण या मृत्यु पर देय राशि का निर्धारण व भुगतान
- किसी साझेदार के अवकाश ग्रहण या मृत्यु पर पूँजी का समायोजन
- मृत साझेदार के प्रतिनिधि का खाता तैयार करना
- यदि साझेदार की निवृति व प्रवेश साथ–2 हो तो लेखांकन व्यवहार
- किसी साझेदार के अवकाश ग्रहण या मृत्यु पर देय राशि का निस्तारण न करने पर धारा 37 के प्रावधान

जब कोई साझेदार स्वेच्छा से, वृद्धावस्था, अस्वथता, पारस्परिक मतभेद, आपसी सहमति अथवा अन्य किसी भी कारण से फर्म से अलग हो जाता हैं तो उसे साझेदार का अवकाश करना कहते हैं। अवकाश ग्रहण करने वाले साझेदार को बाहर जाने वाला साझेदार(out-going partner) भी कहते हैं। भारतीय साझेदारी अधिनियम 1932 की धारी 32(1) के अनुसार निम्न दशाओं में साझेदार अवकाश ग्रहण कर सकता हैं–

(i) समस्त साझेदारों की सहमति से, **(ii)** साझेदारों के मध्य हुऐ स्पष्ट ठहराव के अनुसार, **(iii)** यदि साझेदारी ऐच्छिक हैं तो शेष सभी साझेदारों को अपने अवकाश ग्रहण की सूचना देकर।

साझेदार के अवकाश ग्रहण पर आने वाली लेखांकन समस्याएं(Accounting problems arising at the time of Retirement of a Partner):

1. नया लाभ हानि अनुपात तथा फायदे का अनुपात ज्ञात करना, 2. ख्याति का समायोजन, 3. सम्पतियों व दायित्वों का पुनर्मूल्यांकन, 4. संचित लाभों अथवा हानियों का विभाजन, 5. संयुक्त जीवन बीमा पॉलिसी का समायोजन, 6. अवकाश ग्रहण करने वाले साझेदार को देय राशि का निर्धारण, 7. अवकाश ग्रहण करने वाले साझेदार के उत्तराधिकारी को देय राशि का भुगतान, 8. पूँजी का समायोजन

नया लाभ विभाजन अनुपात ज्ञात करना
(Calculation of New Profit Sharing Ratio)

साझेदार के अवकाश ग्रहण करने पर शेष साझेदारों के लाभ विभाजन अनुपात में परिवर्तन होता हैं, अतः नये लाभ विभाजन अनुपात की गणना आवश्यक हो जाती हैं। नया लाभ विभाजन अनुपात वह अनुपात हैं जिसमें शेष साझेदार

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

भविष्य में होने वाले लाभ का विभाजन करेंगे। इसकी गणना निम्न सूत्र से करेगें एवं अग्र–लिखित उदाहरणों से समझेंगें।

New Profit Sharing Ratio(NPSR) = Old Profit Sharing Ratio(OPSR) + Gaining Ratio(GR);
Gaining Ratio(GR) = New Profit Sharing Ratio(NPSR) - Old Profit Sharing Ratio(OPSR)

I. जब प्रश्न में शेष साझेदारों का नया अनुपात नहीं दिया गया हो ऐसी स्थिति में यह मान लिया जाऐगा कि शेष साझेदार अपने पुराने अनुपात में ही लाभ विभाजन करेंगे अर्थात् पुराना अनुपात ही नया अनुपात बन जायेगा।

(i) A, B व C एक फर्म में साझेदार हैं जो 3:2:1 में लाभ विभाजन करते हैं। नये लाभ विभाजन अनुपात की गणना करें, यदि **i.** A अवकाश ग्रहण करता हैं तो नया अनुपात 2:1 होगा। **ii.** B अवकाश ग्रहण करता हैं तो नया अनुपात 3:1 होगा। **iii.** C अवकाश ग्रहण करता हैं तो नया अनुपात 3:2 होगा।

Note: अवकाश ग्रहण करने वाले साझेदार के हिस्से को हटाकर शेष साझेदारों का अनुपात ही नया लाभ विभाजन अनुपात कहलाता हैं।

II. जब एक साझेदार अवकाश ग्रहण करने वाले साझेदार का सम्पूर्ण हिस्सा क्रय कर लेता हैं: ऐसी स्थिति में हिस्सा क्रय करने वाले साझेदार के लाभ विभाजन अनुपात में वृद्धि होगी व अन्य साझेदारों के अनुपात में कोई परिवर्तन नहीं होता हैं।

उदाहरण: A, B व C एक फर्म में साझेदार हैं और 2:2:1 के अनुपात में लाभ विभाजन करते हैं। C फर्म से अवकाश ग्रहण करता हैं। C का पूरा हिस्सा A क्रय करता हैं तो नया लाभ–विभाजन अनुपात होगा।

NPSR = OPSR + GR or A का नया अनुपात $\frac{2}{5}+\frac{1}{5}=\frac{3}{5}$; A व B का नया अनुपात $\frac{3}{5}:\frac{2}{5}=3:2$

III. जब शेष साझेदार ग्रहण करने वाले साझेदार के हिस्सें को किसी विशेष अनुपात में खरीदते हैं:–

ऐसी स्थिति में शेष साझेदारों के पुराने अनुपात में उनके द्वारा अवकाश ग्रहण करने वाले साझेदार के क्रय किये गये हिस्से को जोड़ दिया जाता हैं, जैसे:

(i) A, B व C 5:4 के अनुपात में लाभ बांटते हुए साझेदार हैं B ने अवकाश ग्रहण किया। B के हिस्से को A व C ने बराबर–बराबर अनुपात में लिया हैं तो नया लाभ–विभाजन अनुपात होगा।

B का हिस्सा $\frac{4}{12}$, A का लाभ $\frac{4}{12}\times\frac{1}{2}=\frac{2}{12}$, C का लाभ $\frac{4}{12}\times\frac{1}{2}=\frac{2}{12}$

NPSR= OPSR + GR; A का नया अनुपात $=\frac{5}{12}+\frac{2}{12}=\frac{7}{12}$, C का नया अनुपात $=\frac{3}{12}+\frac{2}{2}=\frac{5}{12}$, or 7:5

(ii) A, B व C 5:3:2 के अनुपात में लाभ बाँटते हुए साझेदार हैं C अवकाश ग्रहण करता हैं। C का हिस्सा A व B 2:1 के अनुपात में क्रय कर लेते हैं। नया लाभ विभाजन अनुपात होगा।

C का हिस्सा $\frac{2}{10}$; A के फायदे का हिस्सा $\frac{2}{10}\times\frac{2}{3}=\frac{4}{30}$; B के फायदे का हिस्सा $\frac{2}{10}\times\frac{1}{3}=\frac{2}{30}$

NPSR= OPSR + GR; A का नया अनुपात $=\frac{5}{10}+\frac{4}{30}=\frac{9}{30}$, B का नया अनुपात $=\frac{3}{10}+\frac{2}{30}=\frac{11}{30}$,or 19:11

लाभ प्राप्ति अनुपात/अधिलाभ अनुपात/ फायदे का अनुपात (Gaining Ratio)

वह अनुपात जिसमें शेष साझेदार अवकाश ग्रहण करने वाले या मृत साझेदार के भाग को प्राप्त करते हैं उसे फायदे अनुपात कहते हैं। इस अनुपात की गणना का उद्देश्य अवकाश ग्रहण करने वाले या मृत साझेदार को देय ख्याति की राशि इसी अनुपात में शेष साझेदारों से वसूल की जाती हैं।

(i) जब नया लाभ विभाजन अनुपात दिया गया हो: उदाहरण: (i) A, B व C एक फर्म में बराबर के साझेदार हैं, B अवकाश ग्रहण करता हैं। नया लाभ विभाजन अनुपात 5:4 हैं तो फायदे का अनुपात होगा।

फायदे का अनुपात (G.R.) = NPSR – OPSR; A $=\frac{5}{9}-\frac{1}{3}=\frac{2}{9}$, B $=\frac{4}{9}-\frac{1}{3}=\frac{1}{9}$, or 2:1

(ii) जब प्रश्न में नया अनुपात न दिया गया हो– इस दशा में यह मान लिया जाता हैं कि शेष साझेदार अवकाश ग्रहण करने वाले साझेदार के लाभों को अपने पुराने अनुपात में ही प्राप्त किया हैं। इस प्रकार पुराना अनुपात ही फायदे का अनुपात होगा।

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

(iii) A, B व C एक फर्म में साझेदार हैं, जो 5 : 4 : 1 के अनुपात में लाभ विभाजन करते हैं। निम्न में से प्रत्येक दशा में फायदे का अनुपात होगा। जबकि– **(a)** A अवकाश ग्रहण करता हैं तब 4 : 1 **(b)** B अवकाश ग्रहण करता हैं तब 5 : 1 **(c)** C अवकाश ग्रहण करता हैं तो तब 5 : 4

त्याग अनुपात व फायदे (लाभ प्राप्ति) के अनुपात में अन्तर

अन्तर का आधार	त्याग अनुपात	फायदे का अनुपात
1. अर्थ	इसमें पुराने साझेदार अपने लाभ का हिस्सा नये साझेदार के पक्ष में त्याग करते हैं।	इसमें शेष साझेदार अवकाश ग्रहण करने वाले साझेदार या मृत साझेदार के लाभ के भाग को प्राप्त करते हैं।
2. गणना का समय	नये साझेदार के प्रवेश पर	किसी साझेदार के अवकाश ग्रहण या मृत्यु पर
3. गणना का सूत्र	पुराना लाभ विभाजन अनुपात– नया लाभ विभाजन अनुपात	नया लाभ विभाजन अनुपात – पुराना लाभ विभाजन अनुपात
4. गणना का उद्धेश्य	नये साझेदार के हिस्से की ख्याति की राशि को त्याग अनुपात में पुराने साझेदारों में बाँटा जाता हैं।	अवकाश ग्रहण करने वाले या मृतक साझेदार की ख्याति के हिस्से को शेष साझेदार फायदे के अनुपात में बाँटते हैं।
5. प्रभाव	यह पुराने साझेदारों के लाभ के हिस्से में कमी का प्रतीक हैं।	यह शेष साझेदारों के लाभ के हिस्से में वृद्धि का प्रतीक हैं।

ख्याति का लेखांकन व्यवहार
(Accounting Treatment of Goodwill)

लेखा मानक 26/New Indian Accounting Standard 38 के अनुसार केवल क्रय की गयी ख्याति को ही पुस्तकों में दिखाया जा सकता हैं अर्थात जिसके लिए नकद प्रतिफल चुकाया गया हो इस प्रकार स्वअर्जित ख्याति का लेखा नहीं होता हैं। अतः किसी साझेदार के अवकाश ग्रहण करने पर /मृत्यु के समय ख्याति का समायोजन पूँजी खातों के माध्यम से किया जायेगा। ख्याति खाता पुस्तकों में नही खोला जा सकता। इस सम्बन्ध में लेखांकन प्रविष्टियां होगी :

1. यदि चिट्ठे में ख्याति खाता विद्यमान हो तो उसे अपलिखित करने पर

All Partner's Capital A/c Dr.
To Goodwill A/c
(Being existing goodwill written off in OPSR)

2. अवकाश ग्रहण/मृत साझेदार के हिस्से से ख्याति का लेखा

Remaining Partner's Capital A/c Dr.
To Retiring / Deceased Partner's Capital A/c
(Being Retiring/Deceased Partner's share of goodwill adjusted in GR)

विभिन्न उदाहरणों से ख्याति का लेखांकन व्यवहार हम भलीभांति समझ समझ सकेंगे :

उदाहरण 1 : (i) A, B व C एक फर्म में साझेदार हैं C के अवकाश ग्रहण करने पर फर्म की ख्याति का मूल्य ₹ 60,000 निश्चित किया गया। A व B भविष्य में लाभ 3 : 2 के अनुपात में बाँटेंगे। पुस्तकों में ख्याति ₹ 36,000 दिखाया हुआ हैं, ख्याति के लिए आवश्यक जर्नल प्रविष्टियां कीजिये।

Gain Ratio = NPSR – OPSR; A = $\frac{3}{5} - \frac{1}{3} = \frac{9-5}{15} = \frac{4}{15}$; B = $\frac{2}{5} - \frac{1}{3} = \frac{6-5}{15} = \frac{1}{15}$; or 4:1

A's Capital A/c	Dr.	16,000	
B's Capital A/c	Dr.	4,000	
To C's Capital A/c			20,000
(Being retiring Patner's share of goodwill adjusted to remaining partner's in their gaining ratio)			
A's Capital A/c	Dr.	12,000	
B's Capital A/c	Dr.	12,000	
C's Capital A/c	Dr.	12,000	
To Goodwill A/c			36,000

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

(Being existing goodwill written off)

(ii) A, B व C लाभों को 3 : 4 : 3 के अनुपात में बाँटते हुए साझेदार हैं। C के अवकाश ग्रहण करने पर फर्म की ख्याति का मूल्यांकन ₹ 60,000 पर निश्चित किया गया। नया लाभ विभाजन अनुपात 3 : 7 हैं। ख्याति के सम्बन्ध में आवश्यक प्रविष्टि दीजिए।

फायदे का अनुपात (G.R.) = NPSR – OPSR; A = $\frac{3}{10} - \frac{3}{10} = \text{Nil}(0)$; B = $\frac{7}{10} - \frac{4}{10} = \frac{3}{10}$

B's Capital A/c	Dr.	18,000	
To C's Capital A/c			18,000
(Being C's Share of goodwill ₹ 18,000 adjusted with gaining partner B)			

(iii) किसी साझेदार के अवकाश ग्रहण/मृत्यु की दशा में बचे हुए साझेदारों में से कोई लाभ में अपने भाग का कुछ अंश त्याग करता हैं तो अवकाश ग्रहण/मृत साझेदार के पूँजी खाते के साथ उसके खाते को भी क्रेडिट किया जायेगा।

(Gaining) Remaining partner's Capital A/c	Dr.	(लाभ प्राप्त करने के हिस्से की ख्याति)
To Retiring Partner's Capital A/c		(अवकाश ग्रहण करने वाले के हिस्से की ख्याति)
To Sacrificing Partner's Capital A/c		(त्याग करने वाले के हिस्से की ख्याति)
(Being adjustment for goodwill made)		

उदाहरण 2 : A, B व C एक फर्म में 3 : 2: 1 के अनुपात में लाभ बाँटते हुए साझेदार हैं। C ने अवकाश ग्रहण किया। A व B के बीच नया लाभ विभाजन अनुपात 1 : 2 हैं। फर्म की ख्याति का मूल्यांकन ₹ 60,000 पर किया गया। ख्याति के लिए आवश्यक प्रविष्टि दीजिये।

फायदे का अनुपात (G.R.) = NPSR – OPSR(त्याग); A = $\frac{1}{3} - \frac{3}{6} = -\frac{1}{6}$; B = $\frac{2}{3} - \frac{2}{6} = \frac{2}{6}$(Gain)

यहां पर वर्तमान साझेदार B को फायदा हुआ हैं, उसके लिए उसे A व C दोनों को ख्याति में हिस्सा देना होगा। B देगा = $60{,}000 \times \frac{2}{6}$ = ₹ 20,000 तथा A व C का पूँजी खाता उनके त्याग अनुपात में अर्थात A = $60{,}000 \times \frac{1}{6}$ = ₹ 10,000, व C = $60{,}000 \times \frac{1}{6}$ = ₹ 10,000 से क्रेडिट होगा–

B's Capital A/c	Dr.	20,000	
To C's Capital A/c			10,000
To A's Capital A/c			10,000
(Being A & C compensated for goodwill)			

(iv) गुप्त ख्याति का लेखाः जब फर्म से अवकाश ग्रहण करने वाले साझेदार को उसकी वास्तविक देय राशि(सभी समायोजनों के पश्चात् देय राशि) से अधिक भुगतान किया जाता हैं तो इस आधिक्य राशि को ख्याति में उसका भाग माना जाता हैं। जैसेः A, B व C साझेदार हैं। B अवकाश ग्रहण करता हैं। B के पूँजी खाते का शेष सभी समायोजनों के बाद ₹ 50,000 हैं तथा A व C उसको पूर्ण भुगतान में ₹ 60,000 चुकाने का निर्णय करते हैं, तो 60,000 – 50,000 = ₹10,000, B को ख्याति का भुगतान माना जायेगा। ख्याति की यह राशि A व C के फायदे के अनुपात में उनके पूँजी खाते में क्रेड़िट की जायेगी।

उदाहरण 3 : A, B व C एक फर्म में लाभों को 3 : 2 : 3 के अनुपात में बाँटते हुए साझेदार हैं। C अवकाश ग्रहण करता हैं। C के पूँजी खाते का शेष सभी समायोजनों के बाद ₹ 1,20,000 हैं और A व B ने उसे पूर्ण भुगतान में ₹ 1,50,000 देने का निर्णय किया हैं। ख्याति के व्यवहार के लिए आवश्यक जर्नल प्रविष्टि कीजिए।

गुप्त ख्याति(Hidden Goodwill) =1,50,000 – 1,20,000 = ₹ 30,000

A's Capital A/c	Dr.	18,000	
B's Capital A/c	Dr.	12,000	
To C's Capital A/c			30,000
(Being C's Share of goodwill adjusted in gaining Ratio 3:2)			

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

सम्पतियों का पुनर्मूल्यांकन व दायित्वों का पुनः निर्धारण
(Revalution of Assets & Reassessment of Liabilities)

I. जबकि सम्पतियां पुनर्मूल्यांकन मूल्य पर पुस्तकों में दिखानी हों:

इस दशा में गणना, प्रविष्टियां व पुनर्मूल्यांकन खाता ठीक उसी प्रकार बनाया जायेगा जैसा कि नये साझेदार के प्रवेश पर बनाया जाता हैं। पुनर्मूल्यांकन पर लाभ–हानि को सभी साझेदारों(अवकाश ग्रहण करने वाले साझेदार सहित) में उनके पुराने लाभ विभाजन अनुपात में बांटा जायेगा। इसकी प्रविष्टि होगी:

लाभ होने पर– Revaluation A/c Dr.
To All Partner's Capital A/c(OPSR)
(Being distribution of profits on revaluation)

हानि होने पर– All Partner's Capital A/c Dr.(OPSR)
To Revaluation A/c)
(Being distribution of loss on revaluation)

II- जब **पुनर्मूल्यांकित मूल्य पुस्तकों में नहीं दिखाया जाता हैं:** अर्थात् सम्पतियों व दायित्वों को पुराने मूल्य पर ही दिखाना हो तो इस विधि को स्मरणार्थ पुनर्मूल्यांकन विधि भी कहते हैं। प्रथम भाग पुनर्मूल्यांकन खाते की भांति ही बनता हैं। इससे प्राप्त लाभ/हानि को द्वितीय भाग में पुराने साझेदारों में उनके पुराने अनुपात में बाँटने की प्रविष्टि कर उसी राशि की विपरीत प्रविष्टि शेष साझेदारों में यह राशि नये अनुपात में बाँटने के लिए कर द्वितीय भाग को बंद कर देते हैं। प्रथम भाग के लिए कोई प्रविष्टि नहीं बनायी जाती हैं। द्वितीय भाग के लिए प्रविष्टि होगी:

1. पुनर्मूल्यांकन पर लाभ का विभाजन द्वितीय भाग में करने पर:
   Memorandum Revaluation A/c Dr. (in OPSR)
   To Old Partners Capital A/c
   (Profit transferred to Capital A/c)

नोट: हानि की दशा में विपरीत प्रविष्टि करेंगे।

2. उक्त लाभ के लिये विपरीत प्रविष्टि करने पर–
   Remaining Partner's Capital A/c Dr.(in NPSR)
   To Memorandum Revaluation A/c
   (Adjustment made for such profit)

नोट: हानि की दशा में विपरीत प्रविष्टि होगी। उपरोक्त सम्पूर्ण प्रक्रिया विस्तृत रूप से साझेदार का प्रवेश अध्याय में समझाई हुई हैं, यहां संक्षिप्त में दिया गया हैं।

संचित लाभों अथवा हानियों का समायोजन
(Adjustment of Accumulated Profits/Losses)

यदि किसी साझेदार के अवकाश ग्रहण करने अथवा मृत्यु हो जाने पर फर्म के चिट्ठे में संचय, संचित लाभ व संचित हानियों का बंटवारा सभी साझेदारों में(अवकाश ग्रहण करने वाले साझेदार/मृत साझेदार सहित) उनके पुराने अनुपात में किया जाता हैं। संचय व अवितरित लाभों के संबंध में निम्न प्रविष्टि होगी:

General Reserve A/c Dr.
P&L A/c Dr.
Investment Fluctuation Reserve A/c Dr. (विनियोग के मूल्य में कमी को घटाकर यदि कोई हो)
Workmen Compensation Reserve A/c Dr. (दायित्व घटाने के बाद यदि कोई शेष हैं तो)
To All Partner's Capital A/c (OPSR)
(Being reserves & accumulated profits transferred to Partner's Capital A/c in OPSR)

अवितरित हानियों के लिए प्रविष्टि करेंगें:

All Partner's Capital A/c Dr.
To Profit and Loss A/c
To Advertisement Exp. A/c (Deferred Revenue Expenditure A/c)
(Losses distributed)

Note: Employees Provident Fund फर्म के लिए दायित्व हैं अतः इसका वितरण साझेदारों में नहीं किया जायेगा।

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

अब उपरोक्त समस्याओं को सम्मिलित करते हुए अवकाश ग्रहण पर लेखांकन प्रक्रिया निम्नांकित उदाहरणों से समझेंगे:

उदाहरण 4 : X,Y and Z are partners sharing profits in ratio 2:2:1. Z decided to retire from the firm on 31st March, 2017. Their balance sheet stood as under:

X, Y व Z एक फर्म में साझेदार हैं जो 2:2:1 के अनुपात में लाभ विभाजन करते हैं। उनका 31–3–17 का स्थिति विवरण निम्नानुसार हैं। Z उपरोक्त तिथि को अवकाश ग्रहण करता हैं।

Liabilities		Amount ₹	Assets	Amount ₹
Creditors		30,000	Cash at Bank	36,500
Workmen Compensation Reserve		10,000	Debtors	51,500
Bills Payble		20,000	Investment	10,000
Provision for Doubtful Debts		1,000	Stock	40,000
Profit & Loss		8,000	Freehold Property	72,000
Bank Loan		6,000	Plant & Mechinery	50,000
Employee's Provident Fund		5,000	Furniture	20,000
General Reserve		10,000	Patent	6,000
Capitals:			Advertisement Expenses	5,000
X	80,000		Goodwill	9,000
Y	80,000			
Z	50,000	2,10,000		
		3,00,000		**3,00,000**

Other conditions at the time of retirement are as under:

(i) Goodwill of the firm be fixed at ₹ 1,00,000 **(ii)** Unrecorded Assets ₹ 5,000 **(iii)** Investment valued at ₹ 15,000 and taken by Z. **(iv)** Provision of ₹3,500 be made in respect of outstanding legal charges. **(v)** Freehold property appreciated by ₹ 8,000. **(vi)** Plant & Machinery overvalued by ₹ 10,000. **(vii)** Furniture reduced to ₹ 17,000. **(viii)** O/s salary ₹ 2,000. **(ix)** Patent reduced by ₹ 1,000. **(x)** Bad debts reserve is to be increased to ₹ 1,500 and provision for discount be created at 2%. **(xi)** Prepaid Insurance ₹ 1,000. **(xii)** Bank Loan would be paid off. **(xiii)** A liability of ₹ 5,000 included in creditors was not likely to arise. **(xiv)** A Liability against Workmen Compensation is ₹ 12,000. **(xv)** Stock is to be valued at 20% less. Prepare Revaluation Account.

अवकाश पर अन्य शर्तें इस प्रकार हैं:

(i) ख्याति का मूल्यांकन ₹ 1,00,000 पर किया गया। **(ii)** ₹ 5,000 कर सम्पतियाँ ऐसी हैं जिनका पुस्तकों में लेखा नहीं हुआ हैं। **(iii)** विनियोगों का मूल्यांकन ₹ 15,000 पर किया गया व Z ने ले लिए। **(iv)** बकाया कानूनी व्ययों के लिए ₹ 3,500 का प्रावधान किया जाये। **(v)** स्वकीय सम्पति के मूल्य में ₹ 8,000 से वृद्धि करे। **(vi)** संयत्र व मशीन ₹ 10,000 से अधिमूल्यांकित हैं। **(vii)** फर्नीचर को ₹ 17,000 तक कम करे। **(viii)** बकाया वेतन ₹ 2,000। **(ix)** एकस्व का मूल्य ₹ 1,000 से कम किया जाये। **(x)** डूबत ऋण आयोजन 2% बनाया जाये। **(xi)** पूर्वदत बीमा ₹ 1,000। **(xii)** बैंक ऋण का भुगतान कर दिया जाये। **(xiii)** लेनदारों में शामिल ₹ 5,000 के दायित्व का भुगतान नहीं करना पड़ेगा। **(xiv)** कर्मचारी क्षतिपूर्ति संचय के विरूद्व दायित्व ₹ 12,000। **(xv)** स्टॉक का मूल्य 20% कम करें। पुनर्मूल्यांकन खाता बनाइये।

हल: **Dr. Revaluation Account Cr.**

Particulars	Amount ₹	Particulars	Amount ₹
To Provision for Legal Expenses	3,500	By Unrecorded asset	5,000
To Plant & Machinary	10,000	By Investment A/c	5,000
To Furniture A/c	3,000	By Freehold Property	8,000
To Outstanding Salary A/c	2,000	By Prepaid Insurance A/c	1,000
To Patent	1,000	By Creditors A/c	5,000

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

To P.B.D. A/c		500	By Loss Transferred to:		
To P.D.D. A/c		1,000	X's Capital A/c	2,800	
To Liability for worksmen compensation		2,000	Y's Capital A/c	2,800	
			Z's Capital A/c	1,400	7,000
To Stock A/c		8,000			
		31,000			**31,000**

अवकाश ग्रहण करने वाले साझेदार को देय राशि का भुगतान
(Payment of Amount Due to Retiring Partner)

अवकाश ग्रहण करने वाले/साझेदार को भुगतान निम्न विधियों से किया जा सकता हैं: 1. एक मुश्त भुगतान, 2. पूँजी खाते का शेष ऋण खाते में हस्तान्तरण, 3.किश्तों में भुगतान, 4. वार्षिक विधि द्वारा भुगतान

1. **एक मुश्त भुगतान–** यदि फर्म के पास पर्याप्त तरल साधन(नकद व बैंक शेष) हो तो अवकाश ग्रहण करने वाले साझेदार को एक मुश्त भुगतान किया जा सकता हैं। इसके लिए आवश्यक प्राविष्टि होगी:

Retiring Partner's Capital A/c Dr.(देय राशि से)
To Cash/Bank A/c
(Being amount due to retiring Partner paid)

उदाहरण : 1 अप्रेल, 2017 को A फर्म से अवकाश ग्रहण करता हैं। उस तिथि को उसके पूँजी खाते में ₹ 60,000 समायोजित शेष था। 1 अप्रेल, 2017 को उसे एक मुश्त भुगतान कर दिया गया। जर्नल प्रविष्टि कीजिए:–

A's Capital A/c Dr. 60,000
To Cash A/c 60,000
(A's due amount paid)

कभी–कभी बैंक से ऋण लेकर अवकाश ग्रहण करने वाले साझेदार को भुगतान किया जाता हैं।

(a) बैंक से ऋण लेने पर: Bank A/c Dr.
To Bank Loan A/c

(b) अवकाश ग्रहण करने वाले साझेदार को भुगतान: Retiring Partners Capital A/c Dr.
To Bank A/c

(ii) पूँजी शेष को ऋण खाते में हस्तान्तरण के द्वारा (By Transferring Capital Account to his Loan Account)
सूचना के अभाव में अवकाश ग्रहण करने वाले साझेदार को देय रकम उसके ऋण खाते में हस्तांरित की जायेगी।

Retiring Partner's Capital A/c Dr.
To Retiring Partner's Loan A/c
(Being Amount due to Retiring Partner's transfer to his Loan A/c)

2. आंशिक भुगतान नकद में व आंशिक ऋण खाते में हस्तान्तरण द्वारा(Payment partly in cash & partly by transferring into Loan Account): कभी कभी कुछ राशि नकद चुका दी जाती हैं और बाकी राशि ऋण खाते में हस्तान्तरण कर दी जाती है तो प्रविष्टि होगी।

Retiring Partner's Capital A/c Dr.
To Cash A/c
To Retiring Partner's Loan A/c
(Being Retiring Partner paid partly in cash and balance transfer to his loan A/c)

3. किश्तों में भुगतान (Payment by Installment): आपसी सहमति से अवकाश ग्रहण करने वाले साझेदार को देय रकम का भुगतान किश्तों में किया जा सकता हैं। इस दशा में उसे देय राशि उसके ऋण खाते में हस्तान्तरित कर दी जाती हैं। तथा ऋण खाते के अदत्त शेष पर समझौते के अनुसार एक निश्चित प्रतिशत की दर से या समझौते के अभाव में 6% वार्षिक दर से ब्याज दिया जाता हैं।

लेखांकन प्रविष्टियां: (1) पूँजी खाते के शेष को ऋण खाते में हस्तान्तरित करने पर

Retiring Partner's Capital A/c Dr.
To Retiring Partner's Loan A/c
(Being Retiring Partner's Capital A/c balance transfer to his loan A/c)

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

(2) अदत्त राशि पर ब्याज के लिए

Interest A/c Dr.
To Retiring Partner's Loan A/c
(Being for interest to his loan A/c)

(3) किश्त की राशि ब्याज सहित भुगतान करने पर

Retiring Partner's Loan A/c Dr.
To Cash/Bank A/c
(Being installment paid)

उदाहरण 5 : B, 01-01-2014 को अवकाश ग्रहण करता है। उसके पूँजी खाते का समायोजित शेष ₹30,000 था, जिसका भुगतान तीन समान वार्षिक किश्तों में करना हैं। इस पर 6% वार्षिक दर से ब्याज देना भी तय हैं। B का ऋण खाता बनाइयें।

हल: Dr. B's Loan A/c Cr.

Date	Particulars	Amount₹	Date	Particulars	Amount₹
31.12.14	To Bank A/c (10,000 + 1,800)	11,800	01.01.14	By B's Capital A/c	30,000
	To Balance c/d	20,000		By Interest A/c (30,000 x 6%)	1,800
		31,800			**31,800**
31.12.15	To Bank A/c (10,000 + 1,200)	11,200	01-01-15	By Balance b/d	20,000
	To Balance c/d	10,000		By Interest A/c (20,000 x 6%)	1,200
		21,200			**21,200**
31.12.16	To Cash A/c (10,000 + 600)	10,600	01.01.16	By Balance b/d	10,000
				By Interest A/c (10,000 x 6%)	600
		10,600			**10,600**

(4) वार्षिकी द्वारा भुगतान(Payment by Annuity Methods): अवकाश ग्रहण करने वाले साझेदार अथवा मृत साझेदार के उत्तराधिकारियों को देय रकम का भुगतान वार्षिकी के रूप में किया जा सकता हैं। वार्षिकी का आशय वार्षिक भुगतान से हैं। इस विधि के अन्तर्गतः

(i) अवकाश ग्रहण करने वाले साझेदार अथवा मृत साझेदार को कुल देय राशि को वार्षिकी उचन्ती खाते या वार्षिकी खाते(Annuity Suspense A/c or Annuity A/c) में हस्तांतरित कर दिया जाता हैं।

(ii) प्रतिवर्ष वार्षिकी उचन्त खाते के शेष पर ब्याज क्रेडिट किया जाता हैं।

(iii) वार्षिकी का भुगतान करने पर वार्षिकी उचन्त खाते को डेबिट किया जाता हैं व बैंक खाते को क्रेडिट किया जाता है।

(iv) यदि वार्षिकी पाने वाले साझेदार की मृत्यु कुल भुगतान से पूर्व हो जाती है तो वार्षिकी उचन्ती खाते के शेष को शेष बचे साझेदारों में उनके लाभ विभान अनुपात में हस्तांतरित कर दिया जाता हैं।

(v) वार्षिकी उचन्त खाते का शेष समाप्त होने के बाद भी अवकाश ग्रहण करने वाला साझेदार जीवित रहता हैं तो भविष्य में उसे दी जाने वाली राशि को लाभ–हानि खाते से चार्ज किया जाता हैं।

जर्नल प्रविष्टियां: (1) कुल देय राशि की वार्षिक उचन्ती खाते में हस्तांतरित करने पर:

Retiring Partner's Capital A/c Dr.
To Annuity Suspense A/c
(Being balance of Retiring Partner's Capital A/c transferred to Annuity Suspense)

(2) अदत्त शेष पर ब्याज के लिए Interest A/c Dr.
To Annuity Suspense A/c
(Being interest due)

(3) वार्षिकी भुगतान के लिए Annuity Suspense A/c Dr.
To Bank/Cash A/c
(Being amount of Annuity paid)

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

(4) वार्षिकी खाते का शेष समाप्त होने से पूर्व ही साझेदार की मृत्यु हो जाये

Annuity Suspense A/c Dr.

To Remaining Partner's Capital A/c

(Being balance of Annuity Suspense A/c transfer remaining Partner's Capital A/c)

(5) वार्षिकी खाते का शेष समाप्त होने से पूर्व भी अवकाश ग्रहण करने वाला साझेदार जीवित रहे तो ऐसी स्थिति में जब तक जीवित रहे प्रतिवर्ष भुगतान की उपर्युक्त प्रविष्टि (3) के अलावा वर्ष अन्त में निम्न प्रविष्टि और होगी।

P & L A/c Dr.

To Annuity Suspense A/c

उदाहरण 6 : A, B व C साझेदार थे। B के द्वारा 31 मार्च 2012 को अवकाश ग्रहण करने पर सभी समायोजनों के बाद पूँजी खाते का क्रेडिट शेष ₹25,000 दिखाया गया। यह तय हुआ कि 10 प्रतिशत वार्षिक दर पर ₹6,000 प्रतिवर्ष जीवनोपरान्त वार्षिकी दी जाये। दूसरी वार्षिकी के भुगतान के तुरन्त बाद B की मृत्यु हो जाती हैं। B का वार्षिकी खाता बनाइये।

हल: Dr. B's Annuity A/c Cr.

Date	Particulars	J. F.	Amount ₹	Date	Particulars	J.F.	Amount ₹
31, March 2013	To Bank A/c		6,000	1, April 2012	By B's Capital A/c		25,000
	To Balance c/d		21,500	31, March 2013	By Interest A/c		2,500
			27,500				**27,500**
31, March 2014	To Bank A/c		6,000	1, April 2013	By Balance c/d		21,500
	To A's Capital A/c		8,825				
	To B's Capital A/c		8,825	31, March 2014	By Interest A/c		2,150
			23,650				**23,650**

उदाहरण 7 : A, B व C एक फर्म में साझेदार थे। C 01.01.14 को फर्म से अवकाश ग्रहण करता हैं, उस तिथि को समस्त समायोजनों के बाद उसका पूँजी खाता ₹40,000 का क्रेडिट शेष बताता हैं। निम्नलिखित प्रत्येक परिस्थिति में फर्म की पुस्तकों में आवश्यक खाते बनाइये।

(i) C को देय रकम उसे ऋण खाते में हस्तांतरित की जाती हैं। **(ii)** C को देय रकम का अवकाश ग्रहण के तुरंत बाद पूर्ण भुगतान कर दिया जाता हैं। **(iii)** C को देय रकम में से 50% नकद भुगतान व शेष 50% उसके ऋण खाते में हस्तांतरित कर दिया जाता हैं। **(iv)** C को भुगतान 10% वार्षिक ब्याज दर पर दो समान वार्षिक किश्तों में किया जाता हैं। **(v)** C को भुगतान 10% वार्षिक ब्याज दर पर दो समान अर्द्धवार्षिक किश्तों में किया जाता हैं। **(vi)** 10% वार्षिक ब्याज दर पर ₹10,000 प्रतिवर्ष की जीवन पर्यन्त वार्षिकी दी जाती हैं। यह मानते हुए कि C की मृत्यु द्वितीय वार्षिकी के भुगतान के तुरंत बाद हो जाती हैं। **(vii)** 10% वार्षिक ब्याज दर पर ₹16,000 प्रतिवर्ष की जीवन्त पर्यन्त वार्षिकी दी जाती हैं। यह मानते हुए कि C की मृत्यु चतुर्थ वार्षिकी के भुगतान के तुरंत बाद हो जाती हैं। **(viii)** C को भुगतान 10% वार्षिक ब्याज पर ₹15,000 की दो समान वार्षिक किश्तों में(ब्याज सहित) तथा शेष राशि(ब्याज सहित) तीसरे वर्ष के अन्त में भुगतान करनी हैं। **(ix)** C को भुगतान 10% वार्षिक ब्याज दर पर दो समान वार्षिक किश्तों में किया जाता हैं, प्रथम किश्त 1.1.15 से प्रारंभ होगी।

हल: (i) Dr. C's Capital Account Cr.

Particulars	Amount ₹	Particulars	Amount ₹
To B's Loan A/c	40,000	By Balance b/d	40,000
	40,000		**40,000**

(ii) Dr. C's Capital Account Cr.

Particulars	Amount ₹	Particulars	Amount ₹

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

To Cash/Bank A/c	40,000	By Balance b/d	40,000
	40,000		**40,000**

(iii) Dr. **C's Capital Account** **Cr.**

Particulars	Amount ₹	Particulars	Amount ₹
To Cash/Bank A/c	20,000	By Balance b/d	40,000
To C's Loan A/c	20,000		
	40,000		**40,000**

(iv) Dr. **C's Loan Account** **Cr.**

Date	Particulars	Amount ₹	Date	Particulars	Amount ₹
31-12-14	To Cash/Bank A/c (20000 + 4000)	24,000	01-01-14	By C's Capital A/c	40,000
31-12-14	To Balance c/d	20,000	31-12-14	By Interest A/c (40000x10%)	4,000
		40,000			**44,000**
31-12-15	To Cash/Bank A/c (20000 + 2000)	22,000	01-01-15	By Balance c/d	20,000
			31-12-15	By Interest A/c	2,000
		22,000			**22,000**

(v) Dr. **C's Loan Account** **Cr.**

Date	Particulars	Amount ₹	Date	Particulars	Amount ₹
30-06-14	To Cash/Bank A/c (20000 + 2000)	22,000	01-01-14	By C's Capital A/c	40,000
			30-06-14	By Interest A/c (40000x10/100 x 6/12)	2,000
31-12-14	To Cash/Bank A/c (20000 + 1000)	21,000	31-12-14	By Interest A/c	1,000
		43,000			**43,000**

(vi) Dr. **Annuity Suspense A/c** **Cr.**

Date	Particulars	Amount ₹	Date	Particulars	Amount ₹
31-12-14	To Cash/Bank A/c	10,000	01-01-14	By C's Capital A/c	40,000
31-12-14	To Balance c/d	34,000	30-06-14	By Interest A/c (40000x10%)	4,000
		44,000			**44,000**
31-12-15	To Cash/Bank A/c	10,000	01-01-15	By Balance c/d	34,000
31-12-15	To Capital A/c(Profit on Death)		31-12-15	By Interest A/c (34000 x 10%)	3,400
	A's Capital 13,700				
	B's Capital 13,700	27,400			
		37,400			**37,400**

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

(vii) Dr. Annuity Suspense A/c Cr.

Date	Particulars	Amount ₹	Date	Particulars	Amount ₹
31-12-14	To Cash/Bank A/c	16,000	01-01-14	By C's Capital A/c	40,000
31-12-14	To Balance c/d	28,000	31-12-14	By Interest A/c (40000x10%)	4,000
		44,000			**44,000**
31-12-15	To Cash/Bank A/c	16,000	01-01-15	By Balance b/d	28,000
31-12-15	To Balance c/d	14,800	31-12-15	By Interest A/c (28000 x 10%)	2,800
		30,800			**37,400**
31-12-16	To Cash/Bank A/c	16,000	01-01-16	By Balance b/d	14,800
31-12-16	To Balance c/d	280	31-12-16	By Interest A/c (14,800x10%)	1,480
		16,280			**16,280**
31-12-17	To Cash/Bank A/c	16,000	01-01-17	By Balance b/d	280
			31-12-17	By Interest A/c (280 x 10%)	28
			31-12-17	P & L A/c	15,692
		16,000			**16,000**

(viii) Dr. C's Loan A/c Cr.

Date	Particulars	Amount ₹	Date	Particulars	Amount ₹
31-12-14	To Cash/Bank A/c	15,000	01-01-14	By C's Capital A/c	40,000
31-12-14	To Balance c/d	29,000	31-12-14	By Interest A/c (40000x10%)	4,000
		44,000			**44,000**
31-12-15	To Cash/Bank A/c	15,000	01-01-15	By Balance b/d	29,000
31-12-15	To Balance c/d	16,900	31-12-15	By Interest A/c (29000 x 10%)	2,900
		31,900			**31,900**
31-12-16	To Cash/Bank A/c (16900 + 1690)	18,590	01-01-16	By Balance b/d	16,900
			31-12-16	By Interest A/c (16,900x10%)	1,690
		18,590			**18,590**

(ix) Dr. C's Loan A/c Cr.

Date	Particulars	Amount ₹	Date	Particulars	Amount ₹
31-12-14	To Balance c/d	44,000	01-01-14	By C's Capital A/c	40,000
			31-12-14	By Interest A/c (40000x10%)	4,000
		44,000			**44,000**
01-01-15	To Bank/Cash A/c	24,000	01-01-15	By Balance b/d	44,000

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

	(20000 + 4000)		31-12-15	By Interest A/c	
31-12-15	To Balance c\d	22,000		(20000 x 10%)	2,000
		46,000			**46,000**
01-01-16	To Cash/Bank A/c	22,000	01-01-16	By Balance b/d	22,000
		22,000			**22,000**

उदाहरण 8 : A, B व C साझेदार हैं जो कि लाभों को 2 : 3 : 1 के अनुपात में विभाजित करते हैं। 31–03–2017 को उनका स्थिति विवरण निम्न था–

A, B and C are partners sharing profits in the ratio 2 : 3 : 1. Their Balance Sheet as on 31-03-2017 was as follows:

Balance Sheet

Liabilities		Amount ₹	Assets	Amount ₹
Sundry Creditors		35,000	Cash	15,000
Provision for Bad debts		1,000	Sundry Debtors	20,000
Bank Loan		14,000	Stock	30,000
General Reserve		20,000	Furniture	10,000
Capital A/c's			Plant & Machine	40,000
A	45,000		Building	60,000
B	45,000		Goodwill	10,000
C	30,000	1,20,000	P & L A/c	5000
		1,90,000		**1,90,000**

B को उपरोक्त तिथि को अवकाश ग्रहण करण करता है, साझेदार निम्न शर्तों पर सहमत होते हैं:–

(i) फर्म की ख्याति का मूल्य ₹24,000 होगा। **(ii)** फर्नीचर पर 10% व संयत्र व मशीन पर 5% से ह्रास लगाया जाये। **(iii)** संदिग्ध ऋणों के लिए आयोजन को ₹1,500 तक बढाया जाये। **(iv)** स्टॉक का मूल्य 20% से व भवन का मूल्य 10% से बढाया जाये। **(v)** बीमा प्रीमियम की राशि जिसे प्रतिवर्ष लाभ–हानि खाते में लिखा जाता था, 31 मार्च 2017 को ₹1,500 असमाप्त बीमा प्रीमियम के रूप में आगे ले जाये गये। **(vi)** अदत्त वेतन के लिए ₹2,000 का प्रावधान किया जाये।

जर्नल प्रविष्टियां, पुनर्मूल्यांकन खाता साझेदारों के पूँजी खाते व नई फर्म का प्रारंभिक चिट्ठा बनाइये।

B Retires on the above date and the partners agreed that:

(i) The Goodwill do the Firm is to be valued at ₹24,000. **(ii)** Furniture, Plant & Machine are to be depreciated by 10% and 5% respectively. **(iii)** Provision for doubtful debts is to be increased to ₹1,500. **(iv)** Stock and Building are to be appreciated 20% and 10% respectively. **(v)** That out of the amount of Insurance Premium which was debited annually to P & L A/c ₹1,500 be carry forward for unexpired insurance on 31.03.17. **(vi)** That a provision for ₹2,000 be made in respect of outstanding salaries.

Pass journal entries and prepare Revaluation A/c , Partner's Capital A/c and Balance Sheet of the new firm.

हल:

Journal

Date	Particulars	L. F.	Amount Dr. ₹	Amount Cr. ₹
	General Reserve A/c Dr.		20,000	
	To A's Capital A/c			8,000
	To B's Capital A/c			8,000
	To C's Capital A/c			4,000
	(Being General Reserve transfer to Partner's Capital A/c			

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

	A's Capital A/c	Dr.		2,000	
	B's Capital A/c	Dr.		2,000	
	C's Capital A/c	Dr.		1,000	5,000
	To P & L A/c				
	(Being Loss transfer to Partner's Capital A/c)				
	A's Capital A/c	Dr.		4,000	
	B's Capital A/c	Dr.		4,000	
	C's Capital A/c	Dr.		2,000	
	To Goodwill A/c				10,000
	(Being Goodwill A/c written off)				
	Revaluation A/c	Dr.		5,500	
	To Furniture A/c				1,000
	To Plant & Machine A/c				2,000
	To P.B.D. A/c				500
	To Outstanding salaries A/c				2,000
	(Being Decrease in value of assets & increase in the amount of liabilities)				
	Stock A/c	Dr.		6,000	
	Building A/c	Dr.		6,000	
	Prepaid Insurance A/c	Dr.		1,500	
	To Revaluation A/c				13,500
	(Being values of assets increased0				
	Revaluation A/c	Dr.		8,000	
	To A's Capital A/c				3,200
	To B's Capital A/c				3,200
	To C's Capital A/c				1,600
	(Being profit on revaluation transfer to Partner's Capital A/c)				
	A's Capital A/c	Dr.		6,400	
	C's Capital A/c	Dr.		3,200	
	To B's Capital A/c				9,600
	(Being B's share of goodwill adjusted in gaining ratio)				
	B's Capital A/c	Dr.		59,800	
	To B's Loan A/c				59,800
	(Being B's balance of Capital A/c transferred to B's Loan A/c)				

Dr. **Revalution Account** **Cr.**

Particulars	Amount ₹	Particulars	Amount ₹
To Furniture A/c	1,000	By Stock A/c	6,000
To Plant & Machine A/c	2,000	By Building A/c	6,000
To P.B.D. A/c	500	By Prepaid Insurance A/c	1,500
To Outstanding Salaries A/c	2,000		

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

To Profit transferred to:				
A's Capital A/c	3,200			
B's Capital A/c	3,200			
C's Capital A/c	1,600	8,000		
		13,500		**13,500**

Dr. **Partner's Capital Account** **Cr.**

Particulars	A ₹	B ₹	C ₹	Particulars	A ₹	B ₹	C ₹
To P&L A/c	2000	2000	1000	By Balance b/d	45000	45000	30000
To Goodwill A/c	4000	4000	2000	By General Reserve	8000	8000	4000
To B's Capital	6400	-	3200	By Revaluation	3200	3200	1600
To B's Loan	-	59800	-	By A's Capital A/c	-	6400	-
To Balance c/d	43800	-	29400	By C's Capital A/c	-	3200	-
	56200	**65800**	**35600**		**56200**	**65800**	**35600**

Balance Sheet of A & C
As on 31 March, 2017

Liabilities		Amount ₹	Assets	Amount ₹
Sundry Creditors		35,000	Cash	15,000
Provision for Bad-debts A/c		1,500	Sundry Debtors	20,000
Outstanding Salaries		2,000	Stock	36,000
Bank Loan		14,000	Furniture	9,000
B's Loan A/c		59,800	Plant & Machine	38,000
Capital A/c			Building	66,000
A's Capital	43,800		Pre-paid Insurance	1,500
B's Capital	29,400	73,200		
		1,85,500		**1,85,500**

उदाहरण 9 : M, N और O आपस में साझेदार हैं जो लाभ–हानि को 1/2 : 1/3 : 1/6 के अनुपात में बाँटते हैं। 31 मार्च, 2014 को उनका स्थिति विवरण इस प्रकार हैं:

The Balance Sheet of M, N and O who are sharing profits and losses in the ratio of 1/2, 1/3 and 1/6 respectively, as at 31st March, 2014 Balance Sheet was as follows:

Liabilities		Amount ₹	Assets	Amount ₹
Bills Payable		7,000	Cash at Bank	25,650
Sundry Creditors		18,000	Bills Receivable	5,400
Profit and Loss A/c		6,000	Debtors	17,800
Investment Fluctuation Reserve		5,000	Stock	22,300
Capital A/cs:			Investment	12,000
M	50,000		Patents	10,000
N	25,000		Furniture	3,500
O	20,000	95,000	Plant and Machinery	9,750
			Building	24,000
			Advertisement Expenditure	600
		1,31,000		**1,31,000**

1 अप्रैल, 2014 को एम व्यवसाय से अवकाश लेता हैं एवं फर्म में उसके हिस्से की गणना सम्पतियों के निम्नानुसार पुनर्मूल्यांकन कर ज्ञात करना हैं: स्टॉक– ₹20,000; फर्नीचर ₹3,000; प्लांट एवं मशीनरी– ₹9,000; भवन– ₹20,000; विनियोग– ₹10,000; अर्जित आय ₹500; एकस्व ₹11,500; एवं संदिग्ध ऋणों के लिए– ₹850; का

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

प्रावधान किया जाना हैं। एक देनदार जिसमे ₹1,000 बकाया थे, डूबत ऋण मानकर अपलिखित कर दिया या उससे ₹400 वसूल हुए। फर्म की ख्याति का मूल्यांकन ₹6,000 पर सहमति हुईं तथा इस सम्बन्ध में समायोजन शेष साझेदारों में बिना ख्याति खाते खोले किया जाना हैं। एम को अवकाश ग्रहण करने पर ₹9,200 नकद दिये जाएँगे तथा शेष का भुगतान 5% प्रतिवर्ष ब्याज सहित तीन समान वार्षिक किस्तों में किया जाएगा।

पुनर्मूल्यांकन खाता, साझेदारों के पूँजी खाते फर्म का स्थिति–विवरण तैयार कीजिए एवं एम का ऋण खाता बनाइए जब तक की वह पूर्णतः बंद न हो जाये।

M retires from business on 1st April, 2014 and his share in the firm is to be ascertained on revaluation of assets as follows: Stock ₹20,000; Furniture ₹ 3,000; Plant and machinery ₹9,000; Building ₹20,000; Investment ₹10,000; Accrued Income ₹500; Patent ₹11,500 and ₹850 is to be provided for doubutful debts. A debtor whose dues of ₹1,000 were written off as bad debts paid ₹400. The goodwill of the firm is agreed to be valued at ₹ 6,000 and adjustment in this respect was to be made in the continuing Partners' Capital Account without raising Goodwill Account. M is to be paid ₹ 9,200 in cash on retirement and balance in three equal yearly installments with interest @ 5% p.a. Prepare Revaluation A/c, Partners' Capital A/c & Balance Sheet. Also prepare M's Loan A/c till it is finally closed.

हल:**Dr.** **Revaluation Account** **Cr.**

Particulars	Amount ₹	Particulars		Amount ₹
To Stock A/c	2,300	By Patent A/c		1,500
To Furniture A/c	500	By Accured Income		500
To Plant & Machinery	750	By Bad debts recovered		400
ToBuilding A/c	4,000	By Loss transferred to:		
To P.B.D. A/c	850	M's Capital A/c	3,000	
		N's Capital A/c	2,000	
		O's Capital A/c	1,000	6,000
	8,400			**8,400**

Dr. **Partner's Capital Account** **Cr.**

Particular	M ₹	N ₹	O ₹	Particulars	M ₹	N ₹	O ₹
To Advertisment Exp.	300	200	100	By Balance b/d	50,000	25,000	20,000
To Revaluation	3,000	2,000	1,000	By P & L A/c	3,000	2,000	1,000
To M's Capital	-	2,000	1,000	By Investment Fluctuation Reserve	1,500	1,000	500
To Bank A/c	9,200	-	-	By N's Capital A/c	2,000	-	-
To M's Loan A/c	45,000	-	-	By O's Capital A/c	1,000	-	-
To Balance c/d	-	23,800	19,400				
	57,500	**28,000**	**21,500**		**57,500**	**28,000**	**21,500**

Balance Sheet of N & O
As on 01 April, 2014

Liabilities		Amount ₹	Assets		Amount ₹
Bills Payable		7,000	Cash at Bank		16,850
Sundry Creditors		18,000	Bills Receivables		5,400
M's Loan A/c		45,000	Debtos	17,800	
			(-) PBD	850	16,950
			Stock		20,000
Capital A/c's			Patent		11,500
N	23,800		Accrured income		500
O	19,400	43,200	Furniture		3,000
			Plant & Machinery		9,000

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

		Building	20,000
		Investment	10,000
	1,13,200		**1,13,200**

Dr. **M's Loan Account** **Cr.**

Date	Particulars	Amount ₹	Date	Particulars	Amount ₹
31-3-15	To Bank A/c (15000+2250)	17,250	1-4-2014	By M's Capital A/c	45,000
31-3-15	To Balance c/d	30,000	31-3-15	By Interest 45000x5%	2,250
		47,250			**47,250**
31-3-16	To Bank A/c	16,500	1-4-15	By Balance b/d	30,000
31-3-16	To Balance c/d	15,000	31-3-16	By Interest	1,500
		31,500			**31,500**
31-3-17	To Bank A/c 15000+750	15,750	1-4-16	By Balance b/d	15,000
			31-3-17	By Interest A/c(1500x5%)	750
		15,750			**15,750**

कार्यशील टिप्पणियां(Working Notes):

(1) विनियोगों के मूल्य में कमी को निवेश उतार चढ़ाव संचय खाते से चार्ज किया गया हैं व शेष ₹ 3000 को साझेदारों में उनके पुराने लाभ विभाजन अनुपात में बाँटा गया हैं।

(2) M का ख्याति में हिस्सा $6000 \times \frac{1}{2} =$ ₹3,000 की फायदे के अनुपात 2:1 मं N व O के पूँजी खातों से समायोजित किया गया।

(3) बैंक शेष 25,650+400-9,200= ₹ 16,850

(4) M के ऋण खाते में हस्तान्तरित राशि ₹45,000 का भुगतान तीन समान वार्षिक किश्तों(प्रत्येक ₹ 15,000) का भुगतान 5% ब्याज सहित किया गया हैं।

उदाहरण 10 : X, Y तथा Z साझेदार हैं और लाभ तथा हानि का 2:2:1 के अनुपात में बाँटते हैं। 31 दिसम्बर, 2016 को उनका स्थिति विवरण इस प्रकार था:

X, Y and Z are partners sharing profits and losses in the ratio 2 : 2 : 1. Their Balance Sheet as on 31st December, 2016 was as under:

Liabilities		Amount ₹	Assets		Amount ₹
Creditors		37,000	Bank		9,000
Bills Payable		13,000	Debtors	40,000	
Reserve Fund		10,000	Less: Provision for D.D.	2,000	38,000
Capital Accounts			Stock		40,000
X	60,000		Furniture		20,000
Y	60,000		Machinery		78,000
Z	20,000	1,40,000	Goodwill		15,000
		2,00,000			**2,00,000**

1 जनवरी, 2017 को x ने निम्नलिखित शर्तों पर अवकाश ग्रहण किया:

(i) संदिग्ध ऋणों के लिए प्रावधान ₹2,000 बढा दिया जाए। **(ii)** स्टॉक का मूल्य ₹4,000 बढा दिया जाए और मशीनरी का घटाकर ₹75,000 कर दिया जाए। **(iii)** ₹ 1,200 के हर्जाने के लिए बकाया दावे का प्रावधान किया जाए। **(iv)** लेनदारों के ₹4,000 घटा दिए जाए। **(v)** फर्म की ख्याति का मूल्यांकन ₹60,000 किया जाए। **(vi)** शेष साझेदार एक्स के अवकाश ग्रहण पर ₹60,000 नकद देने के लिए सहमत हो गए, जो शेष साझेदारों द्वारा 3:2 के अनुपात में लाए जाऐंगे। एक्स की शेष पूँजी को ऋण मान लिया जाए।

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

पुनर्मूल्यांकन खाता, पूँजी खाते और नई फर्म का स्थिति विवरण बनाइए।

X retired on 1st January, 2017 on the following terms:

(i) Provision for doubtful debts be raised by ₹ 2,000. **(ii)** Stock be increased by ₹4,000 and Machinery be reduced to ₹75,000. **(iii)** Outstanding claim for damages of ₹1,200 is to be provided. **(iv)** Creditors be reduced by ₹4,000. **(v)** Goodwill of the firm is valued at ₹ 60,000. **(vi)** The continuing partners agreed to pay ₹ 60,000 in cash on retirement of X to be contributed by continuing partners in the ratio of 3:2. The balance capital of X be treated as loan.

Prepare Revaluation Account, Capital Account and Balance Sheet of new firm.

हल:

Dr. Revaluation Account Cr.

Particulars	Amount ₹	Particulars	Amount ₹
To Provision for Doubtful Debts A/c	2,000	By Creditors A/c	4,000
To Outstanding Claim for Damages A/c	1,200	By Stock A/c	4,000
To Machine A/c	3,000		
To Capital A/cs(Profit):			
X 720			
Y 720			
Z 360	1,800		
	8,000		**8,000**

Dr. Partner's Capital Account Cr.

Particulars	X₹	Y₹	Z₹	Particulars	X₹	Y₹	Z₹
To Goodwill A/c	6,000	6,000	3,000	By Balance b/d	60,000	60,000	20,000
To X's Capital A/c	-	16,000	8,000	By Reserve Fund A/c	4,000	4,000	2,000
To Bank A/c	60,000	-	-	By Revaluation A/c	720	720	360
To X's Loan	22,720	-	-	By Y's Capital A/c	16,000	-	-
To Balance c/d	-	78,720	35,360	By Z's Capital A/c	8,000	-	-
				By Bank A/c	-	36,000	24,000
	88,720	**1,00,720**	**46,360**		**88,720**	**1,00,720**	**46,360**

Balance Sheet of Y & Z

Liabilities	Amount ₹	Assets	Amount ₹
Creditors	33,000	Bank	9,000
Bills Payable	13,000	Debtors 40,000	
O/S Claim for Damages	1,200	Less: Provision for BD 4,000	36,000
X's Loan	22,720	Stock	44,000
Capital A/cs:		Furniture	20,000
Y 78,720		Machinery	75,000
Z 35,360	1,14,080		
	1,84,000		**1,84,000**

कार्यशील टिप्पणी:

(i) एक्स का ख्याति में हिस्सा 60,000 $\times \frac{2}{5}$ = ₹ 24,000 जिसे Y व Z के पूँजी खातों में उनके फायदे के अनुपात 2 : 1 में समायोजित किया गया हैं।

(ii) X को भुगतान करने के लिए ₹60,000 की राशि Y व Z 3:2 के अनुपात में क्रमशः ₹36,000 व ₹24,000 लेकर आते हैं।

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

पूँजी का समायोजन
(Adjustment of Capital)

किसी साझेदार के अवकाश ग्रहण करने अथवा मृत्यु हो जाने पर शेष साझेदारों के लाभ विभाजन अनुपात में परिर्वतन आ जाता हैं। फर्म की कुल पूँजी में भी परिवर्तन हो जाता हैं। इसलिए साझेदारों के पूँजी खातों को समायोजित करने की आवश्यकता होती हैं। इस सम्बन्ध में निम्नलिखित तीन स्थितियां हो सकती हैं–

1. जब नयी फर्म की कुल पूँजी दी गयी हो(When Total Capital of the New Firm is given):- गणना के निम्नांकित चरण हैं:

(i) शेष साझेदारों की समायोजित पूँजी ज्ञात की जायेगी।

(ii) शेष साझेदारों के लाभ विभाजन अनुपात में नयी फर्म की पूँजी को विभाजित कर उनकी आनुपातिक पूँजी ज्ञात की जायेगी।

(iii) समायोजित पूँजी व आनुपातिक पूँजी की तुलना करके पूँजी का आधिक्य(Surplus) या कमी(Deficiency) ज्ञात की जायेगी।

(iv) यदि किसी साझेदार के पूँजी खाते में आधिक्य(Surplus) हैं तो वह साझेदार आधिक्य राशि को फर्म से निकाल लेगा अथवा उसके चालू खाते में क्रेडिट कर दी जायेगी। इसके विपरीत कमी की पूर्ति नकद लाकर करनी होगी अथवा उसके चालू खाते में डेबिट की जायेगी।

जर्नल प्रविष्टियां: (1) यदि समायोजित पूँजी आनुपातिक से अधिक हो:

Concerned Partner's Capital A/c	Dr.	
To Cash/Bank/Concerned Partners' Current A/c		

(2) यदि समायोजित पूँजी, आनुपातिक पूँजी से कम हो,

Cash/Bank/Concerned Parners's Current A/c	Dr.	
To Concerned Partner's Capital A/c		

उदाहरण 11 : A, B व C साझेदार हैं, जो 3 : 2 : 1 में लाभ विभाजन करते हैं, C 31.3.16 को अवकाश ग्रहण करता हैं। उस तिथि को उनकी समायोजिक पूँजी क्रमशः ₹30,000, ₹20,000 व ₹25,000 थी। नयी फर्म की पूँजी ₹50,000 हैं। नया लाभ विभाजन अनुपात 1 : 1 हैं। साझेदारों द्वारा लाई या ले जाने वाली राशि ज्ञात करो एवं जर्नल प्रविष्टियां कीजिए।

हल: नई पूँजी में A व B का हिस्सा ₹50,000 बराबर बराबर में बाँटना हैं, अतः पूँजी क्रमशः ₹ 25,000 प्रत्येक की होगी। इस प्रकार A (30000-25000)= ₹ 5,000 ले जायेगा व B (20000-25000) = ₹ 5,000 पूँजी लेकर आयेगा।

A's Capital	Dr.	5,000	
To Cash A/c			5,000
(Being cash withdraw by A)			
Cash A/c	Dr.	5,000	
To B's Capital			5,000
(Being cash brought in by B)			

II. जब नयी फर्म की कुल पूँजी नहीं दी गई हो(When the Total Capital of the new Firm is not given)

(i) शेष साझेदारों की समायोजित पूँजी ज्ञात की जायेगी।

(ii) नयी फर्म की कुल पूँजी ज्ञात की जायेगी, जो शेष साझेदारों की समायोजित पूँजी शेष के बराबर होगी।

(iii) नयी फर्म की कुल पूँजी का लाभ विभाजन अनुपात में बंटवारा करके उपर्युक्त I की तरह समायोजन प्रविष्टि करेंगे।

उदाहरण 12 : A, B व C साझेदार हैं, जो 5 : 3 : 2 में लाभ विभाजन करते हैं, A 31.3.17 को अवकाश ग्रहण करता हैं। उस तिथि को उनकी समायोजित पूँजी क्रमशः ₹60,000, ₹50,000 व ₹40,000 थी। साझेदार यह निश्चित करते हैं कि उनकी पूँजी लाभ विभाजन अनुपात में हो। इसके लिए साझेदारों से नकद राशि मंगायी जायेगी अथवा वापस की जायेगी। आवश्यक जर्नल प्रविष्टियाँ कीजिए।

हल: नया अनुपात 3 : 2, फर्म की नयी आनुपातिक पूँजी ₹50,000 + ₹40,000 = ₹90,000

B की आनुपातिक पूँजी $50,000 \times \frac{3}{5}$ = ₹ 54,000, C की आनुपातिक पूँजी $90,000 \times \frac{2}{5}$ = ₹ 36,000,

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

अतः B द्वारा लायी गयी राशि 54,000–50,000 = ₹4,000 एवं C को दी जाने वाली राशि 44,000 – 36,000 = ₹4,000. इस आशय की प्रविष्टियाँ होगी :

1. Cash A/c Dr. 4,000
To B's Capital A/c 4,000
(Being cash brought in by B to make capital proportionate to profits)

2. C's Capital A/c Dr. 4,000
To Cash A/c 4,000
(Being cash paid off to C to make his capital proportionate to profits)

III. जब अवकाश ग्रहण करने वाले साझेदार को शेष साझेदारों द्वारा फर्म में इस प्रकार नगद लाकर भुगतान किया जाये कि उनकी पूँजी लाभ विभाजन अनुपात में हो जाये–

a. जबकि न्यूनतम रोकड़/बैंक शेष भी रखना हो–

नयी फर्म की कुल पूँजी=सभी साझेदारों की समायोजित पूँजी+बैंक/रोकड़ शेष जो रखना हैं–प्रारंभिक रोकड़/बैंक शेष

इसे नये लाभ विभाजन अनुपात में बांटकर पूँजी आधिक्य/कमी ज्ञात कर राशि लाने/ले जाने की प्रविष्टियाँ उपर्युक्त I के अनुसार करेंगे।

b. जबकि न्यूनतम रोकड़/बैंक शेष रखने की सूचना न हो:

नयी फर्म की पूँजी = सभी साझेदारों की समायोजित पूँजी(अवकाश ग्रहण करने वाले साझेदार सहित)

इसे नये लाभ विभाजन अनुपात में बाँटकर पूँजी आधिक्य/कमी ज्ञात कर राशि लाने/ले जाने की प्रविष्टियाँ उपर्युक्त **I** के अनुसार करेंगे।

उदाहरण 13 : A, B व C 3 : 2 : 1 में लाभ विभाजन करते हैं। C अवकाश ग्रहण करता हैं। C को नकद भुगतान किया जाता हैं। अवकाश ग्रहण की तिथि की उनकी समायोजित पूँजी क्रमशः ₹30,000, ₹40,000 व ₹30,000 थी। चिट्ठे में रोकड़ शेष ₹20,000 था। न्यूनतम रोकड़ शेष ₹10,000 रखना हैं। शेष साझेदारों द्वारा लायी अथवा ले जायी जाने वाली राशि ज्ञात करें।

हल: नयी फर्म की कुल पूँजी = 30,000 + 40,000 + 30,000 + 10,000 = ₹ 90,000

इसे नये लाभ विभाजन अनुपात 3 : 2 में A व B में विभाजित करेगें।

$A = 90{,}000 \times \frac{3}{5} = ₹54{,}000,\ B = 90{,}000 \times \frac{2}{5} = ₹36{,}000$

A पूँजी लायेगा = (54,000 – 30,000) = ₹24,000, B पूँजी ले जायेगा (36,000 – 40,000) = ₹4000

Cash A/c Dr. 24,000
To A's Capital A/c 24,000
B's Capital A/c Dr. 4,000
To Cash A/c 4,000

उदाहरण 14 : A, B व C क्रमश 3 : 2 : 1 में लाभ विभाजन करते हैं। C अवकाश ग्रहण करता हैं। अवकाश ग्रहण की तिथि को उनकी समायोजित पूँजी क्रमशः ₹40,000, ₹30,000 व ₹30,000 थी। C को नकद भुगतान करना हैं तो शेष साझेदारों द्वारा लायी/ले जायी जाने वाली राशि होगी।

हल: नयी फर्म की कुल पूँजी = सभी साझेदारों की समायोजित पूँजी = 40,000 + 30,000 + 30,000 = ₹ 1,00,000

बटंवारा नये लाभ विभाजन अनुपात में, अतः A का हिस्सा 1,00,000x3/5 = ₹ 60,000,

B का हिस्सा 1,00,000x2/5 = ₹ 40,000

अतः A लायेगा (60,000 - 40,000) = ₹ 20,000, B लायेगा (40,000 - 30,000) = ₹10,000

Cash A/c Dr. 30,000
To A's Capital A/c 20,000
To B's Capital A/c 10,000

उदाहरण 15 : A, B व C एक फर्म में साझेदार हैं जो लाभ को अपनी पूँजी के अनुसार विभाजित करते हैं। 31 मार्च, 2017 को उनका स्थिति विवरण इस प्रकार था।

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

The Balance Sheet of A, B and C. who are partners in a firm, sharing profits according to their capitals, their Balance Sheet as at 31st March, 2017 was as under :

Liabilities		Amount ₹	Assets		Amount ₹
Creditors		24,000	Goodwill		10,000
General Reserve		20,000	Building		1,00,000
Worksmen Compensation Reserve		16,000	Machinery		50,000
Capital A/cs			Stock		18,000
A	80,000		Debtors	20,000	
B	40,000		Less: Provision for D.D	1,000	19,000
C	40,000	1,60,000	Cash at Bank		15,000
			Profit & Loss A/c		8,000
		2,20,000			**2,20,000**

उपरोक्त तिथि पर B ने फर्म से अवकाश प्राप्त करने का निर्णय लिया तथा उसके अपने अंश की धनराशि का फर्म ने निम्नलिखित शर्तों पर भुगतान कर दिया: **(i)** भवन के मूल्य में 20% की वृद्धि करनी हैं। **(ii)** देनदारों पर संदिग्ध ऋणों के लिए प्रावधान को बढ़ाकर 15% तक करना हैं। **(iii)** मशीनरी पर 20% ह्रास लगाना हैं। **(iv)** स्टॉक ₹1,000 से अधिमूल्यांकित हैं। **(v)** लेनदारों को ₹6,000 से कम करना हैं। **(vi)** बकाया किराया ₹1,000। **(vii)** कर्मचारी क्षति पूर्ति का दावा ₹8,000 निश्चित किया गया हैं। **(viii)** फर्म की ख्याति का मूल्यांकन ₹72,000 पर किया गया हैं तथा अवकाश ग्रहण करने वाले साझेदार का अंश शेष साझेदारों के पूँजी खातों के अन्तर्गत समायोजित करना हैं। **(ix)** नयी फर्म की पूँजी ₹1,20,000 निर्धारित की गई हैं। समायोजन चालू खाते के माध्यम से करें।

पुनर्मूल्यांकन खाता, साझेदारों के पूँजी खाते तथा B के अवकाश ग्रहण करने के पश्चात् स्थिति विवरण बनाइए।

On that date, B decided to retire from the firm and was paid for his share in the firm subject to the following terms:

(i) Building to be appreciated by 20%. **(ii)** Provision for Doubtfull Debts to be increased to 15% on Debtors. **(iii)** Machinery to be depreciated by 20%. **(iv)** Stock is overvalued by ₹1,000. **(v)** Creditors reduced by ₹6,000. **(vi)** Outstanding Rent ₹1,000. **(vii)** Claim against Workmen Compensation Reserve is determined at ₹8,000. **(viii)** Goodwill of the firm is valued at ₹72,000 and the retiring partner's share is adjusted through the Capital Accounts of the remaining partners. **(ix)** The capital of the new firm be fixed at ₹1,20,000. Adjustments are to be made through current account.

Prepare the Revaluation Account, Capital Accounts of partners and the Balance Sheet after retirement of B.

Dr. **Revaluation Account** **Cr.**

Particulars		Amount ₹	Particulars	Amount ₹
To PBD A/c		2,000	By Building A/c	20,000
To Machinery A/c		10,000	By Creditors A/c	6,000
To Outstanding Rent		1,000		
To Stock A/c		1,000		
To Profit Transfer				
A's Capital A/c	6,000			
B's Capital A/c	3,000			
C's Capital A/c	3,000	12,000		
		26,000		**26,000**

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Dr. **Partner's Capital A/c** **Cr.**

Particulars	A ₹	B ₹	C ₹	Particulars	A ₹	B ₹	C ₹
To P&L A/c	4,000	2,000	2,000	By Balance b/d	80,000	40,000	40,000
To Goodwill A/c	5,000	2,500	2,500	By General Reserve	10,000	5,000	5,000
To B's Cap. A/c	12,000	-	6,000	By Workmen Compensation Reserve	4,000	2,000	2,000
To B's Loan A/c	-	63,500	-	By A's Cap. A/c	-	12,000	-
To Balance c/d	79,000	-	39,500	By Revaluation A/c.	6,000	3,000	3,000
				By C's Cap. A/c	-	6,000	-
	1,04,000	**68,000**	**50,000**		**1,04,000**	**68,000**	**50,000**
To Balance c/d	80,000	-	40,000	By Balance b/d	79,000	-	39,500
				By Current A/c	1,000	-	500
	80,000	**-**	**40,000**		**80,000**	**-**	**40,000**

Balance Sheet A and C
As on 31—03-2017

Liabilities		Amount ₹	Assets		Amount ₹
Creditors		18,000	Building		1,20,000
Outstanding Rent		1,000	Machinery		40,000
Liability for Workmen			Stock		17,000
Compensation		8,000	Debtors	20,000	
Capital A/c			(-)PBD	3,000	17,000
A	80,000		Cash on Bank		15,000
C	40,000	1,20,000	Current A/c		
B's Loan A/c		63,500	A	1,000	
			C	500	1,500
		2,10,500			**2,10,500**

कार्यशील टिप्पणियां (Working Notes) :

(1) B का ख्याति में हिस्सा 72000 x 1/4 = ₹18,000 को A व C के पूँजी खातों में फायदे के अनुपात 2:1 में समायोजित किया गया हैं।

(2) कर्मचारी क्षतिपूर्ति के संबंध में दायित्व ₹8,000 की पूर्ति कर्मचारी क्षतिपूर्ति संचय में से की गयी हैं तथा संचय की बची शेष राशि को साझेदारों में उनके पुराने अनुपात में बाँटा गया हैं।

(3) B को देय रकम सूचना के अभाव में उसके ऋण खाते में हस्तांतरित की जाती हैं।

(4) नयी फर्म की पूँजी ₹1,20,000 को A व C के नये लाभ विभाजन अनुपात में 2:1 में बांटकर चालू खातों के माध्यम से समायोजन किया गया हैं।

उदाहरण 16 : एल एम तथा एन एक फर्म में साझेदार थे तथा 2 : 1 : 1 के अनुपात में लाभ बॉटते थे। 1अपैल 2017 को उनका स्थिति विवरण निम्नानुसार था–

L, M & N were partners in a firm sharing profits in the ratio of 2 : 1 : 1. On 1st April, 2017 their Balance Sheet was as follows:

Balance Sheet of L, M and N
As on 1st April, 2017

Liabilities		Amount ₹	Assets	Amount ₹
Capital A/c			Land	8,00,000
L	6,00,000		Building	6,00,000

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

M	4,80,000		Furniture		2,40,000
N	4,80,000	15,60,000	Debtors	4,00,000	
General Reserve		4,40,000	Less:	20,000	3,80,000
Workmen Compensation fund		3,60,000	Stock		4,40,000
Creditors		2,40,000	Cash		1,40,000
		26,00,000			**26,00,000**

उपर्युक्त तिथि को एन ने अवकाश ग्रहण किया । निम्नलिखित निर्णय लिये गए– **(i)** फर्म की ख्याति का मूल्यांकन ₹6,00,000 किया गया । **(ii)** भूमि का मूल्य 40% बढाया जाएगा तथा भवन पर ₹1,00,000 का मूल्यांकन लगाया जाएगा। **(iii)** फर्नीचर पर ₹30,000 का मूल्यांकन लगाया जाएगा। **(iv)** कर्मचारी क्षतिपूर्ति निधि की देयता ₹1,60,00 निश्चित हुई। **(v)** एन को देय राशि को उसके ऋण के खाते में स्थानान्तरित किया जाएगा। **(vi)** एल को देय राशि को उसके ऋण खाते में स्थानानतरित किया जाएगा । **(vii)** एल तथा एम की पूँजी को उनके नए लाभ अनुपात में समायोजित किया जाएगा तथा इसके लिए साझेदारों के चालू खाते खोले जाएँगे। पुनर्मूल्यांकन खाता, साझेदारों के पूँजी खाते तथा नई फर्म का स्थिति विवरण बनाइये। On the above date N retired. The following were agreed : **(i)** Goodwill of the firm was valued at ₹ 6,00,000. **(ii)** Land was to be appreciated by 40% and Building was to be depreciated by ₹ 1,00,000. **(iii)** Furniture was to be depreciated by ₹ 30,000. **(iv)** The liabilities for Workmen Compensation Fund was determined at ₹ 1,00,000. **(v)** Amount payable to N were to be adjusted in their new profit sharing ratio and for this purpose current accounts of the partners will be opened. Prepare Revaluation Account, Partners' Capital A/c and the Balance Sheet of the new firm.

हल: **Dr.** **Revaluation Account** **Cr.**

Particulars	Amount ₹	Particulars	Amount ₹
To Building A/c	1,00,000	By Land A/c	3,20,000
To Furniture A/c	30,000		
To Profit transferred to			
L's Cap. A/c 95,000			
M's Cap. A/c 47,500			
N's Cap. A/c 47,500	1,90,000		
	3,20,000		**3,20,000**

Dr. **Partner's Capital A/c** **Cr.**

Particulars	L₹	M₹	N₹	Particulars	L₹	M₹	N₹
				By Balance b/d	6,00,000	4,80,000	4,80,000
To N's Cap. A/c	1,00,000	50,000	-	By General Reserve	2,20,000	1,10,000	1,10,000
To N's Loan A/c	-	-	8,37,500	By Workmen	1,00,000	50,000	50,000
To Balance c/d	91,500	6,37,500	-	Compensation Reserve			
				By Revaluation	95,000	47,500	47,500
				By L's Cap A/c	-	-	1,00,000
				By M's Cap A/c	-	-	50,000
	10,15,000	**6,87,500**	**8,37,500**		**10,15,000**	**6,87,500**	**8,37,500**
To Current A/c (B/F)	-	1,20,000	-	By Balance b/d	9,15,000	6,37,500	-
To Balance c/d	10,35,000	5,17,500	-	By Current A/c (B/F)	1,20,000	-	-
	10,35,000	**6,37,500**	**-**		**10,35,000**	**6,37,500**	**-**

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Balance Sheet of New Firm
As on 1st April, 2017

Liabilities		Amount ₹	Assets		Amount₹
Capital A/c			Land		11,20,000
L	10,35,000		Building		5,00,000
M	5,17,500	15,52,500	Furniture		2,10,000
			Debtors	4,00,000	
N's Loan A/c		8,37,500	(-)Provision:	20,000	3,80,000
Liability for workmen			Stock		4,40,000
Compensation		1,60,000			
Creditors		2,40,000	Cash		1,40,000
M's Current A/c		1,20,000	L's Current A/c		1,20,000
		29,10,000			**29,10,000**

कार्यशील टिप्पणियां 1. Gain Ratio 2 ; 1

2. N का ख्याति में हिस्सा 6,00,000 x 1/4= ₹1,50,000। जिसे L व M के पूँजी खातों में उनके फायदे के अनुपात 2 : 1 में समायोजित किया गया हैं।

3. L व M की समायोजित पूँजी = 9,15,000 + 6,37,500 = ₹15,52,500; इसे 2:1 में एल व एम को बांटने पर उनकी पूँजी क्रमशः ₹ 10,35,000 व ₹5,17,500 होगी।

उदाहरण 17 : X, Y तथा Z एक फर्म में साझेदार थे और 31 दिसंबर 2016 को उनका स्थिति विवरण इस प्रकार था
X, Y and Z were partners in a firm whose Balance Sheet as on 31st December, 2016 was as under:

Liabilities		Amount ₹	Assets	Amount ₹
Creditors		18,240	Cash	16,240
General Reserve		7,500	Debtors	22,500
Capitals:			Stock	26,500
X	20,000		Furniture	5,000
Y	14,500			
Z	10,000	44,500		
		70,240		**70,240**

उस दिन Y ने अवकाश ग्रहण कर लिया। इस संबंध में निम्न समायोजन करने का निर्णय़ लिया गया :

(क) स्टॉक तथा फर्नीचर में क्रमशः 5% और 10% की कमी की जाए।

(ख) देनदारों के 5% पर संदिग्ध ऋणों के लिए प्रावधान किया जाए।

(ग) लेनदारों के साथ एक पुराना विवाद निबटाया गया और फर्म को ₹9,050 देने पडे। इस उद्देश्य के लिए विविध लेनदारों में ₹ 6,000 पहले से सम्मिलित किए गए हैं ।

(घ) ख्याति का मूल्यांकन ₹12,000 किया गया हैं ।

(ङ) लाभ तथा हानि को 5 : 3 के अनुपात में बाँटा जाए ।

(च) Y का भुगतान कर दिया जाए और Y को देय समस्त राशि X तथा Y द्वारा इस प्रकार लाई जाएगी कि उनकी पूँजी उनके नए लाभ विभाजन अनुपात में हो जाए ।

पुनर्मूल्यांकन खाता, साझेदारों के पूँजी खाते और Y के अवकाश ग्रहण करने के बाद स्थिति विवरण बनाइए।

Y retired on that date. In this connection, it was decided to make the following adjustments:

(a) To reduce stock and furniture by 5% and 10% respectively.

(b) To provide for doubtful debts at 5% on debtors.

(c) A long dispute with the creditors was settled and firm has to pay ₹ 9,050. In anticipation ₹ 6,000 have already been included in sundry creditors for this purpose.

(d) Goodwill was valued at ₹ 12,000.

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

(e) To share profits and losses in 5 : 3 ratio.

(f) Y should be paid off and the entire sum payable to Y shall be brought in by X and Z in such a way that their capitals should be in their new profit sharing ratio.

Prepare Revaluation A/c, Partners' Capital A / cs and Balance Sheet after Y's retirement.

Dr. Revaluation Account Cr

Particulars	Amount ₹	Particulars		Amount ₹
To Stock A/c	1,325	By Loss transferred to Capital		
To Furniture A/c	5,00	X	2,000	
To Provision for Doubtful Debt A/c	1,125	Y	2,000	
To Creditors A/c	3,050	Z	2,000	6,000
	6,000			**6,000**

Dr. Partner's Capital A/c Cr.

Particulars	X₹	Y₹	Z₹	Particulars	X₹	Y₹	Z₹
To Revaluation A/c	2,000	2,000	2,000	By Balance b/d	20,000	14,500	10,000
To Y's Capital A/c	3,500	-	500	By General Reserve	2,500	2,500	2,500
To Balance c/d	17,000	19,000	10,000	By X's Capital A/c	-	3,500	-
				By Z's Capital A/c	-	500	-
	22,500	**21,000**	**12,500**		**22,500**	**21,000**	**12,500**
To Cash	-	19,000	-	By Balance b/d	17,000	19,000	10,000
To Balance c/d	28,750	-	17,250	By Cash A/c	11,750	-	7,250
	28,750	**19,000**	**17,250**		**28,750**	**19,000**	**17,250**

Balance Sheet of X & Z

Liabilities		Amount ₹	Assets		Amount ₹
Creditors		21,290	Cash		16,240
X's Capital	28,750		Debtors	22,500	
Y's Capital	17,250	46,000	Less: Provision for D.D.	1,125	21,375
Stock		25,175			
Furniture		4,500			
		67,290			**67,290**

कार्यशील टिप्पणियाँ (Working Notes)

(i) फायदे का अनुपात = नया लाभ विभाजन अनुपात पुराना–लाभ विभाजन अनुपात

X : 5/8 – 1/3 = 7/24

Y : 3/8 – 1/3 = 1/24, अतः त्याग अनुपात 7 : 1

(ii) Y का ख्याति में हिस्सा ₹12000 x 1/3 = ₹ 4000 को X व Z को पूँजी खातों में उनके फायदे के अनुपात 7 : 1 में समायोजित किया गया हैं।

(iii) पूँजी का समायोजनः X,Y व Z की कुल समायोजित पूँजी 17000 + 19000 + 1000= ₹46000

नई फर्म की कुल पूँजी ₹ 46,000 (5 : 3) के अनुपात में X की ₹ 28,750 व Z की ₹ 17,250 होगी।

उदाहरण 18 : A, B और C एक फर्म में साझेदार हैं जो लाभ हानि को 3 : 2 : 1 के अनुपात में बाँटते हैं। 31 मार्च 2017 को उनका स्थिति विवरण इस प्रकार हैं।

A, B and C are partners in a firm sharing profits and losses in the ratio of 3 : 2 : 1. Their Balance Sheet as at 31st March, 2017 is:

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Liabilities		Amount ₹	Assets		Amount ₹
Creditors		30,000	Cash		16,240
Bills Payable		13,000	Debtors	25,000	
General Reserve		12,000	Less: Provision for D.D.	3,000	22,000
Workmen Compensation Reserve		9,000	Stock		18,000
Capital			Furniture		30,000
A	40,000		Machinery		63,000
B	40,000		Goodwill		12,000
C	30,000	1,10,000	Profit & Loss		3,000
		1,74,000			**1,74,000**

1. अप्रैल 2017 को B निम्न शर्तों पर अवकाश ग्रहण करता हैं–**(a)** संदिग्ध ऋणों के लिए आयोजन ₹1,000 से बढाना हैं। **(b)** रहतिए पर 10% तथा फर्नीचर पर 5% ह्रास लगाना हैं। **(c)** एक क्षति का दावा ₹1,100 का बकाया हैं जिसके लिए व्यवस्था करनी हैं। **(d)** लेनदारों को ₹6,000 से कम करना हैं। **(e)** फर्म की ख्याति का मूल्यांकन ₹21,000 किया गया । **(f)** बकाया किराया ₹600। **(g)** B को पूर्ण भुगतान नकद में किया गया। यह राशि A और B के द्वारा इस प्रकार लायी गई कि नई फर्म में ₹10,000 रोकड शेष रहे तथा उनके पूँजी खातों का शेष उनके नए लाभ विभाजन अनुपात में हो जाए। पुनर्मूल्यांकन खाता, साझेदारों के पूँजी खाते और A तथा B का स्थिति विवरण बनाइए।

B retires on 1st April, 2017 on the following terms:-
(a) Provision for Doubtful Debts be raised by ₹1,000. **(b)** Stock to be depreciated by 10% and Furniture by 5%. **(c)** There is an outstanding claim of damages of ₹1,100 and it is to be provided for. **(d)** Creditors will be written back by ₹6,000. **(e)** Goodwill of the firm is valued at ₹21,000. **(f)** Outstanding Rent ₹600. **(g)** B is paid in full with the cash brought in by A and C in such a manner that their capitals are in proportrion to their profit sharing ratio and Cash in Hand remains at ₹10,000. Prepare the Revaluation A/c, Partners'Capital Accounts & the Balance Sheet of A and C.

हल: **Dr.** **Revaluation Account** **Cr**

Particulars	Amount ₹	Particulars	Amount ₹
To P.B.D. A/c	1,000	By Creditors A/c	6,000
To Stock A/c	1,800		
To Furniture A/c	1,500		
To Claim for Compensation	1,100		
To Outstanding Rent	600		
	6,000		**6,000**

Dr. **Partner's Capital A/c.** **Cr.**

Particulars	A₹	B₹	C₹	Particulars	A₹	B₹	C₹
To Goodwill	6,000	4,000	2,000	By Balance b/d	40,000	40,000	30,000
To P&L A/c	1,500	1,000	500	By General Reserve	6,000	4,000	2,000
To B's Capital	5250	-	1750	By Workmen Reserve	4,500	3,000	1,500
To Balance c/d	37,750	49,000	29,250	By A's Capital A/c	-	5,250	-
				By C's Capital A/c	-	1,750	-
	50,500	**54,000**	**33,500**		**50,500**	**54,000**	**33,500**
To Cash A/c	-	49,000	-	By Balance b/d	37,750	49,000	29,250

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

To Cash A/c b/f	-	-	1,250	By Cash A/c b/f	37,250	-	-
To Balance c/d	75,000	-	25,000				
	75,000	**49,000**	**29,250**		**75,000**	**49,000**	**29,250**

Balance Sheet
As on 31 March, 2017

Liabilities	Amount ₹	Assets		Amount ₹
Creditors	24,000	Cash in Hand		10,000
Bills Payable	13,000	Debtors	25,000	
Outstanding Payable	600	Less: Provision for DD.	4,000	21,000
Claim for Compensation	1,100	Stock		16,200
Capital A/c's		Furniture		28,500
A 75,000		Machinery		63,000
C 25,000	1,00,000			
	1,38,700			**1,38,700**

कार्यशील टिप्पणियां: (1) B का ख्याति में हिस्सा 21000 x 2/6 = ₹7000 को A व C के फायदे के अनुपात 3:1 में समायोजित किया गया हैं।

(2) Dr. Cash Account Cr.

Particulars	Amount₹	Particulars	Amount ₹
To Balance b/d	26,000	By B's Capital A/c	49,000
To A's Capital A/c	37,250	By C's Capital	4,250
		By Balance c/d	10,000
	63,250		**63,250**

(3) नई फर्म की पूँजी की गणना: कुल समायोजित पूँजी व रोकड शेष जो रखना हैं – प्रा. रोकड शेष (37750+49000=9250)+10000 – 26000 = ₹ 100000 इसमें A व C का हिस्सा 3:1 में क्रमशः ₹75000 व ₹25000 होगा ।

उदाहरण 19 : A, B व C, 5 : 4 : 1 के अनुपात में लाभ विभाजन करते हुए साझेदार है। 31-3-2017 को उनका चिट्ठा इस प्रकार था।

A, B and C are partners sharing profits as 5 : 4 : 1. Their Balance Sheet as on March 31, 2017 was as follows :

Balance Sheet
As on March 31, 2017

Liabilities		Amount ₹	Assets	Amount ₹
Capital			Fixed Assets	1,00,000
A :	80,000		Investment	60,000
B :	70,000		Stock	10,000
C :	50,000	2,00,000	Debtors	60,000
Creditors		30,000	Cash in hand	50,000
Reserves		50,000	Goodwill	20,000
Provident Fund		20,000		
		3,00,000		**3,00,000**

उपरोक्त तिथि को C अवकाश ग्रहण करता है। और D लाभों में $\frac{1}{5}$ हिस्से के लिए प्रवेश करता है। इसके लिए निम्न बातों पर सहमति होती है।

1. फर्म की ख्याति का मूल्यांकन ₹60000 पर किया गया। **2.** स्थायी सम्पतियों को 4% से ह्रासित करना है। **3.** स्टॉक को ₹18,000 पर मूल्यांकित किया गया। **4.** अवकाश ग्रहण करने वाले साझेदार को देय रकम उसके ऋण

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

खाते में हस्तातरित कर दी जाये। **5.** नयी फर्म में A, B व D का लाभ विभाजन अनुपात 2 : 2 : 1 होगा। तथा फर्म की कुल पूँजी ₹2,00,000 होगी। पुनर्मूल्यांकन खाता, साझेदारों के पूँजी खाते व नयी फर्म का चिट्ठा बनाइयें।

C retires on the above date and on the same date D is admitted with $\frac{1}{5}$ share in the profits. For this the following terms were agreed upon:

1. Goodwill of the firm is valued at ₹ 60,000. **2.** Fixed assets are depreciated by 4%. **3.** Stock is valued at ₹ 18,000. **4.** Amount due to the retiring partner shall be transeferred to his loan Account. **5.** The new firm of A, B and D will have the profit sharing ratio of 2 : 2 : 1 and its total capital will be ₹ 2,00,000.

Prepare Revaluation Account, Capital Accounts and Balance Sheet of the new firm.

हल: **Dr.** **Revaluation Account** **Cr.**

Particulars		Amount ₹	Particulars	Amount₹
To Fixed Assets A/c		4,000	By Stock A/c	8,000
To Profits transferred to				
A's Capital A/c	2,000			
B's Capital A/c	1,600			
C's Capital A/c	400	4,000		
		8,000		**8,000**

Dr. **Partner's Capital Account** **Cr.**

Particulars	A ₹	B ₹	C ₹	D ₹	Particulars	A ₹	B ₹	C ₹	D ₹
To Goodwill	10,000	8,000	2,000	-	By Balance b/d	80,000	70,000	50,000	
To C's Loan	-	-	59,400	-	By Reserves	25,000	20,000	5,000	
To Cash A/c (Bal. Figure)	23,000	3,600	-	-	By D's Current A/c	6,000	-	6,000	
To Balance c/d	80,000	80,000	-	40,000	By Revaluation	2,000	1,600	400	
					By Cash A/c	-	-	-	4,000
	1,13,000	**91,600**	**61,400**	**40,000**		**1,13,000**	**91,600**	**61,400**	**40,000**

Banlance Sheet the New Firm
As on 31 March, 2017

Liabilities		Amount ₹	Assets	Amount ₹
Capital A/c's			Fixed Assets	96,000
A	80,000		Investments	60,000
B	80,000		Stock	18,000
D	40,000	2,00,000	Debtors	60,000
C's Loan A/c		59,400	Cash	63,400
Provident Fund		20,000	D's Current A/c	12,000
Creditorss		30,000		
		3,09,400		**3,09,400**

कार्यशील टिप्पणियां (Working Notes)

1. ख्याति का व्यवहार : C का ख्याति में हिस्सा $60,000 \times \frac{1}{10}$ = ₹ 6,000, D का ख्याति में हिस्सा $60,000 \times \frac{1}{5}$ = ₹ 12,000, D के प्रवेश पर A का त्याग $\frac{5}{10} - \frac{2}{5} = \frac{1}{10}$ अत:उसे क्रेडिट करेगें $60,000 \times \frac{1}{10}$ = ₹ 6,000

D's Current A/c	Dr.	12,000	
To A's Capital A/c			6,000
To C's Capital A/c			6,000

2. D ख्याति की राशि नकद लेकर नहीं आ रहा है अतः प्रविष्टि चालू खाते के माध्यम से की गयी हैं।

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

3. रोकड शेष 50,000 + 40,000 – 23,000 – 3,600 = ₹ 63,400

उदाहरण 20. अजय, अक्षय व अभिषेक एक फर्म में साझेदार है जो 5 : 3 : 2 में लाभ विभाजन करते है। 31-3-2017 का स्थिति विवरण निम्न प्रकार था।

Ajay, Akshay and Abhishek are partners they were sharing profits in ratio of 5 : 3 : 2. Balance Sheet as on 31 March, 2017 was as followings :

Liabilities	Amount ₹	Assets	Amount ₹
Creditors	30,000	Cash at Bank	10,000
Workmen Compensation Reserve	10,000	Debtors 20,000	
Investment Fluctuation Reserve	3,000	Less : PBD 1,000	19,000
Bills Payable	3,000	Stock	6,000
Outstanding Expenses	2,000	Investment	12,000
Employees' Provident Fund	7,000	Leasehold Property	66,000
Reserve	10,000	Plant & Machinery	48,000
Capitals		Furniture	20,000
Ajay 60,000		Trade mark	3,000
Akshay 45,000		Patent	5,000
Abhishek 30,000	1,35,000	Profit & Loss Account (Dr.)	4,000
		Advertisement	2,000
		Goodwill	5,000
	2,00,000		**2,00,000**

अजय ने 31-3-2017 को अवकाश ग्रहण किया। अक्षय व अभिषेक ने भविष्य में लाभों को 2 : 3 के अनुपात में बांटना तय किया। अवकाश पर अन्य शर्ते निम्न प्रकार हैं– **(i)** ख्याति का मूल्यांकन ₹ 40,000 पर किया गया। **(ii)** अर्जित आय ₹ 1,500 का लेखा किया जाये। **(iii)** विनियोगों का बाजार मूल्य ₹ 8,000 है। **(iv)** ₹ 1,000 डूबत ऋण की वसूली हुयी है। **(v)** पट्टे की सम्पति 10% से अधिक मूल्यांकित है। (vi) संयंत्र व मशीन 20% से कम मूल्यांकित है। **(vii)** फर्नीचर को 15% से ह्रासित किया जाये। **(viii)** ट्रेडमार्क का मूल्य 20% कम करे। **(ix)** एकस्व का मूल्य 40% अधिक करे। **(x)** कर्मचारी क्षतिपूर्ति संचय के विरूद्व दायित्व ₹ 10,000 है। **(xi)** पूर्वदत बीमा ₹ 2,000 **(xii)** मरम्मत के बकाया बिल ₹ 2,000 **(xiii)** एक पुराना कम्प्यूटर जिसे ₹ 5,000 पर मूल्यांकित किया गया पुस्तकों में नहीं दिखाया गया है, उसे अजय ने ले लिया। **(xiv)** संदिग्ध ऋणों के लिए आयोजन की आवश्यकता नहीं है। **(xv)** लेनदारों के साथ एक पुराना विवाद निपटाया गया और फर्म को ₹ 10,000 देने होगें। इस उद्देश्य के लिए विविध लेनदारों में ₹ 6,000 पहले से शामिल किये गये है। **(xvi)** स्टॉक को ₹ 3,000 से कम करें। **(xvii)** नयी फर्म की पूँजी ₹ 80,000 होगी।

पुनर्मूल्यांकन खाता, साझेदार के पूँजी खाते व नयी फर्म का चिट्ठा बनाइये।

Ajay retired on 31-3-2017 and Akshay and Abhishek decided to share profits in future in the ratio of 2 : 3 respectively. The other terms on retirement were as follows; **(i)** Goodwill of the firm is to be valued at ₹ 40,000. **(ii)** Accrued income of ₹ 1,500 be provided for. **(iii)** The market value of investments was ₹ 8,000.**(iv)** Bad debts recovered ₹ 1,000. **(v)** Leasehold property over valued by 10% **(vi)** Plant & Machinery under valued by 20% **(vii)** Furniture is depreciated by 15% **(viii)** Trade mark valued at 20% less. **(ix)** Patent valued at 40% More. **(x)** Liability against Workmen Compensation is ₹ 10,000. **(xi)** Prepaid insurance ₹ 2,000. **(xii)** O/s bills for Repair ₹ 2,000 **(xiii)** There is an old computer valued at ₹ 5,000. It does not appear in the books. It is taken by Ajay. **(xiv)** Provision for doubtful debts is not required. **(xv)** A long dispute with the creditors was settled and firm has to pay ₹ 10,000. In anticipation ₹ 6,000 have already been included in sundry creditors for this purpose. **(xvi)** Stock is reduced by ₹ 3,000. **(xvii)** Capital of the firm, as newly constituted be fixed at ₹ 80,000.

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Prepare Revaluation A/c, Partner's Capital A/cs and the Balance Sheet of the new firm.

हल **Dr.** **Revaluation Account** **Cr.**

Particulars	Amount ₹	Particulars	Amount ₹
To Investment A/c	1,000	By Accrued Income	1,500
To Leasehold Property $\frac{66,000x10}{110}$	6,000	By Bad Debts recovered	1,000
To Furniture A/c	3,000	By Plant & Machinery A/c	
To Trade Mark A/c	600	48,000x$\frac{20}{80}$	12,000
To Outstanding bills for repairs	2,000	By Patent A/c	2,000
To Stock A/c	3,000	By Prepaid Insurance	2,000
To Creditors A/c	4,000	By old Computer	5,000
To Profits transferred to		By P.B.D A/c	1,000
Ajay's Capital A/c 2,450			
Akshay's Capital A/c 1,470			
Abhishek's Capital A/c 980	4,900		
	24,500		**24,500**

Dr. **Partner's Capital Account** **Cr.**

Particulars	Ajay ₹	Akshay₹	Abhishek₹	Particulars	Ajay ₹	Akshay₹	Abhishek₹
To P&L A/c	2,000	1,200	800	By Balance b/d	60,000	45,000	30,000
ToAdvertisement	1,000	600	400	By Reserve	5,000	3,000	2,000
To Goodwill	2,500	1,500	1,000	ByRevaluation	2,450	1,470	980
To Ajay's Capital	-	4,000	16,000	By Akshey's Cap.	4,000	-	-
To Computer	5,000	-	-	By Abhishek Cap.	16,000	-	-
To Ajay's Loan A/c	76,950	-	-				
To Balance c/d	-	42,170	14,780				
	87,450	**49,470**	**32,980**		**87,450**	**49,470**	**32,980**
To Bank A/c (b/f)	-	10,170	-	By Balance b/d	-	42,170	14,780
To Balance c/d	-	32,000	48,000	Bu Bank (Bal Fig)	-	-	33,220
	-	**42,170**	**48,000**		**-**	**42,170**	**48,000**

Balance Sheet Akshay&Abhishek
As on 31 December, 2016

Liabilities	Amount ₹	Assets	Amount ₹
Creditors	34,000	Cash at Bank	34,050
Bills Payable	3,000	Debtors	20,000
Outstanding Expenses	2,000	Stock	3,000
Employee's Provident Fund	7,000	Investment	8,000
Outstanding bills For Repairs	2,000	Leasehold property	60,000
Liability from workmen	10,000	Plant & Machinery	60,000
compensation		Furniture	17,000
Ajay's Loan A/c	76,950	Trade Mark	2,400
Capital A/c's		Patent	7,000
Akshay 32,000		Accrued Income	1,500
Abhishek 48,000	80,000	Prepaid Insurance	2,000
	2,14,950		**2,14,950**

कार्यशील टिप्पणियाँ (Working Notes) :- (1) विनियोगों के बाजार मूल्य में हुई कमी ₹ 4,000 में से ₹ 3,000 निवेश उतार चढाव खाते से व शेष ₹ 1,000 पुर्नमूल्यांकन खाते से चार्ज किया गया है। **(2)** कर्मचारी क्षतिपूर्ति के

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

संबंध में दायित्व की पूर्ति कर्मचारी क्षतिपूर्ति संचय से की गयी हैं। **(3)** ख्याति में अजय का हिस्सा $40,000 \times \frac{5}{10}$ = ₹ 20,000 को अक्षय व अभिषेक के खाते से फायदे के अनुपात 1 : 4 में समायोजित किया गया है।

फायदे का अनुपात = नया लाभ विभाजन अनुपात – पुराना लाभ विभाजन अनुपात

Akshay : $\frac{2}{5} - \frac{3}{10} = \frac{5}{20}$; Abhishek : $\frac{3}{5} - \frac{2}{10} = \frac{20}{50}$; त्याग अनुपात 1 : 4

(4) बैंक शेष 10,000 + 1,000 + 33,220 – 10,170 = ₹ 34,050

(5) सूचना के अभाव में अजय को देय रकम उसके ऋण खाते में हस्तातरित की गयी है।

निवृति की दशा में जीवन बीमा पॉलिसी का समायोजन
(Adjustment of Life Policies in Case of Retirement)

(क) यदि संयुक्त जीवन बीमा पॉलिसी सभी साझेदारों के जीवन पर ले रखी है तो निम्नांकित परिस्थितियां बनेगीः–

(अ) जब प्रीमियम को व्यापारिक खर्च माना जावेः – ऐसी दशा में निवृति के दिन पॉलिसी के समर्पण मूल्य (Surrender Value) की राशि सभी साझेदारों में लाभ विभाजन अनुपात में बांट दी जाती हैं। यदि शेष साझेदार समर्पण मूल्य की राशि से पॉलिसी खाता खुला रखना चाहते हो तो चिट्ठे के सम्पत्ति पक्ष पर इसे दिखाया जाएगा। परन्तु यदि बन्द करना हो तो शेष साझेदार नये अनुपात में यह राशि वहन करेंगे।

समर्पण मूल्यः समर्पण मूल्य से आशय उस मूल्य से हैं, जिसे फर्म बीमा कम्पनी से बीमा अवधि में समर्पित करने पर प्राप्त कर सकती हैं।

(1) समर्पण मूल्य की राशि का लेखा करने परः

Joint Life Policy A/c		Dr.	(निवृति के दिन समर्पण मूल्य)
	To All Partner's Capital A/c		(पुराने अनुपात में)
(Distribution of surrender value in old ratio)			

(2) यदि उक्त संयुक्त जीवन बीमा पॉलिसी खाते को बन्द करने की सूचना दी होः

Remaining Partner's Capital A/c		Dr.	(नये अनुपात में)
	To Joint Life Policy A/c		(निवृति के दिन समर्पण मूल्य)
(Joint life policy A/c closed by transferring into remaining partner's capital A/c)			

टिप्पणी : यदि किसी साझेदार के निवृत होने पर संयुक्त बीमा पॉलिसी वास्तव में ही समर्पित कर बीमा कम्पनी से धन राशि प्राप्त कर लेते हैं तोः **(क)** पहले राशि प्राप्त करने की निम्नांकित प्रविष्टि बनेगीः

Cash A/c		Dr.	(समर्पण मूल्य की प्राप्त राशि से)
	To Joint Life Policy A/c		
(Surrender Value Received)			

(ख) पॉलिसी की यह प्राप्त राशि बांटने परः

Joint Life Policy A/c		Dr.	(प्राप्त समर्पण मूल्य)
	To All Partner's Capital A/c		(पुराने अनुपात में)
(Distribution of surrender value received)			

(ब) जब प्रीमियम को पूँजीगत खर्च माना जावेः इस दशा मे पॉलिसी खाता समर्पण मूल्य पर ही पुस्तकों में दिखाया हुआ रहता हैं। अतः कोई पृथक प्रविष्टि नहीं बनेगी किंन्तु निवृति पर पॉलिसी का पुनर्मूल्यांकन किया जाता है तो पुस्तक मूल्य व पुनर्मूल्यांकित मूल्य के अन्तर को पुनर्मूल्यांकन खाते के माध्यम से ही समायोजित करते हैं तथा चिट्ठे में पॉलिसी खाते को पुनर्मूल्यांकित मूल्य पर दिखाया जाएगा। इस प्रकार पुनर्मूल्यांकन प्रविष्टियों के साथ ही प्रविष्टि बनेगी। किन्तु अब शेष साझेदार पॉलिसी खाते को बंद करना चाहे तो निम्नलिखित प्रविष्टि से बंद कर दिया जाएगाः

Remaining Partner's Capital A/c		Dr.	(नये अनुपात में)
	To Joint life policy A/c		
(Joint life policy A/c closed by transferring it into remaining partner's Capital A/c)			

टिप्पणी : यदि बीमा पॉलिसी वास्तव में समर्पित कर नगद राशि निवृति के दिन प्राप्त कर लें तो निम्नांकित प्रविष्टियां बनेगी तथा पॉलिसी खाते में यदि कोई शेष है तो सभी साझेदारों को पुराने अनुपात में बांट देंगेः

1. समर्पण पर राशि प्राप्त करने पर : –

Cash A/c		Dr.	(प्राप्त समर्पण मूल्य)

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

To Joint life policy A/c
(Cash received on surrender of policy)

2. इस प्राप्त राशि को वितरित करने पर

Joint life policy A/c	Dr.	(शेष राशि यदि हो)	
To All Partner's Capital A/c		(पुराने अनुपात में)	

(Joint life policy A/c closed)

टिप्पणी : यदि पुस्तक में दिखाये गये मूल्य से कम राशि प्राप्त हो तो इसकी विपरीत प्रविष्टि भी बन सकेगी।

उदाहरण 21: ए, बी व सी 4 : 3 : 2 के अनुपात में लाभ बांटते हैं। सी के निवृत होने पर संयुक्त बीमा पॉलिसी का समर्पण मूल्य ₹ 90,000 आंका गया, पॉलिसी खाता भविष्य में पुस्तकों में नहीं दिखाना हैं तथा भविष्य में शेष साझेदार लाभ बराबर–बराबर बांटना तय करते हैं तो निम्नांकित दशाओग में प्रविष्टियां कीजिए यदि : (1) प्रीमियम को व्यापारिक खर्च माना जाए। (2) संयुक्त बीमा पॉलिसी खाता का उक्त समर्पण मूल्य से पुस्तकों में विद्यमान हैं।

हल : 1 **JOURNAL**

Date	Particulars		L. F.	Dr. Amount ₹	Cr. Amount ₹
Date of Retire-Ment	Joint Life Policy A/c	Dr.		90,000	
	To A's Capital A/c				40,000
	To B's Capital A/c				30,000
	To C's Capital A/c				20,000
	(Joint Life Policy recorded on surrender value at the time of C's Retirement)				
Date Of Retire-Ment	A's Capital A/c	Dr.		45,000	
	B's Capital A/c	Dr.		45,000	
	To Joint Life Policy A/c				90,000
	(Being policy account closed)				

टिप्पणी: इस दशा में चाहे तो निम्नांकित एक प्रविष्टि भी बनाई जा सकती हैं : –

Date Of Retire-Ment	A's Capital A/c	Dr.		5,000	
	B's Capital A/c	Dr.		15,000	
	To C's Capital A/c				20,000
	(Share of C's in JLP charged to A & B in their gain ratio1 : 3)				

हल 2:

Date Of Retire-Ment	A's Capital A/c	Dr.		45,000	
	B's Capital A/c	Dr.		45,000	
	To Joint Life Policy A/c				90,000
	(Being policy account closed)				

उदाहरण 22 : ए, बी ब सी 5 : 3 : 2 में लाभ बांटते हुए साझेदार हैं। सी के निवृत्त होने पर फर्म की पुस्तकों में संयुक्त बीमा पॉलिसी खाता चिटठे में ₹ 10,000 दिखाया हुआ है। इसी दिन फर्म पॉलिसी समर्पित करने का निश्चय करती हैं तथा बीमा कम्पनी से ₹ 12,000 प्राप्त करती हैं। आवश्यक प्रविष्टियां दीजिए।

हल:

Date	Particulars		L.F.	Dr. Amount ₹	Cr. Amount ₹
	Cash A/c	Dr.		12,000	
	To Joint Life Policy A/c				12,000

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

	(Cash received at the time of surrender of policy			
	Joint Life Policy A/c Dr.		2,000	
	To A's Capital A/c			1,000
	To B's Capital A/c			600
	To C's Capital A/c			400
	(Balance of policy A/c distributed among the partners)			

मृत्यु की दशा में साझेदारों के जीवन पर बीमा पॉलिसी का समायोजन
(Life Insurance Policy on the Lives of Partners)

मृत्यु एक शाश्वत सत्य है जिसे टाला जाना असम्भव हैं। अतः फर्म प्रत्येक साझेदार के जीवन पर व्यक्तिगत जीवन बीमा पॉलिसी अथवा सभी साझेदारों के जीवन पर एक संयुक्त जीवन बीमा पॉलिसी ले सकती हैं। किसी भी साझेदार की मृत्यु होने पर फर्म को मृतक साझेदार के कानूनी उत्तराधिकारी को उसकी समायोजित पूँजी का भुगतान करना पड़ता हैं। साझेदारों के जीवन पर बीमा पॉलिसी लेने का उद्देश्य यह है कि किसी भी साझेदार की मृत्यु होने पर फर्म को बीमा कम्पनी से तरल कोष उपलब्ध हो सके जिससे मृतक साझेदार के उत्तराधिकारी को देय राशि का निपटारा करने में आसानी रहे। फर्म द्वारा साझेदारों के जीवन पर दो प्रकार की जीवन बीमा पॉलिसियाँ ली जा सकती हैं:

1. व्यक्तिगत अथवा पृथक जीवन बीमा पॉलिसी(Individual or Separate Life Policy) 2. संयुक्त जीवन बीमा पॉलिसी (Joint Life Policy)

1. व्यक्तिगत अथवा पृथक जीवन बीमा पॉलिसी (Individual or Separate Life Policy): इस स्थिति में फर्म प्रत्येक साझेदार के जीवन पर पृथक–पृथक पॉलिसी बीमा कम्पनी से लेती है अतः इसे व्यक्तिगत अथवा पृथक–पृथक जीवन बीमा पॉलिसी के नाम से जाना जाता है। प्रत्येक पॉलिसी पर देय प्रीमियम फर्म ही चुकाती है। फर्म द्वारा चुकाया गया प्रीमियम इस स्थिति में साधारणतया खर्चा ही माना जाता हैं। प्रत्येक साझेदार के जीवन पर ली गई पॉलिसी की राशि या तो परिपक्वता तिथि (Maturity Date) को अथवा किसी साझेदार की मृत्यु होने परफर्म को प्राप्त हो जाती हैं। फर्म द्वारा चुकाया गया प्रीमियम आयगत खर्चा माना जाता है अतः लेखा वर्ष के अन्त में इसे लाभ हानि खाते में अन्तरित कर दिया जाता हैं।

किसी भी साझेदार की मृत्यु हो जाने पर बीमा कम्पनी से प्राप्त मृतक साझेदार की पॉलिसी की राशि तथा देय जीवित साझेदारों की व्यक्तिगत पॉलिसियों के समर्पण मूल्य को जोडकर सभी साझेदारों में(मृतक साझेदार सहित)उनके लाभ विभाजन अनुपात में बांट दिया जाता हैं।

मृतक साझेदार को पॉलिसी की देय राशि की गणना:

मृतक साझेदार की पॉलिसी से प्राप्त राशि	–
जोडियेः शेष जीवित साझेदारों की व्यक्तिगत पॉलिसियों का समर्पण मूल्य	–
कुल राशि	–

उक्त राशि में मृतक साझेदार का हिस्सा = कुल राशि x मृतक साझेदार का लाभ विभाजन अनुपात

व्यक्तिगत जीवन बीमा पॉलिसी का लेखांकन–

Journal Entries

Date	Particulars	L. F.	Dr. Amount ₹	Cr. Amount ₹
	1. प्रीमियम चुकाने पर Insurance Premium A/c Dr. To Cash / Bank A/c (Insurance premium paid)			
	2. प्रतिवर्ष प्रीमियम को लाभ – हानि खाते में अन्तरित करने पर Profit & Loss A/c Dr. To Insurance Premium A/c (Premium transferred to P & L A/c)			
	3. साझेदार की मृत्यु होने पर पॉलिसी की राशि देय होने पर			

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

	Insurance Company A/c Dr. To Life Policy of Deceased A/c (Policy amount due)			
	4. पॉलिसी की राशि प्राप्त होने पर Bank A/c Dr. To Life Policy of Deceased Partner A/c (Policy amount received)			
	5. मृतक साझेदारी की पॉलिसी + शेष जीवित साझेदारों को पॉलिसी का समर्पण मूल्य साझेदारों में बॉटने पर Life Policy of Deceased Partner A/c Dr. Life Policies of other Partners A/c Dr. To All Partners Capital A/c (Total amount of policy distributed in all the partners)			

वैकल्पिक विधि(Alternative Method):

जीवन बीमा पॉलिसी का प्रभाव यदि पुस्तकों में नहीं दर्शाना हैं तो मृतक साझेदार की पॉलिसी तथा शेष साझेदारों की पॉलिसियों की समर्पण मूल्य की जोड़ में से मृतक साझेदारों के हिस्से से शेष साझेदारों का पूँजी खाता फायदे अनुपात में डेबिट करके मृतक साझेदार का पूँजी खाता क्रेडिट किया जाता हैं। ऐसी स्थिति में जीवन बीमा पॉलिसी की समर्पण राशि पुस्तकों में नहीं दिखाईं जाती हैं।

Remaining Partner's Capital/ Current A/c Dr.
To Deceased Partner's Capital/Current A/c
(Deceased partners share in policy amount credited to his capital A/c)

उदाहरण 23 : अ, ब और स एक फर्म में 3:2:1 के अनुपात में लाभ हानि बांटते हुए साझेदार हैं।1अप्रैल2015 को फर्म ने सभी साझेदारों के नाम की तीन जीवन बीमा पॉलिसियाँ क्रमशः ₹ 80,000, ₹ 50,000, ₹ 60,000 की ली। प्रत्येक पॉलिसी पर क्रमशः ₹ 10,000, ₹ 6,000, ₹ 4,000 बीमा प्रीमियम चुकाया जाता है। बीमा प्रीमियम को लाभ हानि खाते से चार्ज किया जाता हैं। 1 जुलाई, 2017 को अ की मृत्यु हो गई तथा उसकी बीमा पॉलिसी की पूरी राशि 3 जुलाई को प्राप्त हो गई। उस तिथि को ब और स की पॉलिसी का समर्पण मूल्य क्रमशः ₹ 16,000 तथा ₹ 8,000 था जिसे पुस्तकों में दिखाना हैं। फर्म को पुस्तकों में जर्नल प्रविष्टिया दीजिये तथा चिटठे में जीवन बीमा पॉलिसी दर्शाइए।

A, B and C sharing profit and losses of the firm in the ratio of 3:2:1 - The firm had taken three individual life policies for ₹ 80,000, ₹ 50,000 and ₹ 60,000 for the lives of A, B and C. The firm pays ₹ 10,000, ₹ 6,000 and ₹ 4,000 respectively on their policies as premium. The premium in charged to profit and loss A/c of the firm. A died on 1 July 2017 and the amount of his policy is received in full on 3 July. The surrender values of the policy of B and C on the date of death were ₹ 16,000 and ₹ 8,000 respectively which is to be shown in the books.

Pass Journal entries in the books of the firm and show the life policy in the Balance Sheet.

Journal

Date	Particulars	L.F.	Dr. Amount ₹	Cr. Amount ₹
April 2017	Insurance Premium A/c Dr. To Cash / Bank A/c (Insurance premium paid)		20,000	20,000
July 2017	Insurance Company A/c Dr. To Life Policy A/c (Policy amount due)		60,000	60,000
July 2017	Bank A/c Dr. To Insurance Company A/c		60,000	60,000

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

	(Policy amount received)			
July 2017	Life Policy A/c Dr.		84,000	
	To A's Capital A/c			42,000
	To B's Capital A/c			28,000
	To C's Capital A/c			14,000
	(Policy amount and surrender value distributed among the partners)			

Balance Sheet of New Firm

Liabilities	Amount ₹	Assets	Amount ₹
		Life Policy	24,000

2. सभी साझेदारों के जीवन पर सँयुक्त जीवन बीमा पॉलिसी (Joint Life InsurancePolicy on the lives of partners): फर्म द्वारा साझेदारों के जीवन पर पृथक–पृथक पॉलिसी के स्थान पर एक संयुक्त जीवन बीमा पॉलिसी भी ली जा सकती हैं। ऐसी स्थिति में किसी भी साझेदार की मृत्यु होने पर जीवन बीमा पालिसी की पूरी राशि फर्म को प्राप्त हो जाती हैं, जिसे सभी साझेदारों में उनके लाभ विभाजन अनुपात में बांट दिया जाता हैं। संयुक्त जीवन बीमा पॉलिसी पर चुकाये जाने वाली प्रीमियम के सम्बन्ध में निम्न तीन स्थितियां हो सकती हैं:

(i) बीमा प्रीमियम को व्यापारिक व्यय मान कर लेखा।

(ii) बीमा प्रीमियम को विनियोग/पूँजीगत व्यय मान कर लेखा।

(iii) बीमा प्रीमियम को विनियोग मानना तथा उतनी राशि से संचय का निर्माण करना।

(i) बीमा प्रीमियम को व्यापरिक व्यय मान कर लेखा (Treating Premium as Trade Expenses): इस दशा में प्रविष्टियां होगी: –

Journal

Date	Particulars	L.F.	Dr. Amount ₹	Cr. Amount ₹
	1. प्रतिवर्ष प्रीमियम चुकाने पर Insurance Premium A/c Dr. To Cash / Bank A/c (Insurance Premium Paid)			
	2. प्रीमियम को लाभ–हानि खातें में अन्तरित करने पर Profit & Loss A/c Dr. To Insurance Premium A/c (Premium transferred to P & L A/c)			
	3. साझेदार की मृत्यु होने पर पॉलिसी की राशि देय होने पर Insurance Company A/c Dr. To Joint Life Policy A/c (Policy amount due)			
	4. पॉलिसी की राशि प्राप्त होने पर Bank A/c Dr. To Insurance Company (Policy amount received)			
	5. बीमा पॉलिसी की राशि सभी साझेदारों में बाँटने पर Joint Life Policy A/c Dr. To All Partner's Capital A/c (Policy amount distributed)			

नोट– साझेदार की मृत्यु पर Insurance Premium A/c में कोई शेष हैं, तो उसे Joint Life Policy Ac/c में स्थानान्तरित करना चाहिये।

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

उदाहरण 24 : A, B व C एक फर्म में 3:2:1 के अनुपात में लाभ–हानि बांटते हुए साझेदार हैं। फर्म ने उनके जीवन पर ₹ 60,000 की संयुक्त जीवन बीमा पॉलिसी 1 अप्रैल. 2013 को ली। पॉलिसी पर प्रतिवर्ष ₹ 5,000 प्रीमियम चुकाया जाता हैं। प्रीमियम को व्यापारिक व्यय माना जाता हैं। B की मृत्यु 5 अप्रैल, 2016 को हुई तथा 8 अप्रैल, 2016 को पॉलिसी की राशि प्राप्त हो गयी। फर्म की पुस्तकों में जर्नल प्रविष्टियाँ कीजिये।

हल: **Journal**

Date	Particulars		L.F.	Dr. Amount ₹	Cr. Amount ₹
2013 April, 1	Insurance Premium A/c	Dr.		5,000	
	To Bank A/c				5,000
	(Insurance premium paid)				
2014 March, 31	Profit & Loss A/c	Dr.		5,000	
	To Insurance Premium A/c				5,000
	(Premium transferred to P & L A/c)				
2014 April, 1	Insurance Premium A/c	Dr.		5,000	
	To Bank A/c				5,000
	(Insurance premium paid)				
2015 March, 31	Profit & Loss A/c	Dr.		5,000	
	To Insurance Premium A/c				5,000
	(Premium transferred to P & L A/c)				
2015 April, 1	Insurance Premium A/c	Dr.		5,000	
	To Bank A/c				5,000
	(Insurance premium paid)				
2016 March, 31	Profit & Loss A/c	Dr.		5,000	
	To Insurance Premium A/c				5,000
	(Premium transferred to P & L A/c)				
2016 April, 1	Insurance Premium A/c	Dr.		5,000	
	To Bank A/c				5,000
	(Insurance premium paid)				
2016 April, 5	Insurance Company A/c	Dr.		60,000	
	To Joint Life Policy A/c				60,000
	(Policy amount due)				
2016 April, 8	Bank A/c	Dr.		60,000	
	To Insurance Company				60,000
	(Policy amount received)				
2016 April, 8	Joint Life Policy A/c	Dr.		5,000	
	To Insurance Premium A/c				5,000
	(Insurance premium transferred to Joint Life policy)				
2017 March, 31	Joint Life Policy A/c	Dr.		55,000	
	To A's Capital A/c				27,500
	To B's Capital A/c				18,333
	To C's Captial A/c				9,167
	(Joint Life Policy balance credited to partners Cap. A/c)				

नोट: साझेदार की मृत्यु वाले वर्ष चुकाया गया प्रीमियम संयुक्त जीवन बीमा पॉलिसी खाते में ले जाया गया हैं।

(ii) बीमा प्रीमियम को विनियोग मान कर लेखा: जीवन बीमा में विनियोग का तत्त्व निहित होता हैं अतः कुछ लेखापाल प्रीमियम के भुगतान को व्यापारिक खर्च न मान कर इसे विनियोग मानते है। इस दृष्टिकोण के अनुसार

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

प्रीमियम भुगतान करने पर प्रीमियम की राशि से संयुक्त जीवन बीमा पॉलिसी खाते (Joint Life Policy A/c) को डेबिट किया जाता हैं। तथा इसे चिट्ठे में सम्पति पक्ष पर दिखाया जाता हैं। प्रत्येक लेखा वर्ष के अंत में संयुक्त पॉलिसी खाते का शेष समर्पण मूल्य के बराबर रखा जाता हैं। अतः संयुक्त जीवन बीमा पॉलिसी खाते की राशि व समर्पण मूल्य के अन्तर को लाभ–हानि खाते में डेबिट कर दिया जाता हैं। इस संबंध में निम्न प्रविष्टियाँ बनाते हैं–

Date	Particulars	L.F.	Dr. Amount ₹	Cr. Amount ₹
	1. प्रतिवर्ष प्रीमियम चुकाने पर Joint Life Policy A/c Dr. To Bank A/c (Insurance premium paid)			
	2. प्रतिवर्ष प्रीमियम को लाभ–हानि खाते में अन्तरित करने पर Profit & Loss A/c Dr. To Joint Life Policy A/c (Premium transferred to P & L A/c)			
	3. पॉलिसी की राशि प्राप्त होने पर Insurance Company A/c Dr. To Joint Life Policy A/c (Policy amount due)			
	4. पॉलिसी की राशि प्राप्त होने पर Bank A/c Dr. To Insurance Company (Policy amount received)			
	5. बीमा पॉलिसी की राशि सभी साझेदारों में बाँटने पर Joint Life Policy A/c Dr. To All Partner's Capital A/c (Policy amount distributed)			

उदाहरण 25: पिछले उदाहरण में यदि प्रीमियम को विनियोग माना जाता हैं तो फर्म की पुस्तकों में जर्नल प्रविष्टियाँ दीजिये तथा संयुक्त जीवन बीमा पॉलिसी खाता बनाइये। पॉलिसी का समर्पण मूल्य इस प्रकार हैं: 31 मार्च, 2013–Nil; 31 मार्च, 2014–₹ 2,000; 31 मार्च 2015–₹ 4,000

Pass the Journal entries and prepare Joint Life Policy A/c from the previous example assuming that premium paid is treated as an investment. The surrender value of policy is as follows; on 31 March, 2013-Nil; on 31 March 2014-₹2,000; On 31 March, 2015-₹4,000.

हल: **Journal**

Date	Particulars	L.F.	Dr. ₹	Cr. ₹
2013 April, 1	Joint Life Policy A/c Dr. To Bank A/c (Insurance Premium Paid)		5,000	 5,000
2014 March, 31	Profit & Loss A/c Dr. To Joint Life Policy A/c (Premium transferred to P & L A/c)		5,000	 5,000
2014 April, 1	Joint Life Policy A/c Dr. To Bank A/c (Insurance premium paid)		5,000	 5,000
2015 March,	Profit & Loss A/c Dr. To Joint Life Policy A/c		3,000	 3,000

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

31	(Premium transferred to P & L A/c)			
2015	Joint Life Policy A/c Dr.		5,000	
April, 1	To Bank A/c			5,000
	(Insurance premium paid)			
2016	Profit & Loss A/c Dr.		3,000	
March,	To Joint Life Policy A/c			3,000
31	(Premium transferred to P & L A/c)			
2016	Joint Life Policy A/c Dr.		5,000	
April, 1	To Bank A/c			5,000
	(Insurance premium paid)			
2016	Insurance Company A/c Dr.		60,000	
April, 5	To Joint Life Policy A/c			60,000
	(Policy amount due)			
2016	Bank A/c Dr.		60,000	
April, 8	To Insurance Company			60,000
	(Policy amount received)			
2016	Joint Life Policy A/c Dr.		51,000	
April, 8	To A's Capital A/c			25,500
	To B's Capital A/c			17,000
	To C's Capital A/c			8,500
	(Policy amount distributed)			

Dr. **Joint Life Policy Account** **Cr.**

Date	Particulars	J.F.	Amount ₹	Date	Particulars	J.F.	Amount₹
2013				2014			
April, 1	To Bank		5,000	March, 31	By Profit & Loss A/c		5,000
			5,000				**5,000**
2014				2015			
April, 1	To Bank		5,000	March, 31	By Profit & Loss A/c		3,000
				March, 31	By Balance c/d		2,000
			5,000				**5,000**
2015				2016			
April, 1	To balance b/d		2,000	March, 31	By Profit & Loss A/c		3,000
April, 1	To Bank		5,000	March, 31	By Balance c/d		4,000
			7,000				**7,000**
2016				2017			
April, 1	To balance b/d		4,000	April, 15	By Insurance Company		60,000
April, 1	To Bank		5,000				
April, 8	To A's Capital		25,500				
	To B's Capital		17,000				
	To C's Capital		8,500				
			60,000				**60,000**

(iii) बीमा प्रीमियम को विनियोग माना जाना तथा उतनी ही राशि से संचय का निर्माण करना:

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

चिटठे में संयुक्त जीवन बीमा पॉलिसी खाता विनियोग के रूप मे समर्पण मूल्य पर दर्शाया जाता हैं। अतः रुढ़िवादी परम्परा की अनुपालना हेतु जीवन बीमा पॉलिसी संचय खाता (Reserve for Joint Life Policy Account) का निर्माण प्रतिवर्ष लाभ–हानि नियोजन खाते में से किया जाता हैं ताकि संयुक्त जीवन बीमा पॉलिसी खाते के शेष तथा पॉलिसी के समर्पण मूल्य के अंतर को जीवन बीमा पॉलिसी संचय खाते से समायोजित किया जा सके।

लेखांकन प्रविष्टियाँ : **Journal**

Date	Particulars	L. F.	Dr. Amount ₹	Cr. Amount ₹
	1. प्रतिवर्ष प्रीमियम चुकाने पर Joint Life Policy A/c Dr. To Bank A/c (Insurance premium paid)			
	2. प्रतिवर्ष संयुक्त जीवन बीमा पॉलिसी संचय का निर्माण करने पर Profit & Loss Appropriation A/c Dr. To Joint Life Policy Reserve A/c (Joint Life Policy reserve created)			
	3. संचय खाते का शेष समर्पण मूल्य पर करने के लिए पॉलिसी खाते के अन्तर से Joint Life Policy Reserve A/c Dr. To Joint Life Policy A/c (Difference charged to reserve A/c)			
	4. पॉलिसी की राशि प्राप्य होने पर Insurance Company A/c Dr. To Joint Life Policy A/c (Policy amount due)			
	5. पॉलिसी की राशि प्राप्त होने पर Bank A/c Dr. To Insurance Company (Policy amount received)			
	6. सयुंक्त जीवन बीमा पॉलिसी संचय खाते को बंद करने पर Joint Life Policy Reserve A/c Dr. To Joint Life Policy A/c (Balance of reserve A/c transferred to JLP A/c)			
	7. बीमा पॉलिसी की राशि सभी साझेदारों में बाँटने पर Joint Life Policy A/c Dr. To Partner's Capital A/c (Policy amount distributed)			

उदाहरण 26 : पिछले उदाहरण में लिये गये समंकों में यदि बीमा प्रीमियम को विनियोग माना जाता है तथा संयुक्त जीवन बीमा पॉलिसी संचय खाते का निर्माण किया जाता है तो फर्म की पुस्तकों में आवश्यक खाते बनाइये।

Open the necessary accounts in the books of the firm from the data given in the previous example, if premium paid is treated as an Investment and Reserve for Joint life Policy A/c is created.

Dr. **Joint Life Policy A/c** **Cr.**

Date	Particulars	J. F.	Amount ₹	Date	Particulars	J. F.	Amount ₹
2013				2014			

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

April, 1	To Bank		5,000	March, 31	By JLP Reserve		5,000
			5,000				**5,000**
2014				2015			
April, 1	To Bank		5,000	March, 31	By JLP Reserve		3,000
				March, 31	By Balance c/d		2,000
			5,000				**5,000**
2015				2016			
April, 1	To balance b/d		2,000	March, 31	By JLP Reserve		3,000
April, 1	To Bank		5,000	March, 31	By Balance c/d		4,000
			7,000				**7,000**
2016				2017			
April, 1	To balance b/d		4,000	April, 5	By Insurance Company		60,000
April, 1	To Bank		5,000	April, 8	By JLP Reserve		4,000
April, 8	To A's Capital		32,000				
	To B's Capital		21,333				
	To C's Capital		10,667				
			64,000				**64,000**

Dr. **Joint Life Policy Reserve A/c** **Cr.**

Date	Particulars	J.F.	Amount₹	Date	Particulars	J.F.	Amount₹
2014				2014	By Profit & Loss		
March, 31	To JLP		5,000	March, 31	Appropriation A/c		5,000
			5,000				**5,000**
2015				2015	By Profit & Loss		
March, 31	To JLP		3,000	March, 31	Appropriation A/c		5,000
2015							
March, 31	To Balance c/d		2,000				
			5,000				**5,000**
2016				2015			
March, 31	To JLP		3,000	April, 1	By Balance b/d		2,000
2016				2016	By Profit & Loss		5,000
March, 31	To Balance c/d		4,000	March, 31	Appropriation		
			7,000				**7,000**
2016				2016			
April, 8	To JLP		4,000	April, 1	By Balance b/d		4,000
			4,000				**4,000**

लेखा वर्ष के मध्य में साझेदार का अवकाश ग्रहण/मृत्यु

(Retirement/Death of a Partner during the accounting year)

असामान्य परिस्थितियों में साझेदार लेखा वर्ष के दौरान अवकाश ग्रहण कर लेता है। इसी प्रकार किसी साझेदार की मृत्यु की दशा में उसके कानूनी उत्तराधिकारी को देय राशि का निर्धारण भी वर्ष के मध्य किसी तिथि को करना पड़ता हैं। इस दशा में उसे या उसके उत्तराधिकारी को देय राशि ज्ञात करते समय उसकी पूँजी के अतिरिक्त निम्नांकित समायोजन उसके पूँजी खाते करने पड़ते हैं।

1. वेतन, बोनस, कमीशन व फीस आदि– विगत चिटठे की तिथि से निवृत/मृत्यु तिथि तक का वेतन, बोनस आदि की राशि उसके पूँजी/चालू खातें में जमा कर दी जाती हैं।

2. **पूँजी पर ब्याज–** विगत चिटठे की तिथि से निवृत्ति/मृत्यु तिथि तक का पूँजी पर ब्याज उसके पूँजी/चालू खाते मे क्रेडिट किया जाता हैं।

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

3. आहरण व उस पर ब्याज– विगत चिटठे की तिथि से निवृत्ति/मृत्यु तक के आहरण और इन पर ब्याज(यदि कोई हो) उसके पूँजी/चालू खाते में डेबिट किया जाता हैं।

4. जीवन बीमा पॉलिसी– यदि साझेदारों के जीवन पर संयुक्त या पृथक–पृथक बीमा पॉलिसी ले रखी हैं तो ऐसे साझेदार के हिस्से की गणना करके उसके पूँजी/चालू खाते में क्रेडिट किया जाता हैं।

5. फर्म के लाभों में हिस्सा– विगत चिटठे की तिथि से अवकाश ग्रहण/मृत्यु तिथि तक का लाभों में हिस्सा गणना करके उसके पूँजी/चालू खाते में क्रेडिट कर दिया जाता हैं। इसकी गणना निम्नांकित में से किसी एक रीति से कर सकते है। **(क) समय के आधार पर (On time basis):** तुरंत पूर्व वाले वर्ष या विगत कुछ वर्षों के औसत लाभ को आधार मानते हुए, विगत चिटठे की तिथि से अवकाश ग्रहण/मृत्यु की तिथि तक की अवधि का आनुपातिक लाभ ज्ञात कर उसमें ऐसे साझेदार का हिस्सा उसके पूँजी/चालू खाते में क्रेडिट किया जाता हैं।

(ख) विक्रय के आधार पर (on the basis of turnover): विगत वर्ष के लाभ का उसी वर्ष के विक्रय से प्रतिशत ज्ञात किया जाता हैं तत्पश्चात विगत चिट्ठे की तिथि से अवकाश ग्रहण/मृत्यु की तिथि तक की विक्रय पर उसी प्रतिशत के आधार पर लाभ ज्ञात कर ऐसे साझेदार का लाभ में हिस्सा (उसके लाभ–विभाजन अनुपात में) ज्ञात कर उसके पूँजी/चालू खाते में क्रेडिट किया जाता हैं।

उदाहरण 27 : ए, बी व सी 3 : 2 : 1 में लाभ बांटते हैं। 31 मार्च, 2016 वर्ष का लाभ व विक्रय क्रमशः ₹ 48,000, ₹ 2,00,000 हैं। 31 अगस्त, 2016 को ए की मृत्यु हो जाती है तो (1) समय के आधार पर (2) विक्रय के आधार पर (यदि 1 जनवरी से 31 अगस्त, 2016 तक की बिक्री ₹ 60,000 हो)। मृतक साझेदार का लाभ में हिस्सा ज्ञात करो व लेखा प्रविष्टि बनाओ।

हलः (1) समय के आधार पर लाभः 48,000 x 5/12 = ₹20,000; इसमें अ का हिस्साः 20,000 x 3/6 = ₹ 10,000

Profit and Loss Suspense A/c	Dr.	10,000	
To Retiring/Deceased Partner Capital A/c			10,000
(Share of profit transferred to his capital A/c)			

(2) विक्रय के आधार पर लाभः विगत वर्ष का विक्रय पर लाभ का प्रतिशत 48,000/2,00,000 x 100 = 24%

वर्ष 2016 में मृत्यु की तिथि तक के लाभ में ए का हिस्सा $\frac{60,000 \times 24 \times 3}{100 \times 6}$ = ₹ 7,200

Profit And Loss Suspense A/c	Dr.	7,200	
To Retiring/ Deceased Partner Capital A/c			7,200
(Share of profit transferred to his capital A/c)			

6. ख्याति में हिस्साः इसकी गणना इसी अध्याय में बताए गए नियमों के आधार पर करके उसके पूँजी/चालू खाते में क्रेडिट या डेबिट करेंगे।

7. सम्पातियों व दायित्वों के पुनर्मूल्यांकन से उत्पन्न लाभ – हानि में हिस्सा : इसी अध्याय में बताए गए नियमों के आधार पर करके उसके पूँजी/चालू खाते में क्रेडिट या डेबिट करेंगे।

8. अवितरित लाभों या हानियों व संचयों में हिस्सा – इसी अध्याय में बताए गए नियमों के आधार पर करके उसके पूँजी/चालू खाते में क्रेडिट या डेबिट करेंगे।

इस प्रकार मृतक साझेदार या अवकाश ग्रहण करने वाले साझेदार के पूँजी खाते में सामान्यतः निम्नलिखित मदें दिखाई जाती हैं:

Dr. Retiring/ Deceased Partners Capital A/c Cr.

Particulars	Amount ₹	Particulars	Amount ₹
To Balance b/d (if any)		By Balance b/d	
To Current A/c (if any) (Balance Transfer)		By Current A/c (Balance Transfer)	
To Revaluation A/c (Share of loss)		By Remaining Partners Cap. A/c	
To Profit & Loss A/c (Dr. Balance)		(Share of Goodwill)	
To Drawings A/c		By Revaluation A/c (Share of Profit)	
To Interest on Drawings A/c		By P & L A/c / General Reserve	
To P & L Suspense A/c		By P&L Suspense A/c	

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

(Share of loss of Current Year) To Balance Payable (B/F)		(Share of profit of Current Year) By J.L.P. A/c (His share) By Self L.P. A/c (His share) By Remaining Partners Capital A/c (Share in S.V. of Several Life Policies of remaining partners) By Interest on Capital A/c By Salary/Fees/Bonus A/c	

नोटः यदि चालू खाता पृथक से बनाया गया हैं तो उपरोक्त सभी समायोजन उसी खाते के माध्यम से करेंगें तथा फिर चालू खाते का शेष पूँजी खाते में ले जाकर पूँजी खाते का अन्तर देय राशि आयेगी।

अवकाश ग्रहण करने वाले एवं मृतक साझेदार के अन्तिम भुगतान का निस्तारण न करने पर लेखाकंन

(Accounting Treatment For Non-Settlement of Final Payment of Retirting Partner and deceased Partner)

यदि फर्म में किसी सांझेदार के सेवानिवृत होने पर उसे देय राशि का अन्तिम निस्तारण न होने पर भी शेष साझेदार व्यापार चालू रखते हैं तो भारतीय साझेदारी अधिनियम 1932 की धारा 37 के प्रावधानों के अनुसार निवृत होने वाले साझेदार को दो विकल्प हैं कि (1) वह अन्तिम भुगतान प्राप्त करने तक की अवधि बकाया रकम पर 6 प्रतिशत वार्षिक दर से ब्याज प्राप्त करे या (2) उस अवधि में अर्जित लाभ में निवृति की तिथि से पूँजी अनुपात से हिस्सा प्राप्त करे। दोनों में से जो अधिक लाभदायक हो।

उदाहरण 28 : अ, ब व स 2 : 2 : 1 में लाभ बॉटते हुए साझेदार हैं। 30.9.16 को स अवकाश ग्रहण करने पर सभी समायोजन के बाद साझेदारों के पूँजी खातों के शेष क्रमश ₹ 60,000 ₹ 80,000 व 60,000 था। अ व ब ने स को भुगतान का निस्तारण किए बिना अगले 6 माह व्यापार चालू रखा इस छः माह की अवधि में फर्म ₹ 50,000 का लाभ अर्जित किया। सी को 31.3.17 को अन्तिम भुगतान प्राप्त करते समय कितनी राशि प्राप्त होनी चाहिए।

हल : भारतीय साझेदारी अधिनियम की धारा 37 के अनुसार : **प्रथम विकल्प** : 60,000 x 6/100 x 6/12 = ₹1,800

द्वितीय विकल्प : 60,000x50,000/2,00,000 = ₹ 15,000

स द्वितीय विकल्प का उपयोग कर 60,000 + 15,000 = ₹75,000 प्राप्त करेगा।

उदाहरण 29 : सोम, मंगल व बुध फर्म में साझेदार हैं। 31 मार्च, 2017 को उनका स्थिति विवरण इस प्रकार थाः

Som, Mangal and Budh are partners in a firm. Their Balance Sheet as on 31st March, 2017 was as follows.

Liabilities		Amount ₹	Assets	Amount ₹
Capital:			Building	42,000
Som	30,000		Investment	17,000
Mangal	20,000		Joint Life Insurance Policy	15,000
Budh	15,000	65,000	Stock	18,000
Som's Current A/c	7,000		Debtors	16,000
Mangal's Current A/c	3,000	10,000	Budh's Current A/c	2,000
General Reserve		12,000	Cash at Bank	20,000
Bank Loan		28,000		
Joint Life Policy Reserve		15,000		
		1,30,000		**1,30,000**

30 सितम्बर, 2017 को बुध की मृत्यु हो गई।अन्य सूचनायें इस प्रकार हैं:

(i) वह ₹ 500 मासिक वेतन तथा पूँजी पर 10% वार्षिक ब्याज का अधिकारी था। **(ii)** उसने अपनी पुत्री के विवाह हेतु ₹ 3,000 फर्म से निकाले। **(iii)** उसका चालू वर्ष का लाभ में हिस्सा गत वर्ष के लाभ के आधार पर होगा जो ₹ 6,000 था। **(iv)** ख्याति का मूल्यांकन गत चार वर्षों के औसत लाभ का 90% पर किया जाता हैं। इन चार वर्षो का लाभ क्रमशः ₹ 6,000, ₹ 7,000, ₹ 2,000 व ₹ 9000 था। **(v)** विनियोगों का वर्तमान मूल्य ₹ 20,500 हैं तथा भवन पर ₹ 2,000 का मूल्य ह्रास लगाना हैं। **(vi)** संयुक्त जीवन बीमा पॉलिसी का ₹ 30,000 मिल गया। **(vii)** बुध को देय रकम के ₹ 5,750 तुरन्त भुगतान कर शेष रकम उसके उत्तराधिकारी ऋण खाते में हस्तान्तरित करें।

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

बुध का पूँजी खाता व उसका चालू खाता बनाइये।

On 30th September, 2017 Budh expired. Other informations are as follows.

(i) He was entitled to salary of ₹ 500 per month and interest on capital at 10% p.a.. **(ii)** He withdrew ₹ 3,000 for his daughter's marriage from the firm. **(iii)** His share in profit for current year will be based on last years profit which was ₹ 6,000. **(iv)** Goodwill is valued at 90% of average profit of last four years, in last four years profit were, ₹ 6,000, 7,000 ₹ 2,000 & 9,000 respectively. **(v)** The present value of investment are ₹ 20,500 and depreciation is to be charged ₹ 2,000 on Building. **(vi)** Payment received ₹ 30,000 for Joint Life Insurance Policy. **(vii)** Amount due to Budh is paid ₹ 5,750 in cash immediate and balance of amount transferred to his heir's loan account.

Prepare Budh's Capital Account and his Current Account.

हल: **Dr.** **Budh's Current Account** **Cr.**

Particulars	Amount ₹	Particulars	Amount ₹
To Balance b/d	2,000	By General Reserve	4,000
To Drawing	3,000	By Salary	3,000
To Budh's Capital A/c	15,750	By Interest on Capital	750
		By P&L Suspense A/c (share in profit)	1,000
		By Som's Current A/c	750
		By Mangal's Current A/c	750
		By Revaluaton A/c`	500
		By Joint Life Policy	10,000
	20,750		**20,750**

Dr. **Budh's Capital Account** **Cr.**

Particulars	Amount ₹	Particulars	Amount ₹
To Budh's Executor A/c	30,750	By Balance b/d	15,000
		By Budh's Current A/c	15,750
	30,750		**30,750**

Dr. **Budh's Executor Account** **Cr.**

Particulars	Amount ₹	Particulars	Amount ₹
To Cash A/c	5,750	By Budh's Capital A/c	30,750
To Budh's Executor Loan A/c	25,000		
	30,750		**30,750**

कार्यशील टिप्पणियॉ : **(1)** साझेदारी संलेख के अभाव में लाभ विभाजन अनुपात बराबर–बराबर होगा। **(2)** पिछले चिटठे व बुध की मृत्यु होने की तिथि के बीच 6 माह का अन्तराल हैं। अतः वेतन, पूँजी पर ब्याज,लाभों में हिस्सा आदि की गणना 6 माह के लिए की गयी हैं। **(3)** लाभों में हिस्से की गणनाः वर्ष 2017 के लाभ ₹ 6,000 x $\frac{6}{12}$ x $\frac{1}{3}$ = ₹ 1,000 **(4)** ख्याति में हिस्से की गणना : औसत लाभ= $\frac{3,000+7,000-2,000+9,000}{4}$ = ₹ 4,500, बुध का हिस्सा=45000x$\frac{1}{3}$=₹1,500, इसकी प्रविष्टिः

Som's Current A/ Dr. 750
Mangal's Current A/c Dr. 750
To Budh's Current A/c 1500

(5) Dr. **Revaluation Account** **Cr.**

Particulars	Amount ₹	Particulars	Amount ₹
To Buillding A/c	2,000	By Investment	3,500

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

To Profit	1,500		
	3,500		**3,500**

पुनर्मूल्यांकन पर लाभ में बुध का हिस्सा 1,500 x $\frac{1}{3}$ = 500 ₹ **(6)** संयुक्त जीवन बीमा पॉलिसी में बुध का हिस्साः

Dr. Joint Life Policy Account Cr.

Particulars	**Amount ₹**	**Assets**	**Amount ₹**
To Balance b/d	15,000	By J.L.P Reserve A/c	15,000
To Som's Current A/c	10,000	By Bank A/c	30,000
To Mangal Current A/c	10,000		
To Budh's Current A/c	10,000		
	45,000		**45,000**

उदाहरण 30 : A, B व C एक फर्म में साझेंदार थे तथा लाभ का वितरण 5 : 3 : 2 के अनुपात में करते थे। 31.3.2017 को उनका स्थिति विवरण इस प्रकार था।

A, B and C were partners in a firm sharing profits in the ratio 5:3:2. On the 31-3-17 their Balance Sheet was as follows:

Balance Sheet
As at 31 March, 2017

Liabilities	**Amount ₹**	**Assets**	**Amount ₹**
Creditors	21,000	Goodwill	10,000
Reserves	6,000	Building	20,000
Investment Fluctuation Reserve	2,000	Machinery	30,000
Workmen Compensation Reserve	10,000	Investment	10,000
Capitals A/c's		Patent	11,000
A 40000		Stock	10,000
B 25000		Debtors	8,000
C 15000	80,000	Cash	19,000
		Advertisement Expenes	1,000
	1,19,000		**1,19,000**

12-6-2017 को A की मृत्यु हो जाती हैं। A के उत्तराधिकारियों व शेष साझेदारों में निम्नलिखित सहमति हुईः **(i)** ख्याति का मूल्यांकन पिछले चार वर्षो के लाभों के औसत का ढाई गुना करना हैं। पिछले 4 वर्षों के लाभ इस प्रकार थे। वर्ष 2016-17 2015-16 2014-15 2013-14
लाभ ₹ 13000 ₹ 12000 ₹ 20000 ₹ 15000

(ii) एकस्व ₹ 8,500, मशीनरी ₹28,000, विनियोग ₹ 11,000, स्टॉक ₹ 12,000 एवं भवन का मूल्यांकन ₹ 25,000 पर किया गया व डूबत ऋण ₹ 500 के थे। **(iii)** लाभ में हिस्से की गणना पिछले वर्ष के लाभ के आधार पर करनी हैं। **(iv)** पूँजी पर ब्याज 10% वार्षिक दर से लगाना हैं। **(v)** उन्होंने ₹ 30,000 की एक संयुक्त बीमा पॉलिसी ले रखी थी जिसका वार्षिक प्रीमियम लाभ हानि खाते से चार्ज किया जाता था, में हिस्सा। **(vi)** मृत्यु की तिथि तक आहरण ₹ 2,400 के व उस पर ब्याज ₹ 200 था। **(vii)** कर्मचारी क्षतिपूर्ति संचय के विरूद्व दायित्व ₹ 4,000 **(viii)** वेतन ₹ 12,000 वार्षिक **(ix)** A को देय धनराशि में से ₹ 28,650 उसने उत्तराधिकारियों को तत्काल दे दी गयी व शेष उसके ऋण खाते में हस्तांतरित कर दी गयी।

A का पूँजी खाता व A के उत्तराधिकारी का खाता बनाइए।

A died on 12-6-2017. It was agreed among his Executors and the remaining partners that
(i) Goodwill to be valued at two and half years purchase of the average profits the previous 4 years which were Years 16-17 15-16 14-15 13-14
Profits ₹ 13000 ₹ 12000 ₹ 20000 ₹ 15000

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

(ii) Patent valued at ₹ 8500, Machinery at ₹ 28000, Investment at ₹ 11000, Stock at ₹ 12000, and Building at ₹ 25000, Bad-debts ₹ 500 **(iii)** Share in profits will be calculated on the basis of last year profits. **(iv)** Interest on capital be provided @ 10% p.a. **(v)** They had Joint Life Policy ₹ 30000 and the annual premium has been charged to P&L A/c **(vi)** His Drawings was up to date death of was ₹ 2400 & interest on Drawings was ₹ 200 **(vii)** Liability against workmen compensation is determine ₹ 4000 **(viii)** Salary ₹ 12000 p.a. **(ix)** ₹ 28650 to be paid immediately to the Executors of A and the balance transferred to his (Executors) Loan Account. Prepare A's Capital Account and A's Executors's Account.

हल: **Dr.** **A's Capital Account** **Cr.**

Particulars	Amount ₹	Particulars	Amount ₹
To Goodwill	5,000	By Balance b/d	40,000
To Advertisement Expenses	500	By Interest on capital	800
To Drawings	2,400	By Reserve	3,000
To Interest on Drawings	200	By Investment Fluctuation Reserve	1,000
To A's Executor A/c	78,650	By workmen Compensation Reserve	3,000
		By Revaluation A/c	1,500
		By B's Capital A/c	11,250
		By C's Capital A/c	7,500
		By P&L Suspense A/c	1,300
		By Salaries A/c	2,400
		By Life Policies 30000 x 5 / 10	15,000
	86,750		**86,750**

कार्यशील टिप्पणियाँ :

1.पूँजी पर ब्याज = $40000x\frac{10}{100}x\frac{73}{365}$ = ₹ 800 ; **2.** वेतन $12000x\frac{73}{365}$= ₹ 2400

3. लाभ में हिस्से की गणना$13000x\frac{73}{365}x\frac{5}{10}$= ₹ 1300

4. ख्याति में हिस्से की गणना : औसत लाभ = $\frac{13000+12000+20000+15000}{4}$= ₹15000; अतः ख्याति = 15000x2.5 or ₹ 37500; A का ख्याति में हिस्सा $37500x\frac{5}{10}$=₹ 18750 को B व C के पूँजी खातों में उनके फायदें के अनुपात 3 : 2 के अनुपात में समायोजित किया गया हैं।

5. कर्मचारी क्षतिपूर्ति का दावा, कर्मचारी क्षतिपूर्ति संचय में से घटाकर शेष राशि मे A का हिस्सा ज्ञात किया गया हैं।

$10000-4000$= ₹ $6000x\frac{5}{10}$= ₹ 3000

(6) Dr. **Revaluation Account** **Cr.**

Particulars	Amount ₹	Particulars	Amount ₹
To Patent A/c	2,500	By Building A/c	5,000
To Machine A/c	2,000	By Investment A/c	1,000
To Bad debts	500	By Stock A/c	2,000
To Profit	3,000		
	8,000		**8,000**

Dr. **A's Executor Account** **Cr.**

Particulars	Amount ₹	Particulars	Amount ₹
To Bank	28,650	By A's Capital A/c	78,650
To A's Executor's Loan A/c	50,000		
	78,650		**78,650**

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

उदाहरण 31 : A, B व C निम्नलिखित सम्पतियों से 1.4.2017 से व्यापार चला रहे थेः फर्नीचर ₹18,000, मशीन ₹72,000, नकद ₹10,000, देनदार ₹20,000। उनकी साझेदारी का हिस्सा 5:3:2 था। उनकी पूँजी का भी यही अनुपात था। 30.9.2017 को B की मृत्यु हो जाती हैं। उसके पुत्र ने पिता की फर्म में हिस्सा मॉगा तथा तय हुआ कि: **(i)** उसकी जमा पूँजी जो उसकी मृत्यु के दिन थी, वह दे दी जाए। **(ii)** उसकी पूँजी पर 5% प्रतिवर्ष की दर से ब्याज दिया जाए। **(iii)** उसने प्रति माह के प्रारंभ में ₹ 600 की दर से आहरण किया हैं। उसके यह आहरण उसके लाभ के हिस्से के लिये रहने दिया जाए। **(iv)** उसके आहरणों पर 6% प्रतिवर्ष के हिसाब से ब्याज लगेगा। **(v)** ख्याति का मूल्यांकन फर्म के औसत लाभ, जो कि ₹21,000 हैं, का दुगुना आंका जाऐ। B का व्यक्तिगत खाता बनाइये।

A, B and C were carrying on business with the following assets with effect from 1-4-2017. Furniture ₹ 18,000, Machine ₹ 72,000, Cash ₹ 10,000, Debtors ₹ 20,000. Their profit sharing ratio was 5:3:2 capital is also shared in the same ratio. B died on 30-9-2017. His son claimed his fathers interest in the firm.

The following was the settlement : **(i)** Allow his capital to his credit on the date death. **(ii)** Give 5% p.a. interest on his capital. **(iii)** he had been drawings @ ₹ 600 per month, which he withdrew at the beginning of each month. He is allowed to retain these drawings as a part his share of profit. **(iv)** Interest @ 6% p.a. be charged on his drawings. **(v)** Goodwill was evaluated twice the average profit which were ₹ 21,000. Prepare B's personal Account.

हलः**Dr.** **B's Capital Account** **Cr.**

Particulars	Amount ₹	Particulars	Amount ₹
To Drawings	3,600	By balance b/d	3,6000
To Interest on Drawings	63	By Interest on capital	900
$3600x\frac{3.5}{12}x\frac{6}{100}$		$36000x\frac{5}{100}x\frac{6}{12}$	
		By P & L suspense A/c	3,600
To B's Executor A/c	49,437	By A's Capital A/c	9,000
		By C's Capital A/c	3,600
	53,100		**53,100**

कार्यशील टिप्पणियां (Working Notes):

(1) साझेदारों की पूँजी ज्ञात करने के लिए चिट्ठा बनाया जायेगा।

Balance Sheet

Liabilities		Amount ₹	Assets	Amount ₹
Partners Capital (Bal. Figure)			Cash	10,000
A	60000		Debtors	20,000
B	36000		Furniture	18,000
C	24000	1,20,000	Machine	72,000
		1,20,000		**1,20,000**

इस प्रकार ₹1,20,000 पूँजी प्रत्येक साझेदार का हिस्सा उनके लाभ–हानि अनुपात 5 : 3 : 2 में क्रमशः ₹60,000, ₹36,000 तथा ₹24,000 होगा।

(2) ख्याति की गणना : ख्याति =21000x2=₹42000, B के हिस्से की ख्याति $42000x\frac{3}{10}$= ₹ 12600 जिसे A व C के पूँजी खातों में फायदे के अनुपात 5 : 2 में समायोजित किया गया हैं। **(3)** B का लाभों में हिस्सा आहरण की राशि के बराबर होगा। **(4)** आहरण पर ब्याज $\frac{6+1}{2}$=3.5 माह के लिए ज्ञात किया गया हैं।

उदाहरण 32 : खन्ना, सेठ और मेहता एक फर्म के साझेदार थे तथा 3:2:5 के अनुपात में लाभ बांटते थे। 31.12.2016 को खन्ना, सेठ तथा मेहता का स्थिति विवरण निम्नानुसार थाः

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Khanna, Seth and Mehta were partners in a firm sharing profits in the ratio of 3:2:5. On 31.12.2016 the Balance Sheet of Khanna, Seth and Mehta was as follows:

Liabilities		Amount ₹	Assets	Amount ₹
Capitals :			Goodwill	3,00,000
Khanna	3,00,000		Land & Building	5,00,000
Seth	2,00,000		Machinery	1,70,000
Mehta	5,00,000	10,00,000	Stock	30,000
General Reserve		1,00,000	Debtors	1,20,000
Loan from Seth		50,000	Cash	45,000
Creditors		75,000	Profit and Loss A/c	60,000
		12,25,000		**12,25,000**

14 मार्च 2017 को सेठ की मृत्यु हो गई। साझेदारी संलेख के अनुसार साझेदार की मृत्यु पर उसका उत्तराधिकारी निम्नलिखित के लिए हकदार होगाः **(i)** पूँजी खाते का शेषः **(ii)** पिछले वर्ष के लाभ के आधार पर मृत्यु की तिथि तक लाभ में भाग। **(iii)** सम्पतियों के पुनर्मूल्यांकन तथा देनदारियों के पुनः निर्धारण में लाभ हानि का अंश जिसकी निम्नांकित आधार पर गणना करनी हैः **(क)** भूमि तथा भवन को ₹ 1,20,000 से बढाया जाना हैं। **(ख)** ह्रासित करके मशीनरी का मूल्य ₹ 1,35,000 तक तथा स्टॉक का ₹ 25,000 तक करना हैं। **(ग)** डूबत तथा संदिग्ध ऋणों के लिए देनदारों पर ढाई प्रतिशत का प्रावधान करना हैं। **(iv)** सेठ के उत्तराधिकारी को देय शुद्ध राशि का स्थानान्तरण उसके निष्पादक के ऋण खाते में कर दिया गया, जिसका भुगतान बाद में करना था।

पुनर्मूल्यांकन खाता, साझेदारों के पूँजी खाते, सेठ के उत्तराधिकारी का खाता तथा खन्ना एव मेहता का स्थिति विवरण तैयार कीजिए जिन्होंने अपने पूँजी खातों को नए लाभ अनुपात में रखते हुए व्यवसाय को चालू रखने का निश्चय किया हैं। किसी भी आधिक्य या कमी को साझेदारों के चालू खातों में स्थानान्तरित कर दिया जाएगा।

On 14th March 2016, Seth died. The partnership deed provided that on the death of a partner the executor of the deceased partner is entitled to: **(i)** Balance in Capital Account; **(ii)** Share in profits upto the date of death on the basis of last year's profit; **(iii)** His share in profit/Loss on revaluation of assets and re-assessment of liabilities, is calculated on the basis of following: **(a)** Land and Building was to be appreciated by ₹ 1,20,000; **(b)** Machinery was to be depreciated to ₹ 1,35,000 and Stock to ₹ 25,000, **(c)** A provision of two and half percent for bad and doubtful debts was to created on debtors. (iv) The net amount payable to Seth's executors was transrferred to his loan account which was to be paid later.

Prepare Revaluation Account, Partners Capital Accounts, Seth's Executors A/c and the Balance Sheet of Khanna and Mehta who decided to continue the business keeping their capital balances in their new profit sharing ratio. Any surplus or deficit to be transferred to current accounts of the partners.

हल: **Dr.** **Revaluation Account** **Cr.**

Particulars		Amount ₹	Particulars	Amount ₹
To Machinery A/c		35,000	By Land & Building A/c	1,20,000
To Stock A/c		5,000		
To Provision of Bad-debts A/c		3,000		
To profit transferred:				
Khanna's Capital A/c	23100			
Seth's Capital A/c	15400			
Mehta's Capital A/c	38500	77,000		
		1,20,000		**1,20,000**

Dr. **Partners's Capital Account** **Cr.**

Particulars	Khanna ₹	Seth ₹	Mehta ₹	Particulars	Khanna ₹	Seth ₹	Mehta ₹

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

To Goodwill	90,000	60,000	1,50,000	By balance b/d	3,00,000	2,00,000	5,00,000
To P & L A/c	1,82,000	12,000	30,000	By General Reserve	30,000	20,000	50,000
To P & L Suspense	-	2,400	-	By Revaluation	23,100	15,400	38,500
To Seth's Executor A/c	-	1,61,000	-				
To Balance c/d	2,45,100	-	4,08,500				
	3,53,100	**2,35,400**	**4,08,500**		**3,53,100**	**2,35,400**	**5,88,500**

Dr. **Seth's Executor Account** **Cr.**

Particulars	Amount ₹	Particulars	Amount ₹
To Seth's Executor's Loan A/c	2,11,000	By Seth's Capital A/c	1,61,000
		By Seth's Laon A/c	50,000
	2,11,000		**2,11,000**

Balance Sheet Khanna & Seth
As at 14 March, 2017

Liabilities		Amount ₹	Assets		Amount ₹
Capital A/c :			Land & Building		620000
Khanna	2,45,100		Machinery		135000
Mehta	4,08,500	6,53,600	Stock		25000
Creditors		75,000	Debtors	1,20,000	
Seth's Executor's Loan A/c		2,11,000	(-) PBD	3,000	117000
P & L Suspense A/c		2,400	Cash		45000
		9,42,000			**942000**

कार्यशील टिप्णियाँ (Working Notes):

(i) सेठ का हानि में हिस्सा $60000 \times \frac{73}{365} \times \frac{2}{10}$ = ₹ 2400 **(ii) पूँजी का समायोजन** : खन्ना व मेहता की कुल समायोजित पूँजी =245100+408500=₹ 653600, यही नयी फर्म की पूँजी होगी जिसमें 3 : 5 में खन्ना व मेहता हिस्सा क्रमशः खन्ना ₹ 2,45,100 व मेहता ₹ 4,08,500

साझेदारों की समायोजित पूँजी व आनुपातिक पूँजी समान हैं अतः किसी समायोजन की आवश्यकता नहीं हागी।

सारांश (Summary)

- **साझेदार का अवकाश ग्रहण करना:** जब फर्म का कोई साझेदार किसी कारण (स्वेच्छा से, वृद्धावस्था, आपसी मतभेद आदि) से फर्म छोड देता हैं तो उसे साझेदार द्वारा अवकाश ग्रहण करना कहते हैं।
- **अवकाश का प्राप्त साझेदार:** जो साझेदार फर्म छोडता हैं तो उसे अवकाश प्राप्त साझेदार कहते हैं।
- **अवकाश ग्रहण करने तरीके: (i)** अंन्य साझेंदारों को सूचना देकर **(ii)** समझौते के अनुसार **(iii)** आपसी सहमति से साझेदार के अवकाश ग्रहण या मृत्यु पर जो समस्यायें हल करनी होती हैं :
  (i) नये लाभ विभाजन अनुपात व फायदे के अनुपात की गणना **(ii)** ख्याति का मूल्यांकन व व्यवहार **(iii)** सम्पतियों का पुनर्मूल्यांकन व दायित्वों का पुनः निर्धारण **(iv)** अवितरित लाभों हानियों व संचयों का समायोजन **(v)** पूँजी का समायोजन **(vi)** देय राशि का भुगतान
- **नया लाभ विभाजन अनुपात** : शेष साझेदार फर्म के भावी लाभों को जिस अनुपात में विभाजित करते हैं , वह नया लाभ विभाजन अनुपात कहलाता हैं अर्थात पुराना लाभ विभाजन अनुपात + फायदे का अनुपात
- **फायदे का अनुपात** : अवकाश ग्रहण करने वाले या मृत साझेदार के हिस्से को शेष साझेदार जिस अनुपात में ग्रहण करते हैं वह फायदे का अनुपात कहलाता हैं अर्थात नया लाभ विभाजन अनुपात – पुराना लाभ विभाजन अनुपात अवकाश ग्रहण करने वाले या मृत साझेदार के हिस्से की ख्याति उसके पूँजी खाते में क्रेडिट व शेष साझेदारों में उनके पूँजी खातों में फायदे के अनुपात में डेबिट की जाती हैं। विद्यमान ख्याति की राशि यदि हो, को पुराने लाभ विभाजन अनुपात में सभी साझेदारों के पूँजी खातों को डेबिट करके व ख्याति खाते को क्रेडिट करके अपलिखित कर दिया जाता हैं।

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

- साझेदार के अवकाश ग्रहण करने या मृत्यु पर सम्पतियों का पुनर्मूल्यांकन व दायित्वों का पुनः निर्धारण किया जाता हैं ताकि उनको देय राशि का सही निर्धारण हो सके ।
- सभी अवितरित लाभों हानियों व संचयों को पुराने लाभ विभाजन अनुपात में सभी साझेदारों के पूँजी खातों में ब्याज हस्तांतरित किया जाता हैं।
- अवकाश ग्रहण करने वाले साझेदार या मृत साझेदार के उत्तराधिकारियों को देय रकम का एकमुश्त भुगतान कर दिया जाता हैं या फिर समझौते के अनुसार उसे ऋण खातें में हस्तांतरित कर दिया जाता हैं जिसका भुगतान किश्तों में या अन्य तरीके से ब्याज सहित किया जाता हैं।

शब्दावली (Glossary)

- **साझेदार का अवकाश ग्रहण करना (Retirement of a partner):** जब एक साझेदार फर्म से साझेदार के रूप में अलग हो जाये तो उसे साझेदार का अवकाश ग्रहण कहा जाता हैं।
- **नया लाभ विभाजन अनुपात (New profit sharing ratio):** पुराना लाभ विभाजन अनुपात + फायदे का अनुपात
- **फायदे का अनुपात (Gaining Ratio) : नया लाभ विभाजन अनुपात–**पुराना लाभ विभाजन अनुपात
- **संयुक्त जीवन बीमा पॉलिसी (Joint Life Policy)**: जब फर्म द्वारा सभी साझेदारों के जीवन पर एक संयुक्त पॉलिसी ली जाती हैं।
- **पृथक जीवन बीमा पालिसी (Individual Life Policy):** जब फर्म द्वारा प्रत्येक साझेदार के जीवन पर अलग जीवन बीमा पत्र लिया जाता हैं।
- **समर्पण मूल्य (Surrender Value):** बीमित व्यक्ति बीमा कंपनी से अपनी पॉलिसी को समर्पित करने पर उस तिथि को जो राशि प्राप्त कर सकता हैं।

अभ्यासार्थ प्रश्न (Questions for Exercise)

बहुचयनात्मक प्रश्न (Multiple Choice Questions)

1. A, B व C 2:2:1 के लाभ बांटते हुए साझेदार हैं। B के अवकाश ग्रहण करने पर ख्याति का मूल्यांकन ₹ 30,000 पर किया जाता हैं, तो B की क्षतिपूर्ति के लिए A व C अंशदान करेंगे।

(अ) ₹ 20000 व ₹ 10000 (ब) ₹ 8000 व ₹ 4000 (स) कोई अंशदान नहीं करेंगे (द) ₹ 15000 व ₹ 15000

A, B and C are partners sharing profits in the ratio of 2:2:1. On retirement of B, goodwill was valued at ₹30,000. Find the contribution of A and C to compensate B :

(a) ₹ 20,000 and ₹ 10,000 **(b)** ₹ 8,000 and ₹ 4,000

(c) ₹ 20,000 and ₹ 10,000 **(d)** ₹ 15,000 and ₹ 15,000

2. X, Y एवं Z 5:3:2 में लाभ बांटतें हुए साझेदार हैं। ख्याति पुस्तकों में नहीं दिखायी गयी हैं लेकिन उसका मूल्य ₹1,00,000 हैं। X फर्म से अवकाश ग्रहण करता हैं एवं Y व Z भविष्य में लाभों को बराबर बराबर बांटते हैं। Xका ख्याति में हिस्सा Y व Z के खातों में किस अनुपात में डेबिट होगा।

(अ) 1/2 : 1/2 (ब) 2:3 (स) 3:2 (द) इनमें से कोई नहीं

X, Y, Z were partners sharing profits in ratio of 5:3:2. Goodwill does not appears in the books, but it is agreed to be worth ₹1,00,000. X retires from the firm and Y and Z decide to share future profits equally. X's share of goodwill will be debited to Y's and Z's capital A/cs in ratio:

(a) 1/2 : 1/2 **(b)** 2:3 **(c)** 3:2 **(d)** None

3. A, B व C 1/2 : 3/10 : 1/5 के अनुपात में लाभ बांटते हुए साझेदार हैं। B फर्म से अवकाश ग्रहण करता हैं। A व C भविष्य में 3:2 में लाभ बांटने निश्चय करते हैं। फायदे का अनुपात ज्ञात करो।

(अ) 1:2 (ब) 3:2 (स) 2:3 (द) इनमें से कोई नहीं

A, B and C are partners sharing profits in the ratio 1/2 , 3/10 and 1/5. B retires from the firm, A and C decide to share the future profits in 3:2. Calculate gaining ratio.

(a) 1:2 **(b)** 3:2 **(c)** 2:3 **(d)** None

4. साझेदार के अवकाश ग्रहण करते समय फर्म बीमा कम्पनी से संयुक्त जीवन बीमा पॉलिसी के विरूद्व....प्राप्त करती हैं।

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

(अ) अवकाश ग्रहण करने वाले साझेदार की पॉलिसी की राशि व शेष साझेदारों की पॉलिसी का समर्पण मूल्य
(ब) समर्पण मूल्य (स) पॉलिसी की राशि (द) इनमें से कोई नहीं
At the time of retirement of a partners, firm gets…….. from the insurance company against the joint life policy.
(a) Policy value for the retiring partner and surrender value for the rest
(b) Surrender value **(c)** Policy amount **(d)** None of these

5. B, C & D 7:5:4 के अनुपात में लाभ बांटते हुए साझेदार हैं। D की 30.6.17 को मृत्यु हो जाती हैं। वर्ष 2016–17 के लाभ ₹ 12000 हैं। तो D के खाते में लाभों की कितनी राशि क्रेडिट की जायेगी।
(अ) ₹ 3,000 (ब) ₹ 750 (स) शून्य (द) ₹ 1,000
B, C, D are partners sharing profits in the ratio 7:5:4. D died on 30th June 2017 and profits for the year 2016-2017 were ₹ 12,000. How much share in profits will be credited to D's Account ?
(a) ₹ 3,000 **(b)** ₹ 750 **(c)** Nil **(d)** ₹ 1,000

6. चिटठे में दिखाया गया संयुक्त जीवन बीमा पॉलिसी खाता कौनसी राशि को प्रकट करता हैं –
(अ) पॉलिसी का समर्पण मूल्य (ब) संयुक्त जीवन बीमा पॉलिसी का वार्षिक प्रीमियम
(स) फर्म द्वारा देय कुल प्रीमियम (द) पॉलिसी के परिपक्व होने पर प्राप्य राशि
The balance of joint life policy account as shown in the balance sheet represents:
(a) Surrender value of a policy **(b)** Annual premium of Joint Life Policy
(c) Total premium paid by the firm **(d)** Amount receivable on the maturity of the policy

7. साझेदार की मृत्यु के बाद उसको देय रकम प्राप्त की जाती हैं।
(अ) सरकार द्वारा (ब) उसके पुत्र द्वारा (स) मृतक साझेदार के उत्तराधिकारियों द्वारा (द) इनमें से कोई नहीं
After the death of a partner, amount payable to him is received by :
(a) Government **(b)** by his son **(c)** Executors of deceased partner **(d)** None

8. साझेदारों की संयुक्त जीवन बीमा पॉलिसी पर देय प्रीमियम का किस तरह व्यवहार किया जाता हैं। इसे
(अ) साझेदारों के चालू खाते में क्रेडिट किया जाता हैं। (ब) लाभ–हानि खाते में क्रेडिट किया जाता हैं।
(स) साझेदारों के पूँजी खाते में डेबिट किया जाता हैं। (द) लाभ–हानि खाते में डेबिट किया जाता हैं।
How is the premium paid on the JLP of the partners treated? It is ------ to the ------- accounts:
(a) Credited, Partner's Current A/c **(b)** Credited, Profit & Loss A/c
(c) Debited, Partner's Capital A/c **(d)** Debited, Profit & Loss A/c

9. A, B व C 5:3:2 के अनुपात में लाभ–हानि बांटते हुए साझेदार हैं। फर्म के चिटठे में 31.3.2017 को संचय का शेष ₹25,000 बताया गया हैं। पिछले वर्ष के लाभ ₹50,000 हैं। संयुक्त जीवन बीमा पॉलिसी ₹1,00,000 स्थायी सम्पतियां ₹1,20,000 की हैं। 1.6.17 को C की मृत्यु हो जाती हैं। तो C के उत्तराधिकारियों को पूँजी के साथ मिलेगा–
(अ) संयुक्त जीवन बीमा पॉलिसी में हिस्सा (ब) संचयों में हिस्सा
(स) मृत्यु की तिथि तक लाभों में आनुपातिक हिस्सा (द) उपर्युक्त सभी
A, B, C are partners sharing profits and loss in 5:3:2. The firm's balance sheet as on 31-3-2017 shows reserve balance of ₹ 25,000. Profit of the year ₹ 50,000. Joint Life Policy of ₹ 1,00,000, Fixed, assets of ₹ 1]20,000. On 1st June C died and on same date. The executors of C will get along with capital:
(a) Share in joint life policy **(b)** Share in reserves
(c) Proportionate share of profit upto the date of death **(d)** All of the above

10. संयुक्त जीवन बीमा पॉलिसी की फर्म द्वारा प्राप्त राशि वितरित की जाती हैं:
(अ) प्रारंभिक पूँजी के अनुपात में (ब) अंतिम पूँजी के अनुपात में
(स) पुराने लाभ–विभाजन अनुपात में (द) नये अनुपात में
Joint Life Policy amount received by a firm is distributed in------
(a) Opening Capital Ratio **(b)** Closing Capital Ratio

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

(c) Old profit sharing ratio of partners **(d)** New profit sharing ratio of partners

अतिलघूत्तरात्मक प्रश्न (Very Short Answer type Questions):

1. साझेदार के अवकाश ग्रहण से क्या आशय हैं?
What is meant by retirement of a Partner?

2. अवकाश ग्रहण किये जाने के कोई दो तरीके बतायें?
State any two modes of retirement?

3. संयुक्त जीवन बीमा पॉलिसी क्या हैं?
What is Joint Life Insurance Policy?

4. समर्पण मूल्य क्या हैं?
What is Surrender Value?

5. A, B व C एक फर्म में लाभों को $\frac{1}{2}:\frac{3}{10}:\frac{2}{10}$ के अनुपात में लाभ विभाजन करते हुए साझेदार हैं। नया लाभ विभाजन अनुपात व फायदे का अपुनात ज्ञात करो जबकि–(a) A अवकाश ग्रहण करता हैः (b) B अवकाश ग्रहण करता हैं : (c) C अवकाश ग्रहण करता हैं।

A, B & C are partners in a firm sharing profits in the ratio of 1/2 : 3/10 : 2/10 . Calculate New profit sharing ratio & Gaining ratio when : (i) A retires. (ii) B retires. (iii) C retires.

Ans.: New profit sharing Ratio : (i) 3:2 (ii) 5:2 (iii) 5:3 Gaining Ratio : (i) 3:2 (ii) 5:2 (iii) 5:3

6. A, B व C साझेदार हैं जो लाभों को 2:1:2 के अनुपात में बॉटते हैं। A अवकाश ग्रहण करता हैं। A का पूरा हिस्सा B प्राप्त करता हैं। नया लाभ विभाजन अनुपात ज्ञात करें।

A, B & C are partners in a firm sharing profits in the ratio of 2:1:2. A retires and his share is entirely taken by B. Calculate New profit sharing ratio.

Ans.: New profit Sharing Ratio : 3:2

7. A, B व C लाभों को $\frac{1}{4}:\frac{2}{5}:\frac{7}{20}$ के अनुपात में बॉटते हैं। B अवकाश ग्रहण करता हैं तथा B का हिस्सा A व C 1:2 के अनुपात में क्रय करते हैं। नया लाभ विभाजन अनुपात व फायदे का अनुपात ज्ञात करो।

A, B & C are partners in a firm sharing profits in the ratio of ¼ : 2/5 : 7/20. B retires and his share is taken by A & C in the ratio of 1:2. Calculate New profit sharing ratio & Gaining ratio.

Ans.: New profit Sharing Ratio : 23:37 Gaining Ratio : 1:2

8. A, B व C साझेदार 4:3:1 के अनुपात में लाभ विभाजन करते हैं। B अवकाश ग्रहण करता हैं और अपने लाभ के भाग को ₹ 8,100 में बेच देता हैं। A द्वारा इसके लिए ₹ 3,600 व C द्वारा ₹4,500 दिये जाते हैं। नया लाभ विभाजन अनुपात व फायदे का अनुपात ज्ञात करें।

A, B & C are partners in a firm sharing profits in the ratio of 4:3:1. B retires selling his share of profit to A & C for ₹ 8,100, ₹ 3,600 being paid by A & ₹ 4,500 by C. Calculate New profit sharing ratio & Gaining ratio.

Ans.: New profit Sharing Ratio : 2:1 Gaining Ratio : 4:5

9. A, B व C 4:3:2 के अनुपात में लाभ विभाजन करते हैं। A अवकाश ग्रहण करता हैं। B व C का नया लाभ विभाजन अनुपात 2:1 हैं। फायदे का अनुपात ज्ञात करों।

A, B & C are partner's in a firm sharing profits in the ratio of 4:3:2. A retires and new profit sharing ratio of B & C will be 2:1. Calculate Gaining ratio.

Ans.: Gaining Ratio : 3:1

10. A, B व C 3:4:1 के अनुपात में लाभ विभाजन करते हुए साझेदार हैं। A अवकाश ग्रहण करता हैं तथा वह अपने हिस्से का 2/3 भाग B को व शेष भाग C को समर्पित करता हैं। तो नया लाभ विभाजन अनुपात व फायदे का अनुपात ज्ञात करों।

A, B & C are partners in a firm sharing profits in the ratio of 3:4:1. A retires he surrendered 2/3rd of his share in favour of B and remaining in favour of C. Calculate New profit sharing ratio & Gaining ratio.

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Ans.: New profit sharing Ratio : 3:1 Gaining Ratio : 2:1

लघूत्तरात्मक प्रश्न (Short Answer type Questions)

1. जब साझेदार के अवकाश ग्रहण करने पर अन्तिम भुगतान का निस्तारण न हो तो भारतीय साझेदारी अधिनियम 1932 की धारा 37 के अनुसार उसका अधिकार बताइए?

When final payment of retiring partner is out settled at the time of retirement. Write right of partners under Section 37 of Indian Partnership Act, 1932?

2. लाभ प्राप्ति अनुपात से आप क्या समझते हैं?

What do you mean by gaining ratio? How is it calculated?

3. साझेदारों के त्याग अनुपात और लाभ प्राप्ति अनुपात में अन्तर स्पष्ट कीजिए?

Distinguish between sacrificing ratio and gaining ratio of partners?

4. A, B व C एक फर्म में साझेदार हैं जो 2:3:4 के अनुपात में लाभ विभाजन करते हैं। C अवकाश ग्रहण कर लेता हैं। फर्म की ख्याति का मूल्यांकन ₹ 45,000 पर किया गया। लेखा पुस्तकों में ख्याति खाता ₹ 27,000 पर दिखाया गया हैं। ख्याति के लिए आवश्यक प्रविष्टियाँ कीजिए।

A, B & C are partners in a firm sharing profits in the ratio of 2:3:4. C retires and the goodwill of the firm is valued at ₹ 45,000. Goodwill appeared in the books at ₹ 27,000. Pass necessary journal entries for treatment of goodwill.

5. A, B व C एक फर्म में साझेदार हैं जो 5:3:2 के अनुपात में लाभ विभाजन करते हैं। B अवकाश ग्रहण करता हैं। फर्म की ख्याति का मूल्याकन ₹ 21,000 पर किया गया। ख्याति के लिए आवश्यक प्रविष्टियां कीजिए।

A, B & C are partners in a firm sharing profits in the ratio of 5:3:2. B retires and the goodwill of the firm is valued at ₹ 21,000. Pass necessary journal entries for treatment of goodwill.

6. A, B व C एक फर्म में साझेदार हैं जो 1:2:3 के अनुपात में लाभ विभाजन करते हैं। B अवकाश ग्रहण करता हैं। B के पूँजी खाते को शेष सभी समायोजनों के बाद ₹1,00,000 हैं। A व C उसे पूर्ण भुगतान में ₹ 1,30,000 देने का निर्णय करते हैं। नया लाभ विभाजन अनुपात 1:3 हैं। ख्याति के व्यवहार हेतु आवश्यक जर्नल प्रविष्टि दीजिए।

A, B & C are partners in a firm sharing profits in the ratio of 1:2:3. B retires and balance of his capital account after making all adjustmentas stands at ₹1,00,000. A & C agreed to pay him ₹1,30,000 in full settlement of his account. Pass necessary journal entries for treatment of goodwill, if the new profit sharing ratio is 1:3.

7. A, B और C एक फर्म में साझेदार हैं। 1 जनवरी, 2014 को A अवकाश ग्रहण करता हैं। अवकाश ग्रहण की तिथि पर फर्म ने उसे कुल ₹ 80,000 देने हैं। उसे यह राशि प्रत्येक वर्ष के अन्त मे किश्तों में देने का समझौता किया गया। निम्न दशाओं में A का ऋण खाता बनाइये :

(i) 10% वार्षिक ब्याज सहित चार वार्षिक किश्तें **(ii)** पहले तीन वर्षो तक ₹ 25,000 प्रति वर्ष, जिसमें अदत शेषों पर 10% वार्षिक ब्याज शामिल हैं तथा शेष राशि चौथे वर्ष में ब्याज सहित।

A, B & C are partners in a firm. A retires on 1st January, 2014. On the date of retirement, ₹80,000 is due to him in all. It is agreed to pay him this amount in instalments every year at the end of the year. Prepare A's Loan A/c in the following cases:

(i) Four yearly instalments plus interest @10% p.a. **(ii)** Three instalments of ₹ 25,000 including interest @ 10% p.a. on the outstanding balance and the balance including interest in the fourth year.

8. A, B व C एक फर्म में साझेदार हैं जिनकी पुस्तकें प्रतिवर्ष 31 मार्च को बंद होती हैं। A की 30-6-2017 को मृत्यु हो गयी और सहमति के अनुसार मृतक साझेदार का मृत्यु की तिथि तक लाभ का हिस्सा पिछले 5 वर्षो के औसत लाभ के आधार पर निकाला जायेगा। पिछले 5 वर्षो के लाभ हैं

वर्ष	31-3-13	31-3-14	31-3-15	31-3-16	31-3-17
लाभ–हानि	₹14000	₹18000	₹ 22000	₹ (10000)हानि	₹ 16000

A की मृत्यु तक उसके लाभ के हिस्से की गणना कीजिए और जर्नल प्रविष्टि कीजिए।

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

A, B and C are partners in a firm whose books are closed on March 31st each year. A died on 30-6-17 and according to the agreement, the share of profits of a deceased partner upto date of death is to be calculated on the basis the average profits for the last five years. The net Profits/Loss for the last 5 years have been : ₹ 14,000, ₹18,000, ₹ 22,000, ₹(10,000) Loss, ₹ 16,000 respectively. Calculate A's share of the profits upto the date of death & pass necessary Journal Entry.

Ans.: ₹ 1000

9. X, Y व Z साझेदार हैं और लाभों को 3:2:1 के अनुपात में बाँटते हैं। 10 अप्रैल 2017 को X की मृत्यु हो गयी। वर्ष 2016की बिक्री व लाभ क्रमश; ₹ 2,00,000 व ₹ 20,000 थे। 1-1-17 से 10-4-17 तक की बिक्री ₹ 1,20,000 थी। X के लाभ का हिस्सा ज्ञात कीजिये।

X, Y and Z are partners sharing profits in the ratio 3:2:1. X died on 10-4-2017. The sales and profits for 2016 were ₹ 2,00,000 and ₹ 20,000 respectively, sales from 1-1-17 to 10-4-17 was ₹ 120000. Find the share of X's profit.

Ans.: ₹ 6000

10: एक फर्म में A, B व C बराबर के साझेदार हैं। प्रत्येक साझेदार का अलग से क्रमश:₹ 30000,₹ 25000 व ₹ 40000 के लिए बीमा कराया गया हैं। इनका प्रीमियम फर्म द्वारा चुकाया जाता हैं। A की मृत्यु हो गयी तथा पॉलिसी की राशि बीमा कम्पनी से प्राप्त हो गयी। B व C की पॉलिसियों का समर्पण मूल्य क्रमश: ₹ 3000 व ₹ 6000 था। आवश्यक जर्नल प्रविष्टियॉ दीजिए।

A, B and C are equal partners in a firm. They were insured separately for ₹ 30000, ₹ 25000 and ₹ 40000. The premium which is paid by the Firm. A died and the policy money is received from the Insurance Company. The surrender value the of policies of B & C was ₹ 3000 and ₹ 6000, pass necessary Journal Entries.

निबन्धात्मक प्रश्न (Essay type Questions)

1. अवकाश ग्रहण अथवा मृत्यु पर साझेदार का फर्म में भाग किस प्रकार निर्धारित किया जाता हैं?

How is Partner's share determined on the Retirement or Death? Explain.

2. एक साझेदार की निवृति या मृत्यु पर कौन–कौन सी समस्याएँ उत्पन्न होती हैं? उसका समाधान कैसे किया जा सकता हैं।

What problems do arise on retirement or death of a partner and how are they settled?

3. संयुक्त जीवन बीमा पॉलिसी तथा पृथक जीवन बीमा पॉलिसियों का लेखा फर्म की पुस्तकों में कैसे करते हैं?

How is accounting done for joint life insurance policy and several life insurance policies in the books of a firm?

4. एक अवकाश ग्रहण करने वाले साझी के हिस्से में भुगतान की कौन–कौन सी विधियां हैं? समझाइये।

What are the different methods of making payment due to a retiring partner? Explain.

बहुचयनात्मक प्रश्नों के उत्तर :

प्रश्न संख्या	1	2	3	4	5	6	7	8	9	10
उत्तर	ब	ब	अ	ब	ब	अ	स	द	द	स

आंकिक प्रश्न (Numerical Questions)

1. X, Y तथा Z एक फर्म में साझेदार थे और लाभ को 1/2 : 1/3 : 1/6 के अनुपात में बाँटते थे। 31 दिसम्बर 2016 को फर्म का स्थिति विवरण इस प्रकार था ;

X, Y and Z were partners in a firm sharing profits in the ratio of 1/2: 1/3 : 1/6 respectively. The Balance Sheet of the firm on 31st December, 2016 stood as follows:

Liabilities	Amount(₹)	Assets		Amount(₹)
Creditors	9,500	Cash at Bank		1,250
Bills Payable	2,500	Debtors	8,000	

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Reserve Fund	6,000	Less: Provision for DD 250	7,750
Capitals :		Stock	12,500
X 20,000		Motor Vans	4,000
Y 15,000		Machinery	17,500
Z 12,500	47,500	Building	22,500
	65,500		**65,500**

उपरोक्त तिथि को Y निम्नलिखित शर्तों पर फर्म से अवकाश ग्रहण करता हैं ;
(क) फर्म की ख्याति का मूल्यांकन ₹ 9,000 किया जाएगा और फर्म की खाता पुस्तकों में इसे नहीं दिखाया जाएगा। **(ख)** मशीनरी पर 10% और मोटरवैन पर 15 % का ह्रास लगाया जाएगा। **(ग)** स्टॉक पर 20% और भवन पर 10% की वृद्धि की जाएगी। **(घ)** संदिग्ध ऋण के लिए प्रावधान में ₹ 975 बढाए जाऐंगे। **(ड)** कर्मचारी क्षतिपूर्ति के लिए ₹ 825 का दायित्व बनाया जाएगा।
यह निर्णय किया गया की भविष्य में X तथा Z लाभ को 3:2 के अनुपात में बाँटेगें। आप पुनर्मूल्याकन खाता साझेदारों के पूँजी खाते और Y के अवकाश ग्रहण के पश्चात फर्म का स्थिति विवरण बनाइए।
Y retires from the firm on the above date subject to the following conditions: **(a)** Goodwill of the firm be valued at ₹ 9,000 and is not to be shown in the books of the firm. **(b)** Machinery would be depreciated by 10% and motor vans by 15%, **(c)** Stock would be appreciated by 20% and Building by 10%. **(d)** The provision for doubtful debt would be increased by ₹ 975. **(e)** Liability for workdmen's compensation to the extent of ₹ 825 would be created.

It was agreed that X and Z would share profits in future in the ratio of 3:2 respectively.
You are required to prepare the Revaluation A/c, Capital A/c of partners and Balance Sheet of the firm after the retirement of Y.
यह मानते हुए भी हल कीजिए कि साझेदार सम्पतियों व दायित्वों को उनके पुराने पुस्तक मूल्य पर ही दिखाने का निर्णय लेते हैं।
Also solve if it is assumed that partners decided to show the Assets and Liabilities at their old book values.
Ans.: (i) Revaluation profit ₹ 600, Y's loan A/c ₹ 20,200, capital A/c X ₹ 22,400, Z ₹ 11,500 B's ₹ 66,925 **(ii)** Ans. Memorandum Revaulation A/c profit ₹600 B/s ₹65500 (Total).
2. A, B और C साझेदार हैं जो कि लाभों को 4:3:2 के अनुपात में विभाजित करते हैं। 31 मार्च, 2017 को इनका स्थिति विवरण निम्न था;
A, B and C are partners sharing profits in the ratio of 4:3:2. Their Balance Sheet on 31st March, 2017 was as follows:

Balance Sheet

Liabilities	Amount(₹)	Assets	Amount(₹)
Creditors	33,000	Cash	10,400
Empolyee's Provident Fund	4,000	Debtors	15,000
General Reserve	27,000	Stock	30,000
Capital:		Machinery	50,000
A 70,000		Land and Building	1,00,000
B 45,000		Profit & Loss A/c	3,600
C 30,000	1,45,000		
	2,09,000		**2,09,000**

फर्म ने ₹ 40,000 की एक संयुक्त जीवन बीमा पालिसी ले रखी हैं। 31 मार्च, 2017 को इस पॉलिसी का समर्पण मूल्य ₹13,500 हैं। B इस तिथि को अवकाश ग्रहण करता हैं। निम्न शर्ते तय होती हैं: **(a)** भूमि एवं भवन का मूल्य ₹ 20,000 से कम मूल्यांकित हैं। **(b)** ख्याति का मूल्य ₹ 18,000 निर्धारित किया गया। **(c)** संदिग्ध ऋणों के लिये

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

5% दर से आयोजन बनाया जायेगा। मशीनरी का मूल्य 10% से तथा स्टॉक का मूल्य 5% से कम किया जाएगा। **(d)** कानूनी व्ययों के लिए ₹1,500 का आयोजन बनाया जायेगा। **(e)** संयुक्त जीवन बीमा पॉलिसी को चिट्ठे में दिखाया जाएगा।

B को ₹ 5,000 का भुगतान किया जायेगा और शेष देय राशि उसके ऋण खाते में हस्तांतरित कर दी जायेगी।

पुनर्मूल्यांकन खाता, साझेदारों के पूंजी खाते तथा A और C का स्थिति विवरण बनाइये।

The firm had a Joint Life Insurance Policy for ₹ 40,000. The surrender value of the policy was ₹ 13,500 as on 31st March 2017. B retires on the above date on the following conditions:

(a) Land and Building are undervalued by ₹ 20,000. **(b)** Goodwill is to be valued at ₹ 18,000. **(c)** A provision for doubtful debts of 5% is to be created and Machinery be written down by 10% and Stock by 5%. **(d)** A provision of ₹ 1,500 be made in respect of legal charges. **(e)** Joint Life Policy will appear in Balance Sheet.

B to be paid ₹ 5,000 and balance be transferred to his loan account. Prepare Revaluation Account, Partners' Capital Accounts and Balance Sheet of A and C.

Ans.: Revaluation profit ₹ 11,250; B's Loan A/c ₹ 62,050; Cap A/c A₹ 87,400 C ₹ 38,700; B/s ₹ 2,26,650

3. ए तथा बी साझेदार हैं जिनका लाभ विभाजन अनुपात ए 1/2, बी 1/3 तथा संचय में 1/6 जे जाना हैं। 31 मार्च, 2017 को उनका स्थिति विवरण निम्नलिखित था:

A and B are pratners sharing profits in the ratio of A 1/2 , B 1/3 and transfer to reserve 1/6. Their Balance Sheet as at 31st March, 2017 was as follows:

Liabilities	Amount(₹)	Assets	Amount(₹)
Employee's Provident Fund	18,000	Goodwill	15,000
Reserve Fund	12,000	Plant	90,000
Sundry Creditors	10,000	Patent	4,400
Profit & Loss A/c	24,000	Stock	30,000
Capitals:		Investment	20,000
A 80,000		Debtors 20,000	
B 40,000	1,20,000	Less: Provision 400	19,600
		Cash	5,000
	1,84,000		**1,84,000**

1 अप्रैल 2017 को बी अवकाश ग्रहण करता हैं। शर्ते निम्नलिखित हैं:

(i) ख्याति का मूल्याकन ₹50,000 किया जाएगा। **(ii)** पेटैंटस का मूल्य ₹ 3,000 से बढाना हैं परन्तु संयंत्र का मूल्य ₹ 15,000 अधिक किया हुआ था। **(iii)** देनदारों पर संदिग्ध ऋण प्रावधान 5% कर दिया जाएगा और देनदारों तथा लेनदारों पर 3% कटोती का प्रावधान भी किया जाएगा। **(iv)** बीमा प्रीमियम की समस्त राशि लाभ–हानि खाते में डेबिट कर दी गई थी। इसमें से ₹ 870 पूर्वदत मानते हुए आगे ले जाने हैं। **(v)** विनियोगों का मूल्यांकन ₹ 16,000 पर किया गया। इसमें से आधे विनियोग बी द्वारा ले लिए गए। **(vi)** ₹ 5,000 का कर्मचारी क्षतिपूर्ति का एक दायित्व हैं।

बी को समस्त भुगतान कर दिया गया। बी को भुगतान करने के लिए ए ने अपने संयन्त्र और स्टॉक की जमानत पर आवश्यक राशि बैक से ऋण ली।

पुनर्मूल्यांकन खाता, पूँजी खाते तथा ए का स्थिति विवरण बनाइए।

B retires on 1st April 2016. The terms were: **(i)** Goodwill is to be valued at ₹ 50,000. **(ii)** Value of Patents is to be increased by ₹ 3,000 but Plant was found over-valued by ₹ 15,000. **(iii)** Provision for doubtful debts should be 5% on Debtors and provision for discount should also be made on Debtors and Creditors at 3%. **(iv)** Out of insurance which was entirely debited to profit & Loss Account ₹ 870 be carried forward as unexpired insurance. **(v)** Investments were revalued at ₹

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

16,000. Half of these investments were taken over by B. **(vi)** There is a claim for Workmen's Compensation to the extent of ₹ 5,000.
B was paid off in full. A borrowed the necessary money form the bank on the security of plant and stock to pay off B. Prepare Revaluation Account, Capital Accounts and the Balance Sheet of A.
Ans.: Revaluation Loss ₹ 21,000; Bank Loan ₹ 47,000; Capital A/c A ₹ 60,000; B's ₹ 1,39,700
4. R, S तथा T एक फर्म में साझेदार थे और लाभ को 2:2:1 के अनुपात में बॉटते थे। 31-3-2014 को उनका स्थिति विवरण निम्न प्रकार था:
R, S and T were partners in a firm sharing profits in 2:2:1 ratio. On 31-3-2014, their Balance Sheet was as follows:

Liabilities	Amount (₹)	Assets	Amount (₹)
Bank loan	12,800	Cash	51,300
Sundry Creditors	25,000	Bills Receivable	10,800
Capitals		Debtors	35,600
R 80,000		Stock	44,600
S 50,000		Furniture	7,000
T 40,000	1,70,000	Plant & Machinery	19,500
Profit & Loss A/c	9,000	Building	48,000
	2,16,800		**2,16,800**

1-4-2014 को S ने फर्म से अवकाश ग्रहण कर लिया और उसके हिस्से का निर्धारण सम्पतियों के इस प्रकार पुनर्मूल्यांकन द्वारा किया गया ; स्टॉक ₹ 40,000; फर्नीचर ₹ 6,000; प्लांट मशीनरी ₹ 18,000; भवन ₹ 40,000; संदिग्ध ऋणों के लिए ₹ 1,700 का प्रावधान करना था। फर्म की ख्याति का मूल्यांकन ₹ 12,000 किया गया। S को अवकाश ग्रहण पर ₹ 18,080 नकद और शेष तीन बराबर वार्षिक किस्तों में देने थे।
पुनर्मूल्यांकन खाता, साझेदारों के पूँजी खाते, S का ऋण खाता और 1-4-2014 का स्थिति विवरण बनाइये।
S retired from the firm on 1-4-2014 and his share was ascertained on the revaluation of assets as follows: Stock ₹ 40,000; Furniture ₹6,000; Plant & Machinery ₹ 18,000; Building ₹ 40,000; ₹ 1,700 were to be provided for doubtful debts. The goodwill of the firm was valued at ₹ 12,000.
S was to be paid ₹ 18,080 in cash on retirement and the balance in three equal yearly installments.
Prepare Revaluation Account, Partners' Capital Accounts, S's Loan Account and Balance Sheet on 1-4-2014.
Ans.: Revaluation Loss ₹ 16,800; S's Loan A/c ₹ 33,600; Capital A/c R ₹ 73,680; T ₹ 36,840; B/s ₹ 1,81,920
5. A, B तथा C लाभ को अपनी पूँजी के अनुपात में बाँटते थे। 31 मार्च, 2017 को उनका स्थिति विवरण इस प्रकार था ;
The Balance Sheet of A, B and C who were sharing profits in proportion of their capitals, stood as follows on 31st March, 2017.

Liabilities	Amount (₹)	Assets	Amount (₹)
Sundry Creditors	6,000	Cash at Bank	5,500
Employee's Provident Fund	900	Sundry Debtors 5,000	
A's Capital A/c	16,000	Less : Provision 100	4,900
B's Capital A/c	12,000	Stock	8,000
C's Capital A/c	8,000	Plant & Machinery	8,500
Contingency Reserve	9,000	Factory Land & Building	25,000
	51,900		**51,900**

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

B अवकाश ग्रहण करता हैं और यह निर्णय लिया गया हैं कि फर्म द्वारा B को देय राशि निर्धारित करने से पहले संपत्तियों और दायित्वों में निम्न समायोजन किए जाए ; **(क)** स्टॉक का 6% ह्रास किया जाए। **(ख)** संदिग्ध ऋणों के लिए प्रावधान बढाकर देनदारों पर 5% कर दिया जाए। **(ग)** फैक्टरी की जमीन तथा भवन के मूल्य में 20% की वृद्वि कर दी जाए। **(घ)** बकाया कानूनी प्रभारों के लिए ₹ 770 का प्रावधान किया जाए। **(ड़)** फर्म की ख्याति ₹ 10,800 नियत की जाए और उसमें B का हिस्सा A और C के खातों में समायोजित कर लिया जाए जो भविष्य में 5/8 : 3/8 के अनुपात में बाँटेंगे। (कोई ख्याति खाता न खोला जाए) **(च)** नव गठित फर्म की कुल पूँजी ₹ 28,000 नियत की जाए और समायोजनों के लिए A तथा C के खातों में प्रविष्टियाँ करने के बाद उनके बीच 5/8 : 3/8 के अनुपात में बाँट दी जाए (अर्थात यथास्थिति, शेष साझेदारो को अपेक्षित राशि नकद दे दी जाए या उन द्वारा लाई जाए)
उपरोक्त व्यवस्था के लेखे के लिए आवश्यक रोजनामचा प्रविष्टियाँ कीजिए और B को देय राशि उसके खाते से ऋण खाते में हस्तांतरित करने ने बाद A तथा C का स्थिति विवरण बनाइये।

B retires and the following adjustments of the assets and liabilities have been agreed upon before the ascertainment of the amount payable by the firm to B: **(a)** That the stock be depreciated by 6% **(b)** That the provision for doubtful debts be brought upto 5% on Debtors. **(c)** That the Factory Land & Building be appreciated by 20%. **(d)** That a provision of ₹ 770 be made in respect of outstanding legal charges. **(e)** That the goodwill of the entire firm be fixed as ₹ 10,800 and B's share of the same be adjusted into the accounts of A and C who are going to share in future in the proportion of 5/8 : 3/8 (No goodwill account is to be raised). **(f)** That the entire capital of the firm as newly constituted be fixed at ₹ 28,000 between A & C in the proportion of 5/8 : 3/8 after passing entries in their accounts for adjustments (i.e. actual cash to be paid off or to be brought in by the continuing partners as the case may be).
Pass the necessary journal entries to give effect to the above arrangements and prepare the Balance Sheet of A & C after transferring the amount due to B to separate loan account in his name.

Ans. : Revaluation profit ₹ 3,600; B's Loan ₹ 19,800; Capital A/c A₹ 17,500; C ₹ 14,500; B/s ₹ 55,470

6. जे, एच तथा के एक फर्म के साझेदार थे तथा 5:3:2 के अनुपात में लाभ बाँटते थे। 31-3-2017 को उनका स्थिति विवरण निम्न प्रकार से था :

J, H and K were partners in a firm sharing profits in the ratio of 5:3:2. On 31-3-2017 their Balance Sheet was as follows :

Liabilities		Amount(₹)	Assets		Amount(₹)
Creditors		42,000	Land & Building		1,24,000
Investment Fluctuation Fund		20,000	Motor Vans		40,000
Profit & Loss A/c		80,000	Investments		38,000
Capitals:			Machinery		24,000
J	1,00,000		Stock		30,000
H	80,000		Debtors	80,000	
K	40,000	2,20,000	Less: Provision	6,000	74,000
			Cash		32,000
		3,62,000			**3,62,000**

उपरोक्त तिथि को एच ने अवकाश ग्रहण कर लिया तथा जे तथा के ने निम्न शर्तो पर व्यवसाय चालू रखने का निर्णय किया: **(i)** फर्म की ख्याति का मूल्यांकन ₹ 1,02,000 किया गया। **(ii)** कर्मचारी क्षतिपूर्ति का ₹ 8,000 का एक दावा था। **(iii)** डूबत ऋणों के लिए प्रावधान को ₹ 2,000 से कम करना था। **(iv)** एच को ₹ 14,000 नकद भुगतान किया जायेगा तथा शेष का स्थानान्तरण उसके ऋण खाते में कर दिया जायेगा जिसका भुगतान चार बराबर वार्षिक किश्तों में 10% प्रतिवर्ष ब्याज के साथ किया जायेगा। **(v)** जे तथा के मध्य नया लाभ अनुपात 3:2 होगा तथा उनकी पूँजी नये लाभ अनुपात में होगी। पूँजी समायोजन चालू खाते खोलकर किया जायेगा।

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

पुनर्मूल्यांकन खाता, साझेदारों के पूँजी खाते तथा नई फर्म का स्थिति विवरण तैयार कीजिए।
On the above date H retired and J and K agreed to continue the business on the following terms: **(i)** Goodwill of the firm was valued at ₹ 1,02,000. **(ii)** There was a claim of ₹ 8,000 for workmen's compensation. **(iii)** Provision for bad debts was to be reduced by ₹ 2,000. **(iv)** H will be paid ₹ 14,000 in cash and the balance will be transferred in his loan account which will be paid in four equal yealy instalments together with interest @ 10% p.a. **(v)** The new profit sharing ratio between J and K will be 3:2 and their captials will be in their new profit sharing ratio. The capital adjustments will be done by opening current accounts.
Prepare Revaluation Account, Partner's Capital Accounts and Balance Sheet of the new firm.
Ans.: Revaluation Loss ₹ 6,000; H's Loss ₹ 1,24,800; Capital A/c J ₹ 1,05,120; K ₹ 70,080; B/s ₹ 3,81,680; Current A/c J ₹ 31,680 (Cr.); K ₹ 31680 (Dr.)

7. A, B व C का 31 मार्च 2017 का निम्न चिटठा हैं जो अपनी पूँजी के अनुपात में लाभ–हानि बाँटने के लिए सहमत हुए :
Following is the Balance Sheet of A, B and C as at 31st March, 2017, Who have agreed to share profits and losses in proportion of their capitals.

BALANCE SHEET as at 31st March, 2017

Liabilities	Amount (₹)	Assets	Amount (₹)
Capitals A/cs:		Land and Building	2,00,000
A 2,00,000		Machinery	3,00,000
B 3,00,000		Closing Stock	1,00,000
C 2,00,000	7,00,000	Sundry Debtors 1,10,000	
General Reserve	35,000	Less: Provision for D.D 10,000	1,00,000
Workmen's Comensation Reserve	15,000	Cash at Bank	1,00,000
Sundry Creditors	50,000		
	8,00,00		**8,00,000**

31 मार्च, 2017 को A ने फर्म से अवकाश ग्रहण करने की इच्छा प्रकट की तथा अन्य साझेदारों ने फर्म को चालू रखने का निर्णय लिया। सम्पतियों के पुनर्मूल्यांकन तथा देयताओं को पुनर्निर्धारण के लिए निम्नानुसार सहमति बनीः **(i)** भूमि तथा भवन को 30% बढाया जाए। **(ii)** मशीनरी पर 20% का ह्रास लगाया जाए। **(iii)** ₹17,000 के डूबे हुए ऋण पाए गए। **(iv)** कर्मचारी क्षतिपूर्ति खाते के दावे का अनुमान ₹ 8,000 लगाया गया। **(v)** फर्म की ख्याति का मूल्यांकन ₹1,40,000 किया गया तथा A के ख्याति के अंश का समायोजन B तथा C के पूँजी खातों से, जिन्होंने फर्म को चालू रखने का निर्णय किया हैं, से किया गया तथा उन्होनें भविष्य में लाभों को क्रमशः 4:3 के अनुपात में विभाजित करने का निर्णय लिया। **(vi)** नयी फर्म की पूँजी का कुल योग, A के अवकाश ग्रहण करने से पूर्व के कुल योग के बराबर होगा तथा फर्म को चालू रखने वाले साझेदारों के लाभ विभाजन के नए अनुपात में होगा। **(vii)** A को कुल देय धनराशि में से ₹50,000 का नकद भुगतान कर दिया जाएगा तथा शेष को उसके ऋण खाते में हस्तान्तरित कर किया जाएगा, भुगतान बाद में होगा।
पुनर्मूल्यांकन खाता, साझेदारों के पूँजी खाते तथा A के अवकाश ग्रहण करने के उपरान्त फर्म का स्थिति–विवरण तैयार कीजिए।
On 31st March,2017, A desired to retire from the firm and the remaining partners decided to carry on the business. It was agreed to revalue the assets and reassess the liabilities on the following basis: **(i)** Land and Building to be appreciated by 30%. **(ii)** Machinery be depreciated by 20%. **(iii)** There were Bad Debts of ₹ 17,000. **(iv)** The claim on account of Workmen's Compensation was estimated at ₹ 8,000. **(v)** Goodwill of the firm was valued at ₹ 1,40,000 and A's share of Goodwill be adjusted against the capital Account of the continuing partners B and C who have decided to share future profits in the ratio of 4:3 respectively. **(vi)** Capital of the new firm in total will be the

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

same as before the retirement of A and will be in the new profit sharing ratio of the continuing partners. **(vii)** Amount due to A be settled by paying ₹ 50,000 in cash and the balance by transferring to his Loan Account which will be paid later on.

Prepare Revaluation Account, Capital Accounts of partners and Balance Sheet of the firm after A's retirement.

Ans.: Revaluation Loss ₹ 7,000; A's Loan ₹ 2,00,000; Capital A/c B ₹ 4,00,000; C ₹ 3,00,000; B/s ₹ 95,800

A, B व C एक फर्म में साझेदार हैं जो 2:2:1 के अनुपात में लाभ विभाजन करते हैं। उनका 31.12.2016 का स्थिति विवरण इस प्रकार हैं। 31.3.2017 को C अवकाश ग्रहण करता हैं।

8. A, B and C partners sharing profits and losses in the ratio of 2:2:1. C retires on 31st March, 2017. The Balance Sheet of the firm as at 31st December, 2016 stood as follows:

Liabilities		**Amount (₹)**	**Assets**	**Amount (₹)**
Capital A/cs:			Land and Building	10,00,000
A	6,00,000		Investment	1,25,000
B	6,00,00		Stock	2,50,000
C	4,00,000	16,00,000	Sunday Debtors	4,00,000
General Reserve		4,00,000	Cash at Hand	1,00,000
Sundry Creditors		1,00,000	Cash at Bank	2,25,000
		21,00,000		**21,00,000**

C को देय राशि की गणना के लिए निम्न पर आपसी सहमति हुयी। 1. भूमि व भवन का मूल्यांकन ₹ 1,20,0000 पर किया गया। 2. विनियोग ₹ 1,00,000 पर मूल्यांकित किये गये। 3. स्टॉक का मूंल्याकन ₹ 3,00,000 पर किया गया। 4. ख्याति का मूंल्याकन पिछले 5 वर्षो के औसत लाभों के दो वर्षो के क्रय के आधार पर किया जायेगा। तथा ख्याति पुनर्गठित फर्म की पुस्तकों में नहीं दिखायी जायेगी। 5. C के अवकाश ग्रहण की तिथि तक के लाभों में हिस्से की गणना पिछले तीन वर्षो के औसत लाभों के आधार पर की जायेगी। पिछले 5 वर्षो के लाभ इस प्रकार थे।

वर्ष	2012	2013	2014	2015	2016
लाभ (₹)	1,80,000	2,20,000	3,00,000	2,75,000	3,25,000

6. C को देय राशि उसके ऋण खाते में हस्तांतरित की जायेगी। जिस पर 10% वार्षिक ब्याज देय होगा। पुनर्मूल्यांकन खाता, साझेदारों के पूँजी खाते व 31.3.2017 का चिटठा बनाइये।

In order to arrive at the balance due to C, it was mutually agreed that. **(i)** Land and Building be valued at ₹ 12,00,000. **(ii)** Investments to be valued at ₹ 1,00,000. **(iii)** Stock be taken at ₹ 3,00,000. **(iv)** Goodwill be valued at two years' purchase of the average profit of the past five years. Goodwill will not appear in the books of reconstituted firm. **(v)** C's share of profits upto the date of retirement be calculated on the basis of average profit of the preceding three years.

The profits of the preceding five years were as under:

Year	2012	2013	2014	2015	2016
Profits (₹)	1,80,000	2,20,000	3,00,000	2,75,000	3,25,000

(vi) Amount payble to C is to be transferred to his Loan Account carrying interest 10% p.a..

You are required to prepare the Revaluation Account, Partners' Capital Accounts, and the Balance Sheet as at 31st March. 2017.

Ans : Revaluation profit ₹ 2,25,000; C's Loan ₹ 6,44,000; Capital A/c : A ₹ 7,98,000; B ₹ 7,98,000; B/s ₹ 23,40,000

9. P, Q व R एक फर्म में साझेदार थे और लाभों को 2:2:1 के अनुपात में बाँटते थे। साझेदारी संलेख में प्रावधान था कि किसी साझेदार की मृत्यु पर उसके वैधानिक प्रतिनिधि निम्न के अधिकारी होंगे: **(i)** पूँजी पर 12% प्रतिवर्ष

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

की दर से ब्याज। **(ii)** आहरण पर 18% प्रतिवर्ष की दर से ब्याज। **(iii)** ₹ 12000 प्रतिवर्ष का वेतन। **(iv)** पिछले वर्ष के लाभ के आधार पर फर्म के लाभ में हिस्सा (मृत्यु की तिथि तक)

31.5.2017 को P की मृत्यु हो गयी। उसकी पूँजी 31.3.17 को ₹ 80000 थी। उसने ₹ 15000 निकाले थे और उसके आहरण पर ब्याज की गणना ₹ 1200 की गयी। 31.3.2017 को समाप्त पिछले वर्ष के लिए फर्म का लाभ ₹ 30000 था।

P के वैधानिक प्रतिनिधियों को देने के लिए, उनका पूँजी खाता तैयार कीजिए।

P, Q and R were partners in a firm sharing profits in 2:2:1. The partnership deed provided that on the death a partner, his Executors will be entitiled for the following. **(i)** Interest on capital @ 12% p.a. **(ii)** Interest on Drawing @ 18% p.a. **(iii)** Salary ₹ 12000 p.a.. **(iv)** Share in the profits the Firm (upto the date death) on the basis previous year's profits.

P died on 31-5-2017. His capital was ₹ 80,000 as on 31st March, 2017. He had withdrawn ₹ 15,000 and Interest on his drawings was calculated as ₹ 1,200. The profit the firm for the previous year ended 31-3-2017 was ₹ 30,000.

Prepare P's capital Account to be presented to his Executors.

10. A, B व C साझेदार हैं जो लाभों को 3:2:1 के अनुपात में विभाजित करते हैं। उन्होने ₹ 60000 की संयुक्त जीवन बीमा पॉलिसी ले रखी हैं जिसका वार्षिक प्रीमियम ₹ 4000 लाभ–हानि खाते में लिखा जाता हैं। फर्म के खाते प्रतिवर्ष 31 मार्च को बंद किये जाते हैं। 1 अगस्त 2017 को C की मृत्यु हो जाती हैं। अपनी पूँजी व बीमा राशि के हिस्से के साथ – साथ C के वैधानिक प्रतिनिधि को निम्न भुगतान प्राप्त करने का अधिकार होगा।

(i) मृत्यु की तिथि तक 10% वार्षिक दर से पूँजी पर ब्याज **(ii)** साझेदार का लाभ में हिस्सा जो गत तीन वर्षो के औसत लाभ पर आधारित होगा। **(iii)** साझेदार का ख्याति में हिस्सा जिसकी गणना गत चार वर्षो के औसत लाभ के तीन वर्ष के क्रय के आधार पर होगी 1 अप्रैल 2017 को C की पूँजी ₹ 90000 थी, जबकि इस तिथि से मृत्यु की तिथि तक C ने ₹ 5,500 के आहरण किये थे गत चार वर्षो के लाभ इस प्रकार थेः ₹ 16,000, ₹ 26,000, ₹ (6,000) हानि, ₹ 34,000। C की पूँजी खाता बनाइये।

A, B and C are partners sharing profits in the ratio of 3:2:1. They had a Joint life policy ₹ 60,000 and the annual premiuum ₹ 4,000 has been charged to Profit and Loss Account every year. Account are closed on 31, March annually. C died on 1st August 2017 beside his of capital and insurance money, C's legal representatives are entitled to:

(i) Interest on capital at 10% per annum up to the date death. **(ii)** His share profits based on average profits to the last three years. **(iii)** His share goodwill which is to be calculated at three year's purchase of the average profit of last 4 Years. C's capital on 1-4-2017 stood at ₹ 90,000 and his drawings from that date to the date death amounted to ₹ 5,500.

Profits for the last Four years were ₹ 16,000, ₹ 26,000, ₹ (6,000) Loss, ₹ 34,000

Prepare C's Capital Account.

Ans.: ₹ 1,07,250

11. P, Q व R एक फर्म में साझेदार थे और लाभ विभाजन 3:2:1 के अनुपात में करते थे। उनका स्थिति विवरण निम्न था।

P, Q and R were partners in a Firm sharing profits in the ratio 3:2:1. Their Blance sheet was as follows.

Balance Sheet as at 31-12-2016

Liabilities	Amount (₹)	Assets	Amount (₹)
Creditors	30,000	Cash	40,000
Bills Payable	40,000	Stock	40,000
General Reserve	60,000	Debtors	70,000
Capital A/c's :		Building	2,00,000

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

P	1,30,000		Land	3,00,000
Q	2,00,000		Goodwill	30,000
R	4,00,000	7,30,000	P&L A/c	1,50,000
			(Loss of the year 2016)	
			Loan to R	30,000
		8,60,000		**8,60,000**

R की 14 मार्च 2017 को मृत्यु हो गयी। किसी साझेदार की मृत्यु पर साझेदारी संलेख में प्रावधान थे।

(i) ख्याति का मूल्याकन पिछले 5 वर्षो के औसत लाभ के 3 वर्षो के क्रय के आधार पर होगा।

वर्ष	2015	2014	2013	2012
लाभ	₹ 70000	₹ 80000	₹ 110000	₹ 220000

(ii) R के लाभ या हानि का उनकी मृत्यु तक का हिस्सा 31-12-2016 के लाभ/हानि के आधार पर निकाला जायेगा।

आप निम्न की गणना करें।

(i) फर्म की ख्याति व मृत्यु के समय R के हिस्से की ख्याति **(ii)** फर्म के लाभ हानि में R के हिस्से की गणना उसकी मृत्यु तक R का पूँजी खाता बनाएं जो उसकी मृत्यु पर उसके प्रतिनिधि को दिया जायेगा।

R died on 14-3-2017. The partnership deed provided for the following on the death a partner.

(i) Goodwill of the Firm was to valued at 3 years purchase a the average profit a last 5 years.

Years	2015	2014	2013	2012
Profits	₹ 70,000	₹ 80,000	₹ 1,10,000	₹ 2,20,000

(ii) R's share of profit or loss till the date of his death was to be calculated on the basis of the profits or loss for the year ending on 31-12-16. You are required to calculate the followings :

(i) Goodwill of the Firm and R's share of goodwill at the time of his death.

(ii) R's share in the Profit or Loss of the firm till the date of his death.

Prepare R's Capital Account at the time of his death to be presented to his Executors.

Ans.: ₹ 3,78,000

12. P, Q व R एक फर्म में साझेदार थे। 31-3-2017 को उनका स्थिति विवरण इस प्रकार था।

P, Q and R were partners in a firm. Their Balance Sheet as at 31st March, 2017 was as follows:

Balance Sheet

As at 31 March, 2017

Liabilities		**Amount (₹)**	**Assets**	**Amount (₹)**
Sundry Creditors		25,000	Cash	6,000
Reserve Fund		20,000	Stock	12,000
Capital A/c's :			Bills Receivables	6,000
P	15,000		Debtors	15,000
Q	10,000		Investment	15,000
R	10,000	35,000	Building	26,000
		80,000		**80000**

साझेदारी संलेख में प्रावधान हैं कि लाभ 2 : 1 : 1 के अनुपात में बाँटे जायेंगे और साझेदार की मृत्यु की स्थिति में उसके वैधानिक प्रतिनिधि निम्न के अधिकारी होंगे :

(i) स्थिति विवरण की तिथि को उसके क्रेडिट में पूँजी। **(ii)** गत स्थिति विवरण की तिथि को संचय में उसका हिस्सा। (iii) गत तीन वर्षों के औसत लाभ के आधार पर उसमें 10% जोड़कर, मृत्यु की तिथि तक लाभ का उसका हिस्सा और **(iv)** ख्याति के रूप में पिछले तीन वर्षो के कुल लाभ का उसका हिस्सा। **(v)** भवन के पुनर्मूल्यांकन पर लाभ ₹ 4,000 में हिस्सा। **(vi)** गत तीन वर्षो का शुद्ध लाभ था : ₹ 15000, ₹ 16000 व ₹ 17000।

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

R की 30-6-17 को मृत्यु हो गयी। अपनी मृत्यु की तिथि तक उसने ₹ 5000 निकाले थे। निवेश को सम मूल्य पर बेचा गया और R के वैधानिक प्रतिनिधियों को भुगतान कर दिया गया।
साझेदारों के पूँजी खाते, R के वैधानिक प्रतिनिधि का खाता और शेष साझेदारों P व Q का स्थिति–विवरण बनाइये।
The Partnership deed provides that the profits be shared in the ratio 2:1:1 and that in the event death the partner, his executors will be entitled to be paid out;
(i) The Capital's to his credit at the date of Balance sheet. **(ii)** His proportion of reserve at the date Balance sheet. **(iii)** His proportion of profits of the last 3 years, plus 10% and **(iv)** By way Goodwill, his proportion of the total profits for the three preceding years. **(v)** share in profits on revaluation of building which is ₹ 4000 **(vi)** The net profits of last 3 years : ₹ 15000, ₹ 16000 and ₹ 17000.
R died on 30-06-2017. He had withdrawn ₹ 5000 upto the date of his death. The investments were sold at par and R's executors were paid off.
Prepare Partner's Capital Accounts, R Executor's Account and Balance sheet of surviving partners P and Q.
Ans.: R's Executor ₹ 24,100. Cap A/c P ₹ 19,000; Q ₹ 12,00; B/s ₹ 64,100
13. A, B व C एक फर्म में 2:2:1 के अनुपात में लाभ विभाजन करते हुए साझेदार हैं। फर्म के सभी साझेदारों के जीवन पर ₹ 80,000 की एक संयुक्त जीवन बीमा पॉलिसी एक अप्रैल 2012 को ली। पॉलिसी का समर्पण मूल्य इस प्रकार हैं : 31-3-13 : शून्य , 31-3-14 ₹ 2,000; 31-3-15 ₹ 4,000 तथा 31-3-16 ₹ 6,000
1 जून 2016 को C की मृत्यु हो गयी। फर्म की पुस्तकों में आवश्यक खाते बनाइये। यदि
(i) प्रीमियम को व्यापारिक खर्चा माना जाता हैं। **(ii)** प्रीमियम को विनियोग माना जाता हैं। **(iii)** प्रीमियम को विनियोग माना जाता हैं तथा संचय का निर्माण किया जाता हैं।
A, B and C are partners in a firm sharing profits in the ratio 2:2:1. The firm had taken a Joint Life Policy ₹ 80000 on the Lives all the partners on 1-4-2012. The firm pays annual premium ₹ 6000. The surrender value of the policy is as under:
31-3-13 Nil, 31-3-14 ₹ 2000; 31-3-15 ₹ 4000 and 31-3-16 ₹ 6000
C died on 1-6-2016, prepare the necessary accounts in the books the Firm. **(i)** If Premium paid is treated as trade expenses. **(ii)** Premium paid is treated as an investment. **(iii)** Premium paid is treated as investment and reserve is created.
14. A, B व C साझेदार हैं और लाभों को 3:2:1 के अनुपात में बाँटते हैं। 31–3–2017 को उनका स्थिति विवरण इस प्रकार था।

A, B and C are partners sharing profit in 3:2:1 ratio. Their Balance Sheet as at 31st March, 2017 was as follows:

Balance Sheet as on 31-03-2017

Liabilities		Amount (₹)	Assets	Amount (₹)
Bills Payble		12,000	Cash in hand	12,000
Creditors		14,000	Bank	13,700
General Reserve		12,000	Debtors	12,000
Capital A/c's:			Bills Receivable	4,300
A	20,000		Stock	1,750
B	12,000		Investment	13,250
C	8,000	40,000	Buildings	21,000
		78,000		**78,000**

B की 30–06–2017 को मृत्यु हो गयी। उक्त साझेदारी संलेख के अनुसार उसके वैधानिक प्रतिनिधि निम्नलिखित भुगतान के अधिकारी है:

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

(i) उसकी मृत्यु के समय उसके क्रेडिट में पूँजी और उस पर 10% वार्षिक दर से ब्याज। **(ii)** सामान्य संचय का उसका आनुपातिक हिस्सा। **(iii)** बीच की अवधि के लिए लाभ में उसका भाग उस अवधि के दौरान विक्रय पर आधारित होगा। बिक्री की गणना ₹1,20,000 की गयी है। गत तीन वर्षों के दौरान लाभ की दर विक्रय पर 10% रही है। **(iv)** उसके लाभ के भाग के अनुसार ख्याति की गणना तीन वर्षों के लाभ के दुगुने में से 20% घटाकर की जायेगी। पिछले तीन वर्ष के लाभ थे : ₹ 8,200; ₹9,000; ₹9,800। निवेश की सममूल्य पर बेचा गया और उसके वैधानिक प्रतिनिधियों को भुगतान कर दिया गया।

B का पूँजी खाता और उसके वैधानिक प्रतिनिधि का खाता बनाइये।

B died on 30-06-2017 and according to the deed of the partnership. His executors were entitled to be paid as under:

(i) The capital to his creditor at the time of his death and interest there on @ 10% p.a.. **(ii)** His proportionate share of General Reserve. **(iii)** His Share of profit for the intervening period will be based on the sales during that period. Sales were calculated as ₹1,20,000. The rate of profit during past three years had been 10% on sales. **(iv)** Goodwill according to his share of profit to be calculated by taking twice the amount of the profits of the last three years less 20%. The profits of previous three years were: ₹8,200; ₹9,000; ₹9,800. The Investment were sold at par and his executers were paid out.

Prepare B's Capital Account and his Executer's Account.

Ans.: ₹34,700.

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

4
फर्म का समापन
Dissolution of Firm

अध्ययन के उद्देश्य

इस अध्याय के अध्ययन के बाद आप –

- ❖ फर्म के समापन एवं साझेदारी के समापन का अर्थ बता पाएंगे तथा अन्तर कर पाएंगे।
- ❖ फर्म के समापन पर खोले जाने वाले वसूली खाते का निर्माण कर पाएंगे।
- ❖ फर्म के समापन पर लेखांकन प्रविष्टियाँ बनाकर खाते बना पाएँगे।
- ❖ एक साझेदार या सभी साझेदारों के दिवालिया होने पर "गार्नर बनाम मरे" का नियम लागू करते हुए व न करते हुए लेखांकन कर पाएंगे।

फर्म के समापन का अर्थ (Meaning of Dissolution of the firm)

भारतीय साझेदारी अधिनियम, 1932 की धारा 39 के अनुसार "किसी फर्म के समस्त साझेदारों के मध्य साझेदारी का समाप्त हो जाना फर्म का विघटन या फर्म का समापन कहलाता है।"

जब एक फर्म के सभी साझेदारों के बीच साझेदारी समाप्त हो जाए तो उसे फर्म का समापन कहते हैं। फर्म का समापन होने पर फर्म की सभी सम्पत्तियाँ विक्रय कर दी जाती हैं और दायित्वों का भुगतान कर दिया जाता है। उसके बाद यदि शेष बचा हो तो साझेदारों को उनके खातों के अन्तिम निपटारे के रुप में भुगतान कर दिया जाता है।

साझेदारी समापन का अर्थ (Meaning of Dissolution of Partnership)

साझेदारी समापन का अर्थ यही है कि एक साझेदार का अन्य साझेदारों के साथ सम्बन्ध टूट जाता है। ऐसी स्थिति में यह आवश्यक नहीं हैं कि फर्म का कारोबार बन्द हो जाए। शेष साझेदार चाहे तो फर्म का कारोबार चालू रख सकते हैं।

उदाहरण :– एक साझेदार की मृत्यु होने, उसके दिवालिया होने, अवकाश ग्रहण करने, निर्धारित अवधि या कार्य समाप्त होने पर साझेदार का समापन हो जाता है, परन्तु फर्म का समापन किया जाए या नहीं, यह साझेदारों द्वारा समझौते पर निर्भर करता है अतः साझेदारी का समापन फर्म का समापन नहीं है। साझेदारी की समाप्ति के बाद फर्म अपना व्यापार चालू रख सकती हैं, फर्म की समाप्ति साझेदारी की समाप्ति है। फर्म की समाप्ति में व्यापार की सभी क्रियाएँ समाप्त हो जाती है।

निम्न परिस्थितियों में फर्म तथा साझेदारी दोनों का समापन हो जाता हैं:–

(1) जब सभी साझेदार फर्म को समाप्त करने का समझौता कर लें।
(2) जब सभी साझेदार या एक को छोड़कर अन्य सभी साझेदार दिवालिया घोषित हो जाये।
(3) जब फर्म का कारोबार अवैध हो जावें।
(4) जब किसी साझेदार ने ऐच्छिक साझेदारी को समाप्त करने की सूचना अन्य साझेदारों को दे दी हो।
(5) जब न्यायालय द्वारा फर्म के समापन का आदेश दिया हो।

समापन के प्रकार (Modesa of Dissolution)

साझेदारी फर्म के समापन की परिस्थितियाँ :– भारतीय साझेदारी अधिनियम, 1932 की धारा 40–44 के अनुसार फर्म निम्नलिखित परिस्थितियों में समाप्त हो जाती हैं :–

(1) समझौते द्वारा समापन (Dissolution by Agreement):- साझेदार स्वेच्छा से किसी भी समय साझेदारी की समाप्ति कर सकते हैं।

(2) अनिवार्य समापन (Compulsory Dissolution):- निम्नलिखित परिस्थितियों में फर्म अनिवार्य रुप से समाप्त हो जाती है–

- **(i)** यदि फर्म का व्यापार अवैध हो।
- **(ii)** यदि कोई भी साझेदार शत्रु देश का नागरिक हो।
- **(iii)** यदि एक साझेदार के अलावा सभी साझेदार दिवालिया हो।
- **(iv)** यदि साझेदारों की अधिकतम संख्या सामान्य साझेदारी में 20 व बैंकिंग व्यवसाय में 10 से अधिक हो।

(3) नोटिस द्वारा समापन (Dissolution by Notice):- यदि साझेदारी स्वेच्छा पर निर्भर करती हो तो किसी भी साझेदार द्वारा समापन का नोटिस दिये जाने पर साझेदारी समाप्त हो जाती हैं।

(4) न्यायालय द्वारा समापन (Dissolution by Court):- किसी भी साझेदार के आवेदन पर न्यायालय निम्नलिखित परिस्थितियों में फर्म के समापन का आदेश दे सकता है–

- **(i)** यदि कोई भी साझेदार मानसिक रुप से अस्वस्थ हो।
- **(ii)** यदि कोई भी सक्रिय साझेदार स्थायी रुप से अपाहिज हो जाए और साझेदार के रुप में अपना कार्य करने में असमर्थ हो।
- **(iii)** यदि कोई भी साझेदार दुराचार का दोषी हो जो कि फर्म के व्यापार को प्रभावित करे।

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

(iv) यदि कोई साझेदार जान बूझकर प्रसंविदे की अवहेलना करे।
(v) यदि फर्म को व्यापार से केवल हानि ही होने की शंका हो।
(vi) यदि कोई साझेदार फर्म में अपने हित को किसी तीसरे पक्ष को हस्तान्तरित कर दे।
(vii) यदि न्यायालय किसी भी उचित कारण से सन्तुष्ट हो।

(5) विशेष घटना के होने पर समापन (Dissolution on the happening of certain contingencies) :– इसमें निम्नलिखित घटनाओं के होने पर फर्म की समाप्ति हो सकती है :–

(i) साझेदारी यदि किसी विशेष अवधि के लिए है तो अवधि समाप्ति पर।
(ii) साझेदारी यदि किसी विशेष कार्य के लिए स्थापित की गई हो तो उस कार्य के पूर्ण होने पर।
(iii) किसी भी साझेदार की मृत्यु होने पर।
(iv) किसी भी साझेदार के न्यायालय द्वारा दिवालिया घोषित होने पर।

साझेदारी और साझेदारी फर्म के समापन में अन्तर

आधार	साझेदारी का समापन	साझेदारी फर्म का समापन
(1) अर्थ	साझेदारी दो या दो से अधिक व्यक्तियों के बीच के लाभ के लिए कानूनी व्यापार करने का अनुबन्ध है। इस प्रकार अनुबन्ध में किसी भी कारण से परिवर्तन साझेदारी की समाप्ति है।	साझेदारी फर्म के समापन का अर्थ फर्म द्वारा व्यापारिक क्रियाओं की समाप्ति है।
(2) स्थितियाँ	किसी साझेदार के प्रवेश करने, अवकाश ग्रहण करने, मृत्यु होने पर लाभ–हानि अनुपात में परिवर्तन या अन्य किसी कारण से अनुबन्ध में परिवर्तन साझेदारी को समाप्त कर सकता है।	साझेदारी फर्म का समापन साझेदार की अपनी इच्छा से एवं न्यायालय के आदेश पर हो सकता है।
(3) व्यवसाय का जारी रहना	साझेदारी की समाप्ति के बाद भी फर्म उसी नाम से व्यवसाय कर सकती है।	फर्म की समाप्ति पर व्यावसायिक क्रियाएँ जारी नहीं रहती हैं।
(4) समाप्ति	साझेदारी की समाप्ति से साझेदार फर्म की समाप्ति का होना आवश्यक नहीं है।	साझेदारी फर्म की समाप्ति होने से साझेदारी स्वतः समाप्त हो जाती है।

फर्म के समापन पर खातों को बन्द करने की वैधानिक व्यवस्था

फर्म के समापन पर खातों को बन्द करने के लिए निम्नलिखित वैधानिक व्यवस्था है :–

(अ) सभी हानियों और कमियों को सबसे पहले लाभ से, बाद में पूँजी और अन्त में साझेदारों द्वारा अतिरिक्त राशि लाकर पूरा किया जाता है।

(ब) सम्पत्तियों को बेचने से प्राप्त राशि एवं साझेदारों द्वारा लाई गई राशि का उपयोग निम्न प्रकार से किया जाता है–

(i) सुरक्षित ऋण का भुगतान।
(ii) बाहर के पक्षों के ऋण का भुगतान करने में (आनुपातिक)।
(iii) साझेदारों द्वारा दिए गए ऋण का भुगतान करने में (आनुपातिक)।
(iv) साझेदारों का पूँजी शेष वापस करने में (आनुपातिक)।
(v) यदि अब भी कुछ शेष हो तो उसे साझेदारों में उनके लाभ विभाजन अनुपात में बाँटकर।

फर्म की समाप्ति पर सम्पत्तियों को बेचने से प्राप्त राशि से सर्वप्रथम बाहरी पक्षों के ऋणों का भुगतान होता है। अतिरिक्त राशि का उपयोग साझेदारों के ऋणों के भुगतान में और अन्त में साझेदारों को उनकी पूँजी वापस की जाती है। साझेदारों के निजी ऋणों का भुगतान उनकी निजी सम्पत्ति से होता हैं। निजी दायित्व का भुगतान करने के बाद यदि शेष बचता हैं तो उसे फर्म के ऋणों के भुगतान में उपयोग किया जाता है। (धारा–49)

साझेदारी अधिनियम 1932 की धारा 48 के अनुसार साझेदारों के खातों का निपटारा करते समय अपनाए जाने वाले नियम (Provision of section 48 of Partnership Act, 1932 relating to settlement of accounts at the time of dissolution) :-

(1) सभी हानियों का जिसमें पूँजी की कमी भी शामिल हो इस प्रकार भुगतान किया जायेगा :–

a) सर्वप्रथम लाभ से किया जायेगा।
b) उसके बाद पूँजी से किया जायेगा।
c) अन्त में यदि आवश्यक हुआ तो साझेदारों द्वारा उनके लाभ विभाजन अनुपात में लाया जायेगा।

(2) फर्म की सभी सम्पत्तियों, जिसमें साझेदार द्वारा लाई गई नकद राशि भी शामिल है, उनका उपयोग निम्नलिखित प्रकार से होगा–

a) फर्म के सभी कर्जों का भुगतान करने में जिसमें साझेदारों की पत्नी का भी ऋण शामिल है, उसका भुगतान करने में।
b) प्रत्येक साझेदार की पूँजी का आनुपातिक रुप से भुगतान करने में।

(3) अतिरिक्त राशि यदि कोई हो तो साझेदारों के बीच लाभ विभाजन अनुपात में बाँटी जायेगी। दूसरे शब्दों में यह सारांश निकाला जा सकता हैं कि उपलब्ध राशि का भुगतान निम्न क्रम से किया जावेगा।

a) सम्पत्तियों को बेचने और ऋण की वसूली में किये गए खर्चों के भुगतान के लिए।
b) बाहर के दायित्वों जिनमें साझेदार की पत्नी का ऋण भी शामिल है, का भुगतान करने के लिए।

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

c) साझेदार के ऋणों का भुगतान करने के लिए।
d) साझेदारों की पूँजी की वापसी के लिए।
e) यदि ऊपर के सभी a से d तक के दावों का भुगतान कर दिया जाता है तो शेष राशि साझेदारों में लाभ विभाजन अनुपात में बाँटने के लिए। (धारा–48)

फर्म के समापन पर की जाने वाली लेखांकन क्रियाएँ

फर्म के समापन की तिथि से सामान्य व्यापारिक कार्य बन्द हो जाता है तथा फर्म की सम्पत्तियों से वसूली करने और दायित्वों का भुगतान करने की कार्यवाही प्रारम्भ हो जाती है। इस प्रक्रिया को पूरा करने के लिए निम्नलिखित खाते तैयार किए जाते हैं–

(a) वसूली खाता **(b)** बैंक अथवा रोकड खाता **(c)** साझेदारों के पूँजी खाते **(d)** अन्य आवश्यक खाते

वसूली खाता (Realisation Account)

फर्म के समापन पर फर्म की सम्पत्तियों के विक्रय पर राशि वसूल की जाती है तथा उससे फर्म के दायित्वों का भुगतान किया जाता है। इस कार्य के लिए फर्म की पुस्तकों में एक विशेष खाता खोला जाता है जिसे वसूली खाता कहते हैं। यह एक नाम मात्र का खाता होता है। इस खाते को बनाने का उद्देश्य सम्पत्तियों के विक्रय तथा दायित्वों के भुगतान से होने वाले लाभ–हानि को ज्ञात करना होता है।

रोकड़ व बैंक शेष, साझेदारों के ऋण संचय एवं अवितरित लाभ तथा साझेदारों के चालू एवं पूँजी खातों के शेष को छोड़कर अन्य समस्त सम्पत्तियों एवं दायित्वों को इस खाते में अन्तरित कर दिया जाता है जिससे सभी सम्पत्तियों एवं दायित्वों के खाते बन्द हो जाते हैं। सम्पत्तियों के विक्रय से प्राप्त राशि, किसी साझेदार द्वारा ली गई सम्पत्ति, दायित्वों के भुगतान एवं समापन व्यय सम्बन्धी लेखे भी इस खाते में किए जाते हैं। इस खाते का शेष वसूली पर लाभ अथवा हानि प्रदर्शित करता है। जिसे लाभ विभाजन अनुपात में बाँटकर साझेदारों के चालू अथवा पूँजी खाते में अन्तरित कर दिया जाता है।

वसूली खाते तथा पुनर्मूल्यांकन खाते में अन्तर
(Difference between Realisation Account and Revaluation Account)

आधार	वसूली खाता	पुनर्मूल्यांकन खाता
1.उद्देश्य	वसूली खाता फर्म के समापन पर सम्पत्तियों के विक्रय से वसूली तथा दायित्वों के भुगतान से सम्बन्धित व्यवहारों का लेखा करने के लिए बनाया जाता है।	पुनर्मूल्यांकन खाता किसी नये साझेदार के प्रवेश अथवा किसी साझेदार के अवकाश ग्रहण करने या उसकी मृत्यु पर सम्पत्तियों एवं दायित्वों के पुनर्मूल्यांकन के कारण मूल्यों में कमी अथवा वृद्धि का लेखा करने के लिए बनाया जाता है।
2.अनिवार्यता	फर्म के समापन के समय वसूली खाता खोलना अनिवार्य होता है।	फर्म के संगठन में परिवर्तन होने पर पुनर्मूल्यांकन खाता खोले बिना भी लाभ अथवा हानि का समायोजन किया जा सकता है।
3. तैयार करने का समय	वसूली खाता फर्म के समापन पर फर्म की पुस्तकें बन्द करने के लिए बनाया जाता है।	पुनर्मूल्यांकन खाता फर्म के चालू रहने पर फर्म के संगठन में परिवर्तन के फलस्वरुप तैयार किया जाता है।
4.व्यय	फर्म के समापन पर वसूली के सम्बन्ध में कुछ व्यय किए जाते हैं, जिनसे वसूली खाता डेबिट किया जाता है।	फर्म के संगठन में परिवर्तन के फलस्वरुप सम्पत्ति एवं दायित्वों का पुनर्मूल्यांकन संस्था के लेखापालों द्वारा ही किया जाता है, अतः किसी प्रकार का कोई व्यय नहीं होता है।
5. लेखा प्रविष्टियाँ	वसूली खाते के डेबिट पक्ष में रोकड़ तथा बैंक शेष के अलावा समस्त सम्पत्तियों का शेष तथा क्रेडिट पक्ष में पूँजी संचय, अवितरित लाभ तथा साझेदारों के ऋणों को छोडकर अन्य दायित्वों के शेष अन्तरित कर दिए जाते है।	पुनर्मूल्यांकन खाते के डेबिट पक्ष में सम्पत्तियों के मूल्यों में कमी, दायित्वों के मूल्य में वृद्धि व संदिग्ध ऋणों के लिए प्रावधान तथा क्रेडिट पक्ष में सम्पत्तियों के मूल्य में वृद्धि तथा दायित्वों के मूल्य में कमी अंकित की जाती है।

समापन सम्बन्धी लेखा प्रविष्टियाँ (Accounting Entries Regarding Dissolution)

1. सम्पत्तियों के हस्तान्तरण पर (रोकड व बैंक शेष के अलावा) –

Realisation Account Dr.
To Sundry Assets A/c
(Balance of Assets transferred)

(प्रत्येक सम्पत्ति के चिट्ठे में दिए गए मूल्य से प्रत्येक खाते का नाम क्रेडिट किया जावेगा।)

2. दायित्वों के हस्तान्तरण पर (साझेदारों की पूँजी, ऋण, चालू खाते, सामान्य संचय, लाभ–हानि खाता, संचय कोष को छोडकर)–

Sundry Liabilities A/c Dr.
To Realisation A/c
(Balance of Sundry Liabilities transferred)

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

(चिट्ठे में दिए गए मूल्य से प्रत्येक खाते को अलग–अलग नाम से डेबिट किया जावेगा।)

3. सम्पत्तियों के विक्रय करने पर –

Cash / Bank A/c	Dr.	
To Realisation A/c		
(Cash realised from sale of assets)		
(सम्पत्तियों के विक्रय मूल्य की राशि से)		

4. साझेदार द्वारा किसी सम्पत्ति को लेने पर –

Partner's Capital A/c	Dr.	
To Realisation A/c		
(Assets taken over by the Partner)		
(अनुबन्ध द्वारा निर्धारित मूल्य से)		

5. हस्तान्तरित दायित्त्वों का नकद भुगतान करने पर –

Realisation A/c	Dr.	
To Cash / Bank A/c		
(Sundry liabilities paid off)		
(भुगतान की गयी राशि से)		

6. साझेदार द्वारा किसी दायित्व के भुगतान का भार वहन करने पर –

Realisation A/c	Dr.	
To Partner's Capital A/c		
(Liabilities taken over by the Partner's)		
(अनुबन्ध द्वारा निर्धारित राशि से)		

7. विघटन सम्बन्धी व्यय एवं सम्भावित दायित्वों का भुगतान –

Realisation A/c	Dr.	
To Cash / Bank A/c		
(Expenses paid)		
(भुगतान की गयी राशि से)		

8. वसूली खाते का क्रेडिट शेष (जमा) होने पर –

Realisation A/c	Dr.	
To Partner's Capital A/c		
(Profit transferred to Capital A/c)		
(लाभ विभाजन अनुपात में)		

9. वसूली खाते का डेबिट शेष (हानि) होने पर –

Partner's Capital A/c	Dr.	
To Realisation A/c		
(Loss transferred to Capital A/c)		
(लाभ विभाजन अनुपात में)		

10. फर्म के लिए वसूली व्यय का भुगतान किसी साझेदार द्वारा करने पर –

Realisation A/c	Dr.	
To Partner's Capital A/c		
(Expenses paid by Partner)		
(साझेदार द्वारा भुगतान की गई राशि)		

नोट : यदि साझेदार द्वारा निजी रुप से वसूली व्यय वहन करने हो तो फर्म की पुस्तकों में कोई प्रविष्टि नहीं होगी।

11. वसूली व्यय किसी साझेदार द्वारा वसूली एजेन्ट के रुप में वहन करने पर उसे देय कमीशन की राशि से –

Realisation A/c	Dr.	
To Partner's Capital A/c		
(Commission allowed to partner)		
(देय कमीशन / पारिश्रमिक की राशि से)		

विशेष टिप्पणी :– कभी–कभी दायित्वों को वसूली खाते में हस्तान्तरित नहीं किया जाता है, ऐसी स्थिति में इन दायित्वों का सीधा भुगतान कर, यदि इसमें कोई लाभ अथवा हानि होती है तो केवल इस लाभ अथवा हानि को ही वसूली खाते में हस्तान्तरित कर दिया जाता है। इसका लेखांकन निम्न प्रविष्टियों से किया जा सकता है –

12. दायित्व का पुस्तक मूल्य से अधिक भुगतान करने पर –

Sundry Liabilities A/c	Dr.	(पुस्तक मूल्य)	
Realisation A/c	Dr.	(अन्तर की राशि)	
To Cash / Bank A/c		(भुगतान की गई राशि)	
(Liabilities paid off & loss transferred)			

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

13. दायित्वों को पुस्तक मूल्य से कम भुगतान करने पर –

Sundry Liabilities A/c	Dr.	(पुस्तक मूल्य)
To Cash / Bank A/c		(भुगतान की गई राशि)
To Realisation A/c		(अन्तर की राशि)
(Sundry Liabilities paid off & profit transferred)		

नोट : (1) चिट्ठे के सम्पत्ति पक्ष की निम्नांकित मदें वसूली खाते में हस्तान्तरित नहीं करते है। रोकड व बैंक शेष, लाभ हानि खाते का नामें शेष, स्थगित आयगत व्यय।इन्हें सीधे पूँजी खाते में लाभ–हानि अनुपात में हस्तान्तरित किया जाता है।
(2) चिट्ठे के दायित्व पक्ष में दिखाए गए पूँजी खाते, संचय कोष, लाभ–हानि खाते के जमा पक्ष का शेष, अवितरित लाभों, सामान्य संचयों को वसूली खाते में नहीं ले जाते है। संचय कोष, लाभ–हानि खाता के जमा पक्ष का शेष, सामान्य संचयों, अवितरित लाभों को लाभ विभाजन अनुपात में पूँजी खातें में बाँटकर दिखाया जायेगा।
(3) साझेदारों की निजी सम्पत्तियाँ पहले निजी ऋणों को चुकाने में काम लेंगे। तत्पश्चात् बची हुई निजी सम्पत्ति फर्म के दायित्व चुकाने के काम ले सकते हैं, यदि फर्म के दायित्व उसकी सम्पत्तियों से अधिक हों।
(4) बाहरी दायित्त्वों के भुगतान के लिए प्रश्न में कुछ नहीं कहा हो तो पुस्तक मूल्य का भुगतान माना जायेगा।
(5) सम्पत्तियों के वसूली मूल्य की सूचना न होने पर मूल्यहीन मानी जाएगी।

14. साझेदार के ऋण का भुगतान करने पर –

Partner's Loan A/c	Dr.	(भुगतान की गई राशि)
To Cash / Bank A/c		
(Loan paid off)		

15. पुराने अविभाजित लाभों को बाँटने पर –

General Reserve A/c	Dr.	(भुगतान की गई राशि)
Reserve Fund A/c	Dr.	
Profit & Loss A/c	Dr.	
To Partner's Capital A/c		(लाभ विभाजन अनुपात से)
(Undistributed profit transferred)		

16. पुरानी अविभाजित हानि को विभाजित करने पर –

Partner's Capital A/c	Dr.	(लाभ विभाजन अनुपात से)
To Profit & Loss A/c		(अवितरित हानि से)
(Undistributed loss transferred)		

17. किसी साझेदार द्वारा उसकी पूँजी की कमी की पूर्ति करने पर –

Cash / Bank A/c	Dr.	(लाई गई राशि से)
To Partner's Capital A/c		
(Cash broughat by Partner's)		

18. साझेदारों के पूँजी के शेष का भुगतान उनके द्वारा प्राप्त करने पर –

Partner's Capital A/c	Dr.	(भुगतान की गई राशि से)
To Cash / Bank A/c		
(Balance of Capital Account paid)		

विशेष टिप्पणी :– अन्त में फर्म में रोकड़ तथा बैंक शेष की कुछ राशि उतनी ही होती है जितनी की साझेदार को भुगतान करनी होती है, अतः अन्तिम प्रविष्टि के पश्चात् फर्म के समस्त खाते स्वतः ही बन्द हो जायेंगे।

पुस्तकों में नहीं दिखाई गई सम्पत्तियाँ व दायित्व :–

1. कुछ सम्पत्तियाँ भौतिक रुप से विद्यमान होते हुए भी पुस्तकों में पूर्ण रुप से अपलिखित हो जाने के कारण पुस्तकों में नहीं दिखाई जाती है। लेकिन इन्हें विक्रय करने से कुछ राशि प्राप्त हो सकती है। क्योंकि ये अभी भी कार्यशील स्थिति में होती है। उनकी केवल वसूली की प्रविष्टि की जाती है। इसी प्रकार कुछ ऐसे दायित्व भी हो सकते हैं, जो पुस्तकों में विद्यमान नहीं होते हैं, परन्तु उनका भुगतान करना आवश्यक हो सकता है, जैसे भुनाये गए प्राप्त विपत्र, किसी गारण्टी अथवा प्रस्तुत वाद के सम्बन्ध में उत्पन्न दायित्व, इन्हें संदिग्ध दायित्व कहते हैं। इन सम्पत्तियों एवं दायित्वों का पुस्तकों में कोई खाता न होने के कारण इनको वसूली खाते में अन्तरित करने का कोई प्रश्न ही उत्पन्न नहीं होता है किन्तु राशि वसूल होने व भुगतान की प्रविष्टि की जाती है। इनके सम्बन्ध में लेखा प्रविष्टियाँ आगे दी गयी हैं–

I. ऐसी सम्पत्ति की बिक्री करने पर –

Cash / Bank A/c	Dr.	(बिक्री से प्राप्त राशि)
To Realisiation A/c		
(Cash realised from assets)		

II. ऐसे दायित्वों का भुगतान करने पर –

Realisation A/c	Dr.	(वास्तविक भुगतान की राशि से)
To Cash / Bank A/c		
(Contingent Liabilites paid)		

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

2. पुस्तकों में नहीं दिखाई गई सम्पत्ति का पुस्तकों में नहीं दिखाये गये दायित्व के भुगतान के प्रयोग में लेने पर कोई प्रविष्टि नहीं होगी।
3. पुस्तकों में दिखाई गई सम्पत्ति का पुस्तकों में दिखाये गये दायित्व के भुगतान में सीधे प्रयोग लेने पर कोई प्रविष्टि नहीं होगी।
4. पुस्तकों में दर्ज न की गई सम्पत्ति, पुस्तक में दर्ज किये गये दायित्व के भुगतान में काम लेने पर कोई प्रविष्टि नहीं होंगी किन्तु यदि उस दायित्व का कुछ भाग बच जाता है तो उसके भुगतान की प्रविष्टि पूर्ववत होगी।
5. पुस्तकों में दर्ज की गई सम्पत्ति, पुस्तक में न दर्ज किये गये दायित्व के भुगतान में प्रयोग लेने पर कोई प्रविष्टि नहीं होंगी।

साझेदारी समापन में ख्याति का लेखांकन

1) यदि स्थिति विवरण के सम्पत्ति पक्ष में ख्याति दी हो तो अन्य सम्पत्तियों की तरह इसे भी वसूली खाते में हस्तान्तरित किया जावेगा।
2) यदि स्थिति विवरण में ख्याति की राशि दी गई नहीं हैं तो इसका मूल्यांकन नहीं किया जायेगा।
3) यदि ख्याति से कुछ राशि प्राप्त हो तो रोकड़ / बैंक खाते को डेबिट और वसूली खाते को क्रेडिट किया जायेगा।
4) यदि कोई साझेदार ख्याति लेने के लिए तैयार हो या इसे खरीद ले तो सम्बन्धित साझेदार की पूँजी खाते को डेबिट और वसूली खाते को क्रेडिट किया जायेगा।
5) यदि प्रश्न में ख्याति की वसूली का उल्लेख न हो तो यह माना जायेगा कि ख्याति का वसूली मूल्य शून्य है अर्थात् यह मूल्य विहीन है।

विशेष :– यदि बाह्य दायित्वों जैसे लेनदार, ऋण आदि के भुगतान के सम्बन्ध में कुछ लिखा ही नहीं हो तो इनका भुगतान पुस्तकीय मूल्य पर अवश्य ही वसूली खाते के डेबिट में दिखाना न भूलें।

विभिन्न प्रकार के संचयों के व्यवहार हेतु दिशा निर्देश

क्र. सं.	संचय का नाम	वसूली खाते में हस्तान्तरण	साझेदार के खाते में हस्तान्तरण
1	कर्मचारी क्षतिपूर्ति कोष (Worksmen Compensation Fund)	यदि क्षतिपूर्ति के लिए कोई दावा एवं क्लेम हो।	यदि क्षतिपूर्ति के लिए कोई दावा एवं क्लेम न हो।
2	निवेश उच्चावचन कोष (Investment Fluctuation Fund)	यदि स्थिति विवरण के सम्पत्ति भाग में निवेश उच्चावचन कोष भी हो तो।	यदि स्थिति विवरण के सम्पत्ति भाग में निवेश उच्चावचन कोष न हो तो।
3	संयुक्त जीवन पॉलिसी संचय (Joint Life Policy Reserve)	यदि स्थिति विवरण के सम्पत्ति भाग में संयुक्त जीवन पॉलिसी भी हो।	यदि स्थिति विवरण के सम्पत्ति भाग में संयुक्त जीवन पॉलिसी न हो।
4	मशीन/प्लान्ट पुनःस्थापन कोष (Plant Replacement Fund)	–	जब मशीन/प्लान्ट स्थिति विवरण के सम्पत्ति भाग में न हो।
5	आकस्मिक कोष (Contingent Fund)	–	इसे सदैव ही साझेदारों के पूँजी खाते में हस्तान्तरित किया जाता है।

SPECIMEN OF REALISIATION ACCOUNT

Particulars	Amount ₹	Particulars	Amount ₹
To Sundry Assets A/c (पुस्तक मूल्य) Building Machinery Furniture Stock Debtors Other Assets To Bank A/c (Realisation Exp. paid) To Bank A/c (Creditor B/P and other Lib. Paid) To Partners Capital A/c (Liabilites taken over) To Bank A/c (Premium paid) To Partner's Capital or Current A/c (if Profit) (BF)		By Sundry Liabilities (पुस्तक मूल्य) Creditors B/P Bank Loan Other Liabilities By Bank Account (Realisation value of Assets) By Partners Capital A/c (Assets taken over by Partners) By Partner's Loan A/c (Discount on his Loan) By Partner's Capital or current A/c (If Loss) (BF)	

बैंक अथवा रोकड़ खाता (Bank or Cash Account) : इस खाते के डेबिट पक्ष में प्रारम्भिक शेष सम्पत्तियों के विक्रय से प्राप्त राशि तथा साझेदारों द्वारा लाई राशियाँ लिखी जाती है तथा क्रेडिट पक्ष में दायित्वों तथा व्ययों के भुगतान तथा अन्य में

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

साझेदारों को किए गये भुगतानों की राशियाँ लिखी जाती है। प्रश्न में बैंक तथा रोकड दोनों शेष दिए हुए होने पर सुविधानुसार किसी एक खाते के शेष को अन्य में अन्तरित कर दिया जाना चाहिए।

साझेदारों के पूँजी खाते (Partner's Capital A/c) : इस खाते के क्रेडिट पक्ष में प्रारम्भिक शेष चालू खातों के जमा शेष, समापन पर लाभ में हिस्सा, दायित्वों का भार लेने पर सम्बन्धित दायित्व की राशि, संचय एवं अवितरित लाभ से हिस्सा तथा पूँजी की कमी को दूर करने के लिए लाई गई राशियाँ लिखी जाती है तथा डेबिट पक्ष में प्रारम्भिक नाम शेष, चालू खाते का नाम शेष, समापन पर हानि में हिस्सा, फर्म की सम्पत्ति लेने पर सम्बन्धित सम्पत्ति की राशि, अवितरित हानियों में हिस्सा तथा भुगतान की गई राशियाँ लिखी जाती है।

अन्य आवश्यक खाते (Other Required A/c) : फर्म के समापन पर साझेदारों के ऋण खाते, साझेदारों के चालू खाते, संचय तथा अवितरित लाभ या हानियों के खाते तथा सभी साथियों के दिवालिया होने पर न्यूनता खाता आदि तैयार किए जाते हैं।

उदाहरण 1 : तरुण एवं वरुण ने 31 दिसम्बर 2015 को फर्म का विघटन करने का निश्चय किया इस दिन इनका चिट्ठा निम्न प्रकार था।

Tarun and Varun decided to dissolve the firm. The Balance Sheet As at 31 Dec. 2015 was as follows.

Balance Sheet As on 31 Dec., 2015

Liabilities		Amount ₹	Assets	Amount ₹
Creditors			Cash in hand	10,000
B/P		1,20,000	Debtors	1,00,000
G/R		20,000	Stock	4,00,000
Varun's Loan		30,000	Furniture	10,000
Capital :		1,10,000	Machinery	2,80,000
Tarun	400000		Building	80,000
Varun	200000	6,00,000		
		8,80,000		**8,80,000**

साझी बराबर में लाभ विभाजन करते हैं। सम्पत्तियों की वसूली इस प्रकार होती है– देनदार ₹ 84,000, स्टॉक ₹ 3,60,000, मशीन ₹ 2,24,000, भवन ₹ 1,20,000, लेनदारों को 5 प्रतिशत बट्टे पर चकाया गया और ₹ 6000 वसूली खर्च चुकाए गए।

They distributed profit equally. Asset's were realised as follows : Debtor's ₹ 84,000, stock ₹ 3,60,000, Machine ₹ 2,24,000, Building ₹ 1,20,000 and paid to Creditors on 5% Discount in full settelment. Realisation Expenses ₹6000/- paid. Prepare necessary journal entries and accounts.

हल :

Journal

Date	Particulars		LF	Amount ₹ Debit	Amount ₹ Credit
2015	Realisation A/c	Dr.		8,70,000	
31 Dec.,	To Stock A/c				4,00,000
	To Debtors A/c				1,00,000
	To Furniture A/c				10,000
	To Machinery A/c				2,80,000
	To Building A/c				80,000
	(Balance transfer to realisation A/c)				
	Creditor's A/c	Dr.		1,20,000	
	B/P A/c	Dr.		20,000	
	To Realisation A/c				1,40,000
	(Balance transfer to Realisation A/c)				
	Cash A/c	Dr.		7,88,000	
	To Realisation A/c				7,88,000
	(Realised from Assets)				
	Realisation A/c	Dr.		1,34,000	
	To Cash A/c				1,34,000
	(Liabilities Paid)				
	Realisition A/c	Dr.		6,000	
	To Cash A/c				6,000
	(Real. Exp. Paid)				
	Tarun's Capital A/c	Dr.		41,000	
	Varun's Capital A/c	Dr.		41,000	

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

	To Realisation A/c (Realisation loss transferred)			82,000
	Gen. Reserve A/c Dr. To Tarun's Capital A/c To Varun's Capital A/c (G/R distributed)		30,000	 15,000 15,000
	Varun's Loan A/c Dr. To Cash A/c (Loan paid)		1,10,000	 1,10,000
	Tarun's Capital A/c Dr. Varun's Capital A/c Dr. To Cash A/c. (Final payment made)		3,74,000 1,74,000	 5,45,000

Realisation A/c

Date	Particulars	Amount ₹	Date	Particulars	Amount ₹
2015	To Debtors A/c	1,00,000	2015	By Creditor's A/c	1,20,000
Dec., 31	To Stock A/c	4,00,000	Dec., 31	By B/P A/c	20,000
	To Furniture A/c	10,000		By Cash A/c	7,88,000
	To Machinery A/c	2,80,000	Dec., 31	Debtor's 84,000	
	To Building A/c	80,000		Stock 3,60,000	
				Machinery 2,24,000	
Dec., 31	To Cash A/c	1,34,000		Building 1,20,000	
	Creditor's 1,14,000			By Capital A/c	82,000
	B/P 20,000			Tarun's 41,000	
Dec., 31	To Cash A/c (Exp.)	6,000	Dec., 31	Varun's 41,000	
		10,10,000			10,10,000

Partner's Capital A/c

Particulars	Tarun ₹	Varun ₹	Particulars	Tarun ₹	Varun ₹
To Realisation A/c	41,000	41,000	By Balance b/d	4,00,000	2,00,000
To Cash A/c	3,74,000	1,74,000	By General Reserve	15,000	15,000
(Final Payment B/F)	4,15,000	2,15,000		4,15,000	2,15,000

Varun's Loan A/c

To Cash A/c	1,10,000	By Balance b/d	1,10,000
	1,10,000		1,10,000

Cash A/c

To Balance b/d	10,000	By Realisation A/c (Lib paid)	1,34,000
To Realisation A/c	7,88,000	By Realisation A/c (Exp.)	6,000
(Sundry Assets)		By Varun's Loan A/c	1,10,000
		By Tarun's Capital A/c	3,74,000
		By Varun's Capital A/c	1,74,000
	7,98,000		7,98,000

उदाहरण 2 :– मैसर्स ए, बी एण्ड ब्रदर्स ने 31 दिसम्बर, 2012 को फर्म को विघटित कर दिया उस दिन उसके सम्पत्ति एवं दायित्व निम्न प्रकार थे। M/s A, B and Bros. dissolove the firm on 31 Dec., 2012, B/S are as follows.

Liabilities	Amount ₹	Assets	Amount ₹
Trade Creditors	5000	Cash in Hand	900
B's Loan	8000	Furniture	600
General Reserve	1800	Book Debts	4000
Capital A 10,000		Stock in Trade	1600
B 5,000	15000	Investment	4000
A's Current A/c	3600	Land & Building	21000
		Goodwill	500
		B's Current A/c	800
	33,400		33,400

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

फर्नीचर को इसके मूल्य के 2/3 भाग के मूल्य पर B ने रख लिया। पुस्तक ऋण से केवल 50 प्रतिशत ही प्राप्त हुआ, स्टॉक को ₹ 1000 में बेच दिया तथा भूमि व भवन को बेचने पर ₹ 3000 की हानि हुई। विनियोग A द्वारा पुस्तक मूल्य के 90 प्रतिशत पर लिये गए। एक कार्यालय टाइपराइटर जो पुस्तकों में नहीं दर्शाया गया था, से ₹ 500 वसूल हुए (लागत ₹ 1000 की) व्यापारिक लेनदारों को 10 प्रतिशत बट्टे पर भुगतान कर दिया गया। ₹ 800 वसूली व्यय A द्वारा चुकाए गए। फर्म को बन्द करने हेतु जर्नल प्रविष्टियाँ दीजिए एवं आवश्यक खाते बनाइए।

B took furniture at 2/3 of its value. Book - debts realised at 50%, stock sold for₹ 1000 and a loss on sale of building ₹ 3000. Investment took by A at 90% of its book value. A typewriter costing ₹ 1000, which was not shown in the book, realized from it ₹ 500. Creditors are paid at 10% discount. A paid realisation expenses ₹ 800. Make necessary journal entries & accounts to close the books of firm.

Date	Particulars	L.F.	Amount ₹	
			Debit	Credit
2012	Realisation A/c Dr.		31,700	
Dec., 31	To Furniture A/c			600
	To Book Debt A/c			4,000
	To Stock in Trade A/c			1,600
	To Investment A/c			4,000
	To Land & Building A/c			21,000
	To Goodwill A/c			500
	(Assets transferred to realisation A/c)			
Dec., 31	Trade Creditor's A/c Dr.		5,000	
	To Realisation A/c			5,000
	(Liabilities Transferred to realisation A/c)			
Dec., 31	Cash A/c Dr.		21,500	
	To Realisation A/c			21,500
	(Realised from Assets)			
Dec., 31	Realisation A/c Dr.		4,500	
	To Cash A/c			4,500
	(Creditor paid off)			
Dec., 31	A's Current A/c Dr.		3,600	
	B's Current A/c Dr.		400	
	To Realisation A/c			4,000
	(Partners took the assets)			
Dec., 31	Realisation A/c Dr.		800	
	To A/s Current A/c			800
	(Realisation exp. paid by A)			
Dec., 31	A's Current A/c Dr.		3,250	
	B's Current A/c Dr.		3,250	
	To Realisation A/c			6,500
	(Realisation loss transferred)			
Dec., 31	B's Loan A/c Dr.		8,000	
	To Cash A/c			8,000
	(B's Loan Paid off)			
Dec., 31	General Reserve A/c Dr.		1,800	
	To A's Current A/c			900
	To B's Current A/c			900
	(General reserve transferred)			
Dec., 31	B's Capital A/c Dr.		3,550	
	To B's Current A/c			3,550
	(Balance of Current A/c transferred)			
Dec., 31	A's Capital A/c Dr.		1,550	
	To A's Current A/c			1,550
	(Balance on Current A/c transferred)			

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Dec., 31	A's Capital A/c	Dr.		8,450	
	B's Capital A/c	Dr.		1,450	
	To Cash A/c				9,900
	(Balance of Capital A/c paid off)				

Realisation A/c

Particulars	Amount ₹	Particulars		Amount ₹
To Furniture A/c	600	By Trade Creditor's		5,000
To Book Debt's A/c	4,000	By Cash A/c		21,500
To Stock A/c	1,600	Book Debt	2000	
To Investment A/c	4,000	Stock	1000	
To Land & Building A/c	21,000	Land & Building	18000	
To Goodwill A/c	500	Typewriter	500	
To Cash A/c (Creditor's)	4,500	By A's Current A/c		3,600
To A's Current A/c	800	By B's Current A/c		400
		By Current A/c		6500
		A	3250	
		B	3250	
	37,000			37,000

Partner's Capital A/c

Particulars	A ₹	B ₹	Particulars	A ₹	B ₹
To Current A/c	1,550	3,550	By Balance b/d	10,000	5,000
To Cash A/c	8,450	1,450			
	10,000	5,000		10,000	5,000

Partner's Current A/c

Particulars	A ₹	B ₹	Particulars	A ₹	B ₹
To Balance b/d	-	800	By Balance b/d	3,600	-
To Realisition A/c	3,250	3,250	By General Reserve	900	900
To Realisition A/c	3,600	400	By Realisation A/c	800	-
			By Capital A/c	1,550	3550
	6,850	4,450		6,850	4,450

Cash A/c

Particulars	Amount ₹	Particulars	Amount ₹
To Balance b/d	900	By Realisation A/c	4,500
To Realisation A/c	21,500	By B's Loan A/c	8,000
		By A's Capital A/c	8,450
		By B's Capital A/c	1,450
	22,400		22,400

उदाहरण 3 :– **X, Y, Z** ने 1 जनवरी 2013 को साझेदारी व्यापार प्रारम्भ किया। उन्होंने लाभ–हानि 5 : 3 : 2 अनुपात में विभाजन करना तय किया। उन्होंने पूँजी क्रमशः ₹ 80,000, ₹ 60,000 व ₹ 40,000 विनियोजित की थी। साझेदार संलेख में पूँजी पर 5 प्रतिशत ब्याज का प्रावधान था। वर्ष 2013 का लाभ (पूँजी पर ब्याज लगाने से पूर्व) ₹ 40,000 हुआ। वर्ष के दौरान साझेदारों के आहरण क्रमशः ₹ 12,000, ₹ 16,000 एवं ₹ 8,000 के थे। साझेदारों के सम्बन्ध अच्छे नहीं थे। अतः उन्होंने 31 दिसम्बर 2013 को फर्म के समापन का निर्णय लिया। सम्पत्तियों की बिक्री से ₹ 1,60,000 वसूल हुआ तथा रोकड़ ₹ 13,000 थी। ₹ 48,000 के लेनदार थे जिनको 10 प्रतिशत बट्टे पर भुगतान कर दिया गया। संचय ₹ 3000 थे। वसूली व्यय ₹ 1800 चुकाए। फर्म की पुस्तकें बन्द करने हेतु आवश्यक खाते तैयार कीजिए।

हल : **Profit & Loss Appropriation Account For the year ending 31 Dec., 2013**

To Interest on Capital		9000	By Net Profit		40,000
X	4,000				
Y	3000				
Z	2000				
To Capital Account		31,000			
X	15,500				
Y	9,300				
Z	6,200				
		40,000			40,000

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Partner's Capital A/c

Particulars	X ₹	Y ₹	Z ₹	Particulars	X ₹	Y ₹	Z ₹
To Drawings	12,000	16,000	8,000	By Balance b/d	80,000	60,000	40,000
To Balance c/d	87,500	56,300	40,200	By Interest on Capital	4,000	3,000	2,000
				By P & L App. A/c	15,500	9,300	6,200
	99,500	72,300	48,200		99,500	72,300	48,200
To Realisation	29,500	17,700	11,800	By Balance b/d	87,500	56,300	40,200
To Cash A/c	59,500	39,500	29,000	By Reserve A/c	1,500	900	600
	89,000	57,200	40,800		89,000	57,200	40,800

Memorandum Balance Sheet as on 31 Dec., 2013

Liabilites	Amount ₹	Assets	Amount ₹
Creditors	48,000	Cash	13,000
Reserve	3,000	Sundry Assets (B/F)	2,22,000
Capital	1,84,000		
X 87,500			
Y 56,300			
Z 40,200			
	2,35,000		2,35,000

Realisation Account

Particulars	Amount ₹	Particulars	Amount ₹
To Sundry Assets	2,22,000	By Creditor A/c	48,000
To Cash A/c (Creditor's)	43,200	By Cash A/c (Sundry Assets)	1,60,000
To Cash A/c (Real. Exp.)	1800	By Capital A/c	59,000
		X 29,500	
		Y 17,700	
	2,67,000	Z 11,800	2,67,000

Cash A/c

Particulars	Amount ₹	Particulars	Amount ₹
To Balance b/d	13,000	By Realisation A/c	43,200
To Realisation A/c	1,60,000	By Realisation A/c	1800
		By X Capital A/c	59,500
		By Y Capital A/c	39,500
		By Z Capital A/c	29,000
	1,73,000		1,73,000

उदाहरण 4 :– A, B तथा C साझेदार आपस में लाभ–हानि 3 : 1 : 1 के अनुपात में विभाजन करते हैं। 31 मार्च, 2010 को उन्होंने अपनी फर्म का समापन करने का निश्चय किया। इस तिथि को उनका चिट्ठा अग्र प्रकार है।

Balance Sheet As on 31 March, 2010

Liabilities	Amount ₹	Assets		Amount ₹
Creditors	6,000	Cash		3,200
Loan	1,500	Debtors	24,200	
Capital	44,500	Less : PBD	1200	23,000
A 27,500		Stock		7,800
B 10,000		Furniture		1,000
C 7,000		Sundry Assets		17,000
	52,000			52,000

यह निर्णय लिए गये :– (1) अ फर्नीचर ₹ 800 में लेता है और ₹ 20,000 के पुस्तक मूल्य के देनदारों को ₹ 17,200 में लेना स्वीकार करता है और साथ ही ₹ 6,000 के लेनदारों को भुगतान करता है। (2) ब स्टॉक ₹ 7,000 में तथा कुछ विविध सम्पत्तियों को ₹ 7,200 में लेता है। यह राशि पुस्तक मूल्य से 10 प्रतिशत कम है। (3) स शेष विविध सम्पत्तियों को उनके पुस्तक मूल्य के 90 प्रतिशत मूल्य जिसमें से ₹ 100 छूट के कम करने के पश्चात् लेता है तथा फर्म के ऋण का भुगतान ब्याज सहित करना स्वीकार करता है। ऋण पर ब्याज ₹ 30 देने है जिनका पुस्तकों में कोई लेखा नहीं हुआ है। (4) समापन के व्यय ₹ 270 है। शेष देनदारों को पुस्तक मूल्य के 50 प्रतिशत पर एक संग्रहण एजेन्सी को बेच दिया। फर्म की पुस्तकों को बन्द करने के लिए आवश्यक खाते तैयार कीजिए।

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

हल :

Realisation A/c

Particulars	Amount ₹	Particulars	Amount ₹
To Sundry Assets	50,000	By Creditors	6,000
Debtor 24,200		By Loan	1500
Stock 7,800		By Provision for Bad debts	1200
Furniture 1000		By A's Capital A/c (800+17200)	18,000
Sundry Assets 17,000	6,000	By B's Capital A/c	14,200
To A's Capital Creditors	1,530	(Stock 7000+S. Assets 7200)	
To C's Capital A/c	270	By C's Capital A/c (S. Assets 8000)	8,000
(1500+30) Loan & Interest		By Cash A/c (Debtor 50% of 4200)	2,100
To Cash A/c (Exp.)		By Partners Capital A/c (Loss)	6,800
		A 4080, B 1360, C 1360	
	57,800		57,800

Partner's Capital A/c

Particulars	A ₹	B ₹	C ₹	Particulars	A ₹	B ₹	C ₹
To Realisation	18,000	14,200	8,000	By Balance b/d	27,500	10,000	7000
To Realisation	4080	1360	1360	By Real.	6,000	-	1530
To Cash A/c	11,420			By Cash A/c		5,560	830
	33,500	15,560	9360		33,500	15,560	9,360

Cash A/c

Particulars	Amount ₹	Particulars	Amount ₹
To Balance b/d	3200	By RealisationA/c	270
To Realisation A/c	2100	By A's Capital A/c	11420
To B's Capital A/c	5560		
To C's Capital	830		
	11,690		11,690

विशेष :– ₹ 7,200 की सम्पत्तियों का मूल्य 7200 × 100 / 90 = ₹ 8000

अतः सी द्वारा ली गई सम्पत्तियों का मूल्य : 17000 – 8000 = 9000 × 90 / 100 = 8100 – 100 = ₹ 8000

साझेदार का दिवालिया होना

साझियों के पूँजी खातों में विघटन सम्बन्धी प्रविष्टियाँ करने के बाद यह सम्भव हो सकता है कि किसी साझी का पूँजी खाता डेबिट शेष बताने लगे। यदि वह साझी साहूकार है तो अपने पूँजी खाते के डेबिट शेष के बराबर राशि वह फर्म में ले आएगा और अपना हिसाब चुकता कर देगा। लेकिन ऐसे साझेदार को दिवालिया घोषित किया जा चुका है, तो वह फर्म के प्रति अपने सम्पूर्ण दायित्व का भुगतान नहीं कर सकेगा। इस घाटे की पूर्ति शेष साहूकार साझेदारों को करनी पडेगी। अब एक महत्वपूर्ण प्रश्न यह उठता है कि इस घाटे को शेष साझी अपने लाभ विभाजन के अनुपात में वहन करे अथवा अपनी पूँजी के अनुपात में वहन करें।

सन् 1903 से पूर्व किसी दिवालिया साझेदार की पूँजी का घाटा अपने लाभ विभाजन के अनुपात में बांटते थे। लेकिन उस वर्ष इंग्लैण्ड के न्यायालय ने गार्नर बनाम मर्रे के मुकदमें में एक महत्वपूर्ण निर्णय देकर इस सम्बन्ध में साझेदार की पूँजी की कमी को शेष साहूकार साझेदार अपने पूँजी के अनुपात में वहन करेंगे, इस सिद्धान्त का प्रतिपादन किया। इस मुकदमें एवं सिद्धान्त का विवरण अग्र लिखित है–

गार्नर बनाम मर्रे के मुकदमें के तथ्य

गार्नर, मर्रे और विल्किन्स साझी थे, जिनका लाभ–हानि अनुपात बराबर था। 30 जून, 1900 को फर्म का विघटन हुआ और फर्म की सम्पत्तियों को बेच दिया गया तथा लेनदारों को भुगतान कर दिया गया। यह सब हो जाने के बाद फर्म की स्थिति इस प्रकार थी–

दायित्व	पौण्ड	सम्पत्तियाँ	पौण्ड
गार्नर की पूँजी	2500	नकद	1916
मर्रे की पूँजी	314	विल्किन्सन की पूँजी का घाटा	263
		वसूली की हानि	635
	2814		2814

विल्किन्सन को दिवालिया घोषित कर दिया गया और उससे कुछ भी वसूल न हो सका। फर्म के प्रति विल्किन्सन का कुल दायित्व 263 पौण्ड + 635 पौण्ड का 1/3 = 475 पौण्ड बना । न्यायालय के सामने प्रश्न आया कि विल्किन्सन की पूँजी की हानि गार्नर और मर्रे किस अनुपात में बाँटे।

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

मुकदमें में दिया गया निर्णय :– इस मुकदमें में फैसला दिया गया कि दिवालिया साझी की पूँजी की कमी को शेष साझेदार उस पूँजी अनुपात में बाटेंगे, जो फर्म के विघटन से पूर्व बने अन्तिम आर्थिक चिट्ठे में दी हुई थी। यह फैसला इस आधार पर दिया गया था कि साझी के दिवालिया होने से जो हानि होती हैं वह व्यापारिक हानि से भिन्न होती है।

निर्णय का स्पष्टीकरण :– मुकदमें में दिए गए निर्णय के आधार पर दो बातें प्रकट होती हैं–

(1) दिवालिया साझी की पूँजी की कमी को शेष साहूकार साझी अपनी पूँजी के अनुपात में वहन करेंगे।

(2) साहूकार साझेदार वसूली की हानि में अपने भाग को नकद लाये।

पूँजी का अनुपात साहूकार साझेदारों की उस पूँजी के आधार पर निकाला जायेगा जो फर्म के विघटन से पूर्व बने नियमित चिट्ठे में दी हुई है।

उदाहरणार्थ :– यदि फर्म का चिट्ठा प्रतिवर्ष 31 दिसम्बर को बनता है तो अनुपात ज्ञात करने के लिए उस चिट्ठे में दी गई पूँजी ली जाएगी, जो फर्म के विघटन से पूर्व के 31 दिसम्बर को बनाया था। यह ध्यान रहे कि यह पूँजी अनुपात का आधार तभी बनेगा जबकि साझियों का पूँजी खाता अपरिवर्तनशील है।

यदि साझियों का पूँजी खाता परिवर्तनशील है तो साझियों के पूँजी खातों में चिट्ठे में दिए गए संचय लाभ–हानि खाते का शेष आदि का समायोजन किया जायेगा। (लेकिन समापन के समायोजन से पूर्व)। इसके बाद समायोजित पूँजी का जो अनुपात आएगा उसमें दिवालिया साझी की पूँजी का घाटा बांटा जाएगा। किन्तु यह ध्यान रहे कि वसूली के लाभ–हानि का वितरण करने से पूर्व किसी साझेदार के पूँजी खाते का डेबिट शेष है तो वह साझेदार दिवालिये साझेदार की न्यूनता वहन नहीं करेगा क्योंकि वह साहूकार है।

नोट :– स्पष्ट सूचना के अभाव में गार्नर बनाम मर्रे के नियम के आधार पर ही प्रश्न हल करना चाहिए।

गार्नर बनाम मर्रे नियम लागू न होने पर :–

भारतीय साझेदारी अधिनियम, 1932 में इस सम्बन्ध में कुछ नहीं कहा गया है अतः शेष साहूकार साझेदार, दिवालिये साझेदार की न्यूनता को अपने लाभ–विभाजन अनुपात में वहन करेंगे।

उदाहरण 5 :– दीपक, कपिल और भरत 3 : 2 : 1 के अनुपात में लाभ–हानि विभाजित करते हैं। 31 मार्च, 2014 को इनका चिट्ठा निम्न है–

Balance Sheet As on 31 March, 2014

Liabilities	Amount ₹	Assets	Amount ₹
Creditors	1,40,000	Cash	24,000
B/P	1,00,000	Debtors	1,20,000
General Reserve	54,000	Stock	1,80,000
P & L A/c	18,000	Building	3,84,000
Capital Deepak 2,64,000	4,20,000	Capital : Bharat	24,000
Kapil 1,56,000			
	7,32,000		7,32,000

उक्त तिथि को फर्म का समापन कर दिया गया, भवन एवं स्टॉक ₹ 5,28,000 में बेचे गए। वसूली व्यय ₹ 6000 है, देनदारों में से ₹ 3000 डूब गए, लेनदारों को पूर्ण भुगतान कर दिया गया। भरत दिवालिया हो गया तथा उसकी जायदाद से ₹ 5100 ही वसूल हुए। फर्म की पुस्तकों में वसूली खाता तथा साझेदारों के पूँजी खाते बनाइए। गार्नर बनाम मर्रे नियम लागू कीजिए। यह मानते हुए कि साहूकार साझेदार "वसूली की हानि" अपना हिस्सा नकद नहीं पायेंगे।

हल :

Realisation A/c

Particulars	Amount ₹	Particulars	Amount ₹
To Debtors A/c	1,20,000	By Creditors A/c	1,40,000
To Stock A/c	1,80,000	By B/P	1,00,000
To Building A/c	3,84,000	By Cash A/c (Assets Realised)	6,45,000
To Cash A/c	2,40,000	Building - 5,28,000	
Creditors 1,40,000		Debtor's - 1,17,000	
B/P 1,00,000		By Partners Capital A/c	45,000
To Cash A/c (Realisation Exp.)	6000	D 22,500, K-15,000, B- 7500	
	9,30,000		**9,30,000**

Partner's Capital A/c

Particulars	Deepak₹	Kapil₹	Bharat₹	Particulars	Deepak₹	Kapil₹	Bharat₹
To Balance b/d	-	-	24,000	By Balance b/d	2,64,000	1,56,000	
To Realisation	22,500	15,000	7,500	By Cash A/c			5,100
To Bharat Cap.	9000	5,400	-	By Gen.reserve	27,000	18,000	9000
To Cash A/c	2,68,500	1,59,600	-	By P&L A/c	9,000	6,000	3000
				By Deepak Cap.			9000
				By Kapil Cap.			5400
	3,00,000	**1,80,000**	**31,500**		**3,00,000**	**1,80,000**	**31,500**

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

कार्यशील टिप्पणी–भरत की पूँजी में कमी ₹14,400 को दीपक व कपिल के पूँजी अनुपात में (3,00,000 : 1,80,000), 5 : 3 में बाँटी गयी हैं।

पूँजी अनुपात की गणना

	दीपक ₹	कपिल ₹
Capital	2,64,000	1,56,000
+ Gen. Reserve	27,000	18,000
+ P&L A/c	9000	6000
	3,00,000	1,80,000

Cash A/c

Particulars	Amount₹	Particulars	Amount₹
To Balance b/d	24,000	By Realisation A/c (Creditors)	1,40,000
To Realisation A/c	6,45,000	By Realisation A/c (B/P)	1,00,000
To Bharat Capital A/c	5100	By Realisation A/c (Exp.)	6000
		By Deepak Capital	2,68,500
		By Kapil Capital	1,59,600
	6,74,100		6,74,100

उदाहरण 6 : A, B, C क्रमशः 5 : 3 : 2 के अनुपात में लाभ बाँटते हुए साझेदार हैं। 31 दिसम्बर 2013 को फर्म के समापन के पूर्व उनका चिट्ठा निम्न प्रकार है–

Balance Sheet As on 31 March, 2013

Liabilities	Amount ₹	Assets	Amount ₹
Bills Payable	40,000	Cash at Bank	8000
Creditors	1,00,000	Bill's Receivable	32,000
Capital :	1,20,000	Debtor's	1,40,000
A 80,000		Stock	60,000
B 40,000		Capital of C	20,000
	2,60,000		2,60,000

A को सम्पत्तियों की वसूली एवं प्राप्त राशि का वितरण करने हेतु नियुक्त किया। जिसे प्राप्य विपत्र, स्टॉक व देनदारों से प्राप्त राशि का 5 प्रतिशत पारिश्रमिक देय है, उसने वसूली परिणामों की निम्न सूचना दी है–

प्राप्य विपत्र ₹ 30,000, देनदार ₹ 1,20,000, स्टॉक ₹50,000, लेनदारों के पूर्ण भुगतान में ₹ 94,000 चुकाए। देय विपत्रों की पूरी राशि चुकायी गई। वसूली व्यय ₹ 4000 हुए। सी दिवालिया हो गया तथा उसकी निजी सम्पत्तियों से केवल ₹ 4000 ही वसूल हो सके, यह मानते हुए कि गार्नर बनाम मर्रे नियम लागू होता है। वसूली खाता एवं साझेदारों के पूँजी खाते बनाइए। साहूकार साझेदार वसूली की हानि की राशि नकद लेकर आयेंगे।

हल :

Realisation A/c

Particulars	Amount ₹	Particulars	Amount ₹
To Bill Receivable A/c	32,000	By Bill Payable A/c	40,000
To Debtors A/c	1,40,000	By Creditors A/c	1,00,000
To Stock A/c	60,000	By Cash A/c	2,00,000
To Cash A/c	1,34,000	B/R 30,000	
Creditors - 94,000		Debtors 1,20,000	
B/R - 40,000		Stock 50,000	
		By Partners Capital A/c (Loss)	40,000
To Cash A/c (Real. Exp.)	4000	A - 20,000	
To A's Capital (Remuneration)	10,000	B - 12,000	
		C - 8000	
	3,80,000		**3,80,000**

Partner's Capital A/c

Particulars	A ₹	B ₹	C ₹	Particulars	A ₹	B ₹	C ₹
To Balance b/d	-	-	20,000	By Balance b/d	80,000	40,000	-
To Realisation	20,000	12,000	8000	By Realisation	10,000	-	-
To C's Capital	16,000	8,000		By Cash A/c	20,000	12,000	4000
To Cash A/c	74,000	32,000		By A's Capital	-	-	16000
				By B's Capital	-	-	8000
	1,10,000	**52,000**	**28,000**		**1,10,000**	**52,000**	**28,000**

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Cash A/c

Particulars	Amount ₹	Particulars	Amount ₹
To Balance b/d	8000	By Realisation A/c	1,34,000
To Realisation A/c	2,00,000	By Realisation A/c	4000
To A's Capital A/c	20,000	By A's Capital A/c	74,000
To B's Capital A/c	12,000	By B's Capital A/c	32,000
To C's Capital A/c	4000		
	4,00,000		4,00,000

उदाहरण 7 :

A, B, व C बराबर के साझेदार थे। 31 मार्च, 2014 को उनकी पूँजी ₹ 2,40,000, ₹ 1,20,000 व ₹ 40,000 थी। इस तिथि को फर्म विघटन का निश्चय किया गया। विभिन्न सम्पत्तियों से ₹ 1,64,000 वसूल हुए। वसूली व्यय ₹4000, C दिवालिया घोषित हो गया तथा उससे ₹ 1 में से 40 पैसा ही वसूल हो सके। फर्म की पुस्तकें बन्द करने हेतु आवश्यक खाते तैयार कीजिए।

हल :

Balance Sheet As on 31 March, 2014

Liabilities	Amount ₹	Assets	Amount ₹
Capital A/c	4,00,000	Sundry Assets (B.F.)	4,00,000
A 2,40,000			
B 1,20,000			
C 40,000			
	2,60,000		**2,60,000**

Realisation A/c

Particulars	Amount ₹	Particulars	Amount ₹
To Sundry Asset's	4,00,000	By Cash A/c	1,64,000
To Cash A/c (Exp.)	4000	(Assets Realised)	
		By Partners Capital A/c	2,40,000
		A 80,000	
		B 80,000	
		C 80,000	
	4,04,000		**4,04,000**

Partner's Capital A/c

Particulars	A ₹	B ₹	C ₹	Particulars	A ₹	B ₹	C ₹
To Realisation	80,000	80,000	80,000	By Balance b/d	2,40,000	1,20,000	40,000
To C's Capital	16,000	8000		By Cash A/c	80,000	80,000	16,000
To Cash A/c	2,24,000	1,12,000		By A's Capital			16,000
				By B's Capital			8000
	3,20,000	**2,00,000**	**80,000**		**3,20,000**	**2,00,000**	**80,000**

Cash A/c

Particulars	Amount ₹	Particulars	Amount ₹
To Realisation A/c	1,64,000	By Realisation A/c	4000
To A's Capital A/c	80,000	By A's Capital A/c	2,24,000
To B's Capital A/c	80,000	By B's Capital A/c	1,12,000
To C's Capital A/c	16,000		
	3,40,000		**3,40,000**

फर्म के दिवालिया साझेदारों की स्थिति में अवयस्क साझेदार का दायित्व :–

साझेदारी अधिनियम के अनुसार फर्म के किसी अवयस्क साझेदार का दायित्व उसके द्वारा फर्म में लगाई गई पूँजी एवं अर्जित लाभों तक ही सीमित रहता है। फर्म के दायित्वों के भुगतान के लिए उसके द्वारा फर्म में लगी हुई पूँजी का ही प्रयोग किया जा सकता है। इस हेतु उसकी व्यक्तिगत सम्पत्तियों का प्रयोग नहीं किया जा सकता है, यदि अवयस्क साझेदार को छोडकर अन्य सभी साझेदार दिवालिया घोषित हो चुके हैं तथा अवयस्क साझेदार के पास पर्याप्त सम्पत्ति है तो भी अवयस्क साझेदार की व्यक्तिगत सम्पत्तियों का प्रयोग फर्म के दायित्वों के भुगतान हेतु नहीं किया जा सकता है।

उदाहरण 8 :

A, B, C क्रमशः 3 : 2 : 1 के अनुपात में लाभ–हानि विभाजित करते हैं। 31 दिसम्बर, 2014 को फर्म का विघटन करने को सहमत हुए। उस तिथि को फर्म का चिट्ठा निम्न प्रकार था–

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Balance Sheet As on 31 March, 2014

Liabilities	Amount ₹	Assets	Amount ₹
A's Capital A/c	25,000	Cash	600
B's Capital A/c	15,000	Sundry Assets	36,000
		C's Capital Overdrawn	3400
	40,000		**40,000**

सम्पत्तियों से ₹ 30,000 प्राप्त हुए। स दिवालिया हो गया तथा उसकी निजी सम्पत्तियों से केवल ₹ 1200 ही प्राप्त हो सके। फर्म की पुस्तकें बन्द कीजिए यदि गार्नर बनाम मर्रे नियम लागू नहीं होता है।

हल :

Realisation A/c

Particulars	Amount ₹	Particulars		Amount ₹
To Sundry Assets	36,000	By Cash A/c (Assets Realised)		30,000
		By Partners Capital A/c A	3000	
		B	2000	6,000
		C	1000	
	36,000			**36,000**

Partner's Capital A/c

Particulars	A ₹	B ₹	C ₹	Particulars	A ₹	B ₹	C ₹
To Balance b/d	-	-	3400	By Balance b/d	25,000	15,000	-
To Realisation	3000	2000	1000	By Cash A/c			1200
To C's Capital	1920	1280	-	By A's Capital			1920
To Cash A/c	20,080	11,720	-	By B's Capital			1280
	25,000	**15,000**	**4,400**		**25,000**	**15,000**	**4,400**

Cash A/c

Particulars	Amount ₹	Particulars	Amount ₹
To Balance b/d	600	By A's Capital A/c	20,080
To Realisation A/c	30,000	By B's Capital A/c	11,720
To C's Capital A/c	1200		
	31,800		**31,800**

सारांश (Summary)

फर्म व साझेदारी का समापन : (1) जब सभी साझेदार फर्म को समाप्त करने का समझौता कर ले, (2) जब सभी साझेदार या एक को छोड़कर अन्य सभी साझेदार दिवालिया घोषित हो जाये, (3) जब फर्म का कारोबार अवैध हो जावे, (4) जब किसी साझेदार ने ऐच्छिक साझेदारी को समाप्त करने की सूचना अन्य साझेदारों को दे दी हो, (5) जब न्यायालय द्वारा फर्म के समापन का आदेश दिया हो।

समापन के प्रकार : (1) समझौते द्वारा समापन, (2) अनिवार्य समापन, (3) नोटिस द्वारा समापन, (4) न्यायालय द्वारा समापन, (5) विशेष घटना होने पर समापन।

फर्म के समापन पर बनाये जाने वाले खाते : (1) वसूली खाता, (2) बैंक या रोकड़ खाता, (3) साझेदारों के पूँजी खाते, (4) अन्य आवश्यक खाते।

गार्नर बनाम मरे का नियम : इस नियम के अनुसार किसी साझेदार के दिवालिया होने पर शेष साहूकार साझेदार उसकी हानि पूँजी अनुपात में वहन करते हैं जिसकी गणना परिवर्तनशील पूँजी खाता निधि की दशा में समापन से सम्बन्धित मदों को छोड़कर शेष साहूकार साझेदारों के पूँजी शेष के आधार पर निकालते हैं।

फर्म के दिवालिया साझेदारों की स्थिति में अवयस्क साझेदार का दायित्व : साझेदारी अधिनियम के अनुसार फर्म के किसी अवयस्क साझेदार का दायित्व उसके द्वारा फर्म में लगाई गई पूँजी एवं अर्जित लाभों तक ही सीमित रहता है।

शब्दावली (Glossary)

फर्म का समापन (Dissolution of Firm) : समस्त साझेदारों के मध्य साझेदारी का समाप्त हो जाना।

साझेदारी का समापन (Dissolution of Partnership) : केवल साझेदारी समाप्त होती है, फर्म समाप्त होना आवश्यक नहीं।

वसूली खाता (Realisation Account) : समापन पर सम्पत्ति एवं दायित्वों का स्थानान्तरण कर वसूली का लेखा एवं विघटन पर जिस खाते के माध्यम से भुगतान किया जाता है। इस खाते का शेष साझेदारों में लाभ विभाजन अनुपात में वितरित किया जाता है।

"गार्नर बनाम मर्रे" (Garner vs. Murray) : यह दो साझेदारों का नाम है जिनके प्रसिद्ध वाद निर्णय के आधार पर विघटन राशि के वितरण हेतु नियम प्रतिपादित हुआ।

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

अभ्यासार्थ प्रश्न (Questions for Exercise)

बहुचयनात्मक प्रश्न (Multiple Choice Questions)

1. समापन के समय डूबत ऋण खाते का शेष हस्तांतरित किया जाता है–
   (अ) देनदारों के खाते में (ब) डूबत ऋण खाते में
   (स) वसूली खाते में (द) पूँजी खाते में
   At the time of dissolution of the firm balance of bad debts A/c is transferred to.
   (a) Debtors A/c (b) Bad debts A/c
   (c) Realisation's A/c (d) Capital A/c
2. साझेदारी फर्म के विघटन पर हानियाँ सबसे पहले चुकायी जाएगी–
   (अ) लाभों में से (ब) साझेदारों के ऋण खातों में से
   (स) साझेदारों की पूँजी में से (द) साझेदारों के निजी साधनों से
   On the dissolution of partnership firm, losses will be charged first:
   (a) Out of Profit (b) From Partner's Loan A/c
   (c) From Partner's Capital A/c (d) From Partner's personal resources
3. फर्म के समापन पर ख्याति खाते को बन्द करने के लिए हस्तान्तरित किया जाता है–
   (अ) पुनर्मूल्यांकन खाते में (ब) साझेदारों के पूँजी खाते में
   (स) वसूली खाते में (द) लाभ–हानि खाते में
   On the dissolution of firm, to close goodwill A/c it is transferred to-
   (a) Revaluation's A/c (b) Partner's Capital A/c
   (c) Realisation A/c (d) Profit & Loss A/c
4. गार्नर बनाम मर्रे नियम के अनुसार एक दिवालिया साझेदार के पूँजी की न्यूनता शेष साहूकार साझेदारों में बाँटी जाती है
   (अ) लाभ–हानि अनुपात में (ब) वर्ष के आरम्भ के पूँजी अनुपात में
   (स) समापन के लाभ–हानि के पूर्व के पूँजी अनुपात में (द) बराबर अनुपात में
   In which ratio, capital deficiency of an insolvent partners is distributed among solvent partners, when Garner vs. Murray applies-
   (a) Profit - Loss Ratio (b) Opening Capital Ratio
   (c) Capital ratio before charging dissolution Profit & Loss (d) Equal Ratio
5. जब गार्नर बनाम मर्रे नियम लागू होता है तब वसूली की हानि साझेदार वहन करेंगे–
   (अ) बराबर अनुपात में (ब) लाभ–हानि अनुपात में
   (स) पूँजी अनुपात में (द) उपरोक्त में से कोई नहीं
   When Garner vs. Murray law applies, realisation loss will bear by the partner's in-
   (a) Equal Raito (b) Profit & Loss Ratio
   (c) Capital Ratio (d) None of the above

अतिलघूत्तरात्मक प्रश्न (Very Short Answer Type Questions)

1. एक फर्म के ₹ 50,000 के देनदारों से समापन पर ₹ 45,000 वसूल हुए। वसूली की जर्नल प्रविष्टि होगी ?
   On the dissolution of the firm from debtors worth ₹ 50,000 realised ₹ 45,000. Make necessary journal entry at the time of dissolution of the firm.
2. गार्नर बनाम मर्रे के मुकदमें में दिवालिया साझेदार कौन था तथा उसका घाटा किस अनुपात में बाँटा गया?
   What is the name of insolvent partner in Garner vs. Murray case, in which ratio his loss is distributed?
3. वसूली खाते से आप क्या समझते हैं ?
   What is Realisation account?
4. फर्म के समापन से आप क्या समझते हैं ?
   What is dissolution of partnership firm?
5. फर्म के समापन पर भुगतान का क्रम बताइए ?
   What is the sequence for payment at time of dissolution of firms?
6. न्यायालय द्वारा समापन से क्या आशय है ?
   What do you mean by dissolution by court ?
7. एक फर्म में साझेदारों की पूँजी ₹ 20,000, दायित्व ₹ 15,000 तथा रोकड शेष ₹ 1000, फर्म के समापन करने पर विविध सम्पत्तियों से ₹ 9000 वसूल हुए। वसूली से हानि होगी ?
   At the time of dissolution capital of the partners of the firm ₹ 20,000, liabilities ₹ 15,000 & cash balance ₹ 1000; amount realized from sundry assets ₹ 9,000. What is loss on realization?
   Ans. : ₹ 25,000

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

लघूत्तरात्मक प्रश्न (Short Answer Type Questions)

1. ''गार्नर बनाम मर्रे'' नियम को समझाइये?
   Explain Garner vs. Murray rule.
2. ''साझेदारी का समापन फर्म के समापन से भिन्न हैं।'' इस कथन की व्याख्या कीजिए ?
   "There is a difference between dissolution of partnership and dissolution of firm". Explain this statement.
3. ए, बी व सी का लाभ विभाजन अनुपात 1 : 2 : 2 है तथा वसूली की हानि डेबिट करने से पूर्व पूँजी खाते के शेष क्रमशः ₹ 3000 (Dr.) ₹ 6000 (Cr.) तथा ₹ 2000 (Cr.) है। वसूली की हानि ₹ 5000. ए दिवालिया हो गया उसकी न्यूनता वहन करने की प्रविष्टि बनाओ?
   A, B and C profit sharing ratio is 1:2:2. Before debiting realisation loss partners capital A/c balance are ₹ 3000 (Dr.) ₹ 6000 (Cr.) and ₹ 2000 (Cr.) and realisation loss ₹ 5000. A became insolvent, give journal entry for bearing deficiency of A.
4. हिमी व श्रीकान्त साझेदार है। 31 मार्च, 2012 को साझेदारों की पूँजी क्रमशः ₹ 1,00,000 व ₹ 50,000 है तथा लेनदार ₹ 30,000 है इसी तिथि को फर्म के समापन पर सम्पत्तियों का वसूली मूल्य ₹ 90,000 है। समापन पर वसूली खाता बनाइये?
   Himi and Shreekant are partners, as on 31 March, 2012 there capital ₹ 1,00,000 and ₹ 50,000 and creditors ₹ 30,000. On that date firm dissolved and realisation value of assets are ₹ 90,000. Prepare Realisation Account on dissolution.
5. अनिवार्य समापन किन परिस्थितियों में होता है ?
   In which circumstances compulsory dissolution is happen?
6. साझेदारी फर्म के विघटन की रीतियाँ बताइये ?
   State the modesa of dissolution of a partnership firm.
7. साझेदारी के विघटन पर पूँजी खाते किस प्रकार बन्द किये जाते हैं ?
   How capital Accounts are closed on dissolution of partnership firm?
8. कोई दो परिस्थितियाँ बताइये, जिसके अन्तर्गत साझेदारी को विघटित किया जाता है ?
   State any two circumstances under which partnership is deemed to be dissolved.
9. फर्म के विघटन के समय वसूली खाता बनाने के नियम लिखिये ?
   State the rules of preparation of realisation account on dissolution of partnership firm.
10. कोई दो आधार बताइये, जिन पर न्यायालय फर्म के विघटन के आदेश दे सकता है ?
    State any two grounds on which a court can pass order for dissolution of firm.
11. कपिल एक साझेदार, ₹ 25,000 के लेनदारों को ₹ 22,000 में लेने को सहमत हुआ। फर्म के विघटन के समय आवश्यक जर्नल प्रविष्टि दीजिये ?
    Kapil one of the partner, agreed to take over the creditor's of ₹ 25,000 for ₹ 22,000. Pass necessary journal entry at time of dissolution of the firm.

निबन्धात्मक प्रश्न (Essay Type Questions)

1. वसूली खाते एवं पूनर्मुल्यांकन खाते में अन्तर बताइये ?
   What is difference between realisation account and revaluation account ?
2. फर्म का विघटन किन–किन परिस्थितियों में किया जा सकता है ?
   Under what circumstances a firm may be dissolved ?
3. गार्नर बनाम मर्रे नियम से क्या समझते हैं? स्थायी एवं परिर्वतनशील पूँजी पद्धतियों के अन्तर्गत यह कैसे लागू होता है, समझाइये।
   What do you mean by Garner vs. Murray rule, how it is applicable in case of fixed capital method and fluctuating capital method. Explain.
4. फर्म के विघटन पर हिसाब का निपटारा करने की लेखांकन विधि समझाइये ।
   Explain the method of accounting for settlement of accounts at the time of dissolution.

बहुचयनात्मक प्रश्नों के उत्तर

प्रश्न सं.	1	2	3	4	5
उत्तर	C	A	C	C	B

आंकिक प्रश्न (Numerical Questions)

1. रमेश, नरेश एवं महेश 3 : 2 : 1 के अनुपात में लाभ का वितरण करते थे। 31 दिसम्बर 2014 को अपनी साझेदारी के समापन का निर्णय लेते हैं। इस दिन का चिट्ठा इस प्रकार हैं –

Balance Sheet As on 31 Dec., 2014

Liabilities	Amount ₹	Assets	Amount ₹
Creditors	20,500	Cash in Hand	6000

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Mrs. Ramesh Loan	8000	Debtors	9000
Joint Life Policy fund	20,000	Joint Life Policy	14,000
		Investment	20,000
Capital		Stock	8000
Ramesh 50,000		Machinery	40,000
Naresh 10,000	60,000	Mahesh Capital A/c	11,500
	1,08,500		**1,08,500**

समापन पर निम्नलिखित लेनदेन हुए : (1) संयुक्त जीवन बीमा पॉलिसी को ₹ 15,000 में समर्पण किया। (2) रमेश ने विनियोग ₹ 17,500 में लिए तथा अपनी पत्नी के ऋण का भुगतान करने के लिए सहमत हुए। (3) नरेश ने ₹ 7500 में स्टॉक लिया तथा ₹ 5000 के देनदारों को ₹ 4000 में लिया। (4) मशीन से ₹ 50,000 वसूल हुए तथा शेष देनदारों को पुस्तक मूल्य का 50 प्रतिशत ही प्राप्त हुआ। (5) वसूली व्यय ₹ 1000 हुए। (6) ₹ 3000 के मूल्य के विनियोग जिनका पुस्तकों में लेखा–जोखा नहीं हुआ उनसे यही मूल्य वसूल हुआ। फर्म की पुस्तकें बन्द करने हेतु जर्नल प्रविष्टियाँ एवं आवश्यक खाते बनाइए।

Ans. : वसूली खाते का लाभ – ₹ 27,000

2. गोपेश एवं राकेश साझेदार हैं लाभ–हानि बराबर बाँटते हैं। उन्होंने साझेदारी व्यवसाय को विघटित करने का निश्चित किया। 31 मार्च 2011 को चिट्ठा निम्न प्रकार था–

Balance Sheet As on 31 Dec., 2014

Liabilities	Amount ₹	Assets	Amount ₹
Creditors	30,000	Bank	20,000
General Reserve	20,000	Debtors	40,000
Capital		Stock	20,000
Gopesh 44,000		Furniture	8000
Rakesh 44,000	88,000	Plant & Machinery	50,000
	1,38,000		**1,38,000**

सम्पत्तियों से वसूली निम्न प्रकार हुई : (1) गोपेश ने प्लांट एवं मशीन तथा फर्नीचर पुस्तक मूल्य से 10 प्रतिशत कम पर लिया। (2) राकेश ने स्टॉक एवं ख्याति ₹ 35,000 में ली। (3) विविध देनदारों से ₹ 37,000 वसूल हुए। (5) लेनदारों को 5 प्रतिशत बट्टे पर भुगतान कर दिया। फर्म की पुस्तकें बन्द करने के लिए जर्नल प्रविष्टियां दीजिए तथा आवश्यक खाते बनाइए।

3. X, Y और Z साझेदार हैं, जो लाभ–हानि को 2 : 2 : 1 अनुपात में बाँटते हैं। 31 मार्च 2010 को साझेदारी के विघटन को सहमत हुए। उस तिथि को फर्म का चिट्ठा निम्न प्रकार था।

Balance Sheet As on 31 March, 2010

Liabilities	Amount ₹	Assets	Amount ₹
Creditors	2500	Cash at Bank	4500
General Reserve	5000	Debtors 6500	
Current A/c X	2500	Less P.F.B. & D.D. 500	6000
Current A/c Y	1500	Stock	5000
Capital	20,000	Investment	5000
X 10,000		Furniture	4000
Y 5000		Plant & Machinery	6000
Z 5000		Current A/c Z	1000
	31,500		**31,500**

प्लांट एवं मशीन से ₹ 10,000, फर्नीचर ₹ 5000, देनदारों से पूर्ण, स्टॉक से ₹ 4000 प्राप्त हुए। विनियोग Z द्वारा लिये गए (पुस्तक मूल्य पर)। लेनदारों को 10 प्रतिशत बट्टे पर भुगतान किया, वसूली व्यय ₹ 100 हुए। ₹ 550 की सम्पत्ति का पुस्तकों में लेखा नहीं किया गया था। जिसे X ने ₹ 450 में ले लिया। ₹ 100 का एक दायित्व पुस्तकों में दर्ज नहीं किया गया था। फर्म की पुस्तकें बन्द कीजिए और आवश्यक खाते बनाइये।

Ans. : वसूली खाते का लाभ – ₹ 2,500

4. तानु और मानु एक साझेदारी फर्म में 3 : 1 अनुपात में लाभों का विभाजन करते हैं। वे फर्म के समापन के लिए सहमत हुए। फर्म की सम्पत्तियों (₹ 2000 नकद को छोड़कर) से ₹ 1,08,500 वसूल हुए। समापन की तिथि पर फर्म के दायित्व व अन्य विवरण निम्न प्रकार थे– लेनदार ₹ 40,000, तानु का पूँजी खाता ₹ 1,00,000 (जमा), मानु का पूँजी खाता ₹ 10,000 (नामे), लाभ–हानि खाता ₹ 8000 नामे, वसूली खर्चे ₹ 1000। यह ज्ञात हुआ कि एक विनियोग जो कि ₹ 2000 के थे। पुस्तकों में नहीं लिखे थे, इसे एक लेनदार द्वारा ₹ 1500 में ले लिया। शेष लेनदारों को ₹ 36,500 का पूर्ण भुगतान किया गया। वसूली खाता, रोकड़ खाता एवं साझेदारों के पूँजी खाते बनाइये।

Ans. : वसूली खाते की हानि – ₹ 9,000

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

5. राम, रहीम और करीम 2 : 2 : 1 के अनुपात में लाभ विभाजित करते हुए साझी थे। उन्होंने 31 मार्च 2012 को समापन निर्णय लिया। उस दिन उनका चिट्ठा निम्न प्रकार था–

Balance Sheet As on 31 March, 2012

Liabilities	Amount ₹	Assets	Amount ₹
Creditors	4000	Cash in Hand	4000
Capital		Debtors 2600	2000
Ram 10,000	16,000	Less – P.F.B.D. 600	
Rahim 4000		Stock	4000
Karim 2000		Fixtures and other Assets	10,000
	20,000		**20,000**

वे साझेदारी के विघटन का निश्चय करते हैं। निम्नलिखित राशियाँ वसूल होती हैं– फिक्सचर्स व अन्य सम्पत्तियाँ ₹ 9000, स्टॉक ₹ 4520, देनदार ₹ 1800, लेनदारों को पूर्ण भुगतान में ₹3800 चुकाए। वसूली व्यय ₹ 120 हुए। फर्म की पुस्तकें बन्द करने के लिए आवश्यक खाते बनाइए।

Ans. : वसूली खाते की हानि – ₹ 600

6. निम्नलिखित चिट्ठा मैसर्स राकेश एवं दीपक की 31 दिसम्बर, 2012 को स्थिति बताता है। वे अपने व्यापार का विघटन करने का निश्चय करते हैं, उनका चिट्ठा निम्न है–

Balance Sheet As on 31 December, 2012

Liabilities	Amount ₹	Assets	Amount ₹
Creditors	1900	Stock	3600
General Reserve	1000	Book Debts	6000
Capital	9500	Furniture	200
Rakesh 5500		Plant & Machinery	900
Deepak 4000		Profit & Loss A/c	1700
	12,400		**12,400**

पुस्तक ऋण 7.5 प्रतिशत की हानि पर वसूल किये गये। स्टॉक ₹ 3000 में बेचा गया। प्लांट व मशीन ₹ 700 में बेचे गये और फर्नीचर ₹ 250 में बेचा। साझेदार लाभ–हानि का विभाजन बराबर अनुपात में करते हैं। विघटन पर आवश्यक खाते खोलिए।

Ans. : वसूली खाते की हानि – ₹ 1200

7. X, Y और Z क्रमशः 4 : 3 : 3 के अनुपात में लाभ–हानि को बाँटते हुए एक फर्म में साझेदार है। 31 दिसम्बर, 2015 को साझेदारी का विघटन करने का निर्णय लेते हैं उनका चिट्ठा निम्न है–

Balance Sheet As on 31 Dec., 2015

Liabilities	Amount ₹	Assets	Amount ₹
Creditors	80,000	Cash	6000
Capital	1,40,000	Debtors 90,000	
X 80,000		Less : P.F B.D. 5000	85,000
Y 60,000		Stock	1,20,000
		Z Overdrawn	9000
	2,20,000		**2,20,000**

Y को सम्पत्तियों की वसूली करने और प्राप्य राशि का वितरण करने के लिए नियुक्त किया गया। यह स्टॉक और देनदारों से प्राप्त राशि का 5 प्रतिशत पारिश्रमिक के रुप में प्राप्त करेगा तथा वसूली के समस्त खर्चे स्वयं वहन करेगा। Y वसूली के परिणाम की इस प्रकार रिपोर्ट करता है कि स्टॉक से ₹ 96,000 वसूल हुए, देनदारों से ₹ 72,000 वसूल हुए। लेनदारों को पूर्ण भुगतान में ₹ 76,000 चुकाये। ₹ 1000 के अदत्त लेनदार जो कि चिट्ठे में शामिल नहीं है, चुकाये गये। Z दिवालिया हो गया, उसकी जायदाद से ₹ 7720 से प्राप्त हुए। गार्नर बनाम मर्रे नियम लागू होता है, वसूली खाता, पूँजी खाते एवं रोकड़ खाता बनाइये।

Ans. : वसूली खाते की हानि – ₹ 42,400

8. A, B और C साझेदार है जो लाभ–हानि 5 : 3 : 2 के अनुपात में बाँटते हैं। 31 मार्च 2008 को व्यवसाय समाप्त कर दिया गया, तब चिट्ठा निम्न हैं– **Balance Sheet As on 31 March, 2008**

Liabilities	Amount ₹	Assets	Amount ₹
Creditors	2,00,000	Cash at Bank	10,000
Capital	1,40,000	Debtors	90,000
A 20,000		Stock	1,20,000
B 80,000		Motor Car	20,000
C 40,000		Machinery	1,00,000
	3,40,000		**3,40,000**

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

मशीन से ₹ 50,000 एवं स्टॉक से ₹ 36000 वसूल हुए। मोटरकार B द्वारा ₹ 24000 में ली गयी। देनदारों से ₹ 40,000 वसूल हुए। किसी भी साझेदार की पूँजी की कमी अन्य साझेदारों द्वारा लाभ विभाजन अनुपात में वहन की जायेगी। A दिवालिया हो गया, उससे कुछ भी राशि प्राप्त नहीं हो सकी। आवश्यक खाते बनाइये।

Ans. : वसूली खाते की हानि – ₹ 1,80,000

9. राम और श्याम के मध्य साझेदारी का 31 मार्च 2010 को विघटन हो गया। राम की पूँजी ₹ 17000 और श्याम की पूँजी ₹ 3000 थी। ₹ 2000 श्याम द्वारा फर्म को देय थे। ₹ 10,000 फर्म द्वारा राम को देय थे और ₹ 20,000 लेनदारों को देय थे। फर्म की पुस्तकों में नकद और फर्नीचर क्रमशः ₹ 300 एवं ₹ 1200 पर दिखाये गये थे। लाभ–हानि क्रमशः 2 : 1 के अनुपात में विभाजित करते थे। उक्त दायित्वों का प्रतिनिधित्व करने वाली सम्पत्तियों से ₹ 40,000 (नकद और फर्नीचर तथा श्याम द्वारा ₹ 2000 देय के अलावा) वसूल हुए। फर्नीचर राम द्वारा ₹ 800 की कीमत पर ले लिया गया। दायित्वों का पुस्तक मूल्य पर निपटारा कर दिया गया। वसूली खर्च ₹ 200 थे। विघटन की तिथि को वसूली के पहले का चिट्ठा और विघटन पर आवश्यक खाते बनाइये।

Ans. : वसूली खाते की हानि – ₹ 7100

10. 31 मार्च 2014 को राम, श्याम एवं मोहन का चिट्ठा निम्न था–

Balance Sheet As on 31 March, 2014

Liabilities	Amount ₹	Assets	Amount ₹
Creditors	40,000	Cash at Bank	12,000
General Reserve	30,000	Debtors	20,000
Capital	80,000	Stock	40,000
Ram 50,000		Plant & Machinery	40,000
Shyam 30,000		B/R	20,000
		Mohan Capital overdrawn	18,000
	1,50,000		**1,50,000**

मोहन दिवालिया हो गया, वह केवल ₹ 4000 का ही भुगतान कर सका। साझेदारी विघटन का निश्चय किया गया। सम्पत्तियों से निम्न प्रकार वसूली हुई – विविध देनदार ₹ 1,50,000, प्राप्य विपत्र ₹ 14,000, स्टॉक ₹ 32,000, प्लांट एवं मशीनरी ₹ 28,000, समापन व्यय ₹5000 हुए। फर्म की पुस्तकें बन्द करने पर खाते बनाइये।

Ans. : वसूली खाते की हानि – ₹ 36000

11. A, B और C एक फर्म में बराबर के साझेदार है। 31 मार्च 2012 को चिट्ठा निम्न था–

Balance Sheet As on 31 March, 2012

Liabilities	Amount ₹	Assets	Amount ₹
Creditors	90,000	Cash	10,000
Capital	1,10,000	Debtors	1,10,000
A 10,000		Stock	60,000
B 60,000		Goodwill	20,000
C 40,000			
	2,00,000		**2,00,000**

उक्त तिथि को फर्म का समापन हो गया। A दिवालिया हो जाता है, फर्म के देनदार से ₹ 80,000 व स्टॉक से ₹ 50,000 वसूल होते है। लेनदारों को पूर्ण भुगतान में ₹ 86,000 चुकाये गये। वसूली व्यय ₹ 4000 थे। A से कुछ भी वसूल नहीं हो सका। वसूली खाते, साझेदारों के पूँजी खाते व रोकड़ खाते बनाइये।

Ans. : वसूली खाते की हानि ₹ 60,000

12. कपिल, भरत, विवेक और भावेश बराबर के साझेदार है, 31 मार्च 2006 को फर्म का समापन हो गया। इस तिथि का चिट्ठा निम्न है–

Balance Sheet As on 31 March, 2006

Liabilities	Amount	Assets	Amount
Creditors	16,000	Debtors	50,000
Bank overdraft	4000	Stock	30,000
Capital	90,000	Kapil Capital overdrawn	20,000
Vivek 60,000		Bharat Capital overdrawn	10,000
Bhavesh 30,000			
	1,10,000		**1,10,000**

देनदारों से पुस्तक मूल्य का 20 प्रतिशत कम वसूल हुआ। स्टॉक केवल ₹ 4000 में ही बेचा जा सका। ₹ 2000 का संदिग्ध दायित्व था, जिसका पुस्तकों में लेखा नहीं हुआ जिसके लिये ₹ 1600 चुकाने पड़े। A दिवालिया हो गया, उससे केवल ₹ 6000 वसूल हुए। वसूली व्यय ₹ 4800 हुए। गार्नर बनाम मर्रे नियम लागू करते हुए आवश्यक खाते बनाइये।

Ans. : वसूली खाते की हानि ₹ 42,400

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

5

कम्पनी लेखेः अंशों एवं ऋणपत्रों का निर्गमन
(Company Accounts : Issue of Shares and Debentures)

अध्ययन उद्देश्य (Learning Objectives)

इस अध्याय के अध्ययन के पश्चात् आप यह समझने योग्य हो जाते हैं :–

- कम्पनी का अर्थ एवं विशेषताएँ
- कम्पनियों के विभिन्न प्रकार
- कम्पनियों का वर्गीकरण
- अंश एवं अंशों के प्रकार
- समता अंश एवं पूर्वाधिकार अंश में अन्तर
- कम्पनी की अंश पूँजी के प्रकार
- कम्पनी की अंश पूँजी का स्थिति विवरण में प्रकटीकरण
- अंशों के सम मूल्य और प्रीमियम पर निर्गमन का लेखांकन व्यवहार
- अंशों का रोकड के बदले एवं प्रतिफल के बदले निर्गमन का लेखांकन व्यवहार
- अंशों का न्यून–अभिदान एवं अधि–अभिदान
- स्वेट समता अंश,अधिकार अंश, कर्मचारी स्टॉक विकल्प योजना, कर्मचारी स्टॉक क्रय योजना, एसक्रो खाता
- ऋणपत्रों का अर्थ,विशेषताएँ एवं प्रकार
- अंश एवं ऋणपत्र में अन्तर
- ऋणपत्रों के निर्गमन का लेखांकन व्यवहार
- ऋणपत्रों का चिट्ठे में प्रकटीकरण
- नकद के अतिरिक्त प्रतिफल के रूप में ऋणपत्रों के निर्गमन का अर्थ एवं लेखांकन व्यवहार
- प्रतिभूति के रूप में, शोधन की शर्तों के आधार पर ऋणपत्रों का निर्गमन
- ऋणपत्रों पर ब्याज का अर्थ एव लेखांकन
- ऋणपत्रों के निर्गमन पर बट्टा या हानि को अपलिखित करना

कम्पनी का अर्थ एवं परिभाषाऐं
(Meaning and Definitions of Company)

कम्पनी या संयुक्त स्कन्ध (Joint stock) वाली कम्पनी एक ऐसा संगठन है जिसका निर्माण सामान्यतः एक व्यवसाय को चलाने के लिए व्यक्तियों के एक समूह द्वारा कानून की एक प्रक्रिया पूर्ण करने पर होता है। कम्पनी एक कृत्रिम व्यक्ति होती है जो अपने सदस्यों से पृथक होती है। कम्पनी की पूँजी अनेक भागों में विभक्त होती है जिसका एक हिस्सा अंश(Share) कहलाता है। कम्पनी की अंश पूँजी के हिस्से/हिस्सों के मालिक को सदस्य या अंशधारी कहते हैं।

कम्पनी अधिनियम 2013 की धारा 2(20) के अनुसार,''कम्पनी से आशय इस अधिनियम के अन्तर्गत या पूर्व के किसी कम्पनी अधिनियम के अन्तर्गत पंजीकृत कम्पनी से है।''

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

प्रो. हैने के अनुसार "कम्पनी विधान द्वारा निर्मित कृत्रिम व्यक्ति है जिसका पृथक अस्तित्व एवं अविच्छिन्न उत्तराधिकार होता है और एक सार्वमुद्रा होती है।"

इस प्रकार सरल शब्दों में कह सकते हैं कि कम्पनी विधान द्वारा निर्मित कृत्रिम व्यक्ति है जिसका अपने सदस्यों से पृथक अस्तित्व एवं अविच्छिन्न उत्तराधिकार होता है जो अपना कार्य सार्वमुद्रा द्वारा करती है।

कम्पनी की विशेषताएँ (Characteristics of Company):–एक कम्पनी की विशेषताएँ निम्नलिखित हैं –

1. यह कम्पनी अधिनियम, 2013 या इसके पूर्व के किसी अधिनियम के अन्तर्गत समामेलित संस्था होती है। **2.** यह विधान द्वारा निर्मित कृत्रिम एवं अदृश्य व्यक्ति है। **3.** कम्पनी का अस्तित्व अपने सदस्यों से पृथक होता है। **4.** एक कम्पनी का उत्तराधिकार सतत् होता है। **5.** अंशों द्वारा सीमित कम्पनी में उसके सदस्यों का दायित्व सीमित होता है। **6.** निजी कम्पनी को छोडकर एक कम्पनी के अंशों का हस्तान्तरण स्वतंत्र रूप से किया जा सकता है। **7.** कम्पनी का संचालन उसके स्वामियों के द्वारा चुने गये संचालकों के माध्यम से किया जाता है। **8.** कम्पनी की अपनी एक सार्वमुद्रा होती है।

कम्पनियों के प्रकार (Kinds of Companies) :– कम्पनियाँ तीन प्रकार की होती है :–

(1) एक व्यक्ति वाली कम्पनी; (2) निजी कम्पनी और (3) सार्वजनिक कम्पनी।

(1) एक व्यक्ति वाली कम्पनी(One Person Company):– कम्पनी अधिनियम, 2013 की धारा 2(62) के अनुसार एक व्यक्ति वाली कम्पनी से आशय उस कम्पनी से है जिसमें एक ही व्यक्ति सदस्य के रूप में हो। इस प्रकार की कम्पनी का समामेलन निजी कम्पनी के रूप में होता है।

एक व्यक्ति वाली कम्पनी एकल स्वामित्व(Sole Proprietary) से भिन्न होती है क्योंकि एक व्यक्ति वाली कम्पनी(OPC)में सदस्यों के सीमित दायित्व के साथ–साथ पृथक वैधानिक अस्तित्व होता है, जबकि एकल स्वामी का दायित्व उसकी निजी एवं व्यावसायिक सम्पत्तियों तक विस्तृत होता है।

(2) निजी कम्पनी (Private Company):– कम्पनी अधनियम,2013 की धारा 2(68) के अनुसार, निजी कम्पनी से आशय ऐसी कम्पनी से है जिसकी न्यूनतम पूँजी ₹1 लाख या अधिक, जो निर्धारित की जाये, होती है, जो अपने अन्तर्नियमों द्वारा: **(अ)** अंशों के हस्तान्तरण अधिकार पर प्रतिबन्ध लगाती है; **(ब)** एक व्यक्ति वाली कम्पनी को छोडकर,सदस्यों की संख्या 200 तक सीमित करती है (वर्तमान व भूतपूर्व कर्मचारी सदस्यों को छोडकर); तथा **(स)** अपनी किसी भी प्रतिभूति के क्रय हेतु जनता को आमंत्रित करने पर रोक लगाती है।

एक निजी कम्पनी में न्यूनतम सदस्य संख्या–2 होती है। निजी कम्पनी को अपने नाम के अन्त में 'Private Limited' लिखना होता है।

(3) सार्वजनिक कम्पनी (Public Company):– कम्पनी अधिनियम, 2013 की धारा 2(71) के अनुसार सार्वजनिक कम्पनी से आशय ऐसी कम्पनी से है जो कि **(अ)** एक निजी कम्पनी नहीं है; **(ब)** जिसकी न्यूनतम पूँजी ₹ 5 लाख होती है; **(स)** कम्पनी के निर्माण हेतु 7 या अधिक सदस्य होने चाहिए; तथा **(द)** जो एक निजी कम्पनी है किन्तु यह कम्पनी एक ऐसी कम्पनी की सहायक कम्पनी है जो कि निजी कम्पनी नहीं है। अर्थात् इस धारा के तहत् एक निजी कम्पनी जो सार्वजनिक कम्पनी की सहायक कम्पनी हो तो वह भी सार्वजनिक कम्पनी मानी(Deemed Public Company) जायेगी। सार्वजनिक कम्पनी में अधिकतम सदस्य संख्या पर कोई प्रतिबन्ध नहीं है। सार्वजनिक कम्पनी को अपने नाम के अंत में 'Limited' लिखना होता है।

कम्पनियों का वर्गीकरण (Classification of Companies) :–

(अ) दायित्व के आधार पर कम्पनियों के प्रकार : कम्पनियॉ तीन प्रकार की हो सकती हैं (1) अंशों द्वारा सीमित कम्पनी (2) गारन्टी द्वारा सीमित कम्पनी। (3) असीमित कम्पनी।

(1) अंशों द्वारा सीमित कम्पनी (Company Limited by Shares) : कम्पनी अधिनियम,2013 की धारा 2(22) के अनुसार,एक कम्पनी के सदस्यों का दायित्व,उसके पार्षद सीमानियम द्वारा, उनके द्वारा धारित अंशों पर अदत्त राशि की सीमा तक ही सीमित रहता है तो वह अंशों द्वारा सीमित कम्पनी कहलाती है। उदाहरणार्थ – यदि राम के पास X Ltd. के ₹ 10 वाले 6000 अंश हैं जिन पर ₹ 7 प्रति अंश पूर्व में ही भुगतान कर चुका है,तो उसका दायित्व शेष राशि (₹ 3 x 6000)= ₹ 18000 तक ही सीमित रहेगा।

(2) गारन्टी द्वारा सीमित कम्पनी (Company Limited by Guarantee) : कम्पनी अधिनियम,2013 की धारा 2(21) के अनुसार ऐसी कम्पनी जिसके सदस्यों का दायित्व उसके सीमानियम में निर्धारित उस राशि तक सीमित रहता है, जो वे कम्पनी के समापन के समय कम्पनी की सम्पत्तियों के लिए अंशदान करने का वचन देते हैं। अर्थात् गारन्टी द्वारा

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

सीमित कम्पनी में सदस्यों का दायित्व पार्षद सीमानियम में वर्णित राशि तक सीमित होता है। सीमानियम में उल्लिखित राशि से अधिक राशि का भुगतान करने के लिए सदस्यों से मांग नहीं की जा सकती है।

(3) असीमित कम्पनी (Unlimited Company) : कम्पनी अधिनियम की धारा 2(92)के अनुसार,एक कम्पनी जिसके सदस्यों के दायित्व की कोई सीमा निर्धारित नहीं होती, असीमित कम्पनी कहलाती है। अर्थात् ऐसी कम्पनी के सदस्यों का दायित्व असीमित होता है।

कम्पनी की अंश पूंजी (Share Capital of a Company)

अंश पूँजी से आशय उस राशि से है जिसे एक कम्पनी अंशों का निर्गमन कर एकत्रित कर सकती हैं या एकत्रित कर चुकी है। एक कम्पनी की पूँजी निर्धारित मूल्य वाली छोटी–छोटी इकाईयों में विभक्त होती है (जैसे– ₹ 1, ₹ 2, ₹ 5, ₹ 10 या ₹ 100) और ऐसी प्रत्येक इकाई अंश कहलाती है। उदाहरण के लिए एक कम्पनी की कुल पूँजी ₹ 100,00,000 है जो ₹ 10 वाले 10,00,000 अंशों में विभक्त हैं तो ऐसी दशा में इस कम्पनी की कुल पूँजी ₹ 10 वाले 10,00,000 अंश होगी तथा अंश का अंकित मूल्य(Nominal Value) ₹ 10 होगा।

अंशों के प्रकार (Kinds of Shares)

धारा–43 के अनुसार,एक कम्पनी की अंश पूँजी दो प्रकार की हो सकती है– (1) पूर्वाधिकार अंश पूँजी (2) समता अंश पूँजी

(1) पूर्वाधिकार अंश (Preference Shares):– पूर्वाधिकार अंश वे अंश होते हैं जिन्हें निम्न दो पूर्वाधिकार होते है:–

(i) लाभांश प्राप्त करने का पूर्वाधिकार, जो कि समता अंशधारियों को लाभांश भुगतान से पूर्व निश्चित राशि या निश्चित दर से परिकलित कर चुकाया जायेगा, जो आयकर को ध्यान में रखकर अथवा आयकर से मुक्त हो सकता हैं, एवं **(ii)** कम्पनी के समापन के समय समता अंशधारियों से पूर्व पूँजी वापस प्राप्त करने का पूर्वाधिकार।

पूर्वाधिकार अंशों के धारकों को पूर्वाधिकार अंशधारी कहा जाता है।

पूर्वाधिकार अंशों के प्रकार (Classes of Preference Shares):–कुछ विशेष अधिकारों के आधार पर पूर्वाधिकार अंश निम्न प्रकार के हो सकते हैं :–

(1) असंचयी पूर्वाधिकार अंश (Non-Cumulative Preference Shares):– असंचयी पूर्वाधिकार अंश वे पूर्वाधिकार अंश होते हैं जिनके धारकों को बकाया लाभांश को भविष्य में प्राप्त करने का अधिकार नहीं होता है, अर्थात् यदि कोई कम्पनी अपने पूर्वाधिकार अंशों पर लाभ न होने या अपर्याप्त लाभ होने के कारण किसी वर्ष का लाभांश देने में असमर्थ रही हो तो इन पूर्वाधिकार अंशों के धारकों को भविष्य में ऐसे लाभांश को प्राप्त करने का अधिकार नहीं होता हैं।

(2) संचयी पूर्वाधिकार अंश (Cumulative Preference Shares): संचयी पूर्वाधिकार अंश वे पूर्वाधिकार अंश होते हैं जिनके धारकों को समता अंशधारियों को लाभांश भुगतान से पूर्व अपने बकाया लाभांश को प्राप्त करने का अधिकार होता है।

(3) अवशिष्टभागी पूर्वाधिकार अंश (Participating Preference Shares):–यदि कम्पनी के अन्तर्नियमों में इस प्रकार की व्यवस्था हो कि समता अंशधारियों को लाभांश भुगतान करने के पश्चात् शेष बचे लाभों में से पूर्वाधिकार अंशों के धारकों को भी हिस्सा प्राप्त करने का अधिकार हो तो उन्हें अवशिष्टभागी पूर्वाधिकार अंश कहते हैं।

(4) अनावशिष्टभागी पूर्वाधिकार अंश (Non-Participating Preference Shares):–ऐसे पूर्वाधिकार अंश, जिनके धारकों को समता अंशधारियों को लाभांश भुगतान करने के पश्चात् शेष बचे लाभों में से हिस्सा प्राप्त करने का अधिकार नहीं होता है, अनावशिष्टभागी पूर्वाधिकार अंश कहते हैं।

(5) परिवर्तनीय पूर्वाधिकार अंश (Convertible Preference Shares): ऐसे पूर्वाधिकार अंश जिनके धारकों को यह अधिकार प्रदान किया जाता है कि वो एक निश्चित तिथि तक अपने अंशों को समता अंशों में परिवर्तन करा सकते हैं, परिवर्तनीय पूर्वाधिकार अंश कहलाते हैं।

(6) अपरिवर्तनीय पूर्वाधिकार अंश (Non-Convertible Preference Shares): अपरिवर्तनीय पूर्वाधिकार अंश ऐसे पूर्वाधिकार अंश होते हैं जिनके धारकों को, अपने अंशों को समता अंशों में परिवर्तन कराने का अधिकार नहीं होता है।

(7) शोधनीय पूर्वाधिकार अंश (Redeemable Preference Shares): पूर्वाधिकार अंश जिनका शोधन (भुगतान), कम्पनी द्वारा एक निश्चित तिथि को या उससे पूर्व किया जा सकता है शोधनीय पूर्वाधिकार अंश कहलाते हैं।

(8) अंशोधनीय पूर्वाधिकार अंश (Irredeemable Preference Shares) : अशोधनीय पूर्वाधिकार अंश जिनका शोधन कम्पनी के समापन के समय ही किया जा सकता है, अशोधनीय पूर्वाधिकार अंश कहलाते हैं। कम्पनी अधिनियम,2013 अशोधनीय पूर्वाधिकार अंश निर्गमन की अनुमति प्रदान नहीं करता है।

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

(2) समता अंश (Equity Share):–कम्पनी अधिनियम,2013 के अनुसार समता/सामान्य अंश वे अंश हैं, जो अधिमान अंश नहीं हैं। समता अंश ही सर्वाधिक निर्गमित किये जाते है, इनके धारक ही कम्पनी के वास्तविक स्वामी होते है जो कम्पनी की अधिकतम 'जोखिम व ईनाम' के हकदार होते है। इनकी पूँजी कम्पनी के समापन की दशा में पूर्वाधिकार अंश पूँजी का भुगतान करने के पश्चात् लौटाई जाती है।

समता अंश और पूर्वाधिकार अंश में अन्तर

(Difference between Equity Shares and Preference Shares)

क्र.सं.	अन्तर का आधार	समता अंश	पूर्वाधिकार अंश
1	लाभांश की दर	लाभांश की दर संचालक मण्डल द्वारा निश्चित की जाती है जिसे सदस्य अनुमोदित करते है।	लाभांश की दर पूर्व निर्धारित एवं निश्चित होती है।
2	लाभांश प्राप्ति का अधिकार	पूर्वाधिकार अंशों पर लाभांश देने के पश्चात् इन्हें लाभांश दिया जाता है।	समता अंशों से पूर्व लाभांश दिया जाता है।
3	बकाया लाभांश	यदि किसी वर्ष लाभांश घोषित नहीं किया है तो आगे के वर्षो में उस वर्ष का लाभांश का भुगतान नहीं किया जाता हैं। अर्थात यहां बकाया लाभांश होती ही नहीं है।	'संचयी पूर्वाधिकार अंशों पर ही बकाया लाभांश का भुगतान किया जाता है।
4	परिवर्तनीयता	समता अंश अपरिवर्तनीय होते हैं।	यदि निर्गमन की शर्तों में वर्णित हो तो पूर्वाधिकार अंशों को समता अंशों में परिवर्तित किया जा सकता है।
5	शोधन	ये कम्पनी के जीवन काल में शोधनीय नहीं हैं।कम्पनी इनकी पुनर्खरीद कर सकती है।	ये कम्पनी के जीवन काल में निश्चित अवधि के पश्चात् शोधनीय होते हैं।
6	मताधिकार	समता अंशधारियों को हर परिस्थिति में मताधिकार होता है।	पूर्वाधिकार अंशधारियों को सामान्यतः मताधिकार नहीं होता है।
7	पूँजी	समापन पर पूँजी की वापसी पूर्वाधिकार अंश पूँजी की वापसी के पश्चात् की जाती है।	समापन पर पूर्वाधिकार अंश पूँजी की वापसी समता अंश पूँजी से पूर्व की जाती है।

कम्पनी की अंश पूँजी के प्रकार

(Kinds of Share Capital of Company)

कम्पनी अधिनियम, 2013 की अनुसूची– III (Schedule-III) के अनुसार एक कम्पनी को प्रत्येक वर्ग की अंश पूँजी को, **(i)** अधिकृत पूँजी; **(ii)** निर्गमित पूँजी; और **(iii)** प्रार्थित पूँजी के रूप में दर्शाना आवश्यक है।

(i) अधिकृत पूँजी (Authorised Share Capital):– कम्पनी अधिनियम,2013 की धारा–2(8)के अनुसार,''अधिकृत पूँजी(Authorised Capital) या पंजीकृत पूँजी(Registered Capital) से आशय ऐसी पूँजी से है जो कम्पनी के पार्षद सीमानियम द्वारा अधिकृत पूँजी की अधिकतम राशि हो। ''कम्पनी के पार्षद सीमानियम में पूँजी की जो अधिकतम राशि व्यक्त की जाती है,उसे अधिकृत पूँजी कहते हैं। इसमें प्रत्येक प्रकार के अंशों यथा पूर्वाधिकार अंश तथा समता अंशों को पृथक–पृथक दर्शाया जाता है।

(ii) निर्गमित पूँजी (Issued Capital):– कम्पनी अधिनियम,2013 की धारा 2(50) के अनुसार,''निर्गमित पूँजी से आशय ऐसी पूँजी से है जिसे कम्पनी द्वारा समय–समय पर अभिदान(Subscription)के लिए निर्गमित किया जाता हो।'' इस प्रकार निर्गमित पूँजी अधिकृत पूँजी का एक भाग है जिसे कम्पनी द्वारा अभिदान के लिए निर्गमित किया गया हो। कम्पनी द्वारा जनता को नगद धन या अन्य किसी प्रतिफल के बदले निर्गमित किये गये अंशों के अंकित मूल्य को निर्गमित पूँजी कहते हैं।

(iii) प्रार्थित पूँजी (Subscribed Capital):– कम्पनी अधिनियम,2013 की धारा 2(86) के अनुसार, ''प्रार्थित पूँजी से आशय पूँजी के उस भाग से है जो समय–समय पर कम्पनी के सदस्यों द्वारा प्रार्थित की गई हो।'' इस प्रकार प्रार्थित या अभिदत्त पूँजी निर्गमित पूँजी का एक भाग है जिसके लिए अभिदान किया जा चुका है।

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

(iv) मांगी गई पूँजी (Called-up Capital) :– कम्पनी अधिनियम,2013 की धारा 2(15) के अनुसार,''मांगी गई पूँजी से आशय पूँजी के उस भाग से है, जिसे भुगतान हेतु मांगा जा चुका हो।'' इस प्रकार प्रार्थित पूँजी का वह भाग जिसे कम्पनी द्वारा अंशधारियों से मांगा जा चुका हो।

(v) प्रदत्त पूँजी (Paid-up Capital):– कम्पनी अधिनियम,2013 की धारा 2(64) के अनुसार,''प्रदत्त अंश पूँजी से आशय जमा की गई उन धनराशियों के योग के समतुल्य से है जो निर्गमित किये गये अंशों पर प्रदत्त रूप में प्राप्त हो गई हो तथा इसमें कम्पनी के अंशों के संदर्भ मे प्रदत्त रूप में जमा की गई राशि भी शामिल है लेकिन इसमें ऐसे अंशों के सम्बन्ध में प्राप्त अन्य राशि जिसे किसी भी नाम से जाना जाता हो,को शामिल नहीं किया जायेगा।''

उदाहरण 1: X लि. की अधिकृत पूँजी ₹ 10,00,000 है जो कि ₹ 10 वाले 50,000 समता अंश एवं 50000, 9% पूर्वाधिकार अंशों में विभाजित है। कम्पनी ने समस्त अंशों के लिए आवेदन आमन्त्रित किये। कम्पनी को समस्त पूर्वाधिकार अंशों एवं 45,000 समता अंशों के लिए आवेदन प्राप्त हुए। कम्पनी द्वारा अंशों के सम्बन्ध में समस्त राशि मांगी जा चुकी है एवं प्राप्त हो गई है। राम के 5000 समता अंशों पर अन्तिम मांग ₹ 2 प्रति अंश के हिसाब से नहीं चुकाई गई हैं। बताइये, अंश पूँजी कम्पनी के चिट्ठे में किस प्रकार प्रदर्शित होगी। साथ ही लेखांकन टिप्पणियाँ भी दीजिए।

X Ltd. has Authorised Capital of ₹ 10,00,000 divided into 50000 Equity Shares and 50000, 9% Preference Shares of ₹ 10 each. The Company invited applications for all these shares. Applications were received for all the Preference Shares and for 45000 Equity Shares by the company. All the amount regarding shares has been called and received to the company. Ram holds 500 Equity Shares, has not paid final call of ₹ 2 per Share. Explain how capital will be shown in the Balance Sheet. Give Note to Accounts also.

हल :

X Ltd.

Extract of Balance Sheet as at.....

Particulars	Note No.	Amount of Current Yr. ₹	Amount of Previous Yr. ₹
1. Equity and Liabilities			
1. Share holder's Fund:			
(a) Share Capital		9,40,000	

लेखांकन टिप्पणियाँ (Note to Accounts) :-

Particulars		Amount ₹
1. Share Capital- Authorised Capital:		
50000 Equity Shares of ₹ 10 each.		5,00,000
50000, 9% Preference Shares of ₹ 10 each.		5,00,000
		10,00,000
Issued Capital:		
50000 Equity Shares of ₹ 10 each		5,00,000
50000, 9% Preference Share of ₹ 10 each.		5,00,000
		10,00,000
Subscribed and Paid up Capital:		
45,000 Equity Shares of ₹ 10 each Fully Called up	4,50,000	
Less: Calls in Arrear (5000x2)	10,000	4,40,000
50000, 9% Preference Shares of ₹ 10 each. Fully Called & Paid up		5,00,000
		9,40,000

बकाया मांग (Calls-in-Arrears)– अंश पूँजी के सम्बन्ध में कम्पनी द्वारा मांगी गई वह राशि जिसका अंशधारी ने भुगतान नहीं किया है, बकाया मांग कहलाती है। इस राशि को लेखांकन टिप्पणी में अंश पूँजी शीर्षक में मांगी गई

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

पूँजी में से घटाकर दर्शाया जाता है। सारणी–F के अनुसार कम्पनी बकाया मांग पर 10% वार्षिक दर से ब्याज वसूल कर सकती है।

अग्रिम मांग (Calls-in-Advance)– एक कम्पनी को यदि उसके अन्तर्नियमों में वर्णित हो तो न मांगी गई मांग राशि के सम्बन्ध में प्राप्त राशि को स्वीकार कर सकती है जो अग्रिम मांग कहलाती है। चिट्ठे में इसे 'चालू दायित्व शीर्षक' के उपशीर्षक 'अन्य चालू दायित्वों' के अन्तर्गत दर्शाया जाता है। सारणी–F के अनुसार कम्पनी अग्रिम मांग की राशि पर 12% वार्षिक की दर से ब्याज दे सकती है।

(vi) संचित पूँजी (Reserve Capital)– संचित पूँजी से आशय न मांगी गई पूँजी के उस भाग से है, जिसे एक विशेष प्रस्ताव पास करके भविष्य में समापन के समय ही मांगने के लिए सुरक्षित कर दिया जाता है।

कम्पनी के चिट्ठे का प्रारूप
(Format of Company's Balance Sheet)

कम्पनी अधिनियम, 2013 की अनुसूची III के भाग I में चिट्ठे का निर्धारित प्रारूप निम्न है:–

Name of the Company
Balance Sheet as at……..

Particulars	Note No.	Figures for the current year(₹)	Figures for the Previous Year(₹)
EQUITY AND LIABILITIES			
1. Share holders' Funds			
a) Share Capital			
b) Reserves and Surplus			
c) Money received against share warrants			
2. Share Application Money Pending Allotment			
3. Non-Current Liabilities			
a) Long term borrowings			
b) Defered Tax Liabilities(Net)			
c) Other Long-Term Liabilities			
d) Long-Term Provisions			
4. Current Liabilities			
a) Short Term Borrowings			
b) Trade Payables			
c) Other Current Liabilities			
d) Short term Provisions			
Total			
ASSETS			
1. Non-Current Assets			
a. Fixed Assets			
i. Tangible Assets			
ii. Intangible Assets			
iii. Capital work-in-progress			
iv. Intangible Assets under Development			
b. Non-Current Investments			
c. Defered Tax Assets(Net)			
d. Long-Term Loans and Advances			
e. Other Non-Current Assets			
2. Current Assets			
a. Current Investments			

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

b. Inventories			
c. Trade Receivables			
d. Cash and Cas Equivalents			
e. Short-term Loans and Advances			
f. Other Current Assets			
Total			

अंशों का निर्गमन (Issue of Shares)

एक कम्पनी अंशों का निर्गमन (1) रोकड़ के अतिरिक्त किसी अन्य प्रतिफल के लिए; या (2) रोकड़ के लिए कर सकती है।

(1) रोकड़ के अतिरिक्त किसी अन्य प्रतिफल के लिए (Issue of Shares for Consideration Other Than Cash): जब किसी कम्पनी द्वारा किसी व्यवसाय अथवा सम्पति या सेवाओं के क्रय के बदले अंशों का निर्गमन किया जाता हैं तो यह रोकड़ के अतिरिक्त अन्य प्रतिफल के बदले अंशों का निर्गमन कहलाता है।

(2) रोकड़ के लिए अंशों का निर्गमन(Issue of Shares for Cash): जब एक कम्पनी को अंशों में निर्गमन की राशि चैक, ड्राफ्ट या अन्य रूप से प्राप्त होती है तो यह रोकड़ के लिए अंशों का निर्गमन कहलाता है। अंशों के निर्गमन पर राशि का भुगतान दो प्रकार से हो सकता है:– **(i) आवेदन पर एकमुश्त:** जब अंशों के निर्गमन पर समस्त राशि आवेदन पत्र के साथ देय हो। **(ii) सम्पूर्ण राशि किस्तों में देय हो–**जब अंशों के निर्गमन की सम्पूर्ण राशि विभिन्न स्तरों पर यथा–आवेदन, आवन्टन तथा एक या अधिक मांगों पर देय हो।

सार्वजनिक कम्पनी अंशों का निर्गमन दो में से एक प्रकार से कर सकती है:–

(अ) सम मूल्य पर निर्गमन (Issue at Par)– जब अंशों को उनके अंकित मूल्य (Face or Nominal value) पर ही निर्गमित किया जाता है तो इसे सम मूल्य पर निर्गमन कहते हैं, जैसे एक कम्पनी द्वारा ₹ 10 वाले किसी अंश का निर्गमन ₹ 10 प्रति अंश पर ही करना।

(ब) प्रीमियम/प्रब्याजि पर निर्गमन(Issue at Premium)– जब अंशों को उनके अंकित मूल्य से अधिक मूल्य पर निर्गमित किया जाता है तो यह अंशों का प्रीमियम पर निर्गमन कहलाता है। जैसे एक कम्पनी द्वारा ₹ 10 वाले अंशों का निर्गमन ₹ 15 प्रति अंश की दर पर करना।

पूर्व में कम्पनियॉ अपने अंशों का निर्गमन बट्टे पर भी कर सकती थी लेकिन कम्पनी अधिनियम, 2013 की धारा 53 के अनुसार "कोई भी कम्पनी अपने अंशों का बट्टे पर निर्गमन नहीं कर सकती। धारा–54 के अनुसार स्वेट समता अंश(Sweat Equity Shares) बट्टे पर निर्गमित किये जा सकते हैं।

अंश निर्गमन की प्रक्रिया (Procedure for Issue of Shares)

एक सार्वजनिक कम्पनी द्वारा अंशों का निर्गमन करने हेतु कम्पनी अधिनियम, 2013 तथा भारतीय प्रतिभूति एवं विनिमय बोर्ड(Securities and Exchange Board of India) द्वारा इस सम्बन्ध में जारी दिशा निर्देशों का पालन करना पड़ता है। अंशों के निर्गमन हेतु निम्न प्रक्रिया अपनायी जाती है:–

(1) प्रविवरण का निर्गमन (Issue of Prospectus)– अंश निर्गमन हेतु एक सार्वजनिक कम्पनी प्रविवरण का निर्गमन करती है। धारा 2(70) के अनुसार प्रविवरण एक लिखित सूचना, परिपत्र या अन्य प्रलेख होता है जो एक समामेलित संस्था की प्रतिभूतियों का क्रय या अभिदान करने हेतु जनता से प्रस्ताव आमन्त्रित करता है अर्थात् प्रविवरण जनता को कम्पनी की प्रतिभूति क्रय करने के लिए दिया जाने वाला आमंत्रण है। प्रविवरण में सामान्यतः कम्पनी का इतिहास, मुख्य उद्देश्य, वर्तमान व्यापार, परियोजना की जानकारी एवं प्रबन्ध आदि का विवरण दिया जाता है।

(2) अंशों के लिए आवेदन (Application for Shares)– प्रविवरण के आधार पर जो व्यक्ति कम्पनी के अंश खरीदना चाहते हैं वे निर्धारित आवेदन पत्र भरकर आवश्यक निर्धारित राशि के साथ कम्पनी के बैंक में जमा कराते हैं। आवेदन पत्र के साथ जो राशि जमा की जाती है उसे आवेदन राशि (Application Money) कहा जाता है। धारा 39(2) के अनुसार आवेदन पर प्रत्येक प्रतिभूति के अंकित मूल्य का कम से कम 5% राशि प्राप्त करना आवश्यक है या वह धनराशि जो सेबी(SEBI) द्वारा इस सम्बन्ध में कानून बनाकर निर्धारित की जाए, तदानुसार अंश आवेदन राशि अंश के निर्गमन मूल्य के 25% से कम नहीं होनी चाहिए।

(3) अंशों का आवन्टन (Allotment of Shares)– अंशों के आवन्टन से आशय अंशों का आवेदकों के मध्य बटंवारा करने से है। यह कार्य संचालक मण्डल द्वारा अधिनियम के विभिन्न प्रावधानों के तहत किया जाता है। एक आवेदक को

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

अंश आवन्टित होने के उपरान्त ही वह अंशधारी बनता है। एक सार्वजनिक कम्पनी द्वारा निम्न प्रावधानों का पालन करने के उपरान्त ही अंशों का आबन्टन किया जा सकता हैः–

(i) न्यूनतम अभिदान(Minimum Subscription)– धारा 39(1) के अनुसार कम्पनी द्वारा अपनी प्रतिभूतियों का आबन्टन तब तक नहीं किया जा सकता है जब तक कि प्रविवरण में वर्णित न्यूनतम राशि के लिए अभिदान प्राप्त न हो जाऐ। सेबी के निर्देशों के अनुसार कम्पनी अंशों का आवन्टन तब तक नहीं कर सकती जब तक कि उसे सम्पूर्ण निर्गमन के कम से कम 90% के बराबर अभिदान प्राप्त नहीं हो जाता है।

(ii) धारा 40(3) के अनुसार कम्पनी द्वारा जनता से प्रतिभूति के अभिदान हेतु आवेदन पर प्राप्त राशि को अनुसूचित बैंक में पृथक से खोले गये खाते में जमा रखना आवश्यक है।

(iii) न्यूनतम अभिदान राशि प्राप्त करने की अवधि– धारा 39(3) के अनुसार, यदि किसी कम्पनी को प्रविवरण निर्गमन की तिथि से 30 दिनों या सेबी (SEBI) द्वारा निर्धरित समय सीमा के अन्दर न्यूनतम राशि प्राप्त नहीं होती है तो कम्पनी को आवेदन पर प्राप्त धनराशि को निर्धारित समय में निर्धारित की गई विधि से लौटाना होगा। न्यूनतम अभिदान राशि की गणना के लिए अंशों की उन रकमों को शामिल नहीं किया जाएगा जो मुद्रा के अतिरिक्त किसी अन्य रूप में देय हो।

(iv) स्टॉक एक्सचेंज को आवेदन– जनता को अंश निर्गमन से पूर्व एक कम्पनी को एक या अधिक मान्यता प्राप्त स्टॉक एक्सचेंज में उन अंशों के लेन–देन की अनुमति हेतु आवेदन करना होगा। इन स्टॉक एक्सचेंज/एक्सचेंजों के नाम प्रविवरण में देना होगा, जहॉ ऐसा आवेदन किया गया हैं।

(v) आबंटन पत्र जारी करना (Dispatch of Allotment Letter)– जिन आवेदकों को अंशों का आवंटन किया गया है सचिव उन आवेदकों को आबंटन पत्र भेजता है। जिन आवेदकों को कोई अंश आवंटित नहीं किये गये हैं तो उन्हें खेद पत्र के साथ उनसे प्राप्त आवेदन राशि उचित माध्यम द्वारा वापस लौटा दी जाती हैं।

(vi) रजिस्ट्रार को आबन्टन रिटर्न भेजना (Filling Allotment Return to Registrar)– आवटंन कार्य पूर्ण हो जाने के बाद कम्पनी को आवन्टन के 30 दिनों के भीतर अथवा रजिस्ट्रार द्वारा बढ़ाई गई अवधि के भीतर कम्पनी रजिस्ट्रार के पास आवंटन रिटर्न भेजना होता है। इस रिटर्न के साथ ही कम्पनी सचिव या एक संचालक द्वारा इस आशय का घोषणा पत्र भी भेजा जाता है कि कम्पनी द्वारा आबन्टन सम्बन्धी समस्त वैधानिक आवश्यकताओं की पूर्ति कर ली गई है।

(vii) अंश प्रमाण पत्र (Share Certificate)– अंश प्रमाणपत्र उसमें निर्दिष्ट अंशों पर किसी सदस्य के अधिकार होने के मूल प्रमाण है। धारा 46(1) के अनुसार,''कम्पनी की सार्वमुद्रा के अधीन जारी किया गया प्रमाण पत्र इस बात का प्रथम दृष्टया साक्ष्य है कि उसमें लिखित अंशों का वह स्वामी है। ये प्रमाण पत्र अंशधारी के स्वामित्व का प्रथम दृष्टया साक्ष्य है। संयुक्त स्वामियों में से प्रथम नामित स्वामी को अंश प्रमाण पत्र की दी गई सुपुर्दगी सभी को सुपुर्दगी मानी जाती है।

(viii) प्रारम्भिक सार्वजनिक निर्गमन (Initial Public Offer or IPO)– अंशों के अभिदान हेतु जनता को आमन्त्रित करने हेतु किये गये प्रस्ताव को प्रारम्भिक सार्वजनिक निर्गमन प्रस्ताव कहा जाता है।

(4) अंशों पर मांग (Calls on Shares)– आवेदन पत्र के साथ एवं अंश आबटंन पर मांगी गई राशियों के पश्चात् यदि अंशों पर देय राशि का कुछ भाग शेष रहता है तो कम्पनी इस राशि को किस्तों में वसूल करती है। ऐसी प्रत्येक किस्त ''अंशों पर याचना/मांग'' कहलाती है। अंशों पर मांग कम्पनी के अन्तर्नियमों में दिये गये प्रावधानों के अनुरूप की जाती है। यदि किसी कम्पनी के अन्तर्नियम न हों या अन्तर्नियमों में इस सम्बन्ध में प्रावधान न हों तो उस पर कम्पनी अधिनियम, 2013 की सारणी–F के प्रावधान लागू होंगे, जो कि निम्न हैः–

(i) दो मांगों के मध्य कम से कम एक माह का अन्तर होना आवश्यक है। **(ii)** किसी भी मांग की राशि अंशों के अंकित मूल्य के 25% से अधिक नहीं होगी। **(iii)** अंशधारकों को राशि चुकाने के लिए कम से कम 14 दिन पूर्व सूचना दी जायेगी। **(vi)** एक ही वर्ग के सभी अंशों पर मांग की राशि एक समान होनी चाहिए। **(v)** यदि कोई अंशधारी अंशों पर देय मांग की राशि का निर्धारित तिथि तक भुगतान नहीं करता है तो कम्पनी बकाया राशि पर भुगतान की देय तिथि से भुगतान की वास्तविक तिथि तक की अवधि पर 10% वार्षिक की दर से ब्याज वसूल कर सकती है।

कभी–कभी कुछ अंशधारी कम्पनी द्वारा न मांगी गई राशि को आबंटन या मांग राशि के साथ भेज देते है जो भविष्य को मांगों से सम्बन्धित होती है। यदि कम्पनी के अन्तर्नियमों मे वर्णित हो तथा संचालक मण्डल उचित समझे तो इस अग्रिम याचना राशि को स्वीकार कर सकता है इस अग्रिम प्राप्त राशि पर अग्रिम अवधि के लिए अधिकतम 12% वार्षिक की दर से ब्याज देय होगा।

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

अंशों के निर्गमन की प्रविष्टियाँ
(Journal Entries for Issue of Shares)

1. रोकड के अतिरिक्त किसी अन्य प्रतिफल के लिए अंशों का निर्गमन की दशा में किसी व्यवसाय, सम्पत्ति या सेवाओं को क्रय के बदले अंशों का निर्गमन किया जाता है तो निम्न प्रविष्टियॉ की जा सकती है –

i. किसी व्यापार अथवा सम्पति के क्रय करने पर –

Individual Assets A/c	Dr.	
To Vendor's A/c		

ii. विक्रेता को प्रतिफल के रूप में अंशों का निर्गमन करने पर

(i) यदि अंश सम मूल्य पर निर्गमित किये जाये–

Vendor's A/c	Dr.	
To Equity Share Capital A/c		

(ii) यदि अंश प्रीमियम पर निर्गमित किये जाये–

Vendor's A/c	Dr.	
To Equity share Capital A/c		
To Securities Premium A/c		

निर्गमित किये जाने वाले अंशों की संख्या की गणना = $\frac{\text{क्रय प्रतिफल / देय मूल्य}}{\text{प्रति अंश निर्गमन मूल्य}}$

iii. प्रवर्तकों को उनकी सेवाओं के प्रतिफलस्वरूप अंशों का निर्गमन–

Incorporation Expenses / Goodwill A/c	Dr.	
To Share Capital A/c		

2. रोकड के लिए अंशों का निर्गमन–

1. जब सम्पूर्ण धनराशि आवेदन पत्र के साथ एक मुश्त देय हो–

i. यदि अंश सम मूल्य पर निर्गमित किये जायें– आवेदन राशि प्राप्त होने पर –

Bank A/c	Dr.	
To Share Application & Allotment A/c		

–अंश आबन्टन करने पर

Share Application & Allotment A/c	Dr.	
To Share Capital A/c		

ii. यदि अंश प्रीमियम पर निर्गमित किये जायें–

– आवेदन राशि प्राप्त होने पर –

Bank A/c	Dr.	
To Share Application & Allotment A/c		

–अंश आबन्टन करने पर

Share Application & Allotment A/c	Dr.	
To Share Capital A/c		
To Securities Premium A/c		

2. जब सम्पूर्ण धनराशि किस्तों में देय हो–

i. आवेदन राशि प्राप्त होने पर

Bank A/c	Dr.(आवेदन पर प्राप्त कुल राशि से)	
To Share Application A/c		

ii. आवेदन की राशि पूँजी में अन्तरण करने पर–(अधि–अभिदान(Over subscription) की दशा में निर्गमित किये जाने वाले अंशों पर देय आवेदन राशि से तथा अन्य की दशा में वास्तविक प्राप्त आवेदन राशि से)

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Share Application A/c Dr.
To Share Capital A/c

iii. आबन्टन की राशि देय होने पर–

1. सम मूल्य पर निर्गमन की दशा में –

Share Allotment A/c Dr.
To Share Capital A/c

2. प्रीमियम पर निर्गमन की दशा में–

Share Allotment A/c Dr.
To Share Capital A/c
To Securities Premium A/c

iv. अधि अभिदान की दशा में आवेदन पर प्राप्त आधिक्य राशि का बंटन पर समायोजन करने पर

Share Application A/c Dr.
To Share Allotment A/c

v. आवेदन पर प्राप्त आधिक्य राशि लौटाने पर– (जिन आवेदकों को बंटन से मना कर दिया गया हो या आवेदन पर राशि अधिक प्राप्त हो गयी हो)

Share Application A/c Dr.
To Bank A/c

vi. आबन्टन राशि प्राप्त होने पर

Bank A/c Dr.
To Share Allotment A/c

vii. प्रथम मांग की राशि देय होने पर

Share First Call A/c Dr. (आवंटित अंश x प्रति अंश मांग)
To Share Capital A/c

viii. प्रथम मांग की राशि प्राप्त होने पर

Bank A/c Dr. (वास्तविक प्राप्त राशि)
To Share First call A/c

ix. द्वितीय/अंतिम मांग की राशि देय होने पर

Second/Final Call A/c Dr. (आवंटित अंशों पर मांगी गई राशि से)
To Share Capital A/c

x. द्वितीय/अंतिम मांग की राशि प्राप्त होने पर

Bank A/c Dr. (वास्तविक प्राप्त राशि से)
To Share Second/Final Call A/c

xi. किसी अंशधारी से उसके द्वारा धारित अंशों पर अग्रिम मांग प्राप्त होने पर:

Bank A/c Dr. (अग्रिम प्राप्त राशि से)
To Calls-in-Advance A/c

नोटः यह राशि आबंटन या जिस मांग के साथ प्राप्त हो तो उस समय बैंक की प्रविष्टि के साथ की जा सकती है। **उपरोक्त अग्रिम मांग समायोजन करने पर** : जब यह मांग वास्तव में की जाती हैं तो उक्त मांग की राशि जब अन्य अंशधारियों से प्राप्त होती हैं तब की जाने वाली बैंक प्रविष्टि में उक्त अग्रिम मांग राशि खाता डेबिट कर दिया जाता हैं। इस प्रकार उक्त खाता बन्द हो जाता है।

xii. अग्रिम प्राप्त मांग पर ब्याजः अग्रिम मांग प्राप्त होने की तिथि से देय तिथि तक की अवधि पर ब्याज के लिए यदि सारिणी F लागू होती है तो अधिकतम 12% वार्षिक दर से ब्याज देय होगा अन्यथा यह दर संचालक मण्डल द्वारा भी निर्धारित की जा सकती हैं, जो 12% वार्षिक से अधिक नहीं हो सकती हैं। यदि ब्याज का भुगतान नगद किया है तो प्रविष्टि होगी:

Interest on Calls-in-Advance A/c Dr.
To Bank A/c

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

उक्त राशि को वर्ष के अन्त में लाभ हानि खाते में डेबिट कर इसे बन्द कर देंगे।

xiii. बकाया मांग: सामान्यतया इसके लिए कोई पृथक से प्रविष्टि नहीं की जाती हैं फिर भी यदि प्रश्न में स्पष्ट निर्देश हो तो निम्नांकित प्रविष्टियां होगी:

(i) बकाया मांग राशि के लिए: Call-in-Arrears A/c Dr.
To Share Allotment or Share Call A/c

नोट: उक्त प्रविष्टि सम्बन्धित मांग की प्रविष्टि के साथ सयुंक्त प्रविष्टि के रूप में भी की जा सकती है।

(ii) बकाया राशि प्राप्त होने पर: Bank A/c Dr.
To Calls-in-Arrears A/c

xiv. बकाया मांग पर ब्याज: भुगतान देय तिथि से वास्तविक भुगतान तिथि तक की अवधि का ब्याज सारणी F के अनुसार 10% वार्षिक दर से या इससे कम दर से, जो बोर्ड निर्धारित करे लिया जाता है। उक्त ब्याज प्राप्त होने पर प्रविष्टि होगी: Bank A/c Dr.
To Interest on Calls-in-Arrears A/c

नोट: उक्त ब्याज राशि वर्ष के अन्त में लाभ हानि खाते में क्रेडिट कर ब्याज खाता बन्द कर दिया जायेगा।

उदाहरण-1: xyz लि0 ने बीकानेर लि0 से मशीनरी ₹ 600000 में खरीदी और भुगतान में xyz लि0 ने ₹ 10 वाले पूर्णदत्त समता अंश निर्गमित किये। xyz लि0 की पुस्तकों में जर्नल प्रविष्टियॉ दीजिये, यदि अंशों का निर्गमन (1) सम मूल्य पर (2) 20% प्रीमियम पर किया जावे।

xyz Ltd. purchased a machine worth ₹ 6,00,000 from Bikaner Ltd. and issued Equity Shares of ₹ 10 each, fully paid in satisfaction of payment. Give the journal entries in the books of xyz Ltd., if shares are issued **(i)** at par, **(ii)** at 20% premium.

हल : **In the Books of XYZ Ltd. Journal Entries**

Date	Particulars	L.F.	Amount Dr. (₹)	Amount Cr. (₹)
Date of Purchase	Machinery A/c Dr.		6,00,000	
	To Bikaner Ltd.			6,00,000
	(Being machinery purchased from Bikaner Ltd.)			
Date of Allotment	(i)यदि अंशों का निर्गमन सम मूल्य पर हो–			
	Bikaner Ltd. Dr.		6,00,000	
	To Equity share capital A/c			6,00,000
	(Being 60000 equity shares of ₹10 each fully paid issued to Bikaner Ltd.)			
	(ii) यदि अंशों का निर्गमन 20% प्रीमियम पर हो–			
	Bikaner Ltd. A/c Dr.		6,00,000	
	To Equity Share Capital A/c			5,00,000
	To Securities Premium A/c			1,00,000
	(Being 50000 equity shares of ₹10 each issued at a premium of 20%)			

Working Note: 20% प्रीमियम पर अंश निर्गमन की दशा में, निर्गमित किये जाने वाले अंशों की संख्या $= \frac{Amount\ Payable}{Issue\ Price\ of\ share} = \frac{600000}{10+(20\%of\ 10)} = \frac{600000}{12} = 50000$ अंश

उदाहरण 2: 1 अप्रैल 2016 को गामा लि0 ने ₹100 वाले 2000 समता अंश सम मूल्य पर जनता में निर्गमित किये। सम्पूर्ण राशि आवेदन पर देय थी। सभी अंशों के लिए आवेदन पत्र प्राप्त हुए। आवेदन की अन्तिम तिथि 30 अप्रैल, 2016 थी। अंशों का आबन्टन 15 मई 2016 को किया गया। गामा लि0 की पुस्तकों में आवश्यक जर्नल प्रविष्टियॉ दीजिये।

Gama Ltd. issued 2,000 equity shares of ₹100 each at par to public on 01 April, 2016. Whole amount was payable at the time of application. Applications were received for all shares. Last date

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

of application was 30 April, 2016. Allotment of the shares was made on 15 May, 2016. Give necessary journal entries in the books of Gama Ltd.

हल: **In the Book of Gama Ltd.**

Journal Entries

Date	Particulars	L.F.	Amount Dr. ₹	Amount Cr. ₹
2016	Bank A/c Dr.		2,00,000	
April 30	To Equity Share Application & Allotment A/c			
	(Being application money received for 2000 shares of ₹ 100 each)			2,00,000
May, 15	Equity Share Application & Allotment A/c Dr.			
	To Equity Share Capital A/c		2,00,000	
	(Being application money transferred to equity share capital a/c)			2,00,000

उदाहरण 3: जयपुर लि0 ने ₹10 वाले 20000 समता अंश सम मूल्य पर निर्गमित किये जो कि आवेदन पत्र पर ₹ 3, बंटन पर ₹ 4 तथा शेष राशि मांग पर देय थी। सभी अंश बिक गये तथा यथा समय भुगतान प्राप्त हो गया। आवश्यक जर्नल प्रविष्टियॉं दीजिये।

Jaipur Ltd. issued 20000 equity shares of ₹10 each at par payable at ₹ 3 on application, ₹4 on allotment and the balance on call, all the shares were taken up and all the payments were duly received. Give necessary journal entries.

हल : **In the Book of Jaipur Ltd. Journal Entries**

Date	Particulars	L.F.	Amount Dr. ₹	Amount Cr. ₹
	Bank A/c Dr.		60,000	
	To Equity Share Application A/c			60,000
	(Being application money received for 20000 equity shares of ₹3 each)			
	Equity Share Application A/c Dr.			
	To Equity Share Capital A/c		60,000	
	(Being application money transferred to equity share capital a/c)			60,000
	Equity Share Allotment A/c Dr.		80,000	
	To Equity Share Capital A/c			80,000
	(Being allotment money due on 20,000 shares of ₹ 4 each)			
	Bank A/c Dr.		80,000	
	To Equity Share Allotment A/c			80,000
	(Being allotment money received)			
	Equity Share First & Final Call A/c Dr.		60,000	
	To Equity Share Capital A/c			60,000
	(Being First and final call money due on 20000 equity shares of ₹ 3 each)			
	Bank A/c Dr.		60,000	
	To Equity Share First & Final Call A/c			60,000
	(Being Equity share first & final call money received)			

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

प्रीमियम पर अंशों का निर्गमन
(Issue of Shares at Premium)

जब अंशों को उनके अंकित मूल्य से अधिक पर निर्गमित किया जाता है यह प्रीमियम पर अंशों का निर्गमन कहलाता है। जैसे ₹ 10 वाले समता अंशों का निर्गमन ₹14 प्रति अंश की दर पर करना। यहाँ (14–10)=₹4 प्रति अंश प्रीमियम कहा जायेगा।

प्रीमियम का लेखा आवेदन, बंटन या मांग किसी भी स्तर पर किया जा सकता है तथापि सूचना के अभाव में प्रीमियम का लेखा बंटन स्तर पर किया जाता है। प्रतिभूति प्रीमियम कम्पनी के लिए पूँजीगत लाभ है। इसे चिटठे के "समता एवं दायित्व भाग" में 'अंशधारियों के कोष' शीर्षक के 'संचय एवं आधिक्य' उप शीर्षक में प्रतिभूति प्रीमियम संचय के रूप में दर्शाया जाता है।

प्रतिभूति प्रीमियम का उपयोग (Utilization of Securities Premium): भारतीय कम्पनी अधिनियम की धारा 52(1) के अनुसार,प्रतिभूतियों के निर्गमन पर प्राप्त प्रीमियम की राशि को प्रतिभूति प्रीमियम खाते में जमा किया जाता है। धारा 52(2) के अनुसार प्रतिभूति प्रीमियम का प्रयोग निम्न कार्यो में किया जा सकता है–

i. सदस्यों को पूर्ण प्रदत्त बोनस अंश निर्गमित करने के लिए, **ii.** कम्पनी के प्रारम्भिक व्ययों(Preliminary Expenses) को अपलिखित करने में, **iii.** अंशों या ऋणपत्रों के निर्गमन व्यय या दिये गये कमीशन या ऋणपत्रों पर दिये गये बटटे को अपलिखित करने में, **iv.** कम्पनी के किसी भी शोधनीय पूर्वाधिकार अंशों या ऋणपत्रों के शोधन पर देय प्रीमियम का प्रबन्ध करने में, **v.** अपने अंशों के क्रय करने (buy-back) में

अंशों का न्यून–अभिदान(Under Subscription of Shares):– जब एक कम्पनी को प्रस्तावित अंशों की तुलना में कम अंशों के लिए आवेदन पत्र प्राप्त होते हैं तो उसे अल्प या न्यून अभिदान कहा जाता है। इस दशा में न्यूनतम अभिदान के प्रावधानों को ध्यान में रखते हुए, सामान्यतः प्रत्येक को आवेदित अंशों के बराबर अंश बंटित कर दिये जाते हैं।

अंशों का अधि–अभिदान(Over Subscription of Shares):– जब एक कम्पनी को प्रस्तावित अंशों की तुलना में अधिक अंश खरीदने के लिए आवेदन पत्र प्राप्त होते हैं तो यह स्थिति अधि–अभिदान कहलाती हैं। कोई भी कम्पनी निर्गमित अंशों से अधिक अंशों का बन्टन नहीं कर सकती हैं। अधि–अभिदान की स्थिति में एक कम्पनी निम्न तीन विकल्पों में से किसी एक विकल्प के आधार पर अंशों का आबन्टन कर सकती है:–

(i) कुछ आवेदकों को पूर्ण अंश आबन्टित करना तथा ऐसे आवेदक जिन्हें कोई भी अंश आबन्टित नहीं किये हैं, उनकी आवेदन पर प्राप्त राशि को लौटा दिया जाता हैं। **(ii)** समस्त आवेदकों को आनुपातिक आधार पर अंशों का बंटन करना। **(iii)** कुछ को पूर्ण तथा कुछ को आनुपातिक आधार पर अंश आबंटित करना।

आनुपातिक आधार पर बंटन(Pro-rata Allotment): आनुपातिक आधार पर बंटन से आशय उस वर्ग के कुल आवेदकों को बंटित किये गये कुल अंशों का उस वर्ग के कुल आवेदनों के अनुपात से है। माना कि R Ltd. ने 10,000 अंश जनता को निर्गमित किये। कुल 15000 अंशों के आवेदन पत्र प्राप्त हुए। यह निर्णय किया गया कि सभी आवेदकों को आनुपातिक बन्टन किया जाये अर्थात 15000 अंशों के आवेदकों को कुल 10000 अंश बंटित किये जायेंगे। आवेदन व आबंटन अनुपात 15000 : 10000 अर्थात 3 : 2 होगा। प्रत्येक 3 अंशों के आवेदक को 2 अंश बन्टित किये जाऐंगे।

आवेदन पर प्राप्त आधिक्य राशिः आनुपातिक आधार पर आबन्टन की दशा में आवेदन पत्र के साथ चुकाई गई आधिक्य राशि का प्रयोग, एक सूचीबद्ध कम्पनी द्वारा स्टॉक एक्सचेंज की अनुमति प्राप्त कर, आबन्टन तथा याचना पर किया जा सकता हैं।

एक गैर सूचीबद्ध कम्पनी आवेदन पर प्राप्त अधिक्य राशि का प्रयोग आबन्टन तथा याचना राशि के समायोजन में कर सकती है। यदि प्रश्न में स्पष्ट उल्लेख न हो तो आवेदन पर प्राप्त अधिक्य राशि में से बंटन पर देय राशि के समायोजन के उपरान्त शेष धनराशि अंशधारियों को वापिस लौटा दी जानी चाहिए।

उदाहरण 4: सार्थक लि0 ने ₹ 10 वाले 10,000 समता अंश जनता को निर्गमित किये। 15,000 अंशों के लिए आवेदन प्राप्त हुए। राशि का भुगतान क्रमशः आवेदन पर 3₹, बंटन पर ₹3, प्रथम मांग पर ₹2 तथा अंतिम मांग पर ₹2 देय था। 14000 अंशों के आवेदकों को यथानुपात बंटन किया गया तथा शेष आवेदकों को राशि लौटा दी गई। आवेदन पर प्राप्त आधिक्य राशि का उपयोग बंटन राशि के समायोजन में किया गया। सभी राशियॉ यथा समय प्राप्त हो गयी। कम्पनी की पुस्तकों में जर्नल प्रविष्टियॉ दीजिए।

Sarthak Ltd. issued 10,000 equity shares of Rs 10 each to public. Application were received for 15000 shares. Amount was payable as follows: On Application ₹3, on Allotment ₹3, on First Call

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

₹2 and on Second and final call ₹2. Applicants of 14000 shares were made pro-rata allotment and amount of remaining applicants were refunded. Excess application money was utilized to adjust allotment. All the amount was received in time. Give Journal entries in the books of company.

हल:–

Analytical Table

Category	Shares Applied	Shares Alloted	Amount Received (₹)	Application money transferred (₹)	Excess Application Money (₹)	Allotment Due@ ₹ 3 (₹)	Net Amt. Received (₹)	First Call ₹2 (₹)	Second & Final Call @ ₹2
Pro-rata	14,000	10,000	42,000	30,000	12,000	30,000	18,000	20,000	20,000
Refund	1000	-	3000	(Returned)	-	-	-	-	-

Journal Entries

Date	Particulars	L.F.	Amount Dr. ₹	Amount Cr. ₹
	Bank A/c Dr. To Equity Share Application A/c (Being application money received on 15000 Shares @ ₹3 each)		45,000	45,000
	Equity Share Application A/c Dr. To Equity Share Capital A/c (Being application money transferred of 10,000 Shares to Capital A/c)		30,000	30,0000
	Equity Share Application A/c Dr. To Bank A/c (Being excess application money of 1000 shares refunded)		3,000	3,000
	Equity Share Allotment A/c Dr. To Equity Share Capital A/c (Being Allotment money due on 10000 shares @ ₹ 3 each)		30,000	30,000
	Bank A/c Dr. Equity Share Application A/c Dr. To Equity Share Allotment A/c (Being amount received for allotment and balance of application money adjusted on Allotment)		18,000 12,000	30,000
	Equity Share First Call A/c Dr. To Equity Share Capital A/c (Being First Call money due @ ₹ 2 each)		20,000	20,000
	Bank A/c Dr. To Equity Share First Call A/c (Being First Call money received)		20,000	20,000
	Equity Share Second & Final Call A/c Dr. To Equity Share Capital A/c (Being Second & Final Call money due @ ₹ 2 each)		20,000	20,000
	Bank A/c Dr. To Equity Share Second & Final Call A/c (Being Second & Final Call money received)		20,000	20,000

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

उदाहरण 5: सनसाइन लि0 की पूँजी ₹ 100 वाले 5000 अंशों में विभाजित थी। कम्पनी ने ₹100 वाले 2000 अंश ₹10 प्रति अंश प्रीमियम पर निर्गमित किये। अंशों पर भुगतान इस प्रकार देय था– आवेदन पर ₹30, आंबटन पर(प्रीमियम सहित) ₹40, प्रथम मांग पर ₹20 तथा शेष राशि आवश्यकता पड़ने पर। राम के पास 30 अंश थे, उसने प्रथम मांग के साथ सम्पूर्ण रकम भी चुका दी। रहीम जिसके पास 20 अंश थे, प्रथम याचना का भुगतान करने में असमर्थ रहा। सनसाइन लि0 की पुस्तकों में जर्नल प्रविष्टियॉ दीजिये तथा इन मदों को चिट्ठे में बताइये। यह मानिये कि सभी अंशों के लिए अभिदान प्राप्त हुआ।

The capital of Sunshine Ltd. was divided into 5,000 shares of ₹100 each. The Company issued 2,000 Shares of ₹100 each at a premium of ₹10 per share, payable as follows: On application ₹30; On Allotment(including premium) ₹40; On First Call ₹20 and balance as and when required. Ram holds 30 shares, has paid all the amount along with first call. Rahim holds 20 shares failed to pay first call. Pass journal entries in the books of the Company and show these items in the Balance Sheet. Assume all shares were subscribed.

हल: **Journal Entries**

Date	Particulars	L. F.	Amount Dr. ₹	Amount Cr. ₹
	Bank A/c Dr.		60,000	
	To Share Application A/c			60,000
	(Being application money received on 2000 shares @ ₹30 each)			
	Share Application A/c Dr.		60,000	
	To Share Capital A/c			60,000
	(Being application money transfer to Share Capital A/c)			
	Share Allotment A/c Dr.		80,000	
	To Share Capital A/c			60,000
	To Securities Premium A/c			20,000
	(Being allotment due @ ₹40 each including ₹10 premium)			
	Bank A/c Dr.		80,000	
	To Share Allotment A/c			80,000
	(Being allotment money received)			
	Share First Call A/c Dr.		40,000	
	To Share Capital A/c			40,000
	(Being Share First Call due @ ₹20 each)			
	Bank A/c Dr.		40,200	
	To Share First Call A/c			39,600
	To Calls-in-Advance A/c			600
	(Being First call amount received from 1980 shares @ ₹20 each and ₹20 each on 30 shares received in advance)			

नोट: First call amount received=(2000-20) x ₹20 = ₹39,600; Calls in advance on 30 shares of Ram @ ₹20 = ₹600

Name of the Company: Sunshine Ltd.

Balance Sheet as at_ _ _ _ _ _ _ _ _ _

Particulars	Note No.	Figures for the current year (₹)	Figures for the Previous year (₹)
I. Equity and Liabilities			
1. Share holders Fund:			
(a) Share Capital	1	1,59,600	
(b) Reserves and Surplus	2	20,000	

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

4. Current Liabilities			
(c) Other Current Liabilities	3	600	
Total		**1,80,200**	
II. Assets			
2. Current Assets			
(d) Cash and Cash Equivalents		1,80,200	
Total		**1,80,200**	

Notes to Accounts:		
1. Share Capital:		
Authorised Capital:		
5000 Equity Shares of ₹100 each.		5,00,000
Issued, Subscribed and Paid up Capital:		
2,000 Equity Shares of ₹100 each and ₹80 per share called up	1,60,00	
Less: Calls-in-arrears (20 x 20)	400	1,59,600
2. Reserves & Surplus:		
Securities Premium		20,000
3. Other Current Liabilities:		
Calls-in-Advance		600

उदाहरण 6: के.एस. लि0 ने 15 अप्रैल, 2016 को ₹100 वाले 1,50,000 समता अंश ₹25 प्रति अंश प्रीमियम पर निर्गमित किए। भुगतान इस प्रकार देय थाः आवेदन पर ₹50, आबन्टन पर ₹50 (प्रीमियम सहित) तथा प्रथम व अंतिम मांग पर ₹25। कम्पनी के पास 1,40,000 अंशों के लिए आवेदन पत्र आये। 1 जून 2016 को संचालकों ने सभी आवेदकों को पूर्ण आबन्टन कर दिया। आबन्टन राशि के भुगतान की अन्तिम तिथि 30 जून 2016 निर्धारित की। प्रथम मांग की तिथि 1 अक्टूबर, 2016 थी, जिसका भुगतान 20 अक्टूबर, 2016 तक किया जा सकता था। निम्न के अतिरिक्त समस्त राशियॉ देय तिथि पर प्राप्त हुईः महेश जो 1000 अंशों का धारक हैं आबन्टन राशि का समय पर भुगतान नहीं कर सका किन्तु इसका भुगतान उसने प्रथम मांग के साथ कर दिया। रमा ने जिसके पास 800 अंश हैं, प्रथम मांग राशि आबन्टन के साथ ही दे दी। आवश्यक जर्नल प्रविष्टियॉ दीजिए। ब्याज का भुगतान एवं वसूली सारणी–F के अनुसार करना है।

K.S. Ltd. issued 1,50,000 equity shares of ₹100 each at a premium of ₹ 25 per share on 15th April 2016, payable as follows: on Application ₹50, on Allotment ₹50(including premium) and on first and final call ₹25. Applications were received for 1,40,000 shares by the company. On 1st June, 2016 the Directors made full allotment to the applicants. The last date for allotment money was 30th June, 2016. First and final call was made on 01st October, 2016 and payable up to 20th October, 2016. All the amounts due were received on due dates except in the following cases: Mahesh holds 1000 shares failed to pay allotment money on due dates but paid this amount with the first & final call. Rama holds 800 shares, has paid first & final call money along with allotment money. Pass necessary Journal entries. Interest was charged and paid according to table-F.

Journal Entries

Date	Particulars	L.F.	Amount Dr. ₹	Amount Cr. ₹
2016 April, 15	Bank A/c Dr. To Equity share application A/c (Being Application money received for 1,40,000 Shares @ ₹50 each)		70,00,000	70,00,000

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

June,1	Equity Share Application A/c Dr.		70,00,000	
	To Equity Share Capital A/c			70,00,000
	(Being Application money transfered to Share Capital)			
June,1	Equity Share Allotment A/c Dr.		70,00,000	
	To Equity Share Capital A/c			35,00,000
	To Securities Premium A/c			35,00,000
	(Being Equity Share allotment money due on 140000 shares @ ₹50 each including ₹25 premium)			
June, 30	Bank A/c Dr.		69,70,000	
	To Equity Share Allotment A/c			69,50,000
	To Calls-in-Advance A/c			20,000
	(Being Allotment money received on 1,39,000 Shares and calls-in-Advance received 800 shares @ ₹25 each)			
Oct., 1	Equity Share First & Final Call A/c Dr.		35,00,000	
	To Equity Share Capital A/c			35,00,000
	(Being First and Final Call due on 140000 Shares @ ₹25 each)			
Oct., 1	Interest on Calls-in-Advance A/c Dr.		600	
	To Bank A/c			600
	(Interest on calls-in-Advance paid for 3 months)			
Oct., 20	Bank A/c Dr.		35,30,000	
	Calls in Advance A/c Dr.		20,000	
	To Equity Share First & Final Call A/c			35,00,000
	To Equity Share Allotment A/c			50,000
	(First & Final Call money and arrear of Allotment money received and calls-in-advance adjusted)			
Oct., 20	Bank A/c Dr.		1534	
	To Interest on calls-in-Arrear A/c			1534
	(Being Interest on calls in arrear received)			

कार्यशील टिप्पणीः— 1. अग्रिम मांग पर ब्याज की गणना (30 जून से 01 अक्टूबर)= $20,000 \times \frac{12}{100} \times \frac{3}{12}$ =₹600

2. बकाया मांग पर ब्याज की गणना(30 जून से 20 अक्टूबर तक)= $50,000 \times \frac{112}{365} \times \frac{10}{100}$ =₹1,534

उदाहरण 7: चिण्टू एण्ड कम्पनी लि0 ने ₹10 वाले 1000 समता अंश निर्गमित करने के लिए आवेदन पत्र आमंत्रित किये। राशियॉ आवेदन पर, बंटन पर, प्रथम मांग, द्वितीय एवं अंतिम मांग पर समान रूप से देय थी। 2000 अंशों के लिए आवेदन पत्र प्राप्त हुए जिसमें से 200 अपूर्ण आवेदन पत्र रद्द कर दिये गये और उनकी राशि लौटा दी गई। मिन्टू को, जिसने 300 अंशों के लिए आवेदन किया था केवल 100 अंश बंटित किये गये। इसने केवल आवेदन राशि ही चुकायी। चिन्टू जिसने 500 अंशों के लिए आवेदन किया था, को भी 100 अंश बंटित किये गये। शेष आवेदनकर्ताओं को यथानुपात आधार पर अंश आबन्टन किये गये। आवेदन राशि को अन्तिम मांग तक काम ले सकते हैं। कम्पनी की मुख्य जर्नल एवं रोकड़ बही में प्रविष्टियॉ कीजिये।

Chintu and Company Ltd. invited applications to issue 1000 Equity shares of ₹10 each. Amount was payable on application, on allotment, on first call and on second & final call in equal. Applications were received for 2000 shares out of which 200 applications were incomplete and rejected and amount of them was refunded. Mintu, who applied for 300 shares has allotted 100 shares only. He paid application money only. Chintu, who applied for 500 shares, was allotted 100 shares also. Remaining applicants were allotted shares on pro-rata basis. Application money can be utilized till final call. Give Journal in Journal Proper and Cash book.(RBSE-2001)

हलः रोकड़ बही एवं मुख्य जर्नल में प्रविष्टियॉ देनी हैं। अतः रोकड़ व्यवहारों की प्रविष्टियॉ रोकड़ पुस्तक में की जाएगी तथा शेष प्रविष्टियॉ मुख्य जर्नल में होगी।

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Journal Entries

Date	Particulars	L.F.	Amount Dr. ₹	Amount Cr. ₹
Date of Allotment	Equity Share Application A/c Dr. To Equity Share Capital A/c (Being Allotment money for 1000 shares transfered)		2500	2500
Date of Allotment	Equity Share Allotment A/c Dr. To Equity Share Capital A/c (Being Allotment Money due on 1000 Shares @ ₹25 Rs)		2500	2500
Date of Transfer	Equity Share Application A/c Dr. To Equity Share Allotment A/c To Calls-in-Advance A/c (Being Application money adjusted and balance transfered to calls-in-advance)		1750	1000 750
Date of Calls	Equity Share First Call A/c Dr. To Equity Share Capital A/c (Being first call money due on 1000 shares @ ₹25 each)		2500	2500
Date of Adjust-ment	Calls-in-Advance A/c Dr. To Equity Share First Call A/c (Being calls-in-Advance adjusted against First call)		500	500
Date of Calls	Equity Share Second Call and Final Call A/c Dr. To Equity Share Capital A/c (Being second call money due)		2500	2500
Date of Adjust-ment	Calls-in-Advance A/c Dr. To Equity Share Second and Final Call A/c (Being calls in Advance adjusted against Second and Final call)		500	500

Dr. **Cash Book** **Cr.**

Date	Particulars	J. F.	Amount (₹)	Date	Particulars	J. F.	Amount (₹)
Date of Application	To Equity Share Application A/c		5,000	Date of Refund	By Equity Share Application A/c		750
Date of Receipt	To Equity Share Allotment A/c		1,500	At the End	By Balance c/d		9,750
Date of F.C. Receipt	To Equity Share First Call A/c		2,000				
Date of Second Call Receipt	To Equity Share Second Call A/c		2,000				
			10,500				**10,500**

Working Note:- (i) यथानुपात बंटन वर्ग की आवेदन पत्र संख्या =2000–200(निरस्त)–500–300=1000; **(ii)** यथानुपात बंटन वर्ग की बंटित अंश संख्या =1000–100–100=800 shares; **(iii)** 500 अंशों के आवेदकों को 100 अंश ही देय है। अतः उनके वापसी योग्य आवेदन राशि (500 x 2.5)-(100 x 10) = ₹1250 – ₹1000=₹250. **(iv)** कुल वापसी योग्य आवेदन राशि =[200(Rejected) x 2.5] + ₹250 = ₹750.

उदाहरण 8: निम्नलिखित विवरण आर0एस0लि0 के समता अंश निर्गमन से सम्बन्धित है। प्रति अंश राशि इस प्रकार देय थी: आवेदन पर ₹3, बंटन पर ₹4 एवं शेष राशि मांग पर। 3,00,000 अंशों के लिए आवेदन प्राप्त हुये। श्रेणीवार आबन्टन निम्न प्रकार किया गया:–

(अ) 5,000 अंशों के आवेदकों को 3,000 अंशों का आबन्टन।

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

(ब) 1,07,000 अंशों के आवेदकों को 50,000 अंशों का आबन्टन।

(स) 1,88,000 अंशों के आवेदकों को 47,000 अंशों का आबन्टन।

आवेदन पर प्राप्त आधिक्य राशि का उपयोग बंटन व मांग पर किया जायेगा,इसके अतिरिक्त आधिक्य राशि बेचने पर उसे लौटा दिया जायेगा। आर0 एस0 लि0 की पुस्तकों में आवश्यक जर्नल प्रविष्टियाँ दीजिये तथा रोकड़ बही बनाइये।

The following particulars are related to issue of equity shares of RS Ltd.. The amount per share was payable as: on application ₹3, on allotment ₹4 and balance on call. Applications were received for 3,00,000 equity shares. Categorywise allotment was made as follows:

(a) Applicants of 5,000 shares were allotted 3,000 shares.

(b) Applicants of 1,07,000 shares were allotted 50,000 shares.

(c) Applicants of 1,88,000 shares were allotted 47,000 shares.

The excess money received on application was applied towards allotment and call money and balance left was returned.

Give necessary Journal entries in the books of RS Ltd. and prepare Cash Book.

हल:

				Adjusted towards			
Category	**Shares Applied**	**Shares Alloted**	**Amount Received @₹3 per share (₹)**	**Share Application @ ₹3 per share (₹)**	**Share Allotment @ ₹4 per share (₹)**	**Share Call @ ₹3 per share (Call-in-Advance)(₹)**	**Refund**
A	5000	3000	15000	9000	6000	-	-
B	107000	50000	321000	150000	171000	-	-
C	188000	47000	564000	141000	188000	141000	94000
Total	300000	100000	900000	300000	365000	141000	94000

Amount Received on Allotment = (1,00,000 x ₹ 4) - 3,65,000 = ₹ 35,000

Amount Received on Call = (1,00,000 x ₹ 3) - 1,41,000 = ₹ 1,59,000

Journal of RS Ltd.

Date	**Particulars**	**L. F.**	**Debit (₹)**	**Credit (₹)**
Date of Allotment	Equity Share Application A/c Dr. To Equity Share Capital A/c (Being application money on 1,00,000 shares @ ₹ 3 each transferred to equity share capital a/c)		3,00,000	3,00,000
Date of Allotment	Equity Share Allotment A/c Dr. To Equity Share Capital A/c (Being allotment money due @ ₹4 per share)		4,00,000	4,00,000
Date of Allotment	Equity Share Applicaion A/c Dr. To Equity Share Allotment A/c To Calls-in-Advance A/c (Being application money transferred to allotment a/c and to calls in advance a/c)		5,06,000	3,65,000 1,41,000
Date of First & Final Call	Equity Share First and Final Call A/c Dr. To Equity Share Capital A/c (Being equity share first and final call due @ ₹3 per share)		3,00,000	3,00,000
Date of First & Final Call	Calls-in-Advance A/c Dr. To Equity Share First and Final Call A/c (Being calls-in-advance adjusted on equity share first and final call)		1,41,000	1,41,000

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Dr. **Cash Book(Bank Column)** **Cr.**

Date	Particulars	J.F.	Amount ₹	Date	Particulars	J.F.	Amount ₹
Date of Receipt	To Equity Share Application A/c		9,00,000	Date of Refund	By Equity Share Application A/c		94,000
Date of Allotment Receipt	To Equity Share Allotment A/c		35,000	At the end	By Balance c/d		10,00,000
Date of call Receipt	To Equity Share first and final call A/c		1,59,000				
			10,94,000				10,94,000

स्वेट समता अंशों का निर्गमन (Issue of Sweat Equity Shares):-

कम्पनी अधिनियम 2013, की धारा 2(88) के अनुसार स्वेट समता अंशों से आशय ऐसे समता अंशों से हैं जो किसी कम्पनी द्वारा अपने संचालकों या कर्मचारियों को बट्टे पर या रोकड़ के अतिरिक्त अन्य प्रतिफल के लिए, तकनीकी जानकारी देने या बौद्विक सम्पदा अधिकारों (Intellectual Property Rights) की प्रकृति के अधिकार उपलब्ध कराने या उपयोगिता वृद्धि करने के लिए जारी किये जाते हैं। कम्पनी अधिनियम, 2013 की धारा 54 में उन शर्तों का उल्लेख है जिनके पूर्ण होने पर एक कम्पनी स्वेट समता अंशों का निर्गमन कर सकती है, जो कि निम्न हैं:– **(अ)** निर्गमन कम्पनी द्वारा विशेष प्रस्ताव पारित कर अधिकृत किया जाता हो। **(ब)** विशेष प्रस्ताव में अंशों की संख्या, वर्तमान बाजार मूल्य, प्रतिफल यदि कोई हो तथा संचालकों या कर्मचारियों के वर्ग जिनको ऐसे अंश निर्गमित किये जाने हैं, का उल्लेख होना चाहिए।**(स)** स्वेट समता अंशों के निर्गमन की तिथि को कम्पनी को व्यवसाय प्रारम्भ करने का अधिकार प्राप्त हुए कम से कम एक वर्ष पूर्ण हो जाना चाहिए। **(द)** यदि कम्पनी के अंश किसी मान्यता प्राप्त स्कंध विपणी पर सूचीबद्ध हो तो स्वेट समता अंशों का निर्गमन सेबी (SEBI) द्वारा इस सम्बंध में बनाये नियमों के अनुसार ही करना चाहिए।

अधिकार अंश (Right Shares):- कभी– कभी एक कम्पनी को अपने व्यवसाय में वृद्धि या अन्य कारण से अधिक वित्तीय संसाधनों की आवश्यकता होती हैं। ऐसी स्थिति में कम्पनी अपनी सम्पूर्ण अनिर्गमित अंश पूँजी या उसके एक भाग को निर्गमित कर सकती है तथा आवश्यक वित्तीय संसाधन जुटा सकती है। कम्पनी अधिनियम, 2013 की धारा 62 के अनुसार अंश पूँजी वाली कम्पनी जब भी अपनी अभिदत्त पूँजी में वृद्धि करने के लिए अतिरिक्त अंश निर्गमित करना प्रस्तावित करती है, तो ऐसे अंश प्रस्तावित किये जायेंगेः **(अ)** ऐसे व्यक्तियो को जो, प्रस्ताव की तिथि को कम्पनी के ईक्विटी अंशों के धारक हैं, प्रदत्त पूँजी के एक निश्चित अनुपात में उन अंशों के लिए एक प्रस्ताव का पत्र निम्नलिखित शर्तों की पूर्ति करते हुए भेजा जाएगा–**(i)** ऐसा प्रस्ताव एक नोटिस के रूप में होगा जिसमें प्रस्तावित अंशों की संख्या तथा प्रस्ताव की तिथि से समय सीमा जो 15 दिन से कम नहीं होगी एवं 30 दिन से अधिक नहीं होगी। यदि प्रस्ताव स्वीकार नहीं किया जाता हैं तो उसे अस्वीकार मान लिया जाएगा। **(ii)** जब तक अन्तर्नियमों में कोई विपरीत व्यवस्था न हो तो सम्बन्धित अंशधारी की, कम्पनी द्वारा उसे प्रस्तावित अंशों को किसी भी अन्य व्यक्ति के पास परित्याग करने का अधिकार होगा, एवं वाक्यांश **(i)** में वर्णित नोटिस में इस अधिकार का विवरण भी होगा। **(iii)** यदि पूर्वोक्त प्रस्ताव में निर्धारित अवधि में विद्यमान अंशधारी उन अंशों को लेने की स्वीकृति नहीं देता है या ऐसे व्यक्ति से जिसे नोटिस दिया गया हो, पूर्व में ही लिखित में इस प्रस्ताव को स्वीकार करने की अनिच्छा प्राप्त हो गई हो, तो कम्पनी का संचालक मण्ड़ल कम्पनी तथा अंशधारियों के हितों को ध्यान रखते हुए उन अंशों का अन्य व्यक्तियों को आबंटन कर सकता है।

इन अंशों के निर्गमन पर लेखा प्रविष्टियाँ उसी प्रकार से की जाती हैं, जिस प्रकार समता अंशों के निर्गमन पर की जाती है।

कर्मचारी स्टॉक विकल्प योजना (Employees Stock Option Plan-ESOP):- कम्पनियों के द्वारा अपने संचालकों, अधिकारियों, एवं कर्मचारियों को अपने समता अंश प्रचलित बाजार मूल्य से कम मूल्य पर खरीदने का अधिकार दिया जाता हैं। ये व्यक्ति अपनी इच्छानुसार इन प्रस्तावित अंशों को खरीद सकते हैं। कम्पनी द्वारा अपने संचालकों, अधिकारियों व कर्मचारियों को अंश देने का उद्देश्य उनकी कार्यक्षमता तथा अपनत्व की भावना को बढाना होता हैं।

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

इस योजना के अन्तर्गत आबन्टित अंशों को सम्बन्धित व्यक्ति आबन्टन की तिथि से एक वर्ष के अन्दर खुले बाजार में नहीं बेच सकता है।

कम्पनी अधिनियम, 2013 की धारा 2 (37) के अनुसार 'कर्मचारी स्टॉक विकल्प' से आशय कम्पनी के संचालकों, अधिकारियों या कर्मचारियों को कम्पनी के अंश भावी तिथि को पूर्व निर्धारित मूल्य पर खरीदने के दिये गये अधिकार या लाभ, के विकल्प से है।

एस्क्रो या निलंब खाता(Escrow Account): 'एस्क्रो' शब्द से आशय एक अनुबन्ध के तहत किसी विनिर्दिष्ट शर्त के पूरा हो जाने तक गारन्टी के रूप में तृतीय पक्षकार के पास जमा की गई नकदी या प्रतिभूतियॉ। सेबी के दिशा निर्देशों के अनुसार जो कम्पनी 'अपने अंशों का क्रय' योजना के तहत अंश वापिस खरीद रही है उसे किसी बैंक में 'एस्क्रो' खाता खोलना होता हैं। इसमें निम्न शामिल है :– **(i)** किसी व्यावसायिक बैंक के पास जमा राशि **(ii)** किसी व्यापारिक बैंक के पक्ष में बैंक गारन्टी **(iii)** उचित मार्जिन के साथ स्वीकार्य प्रतिभूतियों का निक्षेप अर्थात जमा **(iv)** या उक्त (i) से (iii) का मिश्रण। यदि क्रय वापसी के रूप में चुकायी जाने वाली राशि ₹100 करोड़ से अधिक नहीं हो तो एस्क्रो खाते में ऐसी राशि का 25% जमा कराना होगा और यदि चुकायी जाने वाली राशि ₹100 करोड़ से अधिक हो तो आधिक्य का 10% भी जमा कराना होगा।

एस्क्रो खाते में जमा की गई राशि या प्रतिभूतियों को क्रय वापसी पूरी हो जाने पर सेबी की आज्ञा से वापिस कर दिया जाता है और अनुपालना न होने पर जब्त कर लिया जाता है।

ऋणपत्रों का निर्गमन
(Issue of Debentures)

सामान्य अर्थ में ऋण पत्र से आशय एक कम्पनी द्वारा लिये गये ऋण के बदले दी गई अभिस्वीकृति से है। इस प्रकार ऋण पत्र कम्पनी की सार्वमुद्रा के अन्तर्गत निर्गमित किया एक प्रलेख है जिसमें निर्धारित समय पर मूलधन के भुगतान और एक निश्चित तिथि पर (सामान्यतः छमाही) पूर्व निश्चित दर से ब्याज के भुगतान की शर्तों का उल्लेख रहता है।

टोफॉम के अनुसार,"ऋण–पत्र एक प्रलेख है जो कम्पनी के द्वारा प्रायः धारक से प्राप्त ऋण के प्रमाण के रूप में दिया जाता है और सामान्यतः एक प्रभार द्वारा सुरक्षित होता है।"

कम्पनी अधिनियम, 2013 की धारा 2(30) के अनुसार,"ऋणपत्रों में ऋणपत्र स्कन्ध (स्टॉक), बॉन्ड्स तथा ऋण के प्रमाण के रूप में कम्पनी की अन्य प्रतिभूतियों को सम्मिलित किया जाता है चाहे वे कम्पनी की सम्पत्तियों पर प्रभार उत्पन्न करती हो या नहीं।"

ऋणपत्रों की विशेषताएं (Features of Debentures): 1. ऋणपत्र एक प्रमाण–पत्र या प्रलेख है जो कम्पनी द्वारा लिये गये ऋण की पावती है। 2. ऋणपत्र में मूलधन की अदायगी अवधि एवं शोधन तिथि पूर्व निर्धारित होती है। 3. ऋणपत्र में ब्याज की दर निश्चित होती है एवं निश्चित समय अन्तराल से ब्याज दिया जाता हैं। 4. ऋणपत्र धारकों को मत देने का अधिकार नहीं होता है। 5. यह कम्पनी के दीर्घकालीन ऋण होते हैं। 6. ऋणपत्र कम्पनी की सम्पत्तियों पर प्रभार से सुरक्षित हो सकते हैं।

ऋणपत्रों के प्रकार (Types of Debentures): एक कम्पनी विभिन्न प्रकार के ऋणपत्रों का निर्गमन कर सकती हैं,उनकी विशेषताओं के आधार पर वर्गीकरण निम्न हैं:–

1. सुरक्षा के आधार पर (On the Basis of Security): (अ) सुरक्षित ऋणपत्र (Secured Debentures)– वे ऋणपत्र जो कम्पनी की सम्पत्तियों पर स्थाई या चल प्रभार से सुरक्षित होते हैं, सुरक्षित ऋणपत्र कहलाते हैं। कम्पनी द्वारा इन ऋणपत्रों का भुगतान न कर पाने की दशा में वे इन सम्पत्तियों को बेचकर अपने ऋण का भुगतान प्राप्त कर सकते हैं। (ब) असुरक्षित ऋणपत्र (Unsecured Debentures)– वे ऋणपत्र जो कम्पनी की सम्पत्तियों पर प्रभार द्वारा सुरक्षित नहीं होते हैं,असुरक्षित या नग्न ऋणपत्र कहलाते हैं।

2. शोधन के आधार पर (On the Basis of Redemption): (अ) शोधनीय ऋणपत्र (Redeemable Debentures)– वे ऋणपत्र जिनका भुगतान कम्पनी द्वारा एक निश्चित अवधि के पश्चात् कर दिया जाता है, शोधनीय ऋणपत्र कहलाते हैं। (ब) अशोधनीय ऋणपत्र (Irredeemable Debentures)– वे ऋणपत्र जिनका भुगतान कम्पनी के जीवनकाल में नहीं होता है वरन कम्पनी के समापन पर ही किया जाता है, अशोधनीय ऋणपत्र कहलाते हैं।

3. पंजीयन के आधार पर (On the Basis of Registration): (अ) पंजीकृत ऋणपत्र (Registered Debentures)– वे ऋणपत्र जिनके धारकों का नाम कम्पनी की पुस्तकों में दर्ज रहता है। कम्पनी द्वारा ब्याज एवं मूलधन का भुगतान इस रजिस्टर्ड धारक को ही किया जाता है। इन ऋणपत्रों का हस्तान्तरण, हस्तान्तरण प्रलेख के माध्यम से होता हैं। (ब) वाहक ऋणपत्र (Bearer Debentures)– वे ऋणपत्र जिनके धारकों का नाम कम्पनी की पुस्तकों में दर्ज नहीं

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

होता है। इन ऋणपत्रों का हस्तान्तरण सुपुर्दगी द्वारा ही किया जा सकता है। ब्याज की तिथि को जो धारक ऋणपत्रों के साथ संलग्न ब्याज का कूपन प्रस्तुत करता है उसे ब्याज का भुगतान कर दिया जाता हैं।

4. पुनर्भुगतान प्राथमिकता के आधार पर (On the Basis of Repayment Priority): **(अ)** प्रथम ऋणपत्र(First Debentures)– वे ऋणपत्र जिनका पुनर्भुगतान अन्य ऋणपत्रों से पहले किया जाता है, प्रथम ऋणपत्र कहलाते हैं। **(ब)** द्वितीय ऋणपत्र (Second Debenture)– वे ऋणपत्र जिनका शोधन अर्थात् पुनर्भुगतान प्रथम ऋणपत्रों के बाद किया जाता है, द्वितीय ऋणपत्र कहलाते हैं।

5. ब्याज की दर के आधार पर (On the Basis of Interest Rate): **(अ)** निश्चित ब्याज दर वाले ऋणपत्र (Specific Coupon Rate Debentures)– वे ऋणपत्र जिनका निर्गमन करते समय ही ब्याज दर निश्चित कर दी जाती हैं इस ब्याज दर को कूपन दर भी कहते हैं। जैसे– 14% Debenture या 12% Debenture में 14% या 12% ब्याज की दर है। **(ब)** शून्य ब्याज दर वाले ऋणपत्र (Zero Coupon Rate Debentures)– ऐसे ऋणपत्रों को बिना किसी ब्याज की दर के साथ निर्गमित किया जाता है। विनियोक्ताओं की क्षति की पूर्ति हेतु इन ऋणपत्रों को बट्टे पर निर्गमित किया जाता है। ऋणपत्र के अंकित मूल्य व निर्गमन मूल्य का अंतर ऋणपत्रों की अवधि का कुल ब्याज माना जाता है।

6. परिवर्तनशीलता के आधार पर (On The Basis of Conversion): **(अ)** परिवर्तनीय ऋणपत्र(Convertible Debentures)– वे ऋणपत्र जिन्हें एक निश्चित समय के पश्चात् अंशों या अन्य प्रतिभूति में परिवर्तन कराया जा सकता हैं,परिवर्तनीय ऋणपत्र कहलाते हैं। यदि ऋणपत्रों की राशि के एक भाग का ही समता अंशों में परिवर्तन कराया जा सके,तो वह आंशिक परिवर्तनशील ऋणपत्र (PCD or Partly Convertible Debentures) कहलाते हैं और यदि सम्पूर्ण ऋणपत्र राशि का परिवर्तन समता अंशों में कराया जा सके तो वह पूर्ण परिवर्तनशील ऋणपत्र (FCD or Fully Convertible Debentures) कहलाते हैं। **(ब)** अपरिवर्तनीय ऋणपत्र (Non-Convertible Debentures)– वे ऋणपत्र जिनका परिवर्तन अंश या अन्य प्रतिभूति में नहीं किया जा सकता हो, अपरिवर्तनीय ऋणपत्र कहलाते हैं।

अंश और ऋणपत्र में अन्तर (Difference Between Share and Debenture)

अंशा व ऋणपत्र में निम्न अन्तर हैं:–

क्र. सं.	अन्तर का आधार	अंश	ऋणपत्र
1.	स्वामित्व	अंशों के धारक कम्पनी के स्वामी होते हैं।	ऋणपत्रों के धारक ऋणदाता कहलाते हैं।
2.	हिस्सा	अंश कम्पनी की पूँजी का हिस्सा है।	ऋणपत्र ऋण की स्वीकृति है।
3.	अवधि	अंश निर्गमन द्वारा दीर्घकालीन स्थायी पूँजी प्राप्त की जाती है।	ऋणपत्रों के द्वारा दीर्घकालीन एवं मध्यकालीन अस्थायी पूँजी प्राप्त की जाती है।
4.	लाभांश या ब्याज	लाभ की स्थिति में ही अंशों पर लाभांश दिया जाता है।	कम्पनी को लाभ हो या न हो, ऋणपत्रों पर ब्याज हमेशा दिया जाता है।
5.	पुनर्भुगतान	कम्पनी के जीवनकाल में सामान्यतः अंशों का भुगतान नहीं किया जाता है।	एक निश्चित अवधि के पश्चात् ऋणपत्रों का शोधन/पुनर्भुगतान कर दिया जाता है।
6.	बट्टे पर निर्गमन	अंशों का बट्टे पर निर्गमन नहीं किया जा सकता है।	ऋणपत्रों के बट्टे पर निर्गमन पर कोई प्रतिबन्ध नहीं हैं।
7.	सुरक्षा	अंश सुरक्षित नहीं होते हैं।	ऋणपत्र कम्पनी की सम्पत्तियों पर प्रभार द्वारा सुरक्षित हो भी सकते हैं और नहीं भी।
8.	परिवर्तन	अंश सामान्यतः अन्य प्रकार की प्रतिभूति में परिवर्तित नहीं किये जाते हैं।	ऋणपत्र अंशों में परिवर्तित किये जा सकते हैं।
9.	मताधिकार	अंशधारी को साधारण सभा में उपस्थित होने एवं मतदान का अधिकार होता है।	मताधिकार नहीं होता है।
10.	जोखिम	अंशों में विनियोग पर जोखिम अधिक होती है।	ऋणपत्रों में अंशों की अपेक्षा जोखिम कम होती है।

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

ऋणपत्रों के निर्गमन पर लेखांकन (Accounting for Issue of Debentures)

एक कम्पनी ऋणपत्रों का निर्गमन करके अपनी दीर्घकालीन ऋण पूंजी में वृद्धि कर सकती है। ऋणपत्रों का निर्गमन भी ठीक उसी तरीके से किया जाता हैं जिस प्रकार अंशों का। कम्पनी द्वारा प्रविवरण के माध्यम से ही जनता को ऋणपत्रों में अभिदान हेतु आमंत्रण दिया जाता है। इच्छुक ऋणदाता निर्धारित प्रारूप में आवेदन राशि के साथ आवेदन करता है। कम्पनी द्वारा ऋणपत्रों की राशि एक मुश्त अथवा किश्तों यथा आवेदन, आबंटन, प्रथम मांग, द्वितीय मांग आदि में ली जा सकती है।

ऋणपत्रों का निर्गमन सम–मूल्य पर, प्रीमियम पर अथवा बट्टे पर किया जा सकता है। कम्पनी अधिनियम, 2013 की धारा 52 व 53 ऋणपत्रों के निर्गमन पर लागू नहीं होती है अर्थात् एक कम्पनी अपने ऋणपत्रों का बट्टे पर निर्गमन कर सकती है। कम्पनी अधिनियम,2013 में ऋणपत्रों के निर्गमन पर बट्टे की अधिकतम दर नहीं दी गई हैं। अतः कम्पनी उसके द्वारा निर्धारित बट्टे पर ऋणपत्रों का निर्गमन कर सकती है। ऋणपत्रों के निर्गमन पर बट्टा "Discount on Issue of Debentures" A/c को डेबिट किया जाता है। बट्टे की राशि को ऋणपत्रों के जीवनकाल में पूँजीगत लाभ से या लाभ–हानि विवरण से अपलिखित कर दिया जाना चाहिये।

ऋणपत्रों के निर्गमन पर लेखांकन प्रविष्टियाँ (Accounting Entries on the Issue of Debentures)

(अ) ऋणपत्रों की राशि आवेदन पर एक मुश्त प्राप्त होने पर–

(i) ऋणपत्रों का निर्गमन सम–मूल्य पर किया जाए :

Bank A/c	Dr.	(Nominal Value of Debentures)
To Debenture Application & Allotment A/c		
(Being application money received for Debentures)		
Debentures Application &Allotment A/c	Dr.	(Nominal Value)
To Debentures A/c		
(Being transfer of application money to Debentures A/c)		

(ii) ऋणपत्रों का निर्गमन प्रीमियम पर किया जाए

Bank A/c	Dr.	(Amount Received)
To Debenture Application & Allotment A/c		
(Being application money received for Debentures)		
Debentures Application &Allotment A/c	Dr.	(Amount Received)
To Debentures A/c		(Nominal Value)
To Securities Premium A/c		(Amount of Premium)
(Being application money transferred to Debentures A/c and Securities Premium A/c)		

(iii) ऋणपत्रों का निर्गमन बट्टे पर किया जाए–(जब ऋणपत्रों को उनके अंकित मूल्य से कम मूल्य पर निर्गमित किया जाए)

Bank A/c	Dr.	(Amount Received)
To Debenture Application and Allotment A/c		
(Being application money received)		
Debenture Application & Allotment A/c		Dr. (Amount Received)
Discount on Issue of Debenture A/c		Dr. (Amount of Discount)
To Debenture A/c (Nominal Value)		
(Being application money transferred to Debenture A/c)		

(ब) ऋणपत्रों की राशि किश्तों में प्राप्त होने पर लेखा अंशों के निर्गमन के अनुरूप ही किया जाता है जो इस प्रकार है:

(i) आवेदन राशि प्राप्त होने पर

Bank A/c	Dr. (Amount Received)
To Debentures Application A/c	
(Being Debenture application money received)	

(ii) आवेदन राशि ऋणपत्र खाते में अंतरण पर

Debenture Application A/c	Dr. (Amount Transferred)

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

To Debentures A/c
(Being Debenture application money transferred)

(iii) आबंटन राशि देय (Due) होने पर

(a) सम मूल्य पर निर्गमन की दशा में

Debenture Allotment A/c Dr. (Amount of Call)
To Debentures A/c

(b) प्रीमियम पर निर्गमन की दशा में

Debenture Allotment A/c Dr. (Amount of Call)
To Debentures A/c
To Securities Premium A/c (Amount of Premium)

(c) बट्टे पर निर्गमन की दशा में

Debentures Allotment A/c Dr. (Net Amount of Call)
Discount on Issue of Debenture A/c Dr. (Amount of Discount)
To Debentures A/c

(iv) आबंटन राशि प्राप्त होने पर

Bank A/c Dr.
To Debentures Allotment A/c
(Being debenture allotment money received)

(v) मांग राशि देय होने पर

Debenture Call A/c Dr. (Amount of Call)
To Debentures A/c
(Being Debentures call money due on --- Debentures @-----₹each)

(vi) मांग राशि प्राप्त होने पर

Bank A/c Dr.
To Debentures Call A/c
(Being Debentures call money received)

उदाहरण 9 : अरविन्द लि० ने ₹100 वाले 5000 8% ऋणपत्र जनता में निर्गमित किये। समस्त ऋणपत्रों को क्रय करने के लिए प्रार्थना पत्र आये। कम्पनी की पुस्तकों में जर्नल प्रविष्टियाँ दीजिये। ऋणपत्रों की समस्त राशि आवेदन पर देय थी। यदि ऋणपत्रों का निर्गमन **(i)** सममूल्य पर **(ii)** 10% प्रीमियम पर **(iii)** 5% बट्टे पर किया जाए।

Arvind Ltd. issued 5000 8% Debentures of ₹100 each to the public. Applications were received for all these Shares. All the amount of Debentures was payable on application. Give Journal entries in the books of Company. If Debentures are issued: **(i)** At Par **(ii)** At 10% Premium **(iii)** At 5% Discount.]

हल: **Journal of Arvind Ltd.**

(i) यदि ऋणपत्रों का निर्गमन सममूल्य पर किया जाए:

Date	Particulars	L.F.	Amount Dr. ₹	Amount Cr. ₹
	Bank A/c Dr. To Debentures Application A/c (Being application money received for 5000 Debentures @ ₹100 each)		5,00,000	5,00,000
	Debentures Application A/c Dr. To 8% Debentures A/c (Being Debentures application money transferred to Debentures A/c)		5,00,000	5,00,000

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

(ii) यदि ऋणपत्रों का निर्गमन 10% प्रीमियम पर किया जाए

Date	Particulars	L.F.	Amount Dr. ₹	Amount Cr. ₹
	Bank A/c Dr. To Debentures Application A/c (Being Application money received for 5000 Debentures @ ₹110 each,including premium)		5,50,000	5,50,000
	Debentures Application A/c Dr. To8% Debentures A/c To Securities Premium A/c (Being Application money transferred)		5,50,000	5,00,000 50,000

(iii) यदि ऋणपत्रों का निर्गमन 5% बट्टे पर किया जाए:

Date	Particulars	L.F.	Amount Dr. ₹	Amount Cr. ₹
	Bank A/c Dr. To Debentures Application A/c (Being Application money received for 5000 Debentures @ ₹95each,net of Discount)		4,75,000	4,75,000
	Debentures Application A/c Dr. Discount on issue of Debentures A/c Dr. To 8% Debentures A/c (Being Debentures application money transferred)		4,75,000 25,000	5,00,000

अधि अभिदान (Over Subscription) होने पर: यदि निर्गमित किये जाने वाले ऋणपत्रों की अपेक्षा अधिक ऋणपत्रों के क्रय हेतु आवेदन प्राप्त होते हैं तो यह स्थिति अधि अभिदान की कहलाती है। एक कम्पनी प्रस्तावित ऋणपत्रों से अधिक ऋणपत्रों का आबंटन नहीं कर सकती है। ऐसी दशा में अधि अभिदान पर प्राप्त अतिरिक्त राशि का निपटारा निम्न में से किसी एक तरीके से किया जा सकता है: (1) अतिरिक्त आवेदनों को निरस्त (Reject) कर उनकी राशि लौटा दी जाए। (2) निर्गमित किये जाने वाले समस्त ऋणपत्रों को आये हुए कुल आवेदनों के प्रार्थियों के मध्य आनुपातिक आधार (Pro-rata) पर आबंटित कर दिया जाए तथा आवेदन पर प्राप्त अतिरिक्त राशि का समायोजन बंटन पर करना। (3) उपरोक्त दोनों विकल्प (1) व (2) के संयोजन (Combination) के आधार पर करना।

ऋणपत्रों का चिट्ठे में प्रकटीकरण (Disclosure of Debentures in Balance Sheet): ऋणपत्र एवं उनसे सम्बंधित निर्गमन पर बट्टे की राशि को चिट्ठे में निम्न तरीके से दर्शाया जायेगा:–

ऋणपत्र (Debentures)– ऋणपत्रों की राशि को चिट्ठे के Equity and Liabilities भाग में Long Term Liabilities शीर्षक के उपशीर्षक Long-Term Borrowings के अन्तर्गत दर्शाया जाता है। यदि बकाया ऋणपत्रों का भुगतान चिट्ठे की तिथि से आगामी 12 माह में होना हो तो ऐसे ऋणपत्रों को Current Liabilities शीर्षक के उप शीर्षक Other Current Liabilities के अन्तर्गत दर्शाया जाता है ।

ऋणपत्रों के निर्गमन पर बट्टा (Discount on Issue of Debentures)– ऋणपत्रों के निर्गमन पर बट्टे की वह राशि जो चिट्ठे की तिथि तक अपलिखित नहीं हुई हो,उसे चिट्ठे के Assets भाग में Non-Current Assets शीर्षक के उपशीर्षक other Non-Current Assets के अन्तर्गत दर्शाया जाता है । यदि बट्टे की राशि का कोई भाग चिट्ठे की तिथि से 12 माह के अन्दर अपलिखित होना हो तो बट्टे की राशि के उस भाग को Current Assets शीर्षक के उप शीर्षक Other Current Assets के अन्तर्गत दर्शाया जाता है ।

उदाहरण 10 : गगन लि० ने ₹100 वाले 5000 8% ऋणपत्रों को 20% प्रीमियम पर निर्गमित किया। राशि इस प्रकार देय थी: आवेदन पर 25%, आबंटन पर 50% (प्रीमियम सहित) तथा शेष प्रथम एवं अंतिम मांग पर । 6500 ऋणपत्रों के लिए आवेदन प्राप्त हुए जिनमें से 500 ऋणपत्रों के आवेदनों को रद्द कर दिया गया तथा शेष आवेदकों को यथानुपात बंटन किया गया। कम्पनी की पुस्तकों में जर्नल प्रविष्टियाँ दीजिये तथा मदों को चिट्ठे में भी प्रदर्शित कीजिये ।

Gagan Ltd. issued 5000 8% Debentures of ₹100 each at 20% premium. Amount was payable as follows: 25% on Application, 50% (including premium) on Allotment, and balance on first and

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

final call. Applications were received for 6500 Debentures, out of which 500 application for debentures have been cancelled and remaining applicants were allotted on pro-rata basis. Give journal entries in the books of the Company and show the items in the Balance Sheet.

हल: **Journal of Gagan Ltd.**

Date	Particulars	L.F.	Amount Dr. (₹)	Amount Cr. (₹)
	Bank A/c Dr.		1,95,000	
	To Debentures Application A/c			1,95,000
	(Being Application money for 6500 Debentures received @ 30 each)			
	Debentures Application A/c Dr.		1,65,000	
	To 8% Debentures A/c			1,50,000
	To Bank A/c			15,000
	(Being Debentures application money transferred and application money of 500 debentures refunded)			
	Debentures Allotment A/c Dr.		3,00,000	
	To 8% Debentures A/c			2,00,000
	To Securities Premium A/c			1,00,000
	(Being allotment money due @ ₹60each)			
	Debentures Application A/c Dr.		30,000	
	Bank A/c Dr.		2,70,000	
	To Debentures Allotment A/c			3,00,000
	(Being excess application money adjusted and balance of allotment money received in cash)			
	Debentures First and Final Call A/c Dr.		1,50,000	
	To 8% Debentures A/c			1,50,000
	(Being first and final call money due)			
	Bank A/c Dr.		1,50,000	
	To Debentures First and Final Call A/c			1,50,000
	(Being first and final call money received)			

Name of the Company: Gagan Ltd.

Balance Sheet as at_____

Particulars	Note No.	Figures for the current year (₹)	Figures for the previous year (₹)
EQUITY AND LIABILITIES			
1. Shareholder's Fund			
(b) Reserve and Surplus		1,00,000	
3. Non Current Liabilities			
(a) Long-Term borrowings		5,00,000	
		6,00,000	
ASSETS			
2. Current Assets			
(d) Cash and Cash Equivalents		6,00,000	
		6,00,000	

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Notes to Accounts:

(1) Reserves & Surplus

Securities Premium	1,00,000

(2) Long Term Borrowings

8% Debentures	5,00,000

Working Note:- 1. Issue Price = 100+20% of 100 = ₹120; **2.** Amount due on Application 25% of 120 = ₹30; **3.** Amount due on Allotment 50% of 120 = ₹60, out of which ₹20 is for premium and balance (60-20) ₹40 for Debentures;

4. Amount of Application money adjusted on allotment:

Received 6,500 x ₹30	= ₹ 1,95,000
Less: Transfer to Debenture A/c (5000 x ₹30)	= ₹ 1,50,000
	= ₹ 45,000
Less: Refund (500 x ₹30)	= ₹ 15,000
Excess application money adjust on Allotment	= ₹ 30,000

उदाहरण 11 : शक्ति लि० ने ₹ 100 वाले 10,000 7% ऋणपत्रों का निर्गमन 5% बट्टे पर किया, जिन पर ₹30 आवेदन पर, ₹45 आवंटन पर तथा शेष राशि प्रथम एवं अंतिम मांग पर देय है । ऋणपत्रों के निर्गमन पर आवश्यक जर्नल प्रविष्टियाँ दीजिये तथा सम्बंधित मदों को चिट्ठे में प्रदर्शित कीजिये । यह मानिए समस्त ऋणपत्रों के लिए आवेदन प्राप्त हुए ।

Shakti Ltd. issued 10,000 7% Debentures of ₹100 each at 5%discount, on which ₹30 on Application, ₹45 on allotment and balance amount on first and final call was payable. Give necessary journal entries on the issue of debentures and show the relevant items in the Balance Sheet. Assuming applications were received for all the debentures.

Date	Particulars	L. F.	Amount Dr. (₹)	Amount Cr. (₹)
	Bank A/c Dr.		3,00,000	
	To Debentures Application A/c			3,00,000
	(Being application money received for 10,000 Debentures)			
	Debentures Application A/c Dr.		3,00,000	
	To 7% Debentures A/c			3,00,000
	(Being Debentures application money transferred)			
	Debentures Allotment A/c Dr.		4,50,000	
	Discount on issue of Debentures A/c Dr.		50,000	
	To 7% Debentures A/c			5,00,000
	(Being Debenture allotment money due @ ₹45 each and discount @ ₹5 each debited to discount A/c)			
	Bank A/c Dr.		4,50,000	
	To Debentures Allotment A/c			4,50,000
	(Being the amount of allotment received)			
	Debentures First and Final Call A/c Dr.		2,00,000	
	To 7% Debentures A/c			2,00,000
	(Being the first & final call money due on 10,000 Debentures)			
	Bank A/c Dr.		2,00,000	
	To Debentures First & Final Call A/c			2,00,000
	(Being the amount received on first & final call)			

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Balance Sheet of Shakti Ltd. as at----------

Particulars	Note No.	Figures for the current year (₹)	Figures for the previous year (₹)
EQUITY AND LIABILITIES			
(3) Non Current Liabilities			
(a) Long-Term Borrowings (7% Debentures)		10,00,000	
		10,00,000	
ASSETS			
(1) Non Current Asset			
(e) Other Non-Current Assets (Dis. on Debentures)		50,000	
(2) Current Assets			
(d) Cash and Cash Equivalents		9,50,000	
		10,00,000	

Working Note: 1. Amount of first Call = 100 – [30+45+5(Discount)] = ₹20per Debenture

ऋणपत्रों का नकद के अतिरिक्त प्रतिफल के रूप में निर्गमन

(Issue of Debentures for Consideration other than Cash)

जब कोई कम्पनी किसी संपत्ति को खरीदती है या कोई चालू व्यापार खरीदती है, तो उस विक्रेता को भुगतान के रूप में ऋणपत्रों का निर्गमन करती है । ऐसे ऋणपत्रों का निर्गमन नकद के अतिरिक्त प्रतिफल के रूप में माना जाता है । कभी–कभी ऐसा भुगतान आंशिक रूप से नकद,आंशिक रूप से अंशों या ऋणपत्रों के रूप में भी किया जा सकता है । यदि भुगतान ऋणपत्रों के रूप में किया जाता है तो निम्न प्रविष्टि होगी :

(i) संपत्ति क्रय करने पर: Asset A/c Dr.
To Vendors A/c
(Being purchase of asset)

(ii) व्यापार क्रय करने पर: Asset A/c Dr. (with value of Asset's)
To Liabilities A/c (with value of Liabilities)
To Vendor's A/c (Purchase Consideration)
(Being Assets and Liabilities purchased)

(iii) विक्रेता को ऋणपत्र निर्गमन द्वारा भुगतान करने पर: Vendor's A/c Dr.
To Debentures A/c
(Being debentures issued to vendors at par)

नोट:– 1. यदि विक्रेताओं को ऋणपत्रों का निर्गमन प्रीमियम पर किया गया हो तो प्रीमियम की राशि से 'Securities Premium A/c' को Cr. और यदि बट्टे पर किया गया हो तो बट्टे की राशि से 'Discount on issue of Debentures A/c' को Dr. किया जायेगा ।

2. क्रय प्रतिफल के भुगतानस्वरुप निर्गमित किये जाने वाले ऋणपत्रों के अंकित मूल्य की गणना–

ऋणपत्रों का अंकित मूल्य = क्रय प्रतिफल या विक्रेता को देय राशि / प्रति ऋणपत्र निर्गमन मूल्य x ऋणपत्रों का अंकित मूल्य

उदाहरण 12 : अशोका लि० ने 1 अप्रैल 2016 को अनुज से ₹10,00,000 की संपत्ति एवं ₹1,20,000 के दायित्वों के साथ चालू व्यापार ख़रीदा । क्रय प्रतिफल का भुगतान अनुज को 1 मई 2016 को ₹100 वाले 6% ऋणपत्र निर्गमित कर किया गया। अशोक लि० की पुस्तकों में आवश्यक जर्नल प्रविष्टियाँ दीजिए, यदि ऋणपत्रों का निर्गमन **(क)** सममूल्य पर **(ख)** 10% प्रीमियम; या **(ग)** 12% बट्टे पर किया गया हो ।

Ashoka Ltd. bought a running business from Anuj on 01st April, 2016 with the assets of ₹10,00,000 and liabilities of ₹ 1,20,000. The purchase consideration was paid to Anuj on 01st May, 2016 by the

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

issue of 6% Debentures of ₹100 each. Give necessary Journal entries in the books of Ashoka Ltd., if debentures are issued: **(A)** At par **(B)** At 10% premium; **(C)** At 12% Discount.

Journal of Ashoka Ltd.

Date	Particulars	L. F.	Amount Dr. (₹)	Amount Cr. (₹)
1April, 2016	Assets A/c Dr.		10,00,000	
	To Liabilities A/c			1,20,000
	To Anuj's A/c			8,80,000
	(Being Assets & Liabilities of Anuj purchased for ₹8,80,000)			
(क)	यदि ऋणपत्रों का निर्गमन सममूल्य पर किया गया हो			
1 May, 2016	Anuj's A/c Dr.		8,80,000	
	To 6% Debentures A/c			8,80,000
	(Being 8800 6% debentures of ₹100each issued at par to Anuj)			
(ख)	ऋणपत्रों का निर्गमन 10% प्रीमियम पर किया गया हो			
1 May, 2016	Anuj's A/c Dr.		8,80,000	
	To 6% Debentures A/c			8,00,000
	To Securities Premium A/c			80,000
	(Being 8000, 6% debentures of ₹100each issued to Anuj at a Premium of 10%)			
(ग)	ऋणपत्रों का निर्गमन 12% बट्टे पर किया गया हो			
1 May, 2016	Anuj's A/c Dr.		8,80,000	
	Discount on issue of Debentures A/c Dr.		1,20,000	
	To 6% Debentures A/c			10,00,000
	(Being 10,000 6% debentures of ₹100 each issued to Anuj at discount of 12%)			

Working Notes:– (1) विक्रेताओं/अनुज को भुगतान शुद्ध संपत्ति के बराबर किया जायेगा।
Purchase Consideration = Assets taken over – Liabilities taken over = 10,00,000 – 1,20,000 = ₹8,80,000
(2) निर्गमित किये जाने वाले ऋणपत्रों का अंकित मूल्य: **(क)** सममूल्य पर = ₹8,80,000 x 100/100 = ₹8,80,000 **(ख)** 10% प्रीमियम पर = ₹8,80,000 x 100/110 = ₹8,00,000 **(ग)** 12% बट्टे पर = ₹8,80,000 x 100/88 = ₹10,00,000

समपार्श्विक प्रतिभूति के रूप में ऋणपत्रों का निर्गमन
(Issue of Debentures as Collateral Securities)

समपार्श्विक या सहायक प्रतिभूति से आशय उस अतिरिक्त प्रतिभूति से हैं जो ऋणदाता को मुख्य प्रतिभूति के अतिरिक्त दी जाती है। जब किसी कम्पनी द्वारा बैंक से ऋण लेते समय अपनी कोई संपत्ति गिरवी रखी जाती है। साथ ही ऋण की अतिरिक्त जमानत के रूप में कम्पनी द्वारा बैंक को अपने ऋणपत्र भी निर्गमित किये गये हों तो ये ऋणपत्र समपार्श्विक प्रतिभूति के रूप में निर्गमन कहलाते हैं।

यदि बैंक मुख्य प्रतिभूति से अपने ऋण की वसूली करने में असमर्थ रहता है तो वह इस समपार्श्विक प्रतिभूति के रूप में रखे गये ऋणपत्रों को बेचकर अपने ऋण राशि की वसूली कर सकता है। यदि निर्धारित समय पर कम्पनी बैंक ऋण का भुगतान कर देती है तो बैंक को इन ऋणपत्रों को लौटना होगा।

कम्पनी द्वारा बैंक को मूल ऋण राशि पर ही ब्याज का भुगतान किया जाता है। समपार्श्विक प्रतिभूति के रूप में रखे गये ऋणपत्रों पर कोई ब्याज का भुगतान नहीं किया जाता है।

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

समपार्श्विक प्रतिभूति के रूप में निर्गमित ऋणपत्रों का लेखांकन व्यवहारः– ऐसे ऋणपत्रों के निर्गमन का लेखांकन व्यवहार निम्न दो में से किसी एक तरीके से किया जा सकता हैः

(1) प्रथम विधिः इसके अन्तर्गत कम्पनी द्वारा समपार्श्विक प्रतिभूति के रूप में ऋणपत्र निर्गमन पर पुस्तकों में कोई प्रविष्टि नहीं की जाती है। केवल बैंक या वित्तीय संस्था से ऋण लेने की प्रविष्टि की जाती है। चिट्ठे में कम्पनी द्वारा लिए गये ऋण को 'समता एवं दायित्व' भाग में 'Non-Current Liabilities' शीर्षक के उप शीर्षक 'Long-Term Borrowings' के अन्तर्गत दर्शाया जाता है। उसी स्थान पर Bank Loan के नीचे कोष्ठक में समपार्श्विक प्रतिभूति के रूप में निर्गमित ऋणपत्रों को दर्शाया जाता हैं।

(2) द्वितीय विधि: इस विधि के अन्तर्गत समपार्श्विक प्रतिभूति के रूप में ऋणपत्र निर्गमन पर लेखा प्रविष्टि की जाती है।

(i) ऋणपत्र निर्गमन पर: Debenture Suspense A/c Dr. (ऋणपत्रों का अंकित मूल्य)
To Debentures A/c
(Being issue of Debentures as Collateral Security)

(ii) ऋण का भुगतान हो जाने पर: Debentures A/c Dr.
To Debenture Suspense A/c
(Being Debentures issued as Collateral Security withdrawn)

जब तक ऋण का भुगतान नहीं किया जाता तब तक Debentures A/c को समता एवं दायित्व भाग में 'Non-Current Liabilities शीर्षक के उप शीर्षक 'Long-Term Borrowings के अन्तर्गत दर्शाया जाता है तथा 'Debenture Suspense A/c को इन ऋणपत्रों में से घटाकर दर्शाया जाता है।

उदाहरण 13 : एस.पी. लि. ने बैंक ऑफ बडौदा से ₹4,00,000 का ऋण लिया तथा समपार्श्विक प्रतिभूति के रूप में ₹5,00,000 के 6% ऋणपत्र बैंक के पास रखे। एस पी लि० की पुस्तकों में जर्नल प्रविष्टियाँ दीजिये एवं चिट्ठा बनाईये। यदि **(i)** समपार्श्विक प्रतिभूति के रूप में निर्गमित ऋणपत्रों की प्रविष्टि नहीं की जाती है। **(ii)** यदि इनके निर्गमन पर प्रविष्टि की जाती है।

SP Ltd. has took a loan of ₹ 4,00,000 from Bank of Baroda and put 6% Debentures of ₹5,00,000 to the bank as Collateral Security. Give Journal entries in the books of SP Ltd. and prepare Balance Sheet if **(i)** Entry have not passed for issue of debentures as Collateral Security. **(ii)** Entry has passed for the issue.

हल: (i) यदि ऋणपत्र निर्गमन की प्रविष्टि नहीं की जाती है :

Journal Entries

Date	Particulars	L.F.	Amount Dr. (₹)	Amount Cr. (₹)
	Bank A/c Dr. To Bank Loan A/c (Being Loan taken from BOB on the Collateral Security of 6% Debentures of ₹5,00,000)		4,00,000	4,00,000

Balance Sheet of SP Ltd. as at----------

Particulars	Note No.	Figures for the current year (₹)	Figures for the previous year (₹)
I. EQUITY AND LIABILITIES			
3. Non Current Liabilities			
(a) Long Term Borrowings			
(Bank Loan (6% Debentures of Rs 5,00,000 deposited as Collateral Security)		4,00,000	
Total		4,00,000	

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

II. ASSETS			
2. Current Assets			
(d) Cash and Cash Equivalents		4,00,000	
Total		4,00,000	

(ii) यदि ऋणपत्र निर्गमन पर प्रविष्टि की जाती हैं :

Date	Particulars	L.F.	Amount Dr. (₹)	Amount Cr. (₹)
	Bank A/c Dr.		4,00,000	
	To Bank Loan A/c			4,00,000
	(Being Bank Loan taken from Bank of Baroda)			
	Debenture Suspense A/c Dr.		5,00,000	
	To 6% Debentures A/c			5,00,000
	(Being 6% Debentures of ₹5,00,000 issued as collateral security)			

Notes to Accounts

1. Long Term Borrowings			
6% Debentures	5,00,000		
Less: Debenture Suspense A/c	5,00,000	- Nil-	
Bank Loan (Secured by 6% Debentures)		4,00,000	
		4,00,000	

उदाहरण 14 : आदर्श लि० ने ₹ 4,00,000 के 7% ऋणपत्रों का निर्गमन निम्न प्रकार किया–**(i)** ₹2,00,000 के 7% ऋणपत्रों को 10% बट्टे पर नकद के लिए, **(ii)** रमेश से ₹90,000 की स्थाई सम्पत्ति क्रय की,उसके प्रतिफलस्वरुप उसको ₹ 1,00,000 अंकित मूल्य के 7% ऋणपत्र निर्गमित किये, **(iii)** बैंक से ₹ 50,000 का ऋण लिया। समपार्श्विक प्रतिभूति के रूप में बैंक के पास ₹ 1,00,000 के 7% ऋणपत्र जमा कराये। आदर्श लि० की पुस्तकों में जर्नल प्रविष्टियाँ दीजिये एवं चिट्ठा तैयार कीजिये।

Adarsh Ltd. issued 7% Debentures of ₹4,00,000 as follows: **(i)** 7% Debentures of ₹2,00,000 at 10% discount for cash. **(ii)** A fixed asset of ₹90,000 purchased from Ramesh. For the consideration of it, issued 7% Debentures with a nominal value of ₹1,00,000. **(iii)** Taken a loan of ₹50,000 from Bank and deposited to the bank 7% Debentures of ₹1,00,000 as collateral security. Give journal entries in the books of Adarsh Ltd. and draw the Balance Sheet.

Journal of Adarsh Ltd.

Date	Particulars	L.F.	Amount Dr. (₹)	Amount Cr. (₹)
	Bank A/c Dr.		1,80,000	
	Discount on issue of Debentures A/c Dr.		20,000	
	To 7% Debentures A/c			2,00,000
	(Being 7%Debentures issued for cash at 10% discount)			
	Fixed Assets A/c Dr.		90,000	
	To Ramesh's A/c			90,000
	(Being fixed Assets purchased from Ramesh)			
	Ramesh's A/c Dr.		90,000	
	Discount on issue of Debentures A/c Dr.		10,000	
	To 7% Debentures A/c			1,00,000
	(Being 7% Debentures issued to Ramesh at discount)			
	Bank A/c Dr.		50,000	

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

	To Bank Loan A/c			50,000
	(Being bank loan taken)			
	Debenture Suspense A/c Dr.		1,00,000	
	To 7% Debentures A/c			1,00,000
	(Being 7% Debentures issued as collateral security)			

Balance Sheet of Adarsh Ltd. as at----------

Particulars	Note No.	Figures for the current year (₹)	Figures for the previous year (₹)
I. EQUITY AND LIABILITIES			
Non Current Liabilities			
Long Term Borrowing	**1**	3,50,000	
Total		3,50,000	
II. ASSETS			
Non Current Assets			
Fixed Assets		90,000	
Other Non Current Assets	**2**	30,000	
Current Assets			
Cash and Cash Equivalents		2,30,000	
Total		3,50,000	

Notes to Accounts

1. Long Term Borrowings			
7% Debentures	4,00,000		
Less: Debenture Suspense A/c	1,00,000	3,00,000	
Bank Loan		50,000	
		3,50,000	
2. Other Non Current Assets			
Discount on issue of Debentures	(20,000 + 10,000)	30,000	
		30,000	

शोधन की शर्तों के आधार पर ऋणपत्रों का निर्गमन
(Issue of Debentures according to the conditions of redemption)

एक कम्पनी द्वारा ऋणपत्रों का निर्गमन सममूल्य पर, बट्टे पर या प्रीमियम पर किया जा सकता है तथा उन ऋणपत्रों का शोधन भी सममूल्य पर या प्रीमियम पर किया जा सकता है। यदि ऋणपत्रों का शोधन प्रीमियम पर किया जाता है तो इसका आशय यह है कि कम्पनी ऋणपत्र धारकों को अंकित मूल्य से अधिक भुगतान करेगी। यह अधिक राशि कम्पनी के लिए हानि है। अतः इस राशि के लिए आयोजन कर लिया जाता है। इस हेतु ऋणपत्रों के निर्गमन के समय ही 'Loss on Issue of Debentures A/c को Dr. कर 'Premium on Redemption of Debentures A/c को Cr. किया जाता हैं। विभिन्न परिस्थितियों में ऋणपत्रों के निर्गमन की प्रविष्टियाँ निम्नानुसार होंगी:–

(1) जब ऋणपत्रों का निर्गमन सममूल्य पर हो तथा शोधन भी सममूल्य पर हो

उदाहरण 15 : राधे लि० ने 5000 6% ऋणपत्र प्रत्येक ₹100 वाला सममूल्य पर निर्गमित किये, जिनका शोधन 5 वर्ष पश्चात् सम मूल्य पर होना है। राधे लि० की पुस्तकों में ऋणपत्रों के निर्गमन की प्रविष्टियाँ दीजिये।

Radhey Ltd. issued 5000 6% Debentures of Rs 100 each at par, which were repayable at par after 5 years. Give journal entries for the issue of Debentures in the books of Radhey Ltd. .

हल: **Journal of Radhey Ltd.**

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Date	Particulars	L. F.	Amount Dr. (₹)	Amount Cr. (₹)
	Bank A/c Dr.		5,00,000	
	To Debentures Application A/c			5,00,000
	(Being Application money received for 5000 debentures @ ₹100)			
	Debentures Application A/c Dr.		5,00,000	
	To 6% Debentures A/c			5,00,000
	(Being application money transferred to 6% debentures A/c)			

(2) जब ऋणपत्रों का निर्गमन बट्टे पर हो किन्तु शोधन सममूल्य पर हो:

उदाहरण 16 : श्याम लि० ने 5000 7% ऋणपत्र प्रत्येक ₹100 वालों को 2% बट्टे पर निर्गमित किये। जिनका शोधन सम मूल्य पर होना है। श्याम लि० की पुस्तकों में ऋणपत्रों के निर्गमन की प्रविष्टियाँ दीजिये।

Shyam Ltd. issued 5000 7% Debentures of ₹100 each at a discount of 2%, which were repayable at par. Give journal entries for the issue of Debentures in the books of Shyam Ltd..

हल : **Journal of Shyam Ltd.**

Date	Particulars	L. F.	Amount Dr. (₹)	Amount Cr. (₹)
	Bank A/c Dr.		4,90,000	
	To Debentures Application A/c			4,90,000
	(Being application money received for 5000 debentures @ ₹98 each)			
	Debentures Application A/c Dr.		4,90,000	
	Discount on Issue of Debentures A/c Dr.		10,000	
	To 7% Debentures A/c			5,00,000
	(Being application money transferred to 7% debentures A/c)			

(3) जब ऋणपत्रों का निर्गमन प्रीमियम पर किया गया हो किन्तु शोधन सम मूल्य पर होना हो:

उदाहरण 17 : ग्रीन लि० ने ₹100 वाले 2000 10% ऋणपत्रों का निर्गमन ₹ 105 प्रति ऋणपत्र की दर से किया। जिनका शोधन सम मूल्य पर किया जाना हैं। ग्रीन लि० की पुस्तकों में निर्गमन की प्रविष्टियाँ कीजिये।

Green Ltd. issued 2000 10% Debentures of ₹10 each at ₹105 per Debentures, which were repayable at par. Give journal entries for the issue in the books of Green Ltd..

हल: **Journal of Green Ltd.**

Date	Particulars	L. F.	Amount Dr. (₹)	Amount Cr. (₹)
	Bank A/c Dr.		2,10,000	
	To Debentures Application A/c			2,10,000
	(Being Application money received for 2000 Debentures @ ₹105 each)			
	Debentures Application A/c Dr.		2,10,000	
	To 10% Debentures A/c			2,00,000
	To Securities Premium A/c			10,000
	(Being Application money transferred to 10% Debentures)			

(4) जब ऋणपत्रों का निर्गमन सममूल्य पर हो तथा शोधन प्रीमियम पर होना हो:

उदाहरण 18 : सीता लि० ने ₹100 वाले 5000 6% ऋणपत्र सम मूल्य पर निर्गमित किये, जिनका शोधन 5% प्रीमियम पर होना हैं। सीता लि० की पुस्तकों में निर्गमन की प्रविष्टियाँ दीजिये।

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Sita Ltd. issued 5000 6% Debentures of ₹100 each at par, which were repayable at 5% premium. Give journal entries for the issue in the books of Sita Ltd.

हल : **Journal of Sita Ltd.**

Date	Particulars	L. F.	Amount Dr. (₹)	Amount Cr. (₹)
	Bank A/c Dr.		5,00,000	
	To Debentures Application A/c			5,00,000
	(Being application money received for 5000 Debentures)			
	Debentures Application A/c Dr.		5,00,000	
	Loss on Issue of Debentures A/c Dr.		25,000	
	To 6% Debentures A/c			5,00,000
	To Premium on Redemption of Debentures A/c			25,000
	(Being the Debentures issued at par and provided for premium on redemption of debentures)			

(5) जब ऋणपत्रों का निर्गमन बट्टे पर हो तथा शोधन प्रीमियम पर होना हो:

उदाहरण 19 : राम लि० ने ₹100 वाले 4000 7% ऋणपत्र 2% बट्टे पर निर्गमित किये। जिनका शोधन 4% प्रीमियम पर होना हैं। राम लि० की पुस्तकों में निर्गमन से सम्बंधित प्रविष्टियाँ दीजिये।

Ram Ltd. Issued 4000 7% Debentures of ₹100 each at a discount of 2% which were repayable at 4% premium. Give journal entries for the issue of Debentures in the books of Ram Ltd.

हल: **Journal of Ram Ltd.**

Date	Particulars	L. F.	Amount Dr. (₹)	Amount Cr. (₹)
	Bank A/c Dr.		3,92,000	
	To Debentures Application A/c			3,92,000
	(Being application money received for 4000 debenture @ ₹98each)			
	Debentures Application A/c Dr.		3,92,000	
	Discount on Issue of Debentures A/c Dr.		8,000	
	Loss on Issue of Debentures A/c Dr.		16,000	
	To 7% Debentures A/c			4,00,000
	To Premium on Redemption of Debentures A/c			16,000
	(Being 7% debentures issued at discount and provided for premium payable on redemption)			

(6) जब ऋणपत्रों का निर्गमन प्रीमियम पर हो तथा शोधन भी प्रीमियम पर होना हो:

उदाहरण 20 : व्हाइट लि० ने ₹ 100 वाले 10,000 8% ऋणपत्रों का निर्गमन ₹ 104 प्रति ऋणपत्र की दर पर किया। जिनका शोधन 5% प्रीमियम पर किया जाना है। व्हाइट लि. की पुस्तकों में ऋणपत्रों के निर्गमन की प्रविष्टियाँ दीजिये।

White Ltd. issued 10,000 8% Debentures of ₹ 100each at ₹104 per debenture, which repayable at 5% premium. Give journal entries for the issue of Debentures in the books of White Ltd..

हल : **Journal of White Ltd.**

Date	Particulars	L. F.	Amount Dr. (₹)	Amount Cr. (₹)
	Bank A/c Dr.		10,40,000	
	To Debentures Application A/c			10,40,000
	(Being application money received for 10,000 Debentures)			
	Debentures Application A/c Dr.		10,40,000	

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

	Loss on Issue of Debentures A/c Dr.		50,000	
	To 8% Debentures A/c			10,00,000
	To Securities Premium A/c			40,000
	To Premium on Redemption of Debenture A/c			50,000
	(Being 8% debentures issued at premium and provided for premium payable on redemption)			

चिट्ठे में प्रकटीकरण (Disclosure in Balance Sheet): यदि ऋणपत्रों का भुगतान चिट्ठे की तिथि से अगले 12 माह के पश्चात् होना हो तो ऋणपत्रों के **शोधन पर देय प्रीमियम (Premium on Redemption of Debentures)** खाते को चिट्ठे के समता एवं दायित्व भाग में 'Non-Current Liabilities' शीर्षक के उप शीर्षक 'Other Long-Term Liabilities' के अन्तर्गत दर्शाया जाता है और यदि ऋणपत्रों का भुगतान चिट्ठे की तिथि से 12 माह के अन्दर होना हो तो ऐसे ऋणपत्रों को 'Current Liabilities' शीर्षक के उप शीर्षक 'Other Current Liabilities' के अन्तर्गत 'Current Maturities of Long Term Debt' के रूप में दर्शाया जाता है। ऐसी दशा में 'Premium on Redemption of Debentures' को भी 'Current Liabilities' शीर्षक के उप शीर्षक 'Other Current Liabilities' के अन्तर्गत दर्शाया जाता है। **ऋणपत्रों के निर्गमन पर हानि (Loss on Issue of Debentures)** का वह भाग जो चिट्ठे की तिथि से अगले 12 माह के पश्चात् अपलिखित होना है उसे 'संपत्ति' भाग में 'Non-Current Assets' शीर्षक के उप शीर्षक 'Other Non-Current Assets' के अन्तर्गत दर्शाया जाता है तथा ऋणपत्रों के निर्गमन पर हानि (Loss on Issue of Debentures) का वह भाग जो चिट्ठे की तिथि से 12 माह के अन्दर अपलिखित होना हो उसे 'Current Assets' शीर्षक के उपशीर्षक ' Other Current Assets' के अन्तर्गत दर्शाया जाता है।

ऋणपत्रों पर ब्याज
(Interest on Debentures)

कम्पनी द्वारा ऋणपत्रों पर ब्याज का भुगतान निर्गमन की शर्तों के अनुसार तिमाही, छमाही या वार्षिक आधार पर पूर्व निश्चित दर से ऋणपत्रों के रजिस्टर्ड स्वामी को किया जाता है। ऋणपत्रों पर ब्याज भुगतान से सम्बंधित निम्न बिंदु ध्यान देने योग्य है :– (1) ऋणपत्रों पर ब्याज कम्पनी के लोभों पर प्रभार (charge against the Profit) है। अतः कम्पनी को लाभ हो या न हो, ब्याज का भुगतान किया जायेगा। (2) ऋणपत्रों पर ब्याज की गणना उनके अंकित मूल्य पर निश्चित दर से की जाती है। (3) समपार्श्विक प्रतिभूति के रूप में निर्गमित ऋणपत्रों पर ब्याज का भुगतान नहीं होता है। (4) वर्ष के अंत में ऋणपत्रों पर ब्याज खाते का शेष 'Statement of Profit and Loss' में अंतरित किया जाता है। (5) वर्ष के अंत में ऋणपत्रों पर बकाया ब्याज 'Interest Accrued and Due' या 'Interest Accrued but not Due' को चिट्ठे के समता एवं दायित्व भाग में 'Current Liabilities' शीर्षक के उप शीर्षक 'Other Current Liabilities' के अन्तर्गत दर्शाया जाता है।

ऋणपत्रों पर ब्याज की लेखांकन प्रविष्टियाँ (Accounting Entries of Interest on Debentures): आयकर अधिनियम के अनुसार किसी ऋणपत्रधारी को दिए जाने वाला ब्याज एक निश्चित सीमा से अधिक होता है तो उस पर 10% आयकर काटकर (Tax Deducted at Source) भुगतान किया जाता हैं। कम्पनी द्वारा इस काटे गये कर की राशि को अगले माह की 7 तारीख तक सरकारी खजाने में जमा कराना आवश्यक हैं। यह कर ऋणपत्रधारी की ओर से चुकाया माना जाता है। जिसके लिए कम्पनी उसे कर कटौती का प्रमाण पत्र जारी करती है। ब्याज भुगतान की निम्न प्रविष्टियाँ होंगी:–

(1) ब्याज के देय होने पर : Debenture Interest A/c Dr. (Gross Amount of Interest)
To Debenture holder's A/c (Net Amount Payable)
To Tax Deducted at Source A/c (Amount of TDS)
(Being debenture interest due and income tax deduted)

नोट:– यदि उद्गम स्थान पर कर कटौती की कोई सूचना नहीं हो तो ब्याज की सम्पूर्ण राशि का ऋणपत्रधारियों के खाते में जमा कर भुगतान कर दिया जाएगा।

(2) ब्याज का भुगतान करने पर: Debenture holder's A/c Dr. (Amount paid)
To Bank A/c

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

(Being amount of debentures interest paid)

(3) आयकर का भुगतान करने पर: Tax Deducted at Source A/c Dr. (Amount of Tax)
To Bank A/c

(Being payment of income tax made)

(4) वर्ष के अंत में ऋणपत्रों पर ब्याज को लाभ–हानि विवरण में अंतरण पर:
Statement of Profit and Loss A/c Dr. (Total amount of interest)
To Debenture Interest A/c

(Being debenture interest A/c transferred)

उदाहरण 21 : चांदनी लि० ने 01 अप्रैल ,2016 को 5000 ₹100 वाले 14% ऋणपत्र निर्गमित किये निर्गमन पूर्ण अभिदत्त हुआ। निर्गमन की शर्तों के अनुसार ऋणपत्रों पर ब्याज का भुगतान, छमाही आधार पर 30 सितम्बर व 31 मार्च को 10% आयकर काटकर किया जाना है। कम्पनी की पुस्तकों में ब्याज के भुगतान एवं लाभ–हानि विवरण में अंतरण की प्रविष्टि कीजिये।

Chandani Ltd. issued 5000 14% Debentures of ₹100 each on 01st April, 2016. The issue was fully subscribed. As per terms of the issue, debenture interest was payable half yearly basis on 30th September and 31st March after deducting income tax at the rate 10%. Give journal entries for the payment of interest and transfer to Statement of Profit and Loss.

हल : **Journal of Chandani Ltd.**

Date	Particulars	L.F.	Amount Dr. (₹)	Amount Cr. (₹)
30 Sep.2016	Debentures Interest A/c Dr.		35,000	
	To Debenture holder's A/c			31,500
	To Tax Deducted at Source A/c			3,500
	(Being debenture interest due & income tax deducted)			
	Debenture holder's A/c Dr.		31,500	
	Tax Deducted at Source A/c Dr.		3,500	
	To Bank A/c			35,000
	(Being debenture interest & income tax paid)			
31 Mar,2017	Debenture Interest A/c Dr.		35,000	
	To Debenture Holder's A/c			31,500
	To Tax Deducted at Source A/c			3,500
	(Being debenture interest due & Income tax deducted)			
31 Mar,2017	Debenture holder's A/c Dr.		31,500	
	Tax Deducted at Source A/c Dr.		3,500	
	To Bank A/c			35,000
	(Being debenture interest & income tax paid)			
31 Mar,2017	Statement of Profit & Loss A/c Dr.		70,000	
	To Debenture Interest A/c			70,000
	(Being amount of debenture interest transferred to P&L)			

ऋणपत्रों के निर्गमन पर बट्टा / हानि को अपलिखित करना
(Writing off Discount / Loss on Issue of Debentures)

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

ऋणपत्रों के निर्गमन पर बट्टा तथा हानि (Discount on Issue of Debentures) तथा (Loss on Issue of Debentures) पूँजीगत हानि है जिसे प्रतिभूति प्रीमियम, पूँजीगत लाभ या पूँजीगत संचय में से अपलिखित किया जा सकता हैं अथवा Statement of Profit and Loss से अपलिखित किया जा सकता हैं। वैसे इन हानियों को अपलिखित करने का समय कम्पनी अधिनियम में निर्धारित नहीं हैं तथापि इन्हें ऋणपत्रों की अवधि में अपलिखित कर दिया जाना चाहिए। अपलेखन की निम्न प्रविष्टि की जाती है:–

(1) पूँजीगत लाभों से अपलेखन पर: Securities Premium A/c Dr.
Capital Reserve A/c Dr.
Capital Profit's A/c Dr.
To Discount on Issue of Debentures A/c
To Loss on Issue of Debentures A/c

(2) लाभ–हानि विवरण से अपलेखन पर: Statement of Profit and Loss A/c Dr.
To Discount on Issue of Debentures A/c
To Loss on Issue of Debentures A/c

लाभ–हानि विवरण (Statement of Profit and Loss) से हानि को अपलिखित करने की दो विधियाँ हैं:–

(1) बराबर किश्त विधि (Equal Instalment Method)– जब ऋणपत्रों का शोधन एक निश्चित अवधि के पश्चात् एकमुश्त किया जाता हैं तो उस स्थिति में कुल हानि को उस अवधि में बराबर–बराबर बांटकर अपलिखित किया जाता है।

Yearly Amount to be Written Off = Total Loss/Period of Debentures

मान लीजिये– रमेश लि० 1,00,000 ₹ के ऋणपत्र 10% बट्टे पर जारी करती है जिनका शोधन 5 वें वर्ष के अंत में होना है। इस दशा में लाभ–हानि विवरण से प्रतिवर्ष (10% of 1,00,000) / 5 = ₹ 2000 अपलिखित किये जायेंगे।

(2) बकाया ऋणपत्रों का अनुपात विधि (Ratio of Outstanding Debentures Method) – जब ऋणपत्रों का शोधन किश्तों में किया जाता है तो हानि की राशि का अपलेखन, प्रतिवर्ष ऋणपत्रों की प्रयुक्त की गई राशि के अनुपात में किया जायेगा।

उदाहरण 22 : सचिन लि० ने 01 अप्रैल, 2013 को ₹100 वाले 1000 6% ऋणपत्र 5% बट्टे पर निर्गमित किये जिनका शोधन भी 5% प्रीमियम पर होना हैं।कम्पनी की पुस्तकों में Loss on Issue of Debentures A/c बनाईये, यदि :

(अ) ऋणपत्रों का शोधन 5वें वर्ष के अंत में किया जाना है।

(ब) ऋणपत्रों का शोधन 5 वर्षों में प्रतिवर्ष बराबर राशि में किया जाना हैं।

Sachin Ltd. issued 1000 6% Debentures of ₹100each at 5% discount on 01st April, 2013. Which were repayable at 5% premium. Prepare 'Loss on Issue of Debentures A/c' in the books of the company If

(A) Debentures are repayable at the end of 5th year.

(B) Debentures are repayable in each year with equal amounts during 5 years

हल: ऋणपत्रों के निर्गमन पर कुल हानि = ₹ 5,000 (बट्टा) + ₹ 5,000 (शोधन पर प्रीमियम) = ₹ 10,000 होगी। इसे अपलिखित किया जाना है।

(अ) जब ऋणपत्रों का शोधन 5वें वर्ष के अंत में किया जाना हो :

तो 5 वर्षों के दौरान ऋणपत्रों की समान राशि प्रयुक्त हुई। अतः कुल हानि भी 5 वर्षों में बराबर बांटी जाएगी। प्रतिवर्ष (10,000 / 5) = ₹ 2000 हानि अपलिखित होगी।

Dr. Loss on Issue of Debentures A/c Cr.

Date	Particulars	Amount ₹	Date	Particulars	Amount ₹
2013 1 April	To 6% Debentures A/c	5,000	2014 31 Mar.	By Statement of Profit & Loss A/c	2,000
	To Premium on Redemption of Debentures A/c	5,000	2014 31 Mar.	By Balance c/d	8,000

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

		10,000			**10,000**
2014 1 April	To Balance b/d	8,000	2015 31 Mar. 31 Mar.	By Statement of Profit & Loss A/c By Balance c/d	2,000 6,000
		8,000			**8,000**
2015 1 April	To Balance b/d	6,000	2016 31 Mar.	By Statement of Profit & Loss A/c By Balance c/d	2,000 4,000
		6,000			**6,000**
2016 1 April	To Balance b/d	4,000	2017 31 Mar.	By Statement of Profit & Loss A/c By Balance c/d	2,000 2,000
		4,000			**4,000**
2017 1 April	To Balance b/d	2,000	2018 31 Mar.	By Statement of Profit & Loss A/c	2,000
		2,000			**2,000**

(ब) ऋणपत्रों का शोधन 5 वर्षो में प्रतिवर्ष बराबर राशि का किया जाना है :

अर्थात प्रतिवर्ष 5,00,000 ÷ 5 = ₹ 1,00,000 का शोधन किया जाना है तो प्रत्येक वर्ष के अंत में शोधन से पूर्व बकाया ऋणपत्रों की राशि (उस वर्ष में प्रयुक्त ऋणपत्र राशि) क्रमशः ₹ 500000 , ₹ 400000 , ₹ 300000 , ₹ 200000 एवं ₹ 100000 होगी। इसी राशि के अनुपात अर्थात 5: 4 : 3 : 2 : 1 में ऋणपत्र निर्गमन की कुल हानि = ₹ 10000 को विभाजित किया जायेगा एवं तदनुसार लाभ – हानि विवरण खाते में अंतरण कर अपलिखित किया जायेगा ।

2013 – 14 = $\frac{5}{15}$ X 10000 = ₹ 3333 ;

2014 – 15 $\frac{4}{15}$X 10000 = ₹ 2667

2015 – 16 = $\frac{3}{15}$ X 10000 = ₹ 2000 ;

2016 – 17 $\frac{2}{15}$X 10000 = ₹ 1333

2017 – 18 = $\frac{1}{15}$ X 10000 = ₹ 667

Loss on Issue of Debentures Account

Date	Particulars	Amount ₹	Date	Particular	Amount ₹
2013 April,1	To 6% debentures A/c To Premium on Redemption of Debentures a/c	5000 5000	2014 Mar. 31	By Statement of P & L A/c By balance c/d	3333 6667
		10,000			**10,000**
2014 April,1	To balance b/d	6,667	2015 Mar. 31	By Statement of P & L A/c By balance c/d	2,667 4,000
		6,667			**6,667**
2015 April,1	To balance b/d	4,000	2016 Mar. 31	By Statement of P & L A/c By balance c/d	2,000 2,000
		4,000			**4,000**

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

2016 April,1	To balance b/d	2,000	2017 Mar. 31	By Statement of P & L A/c By balance c/d	1,333 667
		2,000			**2,000**
2017 April,1	To balance b/d	667	2018 Mar. 31	By Statement of P & L A/c	667
		667			**667**

उदाहरण – 23 : सौरभ लि. ने 01 अप्रैल 2013 को ₹100 वाले 3000, 7% ऋणपत्रों का 12% बट्टे पर निर्गमन किया। जिनका शोधन 31मार्च 2016 से प्रतिवर्ष ₹1,00,000 करना है। प्रथम 5 वर्षों का ''ऋण पत्र निर्गमन बट्टा खाता'' बनाइये।

Sourabh Ltd. issued 3000, 7% Debentures of ₹100 each at 12% discount on 01st April,2013 ,which were repayable ₹1,00,000 per year from 31st March 2016. Prepare Discount on Issue of Debentures A/c for first 5 years.

हल : कुल बट्टा = 12% of 3,00,000 = ₹ 36000 है। चूँकि ऋणपत्रों का शोधन तीसरे वर्ष के अंत से प्रतिवर्ष ₹ 1,00,000 करना है। अतः ऋणपत्रों की प्रयुक्त हुई राशि के अनुपात में बट्टे का अपलेखन किया जायेगा।

Statement showing amount of discount to be written off

Year endeed on (1)	Normal value of debentures outstanding before redemption (₹) (2)	Ratio (3)	Amunt of discount to be written off (₹) (4)
31.03.2014	300000	3	$36000\ X\ \frac{3}{12} = 9000$
31.03.2015	300000	3	$36000\ X\ \frac{3}{12} = 9000$
31.03.2016	300000	3	$36000\ X\ \frac{3}{12} = 9000$
31.03.2017	200000	2	$36000\ X\ \frac{2}{12} = 6000$
31.03.2018	100000	1	$36000\ X\ \frac{1}{12} = 3000$

Discount of Issue of Debentures Account

Date	Particulars	Amount ₹	Date	Particulars	Amount ₹
2013, April 1	To 7% Debenture A/c	36,000	2013, Mar. 31	By Statement of P & L By balance b/d	9,000 27,000
		36,000			**36,000**
2014, April 1	To balance b/d	27,000	2014, Mar. 31	By Statement of P & L By balance b/d	9,000 18,000
		27,000			**27,000**

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

2015, April 1	To balance b/d	18,000	2015, May 31	By Statement of P & L	9,000
				By balance b/d	9,000
		18,000			**18,000**
2016, April 1	To balance b/d	9,000	2016, May 31	By Statement of P & L	6,000
				By balance b/d	3,000
		9,000			**9,000**
2017, April 1	To balance b/d	3000	2017, May 31	By Statement of P & L	3,000
		3,000			**3,000**

सारांश (Summary)

- **कंपनी का अर्थ** – कंपनी एक ऐसा संगठन है जिसका निर्माण एक व्यवसाय को चलाने हेतु व्यक्तियों के समूह द्वारा कानून की एक प्रकिया पूर्ण करने पर होता है इसके सदस्यों को अंशधारी कहा जाता है–
- **कंपनी के प्रकार** – कंपनियाँ तीन प्रकार की होती हैं
  (1) एक व्यक्ति वाली कंपनी (2) निजी कंपनी और (3) सावर्जनिक कंपनी
- **दायित्व के आधार पर कंपनी के प्रकार**

(1) अंशों द्वारा सीमित कंपनी (2) गारंटी द्वारा सीमित कंपनी (3) असीमित कंपनी

- **अंशों के प्रकार** – अंश दो प्रकार के होते हैं : 1. पूर्वाधिकार अंश 2. समता अंश
- **पूर्वाधिकार अंशों के प्रकार** – पूर्वाधिकार अंश अनेक प्रकार के होते हैं : 1. असंचयी पूर्वाधिकार अंश 2. संचयी पूर्वाधिकार अंश 3. अवशिष्ट भागी पूर्वाधिकार अंश 4. अनावशिष्ट भागी पूर्वाधिकार अंश 5. परिवर्तनीय पूर्वाधिकार अंश 6. अपरिवर्तनीय पूर्वाधिकार अंश 7. शोधनीय पूर्वाधिकार अंश 8. अशोधनीय पूर्वाधिकार अंश
- **अंश पूँजी के प्रकार** – चिट्ठे में निरूपण की दृष्टि से अंश पूँजी के निम्न वर्ग है :

1. अधिकृत पूँजी 2. निर्गमित पूँजी 3. प्रार्थित पूँजी 4. मांगी गई पूँजी 5. प्रदत्त पूँजी

- **संचित पूँजी** – संचित पूँजी से आशय न मांगी गई पूँजी के उस भाग से है जिसे कंपनी द्वारा विशेष प्रस्ताव पारित करके भविष्य में समापन के समय ही मांगने के लिए सुरक्षित कर दिया गया है।
- **अंशों का निर्गमन** – एक कंपनी अंशों का निर्गमन निम्न उद्देश्य से कर सकती हैं : 1. रोकड़ के अतिरिक्त अन्य प्रतिफल के लिए 2. रोकड़ के लिए
- **अंशों का निर्गमन मूल्य** – 1. सम मूल्य पर निर्गमन 2. प्रीमियम पर निर्गमन
- **अंशों पर भुगतान** – रोकड़ हेतु निर्गमित अंशों पर कंपनी द्वारा भुगतान निम्न प्रकार से प्राप्त किया जा सकता है 1. आवेदन पर एक मुश्त , 2. संपूर्ण राशि किश्तों में (यथा – आवेदन , बंटन , मांग पर)
- **अंश निर्गमन की प्रक्रिया –** 1. प्रविवरण का निर्गमन 2. अंशों के लिए आवेदन 3. अंशों का आबंटन 4. आबंटन पत्र भेजना 5. रजिस्टार को आबंटन रिटर्न भेजना
- **प्रतिभूति प्रीमियम के उपयोग –** एक कंपनी प्रतिभूति प्रीमियम का प्रयोग सदस्यों को पूर्णप्रदत बोनस अंश देने में , प्रारंभिक व्यय , अंशों एवं ऋणपत्रों के निर्गमन पर दिए गए कमीशन , ऋणपत्रों के निर्गमन पर बट्टा , पूर्वाधिकार अंशों एवं ऋणपत्रों के शोधन पर देय प्रीमियम को अपलिखित करने में तथा अपने अंश क्रय करने में कर सकती है
- **ऋणपत्रों के प्रकार –** ऋणपत्र अनेक प्रकार के होते हैं: 1. सुरक्षित ऋणपत्र 2. असुरक्षित ऋणपत्र 3. शोधनीय ऋणपत्र 4. अशोधनीय ऋणपत्र 5. पंजीकृत ऋणपत्र 6. वाहक ऋणपत्र 7. प्रथम ऋणपत्र 8. द्वितीय ऋणपत्र 9. निश्चित ब्याज दर वाले ऋणपत्र 10. शून्य ब्याज दर वाले ऋणपत्र 11. परिवर्तनीय ऋणपत्र 12. अपरिवर्तनीय ऋणपत्र
- **ऋणपत्रों का निर्गमन –** ऋणपत्रों का निर्गमन सममूल्य पर, प्रीमियम पर अथवा बट्टे पर किया जा सकता हैं। जब ऋणपत्रों को अंकित मूल्य से कम मूल्य पर जारी किया जाये तो यह बट्टे पर निर्गमन कहलाता है।
- **ऋणपत्रों का रोकड़ के अतिरिक्त प्रतिफल के रूप में निर्गमन –** जब कंपनी द्वारा विक्रेताओं , आपूर्तिकर्ताओं को या सम्पति के बदले ऋणपत्रों का निर्गमन किया जाये तो यह रोकड़ के अतिरिक्त प्रतिफल के रूप में ऋणपत्रों का निर्गमन कहलाता है।

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

• **समपार्श्विक प्रतिभूति के रूप में ऋणपत्र –** जब किसी कंपनी द्वारा बैंक आदि से लिए गए ऋण की मुख्य प्रतिभूति के अलावा अतिरिक्त जमानत के रूप में बैंक को ऋणपत्र निर्गमित किये जाते हैं तो वे समपार्श्विक प्रतिभूति ऋणपत्र कहलाते हैं।

• **बांड –** किसी भी सरकारी, अर्धसरकारी संस्था या गैर सरकारी संस्था द्वारा ऋण की अभिस्वीकृति के रूप में बांड जारी किये जाते हैं। बांड व ऋणपत्र में प्रमुख अंतर है कि ऋणपत्र पूर्व निश्चित ब्याज दर के साथ निर्गमित किये जाते है जबकि बांड बिना पूर्व निर्धारित ब्याज दर के जारी किये जाते हैं। जैसे – डीप डिस्काउंट बांड तथा शून्य कूपन बांड।

शब्दावली (Glossary)

अंश(Share)– एक कंपनी की पूँजी निर्धारित मूल्य वाली छोटी छोटी इकाइयों में विभक्त होती है (जैसे ₹1 , ₹5 , ₹10, ₹100 आदि) और ऐसी प्रत्येक इकाई अंश कहलाती है।

अंश पूँजी (Share Capital)– अंश पूँजी से आशय उस राशि से है जिसे एक कंपनी अंशों का निर्गमन कर एकत्रित कर सकती है या एकत्रित कर चुकी है।

पूर्वाधिकार अंश (Preference Share)– वे अंश जिनके धारकों को समता अंशधारियों से पूर्व लाभांश प्राप्त करने का तथा समापन की दशा में समता अंशधारियों से पूर्व पूँजी वापिस प्राप्त करने का पूर्वाधिकार होता है।

समता अंश (Equity Share)– वे अंश जो पूर्वाधिकार अंश नहीं है। सामान्यतः समता अंशों के धारक ही कंपनी के वास्तविक स्वामी कहलाते है।

अधिकृत पूँजी (Authorised Capital)– कंपनी के पार्षद सीमानियम में वर्णित पूँजी की वह अधिकतम राशि , जिससे अधिक अंशों का निर्गमन कंपनी नहीं कर सकती।

निर्गमित पूँजी (Issued Capital)– अधिकृत पूँजी का वह भाग जिसे कंपनी द्वारा अभिदान के लिये जनता में निर्गमित किया गया हो।

प्रार्थित पूँजी (Subscribed Capital) – निर्गमित पूँजी का वह भाग जिसके लिए अभिदान किया जा चुका हो।

मांगी गई पूँजी (Called up Capital)– प्रार्थित पूँजी का वह भाग जिसे कंपनी द्वारा अंशधारियों से माँगा जा चुका हो।

प्रदत्त पूँजी (Paid up Capital)– कंपनी द्वारा मांगी गई पूँजी का वह भाग जिसका भुगतान अंशधारियों द्वारा कर दिया गया हो अर्थात मांगी गई पूँजी में से बकाया मांग घटाकर बची शेष राशि ही प्रदत्त पूँजी होगी।

न्यूनतम अभिदान राशि (Minimum Subscription) – कंपनी के प्रविवरण में वर्णित वह न्यूनतम राशि जिसके लिए अभिदान प्राप्त होने तथा इस अभिदान के आवेदन पत्रों पर देय राशि प्राप्त होने पर ही अंशों का आबंटन किया जा सकता है। सामान्यतः न्यूनतम अभिदान संपूर्ण निर्गमन का कम से कम 90% के बराबर अभिदान होता है।

अंश प्रमाण पत्र (Share Certificate) – कंपनी की सार्वमुद्रा के अधीन जारी किया वह प्रमाण पत्र जो इस बात का प्रथम दृष्टया साक्ष्य है कि उनमें वर्णित अंशधारी उन अंशों का स्वामी है।

प्रारंभिक सार्वजनिक प्रस्ताव(Initial Public Offer or IPO)– कंपनी द्वारा अंशों के अभिदान हेतु जनता को आमंत्रित करने हेतु किये गए प्रस्ताव को प्रारंभिक सार्वजनिक प्रस्ताव कहा जाता है।

बकाया मांग (Calls-in-Arrear)– कंपनी द्वारा अंशों के सम्बन्ध में मांगी गई वह राशि जिसका भुगतान अंशधारी द्वारा नहीं किया गया हो , बकाया मांग कहलाता है।

अग्रिम मांग (Calls-in-Advance)– कंपनी द्वारा न मांगी गई ऐसी राशि जिसका भुगतान अंशधारी द्वारा कर दिया गया हो तथा अन्तर्नियमों के अनुसार कंपनी ने स्वीकार कर लिया हो, अग्रिम मांग कहलाती हैं।

न्यून अभिदान (Under Subscription)– जब एक कंपनी को प्रस्तावित अंशों की तुलना में कम अंशों के लिए आवेदन प्राप्त होते हैं तो इसे न्यून अभिदान कहा जाता है।

अधि अभिदान (Over Subscription)– जब एक कंपनी को प्रस्तावित अंशों की तुलना में अधिक अंशों के लिये आवेदन प्राप्त होते हैं तो यह स्थिति अधि अभिदान कहलाती है।

आनुपातिक आधार पर बंटन (Pro-rata Allotment) – आनुपातिक बंटन से आशय किसी वर्ग के समस्त आवेदकों को बंटित किये गए कुल अंशों का उस वर्ग के कुल आवेदनों से अनुपात, से है।

अंशों का आबंटन (Allotment of Shares)– कंपनी के संचालकों द्वारा विभिन्न प्रावधानों के तहत अंशों के आवेदकों के मध्य अंशों का बंटवारा करने से है।

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

अंशों की निजी व्यवस्था (Private Placement)– ऐसा निर्गमन जो सार्वजानिक निर्गमन नहीं है बल्कि अंश चुने हुए व्यक्तियों या व्यक्तियों के समूह को निर्गमित किये जाते हैं, अंशों का निजी रूप से निर्गमन कहलाता है।

स्वेट समता अंश (Sweat Equity Share)– ऐसे समता अंश जो किसी कंपनी द्वारा अपने संचालकों, कर्मचारियों को बट्टे पर या रोकड़ के अतिरिक्त प्रतिफल के लिये , तकनीकी ज्ञान या बौद्धिक संपदा अधिकार उपलब्ध कराने के लिए जारी किये जाते हैं।

अधिकार अंश (Right Share)– अंश पूँजी वाली कंपनी जब भी अपनी अभिदत्त पूँजी में वृद्धि के लिए अतिरिक्त अंश निर्गमित करने का प्रस्ताव रखती हैं तो ये अंश प्रस्ताव की तिथि को कंपनी के समता अंशधारियों को प्रस्तावित किये जाते हैं। ये अंश वर्तमान अंशधारियों को कंपनी अधिनियम द्वारा प्रदत्त अधिकार के अंतर्गत मिलते हैं अतः ये अधिकार अंश कहलाते हैं।

कर्मचारी स्टॉक विकल्प योजना (Employee Stock Option Plan or ESOP)– कर्मचारी स्टॉफ विकल्प से आशय कंपनी के संचालकों, अधिकारियों या कर्मचारियों को कंपनी के अंश भावी तिथि को पूर्व निर्धारित मूल्य पर क्रय करने के दिए गए अधिकार के विकल्प से है।

एस्क्रो खाता (Escrow Account)– एस्क्रो खाते से आशय उस खाते से है जिसमें राशि उस समय तक जमा रखी जाती है, जब तक की निश्चित शर्त या कार्य पूरा नहीं हो जाए। कंपनियों द्वारा "अपने अंशों का क्रय" योजना के तहत राशि बैंक में खोले गए एस्क्रो खाते में तब तक जमा रखनी होती है जब तक दायित्वों का निर्वहन न हो जाए।

ऋणपत्र (Debenture)– ऋणपत्र से आशय एक कंपनी द्वारा जारी प्रलेख से है जो धारक से प्राप्त ऋण के प्रमाण के रूप में दिया जाता है।

अभ्यासार्थ प्रश्न(Questions for Excercise)

बहुचयनात्मक प्रश्न (Multiple Choice Questions)

1. चिट्ठे के समता एवं दायित्वों के भाग की कुल राशि में सम्मिलित होती है।
(Total amount of equity and liabilities part of the Balance Sheet includes the following):
(अ) अधिकृत पूँजी (authorised capital) (ब) निर्गमित पूँजी (issued capital)
(स) प्रार्थित पूँजी (subscribed capital) (द) चुकता पूँजी (paid up capital)

2. अंशों के निर्गमन पर प्राप्त प्रीमियम को दर्शाया जाता हैं(Premium received on issue of shares is shown on)
(अ) चिट्ठे के समता एवं दायित्व भाग पर (Equity & Liabilities part of the balance sheet)
(ब) चिट्ठे के सम्पति भाग पर (Assets part of the balance sheet)
(स) लाभ–हानि विवरण के आय भाग पर (Income part of the statement of profit & loss)
(द) लाभ–हानि विवरण के व्यय भाग पर (Expenses part of the statement of profit & loss)

3. समता अंशधारी होते हैं (Equity shareholders are) :
(अ) कंपनी के ग्राहक (customers of the company) (ब) कंपनी के अधिकारी (officers of the company) (स) कंपनी के लेनदार(creditors of the company) (द) कंपनी के स्वामी (owners of the company)

4. अंशों के निर्गमन पर प्रीमियम का उपयोग नहीं किया जा सकता
(Premium on issue of shares cannot be used for) :
(अ) सदस्यों को बोनस अंश निर्गमित करने के लिए(For issuing bonus shares to members)
(ब) सदस्यों को लाभांश बांटने के लिए(For paying dividend to members)
(स) प्रारंभिक व्ययों के अपलेखन के लिए(For writing off preliminary expenses)
(द) ऋणपत्रों के निर्गमन पर बट्टा अपलेखन के लिए(For writing off discount on issue of debentures)

5. सारणी एफ के अनुसार कंपनी अग्रिम मांग पर ब्याज दे सकती है
(As per table F a company can pay interest on calls-in-advance at) :
(अ) 8% (ब) 10% (स) 12% (द) 14%

6. न मांगी गई पूँजी का वह भाग जिसे कंपनी के समापन पर ही माँगा जा सकता है, कहलाता है।(The part of uncalled capital which can be called up only when the company being wound up is called):
(अ) निर्गमित पूँजी (Issued capital) (ब) संचित पूँजी (Reserve capital)

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

(स) पूँजी संचय (capital reserve) (द) अनिर्गमित पूँजी (Unissued capital)

7. ऋणपत्रधारी होते है (Debenture holders are) :

(अ) कंपनी के स्वामी (owners of the company) (ब) कंपनी के ग्राहक (Customers of the company)

(स) कंपनी के ऋणदाता (Loan providers of the company) (द) इनमें से कोई नहीं (None of these)

8. ऋणपत्रधारी प्राप्त करते है (Debenture holders receive):

(अ) लाभ (Profit) (ब) लाभांश (Dividend) (स) किराया (Rent) (द) ब्याज (Interest)

9. ऋणपत्रों के निर्गमन पर बट्टा या हानि, जो चिट्ठे की तिथि से 12 माह पश्चात् या संचालन चक्र की अवधि के पश्चात् अपलिखित होगा, दर्शाया जाता है (Discount or loss on issue of debentures to be written off after 12 months from the date of balance sheet or after the period of operating cycle is shown as):

(अ) अन्य गैर चालू संपत्तियां (Other non-current assest)

(ब) अन्य गैर चालू दायित्व (Other non-current liabilities)

(स) अन्य चालू सम्पत्तियां (other current assets)

(द) अन्य चालू दायित्व (other current liabilities)

10. ऐसे ऋणपत्र जो समता अंशों में परिवर्तित किये जा सकते है, कहलाते हैं (The debentures which can be converted into equity shares are called):

(अ) शोधनीय ऋणपत्र (Redeemable debentures) (ब) पंजीकृत ऋणपत्र (Registered debentures)

(स) वाहक ऋणपत्र (Bearer debentures) (द) परिवर्तनीय ऋणपत्र (Convertible debentures)

11. ऋणपत्रों के समपार्श्विक प्रतिभूति के रूप में निर्गमन की स्थिति में, यदि प्रविष्टि की जाती है तो किस खाते को नामे किया जाएगा (In the case of issue of debentures as collateral security, if entry is pass which account will be debited):

(अ) ऋण खाता (Loan account) (ब) ऋणपत्र खाता (Debenture account)

(स) ऋणपत्र उचन्त खाता (Debenture suspense account) (द) बैंक खाता (bank account)

बहुचयनात्मक प्रश्नों के उत्तर

उत्तर :	(1) द	(2) अ	(3) द	(4) ब	(5) स	(6) ब	(7) स	(8) द	(9) अ	(10) द	(11) स

अतिलघूत्तरात्मक प्रश्न (Very Short Answer Type Questions) :

1. कंपनी को परिभाषित कीजिये। (Define a company?)
2. एक व्यक्ति वाली कंपनी क्या है?(What is one person company?)
3. अंश से क्या आशय है?(What is meant by share?)
4. अंशों के दो प्रकारों के नाम बताइये?(Name of two types of share.)
5. पंजीकृत पूँजी का अर्थ बताईये।(Give the meaning of registered capital.)
6. निर्गमित पूँजी से क्या आशय है?(What is meant by issued capital?)
7. अभिदत्त अंश पूँजी से क्या आशय है?(What is meant by subscribed capital?)
8. अधि अभिदान से क्या आशय है?(What do you mean by oversubscription?)
9. परिवर्तनीय पूर्वाधिकार अंश से क्या आशय है?(What is meant by convertible preference share?)
10. अंश आबंटन से क्या आशय हैं ? (What is meant by allotment of shares?)
11. अंशों के यथानुपात बंटन से क्या आशय है?(What is meant by pro-rata allotment of shares?)
12. अंशों के प्रीमियम पर निर्गमन से क्या आशय है?(What is meant by issue of share at premium?)
13. कंपनी अधिनियम ,2013 के अन्तर्गत क्या एक कंपनी अपने अंश बट्टे पर निर्गमित कर सकती है?(Under the Companies Act 2013, can a company issue it's shares at discount?)
14. बकाया मांग का अर्थ बताईये।(Give the meaning of calls-in-arrears.)
15. ऋणपत्र का अर्थ बताइये। (Give the meaning of debenture?)
16. बांड क्या है? (What is bond?)
18. सुरक्षित ऋणपत्र से क्या आशय है?(What is meant by secured debenture?)

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

19. अपरिवर्तनीय ऋणपत्रों से क्या आशय है?(What is meant by non convertible debentures?)
20. अंश एवं ऋणपत्र में क्या अन्तर है?(What is the difference between shares and debentures?)
21. समपार्श्विक प्रतिभूति के रूप में ऋणपत्रों के निर्गमन से क्या आशय है?(What is meant by issue of debentures as collateral security?)
22. ऋणपत्रों पर ब्याज की प्रकृति क्या है?(What is the nature of interest on debentures?)
23. ऋणपत्रों के निर्गमन पर हानि से क्या आशय है?(What is meant by loss on issue of debentures?)

लघूत्तरात्मक प्रश्न (Very Short Answer Type Questions) :

1. कंपनी की मुख्य विशेषताएं क्या है?(What are the main characteristics of a company?)
2. निजी कंपनी क्या है?(What is private company?)
3. अंशों द्वारा सीमित कंपनी से आपका क्या आशय है?
   (What do you mean by the company limited by shares?)
4. समता अंश व पूर्वाधिकार अंश में चार अंतर बताइये?
   (Give four differences between equity share and preference shares).
5. अधिमान अंशों के तीन प्रकार स्पष्ट करिये।(Explain three types of the preference shares.)
6. संचित पूँजी से क्या आशय है?(What is meant by reserve capital?)
7. प्रतिभूति प्रीमियम खाते के उपयोग से सम्बंधित धारा–52 के प्रावधान बताइये।
   State the provisions in section 52 for the utilisation of Securities Premium Account.)
8. न्यूनतम अभिदान से आप क्या समझते है?(What do you mean by minimum subscription?)
9. स्वेट समता अंशों से क्या आशय है?(What is meant by Sweat Equity Shares?)
10. कर्मचारी स्टॉक विकल्प योजना का अर्थ लिखिए।(Write meaning of the Employee Stock Option Plan.)
11. एस्क्रो खाते के बारे में समझाइये।(Explain about Escrow Account.)
12. ऋणपत्र कितने प्रकार के होते है?(What are the types of debentures?)
13. अंश एवं ऋणपत्र में चार अंतर बताइये।(Give any four points of difference between shares and debentures.)
14. समपार्श्विक प्रतिभूति के रूप में ऋणपत्रों का निर्गमन का अर्थ एवं लेखांकन व्यवहार समझाइये।
Explain the meaning and accounting treatment of issue of debentures as collateral security.
15. तरुणा लि० ने ₹4,00,000 का भवन और ₹2,60,000 का संयंत्र एवं मशीनरी हरी से खरीदी । क्रय मूल्य का भुगतान ₹100 वाले 8% ऋणपत्रों का 10% प्रीमियम पर निर्गमन द्वारा किया गया। आवश्यक जर्नल प्रविष्टियाँ दीजिऐ।
Tarun Ltd. purchased building for ₹4,00,000 and plant and machinery for ₹2,60,000 from Hari. The purchase price was paid by issuing 8% debentures of ₹100 each at a premium of 10%. Give necessary journal entries.
16. अभिनव लिमिटेड ने ₹100 वाले 2000, 9% ऋणपत्र 4% बट्टे पर निर्गमित किये, जिनका शोधन 5% प्रीमियम पर होगा। अभिनव लिमिटेड की पुस्तकों में ऋणपत्रों के निर्गमन के समय की जाने वाली जर्नल प्रविष्टियाँ दीजिये।
Abhinav Ltd. issued 2000, 9% debentures of ₹100 each at 4% discount which will be redeemed at 5% premium. Pass journal entries in the books of Abhinav Ltd. at the time of issue of debentures.
17. 'बकाया ऋणपत्र' एवं 'ऋणपत्रों के निर्गमन पर हानि' को चिट्ठे में किन शीर्षकों के अंतर्गत दर्शाया जायेगा।
'Debentures outstanding' and 'Loss on Issue of Debenture' will be shown under which heads of the balance sheet.

निबंधात्मक प्रश्न (Essay Type Questions)

1. कंपनी से आप क्या समझते हैं? इसकी आवश्यक विशेषताएँ एवं कंपनी के विभिन्न प्रकारों को बताइये।
   What do you mean by company. State it's essential features and different types of companies?
2. समता अंश एवं पूर्वाधिकार अंश में क्या अंतर है? बताइये।
   What is the difference between Equity Shares and Preference Shares? Explain.
3. अंश पूँजी के विभिन्न प्रकारों का वर्णन कीजिए?

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Describe the different types of share capital.

4. पूर्वाधिकार अंश से क्या आशय है? पूर्वाधिकार अंश के विभिन्न प्रकारों का वर्णन कीजिए।

What is meant by Preference Shares? Describe the different kinds of Preference Shares.

5. ऋणपत्र से क्या आशय है? ऋणपत्र के विभिन्न प्रकारों का वर्णन कीजिये।

What is meant by Debentures? Describe the different kinds of debentures.

6. अंश एवं ऋणपत्र में अंतर लिखिये?

Write the differences between Shares and Debentures?

आंकिक प्रश्न (Numerical Questions)

1. सोना लि. ने मोना लि. से ₹ 10,00,000 की मशीन एवं ₹ 5,00,000 का फर्नीचर खरीदा। सोना लि0 ने 40% राशि का चैक से एवं शेष राशि के लिए ₹10 वाले समता अंश 20% प्रीमियम पर जारी कर भुगतान किया। उक्त व्यवहारों को दर्ज करने के लिए सोना लि0 की पुस्तकों में आवश्यक जर्नल प्रविष्टियां दीजिये।

Sona Ltd. purchased machinery of ₹10,00,000 and furniture of ₹ 5,00,000 from Mona Ltd.. Sona Ltd. paid 40% of the amount by the cheque and for the balance amount by issue equity shares of ₹10 each at a premium of 20%. Pass necessary journal entries to record the above transactions in the books of Sona Ltd..

उत्तर : (75,000 equity shares to be issued)

2. जैन लि. ने 6,00,000 की मशीन कमल से खरीदी। 50% भुगतान चैक द्वारा किया गया तथा शेष राशि के लिए कंपनी ने समता अंश ₹10 वाले 20% प्रीमियम पर निर्गमित किये। उपर्युक्त व्यवहारों की जैन लि0 की पुस्तकों में आवश्यक जर्नल प्रविष्टियाँ दीजिये।

Jain Ltd. purchased a machine of ₹6,00,000 from Kamal - 50% of the payment was made by cheque and for the remaining the company issued equity shares of ₹10 each at a premium of 20%. Give necessary journal entries in the books of Jain Ltd. for the above transactions.

उत्तर : (25000 equity share to be issued)

3. कोहिनूर लि0 की अधिकृत पूँजी ₹10,00,000 थी जो की ₹100 वाले 10000 समता अंशों में विभक्त है। इन अंशों में से 8000 समता अंश जनता को निर्गमित किये गए। समस्त अंकित मूल्य आवेदन पर देय था। जनता के द्वारा सभी अंशों के लिये अभिदान किया गया एवं समस्त धनराशि चुका दी। कोहिनूर लि0 की पुस्तकों में आवश्यक जर्नल प्रविष्टियाँ दीजिये।

The authorised capital of Kohinoor Ltd. was ₹10,00,000 which is divided into 10000 equity shares of ₹ 100 each. Out of these shares 8000 equity shares were issued to the public. The full nominal value is payable on application. All the shares were subscribed by the public and total amount was paid for. Give necessary journal entries in the books of Kohinoor Ltd..

4. राखी लि. का पंजीयन ₹20,00,000 की अधिकृत पूँजी जो ₹100 वाले 12000 समता अंशों एवं ₹100 वाले 8000, 8% पूर्वाधिकार अंशों में विभाजित थी, से हुआ। कंपनी ने 5000 समता अंश एवं 2000 पूर्वाधिकार अंश जनता को निम्न शर्तों पर प्रस्तावित किये

Rakhi Ltd. was registered with an authorized capital of ₹20,00,000 divided into 12000 equity shares of ₹100 each and 8000, 8% preference shares of ₹100 each. 5000 equity shares and 2000 preference shares were offered to public on the following terms:

	Equity Share (₹)	Preference Share (₹)
Payable on application per share (आवेदन पर देय प्रति अंश)	25	25
Payable on allotment per share (बंटन पर देय प्रति अंश)	25	45
Payable on first call per share (प्रथम मांग पर देय प्रति अंश)	25	30
Payable on second and final call per share (अंतिम मांग पर देय प्रति अंश)	25	-

सभी अंशों के लिए आवेदन किया गया एवं बंटन किया गया। समस्त देय राशियाँ समय पर प्राप्त हो गई। राखी लि0 की पुस्तकों में उक्त व्यवहारों को दर्ज करने के लिए आवश्यक जर्नल प्रविष्टियाँ दीजिये तथा अंश पूँजी को चिट्ठे में प्रदर्शित कीजिये।

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

All the shares were applied for and allotted. All money was duly received. Give necessary journal entries to record the above transactions in the books of Rakhi Ltd. and show the share capital in the balance sheet.

उत्तर: (paid up share capital ₹ 7,00,000)

5. गजेंद्र लि0 ने ₹10 वाले 30000 समता अंश अभिदान के लिए जनता को प्रस्तावित किये। प्रति अंश राशि इस प्रकार देय थीः आवेदन पर ₹3, बंटन पर ₹4 तथा शेष आवश्यकता पड़ने पर। 50,000 अंशों के लिए प्रार्थना पत्र प्राप्त हुए। 10,000 अंशों के आवेदकों को कोई अंश बंटित नहीं किये, उनकी आवेदन राशि लौटा दी गई। शेष आवेदकों को अंशों का यथानुपात बंटन किया गया। आबंटन राशि समय पर प्राप्त हो गई। उक्त व्यवहारों की जर्नल प्रविष्टियाँ दीजिये तथा चिठ्ठा तैयार कीजिये।

Gajendra Ltd. offered for subscription 30,000 equity shares of ₹ 10 each to public. Per share amount was payable as follows: on application ₹ 3 , on allotment ₹ 4 and balance as and when required. Applications were received for 50,000 shares, No share was allotted to the applicants of 10,000 shares, their application money was refunded. Shares were allotted to remaining applicants on pro-rata basis, allotment money was received in due time. Give journal entries for above transactions and prepare the balance sheet.

उत्तर : (चिटठे का योग ₹ 2,10,000)

6. ललिता लि0 की स्थापना ₹ 10,00,000 की अधिकृत पूँजी से की गई जो कि ₹ 10 वाले 1,00,000 समता अंशों में विभाजित थी। कंपनी ने जनता में 75,000 समता अंश ₹ 11 प्रति अंश के हिसाब से निर्गमित किये , जो इस प्रकार देय हैः आवेदन पर ₹ 3 , बंटन पर ₹ 4 (प्रीमियम सहित), शेष प्रथम एवं अंतिम मांग पर। जनता से 70,000 अंशों के लिए आवेदन प्राप्त हुए। निम्न के अतिरिक्त सभी धनराशियाँ समय पर प्राप्त हो गई। रमेश जिसके पास 1,000 अंश थे, बंटन तथा प्रथम मांग राशियाँ नहीं दी। सुरेश जिसके पास 2,000 अंश थे, प्रथम मांग राशि का भुगतान करने में असमर्थ रहा। उक्त व्यवहारों को कंपनी की जर्नल एवं रोकड़ बही में दर्ज कीजिये तथा चिठ्ठा तैयार करिये।

Lalita Ltd. was established with an authorised capital of ₹ 10,00,000 divided into 1,00,000 equity shares of ₹10 each, Company issued 75,000 shares to the public at ₹ 11 per share , which was payable as follows: ₹3 on application, ₹4 (including premium) on allotment and balance on first & final call. Applications were received for 70,000 shares from public, All the amount were received in time except the following: Ramesh who holds 1,000 shares, failed to pay the allotment & first and final call money. Suresh holds 2,000 shares , failed to pay first and final call money. Record the above transactions in the cash book and journal of the company and prepare balance sheet.

उत्तर : (paid up capital ₹ 6,85,000 and securities premium ₹ 69,000)

7. माधव लि0 ने ₹10 वाले 60,000 अंश जनता को निर्गमित किये, जो इस प्रकार देय थे : आवेदन पर ₹2, (1 अप्रैल 2016 को देय) , आबंटन पर ₹ 3 (1 जून 2016 को देय), प्रथम मांग पर ₹ 2.50 (1 सितंबर 2016 को देय), द्वितीय एवं अंतिम मांग ₹ 2.50 (1 फरवरी 2017 को देय) 1,00,000 अंशों के लिए आवेदन प्राप्त हुए तथा बंटन निम्न प्रकार किया गया : 50,000 अंशों के आवेदकों को पूर्ण ; 45,000 अंशों के आवेदकों को 10,000 अंश तथा 5,000 अंशों के आवेदकों को शून्य अंश बंटित किये। आवेदन पर प्राप्त अतिरिक्त राशि का उपयोग आबंटन तथा मांग राशियों पर किया गया। अग्रिम पर ब्याज सारणी–F के अनुसार चुकाया गया। उपरोक्त व्यवहारों को दर्ज करने के लिए जर्नल प्रविष्टियाँ दीजिये , यह मानते हुए कि सभी राशियाँ समय पर प्राप्त हो गयी।

Madhav Ltd. issued 60,000 shares of ₹10 each to the public, which were payable as follows : on application ₹ 2 (payable on 1st April, 2016) on allotment ₹ 3 (payable on 1st june , 2016) , on first call ₹ 2.5 (payable on 1st September,2016) , and on second & final call ₹ 2.5 (payable on 1st February,2017). Application were received for 1,00,000 shares & allotment was made as under: To applicants for 50,000 Shares-Full; to applicants for 45,000 shares- 10,000 shares and to applicants for 5,000 shares nil. Excess money received on application was utilised towards allotment and subsequent calls. Interest on calls in advance was paid as per table F. Give journal entries to record the above transactions, assuming all amounts due were received in time.

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

उत्तर : (interest on calls-in-advance ₹ 1950)

8. हिन्दुस्तान लि0 ने ₹10 वाले 50,000 समता अंश ₹ 2 प्रति अंश प्रीमियम पर जनता को निर्गमित किये, जो इस प्रकार देय थे:

आवेदन एवं बंटन पर	₹ 5 प्रति अंश (प्रीमियम सहित)
प्रथम मांग पर	₹ 3.50
द्वितीय एवं अंतिम मांग पर	₹ 3.50

85,000 अंशों के लिए प्रार्थना पत्र प्राप्त हुए। 10,000 अंशों के आवेदकों को मना कर दिया गया एवं उनकी आवेदन राशि लौटा दी गई। शेष आवेदकों को यथानुपात अंश बंटित किये गये। आवेदन एवं बंटन पर प्राप्त आधिक्य राशि का प्रयोग प्रथम मांग राशि के समायोजन में किया गया। 150 अंशों पर प्रथम मांग राशि प्राप्त नहीं हुयी। 400 अंशों पर द्वितीय एवं अंतिम मांग राशि प्राप्त नहीं हुई।

हिंदुस्तान लि0 की पुस्तकों में जर्नल प्रविष्टियां दीजिये तथा चिठ्ठे में अंश पूँजी को प्रदर्शित करिये।

Hindustan Ltd. issued 50,000 equity shares of ₹10 each at ₹2 per shares premium, to the public, which were payable as follows:

On application and allotment	:	₹5 per share (including premium)
On first call	:	₹3.5 per share
On second and final call	:	₹3.5 per share

Application were received for 85,000 shares. Applicants for 10,000 shares were refused and application money there on were returned. Shares were allotted to remaining applicants on pro rata basis. Allotment money was adjusted on the sums due on first call. First call was not received on 150 shares. Second and final call money was not received on 400 shares. Give journal entries in the books of Hindustan Ltd. and show the share capital in the balance sheet.

उत्तर : (calls-in-arrears ₹1550)

9. राजेश लि. ने 30,000 समता अंश ₹10 वाले ₹ 30 प्रति अंश प्रीमियम पर निर्गमित करने हेतु आवेदन पत्र आमंत्रित किये। राशि इस प्रकार देय थी : आवेदन पर ₹10 प्रति अंश (₹8 प्रीमियम सहित); आबंटन पर ₹ 12 प्रति अंश (₹ 9 प्रीमियम सहित); प्रथम एवं अन्तिम मांग पर – शेष राशि। 28,000 अंशों के लिए आवेदन पत्र प्राप्त हुए। सभी मांगे मांग ली गई एवं तदानुसार प्राप्त हो गई सिवाय हरी द्वारा धारित 3000 अंशों के, जो कि बंटन एवं मांग राशि का भुगतान करने में असमर्थ रहा और ओम द्वारा धारित 2000 अंशों के, जो कि मांग राशि चुकाने में असमर्थ रहा। राजेश लि. की पुस्तकों में आवश्यक जर्नल प्रविष्टियाँ दीजिए तथा उक्त मदों को चिट्ठे में प्रदर्शित कीजिए।

Rajesh Ltd. invited applications for issuing 30,000 Equity Shares of ₹10 each at a premium of ₹30 per share. The amount was payable as follows : on Application ₹10 per share (including ₹8 premium); on Allotment ₹ 12 per share (including ₹ 9 premium); on First and final call – Balance. Applications for 28000 shares were received. All the calls were made and were duly received except on 3000 shares held by Hari who failed to pay allotment and first and final call money and on 2000 shares held by Om who did not pay the first and final call. Give necessary journal entries in the books of Rajesh Ltd. and show the items in the Balance Sheet.

उत्तर : (Amtt. Received on Allotment ₹ 3,00,000 and on call ₹ 4,14,000. Total of Balance Sheet 9,94,000)

10. मॉर्डन लि. ने ₹10 वाले 10,000 समता अंशों को ₹11 प्रति अंश की दर पर जनता में प्रस्तावित किया। राशि इस प्रकार देय थी : आवेदन पर ₹ 3, आबंटन पर ₹4 (प्रीमियम सहित) तथा प्रथम एवं अन्तिम मांग ₹4. 12000 अंशों के लिए आवेदन प्राप्त हुए तथा संचालकों ने आनुपातिक बंटन किया। राकेश जिसने 240 अंशों के लिए आवेदन किया था, ने बंटन राशि के साथ ही मांग राशि का भुगतान कर दिया। सुकेश जिसे 100 अंश बंटित किये थे, ने बंटन राशि का भुगतान मांग राशि के साथ किया। आवश्यक जर्नल प्रविष्टियाँ दीजिए।

Modern Ltd. offered to public 10,000 equity shares of ₹10 each at ₹11 per share. Amount was payable as follows : on Application ₹3; on Allotment ₹4 (including premium) and on first and final call ₹4. Applications were received for 12,000 shares and directors alloted on pro rata basis.

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Rakesh, Who applied for 240 shares paid call money alongwith allotment money. Sukesh to whom 100 shares were alloted paid allotment money alongwith call money. Give necessary journal entires.

उत्तर : (Arrear of allotment received with call ₹340, calls in advance ₹800.)

11. अग्रसेन लि. ने ₹10 वाले 20,000 समता अंश जनता को आवेदन हेतु प्रस्तुत किये जिनका भुगतान निम्न प्रकार देय था : आवेदन पत्र पर ₹3, आबंटन पर ₹4 तथा प्रथम एवं अन्तिम मांग पर ₹3। 41,000 अंशों के लिए आवेदन पत्र प्राप्त हुए, आबंटन निम्नानुसार किया गया– 3000 अंशों के आवेदकों को कोई आबंटन नहीं तथा 10,000 अंशों के आवेदकों को शत–प्रतिशत, 12000 अंशों के आवेदकों को 50 प्रतिशत तथा 16000 अंशों के आवेदकों को 25 प्रतिशत। आवेदन पर प्राप्त आधिक्य राशि का उपयोग बंटन तथा मांग राशि के समायोजन में किया गया। जिन आवेदकों को कोई अंश बंटित नहीं किये गये उनकी आवेदन राशि लौटा दी गई। सभी राशियां निर्धारित समय पर वसूल हो गयी। कम्पनी की पुस्तकों में जर्नल प्रविष्टियाँ दीजिए।

Agrasen Ltd. offered 20,000 equity shares of ₹10 each to public for application, on these payment was payable as follows : ₹3 on Application, ₹4 on Allotment and ₹ 3 on first and final call. Applications were received for 41,000 shares and allotment was made as follows-Applicants of 3000 shares were allotted non shares, Applicants of 10,000 shares were allotted 100 percent shares, applicants of 12000 shares were allotted 50 percent shares and Applicants of 16000 shares were allotted 25 percent shares. Excess money received on application was adjusted on allotment and call money. The applicants to whom no shares were allotted, application money was refunded, all money was received in time. Give journal entries in the books of company.

उत्तर : (Amount refund ₹17000, Adjusted on Allotment ₹34,000 and Adjusted on call ₹12,000)

12. एक कम्पनी ने प्रत्येक ₹ 100 वाले 25,000 समता अंश जनता को निर्गमित किये। अंशों पर राशियाँ इस प्रकार देय थी– **(क)** प्रार्थना पत्र पर ₹ 30, **(ख)** बंटन पर ₹ 50 (₹10 प्रीमियम सहित), **(ग)** प्रथम एवं अन्तिम मांग पर ₹30. 60,000 अंशों के लिए आवेदन प्राप्त हुए। 10,000 अंशों के प्रार्थियों को कोई बंटन नहीं किया गया और उनकी आवेदन राशि लौटा दी गई। शेष प्रार्थियों को यथानुपात बंटन किया गया। गणेश ने, जिसको 250 अंशों का बंटन किया गया था, प्रथम एवं अन्तिम मांग राशि नहीं चुकायी। अन्य सभी अंशधारियों ने समय पर भुगतान कर दिया। उपर्युक्त व्यवहारों की कम्पनी की पुस्तकों में जर्नल प्रविष्टियाँ दीजिए।

A company issued 25000 Equity Shares of ₹100 each to public. Amount on shares were payable as follows: **(a)** ₹ 30 on Application **(b)** ₹ 50 (including premium) on Allotment **(c)** ₹ 30 on first and final call. Applications were received for 60,000 shares. No shares was allotted to the applicants of 10,000 shares and their application money was refunded. Remaining applicants were made prorata allotment. Ganesh, to whom 250 shares were allotted failed to pay first and final call money, other shareholders has paid with in time. Give journal entries for above transactions in the books of the company.

उत्तर : (Amount refund ₹3,00,000, Amount Adjusted on Allotment ₹7,50,000 and Amount received on call ₹7,42,500)

13. यतेन्द्र लि० ने ₹100 वाले 6000, 11% ऋणपत्र जनता में निर्गमित किये। सम्पूर्ण राशि 01 जुलाई 2016 को आवेदन पर देय थी। कम्पनी को 8000 ऋणपत्रों के लिए आवेदन प्राप्त हुए। संचालकों ने 31 जुलाई 2016 को यथानुपात बंटन किया तथा आधिक्य आवेदन राशि लौटा दी। कम्पनी की पुस्तकों में आवश्यक जर्नल प्रविष्टियां दीजिए, यदि ऋणपत्रों का निर्गमन **(i)** सम मूल्य पर **(ii)** 5% प्रीमियम **(iii)** 4% बट्टे पर किया जाये।

Yatendra Ltd. issued 6000, 11% Debentures of ₹100 each to the public. Whole of the amount was payable on application on 1st July 2016. The company received applications for 8000 debentures- The directors made pro-rata allotment on 31st July 2016 and refunded the excess application money- Give necessary journal entries in the books of the company, if debentures are issued **(i)** at par **(ii)** at 5% premium **(iii)** at 4% discount.

उत्तर: Excess application money will be refunded (i) ₹200000 (ii) ₹210000 (iii) ₹192000

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

14. तन्मय लि० ने ₹100 वाले 2000, 9% ऋणपत्र 20% प्रीमियम पर निर्गमित किये जिन पर राशि इस प्रकार देय थी। आवेदन पर ₹40, बंटन पर ₹45 (प्रीमियम सहित) तथा शेष राशि प्रथम एवं अंतिम मांग पर 4,000 ऋणपत्रों के लिए आवेदन पत्र प्राप्त हुए। 1000 ऋणपत्रों के आवेदकों को बंटन से मना कर दिया गया तथा शेष आवेदको में 2000 ऋणपत्रों का यथानुपात बंटन किया गया। आधिक्य आवेदन राशि बंटन पर समायोजित की गई। समस्त देय राशियाँ समय पर प्राप्त हो गई। आवश्यक जर्नल प्रविष्टियां दीजिये।

Tanmay Ltd. issued 2000, 9% debentures of ₹100 each at 20% premium, payable as follows: ₹40 on application, ₹45 (including premium) on allotment and balance on first and final call. Applications were received for 4000 debentures. Applicants for 1000 debentures were refused to allot debentures and 2000 debentures were allotted among remaining applicants. Excess application money was adjusted on allotment. All the amount was received in time. Give necessary journal entries.

उत्तर: [Amount received on allotment ₹50000]

15. राजेंद्र लि० ने ₹100 वाले 15000 12% ऋणपत्र 5% बट्टे पर निर्गमित किये, जिन पर राशि इस प्रकार देय थी : आवेदन पर 30%, बंटन पर 35% तथा शेष प्रथम एवं अंतिम मांग पर। समस्त ऋणपत्रों के लिए आवेदन प्राप्त हुए तथा बंटन किया गया। समस्त राशियाँ समय पर प्राप्त हो गयी, सिवाय 500 ऋणपत्रों के एक धारक के जिसने प्रथम एवं अन्तिम मांग का भुगतान नहीं किया। कम्पनी की जर्नल व रोकड़ बही में प्रविष्टियाँ दीजिये।

Rajendra Ltd. issued 15000 12% debentures of ₹100 each at a discount of 5%, payable as follows 30% on application, 35% an allotment and balance on first and final call. Applications were received for whole of the debentures and debentures were allotted. All the amount was received in time except one debenture holder who hold 500 debentures did not pay the first & final call. Give entries in journal and cash book of the company.

उत्तर: [balance of cash book ₹14,10,000]

16. विष्णु लि० ने विपिन से ₹12,00,000 की सम्पत्ति एवं ₹,1,92,000 के दायित्वों के साथ चालू व्यापार खरीदा। क्रय प्रतिफल का भुगतान ₹100 वाले 7% ऋणपत्र निर्गमित कर किया गया। विष्णु लि0 की पुस्तकों में व्यापार क्रय व ऋण पत्रों के निर्गमन की प्रविष्टियाँ दीजिये, यदि ऋणपत्रों का निर्गमन **(अ)** सममूल्य पर **(ब)** 5% प्रीमियम पर (स) 4% बट्टे पर किया गया हो।

Vishnu Ltd. purchased the business of Vipin with the assets of ₹12,00,000 and liabilities of ₹1,92,000. Purchase consideration was paid by issuing 7% debentures of ₹100 each. Give journal entries in the books of Vishnu Ltd., for purchase of business and issue of debentures, if debentures are issued (A) at par (B) at 5% premium (C) at 4% discount.

उत्तर : No. of debentures to be issued (A) 10,080 (B) 9,600 (C) 10,500.

17. गजेन्द्र लि० ने बैंक ऑफ़ इंडिया से ₹5,00,000 का ऋण लिया तथा समपार्श्विक प्रतिभूति के रूप में ₹ 6,00,000 के 7% ऋण पत्र बैंक के पास रखे। गजेन्द्र लि० की पुस्तकों में जर्नल प्रविष्टियां दीजिये तथा चिट्ठा बनाइये। यदि, **(i)** समपार्श्विक प्रतिभूति के रूप में निर्गमित ऋणपत्रों की प्रविष्टि नहीं की जाती है। **(ii)** यदि ऋणपत्र निर्गमन पर प्रविष्टि की जाती है।

Gajendra Ltd. took a loan of ₹ 5,00,000 from Bank of India and put 7% Debentures of ₹6,00,000 to the bank as collateral security. Give journal entries in the books of Gajendra Ltd. and draw balance sheet. If (i) no entry was made (ii) entry was passed for issue of debentures as collateral security.

18. सतीश लि० ने ₹6,00,000 के ऋणपत्रों का निर्गमन निम्न प्रकार किया–**(i)** ₹3,00,000 के 8% ऋणपत्रों को 20% प्रीमियम पर नकद के लिये। **(ii)** अर्नव लि० से ₹1,25,000 का कम्प्यूटर ख़रीदा, प्रतिफल स्वरुप उसको ₹1,50,000 अंकित मूल्य के 8% ऋणपत्र निर्गमित किये। **(iii)** बैंक से ₹1,00,000 का ऋण लिया। बैंक के पास समपार्श्विक प्रतिभूति के रूप में ₹1,50,000 के 8% ऋणपत्र जमा कराये। सतीश लि० की पुस्तकों में जर्नल प्रविष्टियाँ दीजिये एवं चिट्ठा तैयार कीजिये।

Satish Ltd. issued 8% debentures of ₹6,00,000 as follows: **(i)** 8% Debentures of ₹3,00,000 at 25% premium for cash. **(ii)** a computer of ₹1,25,000 purchased from Arnav Ltd., for the consideration of

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

it, issued 8% debentures with a nominal value of ₹1,50,000. **(iii)** taken a loan of ₹1,00,000 from bank- deposited to the bank 8% debentures of ₹1,50,000 as collateral security. Give journal entries in the books of Satish Ltd. and prepare balance sheet.

उत्तर : [Total of balance sheet ₹6,10,000],

19. निम्नलिखित परिस्थितियों में ऋणपत्रों के निर्गमन की आवश्यक जर्नल प्रविष्टियाँ दीजिये–

(i) एक कम्पनी ने ₹100 वाले 1000 12% ऋणपत्र सम मूल्य पर निर्गमित किये जो सममूल्य पर शोध्य हैं।

(ii) एक कम्पनी ने ₹100 वाले 2000 8% ऋणपत्र 10% बटटे पर निर्गमित किये जो सममूल्य पर शोध्य हैं।

(iii) एक कम्पनी ने ₹100 वाले 5000 7% ऋणपत्र 5% प्रीमियम पर निर्गमित किये जो सम मूल्य पर शोध्य हैं।

(iv) एक कम्पनी ने ₹100 वाले 3000 6% ऋणपत्र सम मूल्य पर निर्गमित किये जो 5% प्रीमियम पर शोध्य हैं।

(v) एक कम्पनी ने ₹100 वाले 4000 8% ऋणपत्र 2% बट्टे पर निर्गमित किये जो 6% प्रीमियम पर शोध्य हैं।

(vi) एक कम्पनी ने ₹100 वाले 5000 7% ऋणपत्र 5% प्रीमियम पर निर्गमित किये जो की 6% प्रीमियम पर शोध्य हैं।

Give necessary journal entries for issue of debentures in the following cases :

(I) A company issued 1000 12% debentures of ₹100 each at par, redeemable at par.

(II) A company issued 2000 8% debentures of ₹100 each at discount of 10%, redeemable at par.

(III) A company issued 5000 7% debentures of ₹100 each at a premium of 5%, redeemable at par.

(IV) A company issued 3000 6% debentures of ₹100 each at par, redeemable at 5% premium.

(V) A company issued 4000 8% debentures of ₹100 each at a discount of 2%, redeemable at 6% premium.

(VI) A company issued 5000 7% debentures of ₹100 each at a discount of 5%, redeemable at 6% premium.

20 राकेश लि० ने 01 अप्रैल 2016 को ₹8,00,000 को 12% ऋणपत्र जनता को प्रस्तावित किये प्रत्येक ₹100 वाला, सम्पूर्ण भुगतान आवेदन पर 01 मई 2016 को या इससे पूर्व देय था। निर्गमन की शर्तों के अनुसार ऋणपत्रों पर ब्याज का भुगतान छमाही आधार पर प्रतिवर्ष 30 सितम्बर व 31 मार्च को 10% आयकर काटकर किया जायेगा। जनता से 8,000 ऋणपत्रों के लिए प्रस्ताव आये। कम्पनी ने 01 जून 2016 को बंटन किया। कम्पनी की पुस्तकों में वर्ष 2016–17 में ब्याज के भुगतान एवं लाभ– हानि विवरण में अंतरण की प्रविष्टियाँ दीजिये।

Rakesh Ltd. offered to public 12% debentures of ₹8,00,000, ₹100 each. Whole amount was payable on application on or before. 1st May 2016. As per term of issue debentures interest was payable half yearly basis on 30th September and 31st March each year, after deducting income tax at the rate of 10%. Public offered to purchase 8,000 debentures. Company made allotment of debentures on 01st june 2016. Give journal entries in the books of the company for payment of debentures interest for the year 2016-17 and transferred it to Statement of Profit & Loss.

उत्तर: [debentures interest will be transfer to statement of P&L ₹80,000 on 31st March 2017]

21. जी लि० ने 01 अप्रैल 2015 को ₹100 वाले 5000 12% ऋणपत्र 4% बट्टे पर निर्गमित किये। ऋणपत्रों का शोधन ₹1,00,000 की वार्षिक क़िस्तों में 31 मार्च 2017 से प्रारम्भ किया गया। प्रतिवर्ष अपलिखित की जाने वाली बट्टे की राशि की गणना कीजिये और कम्पनी की पुस्तकों में बट्टा खाता बनाइये।

Z Ltd. issued 5000 12% debentures of ₹100 each at a discount of 4% on 01st April 2015. The debentures were repayable by annual drawing of ₹1,00,000 starting on 31st March 2017. Calculate the amount of discount to be written off each year and also prepare discount on debentures account in the books of the company.

उत्तर: [31 मार्च 2017 से प्रतिवर्ष अपलिखित किया जाने वाला बट्टा क्रमशः ₹ 5,000 , ₹ 5,000 , ₹ 4,000 , ₹3,000 , ₹ 2,000 एवं ₹ 1,000]

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

6

कम्पनी के वित्तीय विवरण एक परिचय
[Introduction of Financial Statement of Company]

अध्ययन उद्देश्य (Learning objectives)

इस अध्याय के अध्ययन के बाद आप जान पाऐंगे:

- वित्तीय विवरणों का अर्थ
- वित्तीय विवरणों की विशेषताऐं
- वित्तीय विवरणों के उद्देश्य
- कम्पनी का चिटठा/ स्थिति विवरण का प्रारूप एवं चिटठा तैयार करने के लिए सामान्य निर्देश
- कम्पनी के लाभ–हानि विवरण का प्रारूप एवं कम्पनी के लाभ–हानि विवरण तैयार करने के लिए सामान्य निर्देश

वित्तीय विवरणों का अर्थ [Meaning of Financial Statements]

वित्तीय विवरणों का आशय उन विवरणों से है जो लेखा वर्ष के अन्त में व्यवसाय की लाभदायकता (Profitability) एवं वित्तीय स्थिति (Financial Position) को प्रकट करते हैं। वित्तीय विवरण वित्तीय लेखांकन कार्य के अन्तिम उत्पाद है। ये विवरण किसी संस्था की वित्तीय सूचनाओं को संक्षिप्त रूप में प्रस्तुत करते हैं।

इस प्रकार ''वित्तीय विवरण से आशय ऐसे विवरण से है जो लेखा अवधि की समाप्ति पर व्यवसाय की वित्तीय स्थिति एवं व्यावसायिक कार्यों के परिणाम को प्रकट करता है।''

जॉन एन. मॉयर के अनुसार"वित्तीय विवरण शब्द, जैसा कि आधुनिक व्यवसाय में प्रयुक्त किया जाता है, जो दो विवरण, जिनको कि लेखापाल व्यावसायिक संस्था के लिए निश्चित अवधि के अन्त में तैयार करता है, के लिए प्रयुक्त होता है। ये विवरण चिट्ठा या वित्तीय स्थिति का विवरण और आय विवरण या लाभ–हानि विवरण है।"

कम्पनी अधिनियम 2013 की धारा 2(40) के अनुसार कम्पनी के वितीय विवरणों में निम्नलिखित को शामिल किया जाता है :-

(i) वित्तीय वर्ष के अन्त में स्थिति विवरण (Balance Sheet); **(ii)** वितीय वर्ष के लिए लाभ–हानि का विवरण (Statement of Profit & Loss); **(iii)** वित्तीय वर्ष के लिए रोकड प्रवाह विवरण (Cash Flow Statement); **(iv)** यदि लागू हो तो, समता में परिवर्तनों का विवरण (Statement of Changes in Equity); **(v)** स्पष्टीकरण नोट (Explanatory Note)

एक व्यक्ति कम्पनी (one person company), लघु कम्पनी (small company), एवं निष्क्रिय/गुप्त कम्पनी (dormant company) को अपने वित्तीय विवरणों के साथ रोकड प्रवाह विवरण बनाने से मुक्त रखा गया है।

वित्तीय वर्ष (Financial Year):कम्पनी अधिनियम 2013 की धारा 2(41) के अनुसार कम्पनी या निगमित संस्था की दृष्टि से प्रत्येक वर्ष 31 मार्च को समाप्त होने वाली अवधि को वित्तीय वर्ष कहा जाता है। इस प्रकार यदि इसका समामेलन 01 जनवरी या इसके बाद हुआ है, तो अगले वर्ष 31 मार्च को समाप्त होने वाली अवधि जिसके सम्बन्ध में कम्पनी के वित्तीय विवरण तैयार किये जाते हैं, वित्तीय वर्ष कहलायेगा।

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

कम्पनी अधिनियम 2013 की धारा 129(1) के अनुसार कम्पनी के वित्तीय विवरणों को कम्पनी की वितीय स्थिति का (i) सही एवं उचित चित्र (True and Fair view) प्रस्तुत करना चाहिए:**(ii)**धारा 133 के अनुसार लेखांकन प्रमापों का पालन करना चाहिए, तथा **(iii)** यह अनुसूची III में दिये गये निर्धारित प्रारूप में होने चाहिए।

वित्तीय विवरणों की विशेषताएँ (Characteristics of Financial Statements)

(i) वित्तीय विवरणों में सूचनाओं को मौद्रिक रूप में प्रस्तुत किया जाता है। **(ii)** वित्तीय विवरण ऐतिहासिक प्रपत्र कहलाते हैं क्योंकि ये पिछली अवधि से सम्बंधित होते हैं। **(iii)**वित्तीय विवरण संस्था की लाभप्रदता को लाभ–हानि विवरण के माध्यम से तथा वित्तीय स्थिति को चिट्ठा/विवरण के माध्यम से प्रस्तुत करते हैं। **(iv)** वित्तीय विवरण सूचनाओं के प्रयोगकर्ताओं को अनेक प्रकार की सूचनाऐं उपलब्ध कराते हैं।

वित्तीय विवरणों के उददेश्य (Objectives of Financial Statements)

वित्तीय विवरण सूचनाओं के ऐसे स्त्रोत होते है जो इनके उपयोगर्ताओं को विभिन्न प्रकार की सूचना उपलब्ध कराते हैं। वित्तीय सूचनाओं को उपयोग करने वाले अनेक वर्ग जैसे– अंशधारी, लेनदार, ऋणदाता, प्रबन्धक, कर्मचारी, सरकार, बैंक एवं वित्तीय संस्थान, कर अधिकारी अनुसंधानकर्ता आदि अनेक प्रकार के निर्णयों के लिए इन सूचनाओं का उपयोग करते हैं। इस प्रकार वित्तीय विवरणों का मुख्य उद्देश्य संस्था की वित्तीय स्थिति, निष्पादन तथा रोकड प्रवाह के बारे में सूचना देना है ताकि विभिन्न उपयोगकर्ता आर्थिक निर्णय ले सकें। संक्षेप में वितीय विवरणों के उददेश्य निम्न है :–

1.व्यावसायिक संस्था की वित्तीय स्थिति से सम्बन्धित आवश्यक सूचनाऐं उपलब्ध करवाना। **2.** व्यावसायिक संस्था की लाभदायकता से सम्बन्धित आवश्यक सूचनाऐं प्रस्तुत करना। **3.**वित्तीय विवरणों में रुचि रखने वाले विभिन्न वर्गों को पर्याप्त एवं वांछित सूचनाऐं उपलब्ध करवाना।**4.**भावी निर्णयों के लिए आधार प्रस्तुत करना। **5.** व्यवसाय की वित्तीय स्थिति एवं लाभ–हानि का सही एवं उचित चित्र (True and fair view) प्रस्तुत करना। **6.**संस्था द्वारा सामाजिक वातावरण को उन्नत करने हेतु किये गये कार्यों की जानकारी उपलब्ध कराना।

कम्पनी का चिटठा–स्थिति विवरण
(Balance Sheet of a Company)

प्रत्येक वर्ष के अन्त में कम्पनी द्वारा स्थिति विवरण एवं लाभ–हानि विवरण तैयार किये जाते हैं, जिन्हें वार्षिक खाते कहते हैं। कम्पनी के ये आधारभूत विवरण कम्पनी अधिनियम 2013 की अनुसूची III में दिये गये प्रारूप के अनुसार होने चाहिए। अनुसूची III के भाग I में स्थिति विवरण (Balance Sheet) का प्रारूप दिया गया है और भाग II में लाभ–हानि विवरण (Statement of Profit & Loss) का प्रारूप दिया गया है। इसके साथ ही इसको तैयार करने हेतु आवश्यक निर्देश (General Instructions for Preparation of Balance Sheet/ Statement of Profit&Loss) भी दिये गये हैं। अनुसूची III के अनुसार कम्पनी का चिटठा–स्थिति विवरण तैयार करने का नया शीर्ष प्रारूप (Vertical Form) निम्न प्रकार है:

PART – I
FORM OF BALANCE SHEET
Name of Company
Balance Sheet as at

Particulars	Note No.	Figures as at the end current reporting period	Figures as at the end of the previous reporting period
1	2	3	4
I. EQUITY AND LIABILITIES			
(1) Share holder's funds			
(a) Share capital			
(b) Reserves and surplus			
(c) Money received against share warrants			
(2) Share application money pending allotment			
(3) Non-Current Liabilities			
(a) Long-term borrowings			

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

(b) Deferred tax Liabilities (Net)			
(c) Other Long term Liabilities			
(d) Long-term provisions			
(4) Current Liabilities			
(a) Short-term borrowings			
(b) Trade Payables			
(c) Other current Liabilities			
(d) Short-term provisions			
Total			
II . Assets			
(1) Non-current assets			
(a) Fixed assets			
(i) Tangible assets			
(ii) Intangible assets			
(iii) Capital work-in-progress			
(iv) Intangible assets under Development			
(b) Non-current Investments			
(c) Deferred tax assets (Net)			
(d) Long-term Loan and Advances			
(e) Other non-current assets			
(2) Current assets			
(a) Current Investments			
(b) Inventories			
(c) Trade Receivables			
(d) Cash and cash equivalents			
(e) Short-term loans and Advances			
(f) Other current assets			
Total			

चिट्ठा–स्थिति विवरण तैयार करने के लिए सामान्य निर्देश

(General Instructions for Preparation of Balance Sheet)

1. **चालू सम्पति (Current Assets) -** किसी भी सम्पति को चालू सम्पति (Current Assets) तभी माना जाएगा जब वह निम्न में से किसी एक कसौटी को पूरा करती हो : **(a)** इसके कम्पनी के सामान्य संचालन चक्र (Normal operating cycle) में वसूल होने की सम्भावना है या यह विक्रय करने (sale) या उपभोग (consumption) करने के लिए है। **(b)** यह मुख्यत; व्यापार करने के लिए रखी गई है। **(c)** इसके विवरण तैयार होने की तिथि के 12 माह के अन्दर वसूल होने की सम्भावना है। शेष सभी सम्पतियों को गैर चालू सम्पति (Non-Current Assets) माना जाएगा।

2. **संचालन चक्र (Operating Cycle) –**संचालन चक्र वह समयावधि है जो किसी सम्पति के क्रय करने और इसके नकद अथवा नकद तुल्यों में परिवर्तन होने के बीच की अवधि है। जब संचालन चक्र की अवधि को मापा नहीं जा सकता है तो यह अवधि 12 माह की मान ली जाती है।

3. **चालू दायित्व (Current Liability):**किसी दायित्व को **चालू दायित्व** (Current Liability) तभी माना जाएगा जब वह निम्न में से किसी एक कसौटी को पूरा करता हो : **(a)** इसके कम्पनी के सामान्य संचालन चक्र (Normal operating cycle) की अवधि में भुगतान की सम्भावना है। **(b)** यह मुख्यतः व्यापार करने के उददेश्य से रखा गया हो। **(c)** इसके विवरण तैयार करने की तिथि के 12 माह के अन्दर भुगतान किये जाने की सम्भावना है।
शेष सभी दायित्वों को **गैर चालू दायित्व** (Non Current) माना जायेगा।

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

4. व्यापारिक प्राप्यताएं (Trade Receivables) : एक प्राप्य को व्यापारिक प्राप्यताएं के रूप में वर्गीकृत किया जाएगा, यदि वह व्यवसाय की सामान्य व्यावसायिक क्रियाओं के अन्तर्गत माल के विक्रय अथवा सेवाएं प्रदान करने के सम्बन्ध में प्राप्य राशि से सम्बन्धित है। व्यापारिक प्राप्यों में विविध देनदार (Sundry Debtors) एवं प्राप्य बिलों (Bills Receivables) को शामिल किया जाता है।

5. व्यापारिक देयताएं (Trade Payables): एक देयता को व्यापारिक देयताएं के रूप में वर्गीकृत किया जायेगा, यदि यह व्यवसाय की सामान्य व्यावसायिक क्रियाओं के अन्तर्गत **माल के क्रय** अथवा **सेवाएं प्राप्त करने** के सम्बन्ध में देय राशि से सम्बन्धित है। व्यापारिक देयताओं में विविध लेनदार (Sundry Creditors) एवं देय बिलों (Bills Payables) को शामिल किया जाता है।

6. स्थिति विवरण में दी गई मदों के स्पष्टीकरण के लिए पहले अनुसूची (Schedule) शब्द का प्रयोग किया जाता था परन्तु अब **'Notes to Accounts'**शब्द का प्रयोग किया जाता है।

अब कम्पनी निम्नलिखित को लेखांकन की टिप्पणी (Notes to Accounts) के रूप में दिखायेंगी:

समता एवं दायित्वों का स्पष्टीकरण (Explanation of Equity and Liabilities)

1. अंशधारी कोष (Shareholders Funds); (a) अंश पूँजी(Share Capital):- अंश पूँजी शीर्षक के अन्तर्गत दिखाई जाने वाली कुछ मदें निम्नलिखित हैं :–

(i)अधिकृत (Authorised) अंशों की संख्या एवं राशि; **(ii)** निर्गमित (Issued), प्रार्थित (Subscribed) और पूर्णतया चुकता (Fully paid up), और प्रार्थित परन्तु पूर्णतया चुकता नहीं(Subscribed but not fully paid) अंशों की संख्या; **(iii)** प्रति अंश का सम मूल्य (Par value); **(iv)**प्रतिवेदित अवधि के प्रारम्भ व अन्त में अदत्त अंशों की संख्या का मिलान; **(v)** कम्पनी के 15% से अधिक अंश धारण करने वाले प्रत्येक अंशधारी द्वारा धारित अंशों की संख्या को निर्दिष्ट करते हुए; **(vi)** स्थिति विवरण तैयार करने के तुरन्त पूर्व 5 वर्षों की अवधि में **(A)** अनुबंधों के पालन में बिना रोकड प्राप्त किये, पूर्णतया चुकता अंशों के रूप में अतंरित किये गये अंशों की संख्या एवं प्रकार; **(B)**बोनस अंशों के रूप में पूर्णतया चुकता अंशों के रूप में आबंटित किए गए अंशों की संख्या एवं प्रकार; **(C)** वापस क्रय किये गये (Buy Back) अंशों की संख्या एवं प्रकार। **(vii)** अदत याचनाएँ (Calls unpaid) संचालकों एवं अधिकारियों द्वारा न चुकाई गई याचनाओं की राशि को प्रदर्शित करते हुए। अदत याचनाओं को Subscribed Capital में से घटाया जायेगा। **(viii)** हरण किये गये अंशों (Forfeited shares) पर प्राप्त राशि। अंश पूँजी को लेखांकन टिप्पणी (Notes to Accounts) में इस प्रकार दर्शाया जाएगा:

Note No.	Particulars			Amount ₹
1.	**(A) Share Capital:**			
	Authorised Capital			
	…. Shares of ₹ …..each			xxx
	Issued Capital			
	… Shares of ₹ ….each			xxx
	Subscribed and Fully paid up			
	... Shares of ₹ …. Each		xxx	
	Subscribed but not Fully paid up			
	… Shares of ₹ each ₹ … colled up	xxx		
	Less: Calls in Arrears	xxx	xxx	
	Add: Shares Forfeited A/c		xxx	xxx
	Total			**xxx**

नोट:–समता अंश पूँजी (Equity share Capital) एवं पूर्वाधिकार अंश पूँजी (Preference share Capital) को पृथक–पृथक दर्शाना है।

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

उदाहरण 1:सर्वेश्वर लि. का पंजीकरण ₹ 1,20,00,000 की अधिकृत पूँजी से हुआ जो कि ₹ 10 वाले 10,00,000 समता अंशों में तथा ₹ 100 वाले 20,000 9% पूर्वाधिकार अंशों में विभाजित थी। कम्पनी द्वारा ₹ 10 वाले 2,00,000 समता अंश विक्रेताओं को सम्पति की आपूर्ति के बदले जारी किये जा चुके है तथा ₹ 100 वाले 20,000 9% पूर्वाधिकार अंश जारी किये जिनके बदले सम्पूर्ण नकद राशि प्राप्त हो चुकी है।

अब कम्पनी ने ₹ 10 वाले 4,00,000 समता अंश ₹ 3 प्रति अंश प्रीमियम पर जारी किये, भुगतान इस प्रकार देय था: आवेदन पर ₹ 4, आबंटन पर (प्रीमियम सहित)₹ 5, शेष आवश्यकता पडने पर कम्पनी को समस्त अंशों के लिए आवेदन पत्र प्राप्त हुए तथा बंटन किया गया। एक अंशधारी जिसके पास 5,000 अंश थे, उसने आबंटन राशि का भुगतान नहीं किया तथा शेष अंशधारियों द्वारा आबंटन का भुगतान कर दिया गया। उक्त सूचनाओं को कम्पनी के चिट्ठे में 'समता एवं दायित्व' भाग में दर्शाइये।

Sarvesahwar Ltd; was registered with an authorized capital of ₹ 1,20,00,000 divided in 10,00,000 equity shares of ₹ 10 each and 20,000 9% preference shares of ₹ 100 each. Company has issued 2,00,000 equity shares of ₹ 10 each to vendors in consideration for supply of assets and it has issued 20,000; 9% preference shares of ₹ 100 each on which all amount has received in cash.

Now the Company issued 4,00,000 equity shares of ₹ 10 each at a premium of ₹ 3 per share, payable as follows ₹ 4 on Applications; ₹ 5 on Allotment (including premium); balance as and when required. The Company received applications for all these shares and allotment was done by the company. A share holder holds 5,000 shares did not pay the allotment money and remaining share holders has paid allotment money. Show the above informations in the Balance Sheet of the company under. "Equity and Liabilities part."

हल: **Balance Sheet of Sarvesahwar Ltd.**

As at……

Particulars	Notes No.	Current Year ₹	Previous Year ₹
EQUITY AND LIABILITIES			
(I) Share holders' Funds			
(a) Share Capital	1	63,90,000	
(b) Reserves & Surplus	2	11,85,000	
		75,75,000	

Notes to Accounts:

(1) Share Capital			
Authorised Capital:			
20,000 9% Preference Shares of ₹ 100 each		20,00,000	
10,00,000 Equity Shares of ₹ 10 each		1,00,00,000	
		1,20,00,000	
Issued Capital			
20,000, 9% Preference shares of ₹ 100 each		20,00,000	
2,00,000 Equity shares of ₹ 10 each fully paid up issued to vendors		20,00,000	
4,00,000 Equity shares of ₹ 10 each issued to Pubilc		40,00,000	
		80,00,000	
Subscribed Capital			
Subscribed and fully paid capital			
20,000, 9% Preference shares of ₹ 100 each		20,00,000	

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

20,000 Equity shares of ₹ 100 each Fully paid up issued to vendors			20,00,000	
Subscribed but not Fully paid capital:				
4,00,000 Equity shares of ₹ 10 each issued				
to public, ₹ 6 Called up	24,00,000			
Less: Calls in Arrear on 5,000 shares @ ₹ 2	10,000		23,90,000	
			63,90,000	
(2) Reserves and Surplus:				
Securities premium (4,00,000 shares@₹3 each	12,00,000			
Less: Calls in Arrear on 5,000shares@₹3each	15,000		**11,85,000**	

(b) संचय एवं आधिक्य (Reserves and Surplus): (i) संचय एवं आधिक्य को निम्न प्रकार वर्गीकृत किया जायेगा: **(a)** पूँजी संचय (Capital Reserves); **(b)** पूँजी संशोधन संचय (Capital Redemption Reserves); **(c)** प्रतिभूति प्रीमियम संचय (Securities Premium Reserves); **(d)** ऋणपत्र शोधन संचय (Debenture Redemption Reserves); **(e)** पुनर्मूल्यांकन संचय (Revaluation Reserves); **(f)** अंश विकल्प अदत्त खाता (Share option outstanding Account); **(g)** अन्य संचय (other Reserves) (प्रत्येक संचय की प्रकृति, उददेश्य एवं राशि स्पष्ट करते हुए); **(h)** आधिक्य (Surplus) अर्थात लाभांश (Dividend), बोनस अंश एवं संचयों में हस्तान्तरण के पश्चात लाभ–हानि विवरण (Statement of Profit & Loss) का शेष।

(ii) ऐसा संचय (Reserve) जिसे विनियोग कर दिया गया हो, कोष (Fund) कहलायेगा।

(iii) लाभ–हानि विवरण (Profit & Loss Statement) के डेबिट शेष को आधिक्य (Surplus) शीर्षक के अन्तर्गत ऋणात्मक (Negative) संख्या के रूप में दिखाया जाएगा अर्थात घटाया जाएगा। इस प्रकार 'Surplus के 'Negative' शेष को Reserves and Surplus में समायोजित करने के बाद यदि Reserves and Surplus का ऋणात्मक शेष बचता है तो भी इसी शीर्षक के अन्तर्गत दिखाया जायेगा।

नोट :- 1. अंश विकल्प अदत्त खाता, कर्मचारी क्षतिपूर्ति की ऐसी योजना है जिसके अन्तर्गत कम्पनी के कर्मचारियों को यह विकल्प दिया जाता है कि वे भविष्य में निश्चित अवधि पर पूर्व निर्धारित मूल्य पर निश्चित मात्रा में अंश खरीदने के लिए आवेदन कर सकते हैं। ये अंश सामान्यतया बाजार मूल्य से कम (रियायती दर) पर दिये जाते हैं। **2. प्रारम्भिक व्यय–** भारतीय लेखा मानक AS-26 के अनुसार प्रारम्भिक व्ययों को चिट्ठे में नहीं दिखाया जाएगा अपितु जिस वर्ष वे खर्चे हुए है उसी वर्ष अपलिखित किया जाना चाहिए। प्रथम प्रतिभूति प्रीमियम से तत्पश्चात लाभ–हानि विवरण से। **3.** ऋणपत्रों के निर्गमन पर बट्टा तथा हानि को ऋणपत्रों की अवधि में या 5 वर्षो में पूँजीगत लाभों से अथवा लाभ–हानि विवरण से अपलिखित किया जाना चाहिए। **4.** अंशों के निर्गमन व्यय तथा अभिगोपन कमीशन को भी 3 से 5 वर्षो में पूँजीगत लाभों में से अथवा लाभ हानि विवरण (surplus) में से अपलिखित किया जाना चाहिए।

अनुसूची III के अनुसार Profit & Loss Appropriation Account नहीं बनाया जाएगा। इसका आशय है कि समायोजनों (Appropriations) को Notes में दिखाया जाएगा। इस हेतु अग्र उदाहरण देखें–

उदाहरण 2. विशाखा लि. की पुस्तकों में 01 अप्रैल, 2016 को निम्न शेष थे: ₹

प्रतिभूति प्रीमियम (Securities Premium)	1,00,000
ऋणपत्र शोधन संचय (Debenture Redemption Reserves)	2,00,000
लाभ–हानि विवरण (Statement of Profit & Loss)	(4,00,000)

कम्पनी ने 31.03.2017 को समाप्त होने वाले वर्ष के लिए ₹ 15,00,000 का लाभ कमाया। इसमें से सामान्य संचय (General Reserves) में ₹ 4,00,000, ऋणपत्र शोधन संचय (Debenture Redemption Reserves) में ₹ 4,00,000 अन्तरण (Transfer) करने का निश्चय किया। संचालकों ने ₹ 2,00,000 अन्तिम लाभांश (Final Dividend) का प्रस्ताव किया। उक्त मदों को स्थिति विवरण एवं लेखांकन टिप्पणी (Notes to Accounts) में दर्शाइये।

Vishakha Ltd. has the following balance on 1st April, 2016;	₹
Securities Premium	1,00,000
Debenture Redemption Reserves	2,00,000

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Statement of Profit and Loss (4,00,000)

Company earned a profit of ₹15,00,000 for the year ended 31st March,2017. It is decided to transfer ₹ 4,00,000 to General Reserves and ₹ 4,00,000 to Debenture Redemption Reserves. Directors proposed a final dividend of ₹ 2,00,000. Show the above items in the Balance Sheet and Notes to Accounts.

Extract of Balance Sheet of Vishakha Ltd.
as at 31 March, 2017

Particulars	Note No.	31-03-2017	31-03-2016
I EQUITY AND LIABILITIES:			
(1)Share holders Funds			
Reserves and Surplus	**1**	**12,00,000**	**(1,00,000)**
(2) Current Liabilities			
Short term Provisions	**2**	**2,00,000**	

Notes to Accounts

Particulars	₹	₹	31-03-2017 ₹
(1) Reserves and Surplus			
(a) Securities Premium			1,00,000
(b) Debenture Redemption Reserves			
Opening Balance		2,00,000	
Transfer from Surplus		4,00,000	6,00,000
(c) General Reserves			
Opening Balance		-	
Transfer from Surplus		4,00,000	4,00,000
(d) Surplus			
Balance of Statement of P&L (opening)		(4,00,000)	
Surplus for the period		15,00,000	
Available for Appropriations		11,00,000	
Less: Appropriations:			
Debenture Redemption Reserves	4,00,000		
General Reserves	4,00,000		
Proposed Dividend	2,00,000	10,00,000	1,00,000
			12,00,000
(2) Short term Provisions:			
Proposed Dividend			**2,00,000**

(c) अंश वारंट के बदले प्राप्त नकद राशि (Money received against share warrants) :- अंश वारंट एक सार्वजनिक कम्पनी द्वारा जारी किया गया ऐसा वित्तीय प्रलेख है जो इसके धारक को बाद की किसी तिथि पर एक निश्चित संख्या में समता अंश प्राप्त करने का अधिकार प्रदान करता है। अंश वांरट के बदले प्राप्त राशि को अंश पूँजी के रूप में नहीं दिखाया जाता है क्योंकि अभी अंशों का आबंटन होना बाकी है। अत: इसे पृथक रूप से दर्शाते हुए shareholders'fund में सम्मिलित किया जाता है।

2. अंश आवेदन राशि, जब तक आबन्टन न हो (Share Application Money Pending Allotment) :- यदि किसी कम्पनी द्वारा अंशों पर आवेदन राशि को प्राप्त कर ली गई हो, परन्तु चिटठा बनाने की तिथि तक अंशों का आबन्टन नहीं किया गया हो तो इस राशि तो इस शीर्षक के अन्तर्गत दर्शाया जाता है।

3. गैर चालू दायित्व (Non Current Liabilities):- गैर चालू दायित्व वह दायित्व है, जो चालू दायित्व नहीं है। इनका वर्गीकरण निम्न प्रकार किया गया है: **(i)** दीर्घ कालीन ऋण (Long-term Borrowings):- दीर्घकालीन ऋणों

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

से आशय कम्पनी द्वारा लिये गये ऐसे ऋणों से है जो ऋण लेने की तिथि से 12 माह पश्चात देय हो। इनका वर्गीकरण इस प्रकार है; **(a)** बॉण्ड/ऋणपत्र (Bonds/Debenture)

(b) अवधि ऋण (Term Loans) **(क)** बैंकों से **(ख)** अन्य पक्षकारों से

(c) स्थगित भुगतान दायित्व (Deferred Payment Liabilities)

(d) जमाऐं (Deposits) जो 12 माह पश्चात देय है।

दीर्घकालीन ऋणों को सुरक्षित (Secured) एवं असुरक्षित (Unsecured) उपवर्गों में भी वर्गीकृत किया जायेगा। यदि दीर्घकालीन ऋणों का कुछ भाग स्थिति विवरण की तिथि से 12 माह के भीतर देय हो तो उस भाग को अन्य गैर चालू दायित्व (other current Liabilities) शीर्षक के अन्तर्गत 'Current Maturity of Long Term Debts' के रूप में दिखाया जायेगा।

(ii) स्थगित कर दायित्व (Defferd Tax Liabilities) (Net):- लेखांकन आय पर कर और कर योग्य आय पर कर के अन्तर को स्थागित कर कहा जाता है। कर योग्य आय (Taxable Income) की गणना प्रचलित कर कानूनों के आधार पर होती है जबकि लेखांकन आय (Accounting Income) संस्था में प्रचलित लेखांकन प्रणालियों के आधार पर निर्धारित की जाती है। लेखांकन आय संस्था के लाभ हानि विवरण द्वारा प्रदर्शित की जाती है। वर्तमान में प्राय: कर आयोजन (Provision for Tax) की गणना कर योग्य आय के आधार पर की जाती है, परन्तु इसकी गणना लेखांकन आय के आधार पर भी की जा सकती है।

स्थगित कर दायित्व(Deferred Tax Liabilities):- स्थगित कर दायित्व उस समय उत्पन्न होता है जब लेखांकन आय कर योग्य से अधिक होती है।

(iii) अन्य दीर्घकालीन ऋण (Other Long Term Liabilities):- इन्हें निम्न प्रकार वर्गीकृत किया जायेगा:

(a) व्यापारिक देयताएँ (Trade Payable) - यदि ये 12 माह के पश्चात देय है। **(b)** अन्य (Others)

(iv) दीर्घकालीन आयोजन (Long Term Provisions):- वे सभी आयोजन जिनके विरूद्ध दावे स्थिति–विवरण की तिथि से 12 माह पश्चात चुकाये जाने की सम्भावना है, उन्हें 'Long Term Provisions' के अन्तर्गत दर्शाया जाता है। इन्हें निम्न प्रकार वर्गीकृत किया जाता है। **(a)** कर्मचारी हितों के लिए आयोजन (Provision for Employee Benefits) **(b)** अन्य (Others) वारन्टी के लिए आयोजन।

4. चालू दायित्व (Current Liabilities):- वे दायित्व जिनका भुगतान स्थिति विवरण तैयार करने की तिथि से 12 माह के अन्दर किये जाने की सम्भावना है। इन्हें निम्न प्रकार वर्गीकृत किया जाएगा :

(a) अल्पकालीन ऋण (Short Term Borrowings):- (i) मांग पर देय ऋण (Loan repayable on Demand):

(क) बैंकों से (From Banks) – Cash Credit and OverDraft etc; (ख) अन्य पक्षकारों से (From Others)

(ii) जमायें (Deposits); (iii) अन्य ऋण एवं अग्रिम (Other Loans and Advances)

(b) व्यापारिक देयताएँ (Trade Payables) :- यदि यह 12 माह या इससे कम अवधि में देय है। इनके उदाहरण हैं: Creditors and Bills Payable

(c) अन्य चालू दायित्व (Other Current Liabilities):- इन्हें निम्न प्रकार वर्गीकृत किया जाएगा–

(i) दीर्घकालीन ऋण जो वर्तमान में देय है (Current Maturities of Long Term Debts) - ऋणपत्रों या बैंक ऋण की वह राशि जो स्थिति विवरण की तिथि से 12 माह के अन्दर देय है।

(ii) ऋणों पर अदत्त ब्याज, किन्तु देय नहीं (Interest accrued but not due on borrowings)

(iii) ऋणों पर अदत्त एवं देय ब्याज (Interest accrued and due on Borrowings)

(iv) अग्रिम प्राप्त आय (Income Received in Advances) **(v)** न चुकाया गया लाभांश (Unpaid Dividends)

(vi) प्रतिभूतियों के आवेदन के लिए प्राप्त आधिक्य आवेदन राशि जो वापिस करनी है और इस पर देय ब्याज।

(vii) जमा राशियाँ (Deposits) जो भुगतान के लिए देय (matured) हो गयी हों परन्तु चुकाई नहीं गई है और इन पर देय ब्याज।

(viii) ऋणपत्र जो भुगतान के लिए देय (matured) हो गये हैं परन्तु चुकाए नहीं गये है और इन पर देय ब्याज।

(ix) अन्य देय राशियाँ (Other Payables) : बकाया व्यय, अग्रिम मांग एवं उस पर ब्याज, न मांगा गया लाभांश, प्रोविडेण्ट फण्ड आदि।

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

(d) अल्प कालीन आयोजन (Short term Provisions) :-ऐसे आयोजन जिनके विरूद्ध दावे स्थिति विवरण की तिथि से 12 माह के अन्दर उत्पन्न होने की सम्भावना है, उन्हें 'Short Term Provisions' के अन्तर्गत दर्शाया जायेगा। उन्हें निम्न प्रकार वर्गीकृत किया जायेगाः **(i)** कर्मचारी कल्याण आयोजन (Provision for Employee benefits) **(ii)**अन्य (जैसे –Provision for Tax, Proposed Dividend) **(iii)** संदिग्ध ऋणों के लिए आयोजन (Provision for Doubtful Debts)

सम्पतियों का स्पष्टीकरण
(Explanation of Assets)

I. गैर चालू सम्पत्तियाँ (Non Current Assets):-वे सम्पत्तियाँ जिन्हें चालू सम्पत्तियाँ के रूप में वर्गीकृत नहीं किया जाता है।

(a) स्थायी सम्पत्तियाँ (Fixed Assets) :- स्थायी सम्पत्तियाँ वे सम्पत्तियाँ हैं जिन्हें व्यवसाय में निरन्तर उपयोग के लिये रखा जाता है न कि विक्रय के लिए।

(i) मूर्त सम्पत्तियाँ (Tangible Assets):- मूर्त सम्पत्तियाँ वे सम्पत्तियाँ हैं जिन्हें भौतिक रूप से देखा या छुआ जा सकता है। इनका वर्गीकरण है:

(A) भूमि (Land) **(B)** भवन (Building) **(C)** संयत्र एवं उपकरण (Plant and Equipment) **(D)** फर्नीचर एवं साज-सज्जा (Furniture and Fixtures) **(E)** वाहन (Vehicles) **(F)** कार्यालय उपकरण (Office Equipment) **(G)** अन्य (Others)

(ii) अमूर्त सम्पत्तियाँ (Intangible Assets):- वे सम्पत्तियाँ जिनका कोई भौतिक अस्तित्व नहीं होता है तथा जिन्हें देखा व छुआ नहीं जा सकता है। इनका वर्गीकरण इस प्रकार है:

(a) ख्याति (Goodwill) **(b)** ब्राण्ड एवं व्यापारिक चिन्ह (Brands/Trade Marks) **(c)** कम्प्यूटर सॉफ्टवेयर (Computer Software) **(d)** मास्टहैड एवं प्रकाशन अधिकार (Mastheads and Publishing Titles) किसी समाचार पत्र या पत्रिका का नाम जो इसके प्रथम पृष्ठ के ऊपर छपता है, मास्ट हैड कहलाता है। **(E)** खनन अधिकार (Mining rights) **(f)** प्रतिलिप्याधिकार (Copyrights), एकस्व (Patents), अन्य बौद्धिक सम्पत्ति अधिकार (Intellectual Property Rights), सेवाएं एवं संचालन अधिकार (Services and operating rights) **(g)** नुस्खे (Recipes), फॉर्मूला (Formula), डिजाइन एवं मूलरूप (Prototypes) **(h)** लाइसेन्स एवं फ्रैन्चाईज (Licenese and Franchise)

(iii) पूँजीगत कार्य जो प्रगति पर है (Capital Work-in-Progress): पूँजीगत कार्य जो प्रगति पर है से आशय ऐसी स्थायी मूर्त सम्पतियों से है जो निर्माणाधीन है जैसे–भवन, संयत्र एवं उपकरण आदि। **(iv)** अमूर्त सम्पत्तियाँ जो विकास की दशा में है (Intangible Assets under Developments): ऐसे पेटेन्ट आदि जिन पर कार्य जारी है।

(b) गैर चालू विनियोग (Non Current Investment):- एक वर्ष से अधिक की अवधि के ऐसे विनियोग जिन्हें कम्पनी में बेचने के लिए नहीं अपितु अपने पास रखने के लिए क्रय किया हुआ है।

(i) गैर चालू विनियोगों को व्यापारिक विनियोग (Trade Investment) व अन्य विनियोग (Other Investment) में वर्गीकृत किया जाएगा।

(क) व्यापारिक विनियोग (Trade Investment) :- एक कम्पनी द्वारा अपने व्यापार एवं व्यवसाय में वृद्धि करने के उददेश्य से अन्य कम्पनी के अशोध्य ऋणपत्रों में किये गये विनियोग, व्यापारिक विनियोग कहलाते हैं।

(ख) अन्य विनियोग (Other Investment) :- व्यापारिक विनियांगों को छोडकर शेष सभी विनियोग, अन्य विनियोग कहलाते हैं। विनियोगों को पुन: निम्न प्रकार से वर्गीकृत किया जा सकता है :

(a) सम्पत्ति में विनियोग (Investment in Property):- विनियोग सम्पत्ति से आशय उस भूमि तथा भवन से है जिसे मूल्य वृद्धि अथवा किराया अर्जित करने के उद्देश्य से रखा गया है न कि **(i)** माल के उत्पादन या पूर्ति करने के लिए अथवा सेवाओं अथवा प्रशासनिक कार्यों के लिए अथवा **(ii)** व्यवसाय के सामान्य संचालन के दौरान विक्रय के लिए।

(b) समता प्रपत्रों में विनियोग (Investments in Equity Instruments)

(c) पूर्वाधिकार अंशों में विनियोग (Investments in Preference shares)

(d) सरकारी अथवा ट्रस्ट प्रतिभूतियों में विनियोग (Investments in Government or Trust Securities)

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

(e) ऋणपत्रों या बॉन्डस में विनियोग (Investment in Bonds-Debentures)
(f) म्यूच्युअल फण्डों में विनियोग (Investments in Mutual Funds)
(g) साझेदारी फर्मों में विनियोग (Investments in Partnership firms)
(h) अन्य गैर चालू विनियोग (Other Non-Current Investments)

(ii) लागत मूल्य पर मूल्यांकित न किये गये विनियोगों को इनके मूल्यांकन के आधार सहित अलग से प्रदर्शित किया जाएगा।

(iii) निम्नलिखित का भी प्रकटीकरण किया जाएगा– **(a)** स्टॉक एक्सचेंज पर सूचित विनियोग (Quoted Investments) एव इनका बाजार मूल्य **(b)** स्टॉक एक्सचेंज पर न सूचित विनियोगों (Unquoted Investment) का मूल्य। **(c)** विनियोगों के मूल्य में कमी के लिए आयोजन।

(c) स्थगित कर सम्पत्तियाँ (Deffered Tax Assets):- स्थगित कर सम्पतियां उस समय उत्पन्न होती है जब लेखांकन आय कर योग्य आय से कम होती है। उदाहरणार्थ लेखांकन आय की गणना करते समय डूबत ऋण आयोजन की राशि को घटाया जाता है जबकि कर योग्य आय की गणना करते समय डूबत ऋण आयोजन को व्यय न मानकर वास्तविक डूबत ऋण को ही व्यय माना जाता है। परिणामतः लेखांकन आय कम हो जाती है।

(d) दीर्घकालीन ऋण एवं अग्रिम (Long Term Loans and Advances):- ऐसे ऋण एवं अग्रिम जिनके स्थिति विवरण की तिथि से 12 माह के अन्दर वापिस प्राप्त होने की सम्भावना नहीं है। इन्हें निम्न प्रकार वर्गीकृत किया जाएगा: **(i)**पूँजीगत अग्रिम (Capital Advances):- स्थायी सम्पतियों को क्रय करने के लिए दिये गये अग्रिम पूँजीगत अग्रिम कहलाते है। ये अग्रिम नकद राशि में प्राप्त नहीं होते अपितु स्थायी सम्पत्ति के रूप में परिवर्तित होते हैं। अतः इन्हें दीर्घकालीन ऋण एवं अग्रिम में वर्गीकृत किया जाता है। **(ii)** जमानती जमा (Security Deposits):- स्थिति विवरण की तिथि से 12 माह से अधिक की अवधि के लिए दी गई जमानत राशि इस शीर्षक में आती है, जैसें– बिजली एवं टेलीफोन के लिए दी गई जमानत राशि। **(iii)** अन्य ऋण एवं अग्रिम (Other Loans and Advances) (Specify nature)

(e) अन्य गैर चालू सम्पत्तियाँ (Other Non-Current Assets):- (i) दीर्घकालीन व्यापारिक प्राप्य (Long Term Trade Receivables) (स्थगित उधार शर्तो पर व्यापारिक प्राप्यों सहित) **(ii)** अन्य (Others) **(iii)** दीर्घकालीन व्यापारिक प्राप्यों का वर्गीकरण निम्न प्रकार किया जाएगा– **(A) 1.** सुरक्षित जो अच्छे माने गये है (Secured, considered good), **2.**असुरक्षित जो अच्छें माने गये है (Unsecured, considered good), **3.** संदिग्ध (Doubtful)
(B)डूबत और संदिग्ध ऋणों के लिए आयोजन को उचित शीर्षक में अलग से दिखाया जाएगा।
(C)कम्पनी के संचालकों एवं अन्य अधिकारियों से देय राशियों को अलग से दर्शाया जायेगा।

II. चालू सम्पत्तियाँ (Current Assets):- वे सम्पत्तियाँ जिनके सामान्य संचालन चक्र में अथवा स्थिति विवरण की तिथि से 12 माह के अन्दर वसूल होने की सम्भावना है, जो मुख्यत; व्यापार के लिए रखी गई है। इन्हें निम्न प्रकार वर्गीकृत किया जाएगा:

(A) चालू विनियोग (Current Investments):-वे विनियोग जिन्हें क्रय करने की तिथि से 12 माह के अन्दर नकदी में परिवर्तित करने के उद्देश्य से रखा जाता है। इन्हें निम्न प्रकार वर्गीकृत किया जायेगा:
(a) समता प्रपत्रों में विनियोग (Investment in Equity Instruments), **(b)** पूर्वाधिकार अंशों में विनियोग (Investment in Preference shares), **(c)** सरकारी अथवा ट्रस्ट प्रतिभूतियों में विनियोग (Investment in Government or Trust Securities), **(d)** ऋणपत्रों अथवा बॉण्ड्स में विनियोग (Investment in Debentures or Bonds), **(e)** म्यूच्यूअल फण्डों में विनियोग (Investment in Mutual Funds), **(f)** साझेदारी फर्मो में विनियोग (Investment in Partnership Firms), **(g)** अन्य विनियोग (other Investments)

(B) स्टॉक (Inventories):- स्टॉक को निम्न प्रकार वर्गीकृत किया जाएगा:
(a) कच्चा माल (Raw Materials), **(b)** अर्द्ध निर्मित माल (Work-in-Progress), **(c)** निर्मित माल (Finished goods), **(d)** व्यापारिक रहतिया (Stock-in-Trade) (व्यापार के लिए क्रय किया गया स्टॉक), **(e)** स्टोर्स तथा स्पेयर्स (Stores and Spares), **(f)** छोटे औजार (Loose Tools) । **नोट : (1)** मार्ग में माल (Goods-in-Transit) को स्टॉक के अन्तर्गत अलग उप शीर्षक में दर्शाया जायेगा। **(2)** स्टॉक के मूल्यांकन की तिथि को स्पष्ट किया जायेगा।

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

(C) व्यापारिक प्राप्यताएँ (Trade Receivables):-व्यापार के सामान्य संचालन के दौरान माल विक्रय या सेवाएँ प्रदान करने से प्राप्य (Receivables) व्यापारिक प्राप्य कहलाते हैं। इनमें मुख्यत: 12 माह के अन्दर वसूल होने वाले देनदारों (Debtors) एवं प्राप्य बिलों (Bills Receivables) को शामिल किया जाता है।

(i) डूबत ऋण एवं संदिग्ध ऋणों के लिए आयोजन को उचित शीर्षक में दिखाया जायेगा। **(ii)** कम्पनी के संचालकों एवं अन्य अधिकारियों से देय राशियों को पृथक से दर्शाया जायेगा।

(D) नकद एवं नकद तुल्य (Cash and Cash Equivalents) (i) रोकड एवं रोकड तुल्यों को निम्न प्रकार वर्गीकृत किया जाएगा: **(a)** बैंक में शेष (Cash at Bank or Balance with Banks), **(b)** कम्पनी के पास चैक एवं ड्राफ्ट (Cheques/drafts in hands) **(c)** नकद शेष(Cash in hand) **(d)** अन्य (Others)

(ii) बैंक के पास निश्चित उद्देश्य के लिए जमा राशि(उदाहरणार्थ–unpaid dividend) को अलग से दिखाया जाता है।

(iii) बैंकों के पास ऋणों, गारन्टी या अन्य वचनदाताओं आदि के लिए रखी गई जमानत राशि को अलग से दिखाया जायेगा।

(iv) 12 माह से अधिक परिपक्वता अवधि के Bank Deposit को पृथक से दर्शाया जायेगा।

रोकड तुल्य (Cash Equivalents):- ऐसे अल्पकालीन अत्यधिक तरल विनियोग हैं जिन्हें तुरन्त रोकड में परिवर्तित किया जा सकता है और इनके मूल्य में परिवर्तन का जोखिम नहीं के बराबर होता है। किसी भी विनियोग को रोकड तुल्य तभी माना जाता है जबकि इसकी परिपक्वता अवधि कम से कम अर्थात प्राप्त करने की तिथि से 3 माह या इससे कम हो।

(E) अल्पकालीन ऋण एवं अग्रिम (Short term Loans and Advances);

(F) अन्य चालू सम्पत्तियाँ (Other Current Assets):- इस शीर्षक के अन्तर्गत वे सभी चालू सम्पत्तियाँ शामिल की जाएगी, जो उपरोक्त किसी भी शीर्षक में शामिल नहीं की जा सकती है जैसे–पूर्वदत्त व्यय (Prepaid Expenses), आपूर्तिकर्ताओं को अग्रिम (Advance to Suppliers), निवेश पर उपार्जित ब्याज (Interest accrued on Investments), अग्रिम कर (Advance Tax) आदि।

आकस्मिक दायित्वों (Contingent Liabilities) तथा वचनबद्धताओं (Commitments) का स्पष्टीकरण (जिस सीमा तक आयोजन नहीं किया गया है।)

1. आकस्मिक दायित्व (Contingent Liabilities):- ये वे दायित्व है जो वर्तमान में दायित्व नहीं हैं परन्तु जिनका होना या न होना भविष्य की किसी घटना पर आधारित होता है अर्थात दायित्व का होना निश्चित नहीं है। इनकी राशि चिटठे के योग में शामिल नहीं की जाती हैं। अत: इनकी राशि को चिटठे के नीचे Notes to Accounts में दिखाया जाता है। इनमें निम्नलिखित आकस्मिक/सांयोगिक दायित्वों को दिखाया जाता है:

(a) कम्पनी के विरूद्ध किये गये ऐसे दावे जिन्हें अभी तक कम्पनी ने देना स्वीकार नहीं किया है। **(b)** कम्पनी द्धारा यदि कोई गारन्टी ली हुई है तो उसके अन्तर्गत दायित्व। **(c)** अन्य धनराशि जिसके लिए कम्पनी सम्भाव्य रूप से उत्तरदायी है।

2. वचनबद्धताएँ (Commitments):- वचनबद्धताओं से आशय है, 'भविष्य में किन्हीं निश्चित दशाओं में किसी निश्चित समय पर किसी निश्चित कार्य को करने का अनुबन्ध।'' वचनबद्धताओं को निम्न प्रकार वर्गीकृत किया जाएगा:

(a) उन ठेकों की अनुवांछित राशि जो अभी अपूर्ण है और जिनके लिए कोई आयोजन नहीं किया गया है।

(b) आंशिक चुकता अंशों पर न मांगी हुई याचनाओं की राशि (Uncalled liability on partly paid shares)- यदि किसी कम्पनी ने किस अन्य कम्पनी के 'आंशिक चुकता अंश' विनियोग के रूप में क्रय किये हुये है तो इन अंशों पर 'न मांगी गई राशि' कम्पनी के लिए वचनबद्धता है, क्योंकि यह राशि कभी भी चुकानी पड सकती है।

(c) अन्य वचनबद्धताऐं (Other Commitments):- जैसे संचयी पूर्वाधिकार अंशों पर लाभांश की बकाया राशि (Arrear of Dividends on Cumulative Preference shares)

उदाहरण 3 : किसी कम्पनी के आर्थिक चिट्ठे में निम्नलिखित मदों को आप किन शीर्षकों के अन्तर्गत दिखाएंगे ?
Under which heads will you show the following items in the Balance Sheet of Company?

(1) अयाचित लाभांश (Unclaimed Dividend), **(2)** प्रतिभूति प्रीमियम (Securities Premium), **(3)** प्रस्तावित लाभांश (Proposed Dividend), **(4)** प्रारम्भिक व्यय (Preliminary Expenses), **(5)** स्वीकृतियॉ (Acceptances),

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

(6) ऋणपत्र (Debentures), **(7)** भुगतान के लिए ऋणपत्र (Matured Debentures), **(8)** अग्रिम मांग (Calls-in-Advance), **(9)** बकाया मांग (Calls-in-Arrears), **(10)** कर के लिए आयोजन (Provision for Tax), **(11)** पूर्वदत्त बीमा (Prepaid Insurance), **(12)** व्यापारिक चक्र के दौरान नकदी में प्राप्य अग्रिम (Advances recoverable in cash with in the operating cycle), **(13)** आंशिक चुकता अंशों पर न मांगी गई राशि (Uncalled Liability on partly paid shares), **(14)** सुरक्षित ऋणों पर अर्जित एवं देय ब्याज (Interest Accrued and due on Secured Loan), **(15)**लाभ–हानि विवरण का Dr. शेष (Debit Balance of Statement of P&L), **(16)** अंश निर्गमन के व्यय (Share issue Expenses) (To be written off after 12 months)

हल:

S.No.	Items	Heading	Sub heading (if any)
1.	Unclaimed Dividend	Current Liabilities	Other Current Liabilities
2.	Securities Premium	Shareholders Funds	Reserves & Surplus
3.	Proposed Dividend	Current Liabilities	Short term Provision
4.	Preliminary Expenses	(As per Note)	-
5.	Acceptances	Current Liabilities	Trade Payables
6.	Debentures	Non-Current Liabilities	Long term Borrowings
7.	Mutured Debentures	Current Liabilities	Other-Current-Liabilities
8.	Calls-in-Advance	Current Liabilities	Other-Current-Liabilities
9.	Calls-in-Arrears	Shareholders Funds	It is deducted from the subscribed but not fully paid capital
10.	Provision for Tax	Current Liabilities	Short term Provisions
11.	Prepaid Insurance	Current Assets	Other Current Assets
12.	Advances recoverable in cash with in the operating cycle	Current Assets	Short term Loans and Advances.
13.	Uncalled Liability on partly paid shares.	Commitments in Notes to accounts	-
14.	Interest accrued and due on Secured Loans	Current Liabilities	Other Current Liabilities
15.	Debit Balance of Statement of Profit & Loss	Shareholders funds	Reserves & Surplus (Shown as a negative figures) under 'Surplus'
16.	Share Issue Expenses (to written off after 12 months)	Be Non Current Assets	Other Non-Current Assets.

Note : Preliminary Expenses – Not shown in Balance sheet since as per AS-26 these Expenses are to be written off in the year in which they are incurred.

कम्पनी अधिनियम 2013 की अनुसूची **III** के भाग **II** में **Statement of Profit and Loss** का प्रारूप दिया गया है।

नोट : **C.B.S.E** के द्वारा अपने परिपत्र सं 43 दिनांक 02 जुलाई, 2013 में बोर्ड परीक्षाओं के लिए निम्न प्रारूप दिया गया है**:**

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

PART – II
STATEMENT OF PROFIT AND LOSS

Name of the company----------

Profit and Loss Statement for the year ended------ **(₹in……)**

	Particulars	Note No.	Figures for the current reporting period	Figures for the previous reporting period
I	**Revenue from operations**		xxx	xxx
II	**Other Income**		xxx	xxx
III	**Total Revenue (I+II)**		**xxx**	**xxx**
IV	**Expenses:**			
	Cost of Material Consumed		xxx	xxx
	Purchases of stock-in-trade		xxx	xxx
	Changes-in-Inventories of finished goods, Work-in-progress and stock-in-Trade		xxx	xxx
	Employee Benefits Expenses		xxx	xxx
	Finance Costs		xxx	xxx
	Depreciation and Amortization Expenses		xxx	xxx
	Other Expenses		xxx	xxx
	Total Expenses		**xxx**	**xxx**
V	**Profit Before Tax (III-IV)**		xxx	xxx
VI	**Tax**		xxx	xxx
VII	**Profit After Tax (V-VI)**		**xxx**	**xxx**

लाभ–हानि विवरण तैयार करने के लिए सामान्य निर्देश
(General Instructions for Preparation of Statement of Profit and Loss)

I. संचालन क्रियाओं से आगम (प्राप्ति) (Revenue from Operations):-

(अ) वित्तीय कम्पनी के अलावा अन्य कम्पनियों की दशा में संचालन क्रियाओं से आगम शीर्षक के अन्तर्गत (Notes में अलग से) निम्न को दर्शाया जायेगा:

(a) माल के विक्रय से आगम प्राप्ति (सकल), घटाइये : वापसी (Revenue from sale of products (Gross) Less: Returns)

(b) सेवाओं के विक्रय से आगम प्राप्ति (Revenue from sale of services)

(c) अन्य संचालन क्रियाओं से आगम प्राप्ति (Other operating Revenuesa) जैसे– अवशेष का विक्रय, प्राप्त कमीशन आदि। Less:**(d)**उत्पादन शुल्क (Excise Duty)

(ब)वित्तीय कम्पनी की दशा में परिचालन क्रियाओं से आय में निम्नलिखित शामिल होगा:

(a)ब्याज की आय (Interest Income), **(b)** लाभांश की आय (Dividend Income), **(c)**विनियोगों के विक्रय से शुद्ध लाभ–हानि (Net profit/Loss on sale of Investments), **(d)** अन्य वित्तीय सेवाओं से प्राप्त आय (Revenue from other financial services)

II. अन्य आय (Other Income):-अन्य आय को निम्न प्रकार वर्गीकृत किया जाएगा:

(a) ब्याज की आय ((Interest Income), **(b)** लाभांश की आय (Dividend Income). **(c)** विनियोगों के विक्रय से शुद्ध लाभ–हानि (Net profit/Loss on sale of Investment), **(d)** अन्य गैर संचालन आय (Other Non-operating Income) (इस प्रकार की आय में से उससे सम्बधित व्यय घटाकर शुद्ध आय दर्शायी जाएगी) जैसे–**(i)** स्थायी सम्पत्तियों के विक्रय पर लाभ (Profit on Sale of Fixed Assets), **(ii)** बट्टा कटौती प्राप्त की (Discount Received), **(iii)** किराया प्राप्त किया (Rent Received), **(iv)** हस्तांतरण शुल्क (Transfer fees), **(v)** अपलिखित किय गये विविध लेनदार (Sundry Creditors written off), **(vi)** डूबत ऋण आयोजन के आधिक्य का पुनर्लेखन

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

(Excess provision for bad debts written back), **(vii)** प्रोजेक्ट परामर्श से आय (Revenue from project consultancy), **(viii)** ऋण उपलब्ध करवाने से फीस (Fees received from arranging loans), **(ix)** विविध मदों का विक्रय (Sale of miscellaneous Items) जैसे– News papers etc. **(x)**कर वापसी (Refund of Income Tax)

III. व्यय (Expenses):-व्यय वर्ग के अन्तर्गत निम्न मदों को दर्शाया जायेगा:

(a) सामग्री उपभोग की लागत (Cost of Materials Consumed):- सामग्री उपभोग की लागत से आशय वस्तु/माल के निर्माण में प्रयुक्त कच्चे माल (Raw Materials) तथा अन्य सामग्री की लागत से है। प्रयुक्त सामग्री की लागत की गणना इस प्रकार की जाएगी:

Cost of Material consumed = Opening Inventory (stock) of Raw materials + Purchases of materials-closing Inventory (stock) of Raw materials

नोट: ऐसी वस्तुएँ जो भौतिक रूप से निर्मित माल का अंग नहीं बनती हैं जैसे– स्टोर्स (Stores), ईंधन (Fuel), अतिरिक्त पुर्जे (Spares parts) आदि को कच्चे माल में शामिल नहीं किया जाता। इन्हें 'Other Expenses' के अन्तर्गत दर्शाया जाता हैं।

(b) व्यापारिक रहतिये का क्रय (Purchase of stock-in-Trade):- किसी व्यापारिक संस्था द्वारा जो माल पुन:विक्रय के उद्देश्य से क्रय किया है उसे purchase of stock-in-trade कहा जाता है। इसके अतिरिक्त कोई भी माल किसी अन्य माल के उत्पादन प्रक्रिया में प्रयोग करने हेतु खरीदा गया है, उसकी लागत सामग्री उपभोग की लागत में शामिल होगी।

(c) निर्मित माल, अर्द्ध निर्मित माल तथा व्यापारिक रहतिये के स्टॉक में परिवर्तन (Changes in Inventories of finished goods, work-in-progress and stock-in-Trade) इसे निम्न प्रकार से दर्शाया जायेगा;

(i)	Opening Inventory of finished goods	xxx	
	Less: closing Inventory of finished goods	xxx	**xxx**
(ii)	Opening Inventory of work-in-progress	xxx	
	Less: closing Inventory of work-in-progress	xxx	**xxx**
(iii)	Opening Inventory of stock-in-Trade	xxx	
	Less: closing Inventory of stock-in-Trade	xxx	**xxx**
Total (i+ii+iii)			**xxx**

नोट: प्रारम्भिक रहतिये (Opening Inventory) एवं अन्तिम रहतिये (closing Inventory) का शुद्ध अन्तर धनात्मक/ऋणात्क हो सकता हैं।

(d)कर्मचारियों के हित के व्यय (Employee Benefit Expenses):-इसमें निम्न को अलग–अलग दिखाया जाएगा:

(i) वेतन एवं मजदूरी (Salaries and Wages), बोनस, छुटिटयों के बदले नकद भुगतान **(ii)** भविष्य निधि एवं अन्य कोषों में अंशदान (Contribution to Provident and other Funds) जैसे– Gratuity fund, Superannuation funds **(iii)**कर्मचारी कल्याण व्यय (Staff welfare Expenses) जैसे– केण्टीन व्यय, चिकित्सा व्यय (Medical Expenses), Employees stock option schemesa (ESOS), Employee stock Purchase (ESPP) etc.

(e) वित्तीय लागतें (Finance costs):- वित्तीय लागतों का वर्गीकरण निम्न है जैसे :

(i) ब्याज व्यय (Interest Expenses):–(क) बैंक से लिये गये दीर्घकालीन ऋण पर ब्याज का भुगतान। **(ख)** बैंक अधिविकर्ष नकद साख सीमा (Bank overdraft and cash credit limit) पर ब्याज का भुगतान। **(ग)** ऋणपत्र, वचनपत्र (Bonds) तथा सार्वजनिक जमाओं पर ब्याज का भुगतान।

(ii) अन्य ऋण लेने की लागत (Other Borrowing Costs): जैसे–**(क)** ऋणपत्रों के निर्गमन पर बटटा (Discount) या हानि (Loss) का अपलेखन। **(ख)** ऋणपत्रों के शोधन पर देय प्रीमियम। **(ग)** ऋण प्रोसेसिग फीस (Loan Processing fees) **(घ)** गारन्टी शुल्क (Guarantee charges) (च) जमा एकत्रित करने के दिया लिए जाने वाला कमीशन (Commission paid for deposit mobilization) आदि।

(f) ह्रास एवं प्रत्युत्सर्जन/अपलेखन व्यय (Depreciation and Amortization Expenses)

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

(i) ह्रास (Depereciation)- ह्रास मूर्त सम्पतियों को अपलिखित करने की लागत हैं। **(ii) प्रत्युत्सर्जन/ अपलेखन (Amortization)-** दीर्घकालीन अमूर्त सम्पतियों के अपलेखन की लागत को प्रत्युत्सर्जन कहा जाता हैं। जैसे–Goodwill, Patents, Technical know how, Computer software का अपलेखन।

(g) अन्य व्यय (other Expenses): अन्य सभी व्यय जो उपर्युक्त (a) से (f) शीर्षक में नहीं लिखे गये हैं, उन्हें इस शीर्षक के अन्तर्गत लिखा जाएगा।

(i) गाडी भाडा (Carriage, Carriage Inwards and Carriage outwards), **(ii)** भाडा (Freight), **(iii)** छोटे औजारों, स्पेयर पार्टस, स्टोर्स पावर तथा ईंधन का उपभोग(Consumption of Loose Tools, spare parts, Stores, power & fuel), **(iv)** निर्माण व्यय (Manufacturing Expenses),(**(v)** किराया, दर एवं कर (Rent, Rates and Taxes) (आयकर को छोडकर), **(vi)** बीमा व्यय (Insurance Expenses Less prepaid if any), **(vii)** छूट दी (Discount allowed), **(viii)** कमीशन चुकाया (Commission allowed), **(ix)**संचालकों की फीस (Directors fees), **(x)** अंकेक्षण फीस (Audit fees), **(xi)**व्यापारिक व्यय (Trade Expenses)**(xii)** डूबत ऋण अपलेखन एवं डूबत ऋण आयोजन (Bad debts written off and provision for bad debts), **(xiii)** मशीनरी, भवन एवं अन्य स्थायी सम्पत्तियों की मरम्मत के व्यय (Repairs to machinery, Building and other fixed Assets), **(xiv)**कार्यालय एवं प्रशासन व्यय (Office and Administration Expenses), **(xv)** टेलीफोन व इंटरनेट व्यय (Telephone and Internet Expenses), **(xvi)** यात्रा व्यय (Conveyance Expenses and Travelling Expenses), **(xvii)** बैंक व्यय (Bank charges), **(xviii)** उत्पादन शुल्क का भुगतान (Excise Duty Paid), **(xix)** स्थायी सम्पत्तियों के विक्रय पर हानि (Loss on Sale of fixed Assets), **(xx)**मनोरंजन व्यय (Entertainment Expenses), **(xxi)**व्यवसाय संवर्द्धन व्यय (Business Promotion Expenses), **(xxii)** कोरियर व्यय (Courier Expenses), **(xxiii)** पट्टे का किराया (Lease Rent), **(xxiv)** कम्प्यूटर को किराये पर लेने के व्यय (Computer hiring charges), **(xxv)** अंश निर्गमन व्यय का अपलेखन (Share Issue Expenses written off), **(xxvi)** अंश निर्गमन के अभिगोपन कमीशन का अपलेखन (Underwriting- commission on issue of shares written off).

उदाहरण 4 : निम्नलिखित सूचना से 31 मार्च, 2017 को समाप्त होने वाले वर्ष के लिए लाभ–हानि विवरण में दर्शायी जाने वाली 'रहतिये में परिवर्तन'(Changes in Inventories) की राशि की गणना के लिए लेखा टिप्पणी तैयार कीजिये।

From the following informations for the year ending 31st March, 2017, Prepare Notes to Accounts to calculate the amount to be shown in Statement of Profit & Loss, against 'Changes in Inventory':

	Opening Inventory ₹	Closing Inventory₹
Finished Goods	6,50,000	4,80,000
Work-in-progress	3,60,000	5,00,000
Stock – in- Trade	7,00,000	6,90,000
Materials	2,00,000	3,00,000

हल ; **Notes to Accounts**

Particulars	**₹**	**Year ended 31-03-2017 ₹**
Changes in Inventories of Finished Goods, WIP and Stock-in-Trade		
(a) Opening Inventory of Finished Goods	6,50,000	
Less: Closing Inventory of Finished Goods	4,80,000	1,70,000
(b) Opening Inventory of Work-in-Progress	3,60,000	
Less: Closing Inventory of Work-in-progress	5,00,000	(1,40,000)
(c) Opening Inventory of Stock-in-Trade	7,00,000	
Less: Closing Inventory of Stock-in-Trade	6,90,000	10,000
Total (a+b+c)		**40,000**

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

नोटः सामग्री (Materials) के प्रारंम्भिक व अन्तिम स्टॉक को सामग्री उपभोग की लागत (Cost of Materials Consumed) की गणना में प्रयुक्त किया जाएगा।

उदाहरण 5 : 31 मार्च, 2017 को समाप्त होने वर्ष के लिए अर्नव लि. की पुस्तकों से ली गयी निम्नलिखित सूचनाओं से लाभ–हानि विवरण तैयार कीजिए:

Following informations extracted from the books of Arnav Ltd.. Prepare a Statement of Profit and Loss for the year ending 31st March,2017.

विक्रय(Sales) ₹ 32,00,000 ; व्यापारिक रहतिये का क्रय (Purchase of stock-in-trade) ₹13,20,000; वेतन (Salaries) ₹ 5,40,000 ; मजदूरी (Wages) ₹ 40,000 ; बोनस (Bonus) ₹ 62,000 ; चिकित्सा व्यय (Medical Expenses) ₹ 18,000 ; ग्रेच्युइटी का भुगतान (Gratuity paid) ₹ 60,000 ; भविष्य निधि कोष में अंशदान (Contribution to Provident Fund) ₹ 80,000 ; प्रिंटिग एवं स्टेशनरी (Printing & Stationary) ₹ 25,000 ; विक्रय संवर्द्धन व्यय (Sales Promotion Expenses) ₹40,000 ; ऋणपत्रों पर ब्याज का भुगतान (Interest paid on Debentures) ₹ 70,000 ; फर्नीचर पर ह्रास (Depreciation on Furniture) ₹ 25,000 ; प्रारम्भिक व्यापारिक रहतिया (opening Stock-in-Trade) ₹ 1,40,000 ; अन्तिम व्यापारिक रहतिया (Closing Stock-in-Trade) ₹ 2,00,000 ; अवशेष का विक्रय (Sale of scrap) ₹ 90,000 ; एवं ब्याज प्राप्त (Interest Received) ₹ 30,000 ।

हल:

Arnav Ltd.

STATEMENT OF PROFIT AND LOSS

For the year ended 31 March, 2017

Particulars	Note No.	Amount ₹
I. Revenue from Operations	1	32,90,000
II. Other Income	2	30,000
III. Total Revenue (I+II)		**33,20,000**
IV Expenses		
Purchase of stock-in-Trade		13,20,000
Change in Inventories of Stock-in-Trade	3	(60,000)
Employee Benefit Expenses	4	8,00,000
Finance Costs	5	70,000
Depreciation and Amortization	6	25,000
Other Expenses	7	65,000
Total Expenses		**22,20,000**
V Profit Before Tax (III-IV)		**11,00,000**

Notes to Accounts:

Particulars		Amount ₹
1. Revenue From Operations : Sales	**32,00,000**	**32,90,000**
2. Other Income		
Sale of Scrap	90,000	
Interest received	30,000	**30,000**
3. Changes in Inventories of Stock-in-Trade		
Opening Inventory	1,40,000	
Less: Closing Inventory	2,00,000	**(60,000)**
4. Employee Benefit Expenses		
Wages	40,000	
Salaries	5,40,000	
Bonus	62,000	

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Medical Expenses	18,000	
Contribution to Provident fund	80,000	
Gratuity paid	60,000	**8,00,000**
5. Finance Cost:		
Interest on Debenture		**70,000**
6. Depreciation and Amortization		
Depreciation on Furniture		**25,000**
7. Other Expenses:		
Printing and Stationary	25,000	
Sales Promotion Expenses	40,000	**65,000**

उदाहरण 6: निम्नलिखित सूचनाओं से कम्पनी अधिनियम, 2013 की अनुसूची III के प्रावधानों के अनुसार स्टार लि.का 31 मार्च 2017 का स्थिति विवरण तैयार कीजिए:

From the following informations, prepare Balanace Sheet of Star Ltd. as at 31st March, 2017 according to provisions of schedule III of Companies Act, 2013. (₹ in thousand)

Equity Share Capital ₹ 4,000; Preference Share Capital ₹ 1,000; Discount on issue of Debentures (Amount to be written off in next three year) ₹ 300; Trade Receivables ₹ 6,100; Bills Payables ₹ 2,500; Preliminary Expenses ₹ 300; Securities Premium ₹ 3,000; Debentures₹ 3,500; Statement of profit and loss (Cr.) ₹ 1,200; Depreciation on Fixed Assets ₹ 800; Gross Fixed Assets ₹ 9,100; Goodwill ₹ 50; Inventories ₹ 210; Provision for Tax₹ 60;

STAR LTD.

Balance Sheet (As at 31 March, 2017) **(₹ in Thousand)**

Particulars	Note No.	Amount ₹ 31-03-2017
I EQUITY AND LIABILITIES		
(1) Share holders funds		
(a) Share Capital	1	5,000
(b) Reserves and surplus	2	3,900
(2) Non Current Liabilities		
(a) Long Term Borrowings (Debentures)		3,500
(3) Current Assets		
(a) Trade Payables (Bills Payables)		2,500
(b) Short term provisions (Provision for Tax)		60
Total		**14,960**
II Assets		
(1) Non Current Assets		
(a) Fixed Assets		
(i) Tangible Assets	3	8300
(ii) Intangible Assets		50
(b) Other Non-Current-Assets	4	200
(2) Current Assets		
(a) Inventories		210
(b) Trade Receivables		6,100
(c) Other Current Assets	5	100
Total		**14960**

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Notes to Accounts:

Particulars	₹	₹	31-03-2017 ₹
1. Share Capital			
Equity Share Capital		4,000	
Preference Share Capital		1,000	**5,000**
2. Reserves and Surplus			
Securities Premium	3,000		
Less: Preliminary Expenses	300	2,700	
Surplus: Statement of Profit & Loss		1,200	**3,900**
3. Tangible Assets			
Gross Fixed Assets		9,100	
Less: Depreciation on Fixed Assets		800	**8,300**
4. Other Non Current Assets			
Discount on issue of Debentures (2/3 of ₹ 300)			**200**
5. Other Current Assets			
Discount on issue of Debentures (1/3of ₹300)			**100**

Note :- (1) ऋणपत्रों के निर्गमन पर बटटे को आगामी 3 वर्ष में अपलिखित करना है, अतः 300/3 = ₹ 100 जो आगामी 12 माह में अपलिखित होता है, वह चालू सम्पत्ति माना जाएगा तथा शेष 2/3 गैर चालू दायित्व के रूप में दर्शाया जायेगा। (2)AS-26 के अनुसार प्रारम्भिक व्यय उसी वर्ष अपलिखित किये जाने हैं। प्रथम इन्हें प्रतिभूति प्रीमियम से तथा शेष लाभ हानि विवरण से अपलिखित किया जायेगा।

उदाहरण 7: एक कम्पनी के स्थिति विवरण में आप निम्न मदों को किन शीर्षकों के अन्तर्गत दिखायेंगे :

Under which heads will you show the following items in the Balance Sheet of a company:

(1) कम्प्यूटर (Computer), **(2)** कम्प्यूटर साफ्टेवयर (Computer software), **(3)** खुले औजार (Loose tools), **(4)** कर्मचारी हित आयोजन (Provision for Employee benefits), **(5)** ऋणपत्र शोधन कोष (Debentures sinking fund), **(6)** न चुकाया गया लाभांश (Unpaid Dividend), **(7)** सार्वजनिक जमायें (Public Deposits), **(8)** कम्पनी द्वारा दी गई गारन्टी (Guarantee Given by the Company), **(9)** बंधक ऋण (Mortgage Loan), **(10)** बकाया वेतन (Outstanding Salary), **(11)** चालू कार्य (Work-in-progress), **(12)** निर्माणाधीन भवन (Building under construction)

हल:

S. No.	Items	Heading	Sub Heading
1.	Computer	Non-Current Assets	Fixed Assets-Tangible Assets
2.	Computer Software	Non-Current Assets	Fixed Assets-Tangible Assets
3.	Loose Tools	Current Assets	Investment
4.	Provision for Employee benefits	Non Current Liabilities	Long term provision
5.	Debenture Sinking Fund	Shareholder's Funds	Reserves and Surplus
6.	Unpaid Dividend	Current Liabilities	Other Current Liabilities
7.	Public Deposits	Non Current Liabilities	Long Term Borrowings
8.	Guarantee Given by the Company	Contingent Liabilities and commitment (In Notes to	-

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

		Accounts under contingent Liabilities)	
9.	Mortgage Loan	Non Current Liabilities	Long Term Borrowings
10.	Outstanding Salary	Current Liabilities	Other Current Liabilities
11.	Work-in-Progress	Current Assets	Inventories
12.	Building under Construction	Non Current Assets	Fixed Assets – Capital work-in-progress

उदाहरण 8: निम्नलिखित मदों को कम्पनी के लाभ–हानि विवरण में किस मुख्य शीर्षक (Major Heads) के अन्तर्गत दिखाया जायेगा:–

Under which major heads, the following items will be shown in the Statement of Profit and Loss of a company:

(i) Depreciation on Machine **(ii)** Bonus **(iii)** Purchase of Stock-in-Trade **(iv)** Interest paid on Term Loan **(v)** Computer Software written off **(vi)** Revenue from services rendered **(vii)** Interest paid on overdraft **(viii)** Loss-on-Issue of Debenture written off **(ix)** Contribution to Provident/ Superannuation fund **(x)** Bank Charges **(xi)** Profit on sale of plant **(xii)** Loan processing charges **(xiv)** Canteen Expenses **(xv)** Return of material purchased

हल :

S. No.	Items	Major Head
(i)	Depreciation on Machine	Depreciation and Amortisation Expenses
(ii)	Bonus	Employee Benefit Expenses
(iii)	Purchase of stock-in-Trade	Purchase of Stock-in-Trade
(iv)	Interest paid on Term Loan	Finance Costs:Interest Expenses
(v)	Computer Software written off	Depreciation and Amortization Expenses
(vi)	Revenue from services rendered	Revenue from operations
(vii)	Interest paid on overdraft	Finance Costs:Interest Expenses
(viii)	Loss on issue of Debentures written off	Finance Costs-other Borrowing Costs
(ix)	Comtrubution to Provident/Superannuation fund	Employee Benefits Expenses
(x)	Bank Charges	Other Expenses
(xi)	Profit on sale of plant	Other Income : other Non operating Income
(xii)	Loan Processing Charges	Finance Cost-other Borrowing Costs
(xiii)	Bad Debts written off and Provision for Bad Debts	Other Expenses
(xiv)	Canteen Expenses	Employee Benefit Expenses
(xv)	Return of material purchased	Cost of Mateiral Consumed (Less from Calculations)

नोट: **(1)** Finance Cost शीर्षक के अन्तर्गत चुकाया गया ब्याज Interest Expenses के रूप में दर्शाया जाता है।

(2) ऋण लेने के सम्बन्धित व्यय या ऋण लेते समय हानियॉ (Discount/Loss on Issue of Debentures) Finance Cost शीर्षक के अन्तर्गत Other Borrowing Costs के रूप में दर्शायी जायेगी।

(3) Bank Charges – उक्त के अतिरिक्त व्यय है। अत: इसे Other Expenses के रूप में दर्शाया जायेगा।

(4) Return of Material Purchased को Cost of Material Consumed की गणना करते समय घटाया जायेगा।

सारांश (Summary)

- **वित्तीय विवरणों का अर्थ –** वित्तीय विवरणों से आशय ऐसे विवरणों से है जो निश्चित अवधि के अन्त में तैयार किये जाते हैं। स्थिति विवरण एक निश्चित तिथि को संस्था की सम्पतियों, दायित्वों एवं पूँजी को प्रदर्शित करता है तथा

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

लाभ–हानि विवरण निश्चित समयावधि के कार्य निष्पादन के परिणाम प्रदर्शित करता है। वित्तीय विवरणों के माध्यम से ही सस्था बाहरी उपयोगकर्ताओं को वित्तीय सूचनाओं का सम्प्रेषण करती है।

- **वित्तीय विवरणों में शामिल मुख्य विवरण** – मुख्यतः निम्न को शामिल किया जाता है :
  (i) स्थिति विवरण या चिट्ठा, **(ii)** लाभ–हानि विवरण, **(iii)** रोकड प्रवाह विवरण
- **स्थिति विवरण** – वह विवरण जो एक निश्चित तिथि को सस्था की सम्पत्तियों, दायित्वों एवं पूँजी को दर्शाता है।
- **लाभ–हानि विवरण** – वह विवरण जो संस्था की एक निश्चित समयावधि के कार्य–निष्पादन की स्थिति के निर्धारण हेतु तैयार किया जाता है। इस विवरण में संस्था द्वारा अर्जित आगम एवं आगम के अर्जन पर हुए व्ययों को दर्शाया जाता है। इसका शेष शुद्ध लाभ या हानि प्रदर्शित करता है।
- **रोकड प्रवाह विवरण** – वह विवरण जो एक निश्चित समयावधि के दौरान होने वाली रोकड की प्राप्तियों एवं भुगतानों को प्रदर्शित करता हो। यह रोकड खाते से भिन्न होता है।
- **वित्तीय विवरणों की विशेषताएँ** – वित्तीय विवरणों की विशेषताएँ निम्न है:
  (i) इनमें सूचनाओं को मौद्रिक रूप में प्रस्तुत किया जाता है। **(ii)** ये ऐतिहासिक प्रपत्र होते हैं, **(iii)** ये संस्था की वित्तीय स्थिति एवं लाभ–हानि को दर्शाते हैं, **(iv)** ये सूचनाओं के उपयोगकर्ताओं को आवश्यक सूचना उपलब्ध कराते हैं।
- **वित्तीय विवरणों के उपयोगकर्ता–** वित्तीय विवरणों का उपयोग अनेक वर्गो यथा – अंशधारी, लेनदार, ऋणदाता, प्रबन्धक कर्मचारी, सरकार, बैंक एवं वित्तीय संस्थान तथा कर अधिकारी आदि के द्वारा किया जाता है।
- **वित्तीय विवरणों के उददेश्य** –वित्तीय विवरणों के मुख्य उद्देश्य निम्न है:
  (i) वित्तीय स्थिति से सम्बधित सूचना उपलब्ध करवाना, **(ii)** लाभदायकता से सम्बन्धित सूचना प्रस्तुत करना, **(iii)** विवरणों के उपयोगकर्ताओं को पर्याप्त एवं वांछित सूचना उपलब्ध करवाना,**(iv)**भावी निर्णय के लिए आधार, **(v)** वित्तीय स्थिति एवं लाभ–हानि का सही एवं उचित चित्रण करना, **(vi)** सामाजिक वातावरण के उन्नयन हेतु किये गये कार्यों की जानकारी।

शब्दावली (Glossary)

क्रम संख्या	हिन्दी	अंग्रेजी	विवरण
1.	वित्तीय विवरण	Financial Statements	कम्पनी की वित्तीय स्थिति एवं कार्य निष्पादन के परिणाम प्रदर्शित करने वाले विवरण पत्र।
2.	वित्तीय वर्ष	Financial Year	सामान्यतः प्रत्येक वर्ष 31 मार्च को समाप्त होने वाली अवधि को वित्तीय वर्ष कहते हैं।
3.	चालू सम्पत्ति	Current Assets	वे सम्पत्तियाँ जो व्यवसाय की सामान्य दशा में सामान्य संचालन चक्र की अवधि में या चिटठे की तिथि से 12 माह में नकद में परिवर्तित हो जाती हैं।
4.	गैर चालू सम्पत्तियाँ	Non Current Assets	चालू सम्पत्तियाँ के अतिरिक्त शेष सभी सम्पत्तियाँ गैर चालू सम्पत्तियाँ कहलाती है।
5.	संचालन चक्र	Operating Cycle	संचालन चक्र वह समयावधि है जो किसी सम्पति को क्रय करने और इसके नकद अथवा नकद तुल्य में परिवर्तन होने के बीच लगती हैं।
6.	चालू दायित्व	Current Liablilites	वे दायित्व जिनका भुगतान सामान्य संचालन चक्र की अवधि में या चिटठे की तिथि से 12 माह में करना हॅ।
7.	गैर चालू दायित्व	Non Current Liabilities	वे दायित्व जिनका भुगतान चिट्ठे की तिथि से 12 माह के पश्चात करना है।
8.	स्थगित कर दायित्व	Deffered Tax Liabilities	स्थगित कर दायित्व उस समय उत्पन्न होता है जब लेखांकन आय, कर योग्य आय से अधिक होती है।

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

9.	दीर्घकालीन आयोजन	Long Term Provisions	वे सभी आयोजन जिनके विरूद्ध दावे स्थिति विवरण की तिथि से 12 माह पश्चात चुकाये जाने की सम्भावना हैं।
10.	अल्पकालीन ऋण	Short Term Loan	ऐसे ऋण जो ऋण लेने की तिथि से 12 माह के अन्दर चुकाये जाते है, अल्पकालीन ऋण कहलाते हैं।
11.	व्यापारिक देयताएँ	Trade Payables	माल के क्रय अथवा सेवायें प्राप्त करने के सम्बन्ध में देय राशियॉ। इनमें लेनदार एवं देय विपत्रों को शामिल किया जाता है।
12.	दायित्व	Liability	भविष्य में चुकायी जाने वाली वह राशि जो निश्चित हो, दायित्व कहलाती है।
13.	आयोजन	Provisions	ऐसे ज्ञात दायित्व जिनकी राशि का अनुमान सही तरीके से न लगाया जा सके, उनकी पूर्ति के लिये आयोजन बनाया जाता है।
14.	संचय	Reserves	संस्था की आर्थिक स्थिति सुदृढ करने तथा अज्ञात हानियों की पूर्ति हेतु संचय का निर्माण किया जाता है।
15.	स्थायी सम्पत्तियाँ	Fixed Assets	वे सम्पत्तियाँ जिन्हें व्यवसाय में निरन्तर उपयोग के लिए रखा जाता है न कि विक्रय के लिए।
16.	मूर्त सम्पत्तियाँ	Tangible Assets	वे सम्पत्तियाँ जिनका भौतिक अस्तित्व होता है तथा जिन्हें देखा व छूआ जा सकता हैं।
17.	अमूर्त सम्पत्तियाँ	Intangible Assets	वे सम्पत्तियाँ जिनका कोई भौतिक अस्तित्व नहीं होता है तथा जिन्हें देखा व छुआ नहीं जा सकता हैं।
18.	पूँजीगत कार्य जो प्रगति पर हैं	Capital Work-in-Progress	पूँजीगत कार्य जो प्रगति पर है से आशय ऐसी स्थायी मूर्त सम्पतियों से है जो स्वयं निर्मित एवं निर्माणाधीन हो।
19.	व्यापारिक विनियोग	Trade Investment	किसी भी संस्था द्वारा अपने व्यापार एवं व्यवसाय में वृद्धि के उददेश्य से अन्य कम्पनी के अंशों, ऋणपत्रों आदि में किया गया विनियोग व्यापारिक विनियोग कहलाता हैं।
20.	अन्य विनियोग	Other Investments	व्यापारिक विनियोगों के अलावा शेष सभी विनियोग अन्य विनियोग कहलाते है।
21.	सम्पति में विनियोग	Investments in Property	जब किसी भूमि एवं भवन में विनियोग, मूल्य वृद्धि अथवा किराया अर्जित करने के उद्देश्य से किया जाता है न कि व्यवसाय में निरन्तर उपयोग के लिए उस सम्पति को रखा जाता है तो यह सम्पत्ति में विनियोग कहलाता हैं।
22.	स्थगित कर सम्पत्तियाँ	Deffered Tax Assets	स्थगित कर सम्पत्ति उस समय उत्पन्न होती है जब लेखांकन आय कर योग्य आय से कम होती हैं।
23.	स्टॉक	Stock	स्टॉक से आशय उन सभी वस्तुओं माल से है जिन्हें व्यापार के सामान्य संचालन में व्यापारिक उददेश्य से रखा जाता है।
24.	व्यापारिक प्राप्यताएँ	Trade Receivables	व्यापार के सामान्य संचालन में माल का विक्रय करने अथवा सेवायें प्रदान करने से प्राप्य राशियॉ व्यापारिक प्राप्य कहलाते हैं। इनमें देनदार तथा प्राप्य बिल शामिल होते हैं।
25.	रोकड तुल्य	Cash Equivalents	ऐसे अल्पकालीन विनियोग जो अत्यधिक तरल है अर्थात जिन्हें तुरन्त रोकड में परिवर्तित किया जा सकता है और इनके मूल्य में परिवर्तन का जोखिम नहीं के बराबर होता है।
26.	आकस्मिक दायित्व	Contingent Liabilities	वे दायित्व जो वर्तमान में दायित्व नहीं है परन्तु जिनका होना या न होना भविष्य की किसी घटना पर आधारित होता है।
27.	वचनबद्धताएँ	Commitments	भविष्य में किन्हीं निश्चित दशाओं में किसी निश्चित समय पर

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

			किसी निश्चित कार्य को करने का अनुबन्ध, वचनबद्धताएं कहलाता है।
28.	संचालन क्रियाओं से आगम	Revenue from Operations	एक कम्पनी द्वारा कम्पनी की व्यावसायिक क्रियाओं यथा माल के विक्रय एवं सेवा प्रदान करने से अर्जित आगम संचालन क्रियाओं से आगम कहलाता है।
29.	अन्य आय	Other Income	संस्था को व्यावसायिक क्रियाओं के अलावा अन्य साधनों से अर्जित आय, अन्य आय कहलाती है।
30.	रहतिये में परिवर्तन	Changes-in-Inventories	रहतियें में परिवर्तन से आशय संस्था के पास उपलब्ध स्टॉक, अर्द्धनिर्मित माल एवं निर्मित माल के प्रारम्भिक रहतिये व अन्तिम रहतिये के शुद्ध अन्तर से है।
31.	कर्मचारी हित व्यय	Employee Benefit Expenses	वे व्यय जो कर्मचारियों के वेतन, मजदूरी तथा सुविधाओं से सम्बन्धित है।
32.	ह्रास	Depreciation	मूर्त स्थायी सम्पतियों को अपलिखित करने की लागत ह्रास कहलाती है।
33.	प्रत्युत्सर्जन अपलेखन	Amortization	दीर्घकालीन अमूर्त सम्पतियों के अपलेखन की लागत को प्रत्युत्सर्जन कहा जाता है।

अभ्यासार्थ प्रश्न (Questions for Exercise)

बहुचयनात्मक प्रश्न (Multiple choice Questions)

1. वित्तीय विवरण तैयार किये जाते हैं (Financial statements are prepared at the time of) :-
(अ) व्यवसाय के प्रारम्भ के समय (Inception of Business)
(ब) लेखा वर्ष के अन्त में (End of Accounting year)
(स) व्यवसाय के समापन के समय (Winding up of Business)
(द) इनमें से कोई नहीं (None of these)

2. वह विवरण जो कम्पनी की वित्तीय स्थिति को दर्शाता है
The Statement which depicts the financial position of a company:
(अ) स्थिति विवरण (Balance Sheet)
(ब) रोकड प्रवाह विवरण (Cash flow statement)
(स) लाभ–हानि विवरण (Statement of Profit and Loss)
(द) समता में परिवर्तनों का विवरण (Statement of Changes in Equity)

3. निम्न में से किस कम्पनी को रोकड प्रवाह विवरण बनाना अनिवार्य है:
For which of the following company, it is necessary to prepare Cash Flow Statement :-
(अ) निष्क्रिय कम्पनी (Inactive Company)
(ब) सार्वजनिक कम्पनी (Public Company)
(स) एक व्यक्ति कम्पनी (One person Company)
(द) लघु कम्पनी (Small Company)

4. कम्पनी के स्वामी कहलाते हैं : Owners of the Company are :-
(अ) अंशधारी (Shareholders)
(ब) ऋणदाता (Loan providers)
(स) लेनदार (Creditors)
(द) उपर्युक्त सभी (All the above)

5. वित्तीय विवरण उपयोगी होते हैं : Financial Statements are useful for :
(अ) कर्मचारियों के लिए (Employees)
(ब) प्रबन्धकों के लिए (Managers)

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

(स) अंशधारियों के लिए (Shareholders)
(द) सभी के लिए (All of above)

6. कम्पनी की दृष्टि से वितीय वर्ष समाप्त होता है : For a company financial year ends :-
(अ) 30 जून को (On 30 June)
(ब) 30 सितम्बर को (On 30 September)
(स) 31 दिसम्बर को (On 31 December)
(द) 31 मार्च को (On 31 March)

7. आर्थिक चिटठे में सामान्य संचय को किस शीर्षक के अन्तर्गत दिखाया जायेगा :
General Reserves will be shown under which head of the Balance Sheet:
(अ) अल्पकालीन आयोजन (Short Term Provisions)
(ब) अंश पूँजी (Share Capital)
(स) विविध व्यय (Miscellaneous Expenses)
(द) संचय एवं आधिक्य (Reserves and Surplus)

8. कम्पनी के स्थिति विवरण में 'समता एवं दायित्व' भाग में मुख्य शीर्षकों की संख्या है:
Number of main heads under 'Equity and Liabilities' part of Balance Sheet of a company is :-
(अ) 1 (ब) 2 (स) 3 (द) 4

9. जब लेखांकन आय कर योग्य आय से अधिक होती है तो उत्पन्न होता है:
When accounting income exceeds taxable income, it leads to :-
(अ) स्थगित कर दायित्व (Defererd Tax Liability)
(ब) स्थगित कर सम्पति (Deferred Tax Assets)
(स) दीर्घकालीन ऋण (Long Term Loan)
(द) इनमें से कोई नहीं (None of these)

10. निम्न में से कौनसा व्यय कर्मचारी हित का व्यय नहीं है :
Which of the following is not employee benefits expenses :-
(अ) वेतन (Salary)
(ब) भविष्य निधि अंशदान (Provident fund contribution)
(स) कारखाने की मशीन मरम्मत (Repairs of factory machine)
(द) ग्रेच्युइटी भुगतान (Payment of Gratuity)

अति लघुत्तरात्मक प्रश्न (Very Short Answer Type Questions)

1. वित्तीय विवरणों से क्या आशय है ?
What is meant by financial statements ?

2. कम्पनी के द्वारा तैयार किये जाने वाले दो मुख्य वित्तीय विवरणों के नाम बताइये।
Name the two financial statements prepared by a company.

3. एक कम्पनी के स्थिति विवरण के सम्पत्ति भाग के प्रमुख शीर्षकों के नाम बताइये।
Write the name of the major heads of the Assets of the Balance sheet of a company.

4. वित्तीय विवरणों को ऐतिहासिक प्रपत्र क्यों कहा जाता है ?
Why are financial statements called as historical document ?

5. संचालन चक्र क्या है ?
What is operating cycle ?

6. व्यापारिक देयता को परिभाषित कीजिए।
Define Trade Payables.

7. लाभ–हानि विवरण किसे कहते हैं ?
What is meant by Statement of Profit and Loss ?

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

8. चालू दायित्व से क्या आशय है ?
What is meant by Current Liabilities ?
9. स्थिति विवरण में बकाया मांग को कैसे प्रदर्शित किया जाता है ?
How are calls-in-arrear shown in Balance Sheet ?
10. 'अंश आवेदन राशि, जब तक आबन्टन न हो' से क्या आशय है ?
What is meant by 'share application money, pending allotment' ?

लघूत्तरात्मक प्रश्न (Short Answer Type Questions)

1. कम्पनी अधिनियम, 2013 की धारा 2(40) के अनुसार वित्तीय विवरणों में कौन–कौन से विवरण शामिल होते हैं ?
Which statement are included in the financial statements under section 2(40) of the Companies Act, 2013 ?
2. वित्तीय विवरणों की प्रमुख विशेषताओं को बताइये।
Write main characteristics of financial statements.
3. वित्तीय विवरणों के चार उद्देश्य बताइये।
Write four objectives of financial statements.
4. चालू सम्पत्ति किसे कहते है ?
What is meant by Current Assets ?
5. व्यापारिक प्राप्यताओं का अर्थ बताइये।
Explain meaning of Trade Receivables.
6. स्थिति विवरण के 'संचय एवं आधिक्य' शीर्षक के अन्तर्गत लिखी जाने वाली चार मदें लिखिये।
Write four items under the head of 'Reserves and surplus' of Balance Sheet.
7. 'अंश विकल्प अदत्त खाता' क्या है ? समझाइये।
What is 'share options outstanding Account' ? Explain.
8. गैर चालू सम्पत्ति शीर्षक के अन्तर्गत आने वाले पांच उप शीर्षकों के नाम लिखिये।
Write the names of five sub heads compring under the heads 'Non Current Assets' ?
9. रोकड तुल्य को समझाइये।
Explain Cash Equivalents.

निबन्धात्मक प्रश्न (Esasay Type Questions)

1. वित्तीय विवरणों से क्या आशय है ? इनकी विशेषताएँ बताते हुये इनके उददेश्य लिखिये।
What do you mean by financial statements ? Describe characteristics and objectives of these.
2. चिट्ठे से क्या आशय है ? इसका प्रारूप दीजिए।
What do you mean by Balance Sheet ? Give its format.
3. लाभ–हानि विवरण का अर्थ बताइये तथा इसका प्रारूप दीजिए।
What is meant by Profit and Loss statement ? Give its format.
4. आकस्मिक दायित्व एवं वचनबद्धताओं को समझाइये।
Explain contingent Liabilities and Commitments.
5. एक कम्पनी के स्थिति विवरण में निम्न मदों को आप किन शीर्षकों के अन्तर्गत दिखायेंगे ?
Under which heads will you show the follwing items in the Balance Sheet of a company ?
(1) अंश वारन्ट के विरूद्ध प्राप्त धनराशि (Money received against share warrants), **(2)** भविष्य निधि के लिए आयोजन (Provision for provident Fund), **(3)** विविध देनदार एवं प्राप्य बिल (Sundry Debtors and B/R), **(4)** मांग पर चुकता ऋण (Loan repayable on demand), **(5)** ख्याति, पेटेन्ट एवं व्यापारिक चिन्ह (Goodwill, Patents and Trade marks), **(6)** सरकारी सहायता संचय (Government subsidy Reserves), **(7)** जब्त अंश (Forfeited shares), **(8)** अंश विकल्प अदत्त (Shares options outstanding), **(9)** ऋणपत्रों के शोधन पर प्रीमियम (Premium on Redemption of Debentures), **(10)** हिण्डाल को. लि. के अंश (Shares in Hindal Co. Ltd.)

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

6. एक कम्पनी के लाभ–हानि विवरण में निम्न मदों को आप किस मुख्य शीर्षक (Major Head) के अन्तर्गत दर्शाएंगे?

Under which major head will you show the following items in the Statement of Profit and Loss of a company ?

(1) प्राप्त किराया (Rent Received), **(2)** प्रोजेक्ट परामर्श से आय (Revenue from project consultancy), **(3)** संचालन क्रियाओं से आगम : वापसी (Revenus from operations : Return), **(4)** व्यापारिक व्यय (Trade Expenses), **(5)** छुट्टियों के बदले नकद भुगतान (Leave Encashment Expenses), **(6)**कर वापसी (Refund of Income Tax), **(7)** हस्तांतरण शुल्क (Transfer fees), **(8)** विनियोगों के विक्रय से हानि (Loss on sale of Investment), **(9)** अवशेष विक्रय (Sale of scrap), **(10)** स्टोर्स एवं स्पेयर पार्टस प्रयुक्त (Stores and Spares parts used), **(11)** वेतन एवं मजदूरी (Salary and Wages), **(12)** निर्माण व्यय (Manufacturing Expenses), **(13)** टेलीफोन व इंटरनेट व्यय (Telephone & Internet Expenses), **(14)** अंश निर्गमन व्ययों का अपलेखन (Share Issue Expenses written off), **(15)** पट्टे का किराया (Lease Rent)

बहुचयनात्मक प्रश्नों के उत्तर

उत्तर :	**(1)** ब	**(2)** अ	**(3)** ब	**(4)** अ	**(5)** द	**(6)** द	**(7)** द	**(8)** द	**(9)** अ	**(10)** स

आंकिक प्रश्न (Numerical Questions)

1. निम्नलिखित सूचना से एक गैर वित्तीय कम्पनी की संचालन से आगम, अन्य आय तथा कुल आय की गणना कीजिए:

From the following informations, calculate Revenue from operations, Other Income and Total Revenue of non financial company :

विक्रय की आगम (Revenue from Sales) ₹ 30,00,000 ; विक्रय वापसी (Sales Return) ₹ 6,50,000 ; स्क्रैप की बिक्री (Sale of Scrap) ₹ 1,50,000 ; बैंक में जमा पर ब्याज (Interest on Bank Deposit) ₹ 2,00,000 ; ऋणपत्रों पर अर्जित ब्याज (Interest earned on Debentures) ₹ 50,000

उत्तर : [₹ 25,00,000 , ₹ 2,50,000 एवं ₹ 27,50,000]

2. निम्नलिखित सूचनाओं से रेलीगेयर लि.(एक वित्तीय कम्पनी) की संचालन से आगम, अन्य आय तथा कुल आगम की गणना कीजिए :

From the following informations of Religare Ltd. (a financial company), calculate Revenue from operations, Other Income and Total Revenue :

विनियोगों की बिक्री से लाभ (Profit on Sale of Investments) ₹ 5,00,000 ; भवन की बिक्री से लाभ (Profit on Sale of Building) ₹ 4,50,000 ; विविध आय (Miscellaneous Income) ₹ 50,000 ; लाभांश प्राप्त (Dividend Received) ₹ 4,00,000 ; ऋणों पर ब्याज (Interest on Loans) ₹ 25,00,000

उत्तर : [₹ 34,00,000 , ₹ 5,00,000 एवं₹ 39,00,000]

3. एक कम्पनी के तलपट से निम्नलिखित शेष लिए गये है :

The following balances are taken from Trial Balance of a company :

IDBI से ऋण (Loan from IDBI) ₹ 5,00,000 ; भूमि एवं भवन (Land and Building) ₹ 3,70,000 ; संयंत्र एवं मशीनरी (Plant and Machinery) ₹ 2,58,000 ; फर्नीचर (Furniture) ₹ 45,000 ; विनियोग (Investments) ₹ 2,47,000 ; लाभ–हानि विवरण का नाम शेष (Dr. Balance of P&L Statement) ₹ 50,000; व्यापारिक प्राप्य (Trade Receivables) ₹ 2,25,000 ; स्कन्ध (Inventory)₹ 1,75,000 ; रोकड एवं रोकड तुल्य (Cash and Cash Equivalents) ₹ 51,000

आपको कम्पनी अधिनियम 2013 के अनुसार चिट्ठे का सम्पति पक्ष तैयार करना है।

You are required to draw up assets side of Balance sheet as per Companies Act, 2013.

उत्तर : [सम्पत्ति पक्ष का योग ₹ 13,71,000]

4. एक कम्पनी के तलपट से निम्नलिखित शेष लिये गये हैं:

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

The following balances are taken from Trial Balance of a company :
1,20,000 Equity shares of ₹ 10 each fully called up ₹ 12,00,000 ; Calls-in-arrears on 5,000 shares @ ₹ 2 each ₹ 10,000 ; General Reserves ₹ 5,80,000 ; Preliminary Expenses ₹ 20,000 ; Provision for Provident fund ₹ 1,20,000 ; Trade Payables ₹ 3,00,000 ; Loan from Bank ₹ 5,00,000 ; Provision for Doubtful Debt ₹ 40,000
1,20,000 समता अंश ₹ 10 वाले पूर्ण प्रदत्त ₹ 12,00,000; बकाया मॉग 5,000 अंशों पर ₹ 2 प्रति अंश ₹ 10,000; सामान्य संचय ₹ 580,000; प्रारम्भिक व्यय ₹ 20,000; भविष्य निधि आयोजन ₹ 1,20,000; व्यापारिक देयताएँ ₹ 3,00,000; बैंक से ऋण ₹ 5,00,000; संदिग्ध ऋण आयोजन ₹ 40,000;
आपको कम्पनी अधिनियम 2013 के अनुसार चिट्ठे का समता एवं दायित्व पक्ष तैयार करना हैं।
You are required to prepare Equity and Liabilities side of Balance sheet as per Companies Act, 2013.
उत्तर : [समता एवं दायित्व पक्ष का योग ₹ 27,10,000]

5. 31 मार्च 2017 को समाप्त होने वाले वर्ष से सम्बन्धित निम्न सूचनाओं से कर्मचारी हित व्यय पर लेखांकन टिप्पणी तैयार कीजिए :
Prepare Notes to Accounts on Employee Benefits Expenses from the following informations for the year ended 31 March, 2017.
(i) Entertainment Expenses ₹ 1,50,000 (ii) Staff Welfare Expenses ₹ 2,70,000 (iii) Travelling Expenses ₹ 80,000 (iv) Bonus ₹ 5,50,000 (v) Salaries ₹ 18,70,000 (vi) Wages ₹ 25,20,000
उत्तर : ₹ 52,10,000

6. 31 मार्च, 2017 को समाप्त होने वाले वर्ष की सुजुकी लि. की निम्नलिखित सूचनाओं से कम्पनी का चिटठा बनाइये।
From the following informations prepare Balance Sheet of Suzuki Ltd. as at 31st March, 2017:
Share Capital ₹ 24,00,000 ; Deferred Tax Liabilites ₹ 60,000 ; General Reserves ₹ 6,00,000 ; Balance of Statement of Profit & Loss (Cr.)₹ 5,20,000; Tangible Fixed Assets ₹ 34,60,000; Trade Receivables ₹ 8,00,000; Provision for Doubtful Debts ₹ 40,000; Trade Payables ₹ 3,20,000; Provision for Tax ₹ 80,000; Proposed Dividend ₹ 2,40,000.
अंश पूँजी ₹ 24,00,000; स्थगित कर देयताएँ ₹ 60,000; सामान्य संचय ₹ 6,00,000; लाभ–हानि विवरण का शेष (क्रेडिट) ₹ 5,20,000; दृश्यनीय स्थायी सम्पत्तियाँ ₹ 34,600,00; व्यापारिक प्राप्यताएँ ₹ 8,00,000; संदिग्ध ऋण आयोजन ₹ 40,000; व्यापारिक देयताएँ ₹ 3,20,000; कर आयोजन ₹ 80,000; प्रस्तावित लाभांश ₹ 2,40,000
उत्तर : चिटठे का योग ₹ 42,60,000

7. शुभम लिमिटेड की 31 मार्च, 2017 को दी गई निम्न सूचनाओं से लाभ–हानि विवरण तैयार कीजिए :-
From the following informations, Prepare Statement of Profit & Loss of Shubham Ltd., for the year ending 31 March, 2017 :
Sales ₹ 45,00,000 ; Cost of Material Consumed ₹ 8,00,000 ; Purchase of Stock-in-Trade ₹ 30,00,000 ; 10% Debentures (Issued on 01-04-2016) ₹ 2,00,000 ; Depreciation on Machinery ₹ 50,000 ; Interest received ₹ 60,000 ; Wages ₹ 1,80,000 ; Salaries ₹ 60,000 ; Sale of Scrap ₹ 10,000 ; Opening Stock-in-Trade ₹ 3,00,000 ; Closing stock-in-Trade ₹ 5,00,000.
विक्रय ₹ 45,00,000; उपभोग की सामग्री की लागत ₹ 8,00,000; स्टॉक का क्रय ₹ 30,00,000; 10% ऋणपत्र (1.4.16 को जारी) ₹ 2,00,000; मशीन पर ह्रास ₹ 50,000; ब्याज प्राप्त ₹ 60,000; मजदूरी ₹ 1,80,000; वेतन ₹ 60,000; स्क्रेप की बिक्री ₹ 10,000; प्रारम्भिक स्टॉक ₹ 3,00,000; अन्तिम स्टॉक ₹ 5,00,000.
उत्तर : कर से पूर्व लाभ ₹ 6,60,000

8. गणेश लि. की निम्नलिखित सूचनाओं से 31 मार्च, 2017 को समाप्त होने वाले वर्ष का चिट्ठा बनाइये :–
From the following informations, Prepare Balance Sheet of Ganesh Ltd. as at 31 March, 2017:-

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Fully paid 50,000 Equity shares ₹ 10 each ₹ 5,00,000; 25,000 8% Preference shares ₹ 10 each fully paid up ₹ 2,50,000 ; 7% Debentures₹ 5,00,000 ; Trade Creditors ₹ 5,72,500 ; Cash and Cash Equivalents ₹ 1,37,500 ; Provision for Tax ₹ 85,000 ; Goodwill at Cost ₹ 1,25,000 ; Balance of Statement of Profit & Loss (Dr.) ₹ 1,50,000 ; Provision for Doubtful Debts ₹ 10,100 ; Tangible Fixed Assets at Cost ₹ 25,00,000 ; Other Current Assets ₹ 3,25,000 ; General Reserves ₹10,25,000 ; Short Term Loans ₹13,50,000 ; Long Term Advances ₹ 1,86,000 ; Short Term Advances ₹ 56,500 ; Securities Premium ₹ 2,37,500 ; Non Current Investments ₹ 1,00,000 ; Current Investments ₹ 12,600 ; Sundry Debtors ₹ 6,12,500 ; Creditors for Expenses ₹ 1,00,000 ; Closing Stock : Stores ₹ 2,00,000 ; and Finished goods ₹ 3,75,000 (Total ₹ 5,75,000); Capital Work-in-Progress ₹ 1,00,000 ; Accumulated Depreciation on Fixed Assets ₹ 2,50,000; ₹ 10 वाले 50,000 पूर्ण प्रदत्त समता अंश ₹ 5,00,000 ; ₹ 10 वाले 25,000 पूर्ण प्रदत 8% पूर्वाधिकार अंश ₹ 2,50,000; 7% ऋणपत्र ₹ 5,00,000; व्यापारिक दायित्व ₹ 5,72,500; रोकड व रोकड तुल्य ₹ 1,37,500; कर आयोजन ₹ 85,000; ख्याति लागत पर ₹ 1,25,000; लाभ–हानि विवरण शेष (डेबिट) ₹ 1,50,000; संदिग्ध ऋण आयोजन ₹ 10,100; दृश्यनीय स्थायी सम्पत्तियाँ लागत पर ₹ 25,00,000; अन्य चालू सम्पत्तियाँ ₹ 3,25,000; सामान्य संचय ₹ 10,25,000; अल्पकालीन ऋण ₹ 13,50,000; दीर्घकालीन ऋण ₹ 1,86,000; अल्पकालीन अग्रिम ₹ 56,500; अंश प्रीमियम ₹ 2,37,500; गैर चालू विनियोग ₹ 1,00,000; चालू विनियोग ₹ 12,600; विविध देनदार ₹ 6,12,500; व्ययों के लिए लेनदार ₹ 1,00,000; अन्तिम स्टॉक: स्टोर्स ₹ 2,00,000; निर्मित माल ₹ 3,75,000; (कुल ₹ 5,75,000); पूँजीगत अर्द्ध निर्मित कार्य ₹ 1,00,000; स्थायी सम्पतियों पर एकत्रित ह्रास ₹ 2,50,000.

उत्तर : चिट्ठे का योग ₹ 44,80,100.

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

7
संयुक्त साहस खाते
(JOINT VENTURE ACCOUNTS)

अध्ययन के उद्देश्य

इस अध्याय के अध्ययन के बाद आप :–

- ❑ संयुक्त साहस का अर्थ एवं परिचय समझ पाऐंगे।
- ❑ संयुक्त साहस व साझेदारी में अन्तर जान पाऐंगे।
- ❑ संयुक्त साहस संबंधी निम्नांकित लेखा विधियां जान पाऐंगे–
- ❑संयुक्त साहस के लिए पृथक लेखा पुस्तकें रखना।
- ❑संयुक्त साहस के लिए पृथक लेखा पुस्तकें नहीं रखना–
  - (क) जब प्रत्येक साहसी द्वारा केवल स्वयं के लेनदेनों का लेखा रखा जाता है।
  - (ख) जब स्वयं के लेनदेनों के साथ ही अन्य सह–साहसियों के लेनदेनों का भी लेखा रखा जाता है।

संयुक्त साहस का अर्थ एवं परिचय
(Meaning and Introduction of Joint Venture)

संयुक्त साहस एक विशेष प्रकार का कारोबार या उपक्रम है जिसे दो या दो से अधिक व्यक्ति मिलकर सम्पन्न करते हैं। ऐसा कारोबार या उपक्रम किसी विशेष प्रकार के व्यवसाय के लिये अथवा एक निश्चित अवधि के लिये किया जाता है। विशेष कार्य पूर्ण हो जाने या पूर्व निश्चित अवधि के समाप्त हो जाने के साथ ही संयुक्त साहस भी स्वतः समाप्त हो जाता है। संयुक्त साहस के अन्तर्गत किये जाने वाले व्यवसाय/कारोबार से प्राप्त लाभ/हानि को निर्धारित अनुपात में साहसियों द्वारा बांट लिया जाता है। संयुक्त साहस में कारोबार करने के लिये प्रत्येक साहसी अपने अपने हिस्से की पूँजी लाता है। संयुक्त साहस में सम्मिलित होने वाले को सह–साहसी (Coventurer) कहते हैं।

संयुक्त साहस एक प्रकार से अस्थायी साझेदारी अथवा व्यक्तियों का समूह हैं। प्रायः किसी विशेष वस्तु के व्यापार, आयात–निर्यात का कार्य, भवन निर्माण, किसी कम्पनी के अंशों एवं ऋण पत्रों का अभिगोपन, जमीन खरीद कर विकसित कर भूखण्डों का विक्रय या उस पर मकान बनाकर बेचना आदि कार्य संयुक्त साहस के अन्तर्गत किया जाता है। प्रायः सभी साहसी मिलकर संयुक्त साहस का कार्य करते हैं। संयुक्त साहस का फर्म की तरह कोई विशेष नाम नहीं होता हैं। इसमें आपसी समझ ही महत्त्वपूर्ण होती है।

संयुक्त साहस की विशेषताएं (Characteristics of Joint Venture)

1. संयुक्त साहस किसी विशेष कार्य या व्यवसाय को पूरा करने के लिये अथवा एक निश्चित समय तक किसी विशेष कार्य को करने के लिये किया जाता है।
2. विशेष कार्य या अवधि समाप्त होने के साथ ही संयुक्त साहस भी स्वतः समाप्त हो जाता है।
3. संयुक्त साहस की समाप्ति के साथ ही लाभ हानि का विभाजन एवं हिसाब किताब का निपटारा कर लिया जाता है।
4. संयुक्त साहस प्रायः अल्पकालीन होता है।
5. संयुक्त साहस का कोई विशेष नाम नहीं होता हैं। इसमें सह–साहसी इसके साथ ही निजी व्यवसाय भी कर सकते है।

संयुक्त साहस एवं साझेदारी में अन्तर
(Difference Between Joint Venture & Partnership)

क्र. स.	अन्तर का आधार	संयुक्त साहस	साझेदारी
1	नाम	संयुक्त साहस का प्रायः कोई नाम नहीं होता है।	साझेदारी संस्था का एक निश्चित नाम होता है।
2	उद्देश्य	संयुक्त साहस का उद्देश्य निश्चित कार्य या निश्चित समय तक व्यवसाय करना है।	साझेदारी का निर्माण निरन्तर संचालन करने हेतु किया जाता है।
3	पंजीयन	संयुक्त साहस में पंजीयन कराना आवश्यक नहीं हैं।	साझेदारी में पंजीयन कराना आवश्यक है।
4	अधिनियम	संयुक्त साहस के लिये कोई पृथक अधिनियम नहीं होता है।	साझेदारी में भारतीय साझेदारी अधिनियम 1932 लागू होता है।

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

5	सदस्य	संयुक्त साहस में भाग लेने वाले को सह–साहसी कहा जाता है।	साझेदारी में भाग लेने वाले को साझेदार कहा जाता है।
6	सदस्य संख्या	संयुक्त साहस में कम से कम दो अथवा अधिकतम सदस्यों पर कोई प्रतिबन्ध नहीं होता है।	साझेदार में कम से कम दो, साधारण में अधिकतम 20 सदस्य तथा बैंकिंग व्यवसाय में 10 सदस्य होते है।
7	सम्बन्ध	संयुक्त साहस में साहसियों में परस्पर समझ होती है।	साझेदारी में साझेदारों में आपसी सम्बन्ध होता है।

संयुक्त साहस सम्बन्धी लेखा विधियॉ :–

(Accounting Methods for Joint Venture)

संयुक्त साहस सम्बन्धी लेखा करने के मुख्य रूप से दो लेखा विधियाँ प्रचलन में है –

1. संयुक्त साहस के लिये पृथक से लेखा पुस्तकें रखना।
2. संयुक्त साहस के लिये पृथक से लेखा पुस्तकें नहीं रखना :
   (अ) प्रत्येक साहसी द्वारा केवल स्वयं के लेनदेनों का लेखा रखना।
   (ब) स्वयं के लेनदेनों के साथ ही अन्य साहसियों के लेनदेनों का भी लेखा करना।

(1) संयुक्त साहस के लिये पृथक लेखा पुस्तकें रखना –

जब सभी साहसी प्रायः एक ही स्थान पर रहते हो और संयुक्त साहस का कारोबार भी बड़ा हो अथवा साहसियों द्वारा आपसी निर्णय लिया गया हो, तो संयुक्त साहस के लिये पृथक पृथक लेखा पुस्तकें रखी जा सकती है। ऐसी स्थिति में लेखा पुस्तकों में निम्नानुसार तीन मुख्य खाते खोले जाते है।

(1) संयुक्त साहस खाता (Joint Venture Account)
(2) संयुक्त बैंक खाता (Joint Bank Account)
(3) प्रत्येक साहसी का पूँजी खाता / व्यक्तिगत खाता (Co-venturer's Capital/Personal Account)

इसके अन्तर्गत साहसियों द्वारा अपने अपने हिस्से की पूँजी की रकम लाकर संयुक्त बैंक खाते में जमा करायी जाती है। संयुक्त साहस के सभी भुगतान प्रायः इसी खाते से किये जाते हैं एव बिक्री आदि से प्राप्त रकम भी इसी खाते में जमा करायी जाती है। संयुक्त साहस खाता, व्यापारिक एवं लाभ–हानि खाते की तरह का होता हैं इसमें सभी क्रय एवं खर्चे नाम पक्ष में लिखे जाते हैं तथा बिक्री एवं अन्य आय को जमा पक्ष में लिखा जाता है। इस खाते का अन्तर संयुक्त साहस के लाभ हानि को प्रकट करता है जिसे साहसियों में बांट दिया जाता हैं। संयुक्त साहस की समाप्ति पर व्यक्तिगत खातों में शेष राशि को भुगतान कर लेखा पुस्तकें बन्द कर दी जाती है। लेखा प्रविष्टियां इस प्रकार की जाती है –

1. साहसियों द्वारा अपने हिस्से की पूँजी संयुक्त बैंक खाते में जमा करवाने पर –

Joint Bank A/c Dr.
  To Co-venturer's A/c
(Being cash contribution made by co-venturer's)

2. संयुक्त साहस के लिए माल क्रय करने पर (नकद)

Joint Venture A/c Dr.
  To Joint Bank A/c
(Being goods purchased for cash)

3.संयुक्त साहस के लिये किये गये खर्चो का भुगतान करने पर

Joint Venture A/c Dr.
  To Joint Bank A/c
(Being expenses paid for cash)

विशेष : यदि संयुक्त साहस के लिये माल उधार क्रय किया जावे तो Joint Bank के स्थान पर आपूर्तिकर्ता का खाता क्रेडिट किया जायेगा। यदि माल की पूर्ति कोई साहसी करता हैं तो साहसी का व्यक्तिगत खाता / पूँजी खाता क्रेडिट होगा। इसी प्रकार किसी खर्चे का भुगतान कोई साहसी करता हैं तो Joint Bank के स्थान पर उसका व्यक्तिगत / पूँजी खाता क्रेडिट किया जायेगा।

4. संयुक्त साहस का माल विक्रय होने पर (नकद विक्रय)

Joint Bank A/c Dr.
  To Joint Venture A/c

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

(Being goods sold for cash)

5. माल के उधार विक्रय की दशा में

Customer's A/c Dr.

To Joint venture A/c

(Being goods sold on credit)

6. माल विक्रय के पश्चात् ग्राहक से भुगतान प्राप्त होने पर

Joint Bank A/c Dr.

To Customer's A/c

(Being payment received in cash)

नोट : यदि ग्राहक को बट्टा दिया गया है तो संयुक्त साहस खाते को डेबिट करेंगे तथा यदि कोई राशि डूबत हुई हो तो भी संयुक्त साहस खाता डेबिट करेंगे।

7. उधार क्रय की दशा में आपूर्तिकर्ता को भुगतान करने पर

Supplier's A/c Dr.

To Joint Bank A/c

(Being payment made to supplier)

नोट : भुगतान करने पर प्राप्त छूट के लिये Joint venture A/c को credit करेंगे।

8. किसी साहसी द्वारा संयुक्त साहस का बचा हुआ माल लेने पर –

Co-venturer's A/c Dr

To Joint venture A/c

(Being stock taken by co-venturer)

9. यदि किसी साहसी को पूँजी पर ब्याज, कमीशन आदि देय हो तो –

Joint venture A/c Dr.

To co-venturer's A/c

(Being interest /commission credited)

10. संयुक्त साहस समाप्ति पर संयुक्त साहस खाते द्वारा प्रकट लाभ को साहसियों में बांटने पर –

Joint venture A/c Dr.

To co- venturer's A/c

(Being profit on joint venture credited)

11. संयुक्त साहस खाते द्वारा यदि हानि प्रकट हो तो हानि का वितरण करने पर –

Co- venturer's A/c Dr.

To Joint venture A/c

(Being loss on joint venture debited)

12. संयुक्त साहस की समाप्ति पर साहसियों को उनके व्यक्तिगत खाते या पूँजी खाते में शेष के अनुसार अन्तिम भुगतान करने पर –

Co- venturer's A/c Dr.

To Joint Bank A/c

(Being balance of co-venturer's capital A/c paid of)

यदि किसी साहसी का पूँजी खाता/व्यक्तिगत खाता डेबिट शेष बताता है तो अन्तिम भुगतान से पूर्व उस साहसी से शेष रकम वसूल की जायेगी एवं उसके बाद अन्य साहसियों को भुगतान किया जावेगा।

उदाहरण 1 : विवेक, भावेश, पार्थ बराबर लाभ विभाजन के लिए एक संयुक्त साहस में सम्मिलित होते हैं। 1 जनवरी 2016 को वे स्टेट बैंक में अपना अलग बैंक खाता खोलते हैं जिसमें विवेक ₹30000, भावेश ₹40000व पार्थ ₹90000 जमा कराते हैं। यह भी निश्चय किया गया कि इन जमाओं पर 6 प्रतिशत वार्षिक दर से ब्याज दिया जायेगा। अनिल से ₹125000 का माल खरीदा तथा विवेक से ₹25000 का स्टॉक प्राप्त किया। अनिल को चैक द्वारा भुगतान कर दिया। अन्य खर्चो के ₹10600 चुकाये। विवेक ने संयुक्त साहस का कुछ माल ₹80000 नकद व ₹120000 का सुनिल को उधार बेचा। सुनिल ने समान राशि का एक बिल स्वीकार किया जिसे ₹117000 में बैंक से भुना लिया। 31 मार्च 2016 को संयुक्त साहसियों की प्रारम्भिक पूँजी लौटा दी गई। विवेक को उसकी सेवाओं के लिये बिक्री पर 5 प्रतिशत कमीशन दिया गया।

संयुक्त साहस की पुस्तकों में आवश्यक जर्नल प्रविष्टियॉ दीजिये तथा आवश्यक खाते खोलिये यह मानते हुऐ कि हिसाब 31 मार्च 2016 को हो गया।

Vivek, Bhavesh and Parth entered into Joint Venture to divide profit equally. On 1 January 2016 they opened a seperate Bank Account contributing Vivek ₹30,000, Bhavesh ₹40,000 and Parth ₹90,000. It was also decided to charge interest on such contribution @6% p.a. . Goods were purchased from Anil for

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

₹ 1,25,000 and Vivek's stock was taken for ₹25000 by Vivek. They settled their account with Anil by cheque and paid ₹10600 for other expenses.

Vivek sold goods of the Joint Venture partly for cash for ₹80,000 and the remaining goods to sunil on credit for ₹120000, Sunil accepted a bill for the same amount which was then discounted for ₹117000. The initial capital was returned to the co-venturer on 31 March 2016, Vivek was allowed 5% commission on sale for his service.

Pass the Journal entries and open the necessary accounts in the books of Joint Venture assuming the final settlement was made on 31 March 2016.

	Particulars	L/F	Amount (₹)	
			Dr.	Cr.
1	Joint Bank A/c Dr. To Vivek's A/c To Bhavesh's A/c To Parth's A/c (Being cash contributed by co-venturers)		1,60,000	 30,000 40,000 90,000
2	Joint Venture A/c Dr. To Anil's A/c (Being goods purchased)		1,25,000	 1,25,000
3	Joint Venture A/c Dr. To Vivek's A/c (For stock taken from Vivek's)		25,000	 25,000
4	Anil's A/c Dr. To Joint Bank A/c (For payment made to Anil)		1,25,000	 1,25,000
5	Joint Venture A/c Dr. To Joint Bank A/c (For Exepenses paid)		10,600	 10,600
6	Joint Bank A/c Dr. To Joint Venture A/c (Goods sold for cash)		80,000	 80,000
7	Sunil's A/c Dr. To Joint Venture A/c (Goods sold to Sunil on credit)		1,20,000	 1,20,000
8	Bills Receivable A/c Dr. To Sunil's A/c (Acceptance received from Sunil)		1,20,000	 1,20,000
9	Joint Bank A/c Dr. Joint Venture A/c Dr. To B/R A/c (Bill discounted from bank)		1,17,000 3,000	 1,20,000
10	Vivek's A/c Dr. Bhavesh's A/c Dr. Parth's A/c Dr. To Joint Bank A/c (Capital returned to co-ventures)		30,000 40,000 90,000	 1,60,000
11	Joint Venture A/c Dr. To Vivek's A/c (Being commission on sales credited to Vivek)		10,000	 10,000

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

12	Joint Venture A/c	Dr.		2,400	
	To Vivek's A/c				450
	To Bhavesh's A/c				600
	To Parth's A/c				1,350
	(Interest on capital credited)				
13	Joint Venture A/c	Dr.		24,000	
	To Vivek's A/c				8,000
	To Bhavesh's A/c				8,000
	To Parth's A/c				8,000
	(Being profit on joint venture credited)				
14	Vivek's A/c	Dr.		43,450	
	Bhavesh's A/c	Dr.		8,600	
	Parth's A/c	Dr.		9,350	
	To Joint Bank A/c				61,400
	(Being final payment made to co-venturers)				

Joint Bank Account

Date	Particulars	Amount (₹)	Date	Particulars	Amount (₹)
2016 Jan., 1	To Vivek	30,000	2016 Jan., 1	By Anil	1,25,000
	To Bhavesh	40,000		By Joint Venture A/c	10,600
	To Parth	90,000		By Vivek	30,000
	To Joint Venture A/c	80,000		By Bhavesh	40,000
	To B/R A/c	1,17,000		By Parth	90,000
			Mar., 31	By Vivek	43,450
				By Bhavesh	8,600
				By Parth	9,350
		3,57,000			**3,57,000**

Joint Venture Account

Date	Particulars	Amount (₹)	Date	Particulars	Amount (₹)
	To Anil's A/c	1,25,000		By Sunil's A/c	1,20,000
	To Vivek (stock)	25,000		By Joint Bank A/c	80,000
	To Joint Bank (Exp.) A/c	10,600			
	To B/R A/c (Discounted)	3,000			
	To Vivek (interest)	450			
	To Bhavesh (interest)	600			
	To Parth (interest)	1,350			
	To Vivek (Commission)	10,000			
	To Profit	24,000			
	Vivek 8000				
	Bhavesh 8000				
	Parth 8000				
		2,00,000			**2,00,000**

Vivek's Account

Date	Particulars	Amount (₹)	Date	Particulars	Amount (₹)
2016 Mar., 31	To Joint Bank A/c	30,000	2016 Jan.,1	By Joint Bank A/c	30,000
	To Joint Bank A/c (Final payment) (B.F.)	43,450		By Joint Venture A/c	25,000

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

				By Joint Venture A/c	10,000
				By Joint Venture A/c	450
				By Joint Venrure A/c	8,000
		73,450			**73,450**

Bhavesh's Account

Date	Particulars	Amount (₹)	Date	Particulars	Amount (₹)
Mar.31	To Joint Bank A/c	40,000	2016 Jan. 1	By Joint Bank A/c	40,000
Mar.31	To Joint Bank A/c (Final payment) (B.F.)	8,600		By Joint Venture A/c	600
				By Joint Venture A/c	8,000
		48,600			**48,600**

Parth's A/c

Date	Particulars	Amount (₹)	Date	Particulars	Amount (₹)
2016 Mar., 31	To Joint Bank A/c	90,000	2016 Jan., 1	By Joint Bank A/c	90,000
	To Joint Bank A/c (Final payment) (BF)	9,350		By Joint Venture A/c	1,350
				By Joint Venture A/c	8,000
		99,350			**99,350**

उदाहरण 2 : रमेश एवं नरेश जो अलग अलग भवन निर्माण के ठेके का कार्य करते हैं, एक नवनिर्मित संयुक्त पूँजी वाली कम्पनी का भवन निर्माण संयुक्त रूप से ₹4,00,000 ठेका मूल्य पर लेते हैं जो ₹3,20,000 नकद किश्तों में और ₹80,000 कम्पनी के पूर्ण चुकता अंशों में देय होगा। उन्होंने पंजाब नेशनल बैंक में संयुक्त बैंक खाता खोला तथा नकद व्यवहार बैंक द्वारा किये गये। रमेश ने ₹1,00,000 तथा नरेश ने ₹60,000 बैंक में जमा कराये। लाभ–हानि क्रमशः 2:1 अनुपात में बांटते हैं। संयुक्त साहस के लेनदेन निम्न प्रकार थे – मजदूरी चुकाई ₹1,00,000, निर्माण सामग्री खरीदी ₹1,20,000, विविध व्यय चुकाये ₹48,000, रमेश ने सामग्री दी ₹16,000, नरेश ने सामग्री दी ₹10,000, रमेश ने शिल्पकार की फीस चुकाई ₹8,000,

ठेका कार्य पूरा हो गया और ठेके की राशि प्राप्त हो गई। संयुक्त साहस समाप्त कर दिया गया। रमेश ने संयुक्त पूँजी वाली कम्पनी के सभी अंश ₹72,000 में ले लिये तथा नरेश ने ठेके पर बची हुई सामग्री को ₹12,000 में ले लिया। संयुक्त साहस के लिये आवश्यक खाते खोलिये।

Ramesh and Naresh doing business separately as building contractors under take jointly to construct a building for newly started joint stock company for a contract price of ₹4,00,000 payable ₹3,20,000 by instalments in cash and ₹80,000 in fully paid shares of the company. A Joint Bank Account is opened in Punjab National Bank and all cash transactions are recorded through the Bank. Ramesh and Naresh deposited ₹1,00,000 and ₹60,000 in the Bank respectively. They share profit or loss in the proportion of 2:1 respectively. The transactions of joint venture were as follows :- Wages paid ₹1,00,000; Purchases of material ₹1,20,000; Sundry Expenses paid ₹48,000; Ramesh gave material from his stock ₹16,000; Naresh gave material from his stock ₹10,000; Architect's fees paid by Ramesh ₹8,000.

The contract was completed and the contract price was duly received. The Joint venture was terminated. Ramesh took all the share of Joint stock Company at price of ₹72,000 and Naresh took the remaining stock of material of ₹12000.

Prepare the necessary accounts for the joint venture.

Joint Venture Account

Date	Particulars	Amount (₹)	Date	Particulars	Amount (₹)
	To Joint Bank A/c (Purchase)	1,20,000		By Joint Bank A/c (Contract Money)	3,20,000
	To Joint Bank A/c (Wages)	1,00,000		By Share of company	80,000

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

	To Joint Bank A/c (Exp.)	48,000		By Naresh's A/c (Stock)	12,000
	To Ramesh's A/c (Stock)	16,000			
	To Naresh's A/c (Stock)	10,000			
	To Ramesh A/c (Architect fees)	8,000			
	To Share of Co. (Loss)	8,000			
	To Profit				
	Ramesh 68000				
	Naresh 34000	1,02,000			
		4,12,000			**4,12,000**

Joint Bank Account

Date	Particulars	Amount (₹)	Date	Particulars	Amount (₹)
	To Ramesh's A/c	1,00,000		By Joint venture A/c	1,20,000
	To Naresh's A/c	60,000		By Joint venture A/c	1,00,000
	To Joint Venture A/c (Contract Money)	3,20,000		By Joint venture A/c	48,000
				By Ramesh's A/c (Final Payment)	1,20,000
				By Naresh's A/c (Final Payment)	92,000
		4,80,000			**4,80,000**

Ramesh's Account

Date	Particulars	Amount (₹)	Date	Particulars	Amount (₹)
	To Shares of company	72,000		By Joint Bank A/c	1,00,000
	To Joint Bank A/c (B.F.) (Final Payment)	1,20,000		By Joint Venture A/c	16,000
				By Joint Venture A/c	8,000
				By Joint Venture A/c	68,000
		1,92,000			**1,92,000**

Naresh's Account

Date	Particulars	Amount (₹)	Date	Particulars	Amount (₹)
	To Joint Venture A/c	12,000		By Joint Bank A/c	60,000
	To Joint Bank A/c (B.F.) (Final Payment)	92,000		By Joint Venture A/c	10,000
				By Joint Venture A/c	34,000
		1,04,000			**1,04,000**

उदाहरण 3 : जयपुर के महेश एवं सुरेश ने जमीन खरीदकर उसे विकसित कर भूखण्डों के रूप में बेचने के लिये संयुक्त साहस में काम करने का निश्चय किया। उन्होंनें 1 जनवरी 2015 को एक संयुक्त बैंक खाता खोलकर उसमें क्रमशः ₹5,00,000 एवं ₹3,00,000 जमा कराये। लाभ–हानि अनुपात 5:3 था।

उन्होंनें ₹6,00,000 में जमीन का एक टुकडा खरीदा, पंजीयन शुल्क ₹65,000 का भुगतान किया। जमीन को विकसित करने पर ₹90,000 व्यय किये गये। कुल 40 भूखण्ड बनाये। 25 भूखण्डों का विक्रय ₹35,000 प्रति भूखण्ड की दर से एवं 7 भूखण्डों का विक्रय ₹31,000 प्रति भूखण्ड की दर से किया गया। इस हेतु दलाली का ₹40,000 भुगतान किया। शेष रहे भूखण्डों को महेश एवं सुरेश ने बराबर ₹22,000 प्रति भूखण्ड की दर से ले लिया। संयुक्त साहस की पुस्तकों में आवश्यक खाते तैयार कीजिये।

Mahesh and Suresh of Jaipur entered in a joint venture for a land development scheme. They opened a Bank Account in the joint name by depositing ₹5,00,000 and ₹3,00,000 on 1 Jan., 2015 respectively. They decided to share of profit and loss in the ratio 5:3.

A part of Land purchased for ₹ 6,00,000 and ₹65,000 was paid for its registration charges, ₹90,000

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

were paid for the expenses of development of land. The land was divided in 40 plots.

The plots were sold as under : 25 plots at ₹35000 each. 07 plots at ₹31000 each, brokerage were paid ₹40000. The remaining plots were taken at a price ₹22000 by both equally.

Prepare necessary accounts in the books of Joint Venture.

Joint Venture Account

Date	Particulars	Amount (₹)	Date	Particulars	Amount (₹)
	To Joint Bank A/c (Purchases)	6,00,000		By Joint Bank A/c (Sales) (25x35,000)	8,75,000
	To Joint Bank A/c (Registration fees)	65,000		By Joint Bank A/c (7 x 31,000)	2,17,000
	To Joint Bank A/c (Direct Exp.)	90,000		By Mahesh's A/c (Stock) (4 x 22,000)	88,000
	To Joint Bank A/c (Brokerage)	40,000		By Suresh's A/c (Stock) (4 x 22,000)	88,000
	To Profit				
	Mahesh 2,95,625				
	Suresh 1,77,375	4,73,000			
		12,68,000			**12,68,000**

Joint Bank Account

Date	Particulars	Amount (₹)	Date	Particulars	Amount (₹)
	To Mahesh's A/c	5,00,000		By Joint Venture A/c	6,00,000
	To Suresh's A/c	3,00,000		By Joint Venture A/c	65,000
	To Joint Venture A/c	8,75,000		By Joint Venture A/c	90,000
	To Joint Venture A/c	2,17,000		By Joint Venture A/c	40,000
				By Mahesh's A/c	7,07,625
				By Suresh's A/c	3,89,375
		18,92,000			**18,92,000**

Mahesh's Account

Date	Particulars	Amount (₹)	Date	Particulars	Amount (₹)
	To Joint Venture A/c	88,000		By Joint Bank A/c	5,00,000
	To Joint Bank A/c (B.F.)	7,07,625		By Joint Venture A/c	2,95,625
		7,95,625			**7,95,625**

Suresh's A/c

Date	Particulars	Amount (₹)	Date	Particulars	Amount (₹)
	To Joint Venture	88,000		By Joint Bank A/c	3,00,000
	To Joint Bank A/c (B.F.)	3,89,375		By Joint Venture A/c	1,77,375
		4,77,375			**4,77,375**

संयुक्त साहस के लिए पृथक से लेखा पुस्तकें नहीं रखना
(When separate books are not maintained for Joint Venture)

जब सभी साहसी एक ही स्थान पर नहीं रहते हो एवं संयुक्त साहस का कारोबार भी अधिक बडा नहीं हो तो संयुक्त साहस के लिये अलग से लेखा पुस्तकें नहीं भी रखी जा सकती है। ऐसी दशा में साहसी गण अपनी ही पुस्तकों में संयुक्त साहस के लेनदेन का लेखा रख सकते हैं। इस स्थिति में संयुक्त साहस के लेखांकन हेतु निम्न में से किसी एक विधि का उपयोग किया जा सकता है–

(अ) प्रत्येक साहसी द्वारा केवल स्वयं के लेनदेनों का लेखा रखना –

(1) लेखांकन की इस विधि के अन्तर्गत प्रत्येक साहसी अपनी–अपनी लेखा पुस्तकों में Joint Venture with .....Account के नाम से एक खाता खोलता है। इस खाते की प्रकृति व्यक्तिगत खाते की होती है। संयुक्त साहस की समाप्ति पर इस खाते का शेष अन्य साहसी से बाकी लेना अथवा बाकी देना बताता है।

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

(2) साहसी द्वारा संयुक्त साहस के लिये किये जाने वाले भुगतानों, माल के क्रय अथवा अन्य किसी प्रकार के खर्चो के लिये Joint Venture with ……. Account को Debit (नाम) किया जाता है एवं संयुक्त साहस के लिये माल की बिक्री से प्राप्त रकम के लिये इस खाते को Credit किया जाता है।

(3) साहसी द्वारा अन्य साहसी को रकम भेजने पर उपर्युक्त खाता Debit तथा अन्य साहसी से रकम प्राप्त होने पर इस खाते को Credit किया जाता हैं।

(4) संयुक्त साहस की समाप्ति पर प्रत्येक साहसी अपने यहॉ रखे गये Joint Venture with ……. Account की एक नकल दूसरे साहसी को भेज देता है। ऐसी नकल प्राप्त होने पर साहसी अपनी पुस्तकों में स्मरणार्थ संयुक्त साहस खाता खोलते है। यह स्मरणार्थ खाता एक व्यापारिक एवं लाभ–हानि खाते की प्रकृति का होता है।

(5) स्मरणार्थ संयुक्त साहस खाते के Debit में माल का क्रय मूल्य एवं सभी प्रकार के खर्चे लिखे जाते हैं जबकि Credit में विक्रय मूल्य एवं अन्य आय (यदि कोई हो) लिखी जाती हैं। इस खाते का नाम (Debit) शेष हानि एवं जमा (Credit) शेष संयुक्त साहस का लाभ प्रकट करता है।

(6) स्मरणार्थ संयुक्त साहस खाते द्वारा लाभ प्रकट किये जाने पर लाभ विभाजन के लिये Joint Venture with ……Account को Debit एवं Profit & Loss Account को Credit किया जाता है। हानि होने की दशा में विपरीत प्रविष्टि की जाती हैं।

विशेष : एक साहसी द्वारा दूसरे साहसी को संयुक्त साहस का माल भेजने या अन्य साहसी द्वारा माल प्राप्त करने पर कोई लेखा प्रविष्टि नहीं की जाती हैं। इस विधि में निम्न जर्नल प्रविष्टियॉ की जाती हैं :–

1. स्वयं द्वारा माल खरीदने के लिये

Joint Venture with ……Account		Dr.
	To Cash/Bank A/c	

2. स्वयं द्वारा खर्चो का भुगतान करने पर

Joint Venture with …… Account		Dr.
	To Cash/Bank A/c	

3. स्वयं द्वारा माल बेचने पर

Cash/Bank A/c		Dr.
	To Joint Venture with ……Account	

4. संयुक्त साहस का स्टॉक स्वयं द्वारा रख लेने पर

Purchase A/c		Dr.
	To Joint Venture with …… Account	

5. स्वयं का ब्याज, कमीशन आदि के लिए :

Joint Venture with …… Account		Dr.
	To Interest	
	To Commission	

6. संयुक्त साहस में अपने लाभ के हिस्से के लिये

Joint Venture with…… Account		Dr.
	To Profit & Loss A/c	

7. संयुक्त साहस में अपने हिस्से की हानि होने के लिए

Profit & Loss A/c		Dr.
	To Joint Venture with ……Account	

8. दूसरे सह–साहसी को राशि भुगतान करने पर

Joint Venture with …… Account		Dr.
	To Cash/Bank A/c	

9. दूसरे सह–साहसी से राशि प्राप्त होने पर

Cash/Bank A/c		Dr.
	Joint Venture with …… Account	

उदाहरण 4 : कमल एवं विमल ने गेहूँ की खरीद एवं बिक्री के लिये संयुक्त साहस में प्रवेश किया। लाभ हानि 2 : 1 में बॉटने पर सहमति हुए। कमल ने 100 बोरी गेहूं ₹800 प्रति बोरी से खरीदा, गाडी भाडा के ₹800 नकद चुकाये गये। भण्डारण के लिये गोदाम का किराया ₹600 चुकाया गया। विमल द्वारा 80 बोरी गेहूं ₹610 प्रति बोरी की दर से क्रय किया गया। दलाली एवं गाडी भाड़ा के ₹700 चुकाये गये। गोदाम किराया ₹400 एवं बीमा व्यय के ₹300 का भुगतान किया गया।

गेहूँ की बिक्री इस प्रकार की गई। कमल द्वारा कुछ गेहूं ₹77500 में बेचा गया। विमल ने भी कुछ गेहूं को बेचकर ₹49200 प्राप्त

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

किये। बचा हुआ गेहूं कमल ने ₹9200 में ले लिया।

दोनों साहसियों की पुस्तकों में आवश्यक जर्नल प्रविष्टियॉ दीजिये। स्मरणार्थ संयुक्त साहस खाता बनाइये।

Kamal and Vimal entered into Joint Venture for purchase & sales of wheat and their profit and loss sharing ratio is 2:1. Kamal purchased 100 bags of wheat @ ₹800 each bag and paid carriage ₹800 and storage godown rent ₹600 in cash.

Vimal purchased 80 bags of wheat @ ₹610 each bag. Brokerage and carriage paid ₹700 and godown rent ₹400, Insurance premium ₹300 paid in cash.

Kamal sold wheat ₹77,500 and received amount in cash. Vimal sold wheat for ₹49200 and remaining stock took by Kamal for ₹9200.

Prepare necessary Journal and ledger in the books of both parties.

In the Books of Kamal's

Journal

Date	Particulars		L/F	Amount (₹) Dr.	Amount (₹) Cr.
1	Joint Venture with Vimal's A/c	Dr.		80,000	
	To Bank A/c				80,000
	(Being goods purchased)				
2	Joint Venuture with Vimal's A/c	Dr.		1,400	
	To Cash A/c				1,400
	(Being Rent & carriage paid)				
3	Cash A/c	Dr.		77,500	
	To Joint Venture with Vimal's A/c				77,500
	(Being goods sold)				
4	Purchases A/c	Dr.		9,200	
	To Joint Venture with Vimal's A/c				9,200
	(Being stock taken over)				
5	Joint Venture with Vimal's A/c	Dr.		2,867	
	To P&L A/c				2,867
	(Share in profit from Joint Venture)				

Joint Venture with Vimal's Account

Date	Particulars	Amount (₹)	Date	Particulars	Amount (₹)
	To Bank A/c (Purchase)	80,000		By Cash A/c (Sales)	77,500
	To Cash A/c (Expenses)	1,400		By Purchase A/c (Stock)	9,200
	To P&L A/c (Profit)	2,867			
	To Balance c/d	2,433			
	(Due to Vimal)				
		86,700			**86,700**

In the Books of Vimal

Journal

Date	Particulars		L/F	Amount (₹) Dr.	Amount (₹) Cr.
1	Joint Venture with Kamal's A/c	Dr.		48,800	
	To Bank A/c				48,800
	(Being goods purchased)				
2	Joint Venuture with Kamal's A/c	Dr.		1,400	
	To Cash A/c				1,400
	(Being expenses paid)				
3	Cash A/c	Dr.		49,200	
	To Joint venture with Kamal's A/c				49,200
	(Being goods sold)				
4	Joint venture with Kamal's A/c	Dr.		1,433	
	To P&L A/c				1,433
	(Being share of profit on Joint Venture transferred)				

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Joint Venture with Kamal's A/c

Date	Particulars	Amount (₹)	Date	Particulars	Amount (₹)
	To Bank A/c (Purchase)	48,800		By Cash A/c (Sales)	49,200
	To Cash A/c (Expenses)	1,400		By Balance c/d	2,433
	To P&L A/c (Profit)	1,433		(Due to Kamal)	
		51,633			**51,633**

Memorandum Joint Venture A/c

Date	Particulars	Amount (₹)	Date	Particulars	Amount (₹)
	To Purchase A/c (Kamal)	80,000		By Sales A/c (Kamal)	77,500
	To Purchase A/c (Vimal)	48,800		By Sales A/c (Vimal)	49,200
	To Expenses (Kamal)	1,400		By Kamal's A/c (Stock)	9,200
	To Expenses (Vimal)	1,400			
	To Profit	4,300			
	Kamal 2,867				
	Vimal 1,433				
		1,35,900			**1,35,900**

उदाहरण 5 : अहमदाबाद के A और दिल्ली का B बैंगलौर के C को प्रेषण पर 100 गांठे उनकी संयुक्त जोखिम पर बेचने के लिये एक संयुक्त साहस में शामिल होते हैं। वे लाभ–हानि बराबर बांटने के लिये सहमत होते हैं। ए ने ₹60,000 के मूल्य की 50 गांठे भेजी तथा ₹1,200 विभिन्न खर्चो के चुकाये। बी ने ₹56,000 मूल्य की 50 गांठे भेजी तथा ₹1,000 विविध खर्च चुकाये। सभी गांठे समय पर बैंगलोर पहुंच गयी। 5 गांठे रास्ते में खराब हो गयी तथा बी इसके दावे के ₹5,000 बीमा कम्पनी से वसूल कर सका। सी ने शेष गांठे ₹1,30,000 में बेच दी। उसने बिक्री पर 5 प्रतिशत कमीशन व अन्य खर्चो के ₹1,500 काटकर शेष राशि ''ए'' को भेज दी। स्मरणार्थ संयुक्त साहस खाता बनाइये तथा ''ए'' की पुस्तकों में ''बी'' का खाता तथा ''बी'' की पुस्तकों में ए का खाता बनाइये।

A of Ahmedabad and B of Delhi entered into a Joint venture to consign 100 bales to C at Bangalore to be sold on their joint risk. They agree to share profit or losses equally. 'A' sent 50 bales valued ₹60,000 and paid ₹ 1200 for sundry Expenses. 'B' sent 50 bales valued at ₹56,000 and paid ₹1,000 sundry expenses.

All the bales reached to Bangalore in time. However 5 bales were found damaged and 'B' could recover ₹5,000 from insurance company for its claim. 'C' sold remaining bales for ₹1,30,000. He remitted the balance amount to 'A' after deducting 5% commission on sale and ₹1,500 for other expenses. Prepare A's account in the books of B and B's account in the books of A and Memorandum Joint Venture Account.

Memorandum Joint Venture Account

Date	Particulars	Amount (₹)	Date	Particulars	Amount (₹)
	To Purchases A/c (A)	60,000		By Insurance claim (B)	5,000
	To Expenses (A)	1,200		By Sales A/c (C)	1,30,000
	To Purchases A/c (B)	56,000			
	To Expenses (B)	1,000			
	To Commission & Exp. (C)	8,000			
	To Profit				
	A 4400				
	B 4400	8,800			
		1,35,000			**1,35,000**

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

In the Books of A

Joint Venture With B's A/c

Date	Particulars	Amount (₹)	Date	Particulars	Amount (₹)
	To Bank A/c (Purchases)	60,000		By Cash A/c	1,30,000
	To Bank A/c (Expenses)	1,200			
	To P&L A/c	4,400			
	To Commission (C)	8,000			
	To Bank A/c (b/f)	56,400			
		1,30,000			**1,30,000**

In the Books of B

Joint Venture With A's A/c

Date	Particulars	Amount (₹)	Date	Particulars	Amount (₹)
	To Bank A/c (Purchases)	56,000		By Bank A/c	5,000
	To Bank A/c (Expenses)	1,000		By Bank A/c (b/f)	56,400
	To P&L A/c	4,400			
		61,400			**61,400**

उदाहरण 6 : दिल्ली के भरत और भीलवाडा के अनिल पुरानी मशीनों का क्रय विक्रय करने के लिये संयुक्त साहस में शामिल होते हैं। भरत को मशीनों का क्रय करना था व अनिल को बेचना था। लाभ–हानि बराबर बाँटे जाते हैं। अनिल ने भरत को ₹40,000 भेजे। भरत ने ₹45,000 में पुरानी मशीनें खरीदी तथा 2 प्रतिशत क्रय कमीशन एवं इनकी मरम्मत के ₹10,000 व अन्य विविध व्यय के ₹600 चुकाये। उसने इन मशीनों को भीलवाडा भेज दी।

अनिल ने ₹2,000 किराया भाडा व ₹1,000 चुंगी चुकाकर मशीनों की सुपुर्दगी ले ली। उसने कुछ मशीनों को ₹85,000 में बेच दिया तथा बची हुई मशीनों को ₹7,200 में रख लिया। उसके ₹400 गोदाम किराया ₹1,800 विज्ञापन और बिक्री व्यय के थे। संयुक्त साहस निपटारा किया गया।

स्मरणार्थ संयुक्त साहस खाता बनाइये तथा भरत की पुस्तकों में अनिल का खाता व अनिल की पुस्तकों में भरत का खाता बनाइये।

Bharat of Delhi and Anil of Bhilwara entered into Joint Venture to purchase and sale of old machines. It was decided to share profit or losses equally.

Anil remitted ₹40,000 to Bharat. Bharat purchased old machines worth ₹45,000 and paid 2% purchases commission, ₹10,000 for its repairs and ₹600 for other sundry expenses. Then he dispatched machines to Bhilwara.

Anil took the delivery of the machinery paying ₹ 2,000 freight, ₹1,000 octroi. He sold to some machines for ₹85,000 and kept remaining one for himself at an agreed value of ₹7,200. His other expenses were : godown rent ₹400 and ₹1,800 advertisement and selling Expenses. Final settlement was made on joint venture.

Prepare Memorandum Joint Venture Account and Anil's Account in the books of Bharat and Bhrat Account in the books of Anil.

Memorandum Joint Venture Account

Date	Particulars	Amount (₹)	Date	Particulars	Amount (₹)
	To Purchases A/c (Bharat)	45,000		By Sales (Anil)	85,000
	To Expenses (Bharat)	11,500		By Stock A/c (Anil)	7,200
	Purchase Commission 900				
	Repairs 10000				
	Sundry Expenses 600				
	To Expenses (Anil)	5,200			
	Freight 2000				
	Octroi 1000				
	Godown rent 400				
	Advertisement Exp. 1800				

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

	To Profit		30,500			
	Bharat	15250				
	Anil	15250				
			92,200			**92,200**

In the Books of Bharat

Joint Venture with Anil's Account

Date	Particulars	Amount (₹)	Date	Particulars	Amount (₹)
	To Bank A/c	45,000		By Bank A/c	40,000
	To Bank A/c	11,500		By Bank A/c	31,750
	To P&L A/c	15,250			
		71,750			**71,750**

In the Books of Anil

Joint Venture with Bharat's A/c

Date	Particulars	Amount (₹)	Date	Particulars	Amount (₹)
	To Bank A/c	40,000		By Bank A/c	85,000
	To Bank A/c	5,200		By Purchase A/c	7,200
	To P&L A/c	15,250			
	To Bank A/c (B.F.)	31,750			
		92,200			**92,200**

(ब) स्वयं के लेनदेनों के साथ ही अन्य साहसियों के लेनदेनों का लेखा करना –

संयुक्त साहस के व्यवहारों का लेखा रखने की इस विधि के अन्तर्गत सभी साहसी अपनी अपनी लेखा पुस्तकों में संयुक्त साहस के समस्त व्यवहारों का लेखा रखते हैं। इसके लिये उनकी पुस्तकों में दो खाते संयुक्त साहस खाता एवं अन्य साहसी का व्यक्तिगत खाता खोले जाते हैं। इस दशा में संयुक्त साहस खाता व्यापारिक एवं लाभ–हानि खाते की प्रकृति का होता है और यह संयुक्त साहस का लाभ/हानि प्रकट करता है। प्रत्येक साहसी अपने लेनदेनों का विवरण समय समय पर अन्य साहसी को भेजता है ताकि अन्य साहसी भी अपनी पुस्तकों में उन लेनदेनों का लेखा कर सके। संयुक्त साहस की समाप्ति के साथ ही हिसाब किताब भी निपटा दिया जाता है।

लेखा प्रविष्टियाँ :–

(1) स्वयं द्वारा संयुक्त साहस के लिए माल क्रय करने तथा किसी भी प्रकार का व्यय करने पर

Joint venture A/c Dr.

To Cash/Bank A/c

(Being goods purchased / expenses incurred)

विशेष : उधार क्रय की दशा में (व्यक्ति) Creditors A/c Credit किया जाता हैं।

(2) स्वयं द्वारा संयुक्त साहस का माल बेचने पर –

Cash / Bank A/c Dr.

To Joint Venture A/c

(Being goods sold)

विशेष : उधार विक्रय की दशा में Customer A/c Debit किया जाता हैं।

(3) अन्य साहसी द्वारा संयुक्त साहस के लिये माल क्रय करने एवं किसी प्रकार का व्यय करने की सूचना मिलने पर

Joint Venture A/c Dr.

To Co-venturer's A/c

(Being goods purchased/Expenses incurred)

(4) अन्य साहसी द्वारा संयुक्त साहस का माल बेचने की सूचना मिलने पर

Co-venturer's A/c Dr.

To Joint venture A/c

(Being goods sold by .....)

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

(5) संयुक्त साहस से स्वयं के लिये ब्याज / कमीशन आदि वसूल करने पर

Joint Venture A/c	Dr.	
To Interest A/c		
To Commission A/c		

(Being Interest and commission charge)

(6) संयुक्त साहस का बचा हुआ माल स्वयं द्वारा क्रय करने पर

Purchases A/c	Dr.	
To Joint venture A/c		

(Unsold stock taken)

(7) संयुक्त साहस का शेष स्टॉक निर्धारित मूल्य पर अन्य साहसी द्वारा खरीदने पर

Co-Venturer's A/c	Dr.	
To Joint venture A/c		

(Stock purchased by Co-Venturer)

(8) अन्य साहसी द्वारा संयुक्त साहस से ब्याज / कमीशन आदि वसूल करने की सूचना मिलने पर

Joint Venture A/c	Dr.	
To Co-venturer's A/c		

(Being interest and commission charged by .....)

(9) संयुक्त साहस द्वारा लाभ प्रकट करने एवं उसका आपस में वितरण करने पर –

Joint Venture A/c	Dr.	(कुल लाभ)
To P & L A/c		(स्वयं का लाभ)
To Co-venturer's A/c		(अन्य साहसी के लाभ का हिस्सा)

(Profit distributed on joint venture)

नोट : हानि होने पर विपरीत प्रविष्टि करेंगे।

(10) अन्य साहसी को देय रकम का भुगतान करने पर

Co-venturer's A/c	Dr.	
To Cash / Bank / B/P A/c		

(Being cash remitted , B/P accepted)

(11) अन्य साहसी से भुगतान प्राप्त होने पर

Cash / Bank / B/R A/c	Dr.	
To Co-venturer's A/c		

(Being cash/B/R received)

(12) यदि साहसी स्वयं के गोदाम / दुकान से संयुक्त साहस के लिये माल देता है तो –

Joint Venture A/c	Dr.	
To Sales A/c		

(Being goods given for joint venture)

विशेष : 1. यदि किसी ग्राहक से भुगतान की एवज में प्राप्य बिल (B/R) प्राप्त होता है और उसे बैंक से भुनाया जावे उस समय बट्टे की राशि से Joint Venture A/c Debit किया जाता है।

2. यदि स्वयं द्वारा संयुक्त साहस के लिए माल लागत पर दिया जाता है तो प्रविष्टि संख्या 12 में विक्रय के स्थान पर क्रय खाता उपरोक्त प्रविष्टि में क्रेडिट करेंगे।

3. यदि उधार माल बेचा जाता है तो प्राप्तकर्ता साहसी की पुस्तकों में ग्राहक से प्राप्त राशि का लेखा करेंगे। प्रविष्टि होगी :–

Cash/Bank A/c	Dr.	(प्राप्त राशि से)
Joint Venture A/c	Dr.	(बट्टे की राशि / डूबत ऋण राशि से)
To Debtors/Customers A/c		

(Amount received from joint venture customer and discount allowed/bad debts written off)

4. यदि उधार बेचे गये माल के ग्राहक को राशि प्राप्त होने पर बट्टा दिया जाता है अथवा राशि डूब जाती है तो दूसरे सह–साहसी की पुस्तकों में निम्नांकित प्रविष्टि बनेगी।

Joint venture A/c	Dr.	(नगद बट्टे / डूबत ऋण राशि से)
To Co-venturer's A/c		

(Cash discount allowed/Bad debts entered in J.V. A/c)

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

उदाहरण 7 : सुनील एवं कपिल ने दिल्ली से माल खरीद कर उदयपुर में बेचने हेतु संयुक्त साहस में प्रवेश किया। सुनील ने दिल्ली से माल खरीदने व कपिल ने उदयपुर में माल बेचने एवं प्राप्त लाभ को बराबर बाँटने का निश्चय किया। माल के क्रय हेतु कपिल ने सुनिल को ₹1,50,000 का अग्रिम ड्राफ्ट 1 जनवरी 2016 को भेज दिया।

सुनिल ने सूचना भेजी कि उसने 300 शर्ट ₹400 प्रति शर्ट की दर से एवं 200 शर्ट ₹650 प्रति पेन्ट की दर से क्रय किये। दिल्ली से माल उदयपुर भेजने पर ₹5,000 पैंकिंग चार्जेज के खर्च किये।

माल आने पर कपिल द्वारा माल अपनी दुकान पर लाया गया। उसके ₹1200 खर्च हुए। माल के विज्ञापन पर ₹1300 तथा गोदाम किराया ₹500 चुकाया। माल की बिक्री इस प्रकार हुई – 250 शर्ट ₹550 प्रति शर्ट की दर से तथा 200 शर्ट ₹780 प्रति शर्ट की दर से बेचे। शेष शर्ट को कपिल ने ₹2500 में रख लिया। दोनों ने अपने अपने लेनदेनों का विवरण एक दूसरे को भेज दिया। दोनों साहसियों की पुस्तकों में लेनदेनों को दर्ज करते हुए जर्नल प्रविष्टियॉ दीजिये एवं आवश्यक खाते तैयार कीजिये। शेष भुगतान बैंक ड्राफ्ट द्वारा भेज दिया।

Sunil and Kapil entered into Joint Venture for the purchases of goods from Delhi and sold at Udaipur and to distribute profit and losses equally. Kapil sent a bank draft to Sunil of ₹1,50,000 for purchases the goods on 1st January 2016. Sunil informed that 300 Shirts @ ₹400 each, 200 Shirts @ ₹600 each purchased and sent to Udaipur and paid ₹5,000 as packing charges.

After receiving goods, Kapil brought goods at his shop & paid ₹1,200 as expenses, ₹1,300 for advertisement Expenses and ₹500 for godown rent. Kapil sold 250 shirts for ₹550 per shirt and 200 shirts at ₹780 per shirt, remaining shirts took by Kapil for ₹2,500. Both sent statements to each other for their transactions. Prepare journal entries and necessary accounts in the books of both venturers. Remaining payment is made through bank draft.

In the Books of Sunil
Journal

Date	Particulars		L/F	Amount (₹)	
				Dr.	Cr.
1	Joint Venture A/c	Dr.		2,50,000	
	To Cash A/c				2,50,000
	(Being goods purchased)				
2	Joint Venuture A/c	Dr.		5,000	
	To Cash A/c				5,000
	(Being expenses paid)				
3	Bank A/c	Dr.		1,50,000	
	To Kapil's A/c				1,50,000
	(Cash received from Kapil)				
4	Kapils's A/c	Dr.		2,93,500	
	To Joint venture A/c				2,93,500
	(Goods sold by Kapil)				
5	Kapils A/c	Dr.		2,500	
	To Joint venture A/c				2,500
	(Stock taken by Kapil)				
6	Joint Venture A/c	Dr.		3,000	
	To Kapil's A/c				3,000
	(Expenses paid by Kapil)				
7	Joint venture A/c	Dr.		38,000	
	To P&L A/c				19,000
	To Kapil's A/c				19,000
	(Profit on joint venture credited)				
8	Bank A/c	Dr.		1,24,000	
	To Kapil's A/c				1,24,000
	(Balance amount received)				

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Joint Venture Account

Date	Particulars	Amount (₹)	Date	Particulars	Amount (₹)
	To Cash A/c (Purchases)	2,50,000		By Kapil's A/c (Sales)	2,93,500
	To Cash A/c (Expenses)	5,000		By Kapil's A/c (Stock)	2,500
	To Kapil's A/c (Expenses)	3,000			
	To P&L A/c	19,000			
	To Kapil's A/c	19,000			
		2,96,000			**2,96,000**

Kapil's A/c

Date	Particulars	Amount (₹)	Date	Particulars	Amount (₹)
	To Joint venture (sales)	2,93,500		By Bank A/c	1,50,000
	To Joint venture (Stock)	2,500		By Joint venture A/c	3,000
				By Joint venture A/c	19,000
				By Bank A/c (B.F.)	1,24,000
		2,96,000			**2,96,000**

In the Books of Kapil
Journal

Date	Particular		L/F	Amount (₹) Dr.	Amount (₹) Cr.
1	Sunil's A/c	Dr.		1,50,000	
	To Bank A/c				1,50,000
	(DD sent to Sunil)				
2	Joint Venuture A/c	Dr.		3,000	
	To Cash A/c				3,000
	(Expenses paid)				
5	Cash A/c	Dr.		2,93,500	
	To Joint venture A/c				2,93,500
	(Goods sold)				
6	Purchase A/c	Dr.		2,500	
	To Joint venture A/c				2,500
	(Stock taken over)				
3	Joint venture A/c	Dr.		2,50,000	
	To Sunil's A/c				2,50,000
	(Goods purchased by Sunil)				
4	Joint Venture A/c	Dr.		5,000	
	To Sunil's A/c				5,000
	(Expenses paid by Sunil)				
7	Joint venture A/c	Dr.		38,000	
	To P&L A/c				19,000
	To Sunil's A/c				19,000
	(Profit credited on joint venture)				
8	Sunil's A/c	Dr.		1,24,000	
	To Bank A/c				1,24,000
	(Balance amount paid to sunil)				

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Joint Venture Account

Date	Particulars	Amount (₹)	Date	Particulars	Amount (₹)
	To Cash A/c (Expenses)	3,000		By Cash A/c (Sales)	2,93,500
	To Sunil's A/c (Purchases)	2,50,000		By Purchases A/c	2,500
	To Sunil's A/c (Expenses)	5,000			
	To P&L A/c	19,000			
	To Sunil's A/c	19,000			
		2,96,000			**2,96,000**

Sunil's Account

Date	Particulars	Amount (₹)	Date	Particulars	Amount (₹)
	To Bank A/c	1,50,000		By Joint venture A/c	2,50,000
	To Bank (B.F.)	2,500		By Joint venture A/c	5,000
				By Joint venture A/c	19,000
		2,74,000			**2,74,000**

उदाहरण 8 : अमर और कैलाश एक संयुक्त साहस में 100 गांठे रूई की बेचने के लिये सुरेश को भेजते हैं तथा लाभ हानि 3:2 के अनुपात में बांटने का निश्चय करते हैं। अमर 60 गांठे रूई की ₹2800 प्रति गांठें की दर से भेजता है और ₹1200 किराया भाडा व अन्य खर्चो के भुगतान करता है। कैलाश 40 गांठे रूई की ₹2750 प्रति गांठ की दर से भेजता है। ₹1000 किराया भाड़ा व अन्य खर्चों के व्यय करता हैं। सुरेश सारा माल ₹320000 में बेच देता है। उसने माल बेचने में निम्न व्यय किये : गोदाम भाड़ा ₹400 तथा विक्रय व्यय ₹1200। सुरेश अपने खर्चों की राशि व 3 प्रतिशत कमीशन काटकर ₹2,00,000 अमर को तथा शेष राशि कैलाश को भेज देता है। दोनों पक्षों की बहियो में संयुक्त साहस तथा दूसरे सह–साहसी का खाता बनाइये।

Amar and Kailash sent 100 bales to Suresh for sale in Joint Venture. They decide to distribute profit and loss in 3:2 ratio. Amar sent 60 bales @ ₹2800 per bale and paid ₹1200 for carriage and other expenses. Kailash sent 40 bales @ ₹2750 per bale and paid ₹1000 for carriage and other expenses.

Suresh sold all goods for ₹3,20,000. He spent following expenses for sale : godown rent ₹400, selling expenses ₹1200, After deducting his expenses and 3% commission, Suresh sent ₹200000 to Amar and remaining amount to Kailash. Prepare Joint Venture Account and Co-Venturer Account in the books of both parties.

In the Books of Amar
Joint Venture Account

Date	Particulars		Amount ₹	Date	Particulars	Amount ₹
	To Bank A/c (Purchases)		1,68,000		By Suresh"s A/c (Sales)	3,20,000
	To Bank A/c (Expenses)		1,200			
	To Kailash (Purchases		1,10,000			
	To Kailash (Expenses		1,000			
	To Suresh (Consignee)					
	Godown rent	400				
	Sundry Exp.	1,200				
	Commission	9,600	11,200			
	To Kailash		11,440			
	To P&L A/c		17,160			
			3,20,000			**3,20,000**

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Kailash's Account

Date	Particulars	Amount ₹	Date	Particulars	Amount ₹
	To Suresh A/c (remitted)	1,08,800		By Joint venture A/c	1,10,000
	To Bank (Remittance) A/c	13,640		By Joint venture A/c	1,000
				By Joint venture A/c	11,440
		1,22,440			**1,22,440**

Suresh's (Consignee) Account

Date	Particulars	Amount ₹	Date	Particulars	Amount ₹
	To Joint venture A/c (Sales)	3,20,000		By Joint venture A/c	1,600
				By Joint venture A/c	9,600
				By Bank A/c	2,00,000
				By Kailash's A/c	1,08,800
		3,20,000			**3,20,000**

In the Books of Kailash

Joint Venture A/c

Date	Particulars		Amount ₹	Date	Particulars	Amount ₹
	To Bank A/c (Purchases)		1,10,000		By Suresh A/c (Sales)	3,20,000
	To Bank A/c (Expenses)		1,000			
	To Amar's A/c (Purchases)		1,68,000			
	To Amar's A/c (Expenses)		1,200			
	To Suresh A/c (Consignee)					
	Godown Rent	400				
	Sundry Expenses	1,200				
	Commission	9,600	11,200			
	To Amar's A/c		17,160			
	To P&L A/c		11,440			
			3,20,000			**3,20,000**

Amar's Account

Date	Particulars	Amount ₹	Date	Particulars	Amount ₹
	To Kamal's A/c	2,00,000		By Joint venture A/c	1,68,000
				By Joint venture A/c	1,200
				By Joint venture A/c	17,160
				By Bank A/c (Remittance)	13,640
		2,00,000			**2,00,000**

Suresh's (Consignee) Account

Date	Particulars	Amount ₹	Date	Particulars	Amount ₹
	To Joint Venture A/c	3,20,000		By Joint Venture A/c	1,600
				By Joint Venture A/c	9,600
				By Amar's A/c	2,00,000
				By Bank A/c (Remittance)	1,08,800
		3,20,000			**3,20,000**

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

उदाहरण 9 : रवि और कवि कपड़े के क्रय विक्रय करने हेतु संयुक्त साहस में प्रवेश करते हैं और लाभ–हानि 3:2 के अनुपात में बांटने का निश्चय करते हैं। रवि ने ₹1,00,000 के कपड़े खरीदे तथा ₹1,000 किराया, ₹200 बीमा व्यय, ₹800 गाड़ी भाडा तथा ₹300 विविध व्यय के चुकाये। कवि ने ₹60,000 के कपड़े खरीदे, ₹400 गोदाम किराया, ₹100 बीमा, ₹100 गाड़ी भाड़ा के चुकाये। रवि ने ₹1,20,000 का कपड़ा तथा कवि ने ₹76,000 का कपड़ा बेच दिया। दोनों साहसियों की पुस्तकों में आवश्यक खाते बनाइये।

Ravi and Kavi entered in joint venture to purchase and sales of cloth and decide to distribute profit or loss in 3:2 ratios. Ravi purchased cloth ₹1,00,000 and paid ₹1,000 freight, ₹200 insurance expenses, ₹800 carriage and ₹300 sundry expenses. Kavi purchased cloth ₹60,000 and paid ₹400 godown rent, ₹ 100 insurance premium and ₹100 carriage. Ravi sold the cloths worth ₹1,20,000 and Kavi sold cloths for ₹76,000. Prepare necessary accounts in the books of both coventurers.

In the Books of Ravi
Joint Venture Account

Date	Particulars	Amount ₹	Date	Particulars	Amount ₹
	To Bank A/c (Purchases)	1,00,000		By Bank A/c (Sales)	1,20,000
	TO Kavi's A/c (Purchases)	60,000		By Kavi's A/c (sales)	76,000
	To Bank A/c (Expenses)	2,300			
	To Kavi's A/c (Expenses)	600			
	To P&L A/c	19,860			
	To Kavi's (Profit)	13,240			
		1,96,000			**1,96,000**

Kavi's Account

Date	Particulars	Amount ₹	Date	Particulars	Amount ₹
	To Joint venture A/c	76000		By Joint venture A/c	60000
				By Joint venture A/c	600
				By Joint venture A/c	13240
				By Bank A/c (B.F.)	2160
		76000			**76000**

In the Books of Kavi
Joint Venture Account

Date	Particulars	Amount ₹	Date	Particulars	Amount ₹
	To Bank A/c (Purchases)	60,000		By Bank A/c	76,000
	To Bank A/c (Expenses)	600		By Kavi's A/c (sales)	1,20,000
	To Ravi's A/c (Purchases)	1,00,000			
	To Ravi's A/c (Expenses)	2,300			
	To P&L A/c	13,240			
	To Ravi's A/c (Profit)	19,860			
		1,96,000			**1,96,000**

Ravi's Account

Date	Particulars	Amount ₹	Date	Particulars	Amount ₹
	To Joint venture A/c	1,20,000		By Joint venture A/c	1,00,000
	To Bank A/c (B.F.)	2,160		By Joint venture A/c	2,300
				By Joint venture A/c	19860
		1,22,160			**1,22,160**

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

सारांश (Summary)

- **संयुक्त साहस** – दो या दो से अधिक व्यक्ति या कम्पनियाँ, फर्म, संस्थाएं संयुक्त जोखिम पर अस्थायी रूप से किसी कार्य को करने के लिये **अथवा** माल का क्रय विक्रय करने और लाभ–हानि को समझौते के अनुसार बांटने के लिये सहमत होते हैं, उसे संयुक्त साहस कहते हैं।
- **संयुक्त साहस की उपयुक्तता :** यह भवन निर्माण ठेका कार्य, भूमि क्रय कर प्लॉट काटना, अंशों एवं ऋण पत्रों का अभिगोपन करने, आयात निर्यात कार्य आदि **कार्य** करने में उपयुक्त है।
- **संयुक्त साहस लेखांकन की पद्धतियां : (अ)** संयुक्त साहस का लेखा करने हेतु पृथक पृथक पुस्तकें रखना। इस दशा में संयुक्त बैंक खाता, संयुक्त साहस खाता व सह–साहसियों के खाते खोले जाते हैं।

(ब) प्रत्येक सह–साहसी द्वारा केवल स्वयं के व्यवहारों का अपनी पुस्तकों में लेखा करना : इस दशा में प्रत्येक सह–साहसी अपनी पुस्तकों में सह–साहसी का खाता एवं स्मरणार्थ संयुक्त साहस खाता बनाता है।

(स) प्रत्येक सह–साहसी द्वारा अपनी पुस्तकों में सभी व्यवहारों का लेखा करना : इस दशा में प्रत्येक सह–साहसी अपनी पुस्तकों में संयुक्त साहस खाता व सह–साहसी का खाता बनाता है।

शब्दावली (Glossary)

1. **सह–साहसी (Coventurer)** – ऐसे व्यक्ति जो मिलकर अस्थायी तौर पर व्यापार करते हैं।
2. **संयुक्त बैंक खाता (Joint Bank Account)**– ऐसा खाता जिसके माध्यम से संयुक्त साहस सम्बन्धी सभी रोकड़ व्यवहारों का लेखा किया जाता है। यह संयुक्त साहस की पृथक से पुस्तकें रखने पर बैंक में खोला जाता हैं।
3. **बिल भुनाना (Bill discounted)**– प्राप्त स्वीकृति को समय से पूर्व बैंक से भुनाकर राशि प्राप्त करना।

अभ्यासार्थ प्रश्न (Questions for excercise)

बहुचयनात्मक प्रश्न (Multiple Choice Questions)

1. संयुक्त साहस के व्यापारिक स्वरूप का नाम है –
   (अ) साझेदारी संस्था (ब) सहकारी समिति
   (स) व्यक्तियों का समूह (द) एकाकी व्यापारी
   What is the name of trade structure of joint venture-
   (A) Partnership **(B)** Cooperative society
   (C) Group of people **(D)** Sole trader
2. संयुक्त साहस में सम्मिलित होने वाले सदस्य को कहते हैं –
   (अ) प्रबन्धक (ब) सह–साहसी
   (स) साझेदार (द) अंशधारी
   The member who participate in joint Venture is called-
   (A) Manager **(B)** Co-venturer
   (C) Partner **(D)** Shareholder
3. संयुक्त साहस खाता उदाहरण है –
   (अ) व्यक्तिगत खाते का (ब) वास्तविक खाते का
   (स) नाम मात्र खाते का (द) उपर्युक्त में से कोई नहीं
   Joint venture Account is an example of-
   (A) Personal A/c **(B)** Real A/c
   (C) Nominal A/c **(D)** None of the above.
4. संयुक्त साहस में सदस्यों की अधिकतम संख्या होती है –
   (अ) 2 (ब) 20
   (स) 10 (द) कोई सीमा नहीं
   Maximum number of members in a Joint Venture are-
   (A) Two **(B)** Twenty
   (C) Ten **(D)** No limit
5. सह–साहसी द्वारा प्राप्त बिल बैंक से भुनाने पर दिये जाने वाले बट्टे को नामे किया जाता है –
   (अ) बट्टे खाते में (ब) संयुक्त साहस खाते में
   (स) बैंक खाते में (द) सह–साहसी के खाते में
   On discounting the bill from bank by a co-venturer such discount is debited to

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

(A) Discount Account **(B)** Joint Venture Account
(C) Bank A/c **(D)** Co-venturer A/c ( )

अति लघूत्तरात्मक प्रश्न (**Very Short Answer Type Questions**) :–

1. संयुक्त साहस और साझेदारी में कोई दो अन्तर बताइये ?
   State any two important points of difference between Joint Venture and Partnership ?
2. संयुक्त साहस में साहसियों की अधिकतम व न्यूनतम संख्या बताइये ?
   State the maximum and minimum number of Venturers in joint venture?
3. संयुक्त साहस में लेखों के लिये कब अलग से लेखा पुस्तकें रखना ठीक रहता है ?
   When it is appropriate to keep separate books in Joint Venture ?
4. संयुक्त साहस में लाभ–हानि का विभाजन किस अनुपात में किया जाता है ?
   In which ratio profit and loss of Joint Venture is distributed?
5. स्मरणार्थ संयुक्त साहस खाते की प्रकृति किस प्रकार की होती है ?
   What is the nature of Memorandum Joint Venuture Account?
6. जब प्रत्येक सह–साहसी अपनी पुस्तकों में केवल स्वयं द्वारा किये गये व्यवहारों का लेखा करता है तो जो खाते तैयार करता हैं उसके नाम लिखिये ?
   When each co-venturer records his own transactions for the Joint venture, which accounts will be opened by him? Give only name ?
7. संयुक्त साहस का समापन कब होता है ?
   When dissolution of the Joint venture is happen?
8. संयुक्त साहस किस प्रकार के उपक्रम के लिये ठीक रहता है ?
   Joint Venture is appropriate for which type of organisation?
9. संयुक्त साहस के लिये उधार माल क्रय करने पर किस खाते को क्रेडिट किया जाता है ?
   Which account is credited in Joint Venture for credit purchases?
10. जब संयुक्त साहस की पृथक पृथक पुस्तकें रखी जाती हैं तो कौन–कौन से खाते खोले जाते है ?नाम बताइये।
    When seperate books of Joint Venture is kept which types of accounts are opened ? Give Names.

लघूत्तरात्मक प्रश्न (**Short Answer Type Questions**) :–

1. संयुक्त साहस किसे कहते है ?
   What is the Joint venture ?
2. स्मरणार्थ संयुक्त साहस खाता क्या है ? यह क्यों बनाया जाता है ?
   What is the Memorandum Joint Venture Account ? Why is it made ?
3. संयुक्त साहस एवं प्रेषण में अन्तर बताइये ।
   What is the difference between Joint Venture Account and Consignment Account.
4. संयुक्त साहस सम्बन्धी व्यवहारों का लेखा रखने की विधियॉ बताइये ।
   State the methods of accounting for Joint Venture trancations?
5. संयुक्त साहस की विशेषताएँ बताइये।
   What are the characteristics of Joint Venture?

निबन्धात्मक प्रश्न (**Essay Type Questions**)

1. संयुक्त साहस का अर्थ बताते हुए संयुक्त साहस एवं साझेदारी में अन्तर बताइये।
   What is the meaning of the Joint Venture and write difference between Joint Venture and Partnership ?
2. संयुक्त साहस लेखा करने की विधियों को सोदाहरण समझाइये ।
   Explain with example, methods of accounting for Joint Venture?

बहुचयनात्मक प्रश्नों के उत्तर

प्रश्न संख्या	1	2	3	4	5
उत्तर	स	ब	स	द	ब

आंकिक प्रश्न **(Numerical Questions)**

1. दीपक एवं मुकेश ने लकडी के फर्नीचर का क्रय विक्रय करने के लिये संयुक्त साहस प्रारम्भ किया। दीपक ने ₹80,000 तथा मुकेश ने ₹50,000 साहस के लिए देकर बैंक में संयुक्त बैंक खाता खोला। उन्होंनें लाभ हानि 2:3 अनुपात में विभाजित करना तय किया। उन्होंनें ₹1,00,000 का माल क्रय किया तथा दलाली के ₹1000, भाडे के ₹5,000 एवं विविध व्यय के ₹10,000 चुकाये एवं तीन माह का विक्रय ₹1,40,000 था। वर्ष के अन्त में शेष माल को मुकेश ने ₹5,000 में ले लिया। आवश्यक जर्नल प्रविष्टियाँ देते हुए संयुक्त साहस, संयुक्त

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

बैंक एवं सह–साहसियों के खाते खोलिये।

Deepak and Mukesh entered into Joint Venture for purchase and sale of furniture. They opened a separate bank account contributing Deepak ₹80000 and Mukesh ₹50000, It was also decided to share profit and losses in 2:3 ratio.

They purchase goods for ₹1,00,000; paid brokerage ₹1,000 and freight ₹5000 and paid sundry expenses ₹ 10000;

Three months sales ₹1,40,000. Remaining stock was taken by Mukesh for ₹5,000. Give necessary journal entries and prepare Joint Venture, Joint Bank and Co-venturers Account.

उत्तर : संयुक्त साहस का लाभ ₹29000

2. 'अ', 'ब' एवं 'स' बराबर लाभ विभाजन करते हुऐ संयुक्त साहस में सम्मिलित होते हैं। 1 जनवरी 2015 को वे स्टेट बैंक में अलग से संयुक्त बैंक खाता खोलते हैं जिसमें 'अ' ₹30,000, 'ब' ₹40,000 एवं 'स' ₹90,000. जमा कराते हैं। यह भी निश्चय किया कि इन जमाओं पर 3 प्रतिशत वार्षिक दर से ब्याज दिया जायेगा। 'डी' से ₹1,50,000 का माल खरीदा। 'अ' से ₹20,000 का स्टॉक प्राप्त किया। उन्होंनें ''डी'' को चैक द्वारा भुगतान कर दिया तथा गाडी भाडा व अन्य खर्चो के लिये ₹7600 चुकाये। 'अ' ने कुछ माल ₹80,000 पर नकद बेचा तथा शेष माल ''ई'' को ₹1,60,000 में उधार बेचा। ''ई'' ने समान राशि का बिल स्वीकार किया जिसे बैंक से ₹1,57,000 में भुना लिया। 30 जून 2015 को संयुक्त साहसियों की प्रारम्भिक पूँजी लौटा दी। ''अ'' को उसकी सेवाओं के लिये बिक्री पर 5 प्रतिशत कमीशन देने का निर्णय किया गया।

संयुक्त साहस की पुस्तकों में जर्नल प्रविष्टियाँ दीजिये तथा आवश्यक खाते खोलिये। यह मानते हुए कि 31 जुलाई 2015 को अन्तिम निपटारा कर दिया।

A, B and C entered into a Joint Venture sharing profit equally. They opened a seperate Bank account in State Bank on 1st January, 2015. They deposited ₹ 30,000, ₹ 40,000 and ₹ 90,000 respectively. It is also decided to allow interest on such deposits @ 3% p.a., Goods purchased from D worth ₹ 1,50,000. Stock took from A worth ₹ 20,000. They paid to D by cheque and paid for carriage and other expenses ₹ 7,600. A sold some goods for ₹ 80,000 in cash and remaining goods sold to E at credit for ₹ 1,60,000. E accepted the bill for same amount. It was discounted from bank for ₹ 1,57,000. Initial capital of Co-venturers returned on 30th June, 2015. It is decided to allow the commission on sales @ 5 percent to A for his services.

Give the Journal entries in the books of Joint Venture and also prepare necessary accounts. It is assumed that final settlement has made on 31st July, 2015.

उत्तर : संयुक्त साहस लाभ ₹45,000

3. राम और श्याम जो अलग अलग भवन निर्माण के ठेकेदार हैं। एक नवनिर्मित कम्पनी के भवन निर्माण का कार्य संयुक्त रूप से ₹2,00,000 के ठेका मूल्य पर लेते हैं जो ₹1,60,000 नकद और ₹40,000 कम्पनी के पूर्ण चुकता अंशों के रूप में देय थे। उन्होंनें संयुक्त नाम से एक बैंक खाता खोला जिसमें राम ने ₹ 50,000 तथा श्याम ने ₹ 30,000 बैंक में जमा करा दिये, वे लाभ हानि 2:1 के अनुपात में बांटते हैं। इनके व्यवहार निम्नलिखित हैं : सामग्री क्रय की गई ₹1,40,000, मजदूरी भुगतान की ₹60,000, राम ने अपने स्टॉक से माल दिया ₹10,000, श्याम ने अपने स्टॉक से माल दिया ₹8,000, शिल्पकार का शुल्क राम ने चुकाया ₹4,000.

ठेका कार्य पूर्ण हो गया और ठेका मूल्य प्राप्त हो गया। राम ने कम्पनी के सभी अंश ₹32,000 में तथा श्याम ने शेष सामग्री को ₹6,000 के स्वीकृत मूल्य पर रख लिया। हिसाब का निपटारा कर दिया गया।

'संयुक्त साहस' की पुस्तकों में आवश्यक खाते खोलिये।

Ram and Shyam doing business separately as a building contractors. They under take jointly to construct a building for newly started joint stock company for a contract price of ₹2,00,000 payable ₹1,60,000 by installment in a cash and ₹40,000 in fully paid share of the company. A Joint Bank account is opened. Ram and Shyam deposited ₹50,000 and ₹30,000 in the Bank respectively. They will distribute profit or losses in the proportion of 2:1. The transactions of Joint Venture were as follows : Purchases of Material ₹1,40,000, Wages paid ₹60,000, Ram gave material from his stock ₹10,000, Shyam gave material from his stock ₹8,000, Architect's fees paid by Ram ₹ 4,000. Accounts are settled.

The contract was completed and contract price was received. Ram took all the shares for ₹32,000 and Shyam took remaining stock for ₹6000.

Open the necessary accounts in the books of joint venture.

उत्तर : संयुक्त साहस हानि ₹24,000। राम को अन्तिम भुगतान ₹16,000 तथा श्याम को ₹24,000

4. कपिल ठेकेदार और भरत इंजीनियर दोनों ने मिलकर एक नगर विकास योजना के लिये संयुक्त साहस किया। उन्होंनें क्रमशः ₹1,25,000 व ₹75,000 बैंक में जमा कराकर उनके संयुक्त नाम पर संयुक्त बैंक खाता खोला। लाभ–हानि 2:1 के अनुपात में लेना

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

निश्चय किया।

₹1,50,000 में भूमि का एक भाग खरीदा। इसके कानूनी पंजीयन के ₹10,000 दिये गये। भूमि के विकास संबंधी खर्चे ₹40,000 भुगतान किये। भू भाग को 20 भूखण्डों में विभाजित किया गया। भूखण्डों को निम्न प्रकार बेचा गया – 8 भूखण्ड ₹ 20,000 प्रति भूखण्ड; 10 भूखण्ड ₹15,000 प्रति भूखण्ड; शेष 2 भूखण्डों को लागत मूल्य पर दोनों ने एक–एक रख लिया।

संयुक्त साहस के लिये आवश्यक खाते खोलिये।

Contractor Kapil and Engineer Bharat started joint venture for a Urban Development Project. They opened Joint Bank account separately. Kapil deposited ₹1,25,000 and Bharat deposited ₹75,000 and they share profit-losses in 2:1 ratio. They purchased a piece of land for ₹1,50,000 and paid legal expenses ₹10,000 ; Land Development expenses paid ₹ 40,000. The land was divided in 20 plots. The plots were sold as under : 08 plots at ₹20,000 each; 10 plots at ₹15,000 each, The remaining 2 plots were taken at cost price by both Kapil and Bharat equally.

Open necessary accounts in the books of Joint Venture.

उत्तर : संयुक्त साहस पर लाभ ₹1,30,000; कपिल को अन्तिम भुगतान ₹2,01,667; भरत को अन्तिम भुगतान 1,08,333

5. 'ए' 'बी' एवं 'सी' भवन बनाने के ठेकेदार हैं। इन्होंने मिलकर संयुक्त साहस में एक कम्पनी के लिये ₹25,00,000 में एक भवन बनाने का अनुबन्ध किया। इस कीमत का भुगतान ₹20,00,000 नकद व ₹5,00,000 के ऋण पत्रों में किया जाना था। वे लाभ हानि को बराबर में बांटते हैं। संयुक्त साहस में साहसियों ने संयुक्त बैंक खाता खोला जिसमें ए, बी एवं सी ने क्रमशः ₹3,00,000, ₹3,75,000, ₹2,00,000 जमा करायें संयुक्त साहस के निम्नलिखित व्यवहार हुए– सामग्री का नकद क्रय ₹12,00,000, मजदूरी का भुगतान ₹9,75,000, प्लान्ट क्रय किया ₹1,20,000, ए ने शिल्पकार की फीस दी ₹35,000, बी द्वारा ₹1,25,000 के मूल्य का एक कंक्रीट मिक्सर तथा सी द्वारा ₹1,00,000 के मूल्य की मोटर ट्रक संयुक्त साहस के लिये लाई गई।

भवन बनाने के बाद ए ने बिना प्रयोग की गई ₹70,000 की सामग्री और बी ने ₹60,000 में बचे कंक्रीट मिक्सर को रख लिया। प्लान्ट ₹30,000 में बेच दिया गया। जब ठेके की पूरी राशि प्राप्त हो गई तो ए ने ऋण पत्रों को 20 प्रतिशत कम मूल्य पर ले लिया। संयुक्त साहस समाप्त हो गया। संयुक्त साहस की पुस्तकों में आवश्यक खाते बनाइये।

'A', 'B' & 'C' are doing business as a building contractor. They under take jointly for the construction of building for newely started Joint Stock Company for a contract price of ₹25,00,000, payable ₹20,00,000 in cash and ₹5,00,000 in debentures of company. Their profit sharing ratio is 1:1:1.

They opened a separate Joint Bank account and amount deposited into Bank by 'A' ₹3,00,000, 'B' ₹3,75,000 and 'C' ₹2,00,000. The transactions of joint venture were as follows : Purchases of material ₹12,00,000, wages paid ₹9,75,000, Purchase of plant ₹1,20,000, Architect fees paid by 'A' ₹ 35,000, Concrete mixer by B ₹ 1,25,000 and a Motor Truck is given by C worth ₹1,00,000. A took material for ₹70000 and B took concrete mixer for ₹60,000 after construction work is completed.

Plant sold for ₹30,000, contract price received and A took debentures 20% less then cost price. Joint venture is completed. Prepare necessary accounts in the books of Joint venture.

उत्तर : संयुक्त साहस लाभ ₹45,000, ए से ₹1,20,000 लेना तथा बी को ₹4,55,000 एवं सी को ₹2,75,000 का भुगतान।

6. पवन एवं प्रत्युष एक संयुक्त साहस में भाग लेते हैं। लाभ हानि बराबर बाँटते हुए संयुक्त साहस में प्रवेश किया। पवन ने ₹3,00,000 की लागत का माल संयुक्त साहस के लिये प्रेषित किया एवं उसके भाड़ा ₹10,000 व अन्य व्यय के ₹4000 हुए। प्रत्युष द्वारा भेजे गये माल की लागत ₹2,40,000 थी। उसके प्रेषण सम्बन्धी खर्चे ₹15,000, गोदाम किराया ₹5000 हुए। माल का विक्रय पवन द्वारा किया जाना है जिस पर 2 प्रतिशत कमीशन (विक्रय मूल्य पर) देय है। पवन ने समस्त माल ₹6,84,000 में बेच दिया। स्मरणार्थ संयुक्त साहस खाता बनाइये तथा पवन की पुस्तकों में प्रत्युष के साथ संयुक्त साहस खाता एवं प्रत्युष की पुस्तकों में पवन के साथ संयुक्त साहस खाता बनाइये।

Pavan's and Pratush entered in joint venture with sharing profit and losses equally. Pavan sent to goods worth ₹3,00,000 and paid carriage & freight ₹10,000 and other expenses ₹4,000. Pratush sent goods worth ₹2,40,000 and paid consignment expenses and sundry expenses ₹15,000 and godown rent ₹5,000.

Goods to be sold by Pavan. They decided 2% commission on sales. Pavan sold all the goods for ₹6,84,000. Prepare Memorandum Joint Venture Account and Joint Venture with Pavan Account in the books of Pratush and Joint Venture with Pratush Account in the books of Pavan, Final payment is made through bank draft.

उत्तर : संयुक्त साहस पर लाभ ₹96,320, अन्तिम भुगतान ₹3,08,160

7. प्रदीप और प्रवीण एक संयुक्त साहस में पुराने स्कूटरों के क्रय विक्रय के लिये सहमत होते हैं। वे लाभ हानि बराबर बांटते हैं। प्रवीण ने प्रदीप द्वारा लिखे गये ₹20,000 का बिल को स्वीकार किया जिसे प्रदीप ने ₹19,600 से बैंक में भुना लिया। प्रदीप ने स्कूटर ₹36,000

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

में खरीदे। उसने इनकी मरम्मत के लिये ₹5,000 चुकाये। स्कूटर बेचने के लिऐ प्रवीण को भेज दिये। प्रवीण ने स्कूटर प्राप्त करने पर ₹600 किराया भाडा एवं ₹400 चुंगी के चुकाये। प्रवीण ने सभी स्कूटर एजेन्ट के द्वारा ₹60,000 में बेच दिये। एजेन्ट ने कमीशन व बिक्री व्यय के ₹4,200 वसूल किये। दोनो पक्षों के बीच अन्तिम भुगतान पूर्ण हो गया। प्रदीप की पुस्तकों में स्मरणार्थ संयुक्त साहस तथा प्रवीण के साथ संयुक्त साहस खाता बनाइये।

Pradeep and Praveen agreed to purchase and sale of old scooter in a joint venture. They decided to share profit or losses equally. Praveen accepted bill of ₹20,000 drawn by pradeep, which was discounted by Pradeep for ₹19,600.

Pradeep purchased scooters for ₹36,000. He paid ₹5,000 for repairs of the scooter and were dispatched to Praveen for sale. Praveen paid ₹600 freight and ₹400 octroi on the receipt of scooters.

Praveen sold all the scooters through an agent for ₹60,000. The agent charges for commission and sales expenses ₹4200. Final settlement was completed between both parties.

Prepare Memorandum Joint Venture Account and Joint Venture with Praveen Account in the books of Pradeep.

उत्तर : संयुक्त साहस पर लाभ ₹13,400 पूर्ण भुगतान में ₹28,100

8. महेन्द्र एवं ललित टी.वी. सेट खरीदने तथा बेचने के लिये एक संयुक्त साहस में सम्मिलित हुए। वे लाभ हानि बराबर बांटते हैं। महेन्द्र ने ₹2,50,000 का एक ड्राफ्ट ललित के पक्ष में भेजा तथा ललित ने ₹20,000 प्रति सेट की दर से 20 सेट क्रय किये। ₹2,000 भाड़ा के चुकाते हुऐ यह सेट महेन्द्र के पास भेज दिये गये और महेन्द्र ने इनकी सुपुर्दगी ले ली और बिक्री निम्न प्रकार की –

सेट की संख्या	प्रति सेट बिक्री मूल्य (₹)	बिक्री मूल्य पर छूट
02	30000	10 प्रतिशत
10	28000	–
08	27000	5 प्रतिशत

महेन्द्र ने देय रकम का ड्राफ्ट ललित को भेज दिया। महेन्द्र की पुस्तकों में निम्नांकित प्रदर्शित कीजिये – (1) ललित के साथ संयुक्त उपक्रम खाता। (2) स्मरणार्थ संयुक्त साहस खाता ।

Mahendra and Lalit agreed to purchase and sale of T.V. sets. They decided to share profit or loss equally. Mahendra sent to a Bank Draft of ₹ 2,50,000 in favour of Lalit.

Lalit purchased 20 T.V. set @ ₹20,000 each, and paid freight ₹2,000. Mahendra received all sets and sold T.V. set as follows :

No. of Set	Per Set sales value ₹	Discount on sales
02	30000	10%
10	28000	-
08	27000	5%

Mahendra sent draft for remaining balance to Lalit.

In the books of Mahendra, prepare Joint Venture with Lalit's Account and Memorandum Joint Venture Acoount.

उत्तर : संयुक्त साहस का लाभ ₹1,37,200 अन्तिम भुगतान ₹ 2,18,600.

9. शालू और बन्टी ने माल का आयात कर बेचने हेतु संयुक्त साहस किया। शालू ने माल मंगाने तथा बंटी ने बेचने की जिम्मेदारी ली। यह निश्चय किया गया कि शालू को माल खरीद मूल्य पर 12 प्रतिशत वार्षिक दर से ब्याज मिलेगा और बन्टी को ₹500 मासिक वेतन मिलेगा। शालू ने बन्टी पर तीन माह का ₹20,000 का एक बिल लिखा जिसे बन्टी ने स्वीकार किया।

शालू ने ₹90,000 का माल का आयात किया और बन्टी को भेज दिया। शालू ने माल भेजने के ₹4,000 खर्च किये। बन्टी ने भाड़े के ₹1,600 तथा विक्रय व्यय ₹1,400 चुकाये। बन्टी ने सारा माल ₹1,30,000 में बेच दिया। इस सारे कार्य में 3 माह लगे। दोनों पक्षों की पुस्तकों में आवश्यक खाते बनाइये। लाभ का बंटवारा बराबर होगा।

Shalu and Bunti entered in Joint venture to purchase and sales of imported goods. Shalu take the responsibility for purchase and Bunti for sale. It was decided that shalu will get interest @ 12% p.a. on the purchase price of goods and Bunti get salary of ₹500 per month. Shalu draw a bill of ₹20,000 on Bunti for 3 months which was accepted by Bunti. Shalu imported goods worth ₹90,000 and sent to Bunti. Shalu paid carriage expenses ₹4,000 in despatching goods. Bunti paid ₹1,600 freight and ₹1,400 for selling expenses.

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Bunti sold all the goods for ₹1,30,000. Whole process completed in three months. Prepare necessary ledger accounts in the books of both parties. The profit was distributed equally.

उत्तर : संयुक्त साहस का लाभ ₹28,800 अन्तिम भुगतान ₹91,100.

10. रवि और विमल ने कम्बल बेचने का उपक्रम किया। रवि को क्रय करना था और विमल को बेचना था। रवि को विनियोजित राशि पर 5 प्रतिशत प्रतिवर्ष ब्याज देना था और उसको प्राप्त राशि पर उसी दर से ब्याज चुकाना था। विमल को बिक्री पर 4 प्रतिशत कमीशन दिया जाना था। लाभ हानि बराबर बांटे जाते हैं। 1 जनवरी 2015 को रवि ने ₹60 प्रति कम्बल के हिसाब से 2000 कम्बल खरीदे। उसने पैकिंग तथा अन्य व्यय के ₹4,000 चुकाये। विमल ने भाड़े के ₹6,000 खर्च किये। उसने कम्बलों को निम्न प्रकार से बेचा – 1 फरवरी 2015 को 300 कम्बल ₹90 प्रति कम्बल। 1 जुलाई 2015 को 1000 कम्बल ₹100 प्रति कम्बल। 1 अक्टूबर 2015 को 500 कम्बल ₹84 प्रति कम्बल।

उसने रवि को ₹20,000, 1 मार्च को तथा ₹56,000 1 अगस्त 2015 को भेजे। शेष कम्बल विमल ने लागत मूल्य में 25 प्रतिशत जोड़कर ले लिये। 1 अक्टूबर 2015 को हिसाब का निपटारा हो गया। यह मानते हुए कि प्रत्येक पक्ष सभी व्यवहारों का लेखा करता है, दोनों पक्षों की पुस्तकों में आवश्यक खाते तैयार कीजिये।

Ravi and Vimal entered in Joint Venture for purchase and sales of blankets. Ravi will purchase goods and Vimal under took the sales. They decided to pay 5% interest p.a. to Ravi on his investment and also charge interest at same rate on amount received by him. Vimal will get 4% commission on sales. Profit and losses are shared equally.

Ravi purchased on 1 Jan., 2015 2000 blanket ₹60 per blanket. He paid packing charges and other expenses ₹4,000. Vimal paid freight ₹6,000 and sold to blanket as follows : on 1 Feb., 2015, 300 blanket @ ₹90 each, on 1 July 2015 1000 blanket @ ₹100 each, on 1 Oct. 2015, 500 blanket @ ₹ 84 each.

Vimal sent to Ravi ₹20,000 on 1 March, 2015 and ₹56,000 on 1 August, 2015. Remaining blanket took by Vimal on cost plus 25% above. On 1 oct., 2015 final settlement was made.

Assume that each party record all transcations, prepare necessary accounts in the books of both parties.

उत्तर : संयुक्त साहस लाभ – ₹43,640, ब्याज की गणना ₹3,600

11. सचिन एवं जोनी माल को खरीदने एवं बेचने के लिये संयुक्त साहस में प्रविष्ट होते हैं। लाभ–हानि 3:2 के अनुपात में बांटा जाता है। कार्य प्रारम्भ करने हेतु जोनी द्वारा सचिन को ₹8,00,000 की राशि बैंक ड्राफ्ट के माध्यम से भेजी गई। सचिन ने ₹10,00,000 की सामग्री खरीदी। माल को विक्रय योग्य बनाने के लिये सचिन ने ₹ 2,35,000 खर्च किये। यह सारा माल विक्रय हेतु सचिन द्वारा जोनी को भेज दिया। सचिन के द्वारा खर्चे इस प्रकार हुए :– कुल कमीशन 2.5 प्रतिशत व विविध खर्चे ₹35,000। जोनी ने माल प्राप्त किया और भाडा ₹72,000 एवं चुंगी ₹27,500 चुकाये तथा बीमा ₹15,000, गोदाम किराया ₹25,000एवं दलाली के ₹52,000 चुकाये गये। जोनी ने अधिकांश माल ₹ 17,25,000 में बेच दिया। कुछ माल बचा जिसे जोनी ने ₹2,05,000 के मूल्य पर स्वयं ने रखना स्वीकार किया। आप दोनों पक्षों की पुस्तकों में आवश्यक खाते यह मानते हुए बनाइये कि सभी साहसी समस्त व्यवहारों का लेखा रखते हैं।

Sachin and Joni entered in Joint Venture for purchase and sale of goods. They share profit and loss in the ratio of 3:2. For starting the work Joni sent bank draft to Sachin for ₹8,00,000. Sachin purchased goods worth ₹10,00,000 and make expenses to convert into saleble form ₹2,35,000. Sachin make expenses as follows : total commission 2.5 percent and sundry expenses ₹35,000. Joni took the delivery and paid carriage ₹72,000, octroi ₹27,500, insurance ₹15,000, godown rent ₹25,000 and brokerage ₹52,000. Joni sold most of the goods for ₹17,25,000. Remaining goods kept by him self for ₹2,05,000. Prepare necessary ledger accounts in the books of both parties, assuming that all transcations are entered by both parties.

उत्तर : संयुक्त साहस लाभ ₹4,43,500, देय रकम ₹7,61,100

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

8
प्रेषण खाते
(CONSIGNMENT ACCOUNTS)

अध्ययन के उद्देश्य

इस अध्याय के अध्ययन के बाद आप :–

- ❑ प्रेषण का अर्थ, विशेषताऐं तथा प्रेषण सम्बन्धी शब्दावली के अर्थ बता सकेंगे।
- ❑ निम्न में अन्तर कर पाऐंगे : **(अ)** सूचनार्थ बीजक तथा बीजक में **(ब)** प्रेषण तथा विक्रय में **(स)** प्रेषण तथा संयुक्त साहस में
- ❑ सूचनार्थ बीजक तथा विक्रय विवरण बना पाऐंगे।
- ❑ प्रेषण सम्बन्धी व्यवहारों का प्रेषक व प्रेषणी की पुस्तकों में लेखा कर पाऐंगे।
- ❑ प्रेषणी को मिलने वाले कमीशन, परिशोध कमीशन तथा अधिभावी कमीशन की गणना कर पाऐंगे।
- ❑ प्रेषणी के पास बिना बिके स्टॉक का विभिन्न स्थितियों में मूल्यांकन कर सकेंगे।
- ❑ प्रेषण पर भेजे माल सम्बन्धी सामान्य हानि तथा असामान्य हानि होने पर उसका मूल्यांकन तथा लेखा कर सकेंगे।
- ❑ प्रेषण पर माल का लेखा बीजक मूल्य व लागत मूल्य पर कर पाऐंगे तथा दोनों में तुलना कर सकेंगे।
- ❑ क्षतिग्रस्त माल, प्रेषणी की लापरवाही से हानि व असामान्य लाभ होने पर लेखा कर सकेंगे।
- ❑ स्टॉक के बाजार मूल्य में कमी, क्षतिग्रस्त माल की मरम्मत तथा क्षतिग्रस्त माल के विक्रय पर लेखा कर पाऐंगे।
- ❑ प्रेषणी को लाभ में हिस्सा या विशेष कमीशन की गणना कर पायेंगे।
- ❑ प्रेषण का संयुक्त साहस में परिवर्तन पर लेखांकन प्रक्रिया समझ पायेंगे।

वैश्विकरण, विज्ञापन एवं संचार क्रान्ति के वर्तमान दौर में वस्तु का बाजार स्थानीय स्तर से अन्तर्राष्ट्रीय स्तर तक पहुँचा दिया है। उपभोक्ता को किसी वस्तु की उपलब्धता समय पर व सुगमता से हो यह निश्चित करना व्यवसायी का नैतिक उत्तरदायित्व है, इसका निर्वहन तभी सम्भव है जब उसके पास व्यवसाय के प्रतिनिधि विभिन्न स्थानों पर उपलब्ध हो। ये प्रतिनिधि अपने स्वामी का माल उपभोक्ता तक आसानी से पहुँचा देते है। बाजार की इस आवश्यकता तथा व्यवसाय के लाभ में वृद्धि की महत्वाकांक्षा ने ही 'प्रेषण' व्यवसाय को जन्म दिया।

प्रेषण का अर्थ (Meaning of Consignment) : जब माल का स्वामी या प्रधान अपने प्रतिनिधि को इस आधार पर माल भेजता है कि एजेन्ट द्वारा माल का विक्रय किया जावेगा तथा इस कार्य के लिऐ उसे बेचे गये माल पर पारिश्रमिक के रूप में निश्चित दर पर कमीशन दिया जायेगा। इसे प्रेषण कहते है इसमें समस्त लाभ एवं हानि का अधिकारी प्रेषक या प्रधान ही होता है तथा प्रेषण संबंधी समस्त जोखिम, खर्चे व हानियों के लिए भी वही उत्तरदायी है।

प्रेषण की विशेषताएं (Characteristics of Consignment) :–

1. प्रेषक द्वारा प्रेषणी को विक्रय के उद्देश्य से माल भेजा जाता है।
2. प्रेषक व प्रेषणी में स्वामी व प्रतिनिधि का सम्बन्ध होता हैं।
3. प्रेषण माल का विक्रय नहीं है।
4. प्रेषक के निर्देशानुसार प्रेषणी कार्य करता हैं।
5. प्रेषणी को माल के विक्रय पर कमीशन का अधिकार है।
6. माल का वास्तविक स्वामी प्रेषक है, वही लाभ का अधिकारी है तथा हानि व खर्चों के लिए उत्तरदायी भी हैं।
7. प्रेषणी माल का निक्षेपिती (Bailee) होता हैं। माल की सुरक्षा उसका उत्तरदायित्व हैं।

प्रेषण से सम्बन्धित शब्दावली :–

(1) प्रेषण (Consignment) :– जब प्रेषक द्वारा प्रेषणी को इस आशय से माल भेजा जाता है कि उसके द्वारा विक्रय करने पर कुल विक्रय पर कमीशन मिलेगा इसे प्रेषण कहते है। इसमें प्रेषक द्वारा प्रेषणी को भेजे गये माल को जावक प्रेषण (Outward Consignment) कहते है तथा प्रेषणी के लिये यह आवक प्रेषण (Inward Consignment) होता है।

(2) प्रेषक (Consigner) :– माल का स्वामी जो प्रेषण पर माल विक्रय हेतु भेजता हैं उसे प्रधान या प्रेषक कहते है।

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

(3) प्रेषणी (Consignee) :– वह व्यक्ति जिसे प्रेषण पर माल भेजा जाता है तथा इसके द्वारा माल उपभोक्ता को बेचा जाता है उसे प्रेषणी या एजेन्ट कहते है।

(4)कमीशन (Commission) :– प्रेषणी द्वारा माल को विक्रय करने पर विक्रय की राशि पर पारिश्रमिक मिलता है उसे कमीशन कहते है। यह तीन प्रकार का होता है :–

(अ) सामान्य कमीशन (Ordinary Commission) : प्रेषणी को माल के विक्रय मूल्य या बीजक मूल्य पर निश्चित दर से कमीशन दिया जाता है। यह प्रेषणी के कार्य का प्रतिफल है।

(ब) परिशोध या डेलक्रेडर कमीशन (Del credere commission) : यदि प्रेषक ने प्रेषणी को माल को उधार विक्रय का अधिकार दिया है तो ऐसी स्थिति में डूबत ऋण की संभावना भी रहती है जिसे प्रेषक वहन करता है। यदि डूबत ऋण वहन करने एवं उधार राशि वसूल करने का उत्तरदायित्व प्रेषणी लेता है तो इस कार्य हेतु प्रेषक द्वारा प्रेषणी को अतिरिक्त कमीशन दिया जाता है जिसे परिशोध कमीशन कहते है। इसकी स्पष्ट सूचना के अभाव में कुल विक्रय पर निश्चित प्रतिशत से दिया जाता है।

(स) अधिभावी कमीशन (Overriding commission) : यदि प्रेषक द्वारा प्रेषणी को यह अधिकार दिया जाता है कि वह माल का विक्रय बीजक मूल्य या इससे अधिक मूल्य पर कर सकता है तो वास्तविक बीजक मूल्य से आधिक्य राशि पर जो कमीशन दिया जाता है उसे अधिभावी कमीशन कहते है।

(5)सूचनार्थ बीजक (Proforma Invoice) :– प्रेषक द्वारा प्रेषणी को भेजे गये माल का विवरण जिसमें वस्तु की किस्म, माल की मात्रा, बीजक मूल्य, माप, तौल, खर्चे आदि के बारे में सूचना होती है उसे सूचनार्थ बीजक कहते है। इसमें प्रेषक द्वारा प्रेषणी को आवश्यक निर्देश जैसे माल को उधार बेचना, बीजक मूल्य से अधिक पर बेचना, कमीशन के प्रकार आदि की सूचना होती है।

(6) प्रेषण पर अग्रिम (Advance on Consignment) :– प्रेषणी द्वारा माल के विक्रय के पूर्व ही प्रेषक को कुछ राशि, चैक, विनिमय बिल अग्रिम दिया जाता है तो इसे प्रेषण पर अग्रिम कहते है। विनिमय बिल के भुनाने पर बट्टे की राशि हानि मानते हुऐ प्रेषण खाते में नाम कर देते हैं।

(7) विक्रय विवरण (Account Sale) :– प्रेषणी द्वारा माल के विक्रय के पश्चात् प्रेषक को भेजा गया विवरण, विक्रय विवरण कहलाता है। इसमें बेचे गए माल की किस्म, मात्रा, विक्रय मूल्य, खर्चे, कमीशन, प्रेषण पर अग्रिम आदि का विवरण होता है।

प्रेषण तथा विक्रय में अन्तर
(Difference between Consignment and Sale)

अन्तर का आधार	प्रेषण	विक्रय
(1) सम्बन्ध	प्रेषण में प्रेषक व प्रेषणी का सम्बन्ध होता है।	विक्रय में क्रेता एवं विक्रेता का सम्बन्ध होता है।
(2) स्वामित्व	प्रेषण में माल का स्वामित्व प्रेषक का होता है।	विक्रय में माल का स्वामित्व क्रेता का होता है।
(3) जोखिम	प्रेषण में माल की जोखिम प्रेषक की होती है।	विक्रय में माल की जोखिम क्रेता की होती है।
(4) प्रतिफल	प्रेषण में प्रेषणी द्वारा माल बेचने पर कमीशन मिलता है।	विक्रय में विक्रेता द्वारा माल बेचने पर लाभ मिलता है।
(5) विवरण	प्रेषण में सूचनार्थ बीजक भेजा जाता है।	विक्रय में बीजक दिया जाता है।

प्रेषण तथा संयुक्त साहस में अन्तर
(Difference between Consignment and Joint Venture)

अन्तर का आधार	प्रेषण	संयुक्त साहस
(1) अधिनियम	आपसी अनुबन्ध या एजेन्सी सम्बन्धी कानूनी नियम लागू होते है।	आपसी अनुबंध या साझेदारी अधिनियम के प्रावधान लागू होते है।
(2) सम्बन्ध	प्रेषण में प्रधान एवं प्रतिनिधि का सम्बन्ध होता है।	संयुक्त साहस में साझेदारों की तरह सम्बन्ध होता है।
(3) पूँजी	प्रेषण में प्रेषक ही पूँजी लगाता है।	संयुक्त साहस में सभी साहसी पूँजी लगाते है।
(4) लाभ	प्रेषण में लाभ केवल प्रेषक को ही मिलता है।	संयुक्त साहस में लाभ का बंटवारा साहसियों को किया जाता है।

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

(5) अवधि	इसकी अवधि संयुक्त साहस से अधिक होती है।	यह अल्पकालीन होता है। उद्देश्य पूरा होते ही समाप्त हो जाता है।
(6) विवरण भेजना	प्रेषण में माल के विक्रय के पश्चात् प्रेषणी द्वारा विक्रय विवरण भेजा जाता हैं।	संयुक्त साहस में स्वयं द्वारा दिये गये व्यवहारों का विवरण संयुक्त साहसी एक दूसरे को भेजते हैं।

प्रेषण संबन्धी व्यवहारों का लेखा
(Accounting Treatment of Consignment Transactions)

प्रेषक की पुस्तक में खोले जाने वाले खाते	प्रेषणी की पुस्तकों में खोले जाने वाले खाते
(1) प्रेषण खाता (Consignment A/c) (2) प्रेषणी का खाता (Consignee's A/c) (3) प्रेषण पर भेजे गये माल का खाता (Goods Sent of Consignment A/c) (4) अन्य – असामान्य हानि खाता (Abnormal Loss A/c)	(1) प्रेषक का खाता (Consignor's A/c) (2) कमीशन खाता (Commission A/c)

प्रेषण सम्बन्धी व्यवहारों की जर्नल प्रविष्टियाँ
(Journal Entries Relating to Consignment Transactions)

व्यवहार	प्रेषक की पुस्तकों में	प्रेषणी की पुस्तकों में
(1) प्रेषण पर माल भेजने पर	Consignment A/c Dr. To Goods Sent of Consignment A/c	प्रेषण पर प्राप्त माल की कोई प्रविष्टि यहां नहीं होती हैं।
(2) प्रेषक द्वारा खर्चे करने पर	Consignment A/c Dr. To Cash / Bank A/c	प्रेषक द्वारा किये गये खर्चो की प्रविष्टि प्रेषणी की पुस्तकों में नहीं होती हैं।
(3) प्रेषण पर अग्रिम राशि या बिल प्राप्त होने पर	Cash / Bank / B/R A/c Dr. To Consignee's A/c	Consigner's A/c Dr. To Cash / Bank / B/R A/c
(4) बिल को बैंक से भुनाने पर	Cash / Bank A/c Dr. Consignment (Discount) A/c Dr. To B/R A/c	बिल भुनाने की प्रविष्टि प्रेषणी की पुस्तकों में नहीं होती हैं।
(5) प्रेषणी द्वारा खर्चे चुकाने पर	Consignment A/c Dr. To Consignee's A/c	Consignor's A/c Dr. To Cash / Bank A/c
(6) प्रेषणी द्वारा माल लौटाने पर	Goods Sent on Consignment A/c Dr. To Consignment A/c	माल लौटाने पर प्रेषणी की पुस्तकों में प्रविष्टि नहीं होगी।
(7) माल प्रेषणी द्वारा बेचने पर	Consignee's A/c Dr. To Consignment A/c	Cash/ Bank A/c Dr. नकद बेचने पर Debtors A/c Dr. उधार बेचने पर To Consignor A/c
(8) प्रेषणी द्वारा कमीशन की राशि से	Consignment A/c Dr. To Consignee's A/c	Consignor's A/c Dr. To Commission A/c
(9) बचे हुए स्टॉक के लिए	Stock with agent A/c Dr. or Unsold Stock A/c Dr. To Consignment A/c	बिना बिके माल की प्रविष्टि प्रेषणी की पुस्तक में नहीं होगी।
(10) प्रेषण से शेष राशि प्राप्त होने पर	Cash / Bank A/c Dr. To Cosignee's A/c	Consignor's A/c Dr. To Cash/Bank A/c
(11) प्रेषण पर लाभ होने पर	Consignment A/c Dr. To P& L A/c	–
(12) प्रेषण पर हानि होने पर	P&L A/c Dr. To Consignment A/c	–

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

(13) प्रेषण पर भेजे गये माल खाते को बंद करने पर	Good sent on consignment A/c Dr. To Trading A/c	–
(14) कमीशन खाते का शेष हस्तान्तरण	इसमें कोई प्रविष्टि नहीं होती हैं।	Commission A/c Dr. To P&L A/c

बिना बिके स्टॉक का मूल्यांकन (Valuation of Unsold Stock)

बिना बिका स्टॉक का मूल्यांकन करना आवश्यक है। इसे निम्न प्रकार से ज्ञात किया जाता है–

1. स्टॉक का वास्तविक मूल्याकंन बाजार मूल्य एवं लागत मूल्य जो दोनों में से कम है उस पर किया जावेगा।
2. प्रेषक द्वारा किये गये समस्त व्यय आनुपातिक जोडें जावेंगे।
3. प्रेषणी द्वारा किये गये खर्चे अनावर्ती व्यय, माल को गोदाम तक पहुँचाने में जैसे भाडा, चढाई, उतराई, चुंगी, मजदूरी आदि व्यय आनुपातिक जोडें जायेंगे।

विशेष : आवर्ती व्यय, प्रेषणी द्वारा किये गये है तो उसे स्टॉक की गणना में नहीं जोडेंगे –जैसे गोदाम किराया, बीमा व्यय, विज्ञापन व्यय, विक्रय व्यय आदि।

उदाहरण 1 : उदयपुर के कपिल ने भिवाडी के भरत को 1 जनवरी 2016 को 200 साईकिल ₹1500 प्रति साईकिल की लागत पर प्रेषण पर भेजी। भरत ने कपिल को ₹ 1,00,000 का अग्रिम बिल स्वीकार किया, जिसे कपिल ने 3 जनवरी 2016 को बैंक से ₹ 90,000 में भुना लिया। प्रेषक ने माल भेजने पर ₹ 3,000 मजदूरी, ₹ 2,000 रेलभाडा एवं ₹ 1,000 पैंकिंग खर्च चुकाया। प्रेषणी ने ₹ 1,000 उतराई, ₹ 500 चुंगी एवं ₹ 2,000 गोदाम किराया के चुकाये। प्रेषणी को बिक्री पर 5 प्रतिशत सामान्य कमीशन एवं उधार बिक्री पर 2 प्रतिशत परिशोध कमीशन के देय है। भरत ने 100 साईकिलें नकद ₹ 1,800 प्रति साईकल तथा 50 साईकिलें उधार ₹ 2,000 प्रति साईकिल के हिसाब से बेच दी। भरत ने खर्चे व कमीशन काटकर 30 जून 2016 को शेष राशि एवं विक्रय विवरण भेज दिया। कपिल एवं भरत की पुस्तकों में आवश्यक जर्नल प्रविष्टियॉ एवं खाते बनाईये।

Mr. Kapil of Udaipur consigned to Mr. Bharat of Bhivadi on 1 June, 2016, 200 cycle @ ₹1,500 per cycle at cost. Bharat accepted of ₹1,00,000 B/R on 3rd June 2016. Kapil discounted it from bank at ₹ 90,000 and paid ₹ 3,000 wages, ₹ 2,000 railway freight and ₹ 1,000 packing expenses.

Bharat paid ₹ 1,000 for unloading, ₹ 500 octroi and ₹ 2,000 godown rent. Bharat received commission 5% general commission and 2% delcredere commission. Bharat sold 100 cycle for cash at ₹1800 per cycle and 50 cycle on credit @ ₹2000 per cycle. Bharat sent account of sales after deducting expenses and commission on 30 June, 2016. Prepare necessary journal entries in the books of Kapil & Bharat.

हलः

In the books of Kapil (Consignor)

Journal

Date	Particulars	L. F.	Amount (₹) Dr.	Amount (₹) Cr.
2016 Jan.,1	Consignment A/c Dr. To Goods Sent of Consignment A/c (200 Bicycle @ Rs. 1500 each sent to Bharat on consignment)		3,00,000	 3,00,000
Jan., 1	Consignment A/c Dr. To Cash A/c (Expences paid by consignor)		6,000	 6,000
Jan., 1	B/R A/c Dr. To Bharat's A/c (B/R received from Bharat)		1,00,000	 1,00,000
Jan., 3	Bank A/c Dr. Consignment A/c Dr. To B/R A/c (Bill discounted from Bank)		90,000 10,000	 1,00,000

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Jan., 30	Consignment A/c Dr. Tp Bharat's A/c (Expenses incurred by Bharat)		3,500	3,500
June, 30	Bharat A/c Dr. To Consignment A/c (Goods sold)		2,80,000	2,80,000
June, 30	Consignment A/c Dr. To Bharat's A/c (Commission charged by Bharat)		16,000	16,000
June, 30	Unsold Stock A/c Dr. To Consignment A/c (Balance of unsold stock)		77,250	77,250
June, 30	Consignment A/c Dr. To P&L A/c (Profit on Consignment transferred to P&L A/c)		21,750	21,750
June, 30	Goods sent on Consignment A/c Dr. To Trading A/c (Goods sent on Consignment A/c transferred to Trading A/c)		3,00,000	3,00,000
June, 30	Cash A/c Dr. To Bharat's A/c (Balance amount received from Bharat)		1,60,500	1,60,500

Ledger in the Books of Kapil

Consignment A/c

Date	Particulars	Amount(₹)	Date	Particulars	Amount(₹)
2016 Jan., 1	To Goods sent on Consignment A/c	3,00,000	2016 June, 30	By Bharat A/c (Sales)	2,80,000
Jan., 1	To Cash A/c (Exp.)	6,000	June, 30	By unsold stock A/c	77,250
Jan., 3	To B/R A/c (Discount)	10,000			
June,30	To Bharat's A/c (Exp)	3,500			
June,30	To Bharat's A/c (Com)	16,000			
June,30	To P&L A/c (Profit)	21,750			
		3,57,250			**3,57,250**

Bharat's A/c (Consignee's A/c)

Date	Particulars	Amount ₹	Date	Particulars	Amount₹
June,30	To Consignment A/c	2,80,000	2016 Jan, 1	By B/R A/c	1,00,000
			June,30	By Consignment A/c	3,500
			June,30	By Consignment A/c	16,000
			June,30	By Cash A/c (b/f)	1,60,500
		2,80,000			**2,80,000**

Goods Sent on Consignment A/c

Date	Particulars	Amount ₹	Date	Particulars	Amount ₹
June,30	To Trading A/c	3,00,000	2016 Jan., 1	By Consignment A/c	3,00,000
		3,00,000			**3,00,000**

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Stock with Agent / unsold stock A/c

Date	Particulars	Amount ₹	Date	Particulars	Amount ₹
June,30	To Consignment A/c	77,250	June,30	By Balance c/d	77,250
		77,250			**77,250**

Working Note (कार्यशील टिप्पणी) :

1.कमीशन की गणना

(1) सामान्य कमीशन	2,80,000 x 5/100	=₹14,000
(2) परिशोध कमीशन	1,00, 000 x 2/100	=₹ 2,000
		=₹16,000

2.Unsold stock /stock with agent. : शेष साईकिलें (200–150)=50

मूल्य	50 x 1500	=₹75,000
प्रेषण व्यय आनुपातिक	6000/200 x 50	= ₹1,500
एजेन्ट व्यय	1500/200 x 50	= ₹750
		= **₹77,250**

Journal in the Books of Bharat's (Consigner)

Date	Particulars	L. F.	Amount (₹)	
			Dr.	Cr.
2016, Jan., 1	Kapil's A/c Dr. To B/P A/c (Acceptance given to kapil)		1,00,000	1,00,000
June, 30	Kapils A/c Dr. To cash A/c (Expenses incurred)		3,500	3,500
June, 30	Cash A/c Dr. To Kapil's A/c (Sale proceeds received in cash)		2,80,000	2,80,000
June, 30	Kapil's A/c Dr. To commission A/c (Commission due)		16,000	16,000
June, 30	Kapil's A/c Dr. To Cash A/c (Balance amount remitted)		1,60,500	1,60,500
June, 30	Commission A/c Dr. To P&L A/c (Commission transferred to P & L A/c)		16,000	16,000

In the Books of Bharat

Kapil's A/c

Date	Particulars	Amount ₹	Date	Particulars	Amount ₹
2016 Jan., 1	To B/P A/c	1,00,000	June,30	By Cash A/c	2,80,000
June 30	To cash A/c (exp.)	3,500			
June 30	To Commission A/c	16,000			
June 30	To Cash A/c (B/F)	1,60,500			
		2,80,000			**2,80,000**

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Commission A/c

Date	Particulars	Amount ₹	Date	Particulars	Amount ₹
June,30	To P&L A/c	16,000	June,30	By Kapil's A/c	16,000
		16,000			**16,000**

उधार बिक्री पर डूबत ऋण वहन करना:

1. जब प्रेषणी को डेल क्रेडर कमीशन नहीं मिलता है तो डूबत ऋण प्रेषक वहन करता हैं।
2. जब प्रेषणी को डेल क्रेडर कमीशन मिलता हैं तो डूबत ऋण प्रेषणी वहन करता है यह राशि प्रेषणी की कमीशन में से कम की जाती है। इस संबंध में निम्न प्रविष्टियां होगी :

(1)

प्रेषक		प्रेषणी	
Consignment A/c	Dr.(डूबत ऋण की राशि)	Cash A/c	Dr.
To consignee's A/c		Consignor A/c	Dr.
		To Debtors. (डूबत ऋण)	

(2)

प्रेषक	प्रेषणी	
डूबत ऋण की प्रविष्टि नहीं होगी।	Cash A/c	Dr. (देनदारों से प्राप्त)
	Commission A/c	Dr. (डूबत ऋण)
	To Debtors A/c (देनदार)	

प्रेषण पर भेजे गए माल की हानि (Loss on goods sent on Consignment)

(1) सामान्य हानि (Normal Loss) :– वस्तु की प्रकृति के कारण उसकी स्वाभाविक हानि को सामान्य हानि कहा जाता है इसे रोकना संभव नहीं होता है।

सामान्य हानि का लेखा :– सामान्य हानि के लिए कोई लेखा प्रविष्टि नहीं की जाती है बल्कि माल की कुल लागत को शेष रही अच्छी इकाईयों की लागत माना जाता है।

$$\text{बिना बिके माल का मूल्य} = \frac{\text{प्रेषण पर भेजे गये माल की लागत} \times \text{बिना बिकी इकाईयां}}{(\text{कुल इकाईयों की संख्या} - \text{सामान्य हानि की इकाईयां})}$$

उदाहरण 2 :– मुम्बई के राकेश ने जयपुर के दीपक को 2000 टन कोयला ₹300 प्रति टन के हिसाब से प्रेषण पर भेजा। प्रेषक ने ₹10000 गाडी भाड़ा, ₹8000 मजदूरी के चुकाये। प्रेषणी ने ₹2000 खर्चे के चुकाये। दीपक को 10 प्रतिशत कम कोयला प्राप्त हुआ। दीपक ने 1500 टन कोयला ₹400 प्रति टन की दर से बेच दिया। बिना बिके कोयले का मूल्य ज्ञात करों।

Mr. Rakesh of Mumbai sent 2000 tonnes of Coal on consignment @ ₹300 per ton. Consigner paid ₹1000 carriage and ₹8000 for wages. Consignee spent ₹2000 for expenses. Mr. Deepak received 10 per cent less coal. Deepak sold 1500 ton coal @ ₹400 per ton. Calculate value of unsold stock.

हल : सामान्य हानि की इकाईयॉ – 2000 x 10 / 100 = 200 टन, शेष रही इकाईयॉ =2000 - 200 = 1800 टन

प्रेषक द्वारा भेजे गये माल का मूल्य =	₹6,00,000
Add : प्रेषक के व्यय	₹ 18,000
	₹6,18,000
Add : एजेन्ट व्यय	₹2,000
	₹6,20,000

Unsold unit 1800 – 1500 = 300; Cost of unsold coal= $\frac{620000 \times 300}{1800}$ =₹1,03,333

(2) असामान्य हानि (Abnormal Loss) :– माल की ऐसी हानि जो लापरवाही या असामान्य कारणों से होती है इसे असामान्य हानि कहते है। चोरी, आग से नष्ट, खराब पैंकिंग से टूट फूट आदि कारणों से माल की हानि इस श्रेणी में आते है।

इस हानि की गणना निम्नांकित दो प्रकार से होती है।

(अ) मार्गस्थ हानि (प्रेषणी के गोदाम में पहुंचने से पूर्व माल की हानि) – इसमें नष्ट हुए माल का लागत मूल्य में प्रेषक व्यय आनुपातिक जोडकर असामान्य हानि ज्ञात कर लेते है। प्रेषणी के खर्चे नहीं जोडे जाते है।

(ब) प्रेषणी के गोदाम में हानि – इसमें माल का लागत मूल्य प्रेषक के खर्चें तथा प्रेषणी के अनावर्ती प्रकृति के खर्चें आनुपातिक जोडकर असामान्य हानि ज्ञात करते हैं।

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

असामान्य हानि का लेखा :– प्रेषण पर होने वाली हानि प्रेषक वहन करता हैं। अतः इसका लेखा केवल प्रेषक की पुस्तकों में ही होता हैं।

(1) असामान्य हानि होने पर Abnormal Loss A/c Dr. (असामान्य हानि की राशि)
To Consignment A/c

(2) बीमा कम्पनी द्वारा दावा स्वीकार करने पर Insurance co. A/c Dr. स्वीकृत राशि
Profit & Loss a/c Dr. दावा स्वीकार नहीं
To Abnormal Loss A/c

(3) बीमा कम्पनी से राशि प्राप्त करने पर Bank A/c Dr.
To Insurance Co. A/c

उदाहरण 3 :– मुम्बई के भारत साईकिल्स लिमिटेड, उदयपुर के चन्द्रा एण्ड सन्स को 400 साईकिलें ₹200 प्रति साईकिल से प्रेषण पर भेजता है। प्रेषक भाडा ₹1400 व बीमा के ₹600 चुकाता है। मार्ग में ट्रक दुर्घटना के कारण 100 साईकिलें पूर्ण नष्ट हो जाती है जिनसे केवल क्रय मूल्य का 1/4 मूल्य प्राप्त होता हैं। बाद में चन्द्रा एण्ड सन्स ने 240 साईकिले ₹250 प्रति साईकिल से बेच देता है तथा ₹1200 की चुंगी ₹600 विक्रय व्यय एवं ₹2400 अपने कमीशन के काटकर शेष राशि बैंक ड्राफ्ट द्वारा भेज देता है। प्रेषक को बीमा कम्पनी से असामान्य हानि के दावे के ₹12500 प्राप्त करता हैं। असामान्य हानि एवं बिना बिका माल का मूल्यांकन करें। यदि हानि प्रेषणी के गोदाम में आने के बाद हुई तो भी असामान्य हानि की गणना करो।

Bharat Cycles Ltd. of Mumbai sent 400 cycles @ ₹ 200 per cycle to Chandra & Sons. of Udaipur. Consigner paid ₹ 400 carriage and ₹ 600 for insurnace. On the way due to truck accident 100 cycles are fully destroyed and only 1/4 of purchase price is received from them. Then Chandra & Sons sold 240 cycle @ ₹ 250 per cycle and sent a demand draft after deducting ₹ 1200 per octroi, ₹ 600 for sales expenses and ₹ 2400 for his commission. Consigner got ₹ 12,500 from insurance Co. for abnormal loss. Calculate the value of abnormal loss and unsold stock. If loss occurs after reaching the goods at consignee godown, also calculate value of abnormal loss.

हल :

(अ) असामान्य हानि यदि मार्ग में हुई है –

(1)	100 साईकिलों का लागत मूल्य	100 x 200	₹20,000
	जोड़े : प्रेषक व्यय आनुपातिक	200/400 x 100	₹ 500
	कुल असामान्य हानि		₹20,500
	घटायेः क्षतिग्रस्त साईकिलों से वसूली	200 x ¼ = 50 x 100	₹5,000
			₹15,500
	घटाये : बीमा कम्पनी से प्राप्त राशि		₹12,500
	शुद्ध हानि		**₹3,000**
(2)	बिना बिके माल का मूल्यांकन :– Unsold Stock 400 – 100 = 300 – 240 = 60		
	साईकिलों का लागत मूल्य	60 x 200	₹12,000
	जोडे – प्रेषक व्यय आनुपातिक	2000 / 400 x 60	₹300
	जोडे – एजेन्ट व्यय आनुपातिक	1200 / 300 x 60	₹240
	कुल लागत		₹12,540
(ब) असामान्य हानि प्रेषणी के गोदाम में आने के बाद हुई :–			
	100 साईकिलों का लागत मूल्य = 100 x 200		₹20,000
	जोडे : प्रेषक एवं एजेन्ट व्यय (2000 + 1200) 3200 / 400 x 100		₹800
	असामान्य हानि		₹20,800

नोटः प्रेषण पर हानि प्रेषणी की लापरवाही की वजह से होती है तो प्रेषणी स्वयं वहन करेगा।

उदाहरण 4 :– 1 जनवरी 2016 को मुम्बई के हिमी ग्लास वर्क्स ने भीलवाडा के पार्थ को 100 पेटी सामान प्रेषण पर भेजा जिसका लागत मूल्य ₹16000, प्रेषक ने ₹1000 रेलभाडा और ₹2000 मजदूरी के चुकाये। रास्ते में 10 पेटी टूट गई। शेष पेटियां प्रेषणी ने सम्भाल ली तथा उसने चुंगी ₹1000, विक्रय व्यय ₹500, गोदाम किराया ₹500 चुकाये। एजेन्ट ने 75 पेटी ₹200 प्रति पेटी के भाव से

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

बेच दी। प्रेषणी को बिक्री पर 5 प्रतिशत कमीशन देय है। कमीशन पर खर्चे काटकर शेष राशि प्रेषणी ने प्रेषक को भेज दी। हिमी ग्लास वर्क्स की पुस्तकों में प्रेषण खाता व प्रेषणी खाता बनाइये।

On 1 Jan., 2016 Himi glass works of Mumbai consigned to Parth of Bhilwara 100 case for ₹16000 on cost. He paid ₹1000 Railway freight, ₹2000 wages, during of transit 10 cases lost and remaining cases received by parth. He paid octroi ₹1000 sales expenses ₹ 500, godown rent ₹500. Parth sold 75 cases ₹200 per cases. Parth received 5% commission on sales and remaining balance amount sent to consignor by consignee.

Prepare Consignment and Consignee's account.

हल:

In the books of HIMI GLASS WORKS MUMBAI

CONSIGNMENT Account

Date	Particulars	Amount ₹	Date	Particulars	Amount ₹
2016 Jan, 1	To Goods sent on Consignment A/c	16,000		By Parth's A/c (Sales)	15,000
	To Cash A/c (Exp.)	3,000		By Abnormal Loss	1,900
	To Parth's A/c (Exp.)	2,000		By Unsold Stock	3,017
	To Parth's A/c (Commission)	750		By P & L (Loss)	1,833
		21,750			**21,750**

(1) कमीशन 15000 x 5/100 ₹750

(2) असामान्य हानि की गणना 10 x 160 ₹1,600

जोड़े – प्रेषक व्यय 300 x 10 / 100 ₹ 300

कुल लागत **₹ 1900**

(3) Unsold Stock =100 – 10 – 75 = 15 इकाईयां

शेष माल का मूल्य 15 x 160 ₹2,400

जोडे : प्रेषक व्यय आनुपातिक 3000 x 15 / 100 ₹450

जोडे : एजेन्ट व्यय आनुपातिक 1000 x 15 / 90 ₹167

₹3,017

PARTH'S ACCOUNT (CONSIGNEE'S A/c)

Date	Particulars	Amount ₹	Date	Particulars	Amount ₹
	To Consignment A/c	15,000		By Cosignment A/c	2,000
				By Cosignment A/c	750
				By Bank A/c (B/F)	12,250
		15,000			**15,000**

उदाहरण 5 : मयंक कोल कम्पनी ने धवल सेल्स लिमिटेड को 1000 क्विन्टल कोयला ₹40 प्रति क्विंटल के भाव से प्रेषण पर भेजा। कोयले की लदाई ₹500, रेल किराया ₹3500 के चुकाये। धवल सेल्स ने 800 क्विन्टल कोयला ₹60 प्रति क्विन्टल के हिसाब से बेच दिया विक्रय व्यय ₹1600, ₹200 अग्नि बीमा के चुकाये। प्रेषणी को विक्रय पर 5 प्रतिशत कमीशन दिया गया। प्रेषण पर कुल 20 क्विन्टल कोयला कम होने की सूचना दी। प्रेषक की पुस्तकों में प्रेषण खाता तथा बिना बिका माल का मूल्य ज्ञात कीजिये।

Mayank coal co. consigned to Dhaval sales Ltd. 1000 quintal coal @ ₹40 per quintal. He paid loading ₹500 railway freight ₹3500. Dhaval sales sold 800 quintal coal @ ₹60 per quintal and paid sales exp. ₹1600, fire insurance ₹200. Agent received 5% commission on sales, consignees reported a shortage of 20 quintals of coal on the whole consignment. Prepare Consignment Account in the books of Consigner and calculate the value of unsold stock.

हल:

In the books of Mayank Coal Co.

CONSIGNMENT ACCOUNT

Date	Particulars	Amount ₹	Date	Particulars	Amount ₹
	To Goods sent on Consignment A/c	40,000.00		By Dhaval & Sons. (Sales) (800x60)	48,000.00
	T0 Cash A/c (Exp.)	4,000.00		By Unsold stock	8,081.63

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

	To Dhaval's & Co. A/c (Exp.)	1,800.00		(40000+4000)	x180	
	To Parth's A/c (Commission)	2,400.00		980		
	To P&L A/c (Profit)	7,881.63				
		56,081.63				**56,081.63**

बीजक मूल्य पर माल का प्रेषण व लेखा

जब माल का लेखा बीजक मूल्य पर किया जाता है तो अग्र लिखित प्रविष्टियां बीजक मूल्य पर होगी। (1) माल को प्रेषण पर भेजने पर (2) बिना बिका स्टॉक – प्रारम्भिक एवं अन्तिम (3) असामान्य हानि का लेखा बीजक मूल्य पर होगा। बीजक मूल्य में लागत के साथ लाभ भी जुडा हुआ होता है अर्थात बीजक मूल्य = लागत + लाभ। ऐसी स्थिति में उक्त प्रविष्टियों में शामिल लाभ का प्रभाव कम करना आवश्यक है तभी प्रेषण का सही लाभ–हानि ज्ञात होगा।

बीजक मूल्य में शामिल लाभ का प्रभाव कम करने के लिए की जाने वाली समायोजन प्रविष्टियॉ निम्नांकित है। (केवल प्रेषक की पुस्तकों में)

1	प्रेषण पर भेजे गये शुद्ध माल में शामिल लाभ के लिए (शुद्ध माल = प्रेषण पर भेजा माल – माल की वापसी)	Goods sent on consignment A/c Dr. To Consignment A/c
2	प्रेषण पर बिना बिके प्रारम्भिक रहतिये में शामिल लाभ के लिए	Stock Reserve A/c Dr. To Consignment A/c
3	प्रेषण पर बिना बिके अन्तिम रहतिये में शामिल लाभ के लिए	Consignment A/c Dr. To Stock Reserve A/c
4	असामान्य हानि में शामिल लाभ के लिए	Consignment A/c Dr. To Abnormal Loss. A/c

अन्तिम खाते बनाते समय चिट्ठे के सम्पत्ति पक्ष में अन्तिम रहतिये की राशि बीजक मूल्य में से स्टॉक संचय घटा कर दिखाते हैं।

विशेष :– माल का लेखा लागत मूल्य या बीजक मूल्य पर करने की स्पष्ट सूचना के अभाव में विद्यार्थी दोनो में से किसी पर भी मूल्य पर लेखा कर सकते हैं।

उदाहरण 6 : कृष्णा इंजिनियरिंग कम्पनी ने 500 टेबल पंखे दर ₹600 प्रति बीजक मूल्य पर सुमन इलेक्ट्रिक स्टोर को प्रेषण पर भेजे गये जिसे लागत में 25 प्रतिशत जोडकर भेजा गया है। प्रेषक ने ₹5000 भाडा, ₹2000 पैकिंग व्यय के चुकाये। प्रेषणी ने विक्रय विवरण में बताया 400 पंखे ₹800 प्रति पंखे के भाव से बेचे जिस पर विज्ञापन व्यय ₹1000, गोदाम किराया ₹500 चुकाये गये। प्रेषणी को बीजक मूल्य पर 5 प्रतिशत तथा बीजक मूल्य से अधिक मूल्य पर 20 प्रतिशत अधिभावी कमीशन देय है। लेखा बीजक मूल्य पर किया जाता है। प्रेषक की पुस्तकों में प्रेषण खाता बनाइये।

Krishna Engineering co. sent 500 Table fans at @ ₹ 600 per fan to Suman Ele. store at invoice price, which is 25% above the cost price. Consignor paid ₹5000 freight ₹2000 packing charges. Consignee sent account of sale showing sales of 400 fans @ ₹800 per fan and paid advertisement ₹1000, godown rent ₹500. Consignee received commission 5% on invoice price and 20% above on invoice price as additional commission. Prepare Consignment Account at invoice price.

CONSIGNMENT ACCOUNT

Date	Particulars	Amount (₹)	Date	Particulars	Amount (₹)
	To Goods Sent of Consignment A/c	3,00,000		By Suman Ele. store (Sales) 400 x 800	3,20,000
	T0 Cash A/c (Exp.) (5000+2000)	7,000		By Goods Sent on Consignment A/c	60,000
	To Suman Electric store A/c (Exp.) (1000+500)	1,500		(300000 x 25/125)	
				By Unsolod stock	61,400

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

	To Suman Ele. store	28,000			
	Gen. Com. 12000				
	Add. Com. 16000				
	To Stock Reserve A/c	12,000			
	To Profit & Loss A/c	92,900			
		4,41,400			4,41,400

(**A**) कमीशन की गणना : (1) सामान्य कमीशन : माल की लागत 400x600 = ₹2,40,000, कमीशन 2,40,000x5%=₹12,000

(2) अधिभावी कमीशन : अधिक्य वसूली : 400 x 200 = ₹80,000
अतः कमीशन की राशि 80000 x 20/100 ₹16,000

(3) Unsold stock 500 – 400=100 पंखे शेष
बिना बिके माल का मूल्य (बीजक मूल्य पर) = 100 x 600 = ₹60,000
Add : प्रेषक व्यय आनुपातिक 7000 / 500 x 100 = ₹1,400
₹61,400

(4) शेष माल का लागत मूल्य : 100 x 480 = ₹48,000
जोड़े : प्रेषक व्यय आनुपातिक : = ₹1,400
₹49,400

(5) अतः स्टॉक संचय : 61,400 – 49,400 = ₹12,000

स्टॉक के बाजार मूल्य में कमी (Fall in Market Price of Stock)

स्टॉक का बाजार मूल्य लागत मूल्य से कम होने पर उसे बाजार मूल्य पर मूल्यांकित किया जाता हैं। स्टॉक के बाजार मूल्य में होने वाली इस कमी से प्रेषक के पास पडे स्टॉक तथा प्रेषणी के पास स्टॉक के मूल्य में कमी कर दी जाती हैं।

उदाहरण 7 : बोम्बे की रेखा ने 400 सलवार सूट ₹600 प्रति सूट की दर से खरीदे जिसमें से 200 सूट जयपुर की वर्षा को ₹900 प्रति सूट बीजक मूल्य पर भेजे। प्रेषक ने प्रेषण पर ₹5000 खर्च किये। प्रेषणी ने 150 सूट ₹1000 प्रति सूट की दर से नकद बेच दिये तथा विविध खर्चो के ₹2500चुकाये। बोम्बे की रेखा ने 120 सूट ₹900 प्रति सूट की दर से बेच दिये तथा विक्रय व्यय ₹2000 चुकाये। बाजार मूल्य में कमी आने से अन्तिम स्टॉक का मूल्यांकन लागत से 10 प्रतिशत कम पर किया गया। प्रेषणी को 5 प्रतिशत सामान्य कमीशन तथा ₹ 900 प्रति सूट से अधिक मूल्य पर 15 प्रतिशत अधिभावी कमीशन मिलेगा। रेखा की पुस्तकों में प्रेषण खाता, व्यापार एवं लाभ हानि खाता बनाइये।

Mrs. Rekha of Bombay purchased 400 salvar suit @ ₹600 per suit and sent to Varsha of Jaipur 200 suit @ ₹900 per suit at invoice price. Consignor paid ₹5000 as expenses on consignment and consignee sold suit 150 @ ₹1000 per suit in cash and paid sundry expenses ₹2500. Mrs. Rekha sold 120 suit ₹900 per suit and paid sales expenses ₹2000. Due to fall in market value, stock valued at 10% less then cost price. Consignee will get 5% general commission and overriding commission @ 15% on excess amount received over ₹900 per suit.

Prepare in the books of Rekha Consignment A/c and Trading and P & L A/c.

हलः

In the books of Rekha of Bombay

Consignment Account

Date	Particulars	Amount (₹)	Date	Particulars	Amount (₹)
	To Goods Sent on Consignment A/c	1,20,000		By Varsha (Sales)	1,50,000
	To Cash A/c (Exp.)	5,000		By Unsold Stock	28,250
	To Varsha (Exp.)	2,500			
	To Varsha (Commission)				
	General 7500				
	Overriding 2250	9,750			
	To Profit & Loss A/c	41,000			
		1,78,250			**1,78,250**

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Working Note (A) कमीशन की गणना

(i)	General Commission	150000 x 5/100	=	₹7,500
(ii)	Add : Overriding - Commission	[1,50,000 – (150 x 900)] x 15/100	=	₹2,250
		Total Commission	=	₹9,750

(B) प्रेषण पर न बिके माल का मूल्यांकन :–

न बिके माल की लागत	50 x 600	=	₹30,000
घटाएँ : बाजार मूल्य में 10 प्रतिशत कमी के कारण			₹3,000
			₹27,000
जोडे : प्रेषण व्यय आनुपातिक 5000/200 x 50			₹1,250
			₹28,250

Trading and Profit & Loss Account

Particulars	Amount (₹)	Particulars	Amount (₹)
To Purchases (400x600)	2,40,000	By Goods sent on consignment	1,20,000
To Gross profit	31,200	By sales (120x900)	1,08,000
		By closing stock at cost	
		80 x 600 = 48000	
		(-) 10% of 48000 4800	43,200
	2,71,200		**2,71,200**
To Selling exp.	2,000	By Gross profit (Trading A/c)	31,200
To Net profit	70,200	By Consignment A/c (Profit)	41,000
	72,200		**72,200**

क्षतिग्रस्त माल का प्रेषणी द्वारा विक्रय
(Sales of Damaged goods by consignee)

उदाहरण 8 : बैंगलोर के हितेश ने अजमेर के महेश को 1 जनवरी 2015 को ₹30000 की लागत का माल प्रेषण पर भेजा। प्रेषक ने भाडा व बीमा के ₹900 चुकाये। रास्ते में तेज वर्षा के कारण माल भीग गया जिससे 10 प्रतिशत माल खराब हो गया। प्रेषणी ने निस्तारण व्यय के ₹250 तथा गोदाम किराया ₹200 चुकाये। 20 फरवरी 2015 को प्रेषक को बीमा दावे के ₹2500 प्राप्त हुए। प्रेषणी ने 31 जनवरी 2015 को विक्रय विवरण के साथ बताया कि शेष माल का 2/3 भाग ₹35000 में नकद बेचा तथा क्षतिग्रस्त माल के विक्रय से भी ₹500 प्राप्त किये। प्रेषण को कुल विक्रय पर 8 प्रतिशत कमीशन मिलेगा। प्रेषणी ने शेष राशि वाहक के साथ भेज दी। हितेश की पुस्तकों में प्रेषण खाता व असामान्य हानि खाता बनाइये।

Mr. Hitesh of Bangalore consigned goods to Mr. Mahesh of Ajmer on 1 January, 2015 for ₹30000 at cost price. Consignor paid for carriage and insurance ₹900. Due to heavy rain fall 10% goods was damaged. Cosignee paid clearing charges ₹250 and godown rent ₹200. On 20th February 2015 consigner received ₹2500 from Insurance Company. Consignee sent Account sale showing that 2/3 of the remaining goods sold in cash for ₹35000 and received ₹500 from damaged goods. consignee sent remaining amount through bearer. consignee will receive 8% commission on total sales.

Prepare in the books Hitesh, Consignment Account and Abnormal Loss Account.

हल:

In the books of Hitesh
Consignment Account

Date	Particulars	Amount (₹)	Date	Particulars	Amount (₹)
	To Goods sent on Consignment A/c	30,000		By Mahesh's A/c (sales)	35,000
	To Cash A/c (Exp.)	900		By Abnormal Loss A/c	3,090

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

	To Mahesh (Exp.) (250+200)	450		By Unsold Stock A/c	9,353
	To Mahesh's A/c (commission 8% 35000)	2,800			
	To Profit & Loss A/c	13,293			
		47,443			**47,443**

Working Note (A) बचे हुए माल का मूल्यांकन

कुल माल की लागत	₹30,000
जोड़े : प्रेषक खर्चे	₹ 900
	₹30,900
घटाए : असामान्य हानि 10% of 30900	₹3,090
	₹27,810
जोड़े : प्रेषणी के अनावर्ती खर्चे	₹250
बचे हुए माल की कुल लागत	₹28,060
Value of unsold stock 28060 x 1/3 =	₹9,353

Abnormal Loss A/c

Date	Particulars	Amount (₹)	Date	Particulars	Amount (₹)
	To Consignment A/c	3,090		By Mahesh (Sales of Damaged goods)	500
	To Mahesh (comm.) 500 x 8%	40		By Bank A/c	2,500
				By P&L A/c	130
		3,130			**3,130**

उदाहरण 9 : अहमदाबाद के हर्षित ने उदयपुर के गोपेश को 300 साडियां दर ₹225 प्रति साड़ी बीजक मूल्य पर (₹150 प्रति साड़ी लागत) प्रेषित की। हर्षित ने प्रेषण पर पर ₹3000 व्यय किये। हर्षित ने ₹25000 तीन माह का विनिमय बिल गोपेश पर लिखा जिसे उसने स्वीकार किया। हर्षित ने बिल को ₹24500 में बैंक से भुना लिया। गोपेश ने ₹900 चुंगी के चुकाये और 250 साड़ियॉ उषा को ₹200 प्रति साडी से बेच दी। 20 साड़ियॉ गोदाम से चोरी हो गयी। गोपेश को 5 प्रतिशत सामान्य कमीशन व 2 प्रतिशत परिशोध कमीशन देय है। लेखा लागत मूल्य पर किया गया । हर्षित की पुस्तकों में प्रेषण खाता, गोपेश का खाता, असामान्य हानि खाता, प्रेषण पर भेजे गये माल का खाता बनाइये एवं गोपेश की पुस्तकों में हर्षित का खाता बनाइये।

Mr. Harsit of Ahemdabad consigned 300 sarrees @ ₹225 per sarree to Gopesh of Udaipur at invoice price (cost price ₹150 per saree). Harsit paid expenses ₹3000 on consignment. Harsit wrote a bill on Gopesh ₹25000 for three months, which is accepted by him. Harsit discounted it from bank for ₹24500. Gopesh paid octroi ₹900 and sold 250 sarees to Usha for ₹200 saree, 20 sarees were stolen from godown, Gopesh is entitled 5% general commission 2% delcredare commission. Accounts are prepared on cost price. Prepare Consignment Account, Gopesh Account, Abnormal Loss Account in the books of Harsit and Harsit Account in the books of Gopesh.

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

हल:

In the Books of Harsit

Consignment Account

Date	Particulars	Amount (₹)	Date	Particulars	Amount (₹)
	To goods sent on consignment A/c	45,000		By Gopesh A/c (Sales) (250 x 200)	50,000
	To Cash A/c (Expenses)	3,000		By Abnormal Loss	3,260
	To B/R (Discount)	500		By Unsold Stock	4,890
	To Gopesh (Expenses)	900			
	To Gopesh (Commission)				
	Gen. Com. 2500				
	Del. com 1000	3,500			
	To Profit & Loss A/c	5,250			
		58,150			**58,150**

(**A**) कमीशन सामान्य 50000 x 5/100 = ₹2,500

परिशोध कमीशन 50000 x 2/100 = ₹1,000

(**B**) असामान्य हानि का मूल्यांकन

असामान्य हानि माल की लागत 20 x 150 = ₹3,000

प्रेषक जोडे प्रेषक व्यय 3000 /300 x 20 = ₹200

एजेन्ट के व्यय 900 / 300 x 20 = ₹60

₹3,260

(**C**) बिना बिके माल का मूल्यांकन : (300-250-20)30 x 150 = ₹4,500

जोड़े : प्रेषक व्यय 3000 / 300 x 30 = ₹300

जोड़े प्रेषणी व्यय 900/300 x 30 = ₹90

₹4,890

Gopesh's A/c

Date	Particulars	Amount (₹)	Date	Particulars	Amount (₹)
	To Consignment A/c	50,000		By B/R A/c	25,000
				By Consignment A/c	900
				By Consignment A/c	3,500
				By Balance c/d	20,600
		50,000			**50,000**

Goods Sent on Consignment A/c

Date	Particulars	Amount (₹)	Date	Particulars	Amount (₹)
	To Trading A/c	45,000		By Consignment A/c	45,000
		45,000			**45,000**

Abnormal Loss A/c

Date	Particulars	Amount (₹)	Date	Particulars	Amount (₹)
	To Consignment A/c	3,660		By P&L A/c	3,660
		3,600			**3,660**

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

In the books of Gopesh
Harsit's A/c

Date	Particulars	Amount (₹)	Date	Particulars	Amount (₹)
	To B/P A/c	25,000		By Cash A/c (Sale)	50,000
	To Cash A/c (Expenses)	900			
	To Commission	3,500			
	To Balance c/d	20,600			
		50,000			**50,000**

प्रेषणी को लाभ में हिस्सा या विशेष कमीशन
(Share in profit to Consignee or Special Commission)

उदाहरण 10 : हिमी गारमेन्ट्स बैंगलोर ने अहमदाबाद के अपने प्रतिनिधि शीला गारमेन्ट्स को ₹33,000 की लागत का माल बीजक मूल्य पर भेजा जो कि लागत से 20 प्रतिशत अधिक था। प्रधान ने बीमा व भाडे के ₹1250 चुकाये। एजेन्ट ने माल के निस्तारण पर ₹250 चुकाये तथा स्थापना व्यय के ₹750 चुकाये। एजेन्ट ने 3/4 माल लागत पर 1/3 लाभ जोडकर बेचा। शेष माल का आधा आग से नष्ट हो गया। बीमा कम्पनी पर ₹4500 दावा स्वीकार किया जिसका निपटारा 90 प्रतिशत पर हो गया। प्रतिनिधि सकल बिक्री पर 5 प्रतिशत कमीशन तथा 3 प्रतिशत परिशोध कमीशन पाने का अधिकारी है। साथ ही प्रेषण पर लाभ का 5 प्रतिशत विशेष कमीशन (ऐसा कमीशन घटाने के बाद लाभ पर) भी एजेन्ट को मिलेगा। प्रेषक को प्रेषणी से देय राशि बैंक ड्राफ्ट द्वारा प्राप्त हो गयी। प्रेषक की पुस्तकों में प्रेषण खाता व असामान्य हानि खाता बनाइये। माल का लेखा बीजक मूल्य पर किया जाता हैं। (असामान्य हानि को छोडकर)

Himi Garments of Banglore sent goods to agent costing ₹33,000 at invoice price, which is 20% higher than cost to Sheela Garments of Ahemdabad on consignment. Consigner paid ₹1250 for insurance and freight. Agent paid ₹250 as clearing charges and estblishment expenses ₹750. Agent sold 3/4 of goods at cost plus 1/3 for profit. Half of the remaining goods destroyed by the fire. Insurance company accepted the claim for ₹ 4500 , which is settled at 90% of the said amount. Agent will get 5% special commission (after deducting such commission) on profit on consignment. Prepare Consignment Account, Abnormal loss account in the books of consignee. Consigner received balance amount from consignee through bank draft. Accounting is done at invoice price. (Excluding abnormal loss).

हल:

Consignment Account

Date	Particulars	Amount (₹)	Date	Particulars	Amount (₹)
	To Goods sent on Consignment A/c 33000 x 120 / 100	39,600		By Sheela Garments (Sales)	33,000
	T0 Bank A/c (Expenses)	1,250		By Goods sent on Consignment A/c (39600 – 33000)	6,600
	To Sheela Garments (Expenses) (250+750)	1,000		By Abnormal Loss	4,312.50
	To Sheela Garments (Commission)	2,640		By unsold stock	5,137.50
	To Stock Reserve	825			
	To Shella Garments (Special Commision)	178			
	To Profit & Loss A/c	3,557			
		49,050			**49,050**

(अ) असामान्य हानि की गणना :– बचा हुआ स्टॉक = 1 – ¾ = ¼

Cost : Abnormal loss33000 x ¼ x ½ = ₹4,125.00

जोड़ो : आनुपातिक प्रेषक व्यय (1250 + 250) x 1/8 = ₹187.50

₹4,312.50

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

(ब)	न बिके माल का मूल्यांकन :– मूल्य 33000 x ¼ x ½	=	₹4,125.00
	जोड़ो आनुपातिक व्यय (1250 + 250) x 1/8	=	₹187.50
			₹4,312.50
	जोड़ो : Stock Reserve 4125 x 20%	=	₹825.00
			₹5,137.50
(स)	विक्रय की गणना $33000 \times \frac{3}{4} \times \frac{1+1/3}{1}$	=	₹33,000
(द)	कमीशन की गणना :–(1) सामान्य कमीशन = 33000 x 5/100	=	₹1,650
	(2) डेलक्रेडर कमीशन = 33000 x 3/100	=	₹990
			₹2,640
(य)	विशेष कमीशन व शुद्ध लाभ की गणना :–		
	लाभ चार्ज करने पूर्व कमीशन = 49050 – 45315	=	₹3,735
	3735 x 5/105	=	₹178
	Net Profit		₹3,557

Abnormal Loss A/c

Date	Particulars	Amount (₹)	Date	Particulars	Amount (₹)
	To consignment A/c 33000 x 120 / 100	4312.50		By insurance co. (4500 x 90%)	4050
				By P&L A/c	262.50
		4312.50			**4312.50**

प्रेषण का संयुक्त साहस में परिवर्तन

(Conversion of Consignment into Joint Venture)

प्रेषण व्यवसाय के बीच प्रधान व प्रतिनिधि यह निर्णय लेते है कि आगे से दोनो संयुक्त साहस में बदल दिया जाता है तथा प्रेषणी कमीशन के स्थान पर लाभ का अधिकारी बन जाता है। प्रेषणी के पास बिना बिका माल संयुक्त साहस खाते में हस्तान्तरित कर दिया जाता है तथा लेखांकन भी संयुक्त साहस विधि से किया जाता है।

उदाहरण 11 : स्वास्तिक टॉयज उदयपुर ने ₹40000 के खिलोने सलूम्बर के मानू टॉयज को 5 प्रतिशत कमीशन के आधार से प्रेषण पर विक्रय हेतु भेजे। प्रेषक द्वारा ₹4000 पैंकिंग व गाड़ी भाडे के खर्च किए। प्रेषणी ने गोदाम तक माल पहुंचाने पर ₹1000 व्यय किये। प्रेषणी ने 80 प्रतिशत माल ₹50000 में बेच दिया तथा प्रेषक को शेष राशि का भुगतान कर दिया। प्रेषणी ने शेष माल के लिए कमीशन पर कार्य नहीं करने की बात कही।

प्रेषक ने प्रेषणी को 1/3 लाभ–हानि का प्रस्ताव दिया तथा संयुक्त साहस आधार पर व्यवसाय चालू रखने के लिऐ कहा जिसे प्रेषणी ने मान लिया। प्रेषक ने ₹20000 का माल संयुक्त साहस हेतु मानू टॉयज सलूम्बर को और भेजा। स्वास्तिक टॉयज ने ₹2000 खर्च किये तथा मानू टॉयज के ₹1500 खर्च हुए। स्वास्तिक टॉयज ₹1500 लागत का माल इसी मूल्य पर रख लिया तथा शेष माल ₹40000 में बेच दिया। दोनों पक्षों के बीच हिसाब का निपटारा हो गया। दोनों पक्षों की पुस्तकों में आवश्यक खाते बनाइये।

Swastik toys of Udaipur sent ₹40,000 toys to Manu toys of salumber on consignment for sale , on the basis of 5% commission. Consignor paid ₹4000 for packing and carriage. Consignee paid ₹1000 for carrying goods to godown. Consignee sold 80% goods for ₹ 50,000 and paid remaining amount Consignee denied to work on commssion for remaining goods.

Consignor proposed to consignee for carrying business on joint venture by taking 1/3 share in profit and loss. consignee accepted it. Consigner sent goods worth ₹20000 to Manu toys of salumber on joint venture. Swastik toys spent ₹2000 and Manu toys spent ₹1500. Swastik toys retain the goods costing ₹1500 at same value and remaining goods sold at ₹40000. Accounts are settled between both parties amount to consigner. Prepare necessary accounts in the books of both parties.

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

हल:

In the books of Swastik Toys

Consignment Account

Date	Particulars	Amount (₹)	Date	Particulars	Amount (₹)
	To goods sent on consignment a/c	40,000		By Manu Toys (sale)	50,000
	To Bank (Expenses)	4,000		By Joint venture (Tmasfer to joint venture a/c)	9,000
	To Manu Toys (Exp.)	1,000			
	To Manu Toys (com.)	2,500			
	To P&L A/c	11,500			
		59,000			**59,000**

Joint Venture Account

Date	Particulars	Amount (₹)	Date	Particulars	Amount (₹)
	To consignment A/c (Transfer)	9,000		By Manu toys (sales)	40,000
	To Purchase (goods supplied)	20,000		By Manu toys (Goods Taken)	1,500
	To Bank A/c (expenses)	2,000			
	To Manu Toys (exp.)	1,500			
	To Profit on J.V.				
	P&L 6000				
	Manu toys 3000	9,000			
		41,500			**41,500**

Manu Toys Account

Date	Particulars	Amount (₹)	Date	Particulars	Amount (₹)
	To consignment A/c	50,000		By consignment a/c	1,000
				By consignment a/c	2,500
				By Bank a/c (b/f)	46,500
		50,000			50,000
	To Joint venture a/c (sales)	40,000		By Joint venture a/c (Exp.)	1,500
	To Joint venture a/c	1,500		By Joint venture a/c (Share of Profit)	3,000
				By Bank a/c (b/f)	37,000
		41,500			**41,500**

In the Books of Manu Toys

Joint Venture Account

Date	Particulars	Amount (₹)	Date	Particulars	Amount (₹)
	To Swastik Toys (stock on consignment)	9,000		By Bank A/c (sales)	40,000
	To swastik Toys (Goods Supplied)	20,000		By Purchase (stock taken)	1,500
	To swastik Toys (Exp.)	2,000			
	To Bank a/c (Exp.)	1,500			
	To Profit				
	P&L 3000				
	swastik toys 6000	9,000			
		41,500			41,500

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Swastik Toys A/c

Date	Particulars	Amount (₹)	Date	Particulars	Amount (₹)
	To Bank a/c (expenses)	1,000		By Bank A/c (sales)	50,000
	To Commission	2,500			
	To Bank a/c (b/f)	46,500			
		50,000			**50,000**
	To Bank A/c (b/f)	37,000		By Joint venture (stock)	9,000
				By Joint venture (Goods)	20,000
				By Joint venture exp.	2,000
				By P&L A/c (Profit)	6,000
		37,000			**37,000**

आंशिक रूप से क्षतिग्रस्त माल की मरम्मत
(Repairs of partially damaged goods)

यदि क्षतिग्रस्त माल को विक्रय योग्य बनाने पर कुछ मरम्मत व्यय किया गया है तो ऐसे व्यय का लेखा निम्न प्रकार से किया जा सकता हैं।

(1) प्रेषण का खर्च मानते हुए प्रेषण खाते में डेबिट करना :–

Consignment A/c Dr.
To Cash A/c
(Repairs of partially damaged goods debited to consignment A/c)

(2) क्षतिग्रस्त माल की लागत में जोडना – क्षतिग्रस्त माल की लागत ज्ञात करते समय ऐसी इकाइयों का मरम्मत व्यय भी उसमें जोडकर असामान्य हानि ज्ञात की जाती है। इसके लिए लाभ–हानि खाते में चार्ज असामान्य हानि = क्षतिग्रस्त माल की लागत + मरम्मत व्यय – विक्रय योग्य मूल्य

(3) यदि आंशिक रूप से क्षतिग्रस्त इकाईयां मरम्मत के बाद पुनः अच्छी इकाइयों के मूल्य पर बेची जा सकती है तो मरम्मत व्यय को बिना बिके स्टॉक (क्षतिग्रस्त इकाई सहित) की लागत में जोड दिया जाता है।

उदाहरण 12 – राजेन्द्र ने 100 पंखे ₹800 की दर से नरेन्द्र को प्रेषण पर भेजे। प्रेषक ने गाडी भाड़े व अन्य व्यय के ₹2000 चुकाये। 20 पंखे प्रेषणी के पास बिना बिके रहे गये जिनमें से 8 पंखे क्षतिग्रस्त है। क्षतिग्रस्त पंखों को ठीक करवाने के मरम्मत व्यय ₹1000 खर्च किये गये। यदि –

(1) मरम्मत व्यय को प्रेषण का ही खर्चा माना जाये तो मरम्मत व्यय की प्रविष्टि दीजिये।

(2) क्षतिग्रस्त इकाइयों की लागत में मरम्मत व्यय को जोडा जाये तथा प्रति क्षतिग्रस्त पंखे का विक्रय मूल्य मरम्मत के बाद ₹ 400 प्रति पंखा हो तो असामान्य हानि ज्ञात कीजिये।

(3) मरम्मत व्यय के बाद क्षतिग्रस्त इकाईयॉ अच्छी इकाईयों के समान बेची जा सकती है तो बिना बिके पंखों का मूल्य ज्ञात करो।

Rajendra sent 100 fans @ ₹ 800 per fan to Narendra on consignment. Consigner paid ₹ 2000 for carriage and other expenses. 20 fans are left unsold with consignee, out of which 8 are damaged. Repairs ₹ 1000 paid to complete the damaged fans. Give the Journal entry for repair it if:

(1) Repair expenses is treated as consignment expenses.

(2) Repair expenses included in the value of damaged goods and then the value of damaged fans is ₹ 400 per fan, then calculate value of abnormal loss too.

(3) After repair the damaged fans unsold as good fans, then calculate the value of unsold stock.

हल : **(i)** Consignment A/c Dr. 1000
To Cash A/c 1000
(Repair of partially damaged goods debited to Consignment a/c)

(ii) Cost price of 8 Fans ₹800 each.	₹6,400
Add - प्रेषक द्वारा किये गये आनुपातिक व्यय (2000 x 8/100)	₹160
	₹6,560
Add – Repairs of damaged units	₹1,000
Total Cost of damaged stock	₹7,560
Less – Actual value is 8 x 400	₹3,200
Abnormal Loss debited to P&L A/c	₹4,360

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

(iii) न बिके माल की गणना –

Cost of 20 fans @ ₹ 800 each		₹16,000
Add : प्रेषक व्यय आनुपातिक	(2000 x 20 / 100)	₹ 400
		₹16,400
Add : Repairs of damaged units		₹1,000
Value of unsold stock		₹17,400

सारांश (**Summary**)

- प्रेषण : जब प्रेषक द्वारा प्रेषणी को इस आशय से माल भेजा जाता है कि उसके द्वारा विक्रय करने पर कुल विक्रय पर कमीशन मिलेगा इसे प्रेषण कहते है। इसमें प्रेषक द्वारा प्रेषणी को भेजे गये माल को जावक प्रेषण (Outward Consignment) कहते है तथा प्रेषणी के लिये यह आवक प्रेषण (Inward Consignment) होता है।
- प्रेषणी : वह व्यक्ति जिसे प्रेषण पर माल भेजा जाता है तथा इसके द्वारा माल उपभोक्ता को बेचा जाता है उसे प्रेषणी या एजेन्ट कहते है।
- प्रेषक : माल का स्वामी, जो प्रेषण पर माल विक्रय हेतु भेजता है उसे प्रधान या प्रेषक कहते है।
- प्रेषण पर अग्रिम : प्रेषणी द्वारा माल के विक्रय के पूर्व ही प्रेषण को कुछ राशि, चैक, विनिमय बिल अग्रिम दिया जाता है तो इसे प्रेषण पर अग्रिम कहते है। विनिमय बिल के भुनाने पर बट्टे की राशि हानि मानते हुऐ प्रेषण खाते में नाम कर देते हैं।
- प्रेषण व विक्रय में अन्तर : प्रेषण में माल का स्वामित्व प्रेषक का होता है तथा विक्रय में क्रेता का। इसी प्रकार प्रेषण में जोखिम प्रेषक की होती है जबकि विक्रय में क्रेता की।
- बिना बिके स्टॉक का मूल्यांकन : वास्तविक मूल्यांकन बाजार मूल्य व लागत में से जो कम हो उस पर किया जाएगा। इसमें प्रेषक के आनुपातिक खर्चे जोड़ देंगे तथा प्रेषणी के अनावर्ती व्ययों का आनुपातिक भाग जोड़ेंगे।
- प्रेषण पर भेजे गए माल की हानि : यह सामान्य व असामान्य हानि दोनों प्रकार की होती हैं। सामान्य हानि का कोई पृथक से लेखा नहीं होता है। उसको अच्छे माल की लागत बढा दी जाती है। जबकि असामान्य हानि का मूल्यांकन कर उसे पृथक से दिखाया जाता है।
- बीजक मूल्य पर माल का प्रेषण : यदि प्रेषक माल बीजक मूल्य पर भेजता है तो लाभ का हिस्सा प्रेषण पर भेजे गए माल के मूल्य, बिना बिके माल के मूल्य व असामान्य हानि में सम्मिलित होता है। जिसका समायोजन किया जाता है।
- स्टॉक के बाजार मूल्य में कमी : इस दशा में स्टॉक का मूल्यांकन लागत पर करते है।
- प्रेषणी को लाभ में हिस्सा : कभी–कभी प्रेषक व प्रेषणी के बीच अनुबंध होता है कि प्रेषणी लाभ में हिस्सा या विशेष कमीशन प्राप्त करे इस दशा में प्रेषण खाते को ऐसी राशि में नामे करेगे।
- प्रेषण का संयुक्त साहस में परिवर्तन : इस दशा में प्रेषण पर बिना बिके माल का स्टॉक संयुक्त साहस खाते में स्थानान्तरित कर संयुक्त साहस की तरह प्रविष्टियां बनाई जाती है।

शब्दावली (**Glossary**)

1. विक्रय विवरण (**Account Sale**) : एजेन्ट द्वारा माल बेचने के बाद हिसाब भेजा जाता है उसे विक्रय विवरण कहते है। यह एजेन्ट द्वारा प्रधान को भेजा जाता है।
2. सूचनार्थ बीजक (**Performa Invoice**) : प्रेषक द्वारा प्रेषणी को माल भेजते समय सूचना के तौर पर कच्चा बीजक बनाकर भेजा जाता है उससे कम मूल्य पर प्रेषणी नहीं बेचे।
3. प्रेषण खाता (**Consigment Account**) : प्रेषक द्वारा एजेन्ट को माल भेजने की प्रक्रिया में जो खाता बनाया जाता है वह प्रेषण खाता है।
4. डेलक्रेडर (परिशोध कमीशन) (**Delcredere Commision**) : यह कमीशन प्रेषक द्वारा प्रेषणी को उधार बेचे गये माल की राशि वसूल करने के एवज में उधार बिक्री पर अतिरिक्त कमीशन दिया जाता है वह परिशोध कमीशन है।
5. अतिरिक्त कमीशन (**Additional commission**) : बीजक मूल्य से अधिक मूल्य पर बेचे गये माल पर अधिक मूल्य पर जो कमीशन दिया जाता है उसे अतिरिक्त कमीशन कहते है।
6. एजेन्ट के पास बिना बिका स्टॉक (**Unsold stock with Agent**) : एजेन्ट के पास माल बेचने के बाद शेष रहे माल का लागत मूल्य + खर्चे प्रधान के आनुपातिक+ खर्चे एजेन्ट के आनुपातिक (आवर्ती) खर्चे जोडने के बाद ज्ञात किया जाता है उसे Unsold stock या stock with agent के नाम से जानते है।

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

7. सामान्य हानि (**Normal Loss**)– प्रेषण के दौरान वस्तु की प्रकृति से जो हानि होती है उसे सामान्य हानि कहते है, जैसे कोयला सूखना, लकडी सूखना, गुड सूखना।
8. असामान्य हानि (**Abnormal Loss**)– प्रेषण व्यवहार के दौरान अचानक कोई हानि होती है जैसे चोरी होना, आग से नष्ट होना, दुर्घटना होना, बाढ़ से नष्ट होना यह हानि असामान्य कहलाती है।

अभ्यासार्थ प्रश्न (**Questions for Excercise**)

बहुचयनात्मक प्रश्न (**Multiple choice Questions**)

1. प्रेषण खाते की प्रकृति है –
   (अ) वास्तविक खाते की (ब) व्यक्तिगत खाते की
   (स) अवास्तविक खाते की (द) प्रतिनिधि खाते की
   What is the nature of consignment account is :
   (a) Real Account **(b)** Personal Account
   (c) Nominal Account **(d)** Agent Account
2. प्रेषक व प्रेषणी के बीच सम्बन्ध होता है –
   (अ) स्वामी व कर्मचारी का (ब) क्रेता और विक्रेता का
   (स) प्रधान और प्रतिनिधि का (द) देनदार व लेनदार का
   What is the relation between consignor and consignee?
   (a) Owner and Employee **(b)** Purchaser and Seller
   (c) Consignor and Consignee **(d)** Debtors and Creditors.
3. प्रेषणी द्वारा माल बेचने के बाद हिसाब बनाकर भेजा जाता है उसे कहते है –
   (अ) बीजक (ब) विक्रय विवरण
   (स) विक्रय का हिसाब (द) सूचनार्थ बीजक
   The statement of Account which is sent by the consignee after selling goods is known as :
   (a) Invoice **(b)** Statement of Sale
   (c) Account of sale **(d)** Performa Invoice
4. प्रेषण में एजेन्ट के पास बिना बिका रहतिये को मूल्यांकन में आनुपातिक व्यय के रूप में शामिल किये जाने व्यय है –
   (अ) चुंगी व भाडा (ब) गोदाम किराया
   (स) विज्ञापन खर्च (द) विक्रय व्यय
   In Consignment, while valuing remaining unsold stock with consignee, which proporatationate expenses of consignee is added :
   (a) Octroi and freight **(b)** Godown Rent
   (c) Advertisment expenses **(d)** Sales expenses
5. प्रेषक द्वारा माल की बिक्री पर एजेन्ट को बीजक मूल्य पर 5 प्रतिशत कमीशन तथा बीजक मूल्य से अधिक मूल्य पर 20 प्रतिशत कमीशन देय है। प्रेषक ने एजेन्ट को ₹80000 की लागत का माल ₹1,00,000 के बीजक मूल्य पर भेजा जिसे एजेन्ट ने ₹1,10,000 में बेच दिया। एजेन्ट को देय कमीशन की राशि होगी।
   (अ) ₹7000 (ब) ₹8000
   (स) ₹10000 (द) ₹5800
   Consignor sent goods on consignee to consignment, consignor paid 5% commission on invoice price and 20% above on invoice price. Consignor sent goods worth ₹80000 at a invoice price of ₹100000. Which is sold in ₹110000 The amount of commission for agent.
   (a) ₹7,000 **(b)** ₹8,000
   (c) ₹10,000 **(d)** ₹5,800
6. प्रेषण पर ₹12000 के बीजक मूल्य पर माल भेजा गया जो लागत मूल्य का 20 प्रतिशत अधिक है, माल का लागत मूल्य होगा।
   (अ) ₹9,600 (ब) ₹15,000
   (स) ₹14,400 (द) ₹10,000
   Goods sent on consignment worth ₹12000, that is 20% above the cost price. The cost of such goods will be.
   (a) ₹9,600 **(b)** ₹15,000
   (c) ₹14,400 **(d)** ₹10,000
7. प्रेषक को प्रेषण के संबंध में प्रेषणी से ₹10000 का एक विनिमय विपत्र प्राप्त हुआ। वह विपत्र को ₹9600 में बैंक से भुना लेता है। बिल भुनाने पर प्रेषक की पुस्तकों में प्रविष्टि होगी –

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

B/R received from consignee ₹10000 consigner discounted it from bank for ₹9600. what entry will be passed for discounting the bill.

(**a**) Bank A/c Dr.	₹9,600		(**b**) Bank A/c Dr.	₹9,600	
Discount A/c Dr.	₹400		To Consignment A/c		₹400
To B/R A/c		₹10,000	To B/R A/c		₹10,000
(**c**)Bank A/c Dr.	₹9,600		(**d**) Bank A/c Dr.	₹9,600	
Consignment A/c Dr.	₹400		Discount A/c Dr.	₹400	
To B/R A/c		₹10,000	To Consignment A/c		₹10,000

8. रमेश ने 250 साइकिलें ₹200 प्रति साईकिल बीजक मूल्य पर नरेश को प्रेषण पर भेजी जिसमें लागत का 25 प्रतिशत लाभ शामिल हैं। प्रेषण व्यय ₹2000 हुये। प्रेषणी ने बताया कि साईकिलें बिना बिकी रह गई जिन्हें ₹190 प्रति साईकिल बेचा जा सकता हैं। प्रेषणी के पास रहतिये का मूल्य होगा –
(अ) ₹9900 (ब) ₹9500
(स) ₹8400 (द) ₹8000
Ramesh sent 250 cycles @ ₹200 per cycle at invoice price to Naresh on consignment. It includes 25% profit on cost price, consigner paid expenses ₹2000. Consignee informed that 50 cycles remain unsold, those cycles can sell at ₹190 per cycle, what will be value of unsold stock.
(a) ₹9900 **(b)** ₹9500
(c) ₹8400 **(d)** ₹8000

अति लघूत्तरात्मक प्रश्न (**Very short Answer Type Questions**) :–

1. परिशोध कमीशन व अधिभावी कमीशन में क्या अन्तर है ?
What is difference between delcredere commission and Additional Commission ?
2. विक्रय विवरण क्या है ?इसे कौन तैयार करता है ?
What is Account sale ? Who prepare it ?
3. बीजक व सूचनार्थ बीजक में दो अन्तर बताइये।
Give two differences between Invoice and Proforma Invoice ?
4. एक एजेन्ट अपने प्रेषक से परिशोध कमीशन प्राप्त करता है। वह प्रेषण पर माल की उधार बिक्री की राशि डूबने पर क्या प्रविष्टि करेगा ?
An agent is entitled to get Delcredere Commission, what entry, he will pass, if bad debts due to credit sales occurs.
5. जीतू ने ₹10000 की लागत का माल प्रेषण पर भेजा उसने भाड़ा व बीमा के ₹ 1000 चुकाये। एजेन्ट ने ₹ 2500 चुंगी व ₹ 400 विक्रय व्यय के चुकाये। एजेन्ट ने 80 प्रतिशत माल बेचा। शेष माल के स्टॉक का मूल्य ज्ञात करिये ? (उत्तर ₹ 2250)
Jitu sent goods on consignment at a cost ₹ 10,000. He paid ₹ 1000 for carriage and insurance. Agent paid ₹ 2,500 for octroi and ₹ 400 for selling expenses. Agent sold 80% goods. Calculate value of unsold stock.
6. प्रेषण पर माल लागत मूल्य में 20 प्रतिशत जोडकर भेजा जाता है। ₹ 12,000 के लागत मूल्य का बीजक मूल्य ज्ञात कीजिये।
Goods sent on consignment at cost pules 20%. Calculate the invoice value of goods costing ₹ 12,000.
7. अनिल ने सुनिल को 50 पंखे ₹ 1000 प्रति पंखे के भाव से प्रेषण पर भेजे तथा प्रेषण व्यय ₹ 5000 हुआ। रास्ते में 5 पंखे चोरी हो गये। सुनिल ने शेष पंखे प्राप्त कर ₹ 800 ठेला भाडा के चुकाये। असामान्य हानि का मूल्य बताइये।
Anil sent 50 fans box ₹ 1,000 per fan to sunil on consignment and paid ₹ 5,000 for consignment expenses. On the way 5 fans was stolen. Sunil took the delivery of remaining fans and paid freight ₹ 800. Calculate the value of abnormal fans. (उत्तर : ₹ 5500)
8. यदि प्रेषणी को परिशोध कमीशन नहीं दिया जाता है तो प्रेषण के एक देनदार के ₹ 1,500 रू. डूबत ऋण होने पर प्रेषक की पुस्तकों में क्या प्रविष्टि होगी।
If consignee is not entitled for Delcredere commission and ₹ 1,500 due to debtor become bad, what entry will be passed in the books of consigner for such bad-debts.
9. प्रेषणी के गोदाम से चोरी हुए माल का मूल्य ₹ 10000 आंका गया। बीमा कम्पनी से ₹ 9000 का दावा स्वीकार किया। अन्तर की राशि किस खाते में हस्तान्तरित करेंगे।
Goods lost from consignee godown worth ₹ 10,000. Insurance Co. accepted the claim for ₹ 9,000. In which account such difference will be transferred.
10. 2000 किलो गुड ₹ 20 प्रति किलोग्राम की दर से प्रेषण पर भेजा। 100 किलोग्राम माल की सामान्य हानि हो गयी। 1500 किलोग्राम माल प्रेषणी ने बेच दिया। शेष रहे माल का मूल्य ज्ञात करिये।
2000 kgs. Gur sent on consignment @ ₹ 20 per kg., 100 kgs. became abnormal loss. 1500 kgs. goods sold by consignee Calculate the value of unsold stock. (उत्तरः ₹ 8421)

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

लघूत्तरात्मक प्रश्न **(Short Answer Type Questions)**

1. प्रेषण तथा विक्रय में अन्तर बताइये।
   What are the difference between Consignment and Sales ?
2. सामान्य हानि व असामान्य हानि के दो–दो उदाहरण दीजिये।
   Give two examples of Normal loss and Abnormal loss ?
3. प्रेषण तथा संयुक्त साहस में क्या अन्तर है ?
   What are the difference between Consignment and Joint Venture ?
4. सूचनार्थ बीजक एवं बीजक में क्या अन्तर है ?
   What are the difference between Invoice and Proforma Invoice ?
5. एजेन्ट के पास शेष बचे माल की गणना करते समय एजेन्ट द्वारा किये गये व्ययों की कौन–कौनसी मदों को नहीं जोड़ा जाता है ?
   While calculating value of remaining goods with consoignce, which expenses paid by agent are not added.
6. चन्द्रा ने ₹5000 बीजक मूल्य का माल लागत में 25 प्रतिशत लाभ जोडकर शकुन्तला को प्रेषण पर भेजा। माल भेजने में ₹1000 खर्च हुऐ तथा माल प्राप्त होने पर प्रेषणी शकुन्तला ने ₹2000 व्यय किया। प्रेषणी ने प्राप्त माल का 4/5 भाग बेच दिया। बिना बिके माल का मूल्य ज्ञात करें।
   Chandra sent goods worth ₹5000 at invoice price to Shakuntla by adding 25% profit on cost. Expenses for sending the goods worth ₹1000 and shankuntla spent ₹2000 for receiving the goods. Consignor sold 4/5 part of goods received by him. Calculate the value of unsold stock. (उत्तरः ₹8600)
7. विवेक ने भावेश को बिक्री पर 5 प्रतिशत सामान्य कमीशन व 2.5 प्रतिशत परिशोध कमीशन देना तय किया। भावेश ने ₹60,000 का माल बेचा जिसमें से ₹40,000 का उधार माल बेचा गया। भावेश को कुल कितना कमीशन मिलेगा।
   Vivek paid to Bhavesh 5% general commission on sales and 2.5% Delcredere commission. Bhavesh sold goods worth ₹60,000 including ₹40,000 on credit sales. What amount of commission, Bhavesh will received. (उत्तर : कुल कमीशन ₹4,000)
8. 100 टन कोयला ₹1300 प्रति टन बीजक मूल्य तथा ₹800 प्रति टन लागत मूल्य पर भेजा गया। प्रेषक ने ₹ 20,000 खर्च किये। 76 टन कोयला एजेन्ट द्वारा बेचा गया जिस पर ₹8000 विक्रय खर्च के प्रेषणी ने चुकाये। 5 टन कोयला कम होने की सूचना दी। एजेन्ट के पास बिना बिके स्टॉक का मूल्य ज्ञात करिये।
   100 ton coal sent on consignment for ₹1300 per ton at invoice price and ₹800 per ton at cost price and consignor paid ₹20000. Agent sold 76 ton coal and paid ₹8000 for sales expenses. It is informed that 5 tones coal is found less. Calculate the value of remaining stock with agent. (उत्तर : ₹19200)
9. मुम्बई के हरिश ने 20 नग जयपुर के चैनसिंह को ₹1800 प्रति नग की लागत पर प्रेषित किये। प्रेषण पर गाडी भाडा के ₹2000 चुकाये। रास्ते में 4 नग क्षतिग्रस्त हो गये। बीमा कम्पनी ने हानि का 80 प्रतिशत दावा स्वीकार किया। क्षतिग्रस्त माल को प्रेषणी ने ₹1000 में बेच दिया। असामान्य हानि की गणना कीजिये।
   Mr. Harish of Mumbai consigned sent 20 items to Chainsingh of Jaipur at ₹ 1,800 per item at cost. He spent ₹ 2000 on consignment. On the way 4 items are destroyed. Insurance Co. accepted 80% claim. Consignee sold destroyed goods at ₹ 1000. Calculate the value of abnormal loss. (उत्तर : ₹520)
10. रमेश ने 400 टी.वी. ₹1500 प्रति टी.वी. के बीजक मूल्य पर नरेश को प्रेषण पर भेजा। इस मूल्य में लागत मूल्य का 25 प्रतिशत जुडा हुआ हैं। रमेश ने ₹2000 प्रेषण व्यय किये तथा नरेश ने 350 टी.वी. ₹1800 प्रति टी.वी. से बेच दिये। उस पर नरेश को विक्रय व्यय के ₹1000 तथा विज्ञापन व्यय ₹2000 चुकाये। बिना बिके स्टॉक का मूल्य ज्ञात करों।
    Ramesh sent 400 T.V. @ ₹1500 per T.V. at invoice price to Naresh on consignment. It includes 25% of cost. Ramesh paid ₹2000 for sundry expenses Naresh sold 350 TV at ₹1800 per TV. Naresh paid ₹1000 sales expenses and ₹2000 advertisement expenses. Calculate the value of unsold stock. (उत्तर : ₹60250)

निबन्धात्मक प्रश्न **(Essay Type Questions)**

1. प्रेषणी के पास बिना बिके स्टॉक का मूल्यांकन किस प्रकार किया जाता है ?
   How valuvation is done for unsold stock with consignee?
2. माल के प्रेषण से आप क्या समझते है ? प्रेषणी को मिलने वाले विभिन्न प्रकार के कमीशन को उदाहरण सहित समझाइये।
   What do your mean by consignment? Explain with example about various types of commission given to consignee.
3. प्रेषण माल का लेखा लागत मूल्य तथा बीजक मूल्य पर करने में क्या अन्तर है ?उदाहरण सहित समझाइये।
   Write the difference between accounting for goods an consignment at cost price and invoice price. Explain with examples.

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

बहुचयनात्मक प्रश्नों के उत्तर

प्रश्न संख्या	1	2	3	4	5	6	7	8
उत्तर	स	स	ब	अ	अ	द	स	स

आंकिक प्रश्न **(Numerical Questions)**

1. अलवर के भरत ने उदयपुर के कपिल को ₹1,00,000 का माल प्रेषण पर भेजा तथा ₹20000 विविध व्यय के चुकाये। कपिल ने भरत को ₹60000 अग्रिम भेजे। कपिल ने मजदूरी व ठेला भाडा के ₹4000 तथा गोदाम किराये के ₹3000 चुकाये। कपिल ने सम्पूर्ण माल ₹16000 में नकद बेच दिया। प्रेषणी को विक्रय पर 5 प्रतिशत कमीशन देय है। कपिल ने शेष राशि भरत को भेज दी। भरत व कपिल की पुस्तकों में जर्नल प्रविष्टियॉ दीजिये तथा आवश्यक खाते बनाइये।

   Mr. Bharat of Alwar sent goods to kapil of Udaipur for ₹100000 on consigment and paid sundry expenses ₹20000. Kapil sent ₹60000 to Bharat in advance. Kapil paid wages and cartage ₹4000 and godown rent ₹3000. Kapil sold all the goods for ₹1,60,000 in cash. 5% commission on sales is payable to consignee. Kapil sent remaining amount to Bharat. Prepare Journal entries is the books of consigner and consignee and also prepare necessary ledger accounts. (उत्तर : प्रेषण पर लाभ ₹25000)

2. जयपुर के राकेश ने 100 मोबाइल सेट भीलवाडा के अनिल को ₹3000 प्रति सेट लागत पर भेजे। प्रेषक ने ₹2800 व्यय किये। अनिल ने माल के निस्तारण पर ₹1200 खर्च किये। अनिल ने 70 मोबाईल सेट ₹4000 प्रति सेट पर नकद बेचे तथा 20 मोबाईल सेट ₹4200 प्रति सेट से उधार बेचे। विक्रय व्यय प्रति मोबाईल ₹ 25 हुआ। अनिल ने 6 प्रतिशत सामान्य कमीशन तथा 3 प्रतिशत परिशोध कमीशन (उधार विक्रय पर) का अधिकारी है। उधार विक्रय में से एक सेट की राशि डूब गई। प्रेषक व प्रेषणी की पुस्तकों में आवश्यक खाते बनाइये।

   Mr. Rakesh of Jaipur appoints Mr. Anil of Bhilwara as his selling agent. Rakesh consigned 100 mobile set @ ₹3000 each set sent to Anil. Rakesh paid expenses ₹2800 and Anil paid clearing charges ₹1200. Anil sold 70 mobile @ ₹4000 each set in cash and 20 mobile set ₹ 4200 each sold on credit. Selling expenses per mobile set ₹25 paid. Anil received 6% General commission and 3% Delcredere commission on credit sales. Prepare necessary accounts in the books of consigner & consignee. Value of one set is being bad out of credit sales. (उत्तर : प्रेषण पर लाभ ₹63790, बिना बिके माल का मूल्य ₹30400)

3. भारत साईकिल लि. अजमेर ने चित्तौड़गढ़ के चन्द्रा साईकिल स्टोर को निम्न शर्तो पर अपना प्रतिनिधि नियुक्त किया–

   1. माल बीजक मूल्य या उससे अधिक पर बेचा जा सकता है।
   2. प्रेषणी को बीजक मूल्य पर 5 प्रतिशत तथा उससे अधिक पर 20 प्रतिशत कमीशन देय होगा।
   3. प्रेषणी पर दो माह बाद एक देय विपत्र लिखा जायेगा जो बीजक मूल्य का 60 प्रतिशत होगा।

   चन्द्रा साईकिल स्टोर ने 600 साईकिलें ₹200 प्रति साईकिल की लागत तथा ₹250 प्रति साईकिल के बीजक मूल्य पर भेजी। एजेन्ट ने अपनी स्वीकृति का भुगतान यथासमय कर दिया। चन्द्रा साईकिल स्टोर ने 540 साईकिलें ₹280 प्रति साईकिल के हिसाब से बेच दी। उसके विक्रय व्यय ₹1250 हुए तथा वह शेष राशि का बैंक ड्राफ्ट भेज देता है। बचे हुऐ स्टॉक का वर्षा से हुई क्षति के कारण 80 प्रतिशत पर मूल्यांकन किया गया। प्रेषक की पुस्तकों में आवश्यक खाते बनाइये।

   Bharat Cycle Ltd. of Ajmer appointed to Chandra Cycle Store Chitorgarh as his selling agent on the following terms.

   (i) Goods to be sold at invoice price or over.

   (ii) Chandra cycle store will be entitled to get commission of 5% on invoice price and 20% for commission on the value above invoice price.

   (iii) The principal to draw a bill on the agent for 2 months of 60% of invoice price.

   600 cycles were consigned to Chandra cycles store chittor for ₹200 per cycle which was at invoice price ₹250 per cycle. Chandra cycle store met his acceptance on due date. Chandra cycle store sold 540 cycles @ ₹280 per cycle. His selling expenses ₹1250 and he remitted the amount due by a Bank Draft. The Balance stock was valued at 80% due to damaged caused by rains. Prepare the necessary ledger Accounts in the books of the both parties. (उत्तरः प्रेषण पर लाभ ₹29560)

4. एम. कोल कम्पनी ने राकेश सेल्स लिमिटेड को 1000 क्विन्टल कोयला ₹40 प्रति क्विन्टल के हिसाब से चालानी पर भेजा। कम्पनी ने कोयले की लदाई ₹0.50 प्रति क्विन्टल तथा रेलभाडा ₹3.50 प्रति क्विन्टल चुकाये। राकेश सेल्स लिमिटेड से विवरण खाता प्राप्त हुआ जिसमें 800 क्विन्टल कोयला ₹60 प्रति क्विन्टल के हिसाब से बेचने का विवरण, ₹1600 विक्रय खर्च, ₹200 बीमा, 2 प्रतिशत दलाली और 5 प्रतिशत कमीशन दिखाया गया। एजेन्ट ने देय राशि बैंक ड्राफ्ट द्वारा भेज दी तथा प्रेषण पर कुल 20 क्विन्टल कोयला कम होने की सूचना दी। एम. कोल कम्पनी की पुस्तकों में आवश्यक खाते बनाइये।

   The M. coal co. consigned to Mr. Rakesh sales Ltd. 1000 quintals of coal at invoice price of ₹40 per

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

quintal. The company paid ₹0.50 per quintal for loading and ₹3.50 per quintal for Railway freight, an account sales was received from Mr. Rakesh sales Ltd. showing 800 quintals coal sold at ₹60 per quintal, Sales expenses ₹1600, insurance ₹200, brokrage @ 2% and commission @ 5%. The agent remitted the amount payable by a bank draft and reported a shortage of 20 quintals of coal on the whole consignment. Prepare the necessary accounts in the books of M.coal company. (उत्तर : प्रेषण पर लाभ ₹6921.63 बिना बिका स्टॉक ₹8081.63)

5. कृष्णा ग्लास वर्क्स मुम्बई ने जयपुर के अपने एजेन्ट चन्दन को 100 पेटी सामान की ₹20000 के मूल्य पर भेजी। इस मूल्य में लागत मूल्य का 25 प्रतिशत जुडा हुआ हैं। उन्होंने ₹500 रेलभाडा ₹1000 बीमा व्यय के चुकाये। रास्ते में 20 पेटी खो गई। दावा करने पर बीमा कम्पनी से ₹3200 दावे के मिले। चन्दन ने शेष पेटियॉ प्राप्त की और ₹800 कस्टम ड्यूटी ₹80 चुंगी और ₹40 गाडी भाड़ा चुकाया। चन्दन ने विक्रय किरण अपने प्रधान को भेजा जिसमें 60 पेटियॉ ₹14000 में बेची गई बताई जिस पर 1.5 प्रतिशत दलाली चुकाई गई। एजेन्ट सकल बिक्री पर 5 प्रतिशत कमीशन एवं अपने व्यय काटकर शेष राशि बैंक द्वारा ड्राफ्ट भेज देता है। उपर्युक्त लेनदेनों के लिये दोनो पक्षकारों की बहियों में आवश्यक खाते बनाइये।

Krishna Glass Works of Mumbai consigned 100 cases of goods to his agent Chandan at ₹20000. It includes 25% on cost price. They also paid freight ₹500 and insurance ₹1000. In course of transit 20 cases were lost and a claim being made, A sum of ₹3200 was received from insurance co.. The agent took delivery of remaining case and Chandan paid ₹800 custom duty, ₹80 octroi and ₹40 cartage.

Chandan rendered to their principal an account sale showing that 60 cases were sold for ₹14000 and paid brokerage at 1.5% The agent after deducting the expenses incurred by him and his commission at 5% on gross sales proceeds, remitted the balance due by bank draft. Record the above transactions in the ledger of both parties. (उत्तर : प्रेषण पर लाभ ₹1900, असामान्य हानि ₹300, बिना बिका स्टॉक ₹3730)

6. कमल टेड्रर्स ने वनस्पति घी के 2000 पीपे ₹1400 प्रति पीपा लागत पर मेसर्स हिमांशी एण्ड संस को चालानी पर भेजे तथा ₹20000 रेलभाडा चुकाया। मार्ग में 100 पीपे चोरी हो गये जिसके लिये बीमा कम्पनी से ₹100000 दावे के प्राप्त हुए। एजेन्ट ने शेष माल की सुपुर्दगी ली तथा ₹19000 चुंगी तथा ₹3000 बिक्री व्यय के चुकाये। उसने 1700 पीपे ₹1500 प्रति पीपा की दर से बेच दिये तथा बिक्री पर ₹20 प्रति पीपा कमीशन वसूल किया। प्रेषक की पुस्तकों में प्रेषण खाता एवं असामान्य हानि खाता बनाइये।

Kamal Traders consigned 2000 vegetables oil tin @ ₹1400 per tin at cost to Himanshi traders and paid railway freight ₹20,000. In course of transit 100 tin was theft. A sum of ₹10,000 is received from insurance company as a claim. Agent took delivery of remaining goods and paid to ₹19000 for octroi and ₹3000 as selling expenses. He sold 1700 tins @ ₹1500 per tins and charged ₹20 per tin sold as commission. Prepare Consignment account and Abnormal Loss account in the books of consigner. (उत्तर : प्रेषण पर लाभ ₹99,000, असामान्य हानि ₹41,000, बिना बिका रहतिया ₹2,84,000)

7. मुम्बई के राम एण्ड कम्पनी ने 1000 रेडियों ₹500 प्रति रेडियों की लागत एवं ₹600 प्रति रेडियों बीजक मूल्य पर विक्रय हेतु अपने एजेन्ट मयंक रेडियों कम्पनी अजमेर को भेजे। एजेंन्ट ने 700 रेडियों ₹750 प्रति रेडियों की दर से बेच दिये। 50 रेडियों क्षतिग्रस्त एवं नष्ट हो गये और एजेन्ट ने बीमा कम्पनी पर एक दावा प्रस्तुत किया। एजेन्ट को विक्रय मूल्य पर 10 प्रतिशत एवं बीजक मूल्य से अधिक मूल्य पर 25 प्रतिशत कमीशन दिया जाता हैं। माल का लेखा बीजक मूल्य पर किया जाता हैं। प्रेषक की पुस्तकों में प्रेषण खाता बनाइये।

Mr. Ram and Co. of Bombay consigned 1000 radio @ ₹500 per Radio on cost and ₹600 per radio at invoice price to Mayank Radio co. Ajmer. Mayank Radio co. sold 700 Radio @ ₹750 per radio. In course of transit 50 Radio damaged and agent claim to insurance co.. Agent recevied commission on invoice price at 10% and above invoice price 25%. Accounting is made at invoice price. Prepare Consignment account in the books consignment. (उत्तर : प्रेषण पर लाभ ₹96250 असामान्य हानि ₹25000 स्टॉक संचय ₹25000)

8. विजय सेल्स कोरपोरेशन के लिये महेश को प्रेषण पर माल भेजता है। 1 जनवरी 2015 को उसके पास प्रेषण का ₹20000 का स्टॉक था। महेश को ऐसे निर्देश थे कि वह लागत में 25 प्रतिशत जोडकर माल बेचेगा तथा वह कुल बिक्री पर 4 प्रतिशत कमीशन, बिक्री की राशि की वसूली की गारंटी के लिये कुल बिक्री पर 1 प्रतिशत अतिरिक्त परिशोध कमीशन का अधिकारी है। 31 दिसम्बर 2015 को समाप्त वर्ष तक नकद बिक्री ₹120000 तथा उधार बिक्री ₹105000 की थी। प्रेषण के संबंध में महेश के कुल व्यय ₹3000 थे। डूबत ऋण ₹3000 तथा प्रेषण पर ₹200000 माल भेजा गया। प्रेषक की पुस्तकों में प्रेषण खाता बनाइये।

Mahesh sells goods on behalf of Vijai Sales Corporation on consignment basis. On 1 January, 2015 he had with him a stock of ₹20000 on consignment. Mahesh had instructions to sell the goods at cost plus 25% and was entitled to get a commission of 4% on sales in addition to 1% Delcredare commission on total sales for guaranteed collection of all sale proceeds. During the year ended 31 December, 2015 cash sales

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

were ₹120000 and credit sales ₹105000. Expenses paid by Mahesh related to the consignment ₹3000. Bad debts were ₹3000 and goods sent on consignment ₹200000.

From the above particulars prepare Consignment Account in the books of Vijay Sales Corprorations. उत्तरः संकेत – कुल बिक्री 120000 + 105000 = (225000 x 100)/ 125= ₹180000, प्रेषण पर लाभ ₹30750, स्टॉक ₹40000

9. दिल्ली का दीपक जयपुर के विवेक को प्रेषण पर माल भेजता हैं। प्रेषित माल पर लागत मूल्य का 25 प्रतिशत लाभ लेता है। एजेन्ट को कुल बिक्री पर 7 प्रतिशत सामान्य कमीशन व कुल बिक्री पर 3 प्रतिशत परिशोध कमीशन दिया जाता है। वर्ष के प्रारम्भ में एजेन्ट के पास ₹5000 के बीजक मूल्य की 20 गांठों का स्टॉक था।

31 दिसम्बर 2015 को समाप्त वर्ष के निम्न व्यवहार हुऐ –

1. गांठें ₹25000 के बीजक मूल्य पर भेजी गई।
2. दीपक द्वारा गाडी भाडा व बीमा चुकाया गया ₹1000।
3. विवेक से अग्रिम प्राप्त हुए ₹10000।
4. विवेक द्वारा की गई बिक्री (अ) 50 गांठे नकद बेची ₹12500। (ब) 40 गांठें उधार बेची ₹10800।
5. विवेक द्वारा चुकाये गये विज्ञापन व्यय ₹1200, दलाली ₹500।
6. रास्ते में 15 गांठें क्षतिग्रस्त हो गई। रेलवे से ₹1400 क्षतिपूर्ति प्राप्त किये। इन गांठों को ₹1100 में बेचा गया।
7. उधार बिक्री से ₹1500वसूल नहीं हो सके।
8. एजेन्ट ने बकाया राशि प्रेषक को भेज दी। दीपक की पुस्तकों में आवश्यक खाते बनाइये।

Deepak of Delhi sent goods on consignment to Vivek of Ranchi and charge profit on proforma invoice price at 25% on cost. The agent received commission @7% plus 3% delcredare commission on all sales made by him.

Stock with agent at the beginning of the year, 20 bales at proforma price of ₹5000, the following transacation took place during the year ended 31st December, 2015

(i) 100 bales consigned at proforma invoice price ₹25000

(ii) Freight and insurance paid by Deepak ₹1000

(iii) Advance received from Vivek ₹10000

(iv) Sales made by Vivek.

(a) 50 bales for cash ₹12500

(b) 40 bales for credit ₹10800

(v) Advertising expenses paid by agent ₹1200 and brokerage allowed by him ₹500

(vi) 15 bales were damaged in transit and ₹1400 received as compensation.. The damaged case were sold for ₹1100

(vii) ₹1500 could not be realized from credit sales.

(viii) The agent remitted the balance amount. Prepare necessary accounts in the books of Deepak.

(उत्तर : असामान्य हानि ₹650, कमीशन ₹2440, बिना बिका माल ₹3150)

10. भारत स्टोर्स ने ₹80000 के सूचनार्थ बीजक मूल्य (लागत मूल्य ₹60000) का माल राजस्थान स्टोर को विक्रय हेतु प्रेषित किया। प्रेषक ने गाडी भाडा व मजदूरी के ₹500, किराया भाडा ₹800 तथा बीमा के ₹600चुकाये। प्रेषणी ने चुंगी व भाडे के ₹200, गोदाम किराया ₹500 एवं अग्नि बीमा शुल्क ₹500 चुकाये। राजस्थान स्टोर ने ₹40000 उधार व ₹24000 का नकद माल बेचा। ₹16000 के बीजक मूल्य का माल बिना बिका रहा। प्रेषणी को कुल बिक्री पर 5 प्रतिशत एवं उधार बिक्री पर 3 प्रतिशत परिशोध कमीशन देय है। भारत स्टोर्स की पुस्तकों में प्रेषण खाता बनाइये।

Bharat store consigned goods worth ₹80000 at invoice price (cost price ₹60000) to Rajasthan Store. He paid carriage and wages ₹ 500, freight ₹800 and insurance ₹ 600. The agent paid octroi and freight ₹200, Godown rent ₹ 500 and fire insurance ₹ 500. Rajasthan store sold goods ₹ 40000 on credit and ₹ 24000 for cash. Stock of invoice price ₹ 16000 remains unsold. 5% commission on total sales and 3% delcredare commission on credit sales is payable to consignee. Prepare Consignment Account in the books of Bharat Stores. (उत्तर : प्रेषण पर लाभ ₹8920, रहतिया ₹12420)

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

9

गैर–व्यापारिक संस्थाओं तथा पेशेवर व्यक्तियों के लेखे
Accounting for Non-Trading Organisations and Professional Persons

अध्ययन उद्देश्य

इस अध्याय के अध्यापन के बाद आप यह समझने योग्य हो जाते हैं।

- गैर– व्यापारिक संस्थाओं का अर्थ एवं उनके द्वारा प्रयुक्त लेखा पुस्तकों के बारे में जान पाएँगे।
- गैर– व्यापारिक संस्थाओं के लेखांकन में प्रयुक्त विशिष्ट मदों की जानकारी एवं उनका लेखांकन व्यवहार समझ सकेंगे।
- प्राप्ति व भुगतान खाता तैयार करने की विधि समझ सकेंगे।
- आय–व्यय खाता तैयार करने की विधि समझ सकेंगे।
- गैर– व्यापारिक संस्थाओं का चिठ्ठा तैयार करना, समझ जाएंगे।
- आय–व्यय खाते से प्राप्ति व भुगतान खाता बनाना सीख जाएंगे।
- प्राप्ति व भुगतान खाते व आय–व्यय खाते से प्रारंभिक व अंतिम चिठ्ठा बनाना जान पाएंगे।
- प्राप्ति व भुगतान खाता एवं आय–व्यय खाते में अन्तर समझ सकेंगे।

व्यावसायिक संस्थाएं लाभ कमाने के उद्देश्य से स्थापित की जाती हैं। इनमें उत्पादन संस्थाएँ, निर्मित माल के क्रय विक्रय करने वाली थोक व फुटकर संस्थाएं व सेवा प्रदाता शामिल हैं। परन्तु दूसरी ओर कई संस्थान ऐसे होते हैं जो लाभ कमाने के उद्देश्य से नहीं बल्कि समाज सेवा व जन सेवा कार्य के उद्देश्य के लिए स्थापित की जाती हैं। जिसमें साहित्यिक संस्थाएं, खेलकूद क्लब, अस्पताल, शिक्षण संस्थाएं, कला व सांस्कृतिक के उत्थान के लिए बनाई गई संस्थाएं, कामगार यूनियन, सामाजिक कल्याणकारी कार्य करने वाली संस्थाएं शामिल होती हैं। इन्हें अपने सेवा कार्यों से लाभ /हानि उत्पन्न होती हैं। इन संस्थाओं की कार्य प्रकृति भिन्न होने के कारण इनके हिसाब किताब रखने की पृथक विधि है, इसे ही गैर व्यावसायिक संस्थाओं के लेखे कहा जाता हैं।

इनके अतिरिक्त वर्तमान में पेशेवर व्यक्ति भी समाज का महत्वपूर्ण अंग होते हैं। जिनमें चिकित्सक, अभिभाषक, सनद्–, लेखापाल, आर्किटेक्ट, आते हैं। ये वस्तुओं का क्रय विक्रय का कार्य न कर अपनी बौद्धिक व पेशेवर योग्यताओं के कारण धनोपार्जन करते हैं। इन व्यक्तियों द्वारा किये गये व्यवहारों की भी पृथक प्रवृति होती हैं अतः इन व्यक्तियों द्वारा रखे गये हिसाब किताब को पेशेवर व्यक्तियों के लेखे कहा गया हैं।

1. गैर व्यापारिक संस्थाओं की विशेषताएं: (Characteristics of Non-Trading Organisations)

1. पृथक कानूनी अभिव्यक्ति **2.** सेवा भावना **3.** कल्याण कारी कार्यों से कुशलता जांच 4. कोष स्त्रोत–सामान्यतया सदस्यों, सरकार व अन्य स्त्रोतों से प्राप्त धन से कोष उत्पन्न होते हैं। **5.** कोषों का पुनर्निवेश– ये संस्थाएं अपनी आय को पुनः कल्याणकारी कार्यों के लिए ही उपयोग करते हैं। सदस्यों में वितरित नहीं करते हैं। **6.** चुने हुए व्यक्तियों द्वारा प्रबंध

आवश्यकता (Need)

इन संस्थाओं के लेखे रखने की आवश्यकता निम्नांकित कारणों से अनुभव होती है।

(1) सामान्यतया ये संस्थाएं लाभ कमाने के उद्देश्य से स्थापित नहीं होती हैं फिर भी इनके द्वारा प्राप्त कोषों व व्ययों में अन्तर के कारण बचत (Surplus) न्यूनता (Deficiency) उत्पन्न होती हैं इसकी जानकारी संस्था के सदस्यों के लिए आवश्यक हैं।

(2) प्रतिदिन के संस्था के लेनदेनों को पुस्तकों में लिखने से उसकी तरल स्थिति ज्ञात होती है तथा उद्देश्यों की पूर्ति के लिए धन की आवश्यकता हेतु समय पर व्यवस्था की जा सकती हैं।

(3) इन संस्थाओ के लेखों रखने में इन्हें अपनी सम्पत्तियों व दायित्वों का बोध होता हैं जिससे वे इन्हें पूँजी कोष की जानकारी मिलती रहती है एवं कोष में कमी होने पर सुधारात्मक उपाय कर सकते हैं।

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

व्यापारिक संस्थाओं व गैर– व्यापारिक संस्थाओं में अन्तर
Difference Between Commercial organizations & Non-Commercial Organizations

अन्तर का कारण	व्यापारिक संस्थाएँ	गैर व्यापारिक संस्थाएँ
1. मूल उद्देश्य	लाभ कमाना होता है।	सेवा व कल्याणकारी कार्य होता है।
2. स्वामित्व	पूँजी लगाने वाले व्यक्तियों का होता है।	पूंजी कोष में धन लगाने वाले व्यक्ति जो सामान्यतया Subscriber कहलाते है।
3. आर्थिक स्थिति चित्रण	इन संस्थाओं के लिए व्यापार खाता, लाभ–हानि खाता व चिट्ठा बनाया जाता है।	इन संस्थाओं के प्राप्ति भुगतान खाता आय–व्यय खाता व चिट्ठा बनाया जाता है।
4. प्रतिफल हानि	क्रियाकलापों का प्रतिफल लाभ/हानि के रूप में होता है।	इनका प्रतिफल बचत/न्यूनता कहलाता है।
5. आधिक्य कोष	आय का व्यय पर आधिक्य सदस्यों में वितरित होता है।	यह राशि संस्था की कल्याणकारी योजनाओं में पुनर्निवेश होती हैं।
6. कोष प्राप्ति	स्वामियों द्वारा लगायी गई पूँजी से होता है।	सदस्यों द्वारा व बाहरी व्यक्यिों द्वारा दिये गए चन्दे, फीस, शुल्क, दान आदि से होती है।

गैर–व्यापारिक संस्थाओं द्वारा प्रयुक्त पुस्तकें
Books kept by Non-Trading Organisations

इन संस्थाओं द्वारा मूलभूत सूचनाओं की जानकारी हेतु निम्नांकित पुस्तकें रखी जाती है:

1. रोकड बही (Cash Book) इन संस्थाओं द्वारा अपने हिसाब किताब रखने की मूल व महत्त्वपूर्ण पुस्तक हैं जिससे ये संस्थाएं अपने प्रतिदिन के रोकड़ व्यवहारों का लेखा करती है तथा अपनी तरल स्थिति का निरूपण करती हैं इन संस्थाओं की रोकड बही का प्रारूप व्यापारिक संस्थाओं से भिन्न होता है क्योंकि इनके द्वारा राशि का कॉलम एक न रखकर आय/व्यय की विभिन्न मदों के अनुसार पृथक–पृथक रखा जाता है। इस प्रकार प्रत्येक मद का पृथक पृथक विश्लेषण सुगम हो जाता है इस प्रारुप को आगे प्राप्ति व भुगतान खाता बनाते समय दिखाया गया है।

2. स्टॉक रजिस्टर (Stock Register): गैर–व्यापारिक संस्थाओं द्वारा अपनी भौतिक सम्पतियों व दीर्घकालिक उपयोगी सामग्री को एक रजिस्टर में दिखाया जाता है जिसमें इन वस्तुओं की क्रय तिथि, मात्रा, विशिष्ठ सूचना, मूल्य व दर लिखी होती है। यदि ऐसी वस्तुएं कम है तो एक ही रजिस्टर रखा जाता है तथा यदि बहुत अधिक वस्तुएँ हो तो प्रत्येक प्रकार की सामग्री का पृथक–2 रजिस्टर रखा जाता है जैसे खेलकूद सामग्री, फर्नीचर, पुस्तकें, यंत्र व औजार आदि के लिए पृथक–2 रजिस्टर रखने से सुगमता एवं सत्यापन में सुलभता रहती हैं।

3. सदस्यता रजिस्टर (Membership Register): इन संस्थाओं के नियमित सदस्य होते हैं, इन सदस्यों का लेखा एक पृथक रजिस्टर में रखा जाता है जिससें सदस्यों के सम्बन्ध में पूर्ण जानकारी यथा नाम, पता, टेलीफोन नम्बर, मेल आई डी, सदस्यता शुल्क आदि की विगत लिखी जाती है। इसी में सदस्यों के पृथक होने की सूचना आदि का उल्लेख भी रहता है। वार्षिक सदस्यता/चन्दे की सूचना भी अंकित रहती है।

गैर–व्यापारिक संस्थाओं के वित्तीय विवरण
(Financial Statements Of Non-Trading Organisations)

वैसे तो इन संस्थाओं के लिए लाभ कमाने के उद्देश्य की पूर्ति हेतु की जाने वाली आर्थिक व अन्य क्रियाओं का लेखा–जोखा रखना जरूरी होता है। ये संस्थाएं अपने आकार के आधार पर इकहरी या दोहरी प्रविष्टी प्रणाली अपना सकती है। इन दशाओं में इनके द्वारा निम्नांकित तीन तरह के विवरण पत्र बनाये जाते हैं :–

1. प्राप्ति व भुगतान खाता 2. आय–व्यय खाता 3. चिट्ठा

उपरोक्त सभी विवरण पत्रों के अध्ययन से पूर्व इन संस्थाओं में लेखांकन की विशिष्ट मदों का अध्ययन आवश्यक है।

विशिष्ट मदें (Special Items)

अध्ययन की सुविधा की दृष्टि से इन्हें चार भागों में बाँटा गया है:–

(अ) पूर्णतया आयगत प्रकृति की मदें (ब) पूर्णतया पूँजीगत प्रकृति की मदें (स) परिस्थितियों के अनुसार निर्धारित पूँजीगत/ आयगत मदें मानी जा सकती है। (द) प्रारम्भिक पूँजी कोष ज्ञात करना

(अ) पूर्णतया आयगत प्रकृति की मदें: ऐसे व्यवहार जिसका लाभ एक वित्तीय वर्ष से ही सम्बन्धित होता है इन्हें आवर्तक प्रकृति की मदें भी कहते हैं :–

(1) चन्दा (Subscription) : इन संस्थाओं का यह प्रमुख आय का साधन है। लेखांकन अवधारणा के अनुसार चालू वर्ष में उसी वर्ष की आय का लेखा किया जाना चाहिये अतः निम्नाकित प्रारूप के सहारे इसकी गणना कर सकते है:–

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Calculation of Current Year Subscription

Particulars	Amount ₹
वर्ष के दौरान प्राप्त चन्दा (जैसा कि प्राप्ति व भुगतान खाते में दिखाया गया)	-------
जोडियेः चालू वर्ष का बकाया चन्दा पिछले वर्ष के अन्त में प्राप्त अग्रिम चन्दा (जो चालू वर्ष से सम्बन्धित है)	-------
घटाइयें: पिछले वर्ष का बकाया चन्दा जो इस वर्ष प्राप्त हुआ आगामी वर्ष का चन्दा जो अग्रिम प्राप्त हुआ	-------
आय–व्यय खाते के जमा पक्ष में दिखाई जाने वाली राशि	-------

उपरोक्त व्यवहारों को चालू वर्ष के चिठ्ठे में निम्नानुसार दिखाया जायेगा।

Balance Sheet (Current Year)			
Liabilities	**Amount ₹**	**Assets**	**Amount ₹**
Advance subscription (Received during current Year)	-------	Out Standing Subscription Current Year - ------ Previous Year - ------	-------

उपरोक्त गणनाओं के निम्नांकित उदाहरण से समझेंगेः

उदाहरण 1: 31 मार्च 2017 को समाप्त होने वाले वर्ष के आय–व्यय खाते व चिठ्ठे में निम्नांकित चन्दे को मद को किस प्रकार दिखाया जायेगा।

	31-03-16	31-03-17
सम्बन्धित वर्ष का बकाया चन्दा	₹ 12,000	₹ 10,000
सम्बन्धित वर्ष का अग्रिम चन्दा	₹ 1,100	₹ 2,500

वर्ष के दौरान ₹ 162500 चन्दे के प्राप्त हुए हैं जिससे पिछले वर्ष के बकाया चन्दे के प्राप्त ₹ 5,000 शामिल हैं।

हलः

Income of Expenditure Account
For the year Ending 31-03-17 (an Extract)

Expenditure	Amount ₹	Income	Amount ₹
		By Subscription (as per writing note)	1,66,100

Balance Sheet
As On 31st March, 2017 (An Extract)

Expenditure	Amount ₹	Income	Amount ₹
Advance Subscription	2,500	Outstanding Subscription Current year 10,000 Previous Year 7,000	17,000

कार्यशील टिप्पणीः चन्दे की चालू वर्ष से सम्बन्धित प्राप्त राशि की गणना

	₹
चालू वर्ष से प्राप्त चन्दा	1,62,500
जोडियेः चालू वर्ष का बकाया चन्दा	10,000
	1,72,500
घटाइये पिछले वर्ष का प्राप्त बकाया गया चन्दा	5,000
	1,67,500
जोडियेः पिछले वर्ष प्राप्त अग्रिम चन्दा	1,100
	1,68,600
घटाइयेंः चालू वर्ष में प्राप्त अग्रिम चन्दा	25,000
	1,66,100

उदाहरण 2: निम्नांकित सूचनाओं से चन्दे की राशि 31-3-17 को बनाये जाने वाले आय–व्यय खाता व चिठ्ठे में किस प्रकार दिखायेंगेः–

Expenditure	Amount ₹	Income	Amount ₹
Advance Subscription			
2015-16 15,000			
2016-17 2,00,000			
2017-18 10,000	2,25,000		

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

संस्था में 1800 सदस्य है जिससे ₹ 150 वार्षिक चन्दा लिया जाता है। 31 मार्च 2016 को समाप्त वर्ष का बकाया चन्दा ₹ 2000 था।

हल:

Income & Expenditure Account
For the Year ending 31-03-17

Expenditure	Amount ₹	Income ₹	Amount ₹
		By Subscription 2,00,000 + Out Standing C.Y. 70,000	2,70,000

Balance Sheet As on 31st March, 2017

Liabilities	Amount ₹	Assets ₹	Amount ₹
Advance Subscription	10,000	Outstanding Subscription 2015-16 6,000 2016-17 70,000	76,000

नोट: 1. चालू वर्ष का बकाया चन्दा इस प्रकार ज्ञात किया:

	₹
चालू वर्ष का प्राप्त होने योग्य चन्दा (1800x150)	2,70,000
घटाइये–चन्दे की चालू वर्ष की प्राप्त राशि	2,00,000
	70,000

2. वर्ष 2015–16 का बकाया चन्दा जो इस वर्ष प्राप्त नहीं हुआ

बकाया चन्दा 2015–16	21,000
घटाइये–चालू वर्ष में 2015–16 का प्राप्त चन्दा	15,000
	6,000

2 उपभोग योग्य वस्तुएँ(Consumable Stores):सामान्यतया संस्थाओं द्वारा बहुत सी उपभोग योग्य वस्तुएँ क्रय की जाती हैं जिनका स्टॉक भी शेष रहता है तथा इनके क्रय भुगतान की राशियां भी वर्ष से अन्त में बकाया रहती हैं। कई बार इन्हें क्रय से अग्रिम भुगतान भी किया जाता है। अतः आय व्यय खातें को इस व्यय को वर्ष के दौरान वास्तविक उपभोग सामग्री मूल्य पर दिखाया जाता है इसकी गणना निम्नानुसार की जा सकती हैं :–

वर्ष के दौरान उपभोग योग्य सामग्री के मूल्य की गणना

Particulars	Amount ₹
वर्ष के दौरान किये गये भुगतान (प्राप्ति व भुगतान खाते में दिखाए अनुसार)	————
जोड़िए: उक्त सामग्री का प्रारम्भ स्टॉक यह मानते हुए कि पहले इसका उपभोग किया	————
घटाइए: उक्त सामग्री का अन्तिम स्टॉक	————
जोड़िए: चालू वर्ष के अन्त में क्रय का बकाया भुगतान	————
घटाइएं: चालू वर्ष के प्रारम्भ में क्रय के लिये बकाया भुगतान राशि	————
जोड़िए: पिछले वर्ष में उक्त सामग्री क्रय के लिए अग्रिम भुगतान (यह मानते हुए कि उक्त सामग्री इस वर्ष उपभोग की गई)	————
घटाइए: चालू वर्ष में आगामी वर्ष क्रय है अग्रिम भुगतान	————
आय व्यय खाते के नामें में दिखाई जाने वाली राशि	————

Balance Sheet (Current Year)

Liabilities	Amount ₹	Assets	Amount ₹
Creditors at the end of current year	––	Closing Stock Advance payment during the year	–– ––

उदाहरण: 3 निम्नांकित सूचनाओं से 31 मार्च 2017 को समाप्त होने वाले वर्ष के आय व्यय खाते व चिठ्ठे में स्टेशनरी व्यय की राशि किस प्रकार दिखाई जायेगी: From the following informations, how expenses on stationary will be shown in Income & Expenditure Account for the year ending 31 March, 2017, & Balance Sheet on that date.

	₹
स्टेशनरी का 1-4-2016 को प्रारम्भिक स्टॉक Stock of stationary on 1-4-2016	5,000
स्टेशनरी के लेनदार 1-4-16 को Creditors for stationary on 1-4-16	2,000
स्टेशनरी के लिए अग्रिम 31-03-16 को Advance paid for stationary on 31-03-16	1,000
वर्ष 2016-17 के दौरान स्टेशनरी के लिए भुगतान Amount Paid for stationary during the year 2016-17	25,000
31-03-17 को स्टेशनरी का स्टॉक Stock of stationary on 31-03-17	3,000

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

31-03-17 को स्टेशनरी के लेनदार Creditors for stationary on 31-03-17 1,200
31-03-17 को स्टेशनरी के लिए अग्रिम Advance paid for stationary on 31-03-17 13,000

हल: वर्ष के दौरान उपभोग की गई स्टेशनरी की राशि की गणना

Particulars	Amount ₹
चालू वर्ष में भुगतान की गई राशि	25,000
जोडिए: प्रारम्भिक स्टॉक	5,000
प्रारम्भिक अग्रिम भुगतान	1,000
चालू वर्ष के अन्त में बकाया भुगतान	1,200
	32,200
घटाइए: चालू वर्ष के प्रारम्भ में बकाया भुगतान	2,000
चालू वर्ष के अन्त में अग्रिम भुगतान	1,300
अन्तिम स्टॉक	3,000
आय व्यय खाते के नामे पक्ष में स्टेशनरी की दिखाई जाने वाली राशि	25,900

Balance Sheet (An Extract)
As on 31-03-17

Liabilities	**Amount ₹**	**Assets**	**Amount ₹**
Creditors at the end	1,200	Closing Stock	3,000
		Advance paid during the current year	1,300

3. उपभोग योग्य सामग्री से प्राप्ति: कई बार इन संस्थाओं को उपभोग योग्य सामग्री के विक्रय से कुछ राशि प्राप्त होती हैं तो इन राशियों को आयगत प्राप्ति मानकर आय–व्यय खाते के जमा पक्ष में दिखाया जाता हैं।

4. अवशेष सामग्री की बिक्री से प्राप्त राशि: इन संस्थाओं के पास उपभोग के बाद बची अवशेष सामग्री के विक्रय से प्राप्त राशि आयगत मानते हुए आय–व्यय खाते के जमा पक्ष में दिखायेंगे। जैसे पुराने पेकिंग सामग्री, बोतल, घास आदि का विक्रय।

5.समाचार पत्र–पत्रिकाओं का क्रय–विक्रय: इनके क्रय की राशि आयगत व्यय मानते हुए आय–व्यय खाते के नामे पक्ष में दिखाते हैं तथा पुराने अखबार व पत्रिकाओं की बिक्री से प्राप्त राशि आयगत आय मानते हुए आय–व्यय खाते के जमा पक्ष में दिखाते हैं।

6. पुरानी खेल सामग्री का विक्रय: मनोरंजन क्लब व खेलकूद क्लब द्वारा पुरानी खेल सामग्री विक्रय से प्राप्त राशि को आयगत आय मानते हुए आय व्यय खाते के जमा पक्ष में दिखाया जाता है।

7. मानदेय (Honorarium) : संस्था में नियमित कार्यों के अतिरिक्त विशिष्ट कार्य कराने हेतु विभिन्न बाहरी व्यक्तियों को किये गये अतिरिक्त भुगतान को आयगत क्रय मानते हुए आय व्यय खाते के नामे पक्ष में दिखाया जाता है।

8. स्थायी सम्पतियों के क्रय–विक्रय से लाभ/हानि: इन संस्थाओं के पास उपलब्ध स्थायी सम्पतियों के विक्रय से प्राप्त राशि जो पुस्तक मूल्य से अधिक हैं तो अधिक राशि आयगत आय मानी जाती है यदि विक्रय पुस्तक मूल्य से कम है तो अन्तर की राशि आयगत व्यय मानी जाती है तथा उक्त राशियाँ आय व्यय खाते में दिखाते हैं। विक्रय से प्राप्त राशि पूँजीगत प्राप्ति है इसे आय व्यय खाते में नहीं दिखाया जाता है किन्तु इसका पुस्तक का मूल्य सम्पति के मूल्य में से चिठ्ठे में घटा कर दिखाते है। विक्रय से प्राप्त सम्पूर्ण राशि प्राप्ति व भुगतान खाते में प्राप्ति पक्ष में दिखाते हैं।

Income & Expenditure Account

Expenditure	Amount ₹	Income	Amount ₹
To Loss on Sale of Fixed Assets		By Profit on Sale of Fixed Assets	

Balance Sheet

Liabilities	Amount ₹	Assets	Amount ₹
		Assets --	
		(-) Book value of assets sold --	--

9. अन्य आयगत आय व व्यय: विभिन्न सामान्य प्राप्तियों जो उस वर्ष से सम्बन्धित है यथा ब्याज व लाभांश की प्राप्त राशि, मनोरंजन से प्राप्त राशि, टिकट विक्रय से प्राप्तियाँ आय व्यय खाते के जमा पक्ष में दिखाई जानी हैं जबकि उस वर्ष से सम्बन्धित सामान्य व्यय जैसे टेलीफोन, बिल, मजदूरी, बिजली बिल, बीमा व्यय, कार्यालय व्यय, वेतन, मूल्य ह्रास, स्टेशनरी आदि व्यय आय–व्यय खाते के नामे पक्ष में दिखाये जाते है। प्राप्ति व भुगतान खाते में सम्बन्धित वर्ष में प्राप्त समस्त राशियां

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

(चाहे वे किसी भी वर्ष की हैं) प्राप्तियों में तथा सम्बन्धित वर्ष के समस्त भुगतान (चाहे वे किसी भी वर्ष की हैं) भुगतान पक्ष में दिखाते है।

(ब) पूर्णतया पूंजीगत प्रकृति की मदें : ऐसे व्यवहार जिनका लाभ एक से अधिक वर्षों तक मिलेगा तथा उन्हें पूँजीगत प्रकृति की मदें कहा जाता है ये गैर आवर्तक मदें होती हैं।

1.वसीयत में प्राप्ति (Legacies): किसी व्यक्ति द्वारा लिखी गई वसीयत के कारण कोई राशि प्राप्त होती है तो इसे आय व्यय खाते में नहीं दिखाया जाता है बल्कि चिठ्ठे में पूँजी कोष में जोड़कर दिखाया जायेगा। प्राप्ति व भुगतान खाते में प्राप्ति में दिखाया जायेगा।

यदि उक्त प्राप्ति किसी विशिष्ट उद्देश्य के लिए हुई है तो उसे चिठ्ठे में पूँजी कोष में न दिखकर विशिष्ट कोष के रूप में दायित्व पक्ष में दिखाया जायेगा।

2. आजीवन वार्षिक सदस्यता शुल्क : यह एक बार प्राप्त होने वाली पूँजीगत प्राप्ति है इसे चिठ्ठे के दायित्व पक्ष में पूंजी कोष में जोड़कर अथवा पृथक से आजीवन सदस्यता खाता के रूप में दिखाया जायेगा।

3. स्थायी सम्पति का क्रय–विक्रय: यह एक पूँजीगत मद है अतः क्रय राशि को केवल चिठ्ठे के सम्पति पक्ष में सम्बन्धित सम्पति के मूल्य में जोडेंगे। यदि उक्त सम्पति पूर्व में नहीं है तो इसे पृथक से सम्पति पक्ष में दिखा देगें। विक्रय की दशा में उक्त सम्पति के पुस्तक मूल्य के बराबर राशि उक्त सम्पति के मूल्य में घटा देंगे। सम्बन्धित सम्पति का चालू वर्ष का मूल्य ह्रास सम्पति पक्ष में सम्पति के मूल्य में से घटा देंगें। मूल्य ह्रास की राशि आय–व्यय खाते के नामे पक्ष में दिखा देंगे।

उदाहरण 4:– निम्नांकित सूचनाओं से फर्नीचर से सम्बन्धित राशि दिनांक 31.3.2017 के आय–व्यय खाते व उस तिथि के चिठ्ठे में किस प्रकार दिखायेंगे। वर्ष के प्रारम्भ में फर्नीचर ₹ 1,00,000, वर्ष के दौरान 31.12. 2016 को ₹ 20,000 के प्रारम्भिक पुस्तक मूल्य का फर्नीचर ₹ 18,000 में बेचा। 1.10.16 को ₹ 25,000 का नया फर्नीचर खरीदा। फर्नीचर पर 10% वार्षिक दर से मूल्य ह्रास लगाया जाता है।

From the following informations, how the information related to furniture will be shown in Income and Expenditure Account for the year ending 31st March, 2017 and the Balance-Sheet On that date: Opening Balance of furniture ₹ 10,000, during the year on 31-12-16 ₹ 20,000 book value (opening) of furniture was sold for ₹ 18,000, new furniture was purchased on 1-10-16. Depreciate furniture @10% p.a..

Income & Expenditure Account (31-3-17)

Expenditure	Amount ₹	Income	Amount ₹
To Depreciation	10,750		
To loss on sale of furniture (20,000-1,500-18,000)	500		

Balance Sheet (as on 31-3-17)

Liabilities	Amount ₹	Assets		Amount ₹
		Furniture	1,00,000	
		(+) purchase of furniture	25,000	
		(-) Sale of furniture	18,500	
		(B.V. On date of sale)		
		(-) Depreciation		
		80,000 x 10% = 8,000		
		20,000x10% x 9/12 = 1,500		
		25,000x10%x6/12 = 1,250	1,075	95,750

प्राप्ति व भुगतान खाते की दशा में केवल विक्रय व क्रय मूल्य क्रमशः प्राप्ति व भुगतान पक्ष में दिखायेगें।

(4) कोष (Funds): विभिन्न प्रकार के कोषों का लेखांकन, व्यवहार निम्नानुसार होगा:

(1) सामान्य/गैर प्रतिबन्धित कोष: ऐसे कोषों को पूंजी कोष में जोडकर चिठ्ठे में दिखाया जाता है।

(2) विशिष्ट/प्रतिबन्धित कोष: कोष प्रदाता कभी–2 विशिष्ट उद्देश्य पूर्ति हेतु दान देता है तो ऐसी दशा में उसे पृथक चिठ्ठे के दायित्व पक्ष में दिखाया जायेगा जैसे विशिष्ट पारितोषिक कोष, खेलकूद कोष, इस विशिष्ट कार्य के व्यय इसमें से घटा देते हैं तथा प्राप्त दान इसमें जोड देते हैं।

(3) स्थायी सम्पति कोष: किसी विशिष्ठ सम्पति को क्रय करने के लिये बनाये गये कोष की राशि चिठ्ठे के पक्ष में उसी उद्देश्य की प्राप्ति हेतु व्यय के लिए दिखाई जाती है।

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

(4) अक्षयनिधि कोष (Endowment fund) : किसी विशिष्ठ व्यय की पूर्ति हेतु दिये गये उपहार जिसकी मूल राशि का उपयोग कभी नहीं किया जा सकता केवल उनके विनियोग से प्राप्त राशि का ही उपयोग कर सकते है। ऐसी राशि पूंजीगत प्राप्ति चिठ्ठे के दायित्व पक्ष में दिखाई हैं अतः इस प्रकार उक्त कोष का शेष यदि ऋणात्मक होता है तो आय व्यय खाते के नामे पक्ष में दिखा देगें। धनात्मक होने चिठ्ठे के दायित्व पक्ष में ही दिखायेंगे।

(5) वार्षिकी कोष (Annuity Fund): कभी दानदाता किसी संस्था को एक निश्चित राशि इस शर्त के साथ देता है कि वह संस्था एक निश्चित राशि प्रतिवर्ष उसके द्वारा बताये गये व्यक्ति को निर्धारित समय परिस्थिति तक भुगतान करेगी ऐसी दशा में उक्त राशि चिठ्ठे के दायित्व पक्ष में दिखाई जायेगी तथा निर्धारित समय/परिस्थिति पूरी होने पर यह राशि उस संस्था की सम्पति हो जायेगी तथा उपहार संलेख अनुसार उसका उपभोग किया जायेगा।

उदाहरण 5 : निम्नांकित सूचनाओं से खेल कोष से सम्बन्धित राशि वर्ष के अन्त में चिठ्ठे में किस प्रकार दिखायेंगे :–

From the following, how games fund informations will be shown in the balance sheet at the end.

	₹
प्रारम्भिक खेल कोष (Games Fund)	2,00,000
वर्ष के खेल व्यय (Games Expenditure)	20,000
खेल हेतु प्रारम्भिक खेल कोष विनियोग (Opening balance of Games Fund Investment)	1,50,000
खेल हेतु वर्ष में प्राप्त दान (Donation for sale of games ticket)	3,000
खेल के टिकट विक्रय से प्राप्ति (Received from sale of games ticket)	10,000
खेल कोष विनियोग पर 10% वार्षिक दर से ब्याज प्राप्त हुआ (Interest received on games fund investment 10% p.a.)	

हलः

Balance Sheet

Liabilities		Amount ₹	Assets	Amount ₹
Games fund	2,00,000		Games Fund Investment	1,50,000
(+) Int. on. Investment	15,000			
(+) Donation	3,000			
(+) Sale of Tickets	10,000			
	2,28,000			
(-) Expenditure	20,000	2,08,000		

(स) परिस्थितियों के अनुसार निर्धारित पूंजीगत आयगत मदें :– कुछ आय व्यय परिस्थितियों के अनुसार आयगत व पूंजीगत माने जाते है। जिनमें प्रमुख इस प्रकार हैः–

(1) दान (Donation) इन संस्थाओं के लिए यह एक सामान्य प्राप्ति है। यह दो प्रकार की हो सकती हैः–

(अ) सामान्य दान : बिना किसी निर्धारित उद्देश्य की पूर्ति के लिए दिये गये दान इस श्रेणी में आते है। सामान्यतः बहुत कम राशि होने पर इन्हें सीधे आय– व्यय खाते में ले जाया जाता है। किन्तु बडी राशि होने पर इसे पूंजीगत प्राप्ति मानते हुए चिठ्ठे के दायित्व पक्ष में पूॅजी कोष में जोड सकते हैं। जैसे ₹ 200 का दान प्राप्त हुआ तो यह आयगत प्राप्ति होगी। पूंजीगत मानने का निर्णय संस्था पर निर्भर करता है।

(ब) विशिष्ठ दान : किसी विशिष्ठ उद्देश्य की पूर्ति के लिए प्राप्त दान पूॅजीगत प्राप्ति होंगे तथा चिठ्ठे में दायित्व पक्ष में इसे दिखाया जायेगा तथा सम्बन्धित उद्देश्य पूर्ति के व्यय उसी में से घटा दिये जायेंगे। प्राप्ति व भुगतान खाते की दशा में सभी प्राप्त राशि प्राप्ति पक्ष में ही दिखायेंगे।

(2) प्रवेश शुल्क (Entrance/Admission Fees) : यह राशि गैर आवर्तक आय तक होने के कारण पूॅजी कोष में जोड़ कर चिठ्ठे के दायित्व पक्ष में दिखायेंगे। किन्तु कुछ विद्वान इसे नियमित साधन मानते हुए आयगत आय मानते हैं। सीबीएसई ने भी यही निर्देश दिये है कि इसे आयगत माना जाये परन्तु यदि प्रश्न में इसके विपरीत कोई सूचना हो तो तदनुसार दिखाया जायेगा। जैसे प्रश्न में यह कहा गया हो कि प्रवेश शुल्क का 50% पूॅजीकृत करनाा है तो प्राप्त राशि का 50% चिठ्ठे में पूॅजी कोष में जोडेंगे तथा शेष को आय–व्यय खाते में आय पक्ष में दिखायेंगे।

(3) सहायता (Grants): सरकार या अन्य संस्थाओं द्वारा यदि गैर व्यापारिक संस्था को कोई सहायता राशि दी जाती है तो सामान्य उद्देश्य पूर्ति के लिए प्राप्त होने पर आयगत मानते हुए आय व्यय खाते के जमा पक्ष में दिखायेंगे जैसे नगद सहायता नवीनीकरण हेतु प्राप्त सहायता/विशिष्ट कार्य हेतु यह सहायता मिली है तो पूॅजीगत प्राप्ति मानते हुए चिठ्ठे के दायित्व पक्ष में सम्बन्धित कोष के नाम से दिखा देंगे। जैसे सरकार द्वारा भवन बनाने हेतु दी गई राशि को चिठ्ठे के दायित्व पक्ष में भवन कोष के रूप में दिखाया जायेगा। सम्बन्धित कार्य पूर्ण होने पर उसे पूॅजी कोष में स्थानान्तरित कर देगें तथा वह भवन सम्पत्ति पक्ष में दिखायेंगे। प्राप्ति व भुगतान खाते में प्राप्ति पक्ष में दिखायेंगे चाहे सहायता आयगत हो या पूॅजीगत।

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

(4) प्रारम्भिक पूंजी कोष ज्ञात करना (Calculation of Opening Capital Fund): प्रत्येक संस्था को निरन्तर चालू रखने के लिए कोष की आवश्यकता होती है। जिस प्रकार व्यापारिक संस्थाओं में इसे पूंजी के नाम से जाना जाता है जबकि गैर–व्यापारिक संस्थाओं में इसे पूंजी कोष के नाम से जाना जाता है। प्रतिवर्ष क्रियाकलापों से होने वाले आधिक्य को इसमें जोड देते है तथा न्यूनता को इसमें से घटा देते है। जब कभी अन्तिम चिठ्ठा बनाना हो तो हमें सदैव प्रारम्भिक पूंजी कोष की आवश्यकता होती है जो कभी– कभी प्रश्न में उपलब्ध नहीं होती हैं तो ऐसी दशा में प्रारम्भिक चिठ्ठा बनाकर इसकी गणना कर सकते है। प्रारम्भिक पूँजी कोष की गणना हेतु निम्नांकित प्रक्रिया अपनायेंगे :–

(क) चिठ्ठे के सम्पति पक्ष की मदों की गणना:

(i) प्राप्ति व भुगतान खाते के प्रारम्भिक रोकड शेष को सम्पति पक्ष में दिखायेंगे। **(ii)** चालू वर्ष के प्रारम्भ में सम्पतियों का मूल्य सम्पति पक्ष में दिखायेंगे। वर्ष के दौरान क्रय सम्पतियों का मूल्य नहीं लेगें। **(iii)** पिछले वर्ष किये गये अग्रिम भुगतान दिखाये जायेंगे। **(iv)** पिछले वर्ष के अन्त में बकाया आय दिखाई जायेगी। **(v)** उपभोग योग्य सामग्री का पिछले वर्ष के अन्त में स्टॉक दिखायेंगे।

(ख) चिट्ठे के दायित्व पक्ष की मदों की गणना:

(i) पिछले वर्ष के अन्त में प्राप्त अग्रिम आय दिखाई जायेगी। **(ii)** पिछले वर्ष के अन्त में बकाया व्यय दिखाये जायेंगे। **(iii)** उपभोग योग्य सामग्री की पिछले वर्ष के अन्त में देय राशि या अन्य कोई देय राशि **(iv)** पिछले वर्ष के अन्त में विशिष्ट कोषों का शेष।

(ग) अब उपरोक्त **(क)** राशि में से **(ख)** राशि घटाने पर अन्तर की राशि दायित्व पक्ष में 'पूँजी कोष' का शेष होगा। इस राशि को चालू वर्ष के अन्तिम में चिठ्ठे में दायित्व पक्ष में दिखाया जायेगा।

Format of opening Balance Sheet

Liabilities	Amount ₹	Assets	Amount ₹
-Outstanding Expenses (at the end of last year) -Income recd. in Advance (at the end of last year) -Creditors (at the end of last year) -Specific funds (at the end of last year) -Capital Fund (B/F)		-Cash (Op. Balance of Receipt & Payment Account) -Outstanding Incomes at the end of last year -Prepaid Expenses (Made Last year) -Opening Stock of consumable goods -Assets (At the end of last yr.)	

प्राप्ति एवं भुगतान खाता
(Receipts And Payments Account)

किसी वित्तीय वर्ष के अन्त में रोकड़ बही की सहायता से वर्ष के दौरान विभिन्न स्त्रोतों से प्राप्तियों व भुगतानों की मदों के आधार पर बनाया जाता है। प्राप्तियों व भुगतानों की वर्ष के दौरान विभिन्न तिथियों की प्रविष्टियों को एकजाई कर प्रत्येक मद के योग को इसमें दिखाया जाता है। जैसे वर्ष के दौरान विभिन्न तिथियों को 10 बार किराया चुकाया गया तो सभी राशियों का योग करके प्राप्ति व भुगतान खाते के भुगतान पक्ष में दिखाया जायेगा। गैर व्यापारिक संस्थान वर्ष के प्रारम्भ से ही रोकड़ बही में आवश्यक स्तम्भ बनाकर प्राप्तियों व भुगतानों का मदानुसार विश्लेषण करती है इस प्रकार की संस्थाएं इन विश्लेषण स्तम्भों की सहायता से प्राप्ति व भुगतान खाता सुलभता से तैयार कर लेती है। यह एक स्मरणार्थ खाता है तथा दोहरा लेखा पद्धति का अंग नहीं है।

प्राप्ति व भुगतान खाते की विशेषताएँ:
(Characteristics Of Receipts & Payments Acount)

प्रमुख विशेषताएँ निम्नानुसार है:–

1. यह रोकड़ बही का सारांश है यह एक खाते के आकार में बनाया जाता है जिसके बायें पक्ष में प्राप्तियां व दाहिने पक्ष में भुगतान दिखाये जाते है।
2. यह एक वस्तुगत खाते (Real Account) की प्रकृति का है।
3. निर्धारित अवधि के दौरान हुई समस्त प्राप्तियां व भुगतान दिखाये जाते है चाहे ये किसी भी अवधि से सम्बन्धित हो। अर्थात बकाया, का कोई समायोजन नहीं होता है बकाया आय, बकाया व्यय तथा किसी भी प्रकार की गैर रोकड मदें नहीं दिखाई जाती है, जैसे मूल्य ह्रास आदि।
4. प्राप्तियां व भुगतान चाहे आयगत हो या पूँजीगत प्रकृति के हो सभी को दिखाया जाता है।
5. रोकड व बैंक व्यवहारों में कोई अन्तर नहीं किया जाता है अर्थात दोनों व्यवहार दिखाये जाते हैं।
6. इसके प्रारम्भ में प्रारम्भिक रोकड व बैंक शेष (अथवा बैंक अधिविकर्ष) तथा अन्त में अन्तिम रोकड व बैंक शेष दिखाये जाते है। यथा चन्दा, सामान्य दान, वार्षिक शुल्क आदि।

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

प्राप्ति व भुगतान खाता तैयार करने की विधि (Procedure of Preparing Receipts & Payments Account)
इस खाते को तैयार करने की विधि निम्नानुसार है:–

1. इसके नामे पक्ष में रोकड व बैंक का प्रारम्भिक शेष दिखाया जाता है यदि बैंक का जमा शेष है (बैंक अधिविकर्ष) तो प्राप्ति व भुगतान खाते के जमा पक्ष में दिखायगें।
2. रोकड बही के नामे पक्ष की विभिन्न प्राप्तियों की मदों का मद–वार वार्षिक योग इसके नामे पक्ष में दिखाया जायेगा। यथा चन्दा, सामान्य दान, वार्षिक शुल्क आदि।
3. रोकड़ बही के जमा पक्ष में भुगतान की विभिन्न मदों का मद–वार वार्षिक योग प्राप्ति व भुगतान खाते के जमा पक्ष में दिखाया जायेगा। यथा किराया, वेतन, स्टेशनरी, बिजली व्यय, कार्यालय व्यय आदि।
4. अन्त में रोकड बही में रोकड़ व बैंक शेष प्राप्ति व भुगतान खाते के जमा पक्ष में दिखाये जायेगें यदि बैंक अधिविकर्ष है तो इसके नामें पक्ष में दिखाया जायेगा।

नोटः– 1. केवल रोकड़ व बैंक सम्बन्धी लेनदेन ही दिखाते हैं चाहे वे पूंजीगत प्रकृति के हो या आयगत प्रकृति के हो।
2. चालू वर्ष की सभी प्राप्तियों व भुगतानों का दिखाया जाता है चाहे वे किसी भी वर्ष से सम्बन्धित हो अर्थात चालू वर्ष की बकाया आय व बकाया व्यय नहीं दिखाये जाते हैं।

प्राप्ति व भुगतान खाते का प्रारूप
Receipts and Payments Account
for the year ended ----

Receipts	Amount ₹	Payments	Amount ₹
To Balance b/d		By Balance b/d (Bank Overdraft)	-------
Cash in hand -------		By Wages & Salaries	-------
Cash at Bank -------	-------	By Rent, Rates & Taxes	-------
To Subscription	-------	By Insurance	-------
To Donations	-------	By Printing Stationary & Postage	-------
To Sale of scrap and other items & materials	-------	By Advertisement	-------
To Interest of Fixed Deposit	-------	By Telephone Expenses	-------
To Interst from Saving Bank Account	-------	By Honorarium	-------
To Proceeds from Sale of Tickets	-------	By Upkeep of ground	-------
To Grant- in- aid	-------	By Repairs & Renewals	-------
To Sale of Assets & Investments	-------	By Conveyance	-------
To Life Membership Fees	-------	By Audit Fees	-------
To legacies	-------	By Sports Expenses	-------
To Entrance Fees	-------	By Entertainment Expenses	-------
To Balance c/d	-------	By Fate Expenses	-------
(Bank Overdraft)	-------	By Purchase of Assets & Investments	-------
		By Deposits in F.D	-------
		By News Papers & Periodicals	-------
		By Balance c/d	
		Cash in hand -------	
		Cash at Bank -------	-------

बैंक की दोनों राशियों में से बैंक की एक राशि दिखाई जाती है।

प्राप्ति व भुगतान खाता व रोकड बही में अन्तर
(Difference Between Receipts and Payments Account and Cash Book)

आधार	प्राप्ति व भुगतान खाता	रोकड बही
1. आधार	यह रोकड बही से बनाया जाता है।	यह प्रत्येक प्राप्ति व भुगतान की मद व बैंक व्यवहारों से बनाया जाता है।
2. अवधि	वर्ष के अन्त में या किसी निश्चित तिथि को तैयार किया जाता है।	यह वर्ष पर्यन्त दैनिक आधार पर लिखा जाता है।
3. तिथि वार	व्यवहार तिथि वार नहीं लिखते हैं।	व्यवहार तिथि वार लिखते हैं।

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

4. पक्ष	इसके दो पक्षों में बायें पक्ष को प्राप्ति व दायें पक्ष को भुगतान कहते हैं।	इसके दो पक्षों में बायें पक्ष कों नामें व दायें पक्ष को जमा कहते हैं।
5. प्रकृति	यह स्मरणार्थ खाता है।	यह मुख्य पुस्तक है।
6. संस्थाएँ	यह गैर–व्यापारिक संस्थाएँ तैयार करती हैं।	यह गैर–व्यापारिक व व्यापारिक दोनों प्रकार की संस्थाएँ तैयार करती हैं।

उदाहरण 6 : निम्नांकित रोकड बही से सम्बन्धित अवधि का प्राप्ति व भुगतान खाता बनाइये।
From the Following Cash Book, prepare Receipts and Payments Account for that period.

Cash Book

			Analysis ₹				
Date	Particulars	Total ₹	Subscription	Donation	Fees	Legacies	Sale of old Materials
2016 Apr,-6	To Balance b/d	5,000					
2016 Apr,-5	To Fees	3,000			3,000		
2016 May,-2	To Subscription	6,000	6,000				
2016 May,-5	To Donations	7,000		7,000			
2016 Aug-6	To Subscription	2,500	2,500				
2016Aug-12	To Legacies	8,000				8,000	
2016 Sept-7	To Fees	2,000			2,000		
2016Sept-15	To Donations	10,000		10,000			
2016 Oct-10	To Subscription	9,000	9,000				
2016Nov-11	To Sale of old Material	1,000					1,000
2016Dec-20	To Legacies	2,500				2,500	
2017Jan-25	To Subscription	12,000	12,000				
2017Feb-10	To Subscription	3,500	3,500				
	Total	71,500	3,3000	17,000	5,000	10,500	1,000

Credit-side

			Analysis ₹				
Date		Total ₹	Salaries	Stationary	Rent	Sports Exp.	Sundries
2016 Apr- 3	By Salaries	3,000	3,000				
2016 Apr- 8	By Stationary	2,000		2,000			
2016 May-7	By Sports Exp.	4,000				4,000	
2016 May-15	By Rent	1,000			1,000		
2016 Jun- 6	By Sundries	1,500					1,500
2016 Jun -14	By Sundries	500					500
2016Jul -10	By Salaries	13,000	13,000				
2016Aug -10	By Rent	1,000			1,000		
2016Nov -16	By Sports Exp.	2,500				2,500	
2016Dec -18	By Salaries	12,500	12,500				
2017Jun- 20	By Sundries	3,500					3,500
2017 Feb-23	By Sundries	4,500					4,500
2017 Feb-28	By Stationary	2,500		2,500			
2016 Mar-31	By Balance c/d	20,000					
	Total	71,500	28,500	4,500	2,000	6,500	10,000

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

हलः

Receipts and Payments Account

For the year ended 31st March, 2017

Receipts	Amount ₹	Payments	Amount ₹
To Balance b/d	5,000	By Salaries	28,500
To Subscription	33,000	Br Stationary	4,500
To Donations	17,000	By Rent	2,000
To Fees	5,000	By Sports materials	6,500
To legacies	10,500	By Sundries	10,000
To Sale of old materials	1,000	By Balance c/d	12,000
	71,500		71,500

आय–व्यय खाता
(Income and Expenditure Account)

गैर–व्यापारिक संस्थाओं की एक अवधि के क्रियाकलापों के आधार पर उक्त अवधि के परिणाम ज्ञात करने के लिए बनाया जाता है। लाभ–हानि खाते के समान एक नाम–मात्र का खाता है। इसे उपार्जित अवधारणा के आधार पर बनाया जाता है। पूंजीगत मदों को इसमें नहीं दिखाया जाता है। सम्बन्धित अवधि की आयगत आय एवं लाभों व व्यय एवं हानियों को दिखाया जाता है अर्थात बकाया व अग्रिम का समायोजन किया जाता है। इस खाते के बायें पक्ष में व्ययों तथा दाहिने पक्ष में आयों को दिखाया जाता है। इस खाते का अन्तर आधिक्य / न्यूनता होती है। इस खाते का निर्माण प्राप्ति व भुगतान खाता व अतिरिक्त सूचनाओं के आधार पर किया जाता है।

आय–व्यय खाते की विशेषताएँः (Characterstices of Income and Expenditure Account)

1. इसमें केवल आयगत प्रकृति की प्राप्तियाँ व भुगतान दिखाये जाते है।

2. यह एक नाम मात्र का खाता है। खर्चे व हानियां नामे पक्ष में तथा आय व लाभ दायें पक्ष में दिखाये जाते है जो आयगत प्रकृति के हो।

3. एक निश्चित लेखा अवधि की आय व व्ययों का लेखा किया जाता है चाहे व प्राप्त हुई हो या नहीं अथवा भुगतान किया हो अथवा नहीं।

4. यह उपार्जन अवधारणा पर बनाया जाता है अर्थात बकाया व अग्रिम का समायोजन किया जाता है।

5. इसमें कोई प्रारम्भिक शेष नहीं होता है इसका अन्तिम शेष आधिक्य या न्यूनता दिखाता है जिसे चिठ्ठे में पूँजी कोष में जोडा या घटाया जाता है।

प्राप्ति व भुगतान खाते से आय–व्यय खाता बनाना
(Preparation of Income and Expenditure Account from Receipts and Payments Account)

निम्नांकित प्रक्रिया अपनाकर आय–व्यय खाता बनाया जाता है।

1. प्राप्ति व भुगतान में दिखाये गये प्रारम्भिक व अन्तिम रोकड व बैंक शेष का उपयोग नहीं करते है।

2. प्राप्ति व भुगतान खाते में दिखाये गये पूँजीगत प्राप्तियाँ व पूँजीगत भुगतान इसमें नहीं दिखाते है इन्हें चिठ्ठे में दिखाया जाता है।

3. इसमें केवल आयगत मदों को ही दिखाया जाता है जो चालू वर्ष से सम्बन्धित होती है तथा उसमें बकाया व अग्रिम का समायोजन किया जाता है जो अतिरिक्त सूचना के रूप में उपलब्ध होती है।

4. निम्नांकित मदें जो प्राप्ति व भुगतान खाते में नहीं दिखायी जाती है उन्हे आय–व्यय खाते में दिखाया जाता हैः–

(**i**) स्थायी सम्पत्तियों पर मूल्य ह्रास (व्यय पक्ष में) (**ii**) स्थायी सम्पत्तियों की बिक्री से लाभ (आय पक्ष में)
(**iii**) स्थायी सम्पत्तियों की बिक्री से लाभ (व्यय पक्ष में) (**iv**) यदि गैर–व्यापारिक संस्था कोई व्यापारिक क्रिया भी करती है जैसे अस्पताल द्वारा दवाओं की विक्रय तो ऐसी दशा में प्रत्येक व्यापारिक क्रिया के लिए पृथक–2 व्यापार व लाभ-हानि खाता बनाया जाता है तथा उसमें दिखाये गये लाभ-हानि को आय-व्यय खाते में स्थानान्तरित किया जाता है।
(**v**) उपभोग योग्य सामग्री के उपभोग की राशि आय व्यय खाते के नामे में दिखाते है।
(**vi**) विशिष्ट कोष की राशि से अधिक उससे सम्बन्धित व्यय हो तो वह भी आय व्यय खाते के नामें में दिखायेंगे।

चिठ्ठा तैयार करना
(Preparation of Balance Sheet)

गैर व्यापारिक संस्थाओं की वित्तीय स्थिति की जानकारी करने हेतु चिठ्ठा बनाया जाता है। यह व्यापारिक संस्थाओं के लिए बनाये जाने वाले चिठ्ठे के अनुरूप ही बनाया जाता है। इसमें पूँजी के स्थान पर पूँजी कोष शब्द का उपयोग होता है। प्रश्न में गत वर्ष का चिठ्ठा, चालू वर्ष का प्राप्ति व भुगतान खाता व दी गई अतिरिक्त सूचनाओं के आधार पर निम्नांकित प्रकार से बनाया जाता है।

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

सम्पति पक्ष

(1) चालू वर्ष के प्राप्ति व भुगतान खाते में अन्तिम तिथि को दिखाया गया बैंक व रोकड शेष सम्पति पक्ष में दिखायेंगे।

(2) प्रारम्भिक चिठ्ठे में दी गई सम्पति के मूल्यों को लेकर प्राप्ति व भुगतान खाते में दिये गये सम्पतियों के क्रय विक्रय मूल्य को सम्बन्धित सम्पति मूल्य में जोड देना चाहिये एवं दी गई अतिरिक्त सूचनाओं व प्रारम्भिक चिठ्ठे की सूचना के आधार पर विक्रय की गई सम्पति का पुस्तक मूल्य सम्बन्धित सम्पति के मूल्य में से घटा देना चाहिये तत्पश्चात दी गई सूचनाओं के आधार पर सम्बन्धित सम्पति पर निर्धारित मूल्य ह्रास घटा देना चाहिये।

(3) उपभोग योग्य सामग्री के अन्तिम स्टॉक का मूल्य दिखाना चाहिये।

(4) गत वर्ष के चिठ्ठे में दिखाये गये बकाया आय के सम्बन्ध में चालू वर्ष के प्राप्ति व भुगतान खाते में उक्त राशि वसूल हो गई है या नहीं देखना चाहिये यदि आंशिक वसूल हुई है तो शेष चिठ्ठे के सम्पति पक्ष में दिखाना चाहिये।

(5) अतिरिक्त सूचनाओं में चालू वर्ष से सम्बन्धित बकाया आय की राशि ज्ञात कर उसे सम्पति पक्ष में दिखाना चाहिये।

(6) अतिरिक्त सूचनाओं से दायित्व पक्ष पूर्वदत्त व्ययों को भी ज्ञात कर उनको चिठ्ठे में लिखना चाहिये।

दायित्व पक्ष

(1) गत वर्ष के चिठ्ठे से पूँजी कोष ज्ञात करना चाहिये यदि गत वर्ष का चिठ्ठा उपलब्ध नहीं है तो इसी अध्याय में पूर्व में बताये अनुसार तरीके से प्रारम्भिक पूँजी कोष की गणना करनी चाहिये।

(2) गत वर्ष के चिठ्ठे के दायित्व पक्ष में बकाया व्ययों से सम्बन्धित सूचना है तो प्राप्ति भुगतान खाते से ज्ञात करना चाहिये कि समस्त का भुगतान हो गया या नहीं यदि आंशिक भुगतान है तो शेष चिठ्ठे के दायित्व पक्ष में दिखाया जाना चाहिये।

(3) गत वर्ष के चिठ्ठे के दायित्व पक्ष में अग्रिम आयों की सूचना हो तो इसका समायोजन केवल आय व्यय खाते में होगा, चिठ्ठे में नहीं।

(4) अतिरिक्त सूचनाओं से यह देखना चाहिये कि चालू वर्ष के कोई व्यय अदत्त है। यदि ऐसा है तो उन्हे चिठ्ठे के दायित्व पक्ष में दिखायेंगे।

(5) प्राप्ति व भुगतान खाता व अतिरिक्त सूचनाओं से ऐसी आय ज्ञात करनी चाहिये जो चालू वर्ष में प्राप्त हो गई किन्तु आगामी वर्ष से सम्बन्धित है इस प्रकार की आय को दायित्व पक्ष में दिखनाा चाहिये।

(6) अतिरिक्त सूचनाओं व प्राप्ति व भुगतान खाते के माध्यम से विशिष्ठ दान व विशिष्ट कोषों की प्राप्तियों को चिठ्ठे के दायित्व पक्ष में समायोजनों के उपरान्त शेष दिखाया जाना चाहिये।

(7) प्रवेश शुल्क आदि आयों के सम्बन्ध में संस्था में नियमों के अनुसार आदि पूंजीगत मानना हो तो पूँजी कोष में जोड देंगे।

(8) आजीवन सदस्यता शुल्क की प्राप्त राशि पूँजी कोष में जोड देंगे।

(9) आय–व्यय खाते का आधिक्य/न्यूनता को भी पूँजी कोष में तदानुसार जोडेंगे या घटायेंगे।

चिठ्ठे का प्रारूप

Format of Balance Sheet

Liabilities		Amount ₹	Assets		Amount ₹
Capital Fund:			Assets:		
Opening Capital Fund	----		Previous Balance	----	
Add/less: Surplus/deficit	----		Add: Purchases in current Year	----	
Add: Capitalised Value of life membership			Less: book Value of Assets sold	----	
fees, Entrance fees and legacies	----	----	Less: Depreciation	----	----
Special fund/ Donations	----		Stock of consumable goods		
Previous Balance (if any)	----		Previous Balance	----	
Add: Receipts during the year	----		Add Purchases during the year	----	
Add: Income carried on fund Investment	----		Less value of consumed during the year	----	----
Less: Expenses paid out of fund	----	----	Outstanding income		----
Creditors for purchases/ Supplies		----	Prepaid expenses		----
Outstanding expenses		----	Cash & Bank Balances		----
Income Received in advance		----			
Bank overdraft		----			

प्राप्ति व भुगतान खाता व दी गई सूचनाओं से आय व्यय खाता बनानाः

उदाहरण 7 : निम्नांकित सूचनाओं से प्राप्ति व भुगतान खाते से एक क्लब का 31 मार्च 2017 को समाप्त होने वाले वर्ष के लिए आय व्यय खाता बनाईये। From the following Receipts and Payments Account of a club, prepare Income and Expenditure Account for the year ended 31st March, 2017

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Dr. **Cr.**

Receipts	Amount ₹	Payments	Amount ₹
To Cash in hand (Opening)	2,000	By Salaries	50,000
To Cash at Bank (Opening)	1,00,000	By Stationary	2,000
To Subscription	1,52,400	By Electricity Exp	7,000
To Donations	36,000	By Billard Table	50,000
To Interest on Investment	1,800	By Purchase Investment	60,000
To Entrance fee	18,000	By Sundry Expenses	6,000
To Interest Received from Bank	6300	By Purchase of assets	1,25,000
To Sale of Old Materials	900	By Insurance premium	2,400
		By Cash in hand (closing)	4,000
		By Cash at bank (closing)	11,000
	3,17,400		3,17,400

Additional Informations:
(i) Subscription in arrear for the year ended 31st march 2017 ₹ 1000 and subscription in advance for the year ended 31st march 2017 ₹ 4,000 **(ii)** Insurance premium prepaid at the end ₹ 300 **(iii)** Sundry expenses outstanding ₹ 1,000 **(iv)** 50% Entrance fees is to be capitalised **(v)** Donation are for creating an endowment fund.

अतिरिक्त सूचनाएँ:
(i) 31 मार्च 2017 को समाप्त वर्ष का बकाया चन्दा ₹ 1,000, इसी वर्ष प्राप्त अग्रिम चन्दा ₹ 4,000. **(ii)** पूर्वदत्त बीमा ₹ 300 **(iii)** बकाया विविध व्यय ₹ 1,000 **(iv)** प्रवेश शुल्क का 50% पूँजीकृत करना है। **(v)** दान एक अक्षय निधि कोष के लिए हैं।

हल:

Income and Expenditure Account
for the year ending 31st March, 2017

Dr. **Cr.**

Expenditure		Amount ₹	Income		Amount ₹
To Salaries		50,000	By Subscription	1,52,400	
To Stationary		2,000	Add: Arrear	10,000	
To Electricity Expenses		7,000		1,62,400	
			Less: advance	4,000	1,58,400
To Sundry Expenses	6,000		By Interest on Investment		1,800
Add: Outstanding	1,000	7,000	By Entrance Fees		9,000
To Insurance Premium	2,400		By Interst on Bank Deposits		6,300
Less: Prepaid	300	2,100	By Sale of old News papers		900
To Excess of Income over Expenditure		1,08,300			
		1,76,400			1,76,400

उदाहरण 8: निम्नांकित प्राप्ति व भुगतान खाते से एक क्लब का 31 मार्च 2017 को समाप्त होने वाले वर्ष का आय व्यय खाता बनाइए। Receipts & Payments Account of a club, Prepare Income & Expenditure Account for the year ended 31st March 2017:

Receipts		Amount ₹	Payments		Amount ₹
To Balance b/d (Bank)		32,500	By Purchases of machinery (01-07-16)		6,000
To subscription			By Salaries		5,000
2015-16	2,000		By Sports Expenses		40,000
2016-17	15,000		By Stationary		10,000
2017-18	500	17,500	By Entertainment expenses		6,000
To Donations for Sports Fund		30,000	By Balance c/d		
			Cash	6,000	
To Government Subsidy		2,000	Bank	40,000	46,000
To Life Membership fees		30,000			
To Interest on Bank Deposits		1,000			
		1,13,000			1,13,000

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Additional Informations:
(i) Sports fund opening balance ₹ 5,000 **(ii)** Stock of stationary opening ₹ 6,000, Closing ₹ 1,000 Creditors for stationary opening ₹ 3000, closing ₹ 3500 **(iii)** Bank interest Receivable ₹ 200 **(iv)** Depreciate machinery @ 10% p.a. **(v)** There are 160 Members of a club, who contribute ₹ 100 per year for subscription.

अतिरिक्त सूचनाएँ
(i) खेल कोष का प्रारम्भिक एक शेष ₹ 5000 है। **(ii)** स्टेशनरी का प्रारम्भिक शेष ₹ 6000,, अन्तिम शेष ₹ 1000 स्टेशनरी के लिए लेनदार प्रारम्भिक ₹ 3000 अन्तिम ₹ 3500 **(iii)** बैंक ब्याज ₹ 200 प्राप्त है। **(iv)** मशीनरी पर 10% वार्षिक की दर से मूल्य ह्रास लगाइये। **(v)** क्लब में 160 सदस्य है जो ₹ 100 प्रतिवर्ष चन्दा देते है।

हल:

Income and Expenditure Account
for the year endig 31st march 2017

Dr **Cr**

Expenditure	Amount ₹	Income		Amount ₹
To Salaries	5,000	By Subscription	15,000	
		(+) Accured	1,000	16,000
To Sports Expenses	5,000	By Govt. Subsidy		2,000
To Statioary Consumed	15,500	By Bank Interest	1,000	
To Entertainment expenses	6,000	(+) Accured	200	1,200
To Depreciation on machinery	450	By Excess of Expenditure over Income		12,750
	31,950			31,950

कार्यशील टिप्पणियाँ

1. खेल कोष के सम्बन्ध में गणना इस प्रकार की गई हैं :–

	₹
प्रारम्भिक खेल कोष	5000
(+) चालू वर्ष में प्राप्त दान	30000
	35000
(-) चालू वर्ष के खेल व्यय	40000
आय–व्यय खाते में दिखाई जाने वाली राशि (व्यय का आय पर आधिक्य होने के कारण)	5000

2. उपयोग की गई स्टेशनरी की राशि की गणना निम्नानुसार है:–

	₹
प्रारम्भिक स्टॉक	6000
(+) क्रय हेतु नकद भुगतान	10000
	16000
(-) प्रारम्भिक लेनदार	3000
	13000
(+) अन्तिम लेनदार	3500
	16500
(-) चालू अन्तिम स्टॉक	1000
उपभोग की गई स्टेशनरी की राशि	15500

3. मशीनरी पर मूल्य ह्रास की गणना 6,000 x10% x 9/12 = ₹ 450
4. बकाया चन्दे की गणना :

	₹
वर्ष का प्राप्य योग्य चन्दा (160x100)	16000
(–) वर्ष का वास्तविक प्राप्त चन्दा	15000
वर्ष के अन्त में बकाया चन्दा	1000

5. आजीवन सदस्यता शुल्क केवल एक बार प्राप्ति है अतः यह पूंजीगत प्राप्ति होगी।
6. सरकारी रोकड सहायता आयगत प्राप्ति हैं।

जब प्रारम्भिक चिठ्ठा एवं प्राप्ति व भुगतान खाता दिया हो उससे आय व्यय खाता व चिठ्ठा बनाना हो :–

उदाहरण 9
एक क्लब का 31 मार्च 2016 का चिठ्ठा एवं 31 मार्च 2017 को समाप्त होने वाले वर्ष का प्राप्ति व भुगतान खाता निम्नानुसार है। 31 मार्च 2017 को समाप्त होने वाले वर्ष का आय–व्यय खाता व उसी दिन का चिठ्ठा बनाइये।

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Balance Sheet As on 31st March 2016

Liabilities		Amount ₹	Assets		Amount ₹
Capital fund	117000		Buildings		30,000
(+) Excess of Income Over Expenditure	5000	1,22,000	Furniture		5,000
Subscritption received in Advance		500	Books		4,000
Environment fund		50,000	7% Environment Fund Investment		40,000
			7% Fixed deposits with bank		50,000
			Accured Interest from bank		500
			Accured subscription		2,000
			Cash in hand	30,000	
			Cash at Bank	11,000	41,000
		1,72,500			1,72,500

Receipts and Payments Account for the year ending 31st March, 2017

Receipts		Amount ₹	Payments		Amount ₹
To Balance b/d			By Salaries		1,000
Cash	30000		By Taxes & Insurance		2,000
Bank	11000	41,000	By Printing & Stationary		700
To Subscription		12,000	By Repairs		300
To Hall Rent		3,500	By Environment awareness movement		
To Interest on fixed deposit		3,700	expenses		50,000
To Donations towards environment fund		6,000	By Balance c/d		
To Interest recd. on environment fund			Cash	1000	
investment		2,800	Bank	14000	15,000
		69,000			69,000

Additional Information

1. The number of members in the club is 500 and annual susbcription payble by each member is ₹ 20
2. Subscription received during the year gffor the next year amountted to ₹ 1,000
3. The rent of the club Hall is ₹ 500 per day and the hall was let out for 10 days in current year.
4. Depreciation is to be provided @ 10% p.a. on all Assets.

अतिरिक्त सूचनाएँ

1. क्लब के सदस्यों की संख्या 500 है तथा वार्षिक चन्दा ₹ 20 प्रति सदस्य देय है।
2. चालू वर्ष में आगामी वर्ष का प्राप्त चन्दा ₹ 1,000
3. क्लब के हॉल का किराया ₹ 500 प्रतिदिन है वर्ष के दौरान हॉल 10 दिन किराये पर दिया गया।
4. सभी सम्पतियों पर 10% वार्षिक दर से मूल्य ह्रास लगाना है।

हल:

Income and Expenditure Account
for the year eneded 31st March, 2017

Expenditure		Amount ₹	Income		Amount ₹
To Salaries		1,000	By Subscriptions		10,000
To Taxes & Insurance		2,000	By Interest On F.D. (50000x7%)		3,500
To Printing & Stationary		700	By Hall rent	3500	
To Repairs		300	Add Outstanding	1500	5,000
To Depreciation					
Building (3000x10%)	3000				
Furniture (5000x10%)	500				
Books (4000x10%)	400	3,900			
To Excess of Income over Expenditure		10,600			
		18,500			18,500

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Balance Sheet
As on 31st March, 2017

Liabilities		Amount ₹	Assets		Amount ₹
Opening Capital fund	1,22,000		Building	30,000	
+ Surplus	10,600	1,32,600	(-) Depreciation	3,000	27,000
			Furniture	5,000	
Subscription received in Advance		1,000	(-) Depriciation	500	4,500
Environment fund	50,000		Books	4,000	
+ Donation recd.	6,000		(-) Depriciation	400	3,600
+Interest Related to c.y.	2,800		7% Fixed deposit in bank		50,000
	58,800		7%Environment fund investment		40,000
(-) Expenses during the year	50,000	8,800	Accured interest		300
			Hall Rent outstanding		1,500
			Subscription outstanding		500
			Cash in hand		1,000
			Cash at bank		14,000
		1,42,400			1,42,400

कार्यशील टिप्पणियां:

1. चन्दे की राशि की गणना इस प्रकार की गई है :–

		₹
चालू वर्ष में प्राप्त चन्दा		12,000
(–) चालू वर्ष में प्राप्त चन्दा जो गत वर्ष से सम्बन्धित है	2,000	
(–) चालू वर्ष में प्राप्त चन्दा जो अगले वर्ष सम्बन्धित है	1,000	3,000
		9,000
(+) चालू वर्ष का चन्दा जो गत वर्ष प्राप्त हो गया		500
चालू वर्ष से सम्बन्धित प्राप्त चन्दे की राशि		9,500
चालू वर्ष में प्राप्त होने योग्य चन्दा (500x20)		10,000
चालू वर्ष का बकाया चन्दा (10000–9500)		500

2. स्थायी जमा पर ब्याज की गणना इस प्रकार है :–

	₹
प्राप्त ब्याज	3,700
(–) चालू वर्ष में प्राप्त ब्याज जो गत वर्ष से सम्बन्धित है	500
चालू वर्ष से सम्बन्धित ब्याज जो प्राप्त हुआ	3,200
7% की दर से चालू वर्ष का स्थायी जमा ब्याज (5000x7%)	3,500
चालू वर्ष का बकाया ब्याज (3500-3200)	300

3. हॉल का बकाया किराया की गणना :–

	₹
चालू वर्ष का किराया (10x500)	5,000
(–) चालू वर्ष में प्राप्त	3,500
चालू वर्ष का बकाया हॉल किराया	1,500

उदाहरण 10: निम्नांकित सूचनाओं से एक क्लब का 31 मार्च 2017 को समाप्त होने वाले वर्ष का आय–व्यय खाता एवं उसी दिन का चिठ्ठा बनाईये। From the following informations of club, prepare Income & Expenditure Account for the year ended 31 March, 2017 and a Balance Sheet on that date.

Balance sheet
As on 31st March, 2016

Liabilities	Amount ₹	Assets	Amount ₹
Capital fund	4,20,000	Building	4,00,000
Creditors for Sports Material	10,000	Furniture	20,000
Subscription in Advance	5,000	Bank Balance	10,000
		Subscription Outstanding	5,000
	4,35,000		4,35,000

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Receipts and Payments Account
For the year ended 31 March, 2017

Receipts	Amount ₹	Payments	Amount ₹
To Balance b/d (Bank)	10,000	By Furniture	30,000
To Subscriptions	86,000	By Salaries	10,000
To Donation for poor girls marriage	33,000	By Creditors for sports material	25,000
		By General Expenses	11,000
		By Expenses on marriage of poor girls	42,000
		By Balance c/d (Bank)	11,000
	1,29,000		1,29,000

Additional Informations:

(1) On April, 2016 the old furniture was given to Red Cross and new furniture was purchased on Oct. 1, 2017 Depreciation@10% p.a. is to be provided on furniture.

(2) On 31st March 2017, the creditors for sports matereials were ₹ 4800 and value of sports matereials was ₹ 5400.

(3) A payment of ₹ 5,000 for sports material was to be debited to the general expenses.

(4) Outstanding subscription at the end ₹ 2,000 and advance subscription received for next year at the end ₹ 3000.

अतिरिक्त सूचनाएँ

(1) 1 अप्रेल 2016 को पुराना फर्नीचर रेड क्रास सोसाईटी को दे दिया गया तथा 1 अक्टूबर 2016 को नया फर्नीचर खरीदा गया। फर्नीचर दर 10 % वार्षिक दर से मूल्य ह्रास लगाना है।

(2) 31 मार्च 2017 को खेल सामग्री का शेष ₹ 5400 था।

(3) खेल सामग्री से सम्बन्धित ₹ 5000 का भुगतान सामान्य व्यय को नामे करना है।

(4) वर्ष के अन्त में चालू वर्ष का बकाया चन्दा ₹ 2000 तथा आगामी वर्ष का अग्रिम प्राप्त चन्दा ₹ 3000 है।

Income and Expenditure Account
For the year ended 31st March, 2017

Expenditure		Amount ₹	Income	Amount ₹
To Salaries		10,000	By Subscriptions	85,000
To General Exp.	11,000			
(+) related to sports material	5,000	16,000		
To Sports materials consumed		9,400		
To Furniture (Donated to Red Cross)		20,000		
To Depreciation on furniture (10%x30000x6/12)		1,500		
To Excess exp. on marriage of poor girls (42000-33000)		9,000		
To Excess of Income over Expenditure		19,100		
		85,000		85,000

Balance Sheet
As on 31st March, 2017

Liabilities		Amount ₹	Assets		Amount ₹
Capital Fund	4,20,000		Building		4,00,000
(+) Excess of income over expenditure	19,100	4,39,100	furniture	30,000	
			(-) Depreciation	1,500	28,500
Creditors for sports materials		4,800	Subscription outstanding		2,000
Advance Subscription		3,000	Stock of sports materrial		5,400
			Cash at bank		11,000
		4,46,900			4,46,900

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

कार्यशील टिप्पणियां:

1. चन्दे की चालू वर्ष से सम्बन्धित राशि की गणना इस प्रकार की है :–

	₹	₹
चालू वर्ष में प्राप्त चन्दा		8,600
(–) पिछले वर्ष का बकाया चन्दा जो इस वर्ष प्राप्त हुआ	5,000	
(–) आगामी वर्ष का अग्रिम चन्दा	3,000	8,000
		7,800
(+) इस वर्ष का बकाया चन्दा	2,000	
(+) पिछले वर्ष, इस वर्ष का चन्दा अग्रिम प्राप्त	5,000	7,000
चालू वर्ष के चन्दे की रायिा		8,500

2. खेल सामग्री की उपभोग राशि की गणना इस प्रकार है:–

खेल सामग्री के लिए चालू वर्ष में भुगतान	25,000
(–) खेल सामग्री के प्रारम्भिक लेनदार	10,000
	15,000
(+) खेल सामग्री के अन्तिम लेनदार	4,800
	19,800
(–) खेल सामग्री का अन्तिम स्टॉक	5,400
	14,400
(–) खेल सामग्री का भुगतान जो सामान्य व्यय में ले गये	5,000
आय–व्यय खाता में ले गए	9,400

जब प्राप्ति व भुगतान खाता दिया हो तो आय–व्यय खाता एवं चिट्ठे बनाना

उदाहरण 11

एक चिकित्सा सहायता सोसाईटी का 31 मार्च 2017 का प्राप्ति व भुगतान खाता व अन्य सूचनाएं दी गयी है। इनके आधार पर 31 मार्च 2017 को समाप्त होने वाले वर्ष का आय व्यय खाता एवं उसी दिन का चिठ्ठा तैयार कीजिये।

A Receipts and payments Accounts and other informations of a madical relief society for the year ended 31st March 2017 are given below with the help of these prepare Income and expenditure Account for the year ending 31st March 2017 and a Balance sheet on that date

Dr. Cr

Receipts	Amount ₹	Payments	Amount ₹
To Cash in hand b/d	7,000	By Salaries (5000)	5,000
To Subscription	50,000	By Sundry Expenses	500
To Donation for organising fate	13,500	By Payment for medicines	30,000
To Interest on investment @ 8% p.a. for 2016-17	8,000	By Honorarium to doctors	10,000
To Proceeds from fate	10,000	By Consumable Stores	2,500
		By Machinery purchased	15,000
		By Fate Organising Exp.	21,000
		By Cash in hand c/d	4,500
	88,500		88,500

Additional Informations :

	1-4-16 ₹	31-3-17 ₹
Subscription Due (चन्दे के बकाया)	1,000	500
Subscription Received in advance (अग्रिम चन्दा)	500	1,000
Stock of medicines (दवाइयों का स्टॉक)	10,000	15,000
Amount due to medicine suppliers (दवा प्रदाताओं को देय)	8,000	12,000
Value of machinery (मशीन का मूल्य)	21,000	30,000
Value of buildings (भवन का मूल्य)	40,000	38,000

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

हल:

Income and Expenditure Account
for the year ending 31st March, 2017

Dr. **Cr.**

Expenditure	Amount ₹	Income	Amount ₹
To Medicinces Conumed	29,000	By Subscriptions	4,900
To Honorarium	10,000	By Donation for fate	13,500
To Salaries	5,000	By Proceeds from fate	10,000
To Sundry expences	500	By Interest on Investment	8,000
To Comsumable stores	2,500		
To Depreciation on building	2,000		
To Machinery	6,000		
To Fate Expenses	21,000		
To Excess of Income over Expenditure	80,500		
	80,500		80,500

Balance Sheet
As on 31st March 2017

Liabilities		Amount ₹	Assets		Amount ₹
Capital fund	1,70,500		Building	40,000	38,000
(-)Excess of expenditure	4,500		(-) depreciation	2,000	
over income		1,75,000	Machinery	21,000	
Advance Subscription		1,000	(+) Purchases	15,000	
				36,000	
			(-) Depreciation	6,000	30,000
Creditors for medicines		12,000	Stock of medicines		15,000
			Investments		1,00,000
			Subscription outstanding		500
			Cash in hand		4,500
		18,8000			1,88,000

कार्यशील टिप्पणियां:

1. चालू वर्ष से सम्बन्धित चन्दे की राशि की गणना

	₹	₹
चालू वर्ष में प्राप्त चन्दा		5,000
(–) पिछले वर्ष का बकाया चन्दा जो प्राप्त हुआ	1,000	
(–) आगामी वर्ष का अग्रिम चन्दा जो इस वर्ष प्राप्त	1,000	2,000
		48,000
(+) वर्ष के अन्त में इस वर्ष का बकाया चन्दा	500	
(+) पिछले वर्ष, चालू वर्ष का अग्रिम प्राप्त चन्दा	500	1,000
		49,000

2. विनियोगों की राशि चिठ्ठे के लिए ज्ञात करना:
प्रश्न में विनियोगों पर 8% की दर से ₹ 8,000 प्राप्त ब्याज किया अतः इस प्रकार 8000 x 100/8 = ₹ 1,00,000 विनियोग की राशि होगी।

3. दवाओं के उपभोग राशि की गणना निम्नानुसार की गई है:–

	₹
दवाईयों हेतु वर्ष में भुगतान	30,000
(+) दवाइयों का प्रारम्भिक स्टॉक	10,000
	40,000
(–) दवाइयों का प्रारम्भिक लेनदार	8,000
	32,000
(+) दवाइयों का अन्तिम लेनदार	12,000

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

	44,000
(–) दवाइयों का अन्तिम स्टॉक	15,000
वर्ष के दौरान उपभोग की गई दवाइयां	29,000

4. मेला आयोजित करने के लिए प्राप्त दान आयगत प्रकृति का है। अतः आय व्यय खाते में दिखाया गया है। चाहे तो इसकी शुद्ध राशि आय पक्ष में भी दिखा सकते हैं तब मेला खर्च मेले हेतु दान से प्राप्तियां मद नहीं दिखायेंगे।

5. प्रारम्भिक पूँजी कोष की गणना

Balance Sheet
As on 31st March, 2016

Liabilities	Amount ₹	Assets	Amount ₹
Advance Subscription	500	Building	21,000
Creditors for medicines	8,000	Machinery	40,000
Capital fund (B/F)	1,70,500	Stock of medicines	10,000
		Outstanding subscription	1,000
		Investments	1,00,000
		Cash in hand	7,000
	1,79,000		1,79,000

6.भवन पर मूल्य ह्रास (40,000–38,000) = ₹ 2,000
मशीनरी पर मूल्य ह्रास (21,000 +15,000 –30,000) = ₹ 6,000

उदाहरण 12

31 मार्च 2017 को समाप्त होने वाले वर्ष का प्राप्ति व भुगतान खाता व अतिरिक्त सूचनाओं के आधार पर एक क्लब का 31 मार्च 2017 को समाप्त होने वाले वर्ष का आय व्यय खाता व उसी दिन का चिठ्ठा बनाइये।

Prepare Income and Expenditure Account for the year ended 31st March, 2017 and Balance Sheet on that date of a club from the Receipts & Payments Accounts the year ended 31st March, 2017 and from additional informations:

Receipts		Amount ₹	Payments	Amount ₹
To Balance b/d		4,000	By Rent Paid	72,000
To Entrance Fees		7,000	By Salaries	5,000
To Special Subscription for a sports tournaments		48,000	By Expenses on sports tournaments	54,000
To Rent from Club premises		7,000	By Stationary	40,000
To subscription			By Interest on loan for current year	20,000
2015-16	3,000		By sports equipment	25,000
2016-17	2,36,000		By Balance c/d	33,000
2017-18	4,000	2,43,000		
		3,09,000		3,09,000

Addiotional informations: - On 1st April 2016 the club owned some sports equipments the value of ₹ 2,00,000 and on 31st March 2017 all the sports material was valued at ₹ 1,90,000. The club also took a loan of ₹ 2,00,000 during the year 2015-16 @ 10% p.a. Stationary Expenses ₹ 4,000 pertained to previous year stand still owing ₹ 5,000, subscription unpaid at the end ₹ 12,000 for current year, Stock of stationary at the end was ₹ 4,000, Entrance fees to be capitalised.

अतिरिक्त सूचनाएँ

1 अप्रेल 2016 को क्लब के पास ₹ 2,00,000 मूल्य के खेल यंत्र थे तथा 31 मार्च 2017 को समस्त खेल यंत्रों का मूल्य ₹ 19,000 माना गया। क्लब ने वर्ष 2015-16 के दौरान ₹ 2,00,000 का ऋण 10% वार्षिक ब्याज दर पर लिया था। स्टेशनरी के ₹ 4,000 व्यय पिछले वर्ष से सम्बन्धित है तथा ₹ 5,000 अभी भी बकाया है। चालू वर्ष के चन्दे के ₹ 12,000 अन्त में अप्राप्त है। अन्त में स्टेशनरी का स्टॉक ₹ 4,000 था। प्रवेश शुल्क पंजीकृत करना है।

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Income & Expenditure Account
for the year ended 31st March, 2017

Expenditure	Amount ₹	Income		Amount ₹
To Rent Paid	72,000	By Rent of Club Premises		7,000
To Salaries	65,000	By subscription	2,36,000	
To Expenses on sports tournaments (net) (54,000-48,000)	6,000	+outstanding	12,000	2,48,000
To Stationary consumed	37,000			
To Int. on loan	20,000			
To Depreciation on Sports equipment	35,000			
To Excess of Income over Expenditure	20,000			
	2,55,000			2,55,000

Balance Sheet
As on 31st March, 2017

Liabilities		Amount ₹	Assets	Amount ₹
Capital Fund	**3,000**		**SportsEquipment**	**1,90,000**
+Surplus of Income over Expenditure	20,000		Stock of stationary	4,000
			Accured Subscription	
+ Entrance fees capitalised	7,000	30,000	Cash in hand	12,000
Outstanding stationary		5,000		33,000
Loan		2,00,000		
Advance Subscription		4,000		
		2,39,000		2, 39,000

कार्यशील टिप्पणियां: 1. स्टेशनरी की उपभोग राशि की गणना निम्नानुसार है :–

	₹
स्टेशनरी भुगतान	40,000
(+) अन्त में बकाया	5,000
	45,000
(–) पिछले वर्ष के बकाया का भुगतान किया	4,000
	41,000
(–) स्टेशनरी का अन्तिम स्टॉक	4,000
चालू वर्ष में उपभोग किया गया	37,000

2. खेल यंत्रों पर मूल्य ह्रास की गणना निम्नानुसार की गई है :–

	₹
प्रारम्भिक खेल यंत्र मूल्य	2,00,000
(+) नये यंत्र खरीदे गये	25,000
	2,25,000
(–) वर्ष के अन्त में खेल यंत्रों का मूल्य	1,90,000
मूल्य ह्रास	35,000

3. प्रारम्भिक पूंजी कोष की गणना

Balance Sheet
As on 31st March, 2016

Expenditure	Amount ₹	Income	Amount ₹
Capital fund (B/F)	3,000	Sports equipment	2,00,000
Loan	2,00,000	Outstanding subscription	3,000
Outstandig stationary exp.	4,000	Cash	4,000
	2,07,000		2,07,000

उदाहरण 13: 31 मार्च, 2017 को समाप्त होने वाले वर्ष का प्राप्ति व भुगतान खाता व अन्य सूचनाओं से 31 मार्च 2017 का आय–व्यय खाता व उसी दिन का चिठ्ठा बनाइये।

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Receipts and Payments Accounts for the year ended 31st March 2017 and from other informations, prepare Income and Expenditure Account for the year ended 31st March and the balance sheet on that date.

Receipts	Amount ₹	Payments	Amount ₹
To Cash in hand	8,000	By Rent of Hall	4,000
To subscription	27,000	By Salaries	15,000
To Entrance fees	4,000	By Purchases of sports equipments	20,000
To sale of refreshments	10,000	By Dance Expenses	5,000
To Sale of Dance tickets	5,500	By Supply of refreshments	7,000
To Interest on 7% investments for 2016-17	4,200	By Cash in Hand	19,000
To Legacies	11,300		
	70,000		70,000

Additional Informations

(1) Following were the assets and liabilities on 31st March, 2016 and 31 March, 2017

	31-3-16 ₹	31-3-17 ₹
Sports Equipments (खेल यंत्र)	7,000	22,000
Subscription in arrears (बकाया चन्दा)	2,000	1,700
Furniture (फर्नीचर)	12,500	11,500
Outstanding rent (बकाया किराया)	800	400
Advance subscription (अग्रिम चंदा)	500	2,500

2. प्रवेश शुल्क पूँजीकृत कीजिए (Entrance fees should be capitalised)

हल:

Income and Expenditure Account
for the year ended 31st March, 2017

Dr. **Cr.**

Expenditure		Amount ₹	Income		Amount ₹
To Rent of hall	4,000		By Subscription	27,000	
(+) outstanding rent (c.y.)	400		Add: Subscription Advance (p.y)	500	
	4,400			27,500	
(-) Outstanding rent (p.y.)	800	3,600	Add: outstanding Subscription (c.y.)	1,700	
To Salaries		15,000		29,200	
To Dance Expenses		5,000	Less: Advance Subscription (c.y.)		
To supply of refreshment		7,000		2,500	
To Depreciation				26,700	
furniture (12500-11500)	1,000		Less:outstanding subscription (p.y.)		
Sports equipments (7000+20000-20000)	5,000	6,000		2,000	24,700
To Excess of Income Over Expenditure		7,800	By Sale of Refreshments		10,000
			By Sale of Dance Tickets		55,00
			By Interest on Investment		4,200
		44,400			44,400

Balance Sheet
As on 31st March, 2017

Liabilities		Amount ₹	Assets		Amount ₹
Capital fund	88,200		Sports material	7,000	
(+) Excess of income over expenditure	7,800		(+) Purchases	20,000	
				27,000	
(+) Entrance fees	4,000		(-) Depreciation	5,000	22,000
(+) Legacies	11,300	111,300	Furniture	12,500	
Advance subscription		2,500	(-) Depreciation	1,000	11,500

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Outstanding rent	400	Outstanding subscription	1,700
		Investment	60,000
		Cash in hand	19,000
	1,14,200		1,14,200

कार्यशील टिप्पणियां: 1. प्रारम्भिक पूँजी कोष की गणना

Balance Sheet
As on 31st March 2016

Liabilities	Amount ₹	Assets	Amount ₹
		Sports equipments	7,000
Capital Fund (B/F)	88,200	Subscription in arrears	2,000
		Furniture	12,500
Outstanding rent	800	Investment 4200x100/7	60,000
Advance subscription	500	Cash in hand	8,000
	89,500		89,500

2. वसीयत से प्राप्ति पूँजीगत प्रकृति की आय है अतः इन्हें पूँजी कोष में जोड़कर दिखाया गया है।

प्राप्ति व भुगतान खाता एवं आय व्यय खाते से चिठ्ठा बनाना
(Preparation of Balance sheet from Receipts and Payments Account and Income and Expenditure Account)

जब प्रश्न में प्रारम्भिक व अन्तिम चिठ्ठा, दिये गये प्राप्ति व भुगतान खाते व आय–व्यय खाते से बनाना हों तो निम्नांकित प्रक्रिया अपनायी जायेगी।

1. प्रारम्भिक चिठ्ठा बनाने हेतु प्रारम्भिक रोकड शेष (प्राप्ति व भुगतान खाते से) व अतिरिक्त सूचनाओं का उपयोग करेंगें साथ बकाया व अग्रिम की सूचना हेतु आय– व्यय खाते व प्राप्ति व भुगतान खाते की मदों का अन्तर देखेगें जो आगे समझाया हैं।

2. प्राप्ति व भुगतान खाते के नामे पक्ष व आय–व्यय खाते के जमा पक्ष की तुलना निम्नांकित ज्ञात करने हेतु करेंगे।

(i) चन्दे की बकाया रकम– पिछले वर्ष की प्रा. चिठ्ठे हेतु एवं इस वर्ष की अन्तिम चिठ्ठे हेतु **(ii)** अग्रिम आय **(iii)** वर्ष के दौरान सम्पति का विक्रय **(iv)** जो मदें पूंजीगत प्राप्ति है उन्हें सीधे चिठ्ठे में ले जाना है जैसे अक्षय निधि कोष, वसीयत से प्राप्ति, विशेष दान आदि।

3. इसी प्रकार प्राप्ति व भुगतान खाते के जमा पक्ष व आय व्यय खाते के नामे पक्ष की तुलना कर निम्नांकित सूचनाएं ज्ञात करेगें: **(i)** चालू वर्ष व पिछले वर्ष के बकाया व्यय **(ii)** पूर्वदत्त व्यय **(iii)** उपभोग योग्य सामग्री का स्टॉक **(iv)** वर्ष के दौरान सम्पति का क्रय **(v)** मूल्य ह्रास इस प्रक्रिया को निम्नांकित उदाहरण से स्पष्ट रूप से समझ सकेंगे।

उदाहरण 14: The Receipts and Payments Accounts and Income and Expenditure Account of a Club for the year ending 31st March, 2017 are as follows:

31 मार्च 2017 को समाप्त होने वाले वर्ष के लिए एक क्लब का प्राप्ति व भुगतान खाता व आय व्यय खाता निम्नानुसार है:

Receipts and Payments Account
for the Year Ending 31st March, 2017

Receipts		Amount ₹	Payments	Amount ₹
To Balance b/d		8,000	By Books Purchased	13,000
To subscription			By Salaries	14,000
2015-16	5,000		By Advertisement	1,000
2016-17	35,000		By Electricity expenses	1,000
2017-18	40,000	44,000	By Sundry Expenses	3,000
To Interest		4,000	By Office expenses	1,000
To Donations to special fund		1,500	By Balance c/d	28,000
To Rent				
2016-17	3,000			
2017-18	1,000	4,000		
		61,500		61,500

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Income and Expenditure Account
for the year ended 31st March, 2017

Expenditure	Amount ₹	Income	Amount ₹
To Office expenses	800	By Interest	3,800
To Salaries	15,000	By Subscription	37,000
To Sundry expenses	2,800	By Rent	3,000
To Depreciation on building	7,500		
To Electricity expenses	1,500		
To Advertisement	1,200		
To Excess of income over expenditure	15,000		
	43,800		43,800

It is informed that assets as on 1-4-16 included the following and there was no liabilities on that date: Building ₹ 16,000, Books ₹ 14,000, Furniture ₹ 10,000, Investments ₹ 45,000. You are asked to prepare the Balance Sheets of a club as on 1 April 2016 and 31st March, 2017.

यह सूचना दी गई है कि दिनांक 1-4-16 को सम्पतियों में निम्नांकित शामिल है तथा उक्त दिवस कोई दायित्व नहीं है। भवन ₹ 16,000, पुस्तकें ₹ 14,000, फर्नीचर ₹ 10,000, विनियोग ₹ 45,000, आपको क्लब का 1 अप्रैल 2016 व 31 मार्च 2017 का चिठ्ठा तैयार करना है।

हल:

Balance Sheet
As on 1st April, 2016

Liabilities	Amount ₹	Assets	Amount ₹
Capital fund (Balancing Figure)	3,68,200	Building	1,60,000
		Books	1,40,000
		Furniture	10,000
		Investments	45,000
		Accrued Interest	200
		Outstanding subscription	5,000
		Cash in hand	8,000
	3,68,200		3,68,200

Balance Sheet
As on 31st March, 2017

Liabilities		Amount ₹	Assets		Amount ₹
Capital fund	3,68,200		Building	10,6000	
Add: Excess Income Over Expenditure	15,000	3,83,200	(-) Depreciation	7,500	1,52,500
Donation for special fund		1,500	Books	1,40,000	
Outstanding Salaries		1,000	+ Purchases	13,000	1,53,000
Advance subscription		4,000	Furniture		10,000
Advance Rent		1,000	Investments		45,000
Outstanding Advertisement		200	Prepaid Office expenses		200
			Prepaid sundry expenses		200
			Outstanding subscription		2,000
			Cash-in-hand		28,000
		3,90,900			3,90,900

कार्यशील टिप्पणियां

1.प्रारम्भिक चिठ्ठा बनाते समय सभी प्रारम्भिक सम्पतियों के शेष व रोकड शेष लिया गया है। तत्पश्चात आय–व्यय खाता व प्राप्ति व भुगतान खाते की विभिन्न मदों को मिलाने पर निम्नांकित समायोजन प्राप्त हुए है:–

(क) प्राप्ति व भुगतान खाते में 2015-16 के ₹ 5,000 चन्दे के चालू वर्ष में प्राप्त हुए अर्थात यह राशि गत वर्ष का बकाया है। इसे सम्पति पक्ष में दिखायेंगे।

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

(ख) प्राप्ति व भुगतान खाते में ब्याज ₹ 4,000 प्राप्त दिखाया गया है जबकि आय–आय व्यय खाते में ₹ 3,800 दिखाया गया है अतः अन्तर की राशि ₹ 200 वर्ष 2016-17 में पिछले वर्ष 2015-16 की प्राप्त हुई है। अतः इसे 2015-16 के सम्पति पक्ष में दिखायेंगे।

2.अन्तिम चिठ्ठा बनाते समय सम्पतियों के प्रारम्भिक शेष में नई खरीदी सम्पतियां का मूल्य जोडते है तथा मूल्य ह्रास घटाते है इस प्रश्न में भवन के प्रा. मूल्य में से मूल्य ह्रास घटा देंगे (आय–व्यय खाते की सूचनानुसार) तथा नई पुस्तकें खरीदी (प्राप्ति व भुगतान खाते की सूचनानुसार) वह मूल्य जोड़ देंगे एवं प्राप्ति व भुगतान खाते से अन्तिम रोकड शेष दिखा देंगे।

3.इसके पश्चात आय व्यय–खाता एवं प्राप्ति व भुगतान खाता की मदों की रकम का मिलान करने पर निम्नांकित समायोजन प्राप्त हुए :

(क) बकाया चन्दा प्राप्ति व भुगतान खाते में 2016-17 में प्राप्त चन्दा ₹ 35,000 दिखाया है जबकि आय व्यय खाते में ₹ 37,000 दिखाया गया है अतः अन्तर की राशि ₹ 2,000 चालू वर्ष का बकाया चन्दा है इसे अन्तिम चिठ्ठे के सम्पति पक्ष में दिखायेंगे।

(ख) प्राप्ति व भुगतान खाते में 2017-18 का प्राप्त चन्दा ₹ 4,000 दिखाया है अर्थात यह राशि अग्रिम प्राप्त चन्दा है इसे अन्तिम चिठ्ठे के दायित्व पक्ष में दिखायेंगे।

(ग) इसी प्रकार प्राप्ति व भुगतान खाते में 2017-18 का किराया ₹ 1,000 प्राप्त दिखाया है अर्थात यह अग्रिम प्राप्ति है अतः इसे अन्तिम चिठ्ठे के दायित्व पक्ष में दिखायेंगे।

(च) प्राप्ति व भुगतान खाते में वेतन ₹ 14,000 दिखाया है जबकि आय–व्यय खाते में ₹ 15,000 अर्थात ₹ 1,000 अन्तर की राशि चालू वर्ष की बकाया वेतन है इसे चिठ्ठे के दायित्व पक्ष में दिखायेंगे।

(छ) प्राप्ति व भुगतान खाते में विज्ञापन ₹ 1,000 दिखाया है जबकि आय व्यय–खाते में ₹ 1,200 अर्थात ₹ 200 अन्तर की राशि चालू वर्ष का बकाया विज्ञापन व्यय है इसे चिठ्ठे के दायित्व पक्ष में दिखायेगें।

(ज) प्राप्ति व भुगतान खाते में विविध व्यय ₹ 3,000 दिखाये है जबकि आय व्यय खाते में ₹ 2,800 अर्थात ₹ 200 अन्तर की राशि चालू वर्ष में पूर्वदत्त भुगतान है अतः इसे अन्तिम चिठ्ठे के सम्पति पक्ष में दिखायेंगे।

(झ) प्राप्ति व भुगतान खाते में कार्यालय व्यय ₹ 1,000 जबकि आय व्यय खाते में ₹ 800 दिखाये गये हैं अर्थात ₹ 200 अन्तर की राशि चालू वर्ष में पूर्वदत्त भुगतान है अतः इसे चिठ्ठे के सम्पति पक्ष में दिखायेंगे।

आय व्यय खाते से प्राप्ति व भुगतान खाता बनाना
(Preparation of Receipts and Payments Account from Income and Expenditure Account)

कभी–2 प्रश्न में आय व्यय खाता एवं अतिरिक्त सूचनाएँ अथवा / व चिठ्ठा दिया हों उससे प्राप्ति व भुगतान खाता बनाने को कहा जाय तो प्रश्न हल करने के लिए निम्नांकित प्रक्रिया अपनायी जायेगीः

1. चालू वर्ष में सभी प्राप्तियां चाहें वे आयगत हो या पूंजीगत, पिछले वर्ष की हो या आगामी वर्ष की, इन सभी को प्राप्ति व भुगतान खाते के नाम में से दिखायेंगे।

2. चालू वर्ष में सभी भुगतान चाहे वे आयगत हो या पूंजीगत, पिछले वर्ष के हो या आगामी वर्ष से सम्बन्धित हो, इन सभी को प्राप्ति व भुगतान खाते के जमा पक्ष में दिखायेंगे।

3. प्रारम्भिक व अन्तिम रोकड बैंक शेष जो उपलब्ध है उन्हें प्राप्ति व भुगतान खाते में यथा स्थान दिखाना होगा।

4. वे सभी जो गैर रोकड मदें है यथा मूल्य ह्रास, डूबत ऋण आयोजन आदि नहीं दिखायी जायेगी साथ ही सम्पतियों को बेचने पर होने वाला लाभ/ हानि भी प्राप्ति व भुगतान खाते में नहीं दिखायेंगे।

5. सम्पतियों की क्रय राशि ज्ञात करने के लिए इनके प्रारम्भिक व अन्तिम शेष में मूल्य ह्रास आदि का समायोजन कर क्रय मूल्य ज्ञात करेगें।

6. पूर्वदत्त, अग्रिम, बकाया आदि समायोजनों का सम्बन्धित मदों पर रोकड प्रभाव देखकर तदनुसार सम्बन्धित मद का मूल्य प्राप्ति व भुगतान खाते में दिखा देंगे। जैसे आय–व्यय खाते में किराया चुकाया ₹ 5,000 दिखाया है तथा अन्तिम चिठ्ठे में बकाया किराया ₹ 1,000 दिखाया गया है तो प्राप्ति व भुगतान खाते में किराया चुकाया ₹ 4,000 ही दिखाया जायेगा। इसी प्रकार आय–व्यय खाते में चन्दा ₹ 15,000 दिखाया है तथा अन्तिम चिठ्ठे में अग्रिम चन्दा दायित्व पक्ष में ₹ 1,000 दिखाया है तथा बकाया चन्दा ₹ 2,000 सम्पति पक्ष में दिखाया है तो प्राप्ति व भुगतान खाते में चन्दे की राशि नामे पक्ष में ₹ 14,000 दिखाया जायेगा। इस प्रकार समायोजन पर रोकड के प्रभाव को पुनः समायोजित कर वास्तविक प्राप्ति या भुगतान राशि की प्राप्ति व भुगतान खाते में दिखाई जायेगी। इसे सरलता से निम्न प्रकार से समझा जा सकता हैं :–

(क) आय मद :–

आय व्यय खाते में चन्दे की दिखाई गई राशि	.....
(–) चालू वर्ष के अन्त में बकाया चन्दा	.....
(–) पिछले वर्ष प्राप्त अग्रिम चन्दा	.....
(+) पिछले वर्ष का बकाया चन्दा जो इस वर्ष प्राप्त हुआ	.....
(+) चालू वर्ष में प्राप्त अग्रिम चन्दा	.....
चालू वर्ष में प्राप्ति व भुगतान खाते में दिखायी जाने वाली चन्दें की राशि	.....

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

(ख) व्यय मद :–

आय–व्यय खाते में वेतन की दिखाई राशि	.....
(–) चालू वर्ष के अन्त में बकाया	.....
(–) पिछले वर्ष अग्रिम चुकाया वेतन (जो इस वर्ष से सम्बन्धित हैं)	.....
(+) पिछले वर्ष का बकाया वेतन (जो इस वर्ष चुकाया गया)	.....
(+) चालू वर्ष में आगामी वर्ष का वेतन अग्रिम चुकाया	.....
वर्ष में प्राप्ति व भुगतान व खाते में दिखाई जाने वाली वेतन की राशि	.....

(ग) स्टेशनरी / उपभोग योग्य सामग्री आदि के लिए चुकाई गई राशि की गणना :–

स्टेशनरी की आय–व्यय खाते में दिखायी राशि	.....
(–) स्टेशनरी का प्रारम्भिक स्टॉक	.....
(+) स्टेशनरी का अन्तिम स्टॉक	.....
(–) स्टेशनरी हेतु पिछले वर्ष अग्रिम चुकाया	.....
(+) चालू वर्ष में, आगामी वर्ष हेतु स्टेशनरी का अग्रिम चुकाया	.....
(–) चालू वर्ष के अन्त में स्टेशनरी के लेनदार	.....
(+) चालू वर्ष के प्रारम्भ में स्टेशनरी के लेनदार (अर्थात पिछले वर्ष के लिए जो भुगतान इस वर्ष किया)	.....
वर्ष में प्राप्ति व भुगतान खाते में स्टेशनरी की दिखायी जाने वाली राशि	.....

उदाहरण 15 :

31 मार्च 2017 को समाप्त होने वाले वर्ष का आय–व्यय खाते व अन्य सूचनाओं से 31 मार्च 2017 को समाप्त वर्ष का प्राप्ति व भुगतान खाता बनाईये तथा उक्त तिथि का चिठ्ठा बनाइये।

From Income and Expenditure Account for the year ending 31st March, 2017 and from additional informations, prepare Receipts and Payments Accounts for the year ending 31st March, 2017 and Balance Sheet on that date.

Income and Expenditure Account
For the year ended 31st March, 2017

Expenditure		Amount ₹	Income	Amount ₹
To Salaries		55,000	Subscription	1,00,000
To Audit fees		2,500	Entrance fees	5,000
To Insurance		5,500	Receipts from entertainments	30,000
To Honorarium		10,000	Rent from hire of ground	10,000
To Stationary		7,500		
To Entertainment Expenses		26,500		
To Depreciation on Building	5,000			
Furniture	2,000			
Sports equipment	20,000	27,000		
Excess of Income over Expenditure		11,000		
		1,45,000		1,45,000

Additional Informations :अतिरिक्त सूचनाएँ

	31-3-16 ₹	31-3-17 ₹
बकाया चन्दा (Outstanding Subscription)	9,000	15,000
अग्रिम चन्दा (Subscription received in advance)	10,000	7,000
बकाया वेतन (Outstanding Salaries)	5,000	4,000
पूर्वदत्त बीमा (Prepaid insurance)	-----	500
स्टेशनरी का स्टॉक (Stock of Stationary)	10,000	5,000
स्टेशनरी के लेनदार (Creditors for Stationary)	4,000	2,000
भवन (Buildings)	1,00,000	2,00,000

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

फर्नीचर (Furniture)	20,000	18,000
अंकेक्षण शुल्क (Audit fees)	---	2,500
बैंक ऋण (Bank Loan)	40,000	40,000
खेल यंत्र (Sports Equipments)	50,000	40,000
रोकड शेष (Cash in hand)	?	15,000

50% प्रवेश शुल्क पूँजीकृत किया हैं। 50% Entrance fees has been capitalized.

हलः

Receipts and Payments Account
for the year ending 31st March, 2017

Receipts	Amount ₹	Payments	Amount ₹
To Balance b/d (B/F)	92,000	By Salaries	56,000
To Subscriptions	91,000	By Insurance	6,000
To Entrance fees	10,000	By Honorarium	10,000
To Receipts from Entertainment	30,000	By Stationary	4,500
To Rent from hire of ground	10,000	By Expenses on Entertainment	26,500
		By Buildings	10,500
		By Sports equipments	10,000
		By Cash in hand	15,000
	2,33,000		2,33,000

Balance Sheet
As on 31st March, 2017

Liabilities		Amount ₹	Assets	Amount ₹
Capital fund	2,22,000		Building	2,00,000
+ Surplus	11,000		Furniture	18,000
Entrance fees	5,000	2,38,000	Sports equipments	40,000
Bank loan		40,000	Stock of stationary	5,000
Outstanding audit fees		2,500	Prepaid Insurance	500
Creditors for stationary		2,000	Outstanding subscription	15,000
Outstanding salaries		4,000	Cash-in-hand	15,000
Advance subscription		7,000		
		2,93,500		2,93,500

कार्यशील टिप्पणियां

1. चन्दे की राशि जो प्राप्ति व भुगतान खाते में दिखायी है :–

		₹
चन्दे की राशि आय व्यय खाते के अनुसार		1,00,000
(+) 2015–16 का बकाया चन्दा जो चालू वर्ष में प्राप्त हुआ	9,000	
(+) चालू वर्ष में 2017–18 का अग्रिम प्राप्त चन्दा	7,000	16,000
		1,16,000
(–) चालू वर्ष का बकाया चन्दा	15,000	
(–) चालू का चन्दा जो 2015–16 में प्राप्त हुआ	10,000	25,000
		91,000

2. प्रवेश शुल्क जो प्राप्ति व भुगतान खाते में दिखाया गया हैः–

	₹
आय–व्यय खाते के अनुसार	5,000
(+) पूंजीकृत भाग	5,000
	10,000

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

3. वेतन जो प्राप्ति व भुगतान खाते में दिखाया गया है:–

	₹
आय–व्यय खाते के अनुसार	55,000
(+) 2015–16 का बकाया चन्दा जो चालू वर्ष में प्राप्त हुआ	5,000
	60,000
(–) 2016–17 का बकाया चन्दा	4,000
	56,000

4. अंकेक्षण शुल्क जो प्राप्ति व भुगतान खाते में दिखाया गया है :–

	₹
आय–व्यय खाते के अनुसार	2,500
(+) 2016–17 में बकाया अंकेक्षण शुल्क	2,500
	---

5. बीमा व्यय जो प्राप्ति व भुगतान खाते में दिखाया गया है :–

	₹
आय–व्यय खाते के अनुसार	5,500
(+) 2015–16 का बकाया जो इस वर्ष चुकाया	500
	6,000

6. स्टेशनरी जो प्राप्ति व भुगतान खाते में दिखाई गई हैं :–

	₹
आय–व्यय खाते के अनुसार	7,500
(+) 31.3.17 को स्टॉक	5,000
(:+) 2015–16 के लेनदार जिन्हें इस वर्ष भुगतान किया	4,000
	16,500
(–) 1.4.16 का स्टॉक	10,000
(–) 2016–17 के अन्त में लेनदार जिन्हें चुकाना बाकी हैं	2,000
	4,500

7. भवन की राशि जो प्राप्ति व भुगतान खाते में दिखायी हैं :–

	₹
अन्तिम शेष	2,00,000
(+) मूल्य ह्रास	5,000
	2,05,000
(–) प्रारम्भिक शेष	1,00,000
भवन क्रय	1,05,000

8. खेल यंत्र की राशि जो प्राप्ति व भुगतान खाते में दिखायी हैं :–

	₹
अन्तिम शेष	40,000
(+) मूल्य ह्रास	20,000
	60,000
(–) प्रारम्भिक शेष	50,000
खेल यंत्र क्रय	10,000

9. प्रारम्भिक पूँजी कोष की गणना

Balance sheet
As on 1 April, 2016

Liabilities	Amount ₹	Assets	Amount ₹
Capital fund (b/f)	2,22,000	Buildings	1,00,000
Bank loan	40,000	Furniture	20,000
Creditors for stationary	4,000	Sports equipments	50,000
Outstanding salaries	5,000	Stock of stationary	10,000
Advance subscription	10,000	Outstanding subscription	9,000
		Cash in hand	92,000
	2,81,000		2,81,000

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

व्यापारिक क्रियाओं से होने वाले लाभ/ हानि का लेखांकन
(Accounting for profit/loss from Trading Activities)

कभी –2 एक संस्था कोई व्यापारिक क्रिया भी करती हैं जैसे एक क्लब, एक रेस्टोरेन्ट भी चलाता है या एक अस्पताल दवा की दुकान भी चलाती है तो ऐसी प्रत्येक व्यापारिक क्रिया का पृथक– 2 व्यापार लाभ–हानि खाता बनाया जायेगा तथा इस प्रकार ज्ञात लाभ/हानि को आय–व्यय खाते में दिखायेंगे। व्यापार व लाभ– हानि खाता ठीक उसी प्रकार बनाया जाता है। जैसा व्यापारिक संस्था का बनाया जाता है जिसे पिछले वर्ष अध्ययन कर चुके है।

प्राप्ति भुगतान खाता व आय व्यय खाते में अन्तर
Difference between Receipts and Payments Account and Income and Expenditure Account

आधार	प्राप्ति व भुगतान खाता	आय–व्यय खाता
1. उद्देश्य	इसका उद्देश्य अन्तिम रोकड शेष ज्ञात करना होता है।	इसका उद्देश्य संस्था की गतिविधियों से आर्थिक परिणाम ज्ञात करना है अर्थात आधिक्य/न्यूनता ज्ञात करना।
2. स्वरूप	यह रोकड बही का संक्षिप्त रूप है	यह लाभ–हानि खाते के समान है।
3. प्राप्तियों की प्रकृति	इसमें सभी प्रकार की प्राप्तियां चाहे आयगत हो या पूंजीगत दिखाई जाती हैं।	इसमें केवल आयगत प्रकृति की प्राप्तियां ही दिखाई जाती है।
4. भुगतानों की प्रकृति	इसमें सभी प्रकार के भुगतान, चाहे वे पूंजीगत प्रकृति के हो या आयगत प्रकृति के हो, दिखाते हैं।	इसमें केवल आयगत भुगतान ही दिखाये जाते है।
5. पक्ष	इसके नामे पक्ष में प्राप्तियां व जमा पक्ष में भुगतान दिखाते हैं।	इसके नामे पक्ष में व्यय तथा जमा पक्ष में आय की मदें दिखाते हैं।
6. समायोजन	यह रोकड लेखांकन की रोकड पद्धति पर आधारित हैं तथा कोई समायोजन नहीं दिखाते हैं।	यह लेखांकन की व्यापारिक लेखा पद्धति पर आधारित हैं तथा इसमें समायोजन दिखाये जाते हैं।
7. प्राप्तियों की अवधि	सभी प्राप्तियां चाहे किसी भी अवधि के हो दिखायी जाती हैं।	केवल ऐसी आयगत प्राप्तियों जो चालू वर्ष से सम्बन्धित हैं, दिखाते हैं।
8. भुगतानों की अवधि	सभी भुगतान चाहे किसी भी अवधि के हो, दिखाये जाते है।	केवल ऐसे आयगत भुगतान जो चालू वर्ष से सम्बन्धित है, दिखाये जाते हैं।
9. ह्रास व हानियाँ	इन्हें नहीं दिखाया जाता है।	इन्हें दिखाया जाता है।
10. शेष	रोकड बही का प्रारम्भिक व अन्तिम शेष दिखाये जाते हैं।	इसमें रोकड बही के प्रारम्भिक व अन्तिम शेष नहीं दिखाते हैं।

सारांश (Summary)

– **गैर–व्यापारिक संस्था** :– दातव्य या सामाजिक उद्देश्य की पूर्ति के लिए बनाई गई संस्था, जिसका उद्देश्य लाभ कमाना नहीं हैं।

– **गैर–व्यापारिक संस्था द्वारा रखी जाने वाली प्रमुख पुस्तकें**:–रोकड बही, सदस्यता रजिस्टर, सम्पतियों का रजिस्टर

– **प्राप्ति व भुगतान खाता**:–यह रोकड बही का सारांश है एक ही प्रकार की आय/व्यय की मदों को समूहीकृत करके एक साथ दिखाई जाती है। यह एक वास्तविक खाता है जिसमें एक अवधि की समस्त प्राप्तियां व भुगतान चाहे वे आयगत हो या पूँजीगत दिखाये जाते हैं। गैर रोकड व्यवहार नहीं दिखाये जाते हैं। (चाहे किसी भी अवधि की हो)। यह खाता रोकड का शेष प्रकट करता है।

– **आय व्यय खाता**:– एक गैर–व्यापारिक संस्था की एक अवधि के आर्थिक परिणामों को ज्ञात करने की लिए बनाया जाने वाला विवरण है यह नाम मात्र प्रकृति का खाता है तथा लाभ–हानि खाते के नियमों के अनुरूप बनाया जाता है। इसमें इस अवधि की आयगत आय–व्यय ही दिखायी जाती है। चाहे वह बकाया हो या अग्रिम। गैर रोकड व्यय एवं सम्पतियों के बेचने से लाभ/हानि भी दिखाते हैं। इसका शेष इस अवधि में आय का व्यय पर आधिक्य या व्यय का आय पर आधिक्य दिखाता है।

– **विशिष्ट कोष** :– किसी विशिष्ट उद्देश्य के लिए बनाये गये कोष जिन्हें प्रतिबन्धित कोष भी कहा जाता है। यह पूँजीगत प्रकृति के होते हैं इस उद्देश्य के लिए किये गये व्यय इसी में से घटाते हैं तथा प्राप्तियों इसी में जोडते हैं तथा शेष चिठ्ठे के दायित्व पक्ष में दिखाते हैं। व्यय की राशि कोष से अधिक होने पर आय व्यय खाते के नामे पक्ष से दिखाते हैं।

– **सामान्य कोष** :– ऐसे कोष जो किसी उद्देश्य विशेष के लिए नहीं है उन्हें सामान्य कोष कहते है इन्हें पूँजी कोष में भी स्थानान्तरित किया जा सकता है अथवा किसी भी उद्देश्य के लिए इनका उपयोग किया जा सकता है।

– **प्रवेश शुल्क** :– नये सदस्य के प्रवेश पर एक बारगी ली जाने वाली राशि प्रवेश शुल्क कहलाती है यह नये सदस्य के बनाने पर होने वाले अतिरिक्त व्यय पूर्ति के लिए है अतः आयगत प्रकृति का है किन्तु प्रश्न में विपरीत बात कहने पर उतनी राशि पूँजीगत मानी जाती है।

– **आजीवन सदस्यता शुल्क** :– संस्था का सदस्य वार्षिक शुल्क देने के बजाय एक मुश्त राशि दे देता है। यह प्राप्ति पूँजीगत प्राप्ति है अतः पूँजी कोष में जोडना होगा।

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

– **सामान्य दान व विशिष्ट दान** :– बिना किसी शर्त के साथ दिया गया उपहार सामान्य दान कहलाता है आय–व्यय खाते में दिखाते है तथा विशिष्ट उद्देश्य के लिए प्राप्त दान पूंजीगत प्रकृति के होने के कारण चिठ्ठे के दायित्व पक्ष में दिखाते हैं तथा उसी उद्देश्य की पूर्ति के लिए उपयोग में लेते हैं।

– **सरकार या अन्य संस्थाओं से सहायता** :– यदि सहायता किसी विशिष्ट कार्य के लिए प्राप्त हुई तो पूँजीगत प्रकृति की है तथा चिठ्ठे के दायित्व पक्ष में दिखायेंगे तथा यदि दैनिक क्रियाकलापों हेतु प्राप्त हुई तो आयगत होने के कारण आय –व्यय खाते में आय पक्ष में दिखायेंगे।

प्रमुख– शब्दावली (Key Terms)

– **चन्दा** (**Subscription**): गैर व्यापारिक संस्था के सदस्यों द्वारा नियमित रूप से सावधिक दी जाने वाली एक निश्चित राशि चन्दा कहलाती है जिससे उनकी सदस्यता बरकरार रहे।

– **वसीयत के अन्तर्गत प्राप्ति** (**Legacy**): एक मृतक व्यक्ति की वसीयत के अनुसार कोई राशि/सम्पति गैर–व्यापारिक संस्था को प्राप्त होती है तो इसे वसीयत के अन्तर्गत प्राप्ति कहते हैं। यह सामान्यतया विशिष्ट उद्देश्य के लिए प्राप्त होती है।

– **मानदेय** (**Honorarium**): सेवा प्रदान करने के बदले संस्था के कर्मचारी के अतिरिक्त अन्य व्यक्ति को किये जाने वाले भुगतान मानदेय कहलाते है।

– **अक्षय निधि** (**Endownment fund**): किसी गैर व्यापारिक संस्था को दान दी गई राशि/सम्पति जिसकी आय का उपयोग दान दाता द्वारा बताये उद्देश्य के लिए किया जायेगा तथा मूल उपहार सदा यथा स्थिति में रहेगा अर्थात उसका उपभोग नहीं किया जायेगा।

– **चिठ्ठा** :– एक संस्था की निश्चित तिथि की वित्तीय स्थिति चित्रण करने वाला विवरण पत्र हैं।

– **सहायता** (**Aid**): विशिष्ट या सामान्य उद्देश्य की पूर्ति के लिए गैर–व्यापारिक संस्था को सरकार या अन्य से प्राप्त राशि सहायता कहलाती हैं।

अभ्यासार्थ प्रश्न (Questions for Exercise)

बहुचयनात्मक प्रश्न (Multiple choice questions)

1. गैर व्यापारिक संस्थाओं का मूल उद्देश्य होता है :–
   (अ) लाभ कमाना **(ब)** जन कल्याणकारी कार्य **(स)** व्यवसाय करना **(द)** उपरोक्त में से कोई नहीं

The main object of Non trading Organisations is :
   (a) To earn Profit **(b)** Public welfare work **(c)** To do business **(d)** Non of the above

2. प्राप्ति व भुगतान खाता————————खाता है :–
   (अ) वस्तुगत **(ब)** नाम मात्र **(स)** व्यक्तिगत **(द)** उपरोक्त में से कोई नहीं

Receipts and Payments Account is a ----------Account :
   (a) Real **(b)** Nominal **(c)** Personal **(d)** None of the above

3. आय–व्यय खाता एक ————————खाता है।
   (अ) लाभ कमाना **(ब)** जन कल्याणकारी कार्य **(स)** व्यवसाय करना **(द)** उपरोक्त में से कोई नहीं

Income and Expenditure Account is a ---------- Account.
   (a) Real **(b)** Nominal **(c)** Personal **(d)** None of the above

4. आय–व्यय खाता में ————————मदें ही दिखाई जाती हैं।
   (अ) केवल आयगत **(ब)** केवल पूंजीगत **(स)** आय व पूँजीगत दोनों **(द)** उपरोक्त में से कोई नहीं

In Income and Expenditure Account----------items are shown.
   (a) Only revenue **(b)** Only Capital **(c)** revenue and Capital both **(d)** None of the above

5. आय–व्यय खाता ———————— के आधार पर बनाया जाता है।
   (अ) उपार्जन अवधारणा **(ब)** रोकड़ अवधारणा **(स)** इकहरी प्रविष्ठि अवधारणा **(द)** उपरोक्त में से कोई नहीं

Income and Expenditure Account is prepared on the basis of.
   (a) Accrual concept **(b)** Cash concept **(c)** Single entry concept **(d)** None of the above

6. आजीवन सदस्यता शुल्क आय–व्यय खाते व चिठ्ठे में किस जगह दिखाया जाएगा।
   (अ) आय–व्यय खाते के नामें पक्ष में **(ब)** चिठ्ठे के सम्पति पक्ष में
   (स) आय–व्यय खाते के जमा पक्ष में **(द)** चिठ्ठे के दायित्व पक्ष में

   Where the Life Membership Fees will be shown in Income and Expenditure Account and in Balance Sheet.
   (a) In debit side of Income and Expenditure **(b)** Assets side of Balance Sheet
   (c) In credit side of Income and Expenditure **(d)** In liabilities side of Balance Sheet

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

7. प्राप्ति व भुगतान खाते में ————————मदें दिखाई जाती हैं।
(अ) पूंजीगत **(ब)** आयगत **(स)** पूंजीगत व आयगत **(द)** उपरोक्त में से कोई नहीं
In Receipts and Payments Account----------items are shown.
(a) Captial **(b)** Revenue (c) Captial and Revenue **(d)** None of the above

8. यदि खेलकूद कोष ₹ 2,00,000 प्रारम्भिक है तथा इसे पृथक से 8% वार्षिक ब्याज दर पर विनियोग कर रखा है तथा वर्ष के दौरान खेलकूद आयोजन पर ₹ 15,000 व्यय हुए हो तो वर्ष के अन्त में चिठ्ठे में दिखाई जाने वाली राशि होगी।
(अ) ₹ 2,01,000 **(ब)** ₹ 1,99,000 **(स)** ₹ 1,85,000 **(द)** ₹ 2,16,000
If opening sports fund is ₹ 2,00,000. It is invested seperately @ 8% p.a. interest. Expenses made ₹ 15,000 during the year on sports tournament which amount of sports fund shown in the Balance Sheet at the end of the year.
(a) ₹ 2,01,000 **(b)** ₹ 1,99,000 **(c)** ₹ 1,85,000 **(d)** ₹ 2,16,000

9. यदि स्टेशनरी का प्रारम्भिक स्टॉक ₹ 5,000, अंतिम स्टॉक ₹ 3,000, वर्ष के दौरान स्टेशनरी नगद खरीदी ₹ 20,000 इस व्यवहार को प्राप्ति व भुगतान खाते में किस प्रकार दिखाएंगे।
(अ) भुगतान पक्ष में ₹ 22,000 **(ब)** भुगतान पक्ष में ₹ 20,000
(स) भुगतान पक्ष में ₹ 28,000 **(द)** उपरोक्त में से कोई नहीं
If opening stock of stationary at the beginning ₹ 5,000. at the end ₹ 3,000. stationary purchased in cash during the year for ₹ 20,000. How this transcation will dealt in Receipts and Payments Account.
(a) Payment side ₹ 22,000 **(b)** Payment side ₹ 20,000
(c) Payment side ₹ 28,000 **(d)** None of the above

10. निम्नलिखित सूचनाओं के अन्तिम चिठ्ठे में दिखाये जाने वाले बकाया चन्दे की राशि ज्ञात करो। प्रारम्भिक बकाया चन्दा ₹ 10,000, वर्ष के दौरान प्राप्त चन्दा ₹ 20,000 जिसमें प्रारम्भिक बकाया चन्दा प्राप्ति ₹ 6,000 तथा अग्रिम प्राप्त चन्दा ₹ 7,000 शामिल है। क्लब के 50 सदस्य हैं। प्रत्येक ₹ 400 वार्षिक चन्दा देता है।
(अ) ₹ 20,000 **(ब)** ₹ 21,000 **(स)** ₹ 11,000 **(द)** ₹ 13,000
From the following informations, calculate the amount of outstanding subscription which is shown in closing Balance Sheet. Opening outstanding subscription ₹ 10,000, subscription received during the year ₹ 20,000, in which opening outstanding subscription received ₹ 6,000 and advance subscription ₹ 7,000 is included. There are 50 members, each pays ₹ 400 annual subscription.
(a) ₹ 20,000 **(b)** ₹ 21,000 **(c)** ₹ 17,000 **(d)** ₹ 13,000

अति लघूत्तरात्मक प्रश्न (Very short answer type questions)

1. गैर–व्यावसायिक संस्थाओं की कोई दो विशेषताएं बताओ।
State two characteristics of a non-trading concerns.

2. व्यापारिक संस्थाओं व गैर–व्यापारिक संस्थाओं में कोई दो अन्तर लिखो।
Give any two differences between trading organisations and non-trading organisations.

3. गैर–व्यापारिक संस्थाओं द्वारा रखी जाने वाली पुस्तकों के नाम लिखो।
Give the name of books-kept by non-trading organisations.

4. गैर व्यावसायिक संस्थाओं द्वारा बनाये जाने वाले वित्तीय विवरण कौन–2 से हैं ?
Which financial statements are prepared by non- trading organisations?

5. जब आय व्यय खाता बनाया जाता है उस समय आजीवन सदस्यता शुल्क का लेखांकन व्यवहार किस प्रकार करेंगे ?
What accounting treatment is made for life membership fees, when Income and Expenditure Account is prepared?

6. 'वसीयत से प्राप्ति' से आप क्या समझते हैं ?
What do you understand by 'Legacies?

7. अक्षय निधि कोष से आप क्या समझते हैं ?
What do you mean by Endownment-fund?

8. आय व्यय खाता बनाते समय विशिष्ट दानों का लेखांकन व्यवहार किस प्रकार करेंगे ?
What is the accounting treatment for specific donation while preparing Income and Expenditure Account?

9. ''सामान्य दान'' का आय व्यय खाते में किस प्रकार लेखा करेंगे ?
How you will deal with 'General Donation' while recording in Income and Expenditure Account?

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

10. आय–व्यय खाते से आप क्या समझते है ?
What do you mean by Income and Expenditure Account?
11. आय–व्यय खाता एवं अन्तिम चिठ्ठा तैयार करते समय सम्पति की बिक्री का लेखा किस प्रकार करेंगे ?
How will you treat sale of an asset while preparing Income and Expenditure Account and closing Balance Sheet?
12. ऐसी दो मदों के नाम लिखो जो प्राप्ति व भुगतान खाते में नहीं दिखाई जाती हैं।
Write the name of such two items and examples which do not appear in Receipt and Payment Account?
13. यदि खेल आयोजन कोष ₹ 50,000 हो तथा खेल आयोजन व्यय ₹ 32,000 का हो तो आय–व्यय खाते व अन्तिम चिठ्ठे में किस प्रकार दिखायेंगे ?
If tournament fund is ₹ 50,000 and Tournament expenses are ₹ 32,000, How it is treated in Income and Expenditure Account and closing Balance Sheet?.
14. प्राप्ति व भुगतान खाता व रोकड बही में कोई दो अन्तर लिखो।
Write any two differences between Receipts and Payments Account and Cash book.
15. आय व्यय खाते की कोई दो विशेषताएं बताइये।
List any two features of an Income and Expenditure Account.

लघूत्तरात्मक प्रश्न (Short Answer type questions)

1. चन्दे की मद को एक क्लब के आय–व्यय खाता बनाते समय किस प्रकार व्यवहार करेंगे ?
How will you treat "subscription" in case of accounts of a club?
2. निम्नांकित सूचनाओं से चन्दे की राशि आय व्यय खाते में किस प्रकार दिखायेंगे ?
From the following informations, calculate amount of subscription, which will be shown in Income and Expenditure Account.

		₹
01-04-16	Subscription in Arrears बकाया चन्दा	15,000
	Subscription Received in advance प्राप्त अग्रिम चन्दा	5,000
31-03-17	Subscription in Arrears बकाया चन्दा	6,000
	Subscription Received in advance प्राप्त अग्रिम चन्दा	10,000
	Subscription received during the year 2016-17 2016–17 वर्ष के दौरान प्राप्त चन्दा	50,000

उत्तरः Subscription to be credited Income & Expenditure Account ₹ 36,000

3. निम्नांकित परिस्थिति को आय–व्यय खाते में किस प्रकार दिखायेंगे ?
How will you deal with the following case while preparing Income and Expenditure Account?

	1-4-16 ₹	31-3-16 ₹
स्टेशनरी स्टॉक Stock of Stationary	500	200
स्टेशनरी के लिए लेनदार Creditors of Stationary	300	300
स्टेशनरी हेतु अग्रिम भुगतान Advance Paid for Stationary	100	150

वर्ष के दौरान स्टेशनरी की राशि चुकाई ₹ 2,500, Amount paid for stationary during 2016-17 was ₹ 2,500.
उत्तरः ₹ 2,750

4.फर्नीचर का पुस्तक मूल्य 1-4-16 को ₹ 50,000 हैं आधा फर्नीचर प्रारम्भिक पुस्तक मूल्य से 20% हानि पर 30-09-16 को बेच दिया, फर्नीचर पर 10% वार्षिक दर से मूल्य ह्रास लगाया जाता है। 31-03-2017 को बनाये जाने वाले आय–व्यय खाता एवं उस दिन के चिठ्ठे में उक्त मदों को किस प्रकार दिखाया जायेगा ?
Book-value of furniture on 1-4-16 is ₹ 50,000, Half of the furniture is sold at a loss of 20% on opening book value on 30-09-16, furniture is depreciated @ 10% p.a.? How above items will be shown in Income and Expenditure Account and in Balance Sheet on that date.
उत्तरः– Loss on sale of furniture ₹ 3,750, Depreciation ₹ 3,750, Balance sheet Furniture ₹ 22,500.

5. निम्नांकित सूचनाओं से 31 मार्च 2017 को समाप्त होने वाले वर्ष के आय–व्यय खाते व उसी दिन के चिठ्ठे में एक क्लब के लॉकर किराये की मद को किस प्रकार दिखायेंगे ?
How will locker rent of a club will dealt in Income and Expenditure Account for the year ended 31st March, 2017 and balance sheet on that date?

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

	1-4-16 ₹	31-3-17 ₹
Out standing Locker Rent	500	700
Advance locker rent	300	400
Locker rent recieved during 16-17 ₹ 5,000		

उत्तरः ₹ 5,100 आय–व्यय खाते मे तथा अन्तिम चिठ्ठे में सम्पति पक्ष में ₹ 700 व दायित्व पक्ष में ₹ 400

6. वर्ष 2016–17 के दौरान प्राप्त चन्दा निम्नानुसार हैः–

2015–16 ₹ 2,000 2016–17 ₹ 25,000 2017–18 ₹ 1,000

क्लब में ₹ 100 सदस्य है, प्रतिवर्ष ₹ 300 प्रति सदस्य चन्दा देय है। 31 मार्च 2017 के आय व्यय खाते व उसी दिन के चिठ्ठे में चन्दे को किस प्रकार दिखायेगें।

There are ₹ 100 members of a club, each paying ₹ 300, as annual subscription. How subscription will be shown in Income and Expenditure Accounts for the year ending 31st March, 2017 and in Balance Sheet on that date.

उत्तरः आय–व्यय खाते में ₹ 30,000, अन्तिम चिठ्ठे के दायित्व पक्ष में ₹ 1,000, सम्पति पक्ष में ₹ 5,000

7. निम्नांकित सूचनाओं से 31 मार्च 2017 को समाप्त होने वाले वर्ष के आय–व्यय खाते में एवं उसी दिन के चिठ्ठे में चन्दे की दिखाई जाने वाली राशि बताइये।

From the following informations, how subscription will be shown in Income and Expenditure Account for year ending 31st March, 2017 and in Balance Sheet on that date.

		₹
1-4-16	Subscription in arrears	1,000
	Subscription received in advance	2,000
31-3-17	Subscription in Arrears (including ₹ 500 related to 2015-16)	3,000
	Subscription received in Advance	500
	Subscription received during 2016-17	50,000

उत्तरः– Income and Expenditure Account ₹ 54,500 in credit side; Balance sheet outstanding ₹ 2,500+ 500 = ₹ 3,000 in assets side and advance ₹ 500 in liabilities side.

8. निम्नांकित सूचनाओं से 31 मार्च 2017 को समाप्त होने वाले वर्ष के आय–व्यय खाता व उसी दिन के चिठ्ठे में दिखाई जाने वाली विविध व्यय की राशि बताइये।

Calculate the amount of sundry expenses which is shown in Income and Expenditure Account for the year ending 31st March, 2017 and Balance Sheet on that date from the following informations:.

	1-4-16 ₹	31-3-17₹
Prepaid sundry expenses (पूर्वदत्त विविध व्यय)	100	200
outstanding sundry expenses (बकाया विविध व्यय)	500	400
Sundry expenses paid during the year ₹ 5,000 (वर्ष के दौरान विविध व्यय चुकाये ₹ 5,000)		

उत्तरः– ₹ 4,800 in debit side of Income and Expenditure Accounts and ₹ 400 in liabilities and ₹ 200 in assets side.

9. निम्नांकित सूचनाओं से 31 मार्च 2017 को समाप्त होने वाले वर्ष के आय– व्यय खाते व उसी दिन के चिठ्ठे में खेल कोष की दिखाई जाने वाली राशि ज्ञात करो

From the following informations, calculate the amount of sports fund, which will be shown in Income and Expenditure Account for the year ending 31st March, 2017 and Balance Sheet on that date.

	₹
Sports fund 1-4-16 (खेल कोष 1-4-16)	1,00,000
10% Sports fund investment 1-4-16 (10% खेल कोष विनियोग 1-4-16)	1,00,000
Received Donation for sports during the year 2016-17 (खेलों के लिए वर्ष 2016-17 में दान प्राप्त किया)	25,000
Interest on sports fund investments खेल कोष के विनियोग पर ब्याज	10,000
Expenses on sports event खेल कार्यक्रम पर व्यय	40,000

उत्तर :– Balance sheet liabilities side ₹ 9,5000, in assets side ₹ 1,00,000

10. निम्नांकित सूचनाओं से 31 मार्च 2017 को समाप्त होने वाले वर्ष के आय–व्यय खाते व उसी दिन के चिठ्ठे में दिखाई

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

जाने वाली चिकित्सा सहायता कोष की राशि ज्ञात करो।

From the following informations Calculate the amount of medical relief fund, which will be shown in Income and Expenditure Account for the year ending 31st March, 2017 and the Balance Sheet on that date:

	₹
Opening Balance of medical relief fund चिकित्सा सहायता कोष का प्रारम्भिक शेष	2,50,000
Donation received towards sports fund during the year खेल कोष के लिए वर्ष के दौरान प्राप्त दान	70,000
Expenses paid for medical camp during the year चिकित्सा कैम्प पर वर्ष के दौरान व्यय किये।	3,50,000

उत्तर :– Income & Expenditure Account ₹ 30,000

11. निम्नांकित सूचनाओं 31 मार्च 2017 को समाप्त होने वाले वर्ष के आय व्यय खाते व उस दिन बनाये जाने वाले चिठ्ठे में दिखाई जाने वाली पर्यावरण कोष की राशि ज्ञात करो।

From the following informations, calculate the amount which will be shown in Income & Expenditure Account for the year ending 31st March, 2017 with regard to Environment Fund:

	₹
Enviroment fund पर्यावरण कोष (1-4-16)	6,00,000
10% Environment fund investment 10% पर्यावरण कोष विनियोग (1-4-16)	3,00,000
Expenses incurred on ennviroment awareness during the year वर्ष के दौरान पर्यावरण जागरूकता के लिए किये गये व्यय	2,00,000
Donation received towards the enviromnent programmes वर्ष के दौरान पर्यावरण कार्यक्रम के लिए दान	50,000
Interest received from fund investment कोष में विनियोग पर प्राप्त ब्याज	25,000

उत्तर : Balance Sheet Liabilities side ₹ 4,80,000, Asset Side, ₹ 3,00,000 and Accured Interest on investment ₹ 5,000

12. निम्नांकित सूचनाओं से एक क्लब का 1 अप्रेल 2016 का पूँजी कोष ज्ञात करो।

From the following informations, calculate capital fund of a club as on 1st April 2016:

1. subscription outstanding on 1-4-16 ₹ 3,000.
2. Opening balances of assets are: Stock of stationary ₹ 5,000, Furniture ₹ 50,000, Building ₹ 20,0000 Rent paid during the year 2016-17 ₹ 6,000, it includes ₹ 1,000 of previous year. Opening cash balance ₹ 1,000

1. चन्दा बकाया 1-4-16 ₹ 3,000
2. सम्पतियों का प्रारम्भिक शेष स्टेशनरी स्टॉक ₹ 5,000, फर्नीचर ₹ 50,000, भवन ₹ 2,00,000, 2016-17 वर्ष के दौरान ₹ 6,000 रू किराया चुकाया इसमें ₹ 1,000 पिछले वर्ष का चुकाया शामिल है।
   प्रारम्भिक रोकड शेष ₹ 10,000

(**उत्तर**: Opening Capital Fund ₹ 2,67,000)

13. निम्नांकित सूचनाओं से प्राप्ति एवं भुगतान खाता 31 मार्च 2017 को समाप्त होने वाले वर्ष का बनाइये।

Prepare Receipts and Payments Account for the year ending 31st March, 2017 from the following informations.

	₹
Cashin hand opening (प्रारम्भिक रोकड शेष)	10,000
Donation received (दान प्राप्त किया)	50,000
Suubscription received (चन्दा प्राप्त किया)	1,00,000
Paid for electricity bill (बिजली बिलों का भुगतान किया)	20,000
Rent ₹ 1,000 p.m., Actually paid for 11 month during the year (किराया ₹ 1,000 मासिक वर्ष के दौरान 11 माह का भुगतान किया)	
Purchases of computer in cash (कम्प्यूटर नगद में क्रय किया)	50,000
Honorarium paid (मानदेय भुगतान)	19,000

(**उत्तर**: ₹ 6,000 अन्तिम शेष)

14. निम्नांकित दशाओं में वर्ष के अन्त में आय–व्यय खाता व चिठ्ठे में प्रवेश शुल्क किस प्रकार दिखायेंगे।

(i) वर्ष के दौरान ₹ 1,00,000 का प्रवेश शुल्क प्राप्त हुआ। **(ii)** वर्ष के दौरान ₹ 50,000 प्रवेश शुल्क प्राप्त हुआ जिसमें से 40% पूँजीकृत करना है। **(iii)** वर्ष के दौरान ₹ 40,000 प्रवेश शुल्क प्राप्त हुआ इसे पूँजीकृत किया जाएगा।

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

In the following cases how entrance fees will be shown at the end of the year in Income and Expenditure Account and balance Sheet on that date.
(i) Entrance fees received ₹ 1,00,000 during the year **(ii)** During the year ₹ 50,000 received as entrance fees out of which 40% is to be capitalised **(iii)** During the year ₹ 40,000 received as entrance fees it should be capitalised.
उत्तरः (i) आय–व्यय खाता ₹ 1,00,000 **(ii)** आय–व्यय खाता ₹ 3,000 तथा अन्तिम चिठ्ठे के पूँजी कोष में जोडेंगे ₹ 20,000 **(iii)** अन्तिम चिठ्ठे के दायित्व पक्ष में पूँजी कोष में जोडेंगे ₹ 40,000

15. एक क्लब को राज्य सरकार से भवन निर्माण के लिए ₹ 10,00,000 की सहायता 1-5-16 को प्राप्त हुई क्लब को अपनी गतिविधियों के संचालन के लिए एक अन्य संस्था द्वारा ₹ 50,000 सहायता दिनांक 1-6-16 को प्राप्त हुई है। क्लब ने भवन निर्माण 31 मार्च 2017 तक पूर्ण कर लिया है तथा इस पर ₹ 10,25,000 व्यय हुए है। उक्त व्यवहारों को 31 मार्च 2017 को समाप्त होने वाले वर्ष के आय व्यय खाते व उक्त दिन के चिठ्ठे में किस प्रकार दिखायेगें।
A club received aid from state government for ₹ 10,00,000 for construction of building on 1-5-16 and from an other organisation received ₹ 50,000 aid for operating its activities on 1-6-16. The club has completed its building upto 31 March 2017 and spent ₹ 10,25,000 on it. Now the above transactions will be shown in Income and Expenditure Account for the year ending 31st March, 2017 and Balance Sheet on that date.
उत्तरः सरकार द्वारा प्राप्त सहायता चिठ्ठे के दायित्व पक्ष में पूँजी कोष में ₹ 10,00,000 जोडेंगे तथा ₹ 10,25,000 सम्पति पक्ष में भवन शीर्षक में दिखायेगें। अन्य संस्था से प्राप्त सहायता आय–व्यय खाते के आय पक्ष में दिखायेंगे। (नोटः यदि भवन अपूर्ण होता तो पृथक से भवन कोष में राशि दिखाई जाती है।)

16. निम्नांकित प्राप्ति व भुगतान खाता, आय–व्यय खाता व प्रारम्भिक चिठ्ठे से अन्तिम चिठ्ठा तैयार कीजिये।
From the following Receipts and Payments Account, Income and Expenditure Account and opening Balance Sheet, prepare closing Balance Sheet

Receipts And Payments Account
for the year ended 31st March,2017

Receipts	Amount ₹	Payments	Amount ₹
To Balance b/d	5,000	By Expenses	12,000
To Subscription	20,000	By purchases of assets	10,000
To Sale from assets	5,000	By Balance c/d	8,000
	30,000		30,000

Income and Expenditure Account
for the year ended 31st March, 2017

Expenditure	Amount ₹	Income	Amount ₹
To Expenses	12,000	By Subscription	20,000
To Depreciation on assets	2,000		
To Loss on Sale of Assets	1,000		
To Excess of Income over Expenditure	5,000		
	20,000		20,000

Balance Sheet
As on 1st April, 2016

Liabilities	Amount ₹	Assets	Amount ₹
Capital fund	25,000	Assets	20,000
		Cash in Hand	5,000
	25,000		25,000

उत्तरः Capital fund closing ₹ 30,000, Assets closing ₹ 22,000 (20,000-2,000-6,000+10,000), Total of Balance Sheet ₹ 30000.

निबन्धात्मक प्रश्न : (Essay type questions)

1- प्राप्ति भुगतान खाते व अन्य सूचनाओं से आय व्यय खाता बनाने की विधि उदाहरण से समझाओ।
Explain with illustration the method of preparing Income and Expenditure Account from the Receipts

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

and Payments Account and other informations.

2- आय प्राप्ति व भुगतान खाता किस प्रकार तैयार करेंगे।

How will you prepare Receipts and Payments Account?

3- निम्नांकित में अन्तर बताइये Differentiate the following

1. Cash book and Receipts and Payments Account रोकड़ बही एवं प्राप्ति व भुगतान खाता
2. Income and Expenditure Account and Receipts and Payments Account आय व्यय खाता एवं प्राप्ति व भुगतान खाता

4- आय व्यय खाते चिठ्ठे व अन्य सूचनाओं से प्राप्ति व भुगतान खाता बनाने की विधि समझाओ।

Explain the procedure of preparing Receipts and Payments Account from Income and Expenditure Account, Balance sheet and other informations.

बहुचयनात्मक प्रश्नों के उत्तर

प्रश्न संख्या	1	2	3	4	5	6	7	8	9	10
उत्तरः	ब	अ	ब	अ	अ	द	स	अ	ब	द

आंकिक प्रश्न (Numerical questions):

1. निम्नांकित सूचनाओं से एक क्लब का 31 मार्च 2017 को समाप्त होने वाले वर्ष का प्राप्ति व भुगतान खाता बनाइयेः–

From the following particulars of a club, Prepare the Receipts and Payments Account for the year ended 31st March, 2017

	₹
Cash in hand opening (प्रारम्भिक रोकड शेष)	1,000
Cash at bank opening (प्रारम्भिक बैंक शेष)	2,000
Subscription received (चन्दा प्राप्त किया)	30,000
Life member ship fees received (वार्षिक सदस्यता शुल्क प्राप्त)	5,000
Amount received on sale of old furniture (पुराने फर्नीचर की बिक्री से प्राप्त राशि)	6,000
7% Investment purchased (7% विनियोग क्रय किये)	15,000
Rent paid (किराया चुकाया)	500
General Expenses (सामान्य व्यय)	700
Salaries paid (वेतन चुकाया)	800
Honorarium paid (मानदेय चुकाया)	2,000
Newspapers & journals (जर्नल व समाचार पत्र)	3,000
Received from sale of old newspapers (पुराने अखबार बेचने से प्राप्त)	100
Sports material purchased (खेल सामग्री क्रय)	7,000
Wages outstanding at the end (अन्त में मजदूरी बकाया)	500
Interest on Investment received (विनियोग पर प्राप्त ब्याज)	1,050
Cash in hand (closing) रोकड़ शेष (अन्तिम)	6,000
Cash at bank (closing) बैंक शेष (अन्तिम)	?

उत्तर : ₹ 2,150

2. From the following informations related to a chartered accountant, prepare Receipts and Payments Account for the year closing 31st March, 2017.

निम्नांकित सूचनाओं की सहायता से एक चार्टर्ड एकाउन्टेन्ट का 31 मार्च 2017 को समाप्त होने वाले वर्ष के लिए प्राप्ति व भुगतान खाता बनाईये।

	₹
Fees received for last year (गत वर्ष की फीस प्राप्त)	2,000
Fees received for current year (चालू वर्ष की फीस प्राप्त)	60,000
Fees outstanding for current year (चालू वर्ष की फीस बकाया)	3,000
Receipts from lectures (भाषण देने से प्राप्त)	5,000
Remuneration for assessing answer books received (उत्तर पुस्तिका का जाँच का पारिश्रमिक प्राप्त)	20,000
Dividend & interest received (लाभांश व ब्याज प्राप्त)	17,000

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Honorarium received (मानदेय प्राप्त)	3,000
Payments (भुगतान)	
Salaries (वेतन)	20,000
Repairs (मरम्मत)	2,000
Printing & stationary (मुद्रण व स्टेशनरी)	3,000
Car expenses (कार व्यय)	25,000
Electricity charges (बिजली खर्च)	8,000
Rent (किराया)	18,000
Personal expenses (निजी व्यय)	4,000
Payment outstanding for purchases of furniture (फर्नीचर क्रय का भुगतान बकाया)	10,000
Opening Cash Balance (प्रारम्भिक रोकड शेष)	2,000

उत्तर :– ₹ 29,000 अन्तिम रोकड शेष

3. 31 मार्च, 2017 को समाप्त होने वाले वर्ष के निम्नांकित प्राप्ति व भुगतान खाते के आधार पर 31 मार्च 2017 को समाप्त होने वाले वर्ष का आय–व्यय खाता तैयार कीजिये।

Prepare Income & Expenditure Account for the year ending 31st March, 2017, on the basis of given Receipts and Payments Account for the year ending 31March, 2017.

Receipts	Amount ₹	Payments	Amount ₹
To Balance b/d	12,000	By Rent	9,000
To Entrance fees	3,000	By Salaries	6,000
To Donations	4,000	By Electricity	1,000
To Rent of Hall	6,000	By Postage	2,000
To Subscription	20,000	By Repairs	6,000
To Sale of old newspapers	1,000	By Book purchased	5,000
		By Govt. Bond purchased	4,000
		By F.D. with Bank @ 8% (1-4-16)	10,000
		By Balance c/d	3,000
	46,000		46,000

उत्तरः– आय का व्यय पर आधिक्य ₹ 10,800

4. निम्नांकित सूचनाओं से 31 मार्च 2017 को समाप्त होने वाले वर्ष का आय व्यय खाता बनाईये।

From the following informations prepare Income and Expenditure Account for the year ended 31st march, 2017,

Receipts and Payments Account
For the year ended 31st March, 2017

Receipts		Amount ₹	Payments		Amount ₹
To balance b/d bank		15,000	By Purchases of machinery (1-7-16)		10,000
To subscription			By Salaries		8,000
2015-16	3,000		By Rent		13,000
2016-17	25,000		By Entertainment expenses		3,000
2017-18	2,000	30,000	By Purchases of 5% govt. Paper (1-10-16)		15,000
To Donations		1,06,000	By Sundry expenses		5,000
To Rent of hall		5,000	By balance c/d		
To Interest on bank deposits		2,000	Cash	7,000	
To Sale of furniture		10,000	Bank	1,07,000	1,14,000
		1,68,000			1,68,000

Additional Informations.

1- Depreciation is charged on all assets @10% p.a. **2**- Book Value of furniture on 1-4-16 ₹ 30,000, Half of furniture is sold on 30-06-16. **3**- Subscription accrued ₹ 1,000 for current year **4**- Entertainment

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

expenses outstanding ₹ 500 at the end. **5**- Rent is payable ₹ 1,000 per month. **6**- Donations received for construction of building.

अतिरिक्त सूचनाएं :

1. सभी सम्पतियों पर 10% वार्षिक की दर से मूल्य ह्रास लगाना है। **2**. 1-4-16 को ₹ 30,000 पुस्तक मूल्य के फर्नीचर में से आधा 30-06-16 को बेच दिया। **3**. चालू वर्ष का बकाया चन्दा ₹ 1,000 । **4**. मनोरंजन व्यय बकाया ₹ 500 । **5**. ₹ 1,000 मासिक देय किराया है। **6**. दान भवन निर्माण के लिए प्राप्त हुआ है।

उत्तर :– व्यय का आय पर आधिक्य ₹ 2,375

5. निम्नांकित सूचनाओं के आधार पर 31 मार्च 2017 को समाप्त होने वाले वर्ष के लिए आय– व्यय खाता व उसी दिन का चिठ्ठा बनाईये From the following informations, prepare Income and Expenditure Account for the year ending 31st March, 2017 and Balance Sheet on that date.

Receipts and Payments Account
for the year ended 31st March, 2017

Receipts	Amount ₹	Payments	Amount ₹
To Balance b/d	20,000	By Balance b/d (Bank overdraft)	25,000
To Subscriptions	5,00,000	By Tournament expenses	75,000
To Hire of ground	50,000	By Upkeep of field	2,00,000
To Sale of old sports material	25,000	By Printing & stationary	40,000
To life membership fees	60,000	By Electricity expenses	12,000
To Subscription for tournament	12,000	By Honorarium	58,000
To Donations	10,00,000	By Grass seeds & soil	40,000
To Entrance fees	25,000	By Investments	10,00,000
		By Purchases of sports material	2,15,000
		By Balance c/d (cash)	1,35,000
	18,00,000		18,00,000

Additional Informations:

1- Balances at the beginning of the year: Sports material stock ₹ 1,40,000, Play ground ₹ 8,00,000, Subscription receivable ₹ 45,000

2- Surplus on account of tournament and donations will be kept in reserve for the pavilion purpose. subscription due at the end ₹ 70,000. It was also decided that 50% of sports material should be written off. Stock at the end of stationary ₹ 10,000. Entrance fees is to be capitalized.

अतिरिक्त सूचनाएँ :– **1**. वर्ष के प्रारम्भ में शेषः खेल सामग्री स्टॉक ₹ 1,40,000, खेल मैदान ₹ 8,00,000, बकाया चन्दा ₹ 45,000

2. टूर्नामेंट से प्राप्त आधिक्य एवं दान को पेवेलियन निर्माण हेतु संचित रखना है। वर्ष के अन्त में बकाया चन्दा ₹ 70,000, खेल सामग्री का 50% अपलिखित करना है। स्टेशनरी का अन्तिम स्टॉक ₹ 10,000 है प्रवेश शुल्क पूँजीकृत करना है।

उत्तरः– Surplus ₹ 82,500 Capital fund ₹ 9,80,000. Total of closing Balance Sheet ₹ 21,92,500.

6. नीचे दिये गये प्राप्ति व भुगतान खाता व अतिरिक्त सूचनाओं के आधार पर 31 मार्च 2017 को समाप्त होने वाले वर्ष का आय–व्यय खाता व उसी दिन का चिठ्ठा बनाईये।

From the following Receipts and Payments Account and additional information, prepare Income and Expenditure Account for the year ending 31st March, 2017 and Balance sheet on that date.

Receipts and Payments Accounts
for the year ended 31st March, 2017

Receipts		Amount ₹	Payments	Amount ₹
To Balance b/d		20,000	By Salaries & Wages	1,40,000
To Subscription			By 10% Investments (Face Value 1,50,000,	1,13,000
2015-16	8,500		Purchased on 01-10-16)	
2016-17	2,30,000		By Fate expenses	7,000
2017-18	2,500	2,41,000	By Upkeep of ground	8,000

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

To Donations for building	45,000	By Entertainment material	65,000
To Legacies	5,000	By Advance for building	16,000
To Sale of old furniture (at book value)	6,000	By Internet charges	1,500
To Govt. grant for construction of building	80,000	By Honorarium	2,000
		By Balance c/d	44,500
	3,97,000		3,97,000

Additional Informations:

1- On 31st March, 2016 the society has following assets & liabilities: 10% investments ₹ 1,20,000 (Face value ₹ 1,70,000), Furniture ₹ 80,000, Musical instruments ₹ 13,000, Machinery ₹ 60,000, Subscription in arrears ₹ 17,000, Creditors for entertainment material ₹ 5,000, Subscription received in advance ₹ 2,000 and building fund ₹ 50,000

2- Charge depreciation @ 20% on furniture and machinery

3- On 31st March, 2017 entertainment material was valued at ₹ 28,000. Internet charges was outstanding ₹ 1500.

4- Each year subscription is paid by 100 members, each paying ₹ 2,400.

5- Payments of entertainment material includes ₹ 2,000 for previous year.

अतिरिक्त सूचनाएँ:

1. 31 मार्च, 2016 को सोसाइटी की सम्पतियां व दायित्व इस प्रकार थे : 10% विनियोग ₹ 1,20,000 (अंकित मूल्य ₹ 1,70,000), फर्नीचर ₹ 80,000, वाद्य यंत्र ₹ 13,000, मशीनरी ₹ 60,000, बकाया चन्दा ₹ 17,000, मनोरंजन सामग्री के लिए लेनदार ₹ 5,000, अग्रिम चन्दा ₹ 2,000 तथा भवन कोष ₹ 50,000

2. फर्नीचर व मशीनरी पर 20% मूल्य ह्रास लगाईये।

3. 31 मार्च 2017 को मनोरंजन सामग्री का मूल्य ₹ 28,000, इन्टरनेट चार्जेज बकाया ₹ 1,500.

4. वार्षिक चन्दा प्रत्येक सदस्य द्वारा ₹ 2,400,100 सदस्यों द्वारा देय

5. मनोरंजन सामग्री भुगतान में ₹ 2,000 पिछले वर्ष से सम्बन्धित है।

उत्तर :– Surplus ₹ 42700, Op. Capital fund ₹ 2,53,000, Total of closing Balance Sheet ₹ 4,66,700

7- एक क्रिकेट क्लब का 31 मार्च 2017 को समाप्त होने वाले वर्ष के लिए आय–व्यय खाता व उसी दिन का चिठ्ठा बनाईये। रोकड बही का सारांश नीचे दिये हैं।

From the following informations relating to a cricket club, prepare Income and Expenditure Account for the year ended 31st March, 2017 and a Balance Sheet on that date. An abstract of cash book is given below: (Cash column)

	₹		₹
Subscription	10,000	Upkeep of field & pavilion	4,000
Admission fees	600	Expenses on tournament	1,400
Sale of old balls, bats	100	Rates & insurance	400
Hire of ground	600	Telephone charges	100
Drawn from bank	8,000	Stationary	200
Subscription for tournament	2,000	Generalcharges	100
Donations	20,000	Honorarium	340
		Grass seeds	60
		Bats & Balls	1,400
		Deposited into Bank	33,300
	41,300		41,300

Assets with the club on 1 April, 2016 were as under: Cash at Bank ₹ 6000, Stock of balls etc, ₹ 3000, Stationary ₹ 400, Subscription due ₹ 1000, Donations and surplus on account of tournament should be kept in reserve for a permanent pavilion. Subscription due at 31st March, 2017 amount to ₹ 1500, write off 50% of Bats and Balls Account and 25% off stationery Account. Admission fees is to be capitalized.

क्लब की 1 अप्रेल 2016 की सम्पतियाँ इस प्रकार की थी: बैंक शेष ₹ 6,000, बॉल व अन्य का स्टॉक ₹ 3,000, स्टेशनरी का स्टॉक ₹ 400, चन्दा बकाया ₹ 1,000, दान व प्रतियोगिता चन्दे के आधिक्य की राशि को पेवेलियन कोष में रखनी है।

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

31 मार्च 2017 का बकाया चन्दा ₹ 1,500 है। बेट व बॉल खाता को 50% व स्टेशनरी खाता 25% अपलिखित करना है। प्रवेश शुल्क पूँजीकृत करना है।

उत्तरः– ₹ 3,850 Excess of Income over Expenditure, op. Capital fund ₹ 10,400, Closing Bank Balance ₹ 31,300

Total of B/s ₹ 35,450

8. एक दातव्य अस्पताल का आय–व्यय खाता 31 मार्च 2017 को समाप्त होने वाले वर्ष के लिए एवं उसी दिन का चिठ्ठा निम्नांकित सूचनाओं से बनाईये।

Prepare Income and Expenditure Account of a charitable hospital ending 31st March, 2017 and a Balance Sheet on that date from the following informations.

Receipts and Payments Account
for the year ended 31st March, 2017

Receipts	Amount ₹	Payments	Amount ₹
To Balance b/d	71,300	By Doctors Honorarium	90,000
To Subscription	4,79,960	By Suppliers of medicines	3,05,900
To Donation	45,000	By Sundry Expenses	4,610
To Life membership fees	1,00,000	By Salaries & Wages	2,75,000
To Interest on investment@ 10% for 2016-17	70,000	By Machine purchase	1,50,000
		By Expenses charity show	27,500
To Proceeds from a charity show	1,04,500	By Balance c/d	17,750
	8,70,760		8,70760

Additional informations (अतिरिक्त सूचनाएँ) :

	1-4-16 ₹	31-3-17 ₹
Outstanding Salaries & wages (बकाया वेतन व मजदूरी)	36,000	48,000
Machinery (मशीनरी)	2,12,000	3,16,000
Building (भवन)	9,00,,000	8,10,000
outstanding subscription (बकाया चन्दा)	6,500	8,500
Advance subscription (अग्रिम चन्दा)	2,540	3,000
Stock of medicines (दवाइयों का स्टॉक)	89,100	98,000
Suppliers of medicines (दवाइयों के लिए लेनदार)	40,000	25,000

उत्तरः– Excess of Expenditure over Income ₹ 1,26,610, opening capital fund ₹ 19,00,360, Total of Balance Sheet ₹ 19,49,750.

9- From the following Receipts and Payments Account the year ended 31st March, 2017 and additional informations of a society, prepare Income and Expenditure Account for the year ending 31st March, 2017 and the Balance sheet for the same date. 31 मार्च 2017 को समाप्त होने वाले वर्ष के प्राप्ति व भुगतान खाता व अतिरिक्त सूचनाओं से, 31 मार्च 2017 को समाप्त होने वाले वर्ष का आय–व्यय खाता व उसी तिथि का चिठ्ठा बनाइये।

Receipts		Amount ₹	Payments	Amount ₹
To Balance b/d (Cash)		15,000	By Balance b/d (Bank overdraft)	31,000
To Subscription			By Investments	30,000
2015-16	2,000		By Furniture	14,500
2016-17	1,62,000		By Salaries	62,000
2017-18	2,500	1,66,500	By Stationary	8,900
To Proceeds from charity show		20,000	By Entertainment Expenses	17,100
To Entrance fees		6,700	By Miscellaneous Expenses	14,200
To Interest on investment		4,800	By Balance c/d	
To Sale of Old Material		1,200	Cash 5,500	
			Bank 31,000	36,500
		2,14,200		2,14,200

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Additional Informations:
1-The society has 1800 members paying annual fees of ₹ 100. Subscription amounting to ₹ 900 were still in arrears for 2015-16.
2-Stock of stationary at the beginning ₹ 1,250 and at the end ₹ 870,
3-Salary of ₹ 5,500 is outstanding at the end, Miscellaneous expenses ₹ 1,320 (Opening) outstanding. The society had paid ₹ 5,000 in 2015-16 out of which ₹ 1,250 related to 2016-17 for telephone expenses
4-Building ₹ 2,45,000 and investments ₹ 65,000 at the beginning of the current year, Depreciate fixed assets by 5%
5- Entrance fees to be capitalized.

अतिरिक्त सूचनाएँ

1. सोसाईटी के 1,800 सदस्य हैं प्रत्येक ₹ 100 वार्षिक चन्दा देता हैं। वर्ष 2015-16 का ₹ 900 चन्दा अभी भी बकाया है।
2. स्टेशनरी का प्रारम्भिक स्टॉक ₹ 1,250 व अन्तिम स्टॉक ₹ 870 है।
3. अन्त में ₹ 5,500 वेतन बकाया, विविध खर्चे ₹ 1,320 प्रारम्भ में बकाया थे। सोसाईटी ने 2015- 16 में ₹ 5,000 टेलीफोन व्यय चुकाये थे जिसमें से ₹ 1,250 2016-17 के थे।
4. भवन ₹ 2,45,000 विनियोग ₹ 65,000 चालू वर्ष के प्रारम्भ में थे, स्थायी सम्पतियों पर 5% मूल्य ह्रास लगाना है।
5. प्रवेश शुल्क पूंजीकृत कीजिये।

उत्तर :– आय का व्यय पर आधिक्य ₹ 85,015, प्रारम्भिक पूंजी कोष ₹ 2,98,080, चिठ्ठे का योग ₹ 3,97,795

10 .एक सोसाईटी की निम्नांकित सूचनाओं के आधार पर 1 अप्रेल 2016 का एवं 31 मार्च 2017 का चिठ्ठे तैयार कीजिये।
From the following informations of a society, prepare Balance Sheets on 1 April, 2016 and 31 March, 2017

Income and Expenditure Account
For the year ending 31-3-17

Expenditure	Amount ₹	Income	Amount ₹
To Printing	800	By Tuition fees	11,000
To Advertisement	1,500	By Membership fees	11,500
To Rent	6,000	By Sundry Income	1,300
To Salaries	12,000	By Interest	1,600
To Sundry expenses	1,100		
To Excess of Income over Expenditure	4,000		
	25,400		25,400

Receipts and Payments Account
For the year ended 31st March, 2017

Receipts		Amount ₹	Payments	Amount ₹
To Balance b/d		4,500	By Printing	750
To Interest			By Advertisement	1,410
2015-16	1,000		By Salary	13,000
2016-17	1,500	2,500	By Furniture	6,700
To Tuition Fees			By Rent	5,200
2016 -17	10,000		By Sundry Expenses	1,100
2017-18	1,000	11,000	By Balance c/d	13,740
To Entrance fees		4200		
To Membership fees				
2015-16	3,000			
2016-17	11,500			
2017-18	3,900	18,400		
To Sundry Income		1,300		
		41,900		41,900

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Additional Informations: अतिरिक्त सूचनाएँ
The Following Assets were on 31st March 2016. 31 मार्च 2016 को निम्नांकित सम्पतियाँ थी ₹

Investment (विनियोग)	40,000
Furniture (फर्नीचर)	10,000
Reference Books (सन्दर्भ पुस्तकें)	5,000

उत्तर :– Opening Capital fund ₹ 63,500 and Total of opening Balance Sheet ₹ 63,500; Total of closing Balance sheet ₹ 77,540, Alternative answer: Op. Capital fund ₹ 62,500, Total of opening Balance Sheet ₹ 62,500, Total of closing Balance Sheet ₹ 76,540 (यदि वेतन की अन्तर राशि पिछले वर्ष बकाया मानी जाय)

11. एक सोसाइटी का 31 मार्च 2017 को समाप्त होने वाले वर्ष के लिए आय–व्यय खाता व अन्य सूचनाएं दी गई हैं। 31 मार्च 2017 को समाप्त होने वाले वर्ष के लिए प्राप्ति भुगतान खाता व उक्त तिथि का चिठ्ठा बनाइये।
Income and Expenditure Account for the year ending 31st March, 2017 and additional informations are given related to a society. Prepare Receipts and Payments Account for the year ending 31st March, 2017 and a Balance Sheet on that date.

Income and Expenditure Account
for the year ended 31st March, 2017

Expenditure		Amount ₹	Income	Amount ₹
Salaries		2,35,000	Subscriptions	2,50,000
Clinic expenses		30,000	Interest	90,000
Rent		5,000	Donations	40,000
Insurance		2,000	Sundry Receipts	3,000
Office expenses		18,000		
Depreciation				
Building	37,500			
Furniture	1,200			
Instruments	1,000	39,700		
Excess of Income over Expenditure		53,300		
		3,83,000		3,83,000

Additional Informations: अतिरिक्त सूचनाएँ

	31-3-16 ₹	31-3-17 ₹
Land & building (भूमि व भवन)	20,00,000	19,62,500
Instruments (उपकरण)	35,000	39,000
Furniture (फर्नीचर)	20,000	19,800
Govt. Securities (सरकारी प्रतिभूतियाँ)	18,00,000	18,00,000
Face Value: ₹ 20,00,000 (अंकित मूल्य ₹ 20,00,000)		
Stock of medicines (दवाईयों का स्टॉक)	3,000	1,000
Clinic Expenses (बकाया क्लिनिक व्यय)	2,000	3,000
Outstanding salaries (बकाया वेतन)	10,000	15,000
Outstanding subscription	70,000	1,00,000
Advance subscription	2,000	6,000
Cash in hand and at Bank	?	1,87,000

उत्तर: प्रारम्भिक रोकड शेष ₹ 1,18,000, प्राप्ति व भुगतान खाते का योग ₹ 4,75,000, प्रारम्भिक पूँजी कोष ₹ 40,32,000., अन्तिम चिठ्ठे का योग ₹ 41,09,300.

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

10

वित्तीय विवरणों का विश्लेषण
(Analysis of Financial Statements)

अध्ययन के उद्देश्य

इस अध्याय के अध्ययन के बाद आप :–

❑वित्तीय विवरणों का अर्थ, परिभाषा, उद्देश्य, प्रकृति, विशेषताएँ जान पाएँगे।

❑वित्तीय विवरणो के विश्लेषण के उद्देश्य, लाभ, सीमाएँ एवं प्रक्रिया जान सकेंगे।

❑वित्तीय विवरण विश्लेषण की तकनीकों का उपयोग कर इनसे विश्लेषण प्रक्रिया समझ सकेंगे।

–तुलनात्मक वित्तीय विवरण

- तुलनात्मक चिट्ठा
- तुलनात्मक लाभ–हानि खाता

–समानाकार वित्तीय विवरण

- समानाकार चिट्ठा
- समानाकार लाभ–हानि खाता

–प्रकृति विश्लेषण एवं प्रवृति अनुपात

अध्ययन का उद्देश्य–

लेखांकन प्रक्रिया के तीन प्रमुख चरणों में से अन्तिम चरण संक्षिप्तीकरण का है। संक्षिप्तीकरण के अन्तर्गत विभिन्न प्रकार एक की प्रकृति की लेखा मदों को एकीकृत करना होता है। इस प्रकार संक्षिप्तीकरण प्रक्रिया का परिणाम वित्तीय विवरण होते हैं। जिनका उद्देश्य संस्था की आर्थिक स्थिति एवं लाभदायकता का चित्रण करना होता है। इस प्रकार वित्तीय विवरणों के माध्यम से किसी व्यवसाय के परिचालन परिणामों एवं उसकी वित्तीय स्थिति के बारे में व्यवस्थित व संकलित सूचनाएँ उपलब्ध होती है। वित्तीय विवरण लेखांकन की प्रथम व द्वितीय प्रक्रिया का परिणाम है जो कि लेखांकन अभिलेखों की सहायता से मान्य स्वीकृति लेखांकन सिद्धान्तों व परम्पराओं के अनुसार तैयार किये जाते हैं। जो स्वामियों एवं बाह्य उपयोगकर्ताओं के लिए उपयोगी होगी।

वित्तीय विवरणों का अर्थ (Meaning of Financial Statements) : वित्तीय लेखांकन प्रक्रिया के अन्तिम उत्पाद के रूप में वित्तीय विवरण प्राप्त होते हैं। ये विवरण लेखा अभिलेखों से प्राप्त ऐसी वित्तीय सूचना है जो संक्षिप्त या संपुट रूप में प्राप्त हुई हैं। वित्तीय विवरण एक निश्चित समय पर संस्था की वित्तीय स्थिति तथा एक निश्चित समयावधि की क्रियाओं के परिणामों का चित्रण हैं। यह लेखांकन सूचनाओं को आन्तरिक व बाह्य पक्ष के समक्ष प्रस्तुत करने का साधन है। इस प्रकार वित्तीय विवरणों से उस अवधि के संचालन लाभ व हानियों की जानकारी प्राप्त की जाती है एवं उक्त अवधि के अन्त में उस व्यवसाय की वित्तीय स्थिति जानी जाती है। भारतीय कम्पनी अधिनियम की धारा 2(40) के अनुसार सामान्यतः वित्तीय विवरणों के एक पूरे सेट में निम्नांकित सम्मिलित किये जाते हैं:–

1. चिट्ठा (Balance Sheet) : यह एक निश्चित तिथि को संस्था की सम्पत्तियों व दायित्वों अर्थात वित्तीय स्थिति का विवरण होता है। इसे स्थिति विवरण (Position Statement) भी कहते है।

2. लाभ–हानि खाता (Profit and Loss Account) : यह एक लेखा अवधि में व्यावसायिक क्रियाओं के शुद्ध परिणामों को बताता हैं। इसे आय विवरण (Income Statement) भी कहते है।

3.लेखा टिप्पणियां व व्याख्यात्मक टिप्पणियां (Notes to Accounts and Explanatory Notes) : चिट्ठा व लाभ–हानि खाते के नीचे दी होती है। जिसमें इनमें दर्शायी गई मदों का विस्तृत ब्यौरा होता है, जबकि व्याख्यातमक टिप्पणियाँ महत्त्वपूर्ण मदों के सम्बन्ध में लेखांकन नीतियों एवं स्पष्टीकरणों का एक विवरण होता है।

4.रोकड़ प्रवाह विवरण एवं खण्ड प्रतिवेदन : **(i)** सूचीबद्ध कम्पनियां, **(ii)** कम्पनी जिसकी बिक्री 50 करोड़ या अधिक है अथवा **(iii)** जिन्होनें जन निक्षेप 10 करोड़ या इससे अधिक के स्वीकार किए हैं उन्ही को क्रमशः लेखांकन प्रमाप–3 व लेखांकन प्रमाप– 17 के अनुसार इन्हें बनाकर प्रस्तुत करना अनिवार्य है। रोकड़ प्रवाह विवरण रोकड़ अन्तर्प्रवाह, रोकड़ बाह्य प्रवाह एवं रोकड़ व रोकड़ के तुल्य दर्शाता है। जबकि कम्पनी अधिनियम 2013 की धारा 129 के अनुसार वित्तीय विवरण प्रति वर्ष एक निर्धारित प्रारूप (जो कि विवरणों में अध्यक्षीय भाषण, संचालकों के प्रतिवेदन, प्रबन्ध के विचार एवं विश्लेषण सम्मिलित नहीं किये जाते हैं।

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

वित्तीय विवरणों के उद्देश्य (Objectives of Financial Statements) : इनका मुख्य उद्देश्य एक संस्था की वित्तीय, परिचालन निष्पादन एवं रोकड़ प्रवाह के बारे में उसके विभिन्न उपयोगकर्ताओं को सूचनाएँ उपलब्ध करना हैं। जिससे वे आर्थिक निर्णय लेने में सक्षम हो। ये विवरण उपयोगकर्ताओं के लिए मूल्यवान सूचनाओं का स्त्रोत है। जिनका विश्लेषण कर वे अपने लिए आवश्यक जानकारी प्राप्त कर सके जो उन्हे निर्णय लेने में सहायक हो। वित्तीय विवरणों के उद्देश्य अग्रांकित हैः–

- ऐसे वित्तीय समंक उपलब्ध करना जो व्यवसाय की आर्थिक स्थिति से संबंधित हो।
- एक संस्था के परिचालन लाभों को उसकी वित्तीय स्थिति पर प्रभाव दिखाना।
- वित्तीय विवरणों के हिताधिकारी पक्षकारों को सम्बन्धित सूचनाएँ प्रदान करना।
- व्यवसाय की सही व उचित (True and fair) स्थिति का चित्रण करना।
- भावी क्रियाओं के लिए आधार प्रस्तुत करना।

वित्तीय विवरणों की प्रकृति (Nature of Financial Statements) : वित्तीय विवरणों की सूचनाएँ निम्नांकित संयोजनों का परिणाम है :– **1.** व्यापारिक व्यवहारों को प्रमाणित साक्ष्यों के आधार पर अभिलेखन करना अर्थात सभी अभिलेखित सूचनाएँ साक्ष्यों पर आधारित होती है।

2. वित्तीय विवरण लेखांकन परम्पराओं के आधार पर बनाये जाते है। लेखांकन परम्पराओं के उपयोग से वित्तीय विश्वास योग्य, समझने योग्य एवं तुलना योग्य हो जाते है। जैसे रूढिवादिता परम्परा के कारण भावी ज्ञात हानियों के लिए आयोजन बनाया जाता है। इससे परिचालन परिणाम ज्यादा वास्तविक हो जाते है।

3. वित्तीय विवरण लेखांकन अवधारणाओं को अपनाते हुए बनाये जाते है। जैसे चालू व्यवसाय अवधारणा के अनुसार लेखे यह मानते हुए रखे जाते है कि व्यवसाय सतत् रूप से चलता रहेगा, इससे वित्तीय विवरण अधिक योग्य, समझने योग्य एवं तुलनीय बनते है।

4. व्यक्तिगत निर्णयों से भी वित्तीय विवरण प्रभावित होते है। जैसे स्टॉक के मूल्यांकन की कौनसी विधि अपनायी है, यह निर्णय प्रबन्धकों का व्यक्तिगत निर्णय होगा जो वित्तीय विवरणों को प्रभावित करता है। इस प्रकार व्यक्तिगत निर्णय भी वित्तीय विवरणों को बनाने में भूमिका निभाते है।

5. वित्तीय विवरण, वित्तीय सूचनाओं का एक प्रमख स्त्रोत है। जिनके आधार व्यवसाय की लाभदायकता व आर्थिक स्थिति के बारे में निष्कर्ष निकाले जाते है।

वित्तीय विवरणों की विशेषताएँ (Charactistics of Financial Statements) : वित्तीय विवरण एक संस्था की निष्पादन क्षमता व स्थिति का द्योतक है। वित्तीय विवरणों में सामान्यता निम्नांकित विशेषताएं पाई जाती है।

1. संक्षिप्तीकरण : व्यावसायिक क्रियाएं इतनी अधिक होती है कि इन घटनाओं को संक्षिप्तीकरण करके ही पाठक सही निष्कर्ष निकाल सकते है। वित्तीय विववरण वास्तव में लेखांकन की अभिलेखन, वर्गीकरण की प्रक्रिया के बाद इनका सांराश ही है।

2. उपार्जन आधार : सामान्यता व्यावसायिक लेखे उपार्जन आधार पर ही बनाये जाते है रोकड़ आधार पर नहीं।

3. मुद्रा में व्यक्त : वित्तीय विवरण मौद्रिक मूल्यों में ही व्यक्त होते है। इसके अभाव में यह अर्थहीन है।

4. तकनीकी शब्दावली : वित्तीय विवरण बनाते समय विभिन्न मदों की तकनीकी शब्दावली उपयोग में ली जाती है।

5. मान्यता पर आधारितः इस मान्यता पर बनाये जाते हैं कि अभीष्ट उपयोगकर्ता इसमें प्रयुक्त प्रक्रिया एवं नियमों से परिचित है।

6. भूतकाल पर आधारित : यह भूतकालीन संमकों पर आधारित होते है। भावी आर्थिक क्रियाओं से इनका कोई लेना देना नहीं।

7. मान्य सिद्धांतों पर आधारित : लेखांकन के मान्य सिद्धान्तों व मान्यताओं पर बनाये जाते है जिसके अन्तर्गत स्टॉक मूल्यांकन की विधियां, मूल्य ह्रास विधियां आदि के सम्बन्ध में मान्य सिद्धान्त ही उपयोग लिये जाते है।

वित्तीय विवरणों के आधारभूत सिद्धांत (Essentials of Financial Statements) :

वित्तीय विवरण संस्था की लाभार्जन व वित्तीय स्थिति का द्योतक है, अतः इनको बनाते समय निम्नांकित बातों का ध्यान रखना चाहिए। **1.समझने योग्य** : वित्तीय विवरण स्वीकृत लेखा सिद्धान्तों के अनुसार बनाये जाने चाहिये। जिससे उपयोगकर्ताओं को ठीक समझने में आसानी रहे।

2. तुलनीय : वित्तीय विवरण की सूचनाएं इस प्रकार प्रकट होनी चाहिये जिससे अन्तःफर्म एवं अर्न्तफर्म तुलना **(Interfirm & Intra firm comparision)** करने में आसानी रहे।

3.प्रमाणन योग्य (Verifiable) : वित्तीय विवरणों में प्रकट की गई सूचना ऐसी होनी चाहिए जो संस्था के अभिलेखों से प्रमाणित की जा सके।

4. संगत (Relevent) : वित्तीय विवरणों में प्रस्तुत की गई सूचनाओं में संगतता/सम्बद्धता होनी चाहिए। जिससे उपयोगकर्ताओं को आसानी रहे।

5. वास्तविक (Factual) : वित्तीय विवरणों में प्रस्तुत सूचनाएँ वास्तविक होनी चाहिये जिससे व्यवसाय की वित्तीय स्थिति का सही एवं सत्य आकलन हो सके।

6. समयबद्धता (Timelines) : वित्तीय विवरण एक उचित समयान्तराल पर बनाये व प्रस्तुत किए जाने चाहिए। देरी से जारी होने पर उनकी उपयोगिता कम हो जाती है।

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

वित्तीय विवरणों में हित रखने वाले पक्ष एवं उनकी उपयोगिता
(Parties Interested in Financial Statements and their Utility)

प्रत्येक व्यावसायिक संस्था की क्रियाओं का प्रभाव समाज व राष्ट्र पर पड़ता है। अतः वे बहुत से व्यक्ति संस्था के वित्तीय विवरणों में रुचि रखते है। वित्तीय विवरणों के उपयोगकर्ताओं को दो भागों में बाँटा गया है।

(अ) आन्तरिक उपयोगकर्ता :

(1) अंशधारक : ये पूँजी विनियोजित करते है अतः उनका हित सदैव उस संस्था की लाभदायकता, वित्तीय क्षमता एवं रोकड़ स्थिति की जानकारी में रहता है। ये सभी सूचनाएँ उन्हें वित्तीय विवरणों से उपलब्ध होती है। **(2) प्रबंध** : व्यवसाय के संचालन व नियंत्रणकर्ताओं का दायित्व है कि वे संस्था के विनियोग की सुरक्षा के साथ–साथ उसके संसाधनों के अधिकतम लाभप्रद उपयोग का भी ध्यान रखे। अतः वित्तीय विवरणों से वे ऐसी सूचनाएँ प्राप्त करते है जिनसे व्यवसाय की कुशलता व लाभार्जन क्षमता को माप सके। इनके लिए वित्तीय विवरण उसी प्रकार उपयोगी है जिस प्रकार एक शिल्पकार के लिए छेनी व हथौड़ी। **(3) कर्मचारी** : कर्मचारियों को संस्था की वित्तीय स्थिति के आधार पर ही बोनस आदि प्राप्त होते है। उनकी कल्याणकारी योजनाओं पर वित्तीय स्थिति का प्रभाव पड़ता है। अतः सदैव वित्तीय विवरणों में रुचि रहती है।

(ब) बाह्य उपयोगकर्ता : (1) बैंक व वित्तीय संस्थाएँ : ये संस्थाओं को साख सुविधा प्रदान करते समय इनकी शोधन क्षमता व लाभार्जन क्षमता की जानकारी चाहते है जो वित्तीय विवरणों से ही प्राप्त होती है। **(2) ऋणपत्रधारी एवं भावी विनियोजक** : ऋणपत्र दाता संस्था की शोधन क्षमता एवं ब्याज चुकाने की क्षमता की जानकारी चाहता है जबकि भावी विनियोजक लाभांश, लाभ मात्रा, बाजार स्थिति आदि की जानकारी चाहता है। ये सभी वित्तीय सुदृढता की जानकारी चाहते है जो वित्तीय विवरणों से ज्ञात होती है। **(3) लेनदार** : ये संस्था की तरलता व वित्तीय सुदृढता की जानकारी चाहते है जो वित्तीय विवरणों से ज्ञात होती है। **(4) सरकार व अन्य विभाग** : सरकारों की नीतिगत निर्णय करने, कानून व नियमों को बनाने आदि कार्यो के लिए वित्तीय विवरणों से जानकारी प्राप्त करनी होती है। सरकार के अन्य विभाग जैसे विक्रयकर विभाग, आयकर विभाग, उत्पाद शुल्क विभाग आदि बहुत से विभाग राजस्व साधनों की जानकारी के लिए संस्था के वित्तीय विवरणों का उपयोग करते है। जिससे ये सही आकलन कर सके। **(5) शोधकर्ता व विश्लेषण** : विशेष व सीमित उद्देश्य की पूर्ति हेतु ये भी संस्था के वित्तीय विवरणों का उपयोग कर सरकार व समाज के समक्ष संस्था के वित्तीय विवरणों का विश्लेषण कर निष्कर्ष प्रस्तुत करते है। **(6) व्यावसायिक परिषदें** : चैम्बर ऑफ कॉमर्स, सीमेन्ट मैन्युफैक्चरर एसोसिऐशन आदि गैर लाभ वाली संस्थाएँ अपने– अपने क्षेत्र में संस्थाओं के हितों की रक्षा व समृद्धि के उद्देश्य से वित्तीय विवरणों का अध्ययन कर उनकी प्रवृति को ज्ञात कर निष्कर्ष निकालकर तुलना करती है। **(7) स्कन्ध विपणि व भारतीय प्रतिभूति एवं विनिमय बोर्ड** : इनके द्वारा विनियोजकों की सुरक्षा के लिए बनाये गए नियमों की पालना हो रही है या नहीं आदि तथ्यों का विश्लेषण कर वित्तीय विवरणों व अन्य सूचनाओं से किया जाता है। अतः यह इनके लिए भी उपयोगी है।

वित्तीय विवरणों की सीमाएँ
(Limitations of Financial Statements)

संस्था के वित्तीय लेखों का सारांश ही वित्तीय विवरण होते है। इन सूचनाओं के आधार पर अधिक सत्य, तर्कपूर्ण एवं प्रमाणित निर्णय लिये जाते है। किन्तु इन सूचनाओं के आधार पर निकाले गए निष्कर्षो को अंतिम व शुद्ध नहीं माना जाना चाहिए। अतः वित्तीय विवरणों का प्रयोग करते समय इनकी सीमाओं व मर्यादाओं को भी ध्यान में रखना चाहिए ये निम्नानुसार हैः–

(1) ऐतिहासिक तथ्य : वित्तीय विवरण भूतकालीन सूचनाओं पर आधारित है, जबकि ज्यादातर उपयोगकर्ता भावी स्थिति की जानकारी चाहते है अतः वित्तीय विवरण अधिक उपयोगी नहीं है।

(2) अनुमानों पर आधारित : वित्तीय विवरण लेखांकन परम्पराओं, अवधारणाओं, व्यक्तिगत निर्णयों पर आधारित होते है, अतः यह भेदवभाव रहित (Free from bias) नहीं है।

(3) गुणात्मक तथ्यों पर ध्यान नहीं देती हैं: वित्तीय विवरण मौद्रिक मूल्यों में व्यक्त किये जाते है अतः गुणात्मक तथ्यों को छोड़ देने से सही निष्कर्ष नहीं प्राप्त होते हैं। जैसे प्रबंधको की योग्यता, बाजार स्थिति, कर्मचारियों की गुणात्मक क्षमता आदि के प्रभाव का अध्ययन नहीं होता है।

(4) ऐतिहासिक लागत : वित्तीय विवरण ऐतिहासिक लागतों पर तैयार किये जाते है मूल्य परिवर्तन के प्रभावों को ध्यान नहीं रखते है अतः ये केवल शव–परीक्षा (Post -Mortem) के समान है।

(5) तुलनीयता का अभाव : दो संस्थाओं की प्रकृति, उत्पादन क्षमता, भौगोलिक स्थिति, आदि भिन्न होने के कारण वित्तीय विवरण समंकों से तुलनात्मक अध्ययन नहीं किया जा सकता है।

(6) वास्तविक स्थिति को छुपाना : वित्तीय विवरणों में गुप्त संचय, ऊपरी दिखावट (Window dressing) के कारण वास्तविक स्थिति का चित्रण नहीं होता है। लेखांकन छल (Accounting manipulation) से समंको को इस प्रकार प्रस्तुत किया जाता है जिससे आर्थिक स्थिति अच्छी या खराब दिखाई दें।

(7) सभी पक्षकारों की आवश्यकता पूर्ति नहीं करता : वित्तीय विवरणों में रूचि रखने वाले सभी पक्षकारों की आवश्यकता पूर्ति नहीं हो सकती हैं।

उपरोक्त सीमाएं आज की बदलती परिस्थितियों में उतनी महत्वपूर्ण नहीं हैं। क्योंकि वित्तीय विवरणों की महत्ता के समक्ष ये बोने हो जाते है। वित्तीय विवरणों द्वारा प्रदान की गई सूचनाओं से लिए गए विचार पूर्ण व विवेकपूर्ण निर्णय उपयोगी होते है।

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

वित्तीय विवरण विश्लेषण
(Analysis of Financial Statements)

देखने मात्र से तो ऐसा लगता है कि वित्तीय विवरण केवल अंकों का समूह मात्र हैं किन्तु इनका महत्व तब तक ज्ञात नहीं हो सकता जब तक उनके उपयोगकर्ता (यथा प्रबन्धक, विनियोजक) अपने उद्देश्य विशेष के लिए इनका विश्लेषण व व्याख्या न करे। वित्तीय विश्लेषण, वित्तीय विवरणों से सन्निहित आशय को स्पष्ट करने में सहायता करता है। आज की परिस्थितियों में वित्तीय विश्लेषण एक प्रबंधकीय हथियार के रूप में अपनी विशिष्ट पहचान रखता है।

वित्तीय विश्लेषण का अर्थ (Meaning of Financial Statements) : किसी सूचना की प्रकृति समझने के लिए उसके एक अवयव का दूसरे अवयवों से अथवा उनके योग से सम्बन्ध स्थापित करना होता हैं। वित्तीय विवरणों में सूचित किये गये तथ्यों को किसी वैज्ञानिक तरीके द्वारा उपयोगी अवयवों में इस प्रकार वर्गीकृत एवं विन्यासित करना है जिससे उनसे अर्थपूर्ण निष्कर्ष निकाले जा सके। अर्थात् व्यवसाय की दशा में उसकी आर्थिक स्थिति व लाभार्जन शक्ति का पता लगाया जा सके। इस प्रकार वित्तीय विश्लेषण के अन्तर्गत एक वित्तीय विश्लेषक को सर्वप्रथम वित्तीय विवरणों से निर्णयन हेतु उपयोगी सूचना का चयन करना होता है, तत्पश्चात् उन सूचनाओं को इस प्रकार व्यवस्थित करना है कि जिससे कोई महत्वपूर्ण सम्बन्ध स्पष्ट हो सके, अन्त में विश्लेषण तकनीकों की सहायता को इन सम्बन्धों का अध्ययन करके निष्कर्ष निकालना व उनका निर्वचन करना है।

अन्त में यह कहां जा सकता है कि वित्तीय विश्लेषण, वित्तीय सूचनाओं के विश्लेषण की एक पद्धति है। जिसमे वित्तीय विवरणों से उपयोगी सूचनाओं को एकत्रित कर उनके मध्य सम्बन्ध स्थापित कर उनसे निष्कर्ष निकालकर उनका इस प्रकार निर्वचन करना है, जिससे यह सूचनाएं व्यावसायिक निर्णय लेने में सहायक हो सके।

वित्तीय विश्लेषण का उद्देश्य
(Objective of Financial Analysis)

वित्तीय विवरणों के विश्लेषण में इसके उपयोगकर्ताओं का हित निहित होता है। अतः वित्तीय विवरणों के विश्लेषण का उद्देश्य उसके उपयोगकर्ताओं के दृष्टि से भिन्न–भिन्न होता है। जैसे दीर्घकालीन ऋणदाता –पूंजी संरचना की बनावट, भावी आयों व ब्याज व्याप्ति स्थिति से सम्बन्धर रखते है। अतः वित्तीय विवरणों के विश्लेषण का मुख्य उद्देश्य इस पर निर्भर करेगा कि यह विश्लेषण किसके लिए किया जा रहा है। फिर भी वित्तीय विवरणों के विश्लेषण के कुछ सामान्य उद्देश्य निम्नानुसार है :–

1.परिचालन कुशलता का मापन : यह आय विवरण में दी गई सूचनाओं के आधार पर विश्लेषण की विभिन्न तकनीकों के माध्यम से किया जाता है।

2. लाभदायकता मापन : यह आय विवरण में दी गई सूचनाओं के आधार पर विश्लेषण की विभिन्न तकनीकों यथा अनुपात विश्लेषण आदि के माध्यम से किया जा सकता है।

3. अंतः फर्म तुलना व अर्न्त फर्म तुलना : वित्तीय विवरणों का विश्लेषण उसी फर्म अथवा उद्योग में किसी अन्य संस्था के विगत वर्षों के निष्पादन से तुलना करके किया जा सकता है। अतः फर्म तुलना में उसी उद्योग की अन्य संस्थाओं से तुलना की जा सकती है जबकि अन्तर्फर्म तुलना में उसी संस्था के विगत वर्षों की वित्तीय सूचनाओं के आधार पर स्व–मूल्यांकन किया जा सकता है।

4. शोधन क्षमता मापन : अल्पकालीन, दीर्घकालीन शोधन क्षमता की जांच के लिए भी वित्तीय विश्लेषण की अनुपात विश्लेषण तकनीक का उपयोग किया जा सकता है।

5. प्रवृति मापन : संस्था की वित्तीय सूचनाओं की प्रवृति माप के लिए प्रवृति विश्लेषण/अनुपात का उपयोग कर सकता हैं।

6. आर्थिक सुदृढता का मापन : विभिन्न अनुपातों के माध्यम से आर्थिक सुदृढता का मापन कर कमजोरियों (Weakness) अथवा शक्ति (Strength)का माप कर सकते हैं।

7. व्यवसाय की प्रगति का मूल्यांकन : प्रवृति एवं गतिशील विश्लेषण के माध्यम से व्यवसाय की सामर्थ्य का मूल्यांकन कर सकते हैं।

8. सरल, संक्षिप्त एवं व्यस्थित प्रस्तुतीकरण : नीरस आंकड़ों को सरल, संक्षिप्त व व्यवस्थित रूप देना ही वित्तीय विश्लेषण की महत्वपूर्ण भावना हैं।

9.पूर्वानुमान में सहायक : ऐतिहासिक संमकों से प्रभावी पूर्वानुमान, बजटन एवं नियोजन कर सकते हैं।

10. हित धारकों की आवश्यकता की पूर्ति : वित्तीय विश्लेषण की विभिन्न तकनीकों से वित्तीय विवरणों के उपयोगकर्ताओं की पृथक–पृथक आवश्यकता की पूर्ति करना हैं।

11. निर्णयन : व्यक्तिगत निर्णय उचित नहीं होता है। वैज्ञानिक रीति से विश्लेषित समंक उपलब्ध कराना हैं।

वित्तीय विश्लेषण की प्रक्रिया
(Procedure for Financial Analysis)

वित्तीय विवरणों के विश्लेषण की प्रक्रिया निम्नानुसार रहेगी :–

(1) वित्तीय विश्लेषण का उद्देश्य व सीमा निर्धारित : वित्तीय विश्लेषक, विश्लेषण किस उद्देश्य के लिए करना चाहता हैं यह सर्वप्रथम निर्धारण जरूरी है। जैसे केवल व्यवसाय की प्रगति का ही अध्ययन करना हो तो केवल लाभ हानि खाते ही

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

विश्लेषण करना होगा। इसी प्रकार वित्तीय स्थिति का अध्ययन करना हो तो चिट्ठे का भी विश्लेषण करना होगा। विश्लेषण की विधि का चयन उसके उद्देश्य व सीमा पर निर्भर रहेगा।

(2) वित्तीय विवरणों का आद्योपान्त अध्ययन : इनमें दी गई सूचनाओं के मूल्यांकन हेतु विश्लेषक को इनका सर्वांग अध्ययन करना होगा।

(3) उपयोगी सूचनाएँ एकत्रित करना : वित्तीय विश्लेषक, विश्लेषण हेतु वित्तीय विवरणों के अतिरिक्त अन्य सम्बन्धित सूचनाएँ भी एकत्रित करेगा यथा व्यवसाय की भावी संभावनाओं के अध्ययन के लिए अध्यक्षीय भाषण, संचालकों का प्रतिवेदन, प्रबन्ध रिपोर्ट व विश्लेषण प्राप्त करने होंगे।

(4) सूचनाओं को पुनः वर्गीकृत करना एवं अंकों को सन्निकट करना : वित्तीय विवरणों में दी गई सूचनाओं के अध्ययन/विश्लेषण के उद्देश्य के अनुसार पुनः वर्गीकृत कर लेना चाहिए तथा समंको को सन्निकटता के आधार पर हजारों या लाखों में पूर्णांकित कर बना लेना चाहिए।

(5) तुलना : निरपेक्ष समंक स्वयं सारहीन होते हैं। इन्हें सारपूर्ण बनाने के लिए सापेक्षित मात्रा का माप करना होता है। अतः अन्तः फर्म तुलना अथवा अन्तर्फर्म तुलना के लिए तुलनीय समंको का उपयोग करेंगे। जैसे उसी संस्था के विभिन्न वर्षो की सम्बन्धित मदों के बीच तुलना करना आदि।

(6) विश्लेषण : तुलनीय समंकों को उद्देश्यानुसार विश्लेषण हेतु उपयोग करना चाहिए। जैसे बैंक व वित्तीय संस्थाओं द्वारा शोधनक्षमता जांच लाभदायकता जांच करायी जाती है यह अन्तः फर्म या अन्तर्फर्म हो सकती है इस प्रकार वित्तीय विवरणों की मदों की प्रवृति का अध्ययन भी कर सकते हैं।

(7) व्याख्या एवं प्रस्तुतीकरण: विश्लेषण के बिना व्याख्या संभव नहीं है तथा व्याख्या के बिना विश्लेषण व्यर्थ हैं। अतः विश्लेषित तथ्यों से निष्कर्ष निकाल कर उन्हे तरीके से निर्णयन हेतु प्रस्तुतीकरण आवश्यक होता है तभी विश्लेषण सार्थक होता है। इस प्रकार वित्तीय लेखांकन प्रक्रिया का अन्तिम उत्पाद व्याख्या व प्रस्तुतीकरण है। जिसके बिना व्यावसायिक लेनदेनों का अभिलेखन, वर्गीकरण एवं संक्षिप्तीकरण सारहीन हैं।

वित्तीय विश्लेषण के प्रकार
(Types of Financial Analysis)

वित्तीय विवरणों का विश्लेषण चार प्रकार से किया जा सकता है :–

(1) बाह्य विश्लेषण (External Analysis): वित्तीय विवरणों के बाहरी उपयोगकर्ताओं द्वारा किया जाने वाला विश्लेषण है। जिसमें वित्तीय विश्लेषक सभी अभिलेखों तक पहुँच नहीं सकता है। उसे केवल प्रकाशित विवरणों पर ही निर्भर रहना पड़ता है। यह बैंकों, लेनदारों, शोधकर्ताओं, सरकार द्वारा किया जाता हैं।

(2) आन्तरिक विश्लेषण (Internal Analysis): जब संस्था के प्रबंधको द्वारा संस्था के अभिलेखों के आधार पर विश्लेषण किया जाता है तो आन्तरिक विश्लेषण कहलाता है। इसमें विश्लेषक के पास समस्त सूचनाएँ (प्रकाशित, अप्रकाशित) उपलब्ध होती है। अतः यह अधिक विश्वसनीय व प्रबन्धकीय निर्णयों के हेतु उपयोगी होता है।

(3) क्षैतिज या गतिशील विश्लेषण (Horizontal or Dynamic Analysis) : क्षैतिज विश्लेषण के अन्तर्गत वित्तीय विवरणों में दी गई प्रत्येक मद की अन्तः वर्ष (Inter) तुलना की जाती है। जैसे सन् 2016-17 की स्थायी सम्पति की राशि की तुलना विगत वर्षों 2015-16 व 2014-15 से की जाय। इसलिए इसे गतिशील विश्लेषण भी कहते है। जिसके अन्तर्गत एक वर्ष की विभिन्न मदों का पिछले वर्ष या वर्षो से तुलना कर उसमे परिवर्तनों को मापा जाता है। इससे संस्था की प्रगति या गतिशीलता का अध्ययन होता है। ये परिवर्तन निम्नांकित विधियों से प्रकट कर सकते है :–

(अ) राशियों में प्रतिशत वृद्धि या कमी दिखाकर **(ब)** परिवर्तनों को सूचकांको द्वारा प्रकट करना अर्थात् एक वर्ष को आधार 100 मानकर अन्य वर्षो की तुलना। **(स)** राशियों की वास्तविक वृद्धि व कमी दिखलाना अर्थात् दो अवधियों के विवरण मे मदों का अन्तर धनात्मक (+) ऋणात्मक (–) राशियों में प्रकट करना। यह एक काल श्रेणी (Time series) विश्लेषण है। यह दीर्घकालीन प्रवृति विश्लेषण व योजना के लिए उपयोगी है। तुलनात्मक चिट्ठा व लाभ हानि खाता या आय विवरण तथा प्रवृति विश्लेषण क्षैतिज विश्लेषण के उदाहरण है।

(4) लम्बवत या स्थिर विश्लेषण (Vertical or Static Analysis) : एक निश्चित अवधि के वित्तीय विवरण के विभिन्न अवयवों (Component) के पारस्परिक सम्बन्ध का अध्ययन या उनके योग के मध्य सम्बन्ध का अध्ययन लम्बवत विश्लेषण कहलाता है। यह विश्लेषण एक निश्चित अवधि पर वर्तमान सम्बन्धों को ही बताता है, उसमे उच्चावचनों को नहीं। जैसे चिट्ठे के सम्पति पक्ष का योग 100 मानकर सम्पति की विभिन्न मदों का उससे अनुपात ज्ञात किया जाता है। इसलिए इसे स्थिर विश्लेषण कहा जाता है। क्योंकि यह विश्लेषण उच्चावचनों को नहीं बताता है केवल वर्तमान सम्बन्धों को ही बताता है।

समानाकार चिट्ठा व लाभ हानि खाता या आय भी इस विश्लेषण का उदाहरण है। चिट्ठे व लाभ–हानि खाते की विभिन्न मदों के आपसी सम्बंध को बताने वाले अनुपात विश्लेषण भी इस विश्लेषण की एक तकनीक है। क्योंकि अनुपात विश्लेषण में समंक एक निश्चित अवधि (एक वर्ष) के ही लिये जाते है। इसे स्थैतिक (Static) विश्लेषण भी कहते है। समग्र विश्लेषण के लिए क्षैतिज व लम्बवत् दोनों ही विधियों की नितान्त आवश्यकता है। ये दोनों एक दूसरे के पूरक है विरोधी नहीं।

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

क्षैतिज विश्लेषण एवं लम्बवत विश्लेषण में अन्तर :

आधार	क्षैतिज विश्लेषण	लम्बवत विश्लेषण
1. अवधि	इसमें दो या अधिक अवधि के वित्तीय विवरणों के समंक चाहिये ।	इसमें एक अवधि के ही वित्तीय विवरण समंक चाहिए।
2. उपयोगिता	यह सामान्यतया काल श्रेणी विश्लेषणों में उपयोगी है ।	यह सामान्यतया परिच्छेद विश्लेषण (Cross-sectional Analysis) में उपयोगी है।
3. अवयव या मदें	इसमें प्रत्येक अवयवों (मद) की विभिन्न अवधियों के आचरण का अध्ययन होता है ।	इसमें एक ही अवधि की विभिन्न मदों के पारस्परिक सम्बन्धों का अध्ययन करते हैं।
4. तुलना	यह तुलना का एक अंग है ।	यह तुलना का एक आधार है ।

वित्तीय विश्लेषण की तकनीकें
(Techniques of Financial Analysis)

किसी व्यवसाय के वित्तीय विवरणों की मदों में क्षैतिज या लम्बवत् विश्लेषण का अध्ययन करने के लिए जिन तरीकों का प्रयोग किया जाता हैं उन्हे वित्तीय विश्लेषण की तकनीकें कहा जाता है। एक वित्तीय विश्लेषक द्वारा अक्सर प्रयोग की जानी वाली विभिन्न तकनीकें निम्नांकित है:–

(1) तुलनात्मक वित्तीय विवरण (Comparative Financial Statements)
(2) समानाकार वित्तीय विवरण (Common size Statements)
(3) प्रवृति विश्लेषण (Trend Analysis)
(4) अनुपात विश्लेषण (Ratio Analysis)
(5) रोकड़ प्रवाह विश्लेषण (Cash flow Analysis)
(6) सम विच्छेद विश्लेषण (Break even Analysis)
(7) कोष प्रवाह विश्लेषण (Fund Flow Analysis)

सभी प्रकार के विश्लषणों में सभी तकनीकों का उपयोग नहीं किया जाता है। विश्लेषण तकनीक का चयन विश्लेषण के उद्देश्य पर निर्भर करता है। जैसे एक विश्लेषक दो समान उत्पादन करने वाले उद्योगों के एक वित्तीय वर्ष के समंकों की उनकी लाभार्जन क्षमता जांच हेतु उपयोग लेना चाहता हैं तो अनुपात विश्लेषण तकनीक का उपयोग करेगा अन्य तकनीके उद्देश्य पूर्ति में सहायक नहीं हैं।

इन तकनीकों में से प्रथम चार तकनीकों का अध्ययन पाठ्यक्रम में है अतः शेष तकनीकों का वर्णन नहीं किया जा रहा हैं।

वित्तीय विश्लेषण की सीमाएँ
(Limitations of Financial Analysis)

वित्तीय विवरणों के विश्लेषण के बहुत से लाभ होने के बावजूद इसकी कुछ सीमाएँ है। जिन्हें एक उपयोगकर्ता व विश्लेषणकर्ता को ध्यान में रखना चाहिए। सीमाएँ निम्नानुसार है :–

1. केवल परिमाणात्मक माप : वित्तीय विवरण विश्लेषण में वित्तीय सूचनाओं का परिमाणात्मक अध्ययन होना है, गुणात्मक नहीं। अतः यह कुशलता के मूल्यांकन का एक पक्षीय माप है।

2. सामान्य स्वीकृत सिद्धांतों का अभाव : लेखांकन के लिए विश्वव्यापी स्तर पर समान मान्य सिद्धान्त बनाये जाते रहे हैं तथा प्रभावी किये जा रहे है। फिर भी अभी यह कार्य धीमी गति से चल रहा हैं। अतः समान नियम, सिद्धान्त न अपनाने से वित्तीय सूचनाओं से परिणाम उतने सार्थक नहीं आते एवं तुलनीयता का अभाव होता हैं।

3.निदानात्मक नहीं : वित्तीय विश्लेषण केवल व्यवसाय की निष्पादन कुशलता के लक्षणों को चिन्हित करता हैं, उसका निदान नहीं बताता हैं।

4. वित्तीय विवरणों की सीमाएँ : विगत पृष्ठों पर हमने वित्तीय विवरणों की सीमाओं का अध्ययन किया है, वे सीमाएँ स्वतः ही वित्तीय विश्लेषण की सीमाएं भी है। क्योंकि विश्लेषण उन्हीं वित्तीय विवरणों पर आधारित हैं जैसे वित्तीय विवरण ऐतिहासिक लागतों पर आधारित होते है अतः वर्तमान में उनकी उपयोगिता पर प्रश्न चिह्न लग जाता हैं।

5.मूल्य स्तर परिवर्तनों को ध्यान में नहीं रखना : वित्तीय विवरण से दो या अधिक वर्षो की सूचनाओं की तुलना करने पर परिणाम भ्रामक हो सकते है। जैसे पिछले पाँच वर्षो की उत्पादन लागत की तुलना करनीं है तो वित्तीय विवरणों में ये वास्तविक लागत पर दिखाई जाती है।

अतः मूल्य वृद्धि के प्रभाव को ध्यान में नहीं रखने से वास्तविक निष्पति का सही मापन नहीं हो सकता हैं। प्रत्येक तकनीक की अपनी–अपनी सीमाएं होती हैं। किन्तु इन्हें ध्यान में रखकर एक विश्लेषक वित्तीय विश्लेषण करता है तो परिणाम् सार्थक ही आयेंगे, भ्रामक नहीं।

तुलनात्मक वित्तीय विवरण
(Comparative Financial Statements)

तुलनात्मक वित्तीय विवरण, वित्तीय विश्लेषण की ऐसी तकनीक है जिसमें दो या अधिक वर्षों से सम्बन्धित वित्तीय विवरण समंकों की मदों में हुए परिवर्तनों (निरपेक्ष एवं/अथवा सापेक्ष) को सम्मिलित करते हुए एक विवरण पत्र में उनका प्रस्तुतीकरण किया

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

जाता हैं। तुलनात्मक वित्तीय विवरण एक ऐसा तुलनात्मक अध्यध्यन है जिसमें चिट्ठे व लाभ हानि खाते की दो या अधिक वर्षों की समान व्यक्तिगत मदों मे से एक को आधार मानते हुए अन्य वर्षों की मदों से निरपेक्ष समंक के रूप से, कमी या वृद्धि की राशि के रूप में, कमी या वृद्धि को प्रतिशत के रूप में अनुपातों के रूप में तुलना की जाती है।

इस प्रकार तुलनात्मक वित्तीय विवरणों में एक ही व्यावसायिक संस्था के चिट्ठे व लाभ–हानि खाते की समान मदों, मदों के समूह का दो या दो से अधिक वर्षों की सूचनाओं की प्रवृत्ति का अध्ययन हैं।

तुलनात्मक वित्तीय विवरणों के लाभ :

1. वित्तीय समंको का सुगम व सरल प्रस्तुतीकरण होता है एवं तुलना में आसानी रहती हैं।
2. तुलनात्मक वित्तीय विवरण के अन्तर्गत परिवर्तनों को दर्शाने के कारण ये प्रवृति का बोध कराते हैं तथा इससे पूर्वानुमान में सहायता मिलती हैं।
3. प्रमुख वित्तीय सांख्यिकी को इनके माध्यम से समझने में आसानी रहती हैं।
4. तुलनात्मक वित्तीय विवरण से वित्तीय स्वास्थ्य आदि की जानकारी मिलने से संस्था की शक्ति एवं कमजोरियों की जानकारी हो जाती है। इससे सुधारात्मक कदम उठाये जा सकते है।
5. तुलनात्मक वित्तीय विवरणों की सहायता से अन्तःफर्म तुलना (Intra firm comparison) एवं उद्योग विशेष के औसत से तुलनात्मक दक्षता ही जांच हो सकती हैं।
6. परिवर्तनों के विश्लेषण व प्रवृति की सूचनाओं से पूर्वानुमान व नियोजन में सहायता मिलती हैं।
7. तुलनात्मक वित्तीय विवरणों के अध्ययन से लेनदार व ऋणदाता अपने ऋणों की अवधि बढाने या अन्य सहायता मिलती हैं। निर्णय लेने में सुगमता महसूस करते है।

तुलनात्मक चिट्ठे का निर्माण
(Preparation of Comparative Balance Sheet)

तुलनात्मक चिट्ठा से एक संस्था की दो या अधिक तिथियों की सम्पतियों, दायित्वों, तथा पूँजी में आधार वर्ष के आधार पर हुए परिवर्तनों की निरपेक्ष अंकों में, वृद्धि या कमी के प्रतिशत के रूप में, अनुपातों के रूप में मापन किया जाता है। यह चिट्ठे का क्षैतिज विश्लेषण हैं। इसको बनाने के लिए निम्नांकित 6 खाने बनाये जाते हैं।

प्रथम कॉलम : इस खाने में चिट्ठे की प्रत्येक मद या अवयव का नाम लिखा जाता है।
द्वितीय कॉलम : इस खाने में प्रत्येक मद के सामने चिट्ठे में लिखे हुए उनके नोट नम्बर लिखे जाते हैं।
तीसरा कॉलम : इसमें पिछले वित्तीय वर्ष की राशियाँ लिखते हैं।
चतुर्थ कॉलम : इसमें चालू वर्ष की राशियां लिखते हैं।
पांचवा कॉलम : पिछले वर्ष से इस वर्ष की प्रत्येक मद की राशि में हुआ परिवर्तन लिखा जाता है।
छठा कॉलम : पिछले वर्ष की प्रत्येक मद की राशि की कॉलम पांच में लिखी वृद्धि या कमी से प्रतिशत वृद्धि/कमी गणना कर लिखी जाती है।

$$\text{प्रतिशत परिवर्तन} = \frac{\text{कॉलम पांच की उक्त मद की राशि}}{\text{कॉलम तीन की उक्त मद की राशि}} \times 100$$

तुलनात्मक चिट्ठे का प्रारूप

Particulars	Note No.	Previous year ₹	Current Year ₹	Absolute Change (Increase/Decrease ₹	Percentage Change (Increase/Decrease)
1	2	3	4	5 (3-4)	6 ($\frac{5}{3}$x100)
I-EQUITY AND LIABILITIES					
1.Shareholders' Funds					
(a) Share Capital :	--	--	--	--	--
(i) Equity Share Capital	--	--	--	--	--
(ii) Preference Share Capital	--	--	--	--	--
(b) Reserves and Surplus	--	--	--	--	--
2.Non-Current Liabilities					
(a) Long-term Borrowings	--	--	--	--	--
(b) Long Term Provisions	--	--	--	--	--
3.Current Liabilities					
(a) Short term Borrowings	--	--	--	--	--
(b) Trade Payables (Creditors)	--	--	--	--	--
(c) Other Current Liabilities	--	--	--	--	--
(d) Short-term Provisions	--	--	--	--	--
Total	--	--	--	--	--

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

II. ASSETS					
2. Non Current Assets					
(a) Fixed Assets (Tangible)	--	--	--	--	--
(i) Tangible Assets	--	--	--	--	--
(ii) Intangible Assets	--	--	--	--	--
(b) Non-current Investments	--	--	--	--	--
(c) Long-term Loans and Advances	--	--	--	--	--
3. Current Assets					
(a) Current Investment	--	--	--	--	--
(b) Inventories	--	--	--	--	--
(c) Trade Receivables	--	--	--	--	--
(d) Cash and Cash Equivalents	--	--	--	--	--
(e) Short- term Loans and Advances	--	--	--	--	--
(f) Other Current Assets	--	--	--	--	--
Total	--	--	--	--	--

नोट : 1. निरपेक्ष परिवर्तन व प्रतिशत परिवर्तन ऋणात्मक होने पर उन्हें कोष्ठक में दिखाऐंगे। 2. चिट्ठे में दिखाई गई अन्य मदों में हुए परिवर्तन पृथक से नहीं दिखाये जाते हैं। जैसे अंश वारंट के सम्बन्ध नगद प्राप्त, आस्थगित कर दायित्व (शुद्ध), दीर्घकालीन आयोजन, अन्य चालू दायित्व, पूंजीगत, अर्द्ध निर्मित माल, अदृश्य सम्पत्तियाँ जो अभी विकास स्थिति में, आस्थगित कर सम्पति (शुद्ध), अन्य दीर्घकालीन दायित्व तथा अन्य चालू सम्पतियों (पूर्वदत्त खर्चे, बकाया आय व अग्रिम कर को छोड़कर)

उदाहरण 1 : निम्नांकित चिट्ठों से एक्स लिमिटेड का तुलनात्मक चिट्ठा तैयार कीजिए।

(From the following Balance Sheets, prepare Comparative Balance Sheet.)

Particulars	Note No.	31 March 2017 ₹	31 March 2016 ₹
I-EQUITY AND LIABILITIES			
1. **Shareholders' Funds**			
(a) Share Capital :			
(i) Equity Share Capital		4,00,000	3,00,000
(ii) Preference Share Capital		3,00,000	2,00,000
(b) Reserves and Surplus			
2. Non-Current Liabilities			
(a) Long-term Borrowings		2,00,000	50,000
(b) Long Term Provisions			
3. **Current Liabilities**			
(a) Trade Payables		1,00,000	75,000
Total		10,00,000	6,25,000
II. ASSETS			
1. Non Current Assets			
(a) Fixed Assets		5,40,000	3,60,000
(b) Non-current Investments		40,000	40,000
2. Current Assets			
(a) Trade Receivables		4,00,000	2,00,000
(b) Cash and Cash Equivalents		20,000	25,000
Total		10,00,000	6,25,000

हल:

Comparative Balance Sheet As at 31st March, 2016 and 2017

Particulars	Note No.	31 March 2016	31 March 2017	Absolute Change (Increase/Decrease)	Percentage Change (Increase/Decrease)
1	2	3 ₹	4 ₹	5 ₹	6 ₹
I-EQUITY AND LIABILITIES					
1.**Shareholders' Funds**					
(a) Share Capital :		3,00,000	4,00,000	1,00,000	33.33
(i) Equity Share Capital		2,00,000	3,00,000	1,00,000	50.00
(ii) Preference Share Capital					
(b) Reserves and Surplus					

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

2.Non-Current Liabilities					
(a) Long-term Borrowings		50,000	2,00,000	1,50,000	300.00
(b) Long Term Provisions					
3.Current Liabilities					
(a) Trade Payables(Creditors)		75,000	1,00,000	25,000	33.33
Total		**6,25,000**	**10,00,000**	**3,75,000**	**60.00**
II. ASSETS					
1. Non Current Assets					
(a) Fixed Assets (Tangible)		3,60,000	5,40,000	1,80,000	50.00
(i) Tangible Assets		40,000	40,000	--	--
2. Current Assets					
(a) Current Investment		2,00,000	4,00,000	2,00,000	100.00
(b) Cash and Cash Equivalents		25,000	20,000	(5,000)	(20.00)
Total		**6,25,000**	**10,00,000**	**3,75,000**	**60.00**

उदाहरण 2 : निम्नांकित सारांशित चिट्ठों से वाई लिमिटेड का तुलनात्मक चिट्ठा तैयार कीजिये।

(Form the following summarised Balance Sheets of Y Ltd. , prepare Comparative Balance Sheet)

(₹ in Lakhs)

Particulars	Note No.	31 March 2017	31 March 2016
I-EQUITY AND LIABILITIES			
1.**Shareholders' Funds**			
(a) Share Capital :			
(i) Equity Share Capital		50.00	50.00
(ii) Preference Share Capital		15.00	20.00
(b) Reserves and Surplus		18.00	15.00
2.Non-Current Liabilities			
(a) Long-term Borrowings		50.00	40.00
(b) Long Term Provisions		2.00	2.20
3.**Current Liabilities**			
(a) Trade Payables		14.30	13.00
Total		149.30	140.20
II. ASSETS			
1. Non Current Assets			
(a) Fixed Assets		105.00	105.00
2. Current Assets			
(a) Trade Receivables		40.00	31.00
(b)Cash and Cash Equivalents		4.30	4.20
Total		149.30	140.20

हल: **Comparative Balance Sheet As at 31st March, 2016 and 2017**

Particulars	Note No.	31 March 2016	31 March 2017	Absolute Change (Increase/Decrease)	Percentage Change (Increase/Decrease)
1	2	3 ₹	4 ₹	5 ₹	6
I-EQUITY AND LIABILITIES					
1.**Shareholders' Funds**					
(a) Share Capital :					
(i) Equity Share Capital		50.00	50.00	--	--
(ii)Preference Share Capital		20.00	15.00	(5.00)	(25.00)
(b) Reserves and Surplus		15.00	18.00	3.00	20.00
2.Non-Current Liabilities					
(a) Longterm Borrowings		40.00	50.00	10.00	25.00
(b) Long Term Provisions		2.20	2.00	(0.20)	(9.09)

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

3.**Current Liabilities**					
(a) Trade Payables (Creditors)		13.00	14.30	1.30	10.00
Total		**140.20**	**149.30**	**9.50**	**06.49**
II. ASSETS					
1. Non Current Assets					
(a) Fixed Assets (Tangible)		105	105	--	--
2. Current Assets					
(a) Current Investment		31.00	40.00	9.00	29.03
(b) Cash and Cash Equivalents		4.20	4.30	0.10	2.38
Total		**140.00**	**149.30**	**9.10**	**6.49**

तुलनात्मक लाभ–हानि खाता या आय विवरण
(Comparative Profit and Loss Account or Income Statement)

आय विवरण एक वित्तीय वर्ष की लाभ–हानि का विवरण दर्शाता हैं। केवल एक अवधि के समंको से निष्कर्ष नहीं निकाले जा सकते हैं। उसमें तुलनीयता नहीं होती हैं। एक अवधि से अधिक के लाभ हानि का तुलनात्मक अध्ययन कर विश्लेषण व्यवसाय की प्रगति आदि के निष्कर्ष निकाल सकता हैं। अतः तुलनात्मक परिणामों में एक अवधि से दूसरी अवधि में हुए परिवर्तन निरपेक्ष अंको में कमी या वृद्धि को प्रतिशतों में व्यक्त किये जाते हैं। यह लाभ–हानि खाते का क्षैतिज विश्लेषण हैं। इसको लाभ–हानि का गतिशील विश्लेषण भी कहते हैं।

तुलनात्मक लाभ–हानि या आय विवरण निर्माण

(Preparation of Comparative Profit and Loss Acoount or Income Statment) :

तुलनात्मक आय विवरण बनाने के लिए निम्नानुसार छः कॉलम बनाये जाते हैं:–

प्रथम कॉलम : इस कॉलम में आय विवरण की सभी मदों के नाम लिखे जाते हैं।

द्वितीय कॉलम : इस कॉलम में प्रत्येक मद के सामने आय विवरण में लिखे हुए उनके नोट नम्बर लिखे जाते हैं।

तीसरा कॉलम : इसमें प्रत्येक मद की पिछले वर्ष की राशि लिखी जाती हैं।

चतुर्थ कॉलम : इसमें प्रत्येक मद की चालू वर्ष की राशि लिखी जाती हैं।

पांचवा कॉलम : पिछले वर्ष से इस वर्ष की प्रत्येक मद की राशि में हुआ परिवर्तन लिखा जाता हैं।

छठा कॉलम : पिछले वर्ष की प्रत्येक मद की राशि की कॉलम पांच में लिखी वृद्धि या कमी से प्रतिशत वृद्धि/कमी गणना करके लिखी जाती हैं।

$$\text{प्रतिशत परिवर्तन} = \frac{\text{कॉलम पांच की उक्त मद की राशि}}{\text{कॉलम तीन की उक्त मद की राशि}} \times 100$$

तुलनात्मक लाभ हानि खाता या आय विवरण का प्रारूप
(Format of Comparative statement of Profit and Loss Accounts or Income Statement)

Particulars	Note No.	Previous year	Current Year	Absolute Change (Increase/Decrease)	Percentage Change (Increase/Decrease)
1	2	3 ₹	4 ₹	5 (3-4) ₹	6 ($\frac{5}{3}$x100)
I. Revenue from Operations	--	--	--	--	--
II. Other Income	--	--	--	--	--
III. Total Revenue (I+II)	--	--	--	--	--
IV. Expenses					
(a) Cost of Materials Consumed	--	--	--	--	--
(b) Purchase of Stock-in-Trade	--	--	--	--	--
(c) Change in Inventories of Finished Goods, Work-in-Progress and Stock-in-Trade	--	--	--	--	--
(d) Employees Benefit Expenses	--	--	--	--	--
(e) Finance Costs	--	--	--	--	--
(f) Depreciation and Amortisation Expenses	--	--	--	--	--
(g) Other Expenses	--	--	--	--	--
Total Expenses					

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

V. Profit before Tax (III-IV)	--	--	--	--	--
VI. Less: Income Tax	--	--	--	--	--
VII.Profit after Tax (V-VI)	--	--	--	--	--

नोट : 1. निरपेक्ष परिवर्तन व प्रतिशत परिवर्तन ऋणात्मक होने पर उन्हे कोष्ठक में लिखा जाता हैं।
2. उपभोग की गई सामग्री =कच्चे माल का प्रा.स्टॉक+ क्रय कच्चे माल का अन्तिम स्टॉक
3. स्टॉक का क्रय = पुर्नबिक्री के लिए क्रय किया माल–क्रय वापसी
4. परिचालन से आय : विक्रय (विक्रय वापसी घटाकर), विकृत माल की बिक्री, सेवाओं से प्राप्ति, यदि वित्तीय कम्प्पनी हैं तो अर्जित ब्याज, लाभांश व सेवा चार्जेज।
5. अन्य आयों में गैर व्यापारिक क्रियाओं से आय सम्मिलित हैं।

उदाहरण 3 : निम्नांकित सूचनाओं से ए. लि. का तुलनात्मक आय विवरण बनाइये। (From the following informations & prepare Comparative Income Statement).

Particulars	31 March 2016 ₹	31 March 2017 ₹
1	2	3
Revenue from Operations (Sales)	4,00,000	6,00,000
Purchase of Stock-in-Trade (net Purchase)	2,50,000	3,50,000
Change in Inventories of Finished Goods, Work-in-Progress and Stock in Trade	60,000	60,000
OtherExpenses (% of cost of revenue from Operations)	10%	10%
Tax	30%	30%

हल :

Comparative Income Statement
for the year ended 31st March 2016 & 2017

Particulars	Note No.	Previous year	Current year	Absolute Change (Increase/Decrease)	Percentage Change (Increase/Decrease)
1	2	3 ₹	4 ₹	5 (3-4) ₹	6 ($\frac{5}{3}$ x100)
I. Revenue from Operations	--	400000	600000	200000	50.00
II. Total Revenue	--	**4,00,000**	**6,00,000**	**2,00,000**	**50.00**
III. Expenses					
(a) Purchase of Stock in Trade	--	2,50,000	3,50,000	1,00,000	40.00
(b) Change in Inventories of Stock-in-Trade	--	60,000	60,000	--	--
(c) Other Expenses	--	31,000	41,000	10,000	32.26
Total Expenses		3,41,000	4,51,000	1,10,000	32.26
IV. Profit before Tax (II-III)	--	59,000	1,49,000	90,000	152.54
V. Less: Income Tax	--	17,700	44,700	27,000	152.54
VI. Profit after Tax (IV-VI)	--	**41,300**	**1,04,300**	**63,000**	**152.54**

नोट : Cost of revenue from operations (Cost of good sold) = Purchases + Changes in Inventories.
अतः 2015-15 के लिए अन्य व्यय ₹ 2,50,000+60,000= 3,10,000 x 10% = ₹ 31,000
2016-17 के लिए अन्य व्यय ₹ 3,50,000+60,000= 4,10,000 x 10% = ₹ 41,000

उदाहरण 4 : लाभ–हानि खाते से ली गई निम्नांकित सूचनाओं से जेड .लि. का तुलनात्मक लाभ हानि खाता तैयार कीजिये। Following information extracted from Statement of profit & loss of Z Ltd., prepare Comparative Income Statement).

Particulars	31 March 2016 ₹	31 March 2017 ₹
1	2	3
Revenue from Operations	50,00,000	70,00,000
Employees Benefit Expenses	5,00,000	6,00,000
Depreciation and Amortisation Expenses	1,00,000	1,20,000

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Purchase of Stock-in-Trade	25,00,000	30,00,000
Chage in Inventories of Stock-in-Trade	1,50,000	2,00,000
Other Expenses	2,00,000	3,00,000
Tax Rates 30%		

हल :

Particulars	Note No.	Previous year	Current year	Absolute Change (Increase/Decrease)	Percentage Change (Increase/Decrease)
1	2	3 ₹	4 ₹	5 (3-4) ₹	6 ($\frac{5}{3}$x100)
I. Revenue from Operations	--	50,00,000	70,00,000	20,00,000	40.00
II. Total Revenue	--	**50,00,000**	**70,00,000**	**20,00,000**	**40.00**
III. Expenses					
(a) Purchase of Stock-in-Trade	--	25,00,000	30,00,000	5,00,000	20.00
(b) Chage in Inventories of Stock-in-Trade	--	1,50,000	2,00,000	50,000	33.33
(c) Employees Benefit Expenses	--	5,00,000	6,00,000	1,00,000	20.00
(d) Depreciation and Amortisation Expenses	--	1,00,000	1,20,000	20,000	20.00
(e) Other Expenses	--	2,00,000	3,00,000	1,00,000	50.00
Total Expenses		**34,50,000**	**42,20,000**	**7,70,000**	**22.32**
IV. Profit before Tax (II-III)	--	15,50,000	27,80,000	12,30,000	79.35
V. Less: Tax @30%	--	4,65,000	8,34,000	3,69,000	79.35
VI. Profit after Tax (IV-VI)	--	**10,85,000**	**19,46,000**	**8,61,000**	**79.35**

समानाकार वित्तीय विवरण
(Common Size Financial Statements)

वित्तीय समंकों को लम्बवत् प्रतिशतों के रूप में दिखाने वाले वित्तीय विवरण समानाकार विवरण कहलाते हैं। इसके अन्तर्गत चिट्ठा एवं लाभ हानि खाता (या आय खाता) की प्रत्येक मद का मूल्य लिखा जाता है। तत्पश्चात् इन अंकों को एक प्रमुख अंक (यथा व्यावसायिक क्रियाओं से आय अथवा कुल सम्पतियों, कुल दायित्वों) के प्रतिशत के रूप में व्यक्त किया जाता हैं अथवा लाभ–हानि खाते की प्रत्येक मद व्यवसायिक क्रियाओं से आय के प्रतिशत के रूप में दिखाई जाती हैं। यदि चिट्ठे व आय विवरण की मदों को प्रतिशत में प्रस्तुत की जाय तो तुलना के लिए सर्वनिष्ठ आधार तैयार हो जाता है। इस प्रकार तैयार किये गये विवरणों को समानाकार वित्तीय विवरण कहते हैं। यह विवरण पत्र एक वर्ष, दो वर्ष या अधिक के लिए बनाया जाता हैं। लम्बवत् विश्लेषणों का उपयोग सामान्यतयाः अन्तर्फर्म तुलना (Inter firm comparison) में किया जाता हैं। जिसमें एक अवधि के मूल्यों की दो या अधिक फर्म ही तुलना होती हैं। किन्तु एक ही कम्पनी के दो या अधिक वर्षों के समानाकार विवरण बनाने पर यह अन्तःफर्म तुलना (Intra firm comparison) हो जाती हैं तथा प्रवृति विश्लेषणों में उपयोगी हैं।

समानाकार चिट्ठा (Common Size Balance Sheet) : इसके अन्तर्गत कुल सम्पतियाँ/कुल दायित्व से प्रत्येक मद को प्रतिशत के रूप में प्रकट किया जाता हैं। कुल सम्पति को 100 मानकर सम्पति पक्ष की प्रत्येक मद का उससे प्रतिशत ज्ञात किया जाता है। इसी प्रकार कुल दायित्व को 100 मानते हुए दायित्व पक्ष ही प्रत्येक मद को उससे प्रतिशत ज्ञात किया जाता हैं। यदि यह एक से अधिक वर्षों के लिए बनाया जाता है तो प्रत्येक मद की प्रवृति का मापन किया जा सकता हैं तथा यदि इसे एक उद्योग की विभिन्न फर्मों के लिए बनाया जाता है तो इससे वित्तीय सुदृढ़ता की सापेक्ष स्थिति की जानकारी कर वित्तीय व्यूह रचना को समझने में आसानी होती है। इसे 100 प्रतिशत विवरण पत्र भी कहते है।

समानाकार चिट्ठे के उद्देश्य :

1. चिट्ठे की प्रत्येक मद में होने वाले परिवर्तन का विश्लेषण करना है।
2. सम्पति दायित्वों की विभिन्न मदों की प्रवृति का मापन करना हैं।
3. इसके माध्यम से वित्तीय सुदृढता का मापन व वित्तीय व्यूह रचना को समझना हैं।

समानाकार चिट्ठे का निर्माण (Preparation of Common Size Balance Sheet) : समानाकार चिट्ठे को बनाते

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

समय निम्नांकित कॉलम बनाये जाते हैं।

प्रथम कॉलम : इस कॉलम में चिट्ठे की मदों के नाम लिखने हैं।

द्वितीय कॉलम : चिटठे की प्रत्येक मद का नोट नम्बर उपलब्ध चिट्ठे से लिखना है।

तीसरा कॉलम : सम्पति व दायित्वों की प्रत्येक मद की पिछले वर्ष की राशि लिखनी है।

चतुर्थ कॉलम : सम्पति व दायित्वों की प्रत्येक मद की चालू वर्ष की राशि लिखी जाती हैं।

पांचवा कॉलम : चिट्ठे के योग को 100 मानते हुए पिछले वर्ष की प्रत्येक मद का उससे प्रतिशत ज्ञात कर इस कालम में लिखा जाता है।

छठा कॉलम : चिट्ठे के योग को 100 मानते हुए चालू वर्ष की चिट्ठे की प्रत्येक मद का उससे प्रतिशत ज्ञात कर इस कॉलम में लिखा जाता है।

जैसेः सम्पति पक्ष का योग ₹ 10,00,000 हो तथा गैर चालू सम्पतियों में स्थायी सम्पति की राशि ₹ 4,00,000 हो तो स्थायी सम्पति के सामने $\frac{4,00,000}{10,00,000} \times 100 = 40$ प्रतिशत लिखेंगे।

नोट : **1.** दो फर्मों में तुलना होने पर कालम 3 व 4 में पृथक–पृथक फर्म के मूल्य लिखते हैं तथा 5 व 6 में फर्म के चिट्ठे को 100 मानते हुए उससे प्रतिशत लिखते हैं। **2.** यदि एक ही फर्म के चालू वर्ष की मदों के लिए गणना करनी हो तो कॉलम 3 व 5 नहीं बनायेंगे।

Particulars	Note No.	Absolute Amount		Percentage of Balance Sheets Total	
				31st March 2016	31st March 2017
1	2	3	4	5=(3/total x100)	5=(4/total x100)
EQUITY AND LIABILITIES					
1. **Shareholders' Funds**					
(a) Share Capital :	--	--	--	--	--
(i) Equity Share Capital	--	--	--	--	--
(ii) Preference Share Capital	--	--	--	--	--
(b) Reserves and Surplus	--	--	--	--	--
2.Non-Current Liabilities					
(a) Long-term Borrowings	--	--	--	--	--
(b) Long Term Provisions	--	--	--	--	--
3.**Current Liabilities**					
(a) Short term Borrowings	--	--	--	--	--
(b) Trade Payables (Creditors)	--	--	--	--	--
(c) Other Current Liabilities	--	--	--	--	--
(d) Short-term Provisions	--	--	--	--	--
Total	--	--	--	--	--
II. ASSETS					
2. Non Current Assets					
(a) Fixed Assets (Tangible)	--	--	--	--	--
(i) Tangible Assets	--	--	--	--	--
(ii) Intangible Assets	--	--	--	--	--
(b) Non-current Investments	--	--	--	--	--
(c) Long-term Loans and Advances	--	--	--	--	--
3.Current Assets					
(a) Current Investment	--	--	--	--	--
(b) Inventories	--	--	--	--	--
(c) Trade Receivables	--	--	--	--	--
(d) Cash and Cash Equivalents	--	--	--	--	--
(e) Short-term Loans and Advances	--	--	--	--	--
(f) Other Current Assets	--	--	--	--	--
Total	--	--	--	--	--

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

नोट : 1. दो फर्मों में तुलना होने पर कालम 3 में प्रथम फर्म, कॉलम 4 में द्वितीय फर्म के मूल्य, कॉलम 5 में प्रथम फर्म का प्रतिशत परिवर्तन व कॉलम 6 में द्वितीय फर्म का प्रतिशत परिवर्तन लिखते हैं। 2. यदि एक ही फर्म के चालू वर्ष की मदों के लिए विश्लेषण करना हो तो कॉलम 3 व 5 नहीं बनायेंगे।

उदाहरण 5: एबीसी लिमिटेड की निम्नांकित सूचनाओं से समानाकार चिठ्ठा बनाइये

Balance Sheets
As On 31st March 2016 and 2017

Particulars	Note No.	31st March 2016 ₹	31st March 2017 ₹
I-EQUITY AND LIABILITIES			
1.**Shareholders' Funds**			
(a) Share Capital :	--	4,00,000	8,00,000
(i) Equity Share Capital	--		
(b) Reserves and Surplus	--	2,00,000	3,00,000
2.Non-Current Liabilities			
(a) Long-term Borrowings	--	6,00,000	8,00,000
3.Current Liabilities			
(a) Trade Payables (Creditors)	--	4,00,000	1,00,000
Total		16,00,000	20,00,000
II. ASSETS			
2. Non Current Assets			
(a) Fixed Assets (Tangible)		10,00,000	1,70,00,000
3. Current Assets			
(a) Cash and Cash Equivalents		6,00,000	3,00,000
Total		16,00,000	20,00,000

हल :

Common Size Balance Sheet
As On 31st March 2016 and 2017

Particulars	Note No.	Absolute Amount		Percentage of Balance Sheets Total	
		31st March 2016	31st March 2017	31st March 2016	31st March 2017
1	2	3	4	5=(3/total x100)	5=(4/total x100)
I-EQUITY AND LIABILITIES					
1.**Shareholders' Funds**					
(a) Share Capital :	--	4,00,000	8,00,000	25.00	40.00
(b) Reserves and Surplus	--	2,00,000	3,00,000	12.50	15.00
2.Non-Current Liabilities					
(a) Long-term Borrowings	--	6,00,000	8,00,000	37.50	40.00
3.**Current Liabilities**					
(a) Trade Payables	--	4,00,000	1,00,000	25.00	5.00
Total		16,00,000	20,00,000	100.00	100.00
II. ASSETS					
1. Non Current Assets					
(a) Fixed Assets (Tangible)		10,00,000	17,00,000	62.50	85.00
2. Current Assets					
(a)Cash and Cash Equivalents		6,00,000	3,00,000	37.50	15.00
Total		16,00,000	20,00,000	100.00	100.00

उदाहरण 6 : ए एवं सी लिमिटेड के निम्नांकित चिट्ठों से समानाकार चिट्ठा बनाइये।
Prepare Common Size Balance Sheet of A and C Ltd. from the following Balance Sheets.

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Balance Sheet
As at 31st March 2016 and 2017

Particulars	Note No.	31st March 2017 (₹) A Ltd.	31st March 2017 (₹) C Ltd.
I-EQUITY AND LIABILITIES			
1.**Shareholders' Funds**			
(a) Share Capital :	--	3,00,000	5,00,000
(b) Reserves and Surplus	--	1,00,000	2,00,000
2.Non-Current Liabilities			
(a) Long-term Borrowings	--	2,00,000	3,00,000
3.**Current Liabilities**			
(a) Short term Borrowings	**1**	50000	1,00,000
(b) Trade Payables	--	1,50,000	2,50,000
(c) Other Current Liabilities	--	2,50,000	1,50,000
(d) Short-term Provisions	--	1,50,000	1,00,000
Total		**12,00,000**	**16,00,000**
II. ASSETS			
1. Non-Current Assets			
(a) Fixed Assets (Tangible) (net)		5,00,000	6,00,000
(b) Non-current Investments		1,00,000	2,00,000
2. Current Assets			
(a) Inventories		2,00,000	3,00,000
(b) Trade Receivables		1,50,000	2,50,000
(c) Cash and Cash Equivalents		1,00,000	2,00,000
(d) Other Current Assets	**2**	1,50,000	50,000
Total		**12,00,000**	**16,00,000**

Notes to the Accounts:

Particulars	31st March 2017 (₹) A Ltd.	31st March 2017 (₹) C Ltd.
1. Long-term Borrowings		
(a) Bank	75,000	1,00,000
(b) Debentures	1,25,000	2,00,000
	2,00,000	3,00,000
2. Other Current Assets		
(a) Prepaid expenses	1,50,000	50,000

हल :

Common Size Balance Sheet
As at 31st March, 2017

Particulars	Note No.	Absolute Amount ₹		Percentage of Balance Sheets Total	
		31st March 2016	31st March 2017	31st March 2017 A Ltd.	31st March 2017 C Ltd.
I EQUITY AND LIABILITIES					
1.**Shareholders' Funds**					
(a) Share Capital :	--	3,00,000	5,00,000	25.00	31.25
(b) Reserves and Surplus	--	1,00,000	2,00,000	8.33	12.50
2.Non-Current Liabilities					
(a) Long-term Borrowings	--	75,000	1,00,000	6.25	6.25
(b) Long Term Provisions	--	1,25,000	2,00,000	10.42	12.50

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

3.**Current Liabilities**					
(a) Shortterm Borrowings	--	5,00,00	1,00,000	4.17	6.25
(b) Trade Payables (Creditors)	--	1,50,000	2,50,000	12.50	15.63
(c) Other Current Liabilities	--	2,50,000	1,50,000	20.83	9.37
(d) Short-term Provisions	--	1,50,000	1,00,000	12.50	6.25
Total		**12,00,000**	**16,00,000**	**100.00**	**100.00**
II. ASSETS					
1. Non Current Assets					
(a) Fixed Assets(Tangible) (net)		5,00,000	6,00,000	41.67	37.50
(b) Non-current Investments		1,00,000	2,00,000	8.33	12.50
2. Current Assets					
(a) Inventories		2,00,000	3,00,000	16.67	18.75
(b) Trade Receivables		1,50,000	2,50,000	12.50	15.67
(c) Cash and Cash Equivalents		1,00,000	2,00,000	8.33	12.50
(d) Other Current Assets	**2**	1,50,000	50,000	12.50	3.12
Total		**12,00,000**	**16,00,000**	**100.00**	**100.00**

समानाकार लाभ हानि खाता (आय विवरण)

(Common Size Statement of Profit & Loss (Income Statement))

इस विवरण पत्र में व्यावसायिक क्रियाओं से आय (विक्रय) को 100 मानते हुए प्रत्येक व्यय की मद को इससे प्रतिशत के रूप में व्यक्त किया जाता है। जैसे विक्रय ₹ 10,00,000 हो तथा व्यापारिक स्टॉक का क्रय ₹ 5,00,000 हो तो व्यापारिक स्टॉक का क्रय विक्रय का 50 प्रतिशत हैं।

समानाकार आय के विवरण का उद्देश्य :

1 .आय विवरण की प्रत्येक मद में हुए परिवर्तनों की जानकारी करना हैं। **2.** व्यवसाय की कुशलता की जानकारी प्राप्त करना हैं। **3.** आय व व्यय की प्रत्येक मद की प्रवृति का अध्ययन करना हैं।

समानाकार लाभ हानि खाता (आय विवरण) का निर्माण

(Preparation of common size Statements of Profit & Loss Account)

इसे बनाने के लिए छः चरण हैः–

प्रथम कॉलम : इसके अन्तर्गत आय व्यय की सभी मदों के नाम लिखे जाते है।

द्वितीय कॉलम : इस कॉलम में प्रत्येक मद के सामने आय विवरण।

तीसरा कॉलम : इस कॉलम में पिछले वर्ष की प्रत्येक मद की राशि उसके सम्मुख लिखते हैं किन्तु यदि यह दो फर्मों की तुलना के लिए बनाया गया है तो एक फर्म की उस वर्ष की प्रत्येक मद की राशि उसके नाम के सम्मुख लिखते है।

चतुर्थ कॉलम : इस कॉलम में चालू वर्ष की प्रत्येक मद की राशि उसके सम्मुख लिखते है। किन्तु यदि यह दो फर्मों की तुलना के लिए बताया गया है। तो दूसरी फर्म की उस वर्ष की प्रत्येक मद की राशि उसके नाम के सम्मुख लिखते हैं।

पांचवा कॉलम : इस कॉलम में पिछले वर्ष की संचालन से आय (विक्रय) को 100 मानते हुए प्रत्येक मद का उससे प्रतिशत लिखा जाता हैं।

छठा कॉलमः इसमें चालू वर्ष की संचालन से आय (विक्रय) को 100 मानते हुए प्रत्येक मद का उससे प्रतिशत लिखा जाता हैं।

नोट : 1. दो फर्मों में तुलना होने पर कालम 3 व 4 में पृथक–पृथक फर्म के मूल्य लिखते हैं तथा 5 व 6 में पृथक पृथक फर्म के चिट्ठे को 100 मानते हुए उससे प्रतिशत लिखते हैं। **2.** यदि एक ही फर्म के चालू वर्ष की मदों के लिए गणना करनी हो तो कॉलम 3 व 5 नहीं बनायेंगे।

समानाकार लाभ–हानि खाते (आय खाते) का प्रारूप

(Format of Common Size Statement of Profit and Loss)

Particulars 1	**Note No.** 2	**Absolute Amount** 3	4	**Percentage of Revenue from operations** 5	6
		Previous year ₹	**Current year ₹**	**Previous year**	**Current year**
I. Revenue from Operations		--	--	--	--
II. Other Income		--	--	--	--
III. Total Revenue (I+II)					

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

IV. Expenses		--	--	--	--
(a) Cost of Materials consumed					
(b) Purchases of Stock in Trade		--	--	--	--
(c) Change in Inventories of finished Goods, Work-in-progress and Stock-in-Trade		--	--	--	--
(d) Employees Benefit Expenses		--	--	--	--
(e) Financial Costs		--	--	--	--
(f) Depreciation and Amortisation Expenses		--	--	--	--
(g) Other Expenses		--	--	--	--
Total Expenses		--	--	--	--
V. Profit Before Tax (III-IV)		--	--	--	--
VI. Less : Income Tax		--	--	--	--
VII. Profit after Tax (V-VI)		--	--	--	--

नोट : 1. दो फर्मों में तुलना करनी हो तो कॉलम 3 में प्रथम फर्म के मूल्य, कॉलम 4 में तीन फर्म के मूल्य, कॉलम 5 में प्रथम फर्म के प्रतिशत व कॉलम 6 में द्वितीय फर्म के प्रतिशत लिखते हैं।

2. जब एक ही फर्म की चालू वर्ष की मदों का विश्लेषण करना हो तो कॉलम 3 व 5 नहीं बनायेंगे।

उदाहरण 7 : ए लिमिटेड के 31 मार्च 2016 व 2017 को समाप्त होने वाले वर्ष के लाभ–हानि खाते नीचे दिए गए है। समानाकार लाभ हानि खाता बनाइये। (Profit and Loss Account for the year ending 31st March 2016 & 2017 of A Ltd. are given below prepare Common Size Profit and Loss Account)

Particulars	Note No.	31st March 2017 ₹	31st March 2016 ₹
Income			
I. Revenue from Operations (Net Sales)		12,00,000	10,00,000
II. Expenses		--	--
(a) Purchases of Stock in Trade		8,00,000	6,00,000
(b) Change in Inventories of finished Goods, Work-in-progress and Stock- in-Trade		1,00,000	1,00,000
(c) Depreciation and Amortisation Expenses		1,00,000	1,20,000
(d) Other Expenses		50,000	80,000
Total Expenses		**10,50,000**	**9,00,000**
III. Profit Before Tax (I-II)		1,50,000	1,00,000
IV. Less : Income Tax		45,000	30,000
V. Profit after Tax (III-IV)		**1,05,000**	**70,000**

हल :

Common Size Statement of Profit and Loss
for the year ended 31st March 2016 and 2017

Particulars	Note No.	Absolute Amount ₹		Percentage of Revenue from operations	
		31 March 2016	31 March 2017	31 March 2016	31 March 2017
I. Revenue from Operations		10,00,000	12,00,000	100.00	100
II. Total Revenue (I+II)		**10,00,000**	**12,00,000**	**100.00**	**100**
III. Expenses		--	--	--	--
(a) Purchases of Stock in Trade		6,00,000	8,00,000	60.00	66.67

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

(b) Change in Inventories of finished Goods, Work in progress and Stock in Trade		1,00,000	1,00,000	10.00	8.33
(c) Depreciation and Amortisation Expenses		1,20,000	1,00,000	12.00	8.33
(d) Other Expenses		80,000	50,000	8.00	4.17
Total		**9,00,000**	**10,50,000**	**90.00**	**87.50**
IV. Profit Before Tax (III -IV)		1,00,000	1,50,000	10.00	12.50
V. Less : Income Tax		30,000	45,000	3.00	3.75
VI. Profit after Tax (V -VI)		**70,000**	**1,05,000**	**7.00**	**8.75**

उदाहरण 8 : वाई एंड जेड लिमिटेड के निम्नांकित लाभ–हानि खातों से समानाकार लाभ हानि खाता बनाइये।
(From the following Statement of Profit and Loss of Y and Z Ltd., prepare Common size statement of Profit and Loss)

Particulars	**Note No.**	**31st March 2017 ₹**	**31st March 2017 ₹**
		Y Ltd.	Z Ltd.
Income	1		
I. Revenue from Operations		18,00,000	20,00,000
II. Other Income		50.000	60,000
III. Total Revenue (I+II)		18,50,000	20,60,000
IV. Expenses			
(a) Purchases of Stock in Trade		10,00,000	12,00,000
(b) Change in Inventories of finished Goods, Work-in-progress and Stock-in-Trade		2,00,000	3,00,000
(c) Employees Benefit Expenses		2,50,000	1,60,000
(d) Other Expenses	2	2,00,000	1,00,000
Total Expenses		**16,50,000**	**17,60,000**
V. Profit Before Tax (I-II)		2,00,000	3,00,000
VI. Less : Income Tax		60,000	90,000
VII. Profit after Tax (III-IV)		**1,40,000**	**2,10,000**

Notes to the Accounts:

Particulars	**31st March 2017 ₹**	**31st March 2017 ₹**
Revenue from Operations (Sales)	18,20,000	20,30,000
Less: Returns	20,000	30,000
Other Expenses	18,00,000	20,00,000
(a) Administrative Expenses	1,50,000	80,000
(b) Miscellaneous Expenses (Non Operative)	50,000	20,000
	2,00,000	**1,00,000**

Common Size Statement of Profit and Loss
for the year ended 31st March 2017

Particulars	**Note No.**	**Absolute Amount ₹**		**Percentage of Revenue from operations**	
		Y Ltd.	Z Ltd.	Y Ltd.	Z Ltd.
		31 March 2017	**31 March 2017**	**31 March 2017**	**31 March 2017**
I. Revenue from Operations Sales less returns	1	18,00,000	20,00,000	100.00	100.00

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

II. Other Income		50,000	60,000	2.77	3.00
III. Total Revenue (I+II)		**18,50,000**	**26,00,000**	**102.77**	**103.00**
IV. Expenses					
(a) Purchases of Stock-in-Trade		10,00,000	12.00,000	55.55	60.00
(b) Change in Inventories of finished Goods, Work-in-progress and Stock-in-Trade		2,00,000	3,00,000	11.11	15.00
(c) Employees Benefit Expenses		2,50,000	1,60,000	13.89	8.00
(d) Other Expenses	2				
Administrative Expenses		1,50,000	80,000	8.33	4.00
Miscellaneous expenses (Non Operative)		50,000	20,000	2.78	1.00
Total Expenses		**16,50,000**	**17,60,000**	**91.66**	**88.00**
V. Profit Before Tax (III-IV)		2,00,000	3,00,000	11.11	15.00
VI. Less : Income Tax		60,000	90,000	3.33	4.50
VII. Profit after Tax (V-VI)		**1,40,000**	**2,10,000**	**7.78**	**10.50**

प्रवृत्ति विश्लेषण
(Trend Analysis)

किसी भी अध्ययन के आधार वर्ष की तुलना में अध्ययन के शेष वर्षो में वित्तीय विवरणों की मदों में हुए परिवर्तनों की दिशा के आधार पर व्यापार की वित्तीय स्थिति के अध्ययन करने की विधि है। किसी भी संस्था की प्रगति या अवनति रुख की जानकारी प्राप्त करने के लिए अनेक वर्षों के आँकड़ो का अध्ययन व विश्लेषण किया जाना आवश्यक हैं। इसके लिए वित्तीय विवरण की प्रत्येक मद का उसी के आधार वर्ष की राशि से हुई कमी या वृद्धि को प्रतिशत के रूप में व्यक्त किया जाता है। इस विधि के माध्यम से किसी संस्था की कई अवधियों में कार्य निष्पादन की जाँच सम्भव है। व्यवसाय की प्रकृति अध्ययन के लिए निम्नांकित तीन विधियाँ अपनाई जाती हैः–

1.**प्रवृति प्रतिशतः (Trend Percentage)** इस विधि में सर्वप्रथम कई वर्षों के वित्तीय विवरणों की सूचनाओं का सारणीयन कर लेते हैं। इनमें से किसी एक वर्ष को आधार मानकर अन्य वर्षों की वृद्धि या कमी ज्ञात कर ली जाती है। सामान्यतः प्रथम वर्ष को आधार माना जाता है। इस प्रकार ज्ञात वृद्धि या कमी को आधार वर्ष के आधार पर प्रतिशत वृद्धि या कमी निम्न सूत्रानुसार ज्ञात कर लेते हैं। इसी प्रकार आगे के वर्षो की गणना की जाएगी।

$$\text{आधार वर्ष की अपेक्षा वृद्धि/कमी (\%)} = \frac{\text{सम्बन्धित वर्ष की राशि में आधार वर्ष की अपेक्षा वृद्धि या कमी}}{\text{आधार वर्ष की संबंधित राशि}} \times 100$$

उदाहरण 9 : एक संस्था की परिचालन से आय की सूचना निम्नानुसार है। वर्ष 2012–13 को आधार मानते हुए वर्ष 2016 –17 तक हुए परिवर्तनों के मापन हेतु प्रवृति प्रतिशत ज्ञात करो।

(Following are the informations of an enterprise with regard to revenue from operations. Taking base 2012 -13 calculate trend percentage for measuring the changes.)

वर्ष	2012-13	2013-14	2014-15	2015-16	2016-17
परिचालन से आय (शुद्ध बिक्री) लाखों ₹ में	10	12	09	16.5	18

हल : **Statement showing Trend of Revenue from Operations**

(लाखों ₹ में)

वर्ष	शुद्ध बिक्री	आधार वर्ष की अपेक्षा कमी या वृद्धि	आधार वर्ष की अपेक्षा वृद्धि/या कमी प्रतिशत में
2012-13	10	--	--
2013-14	12	2.00	20%
2014-15	9	(1.00)	(10%)
2015-16	16.5	6.50	65%
2016-17	18.0	8.00	80%

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

$$\text{आधार वर्ष की अपेक्षा वृद्धि / कमी (\%)} = \frac{\text{सम्बन्धित वर्ष की राशि में आधार वर्ष की अपेक्षा वृद्धि या कमी}}{\text{आधार वर्ष की संबंधित राशि}} \times 100$$

$$\text{अर्थात 2013-14 के लिए} = \frac{2}{10} \times 100 = 20\%$$

इसी प्रकार आगे के वर्षो की गणना की जाएगी।

केवल पिछले वर्ष की तुलना में अगले वर्ष में किस मद में कितना प्रतिशत वृद्धि या कमी हुई है। इससे कोई निष्कर्ष निकालने में कठिनाई होती है। क्योकिं मदों में नियमितता का अभाव रहता है। वित्तीय विवरणों से विश्लेषण की दृष्टि से प्रवृति प्रतिशत विधि ज्यादा उचित है।

2. प्रवृत्ति अनुपात (Trend Ratio) : सामान्यतया प्रवृति प्रतिशत से तुलना की जाती हैं। किन्तु कभी–कभी तुलना के लिए इन्हें भी उपयोगी न मानकर आधार वर्ष को 100 मानते हुए अन्य वर्षों की राशियों को उसी अनुपात में परिवर्तित कर लिया जाता है। इस प्रकार ज्ञात अनुपात, प्रवृति अनुपात कहलाता है।

$$\text{प्रवृति अनुपात} = \frac{\text{इस मद की चालू वर्ष की राशि}}{\text{उस मद की आधार वर्ष की राशि}} \times 100$$

इस प्रकार ज्ञात यह अनुपात सांख्यिकी के सूचकांकों की भांति ही होते हैं। इन अनुपातों की सहायता से एक विश्लेषक व्यवसाय के विभिन्न कारकों की गतिविधियों का विश्लेषण कर परिवर्तन की स्पष्ट व्याख्या कर सकता है।

उदाहरण 10 : निम्नांकित सूचनाओं से लाभ हानि खाते की विभिन्न मदों के प्रवृति अनुपात 2012-13 को आधार मानते हुए ज्ञात करो। (From the following informations, calculate trend ratio taking base 2012-13 for the various items of Profit and Loss Account)

(लाखों ₹ में)

वर्ष	**2012-13**	**2013-14**	**2014-15**	**2015-16**	**2016-17**
परिचालन से आय (शुद्ध बिक्री)	50	52	55	58	65
व्यापारिक स्टॉक का क्रय	25	26	28	30	35
लाभ–हानि (कर से पूर्व)	2	2.5	3	2.50	4

हल :

(आधार वर्ष 2012-13) **Calculation of Trend Ratio** (लाखों ₹ में)

वर्ष	Net Sales		Percentage of stock- in-trade		Profit/Loss (Before Tax)	
	Amount ₹	Trend Ratio	Amount ₹	Trend Ratio	Amount ₹	Trend Ratio
2012-13	50	100	25	100	2.0	100
2013 14	52	104	26	104	2.5	125
2014 15	55	110	28	112	3.0	150
2015-16	58	116	30	120	2.5	125
2016 17	65	130	35	140	4.0	200

इन प्रवृति अनुपातों (सूचक अंकों) की सहायता से वित्तीय विश्लेषक परिवर्तनों का मापन व व्याख्या कर सकता हैं।

3.बिन्दुरेखीय चित्रमय प्रदर्शन (Graphic or Diagrammatic Presentation) : उपरोक्त प्रकार से ज्ञात प्रवृतियों को रेखा चित्रों व चित्रों के माध्यम से प्रदर्शित किया जा सकता हैं। यह चित्रण दो या अधिक सम्बंधित मदों की सुगम तुलना हेतु एक साथ भी प्रदर्शित किया जा सकता है। कम्पनियों के अंशधारी सामान्यतः वाणिज्य के विद्यार्थी नहीं होते है अतः बहुधा कम्पनियाँ अपने प्रकाशित लेखों के साथ सरल व सुगम अध्ययन हेतु अपना प्रगति विवरण बिन्दु रेखीय चित्रों या अन्य चित्रों के द्वारा प्रस्तुत करती है जिसमें प्रगति या अवनति की प्रवृति समझने में आसानी रहती है।

उदाहरण 11: एक कम्पनी के कर के पश्चात लाभ व समता पूँजी की सूचना आप इन सूचनाओं को दण्ड चित्र एवं रेखा चित्र के माध्यम से प्रस्तुत कीजिये। (Present the following informations of a company regarding equity share capital and profit after tax by preparing bar diagram and also through graph)

वर्ष	समता पूंजी ₹	कर पश्चात शुद्ध लाभ ₹
2012 13	50,00,000	5,00,000
2013 14	60,00,000	7,00,000
2014 15	60,00,000	7,50,000
2015 16	65,00,000	8,00,000
2016-17	65,00,000	9,00,000

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

हल :

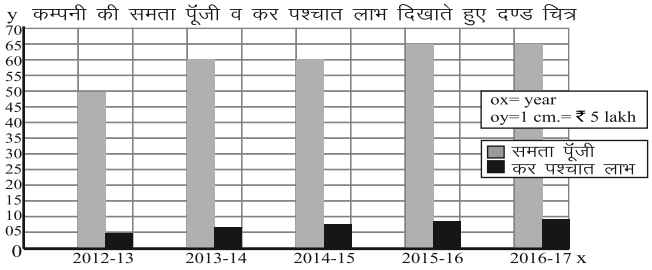

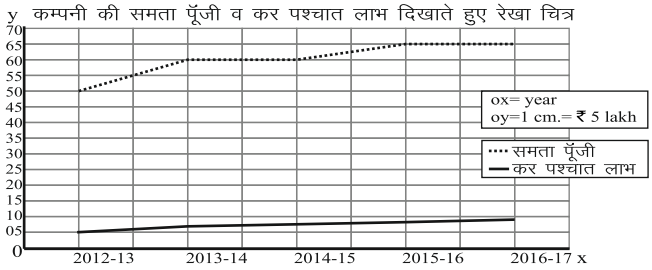

प्रवृति विश्लेषण की उपयोगिता :

1. इस विधि से परिवर्तनों की दिशा बोध का ज्ञान आसानी से होता है क्योंकि समंक दो से अधिक वर्षो प्रस्तुत किए जाते हैं।
2. इस विधि में चित्रमय प्रदर्शन के माध्यम से भी सूचनाओं को प्रस्तुत करने से सामान्य व्यक्ति तक इसकी पहुँच होती है।
3. वित्तीय सूचनाओं को संक्षिप्त में प्रस्तुत करने से अधिक उपयोगी हैं।

प्रवृति विश्लेषण की सीमाएं (Limitations of Trend Analysis) :

विश्लेषण के लिए इस विधि का उपयोग करते समय इसकी सीमाओं को ध्यान में रखना आवश्यक है। अन्यथा विश्लेषण से की गई व्याख्या भ्रामक होगी।

1. प्रवृति प्रतिशत या अनुपात किसी आधार वर्ष पर आधारित होते है। यदि किन्हीं कारणों से आधार वर्ष सामान्य न हो तो प्राप्त निष्कर्ष भ्रामक होने की संभावना रहती हैं।
2. तुलना का आधार समान न होने पर निष्कर्ष असंगत हो सकते है। अतः यदि दी गई वित्तीय सूचना मान्य लेखांकन सिद्धान्तों पर आधारित नहीं है अथवा पृथक–पृथक मान्यताओं पर आधारित है तो तुलना भ्रामक परिणाम दे सकती हैं।
3. केवल एक मद की प्रवृति का अध्ययन उतनी महत्वपूर्ण नहीं हैं जब तक कि सापेक्षिक तुलना के लिए किसी अन्य मद की प्रवृति की जानकारी भी होनी चाहिए। जिससे सम्बन्ध स्थापित कर तुलनात्मक अध्ययन हो सके।
4. तुलना के लिए निरपेक्ष व सापेक्ष दोनों प्रकार के परिवर्तनों का अध्ययन प्रवृति प्रतिशत में अधिक दिखेगा। अतः मूल समंकों में परिवर्तन की भी जांच आवश्यक हैं।

सारांश (Summary)

–**वित्तीय विवरण** : वित्तीय विवरण, वित्तीय लेखांकन का अंतिम उत्पाद है जिसका उद्देश्य एक निश्चित तिथि को व्यवसाय की आर्थिक स्थिति ज्ञात करना तथा एक निश्चित समयावधि के क्रियाकलापों का परिणाम ज्ञात करना हैं।

–**वित्तीय विवरणों के एक सेट** में कम्पनी अधिनियम की धारा 2(40) के अनुसार चिट्ठा, लाभ–हानि खाता (आय–खाता) लेखा टिप्पणियाँ तथा व्याख्यात्मक टिप्पणियाँ तथा रोकड़ प्रवाह विवरण सम्मिलित होते हैं।

– **वित्तीय विवरणों की विशेषताएँ** :

– व्यावसायिक क्रियाओं का सारांश – मुद्रा में व्यक्त
– उपार्जन आधार पर निर्माण – भूतकाल पर आधारित – मान्य सिद्धांतो पर आधारित

– **वित्तीय विवरणों के उपयोगकर्ता** :–

– **आन्तरिक** : अंशधारक, प्रबंधक, कर्मचारी
– **बाह्य** : बैंक वित्तीय संस्थाएं, ऋण पत्र धारक, लेनदार, भावी विनियोजक, सरकार, शोधकर्ता, व्यावसायिक परिषदें, सेबी

–**वित्तीय विवरणों की सीमाएँ** : 1. ऐतिहासिक तथ्यों पर आधारित 2. भेदभाव रहित नहीं 3. गुणात्मक तथ्यों का उपयोग नहीं 4. वित्तीय विवरण की शव परीक्षा के समान 5.तुलनीयता का अभाव 6. लेखांकन छल का प्रभाव 7. सभी उपयोगकर्ता की आवश्यकता की पूर्ति नहीं करता

–**वित्तीय विश्लेषण** : वित्तीय विवरणों के विभिन्न घटकों के मध्य सम्बंध स्थापित करने की एक प्रक्रिया है। जिससे संस्था की स्थिति व निष्पादन (Performance) की वास्तविक जानकारी हो सके।

–**वित्तीय श्लेषण के उद्देश्य** :

1.परिचालन कुशलता का मापन 2. लाभदायता का मापन 3.अंतःफर्म तुलना व अन्तःफर्म तुलना के सहायता
4.शोधन क्षमता का मापन 5. प्रवृति का मापन 6.आर्थिक सुदृढता का मापन
7.व्यावसायिक प्रगति का मूल्यांकन 8 .पूर्वानुमान में सहायक

–**वित्तीय विश्लेषण की सीमाएं** :

1. केवल परिमाणात्मक अध्ययन 2.सामान्य स्वीकृति सिद्धान्तों का अभाव 3. निदानात्मक नहीं
4.मूल्य स्तर परिवर्तनों को ध्यान नहीं रखता 5. वित्तीय विवरणों की सीमाएं स्वतः ही विश्लेषण की सीमाएँ

–**वित्तीय विश्लेषण के प्रकार** :

1.बाह्य विश्लेषण 2.आन्तरिक विश्लेषण 3.क्षैतिज विश्लेषण 4.लम्बवत् विश्लेषण

–**वित्तीय विश्लेषण की तकनीकें**:

तुलनात्मक चिट्ठा : यह एक क्षैतिज विश्लेषण है। जिसके अन्तर्गत चिट्ठे की प्रत्येक मद का दो या अधिक तिथियों में इनमें हुए परिवर्तनों की जानकारी निरपेक्ष अंकों में या वृद्धि या कमी के प्रतिशत के रूप में मापन किया जाता है।

तुलनात्मक लाभ–हानि खाता (आय विवरण) : तुलनात्मक लाभ–हानि खाता एक से अधिक अवधि के परिणामों में हुए परिवर्तनों की जानकारी निरपेक्ष अंको में या वृद्धि या कमी के प्रतिशत के रूप में मापन करने के लिए बनाया जाता है।

समानाकार चिट्ठा : इसके अन्तर्गत कुल सम्पति/कुल दायित्व से प्रत्येक मद को प्रतिशत के रूप में प्रकट किया जाता है। यह लम्बवत् विश्लेषण है इसे 100 प्रतिशत चिट्ठा भी कहते है।

समानाकार लाभ–हानि खाता (आय खाता) : व्यावसायिक क्रियाओं से आय (शुद्ध बिक्री) से आय खाते ही प्रत्येक मद को प्रतिशत के रूप में प्रकट किया जाता है।

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

समानाकार लाभ–हानि खाता (आय विवरण) : व्यावसायिक क्रियाओं से आय (शुद्ध बिक्री) से आय खाते ही प्रत्येक मद को प्रतिशत के रूप में प्रकट किया जाता है।

प्रवृति विश्लेषण : किसी भी आधार वर्ष की एक मद ही तुलना आगे के वर्षों में उसी मद में हुए परिवर्तन की दिशा का मापन है।

बिन्दुरेखीय व चित्रमय प्रदर्शन : प्रवृति प्रतिशतों या प्रवृति अनुपातों को अध्ययन हेतु सरल व सुगम रूप में प्रदर्शन, चित्रमय या बिन्दुरेखीय प्रदर्शन कहलाता है।

प्रमुख शब्दावली (Key-Terms)

- **क्षैतिज विश्लेषण (Horizontal Analysis)** : वित्तीय विवरण में दी गई प्रत्येक मद में होने वाले परिवर्तनों का अध्ययन है।
- **लम्बवत विश्लेषण (Vertical Analysis)** : वित्तीय विवरणों के विभिन्न घटकों कें पारस्परिक सम्बन्ध अथा उनके योग के मध्य के सम्बन्ध विश्लेषण हैं।
- **अन्तःफर्म तुलना (Inter Firm Comparison)**: दो या दो से अधिक फर्म के वित्तीय विवरणों की एक अवधि के लिए तुलना व विश्लेषण करने को अन्तः फर्म तुलना कहते हैं।
- **अर्न्त फर्म तुलना (Intra Firm Comparison)** : एक फर्म के वित्तीय घटकों की एक से अधिक अवधि की तुलना कर निष्पति का विश्लेषण अर्न्तःफर्म तुलना कहलाती हैं।
- **अंशधारियों को कोष (Share holders funds)** : वह कोष जो अंशधारियों से सम्बन्धित है। इसमें अंश पूँजी, संचय एवं आधिक्य, अंश वारंट की बदले प्राप्त राशि शामिल हैं।
- **गैर चालू दायित्व (Non current Liabilities)** : कम्पनी अधिनियम 2013 की अनुसूची III के अनुसार वे दायित्व जो चालू दायित्व की श्रेणी में नहीं आते है जिसमें दीर्घकालीन ऋण, स्थगित कर दायित्व (शुद्ध) अन्य दीर्घकालीन दायित्व व दीर्घकालीन आयोजन शामिल हैं।
- **चालू दायित्व (Current Liabilities)** : कम्पनी अधिनियम 2013 की अनुसूची III के अनुसार वे दायित्व जो एक परिचालान चक्र में भुगतान हो जाते है या वित्तीय विवरण बनाने की तिथि के 12 माह के भीतर भुगतान हो जाते हैं। इसमें अल्पकालीन ऋण, व्यापारिक देयता, अन्य चालू या दायित्व व अल्पकालीन आयोजन शामिल हैं।
- **गैर चालू सम्पतियाँ (Non Current Assets)** : कम्पनी अधिनियम 2013 की अनुसूची III के अनुसार वे सम्पतियां जो चालू सम्पतियां नहीं है। इसमें स्थायी सम्पतियां, गैर चालू विनियोग, स्थगित कर सम्पतियां (शुद्ध), ऋण एवं अग्रिम तथा गैर चालू सम्पतियां शामिल है।
- **दृश्यनीय सम्पतियाँ (Tangible Assets)** : वे स्थायी सम्पतियां जिनका भौतिक अस्तित्व होता हैं। जैसे भवन, मशीन आदि।
- **अदृश्यनीय सम्पतियाँ (Intangible Assets)** : वे सम्पतियां जिनका भौतिक अस्तित्व नहीं होता है। जैसे कृत स्वामित्व, कम्प्यूटर सॉफ्टवेयर आदि।
- **चालू सम्पतियाँ (Current Assets)**: कम्पनी अधिनियम 2013 की अनुसूची III के अनुसार जो व्यापारिक राशियाँ वित्तीय विवरण बनने की तिथि से 12 माह में वसूल होने योग्य हो, परिचालन चक्र में प्राप्त हो जाते हो। इसमें चालू विनियोग, माल सूचियां, व्यापारिक प्राप्य, अल्पकालीन ऋण व अग्रिम, रोकड़ व रोकड़ के तुल्य तथा अन्य चालू सम्पतियां शामिल हैं।

अभ्यासार्थ प्रश्न (Questions for Excercise)

बहुचयनात्मक प्रश्न (Multiple Choice Questions)

1. क्षैतिज विश्लेषण के किस तकनीक या उपकरण का प्रयोग किया जाता है। (Which tool of teaching is used for horizontal Analysis)

(अ) चिट्ठा (Balance Sheet) **(ब)** तुलनात्मक विवरण व प्रवृति विश्लेषण (Comparative Statement & Trend Analysis) **(स)** समानाकार लाभ हानि खाता (Common Size Profit & Loss Account) **(द)** समानाकार चिट्ठा (Common Size Balance Sheet)

2. क्षैतिज विश्लेषण में ..... लेखांकन अवधियों के वित्तीय विवरणों की आवश्यकता होती है। (In horizontal Analysis financial Statement of..... accounting periods are necessary)

(अ) दो या अधिक (Two or more) **(ब)** केवल एक (Only one)
(स) अ व ब दोनों ही (A & B both) **(द)** उपरोक्त में से कोई नहीं (None of the above)

3. अन्तर फर्म तुलना को.....भी कहा जाता है।

(अ) काल श्रेणी विश्लेषण (Time series) **(ब)** प्रवृति विश्लेषण (Trend analysis)
(स) क्रॉस वर्गीय विश्लेषण (cross sectional analysis) **(द)** उपरोक्त सभी (All the above)

4 वित्तीय विश्लेषण हेतु सामान्यतया उपयोग लिये जाने वाले उपकरण है। (The most commonly tools used for financial analysis are)

(अ) अनुपात विश्लेषण (Ratio Analysis) **(ब)** क्षैतिज विश्लेषण (Horizontal Analysis)
(स) लम्बवत् विश्लेषण (Vertical Analysis) **(द)** उपरोक्त सभी (All the above)

5. समानाकार आय विवरण में विभिन्न मदों को..... के प्रतिशत के रूप में प्रस्तुत किया जाता है। (In CommonSize

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Income Statement, various items are presents as a percentage of……)
(अ) परिचालन से आय (Revenue from operations) **(ब)** सकल बिक्री (Gross Sales)
(स) शुद्ध आय (Net profit) **(द)** सकल आय (Gross profit)
6. समानाकार चिट्ठा ……भी कहलाता है। (Common Size Balance Sheet is also called as……)
(अ) प्रतिशत चिट्ठा (Percentage Balance sheet) **(ब)** प्रतिशत आय विवरण (Percentage Income Statement)
(स) निरपेक्ष अंकों का विवरण (Statement of absolute figures) **(द)** उपरोक्त में से कोई नहीं। (None of the above)
7. बेचे गये माल की लागत = (Cost of goods sold) =
(अ) क्रय+प्रत्यक्ष खर्चे (Purchage +Direct expenses) (ब) प्रारम्भिक स्टॉक+ माल का क्रय +प्रत्यक्ष खर्चे–माल का अंतिम स्टॉक (Opening Stock of material+ purchases of material + direct expenses-closing stock of materials) **(स)** माल का प्रारंभिक स्टॉक + माल का क्रय–माल का अंतिम स्टॉक (Opening Stock of material + purchases of material – closing stock of materials) **(द)** उपरोक्त में से कोई नहीं। (None of the above)
8. तुलनात्मक चिट्ठा, चिट्ठे की प्रत्येक मद में – …… होने वाले परिवर्तन को बताता है। (The Comparative Balance Sheet persents……changes between the each items of balance sheet)
(अ) सापेक्ष (Relative) **(ब)** निरपेक्ष (Absolute)
(स) निरपेक्ष व सापेक्ष (Absolute & Relative) **(द)** उपरोक्त में से कोई नहीं। (None of the above)
9. समानाकार चिट्ठे में कुल समता व दायित्वों को किसके समान माना जाता है। (In Common Size Balance Sheet, total of Equity and Liabilities are assumed to be equal to)
(अ) 1 **(ब)** 100 **(स)** 10 **(द)** 1000
10. लम्बवत विश्लेषण जाना जाता है। (Vertical Analysis is known as)
(अ) संचरनात्मक विश्लेषण (Structural Analysis) **(ब)** स्थैतिक विश्लेषण (Static Analysis)
(स) गतिशील विश्लेषण (Dynamic Analysis) **(द)** उपरोक्त में से कोई नहीं। (None of the above)

अति लघूत्तरात्मक प्रश्न (Very Short Answer Type Questions)

1. वित्तीय विवरण का अर्थ बताइये। (Explain the meaning of financial Statement.)
2. कम्पनी अधिनियम 2013 के अनुसार वित्तीय विवरणों के एक पूरे सेट में क्या–क्या शामिल किये जाते है। केवल नाम लिखो। (As per Companies Act 2013, what are included in a full set of financial statements, write only names.)
3. वित्तीय विवरणों की कोई दो प्रकृति लिखो। (Write any two nature of financial statements.)
4. वित्तीय विवरणों की कोई दो विशेषताएँ लिखो। (Write any two characteristics of financial statements.)
5. वित्तीय विवरणों के कोई दो आधारभूत सिद्धान्त लिखो। (Write any two essentials of financial statements.)
6. वित्तीय विवरण किस आधार पर व्यक्तिगत निर्णयों से प्रभावित होते है ? (How financial statements are affected by personal judgement.)
7. वित्तीय विवरणों के कोई चार बाह्य उपयोगकर्ताओं के नाम लिखो। (Write any four names of external users of financial statements.)
8. वित्तीय विवरणों की कोई चार सीमाएं लिखो। (Write any four limitations of financial statements.)
9. वित्तीय विश्लेषण का अर्थ बताओं। (Explain the meaning of financial statements .)
10. वित्तीय विश्लेषण के प्रकारों के नाम लिखो। (Write the names of types of financial analaysis.)
11. क्षैतिज व लम्बवत विश्लेषण में चार अन्तर बताओ। (Explain four difference between horizontal and vertical anlaysis.)
12. तुलनात्मक चिट्ठे से आप क्या समझते है? (What is meant by Comparative Balance Sheet.?)
13. तुलनात्मक आय विवरण से आप क्या समझाते है? (What is meant by Comparative Income Statements.?)
14. समानाकार चिट्ठे से आप क्या समझते है? (What is meant by Common Size Balance Sheet.?)
15. समानाकार आय खाता से आप क्या समझते है? (What is meant by Common Size Income Statement.?)
16. प्रवृति विश्लेषण से आप क्या समझते है? (What is meant by Trend Analysis.?)

लघूत्तरात्मक प्रश्न (Short Answer Type Questions)

1. वित्तीय विवरणों की कोई चार विशेषताएँ समझाइये। (Narrate any four characteristics of financial statements.?)
2. वित्तीय विश्लेषण की तकनीकों के नाम लिखो। (Write down names of various techniques of financial analysis.?)
3. तुलनात्मक चिट्ठे का प्रारूप दीजिये। (Write a format of Comparative Balance Sheet)
4.निम्नांकित सूचनाओं से तुलनात्मक आय खाता बनाइये। (Prepare Comparative Income Statement from the following informations.)

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Particulars	Note No.	31 March 2016 ₹	31 March 2017 ₹
Revenue		20,00,000	30,00,000
Other Income		4,00,000	3,60,000
Expenses		12,00,000	21,00,000

उत्तर : प्रतिशत परिवर्तन क्रमशः 50%, (10%), एवं 75%

5. निम्नांकित सूचनाओं से समानाकार लाभ हानि खाता बनाइये। (From the following informations, prepare Common Size Statement of Profit and Loss.

Particulars	Note No.	31 March 2016 ₹	31 March 2017 ₹
Revenue From operations		20,00,000	36,00,000
Total Expenses		12,00,000	24,00,000
Tax rate		30%	30%

उत्तर :

	Percentage of revenue from operations	
	2015-16	2016-17
Total Expenses	60%	60.67%
Profit before Tax	40%	33.33%
Profit before Tax	28%	23.33%

6. निम्नांकित सूचनाओं से व्यावसायिक क्रियाओं से आय की प्रवृति प्रतिशत ज्ञात करो। वर्ष 2010-11 को आधार मानिए। (Calculate trend percentage of Revenue from Operations from the following informations, assume 2010-11 as base)

वर्ष	2010-11	2011-12	2012-13	2013-13	2014-15
शुद्ध बिक्री लाखों ₹ में	20	25	28	35	40

उत्तर :– प्रवृति प्रतिशत क्रमशः 25%, 40%, 75%, 100%

7. निम्नांकित सूचनाओं से कर्मचारियों के लाभों के लिए व्यय का प्रवृति अनुपात 2011-12 को आधार मानते हुए ज्ञात करो। (Calculate trend ratio of Employees Benefit Expenses from the following informations, taking 2011-12 as base)

वर्ष	2011-12	2012-13	2013-14	2014-15	2015-16
कर्मचारियों से संबंधित व्यय ₹	5,00,000	6,00,000	4,50,000	4,00,000	7,00,000

उत्तर : प्रवृति अनुपात क्रमशः 120, 90, 80, 140

8. समानाकार चिट्ठे का प्रारूप दीजिये। (Give format of Common Size Balance Sheet.)

9. क्षैजित व लम्बवत् विश्लेषणों से आप क्या समझते है? (What do you understand by horizontal and vertical analysis.?)

10. क्या क्षैजित व लम्बवत् विश्लेषण में कोई विरोधाभास है? (Is there any conflict between horizontal and vertical analysis.?)

11. वित्तीय विवरण विश्लेषण व्यावसायिक व्यवहारों की शव परीक्षा के समान है। क्या आप इससे सहमत है? (Financial Statement analysis is a postmortem of the business transaction are you agree?)

उत्तर : हां : यह भूतकालीन सूचनाओं से क्रियात्मक योग्यता, लाभदायकता व वित्तीय सुदृढता का मापन करता है।

12. अन्तः फर्म तुलना व अन्तफर्म तुलना के लिए वित्तीय विश्लेषण के कौनसे–कौनसे प्रकार का उपयोग करेंगे। (Which type of financial analysis will be used for inter-firm and intra-firm comparison.)

उत्तर : Horizontal Intra firm, दो या अधिक अवधियों, Vertical- inter-firm, single set की विभिन्न मदों

13. काल श्रेणी विश्लेषण व स्थैतिक विश्लेषण किन वित्तीय विश्लेषण प्रकारों के दूसरे नाम है। (Time series analysis and static analysis are the an other names of which type of financial analysis.)

14. तुलनात्मक लाभ हानि खाते का मुख्य शीर्षक दिखाते हुए प्रारूप बनाओ। (Prepare the format of Comparative Profit and Loss Account showing main headings.)

15. निम्नांकित चिट्ठे से समानाकार चिट्ठा बनाइये। (Prepare Common Size Balance Sheet from the following Balance Sheet)

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Particulars	31st March 2017 ₹
I- EQUITY AND LIABILITIES	
1. **Shareholders' Funds**	
(a) Share Capital :	15,00,000
2. **Current Liabilities**	
(a) Trade Payables	5,00,000
	20,00,000
II. ASSETS	
1. Non Current Assets	
(a) Fixed Assets (Tangible)	16,00,000
2. **Current Assets**	
(a) Trade Receivables	4,00,000
	20,00,000

उत्तर :

Share Capital	Current Liabilities	Fixed Assets	Current Assets
75%	25%	80%	20%

16. निम्नांकित चिट्ठे से समानाकार चिट्ठा बनाइये। (Prepare Common Size Balance Sheet from the following Balance Sheet)

Particulars	31st March 2017 ₹
I-EQUITY AND LIABILITIES	
1. **Shareholders' Funds**	
(a) Share Capital :	4,00,000
(b) Reserves and Surplus	2,00,000
2. Non-Current Liabilities	
(a) Long-term Borrowings	1,50,000
3. Current Liabilities	
(a) Short term Borrowings	1,50,000
(b) Trade Payables	1,00,000
Total	**10,00,0000**
II. ASSETS	
1. Non Current Assets	
(i) Tangible Assets	6,00,000
(ii) Intangible Assets	1,00,000
2. Current Assets	
(i) Cash and Cash Equivalents	3,00,000
Total	**10,00,000**

उत्तर :

	Share Capital	Reserves and Surplus	LTB	STB	TP	TA	IA	Cash
प्रतिशत परिवर्तन	40%	20%	15%	15%	10%	60%	10%	30%

17. निम्नांकित सूचनाओं से तुलनात्मक चिट्ठा 31 मार्च 2017 को बनाइये। (Prepare Comparative Balance Sheet from the following informations as at 31st March 2016 - 2017)

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Particulars	Note No.	31 March 2017 ₹	31 March 2016 ₹
I-EQUITY AND LIABILITIES			
1. Shareholders' Funds			
(a) Share Capital :			
(i) Equity Share Capital		10,00,000	8,00,000
(b) Reserves and Surplus		4,00,000	3,00,000
2. Non-Current Liabilities			
(a) Long-term Borrowings		6,00,000	5,00,000
1.**Current Liabilities**			
(a) Trade Payables		5,00,000	4,00,000
Total		**25,00,000**	**20,00,000**
II. ASSETS			
1. Non Current Assets			
(a) Fixed Assets			
(i) Tangible Assets		16,00,000	13,00,000
(ii) Intangible Assets		1,00,000	1,00,000
2. Current Assets			
(a) Trade Receivables		6,00,000	4,00,000
(b) Cash and Cash Equivalents		2,00,000	2,00,000
Total		**25,00,000**	**20,00,000**

उत्तर :

	Share Capital	Reserves and Surplus	LTB	TP	TA	IA	TR	Cash
प्रतिशत परिवर्तन	25%	33.33%	20%	25%	23.00%	--	50%	--

18. निम्नांकित सूचनाओं से तुलनात्मक चिट्ठा 31 मार्च 17 को बनाईये। (Prepare comparative balance sheet as on 31st March 2017 from the following informations.)

Particulars	Note No.	31 March 2017	31 March 2016
I-EQUITY AND LIABILITIES			
1. **Shareholders' Funds**			
(a) Share Capital :			
(i) Equity Share Capital		20,00,000	16,00,000
(ii) Preference Share Capital		10,00,000	8,00,000
2.Non-Current Liabilities			
Long-term Borrowings		12,00,000	10,00,000
3.**Current Liabilities**			
(i) Trade Payables		5,00,000	4,00,000
(ii) Short term provisions		3,00,000	2,00000
Total		**50,00,000**	**40,00,000**
II. ASSETS			
1. Non Current Assets			
Fixed Assets		28,00,000	25,00,000
2. Current Assets			
(a) Trade Receivables		12,00,000	10,00,000
(b) Cash and Cash Equivalents		10,00,000	5,00,000
Total		**50,00,000**	**40,00,000**

उत्तर :	ES cap	PS Cap	LTB	TP	STP	FA	Invest.	Cash
प्रतिशत परिवर्तन	25%	25%	20%	25%	50%	12%	20%	100%

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

निबन्धात्मक प्रश्न (Essay Type Questions) :

1. वित्तीय विवरणों में हित रखने वाले पक्ष एवं उनकी उपयोगिता समझाइये। (Explain parties interested in financial statements and their utility.)
2. वित्तीय विवरणों की सीमाओं का उल्लेख करो। (Write down limitations of financial statements.)
3. वित्तीय विश्लेषण के उद्देश्यों की व्याख्या करे। (Explain objectives of financial analysis.)
4. वित्तीय विश्लेषण की प्रक्रिया को समझाइये। (Explain produce of financial analysis.)
5. समानाकार चिट्ठा व समानाकार लाभ हानि खाते के प्रारूप बनाइये। (Give the format of Common Size Balance Sheet and Common Size Profit and Loss Account.)

बहुचयनात्मक प्रश्नों के उत्तर

प्रश्न	1	2	3	4	5	6	7	8	9	10
उत्तर	ब	अ	स	द	अ	अ	ब	स	ब	ब

आंकिक प्रश्न (Numerical Questions)

1. निम्नांकित चिट्ठों से तुलनात्मक चिट्ठा तैयार कीजिये।
(From the following Balance Sheets, Prepare Comparative Balance Sheet)

Particulars	Note No.	31 March 2016 ₹	31 March 2017 ₹
I-EQUITY AND LIABILITIES			
1. Shareholders' Funds			
(a) Share Capital :		15,00,000	20,00,000
2. Non-Current Liabilities			
Long-term Borrowings			
Secured loan-10 % Debentures		6,00,000	5,00,000
3. Current Liabilities			
(a) Trade Payables		1,00,000	1,20,000
Total		22,00,000	26,20,000
II. ASSETS			
1. Non Current Assets			
(a) Fixed Assets : Tangible Assets		16,00,000	20,00,000
2. Current Assets			
(a) Trade Receivables		4,00,000	3,00,000
(b) Cash and Cash Equivalents		2,00,000	3,20,000
Total		22,00,000	26,20,000

उत्तर :

	Share Capital	10% Debentures	Trade Payables	Tangible Assets	Trade Receivables	Cash and Cash Equivalents
Absolute Change	5,00,000	(1,00,000)	20,000	4,00,000	(1,00,000)	1,20,000
Percentage Change	33.33	(16.67)	20	25	(25)	12%

2. निम्नांकित तुलनात्मक चिट्ठे को पूर्ण कीजिये। (Complete the following Comparative Balance Sheet)

Particulars	Note No.	31March 2016	31March 2017	Absolute Change (Increase/Decrease)	Percentage Change (Increase/Decrease)
1	2	3 ₹	4 ₹	5 ₹	6
I-EQUITY AND LIABILITIES					
1.Shareholders' Funds					
(a) Equity Share Capital :		4,00,000	?	1,00,000	25.00
(b) Reserves and Surplus		1,00,000	1,25,000	?	25.00

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

2. Non- Current Liabilities					
(a) Long-term Borrowings		2,00,000	1,75,000	?	(12.50)
3.**Current Liabilities**					
(a) Trade Payables		2,00,000	?	1,00,000	50.00
Total		**9,00,000**	**11,00,000**	**2,00,000**	**22.22**
II. ASSETS					
1. Non Current Assets					
(a) Tangible Assets		6,00,000	8,00,000	2,00,000	33.33
(b) Intangible Assets		50,000	?	?	40.00
2. Current Assets					
(a) Trade Receivable		1,00,000	1,50,000	?	50.00
(b) Cash and Cash Equivalents		1,50,000	80,000	(70,000)	(56.67)
Total		**9,00,000**	**11,00,000**	**?**	**22.22**

उत्तर : -Equity Share Capital : ₹ 5,00,000, Reserves and Surplus- ₹ 25,000, Long-term Borrowing (₹ 25,000), Current Liabilities- ₹ 1,00,000, Intangible Assets - ₹70,000 and ₹ 20,000, Trade Receivable- ₹ 50,000, Total of absolute change - ₹ 2,00,000

3. निम्नांकित सूचनाओं से तुलनात्मक चिठ्ठा तैयार कीजिए।

From the followingBalance Sheet prepare Comparative Balance Sheet.

Particulars	Note No.	31 March 2016 ₹	31 March 2017 ₹
I-EQUITY AND LIABILITIES			
1.**Shareholders' Funds**			
(a) Share Capital :		10,00,000	1,500,000
(b) Reserves and Surplus		5,00,000	6,00,000
2.Non-Current Liabilities			
(a) Long-term Borrowings		2,00,000	2,25,000
3.**Current Liabilities**			
(a) Trade Payables		3,00,000	4,00,000
Total		**20,00,000**	**27,25,000**
II. ASSETS			
1. Non Current Assets			
(a) Fixed Assets (Tangible)		15,00,000	20,00,000
(b) Intangible Assets		1,00,000	3,00,000
2. Current Assets			
(a) Investment		2,00,000	4,00,000
(b)Cash and Cash Equivalents		2,00,000	25,000
Total		**20,00,000**	**27,25,000**

उत्तर :

	Share Capital	Reserves & surplus	LTB	TP	TA	IA	Inv.	Cash
Absolute Change ₹	5,00,000	1,00,000	25,000	1,00,000	5,00,000	2,00,000	2,00,000	(1,75,000)
Percentage Change	50	20	12.5	33.33	33.33	200	100	(87.5)

4. निम्नांकित सूचनाओं से तुलनात्मक लाभ–हानि खाता बनाइये। (Prepare Comparative Statement of Profit and Loss from the following informations)

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Particulars	Note No.	31 March, 2015 ₹	31 March, 2016 ₹
Revenue from Operations		50,00,000	60,00,000
Other Income		4,00,000	5,00,000
Cost of Materials consumed		25,00,000	35,00,000
Other Expenses		3,00,000	7,00,000
Tax Rate		30%	30%

उत्तर :

	Total Revenue from Operations	Total Expenses	Profit Before Tax	Profit after Tax
Absolute Change ₹	10,00,000	14,00,000	(3,00,000)	(90,000)
Percentage Change	20	50	(11.54)	(11.54)

5. निम्नांकित सूचनाओं से तुलनात्मक आय विवरण को पूर्ण कीजिये। (Complete the Comparative Balance Sheets from the following informations)

Particulars	Note No.	31 March2016 ₹	31 March 2017 ₹	Absolute Change ₹	Percentage Change (%)
I. Revenue from Operations		30,00,000	40,00,000	10,00,000	?
II. Expenses		--	--	--	--
(a) Employees benefit expenses		16,00,000	?	6,00,000	50.00
(b) Depreciation and Amortisation Expenses		8,00,000	?	?	25.00
(c) Other Expenses		2,00,000	?	1,00,000	50.00
Total		**26,00,000**	**35,00,000**	**9,00,000**	**42.31**
III. Profit Before Tax (I- II)		4,00,000	?	1,00,000	25.00
IV. Less : Income Tax		1,20,000	1,50,000	30,000	25.00
V. Profit after Tax (III-IV)		**2,80,000**	**3,50,000**	**30,000**	**25.00**

उत्तर : Employees benefit expenses- ₹ 22,00,000, Depreciation- ₹ 10,00,000, and ₹ 2,00,000, Other Expenses- ₹ 3,00,000, Profit before Tax- ₹ 5,00,000.

6. निम्नांकित सूचनाओं से समानाकार चिट्ठा तैयार कीजिये। (Prepare Common Size Balance Sheet from the following informatiosn.)

Particulars	Note No.	31 March 2017	31 March 2017
1	2	3 ₹	4 ₹
		(x Ltd.)	(y Ltd.)
I-EQUITY AND LIABILITIES			
1.Shareholders' Funds			
(a) Share Capital :			
(i) Equity Share Capital		5,00,000	8,00,000
(ii) Preference Share Capital		4,00,000	4,00,000
(b) Reserves and Surplus		2,00,000	3,00,000
2.Non-Current Liabilities			
(a) Long-term Borrowings		3,00,000	4,00,000
3.Current Liabilities			
(a) Short term Borrowings		2,50,000	2,00,000
(b) Trade Payables		1,00,000	1,50,000
(c) Short term provision		2,50,000	2,50,000
Total		**20,00,000**	**25,00,000**

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

II. ASSETS			
1. Non Current Assets			
(a) Fixed Assets (Tangible)		12,00,000	18,00,000
2. Current Assets			
(a) Investment		3,00,000	3,00,000
(b) Trade Receivables		2,00,000	2,25,000
(c) Cash and Cash Equivalents		3,00,000	1,75,000
Total		**20,00,000**	**25,00,000**

उत्तर :

	2016 -17(%)	2016 -17(%)
Equity Share Capital	25	32
Preference Share Capital	20	16
Reserves and Surplus	10	12
Debentures	15	16
Current Liabilities	30	24
	100	**100**
Fixed Assets	60	72
Current Assets	40	28
	100	**100**

7. निम्नांकित समानाकार चिट्ठों को पूर्ण करो। (complete the Common Size Balance Sheet)

Particulars	**Note No.**	**Absolute Amount ₹**		**Percentage of Balance Sheet (%)**	
		31 March 2016	**31 March 2017**	**31 March 2016**	**31 March 2017**
I-EQUITY AND LIABILITIES					
1.**Shareholders' Funds**					
(a) Share Capital :		10,00,000	?	50	48
(b) Reserves and Surplus		3,00,000	4,00,000	15	16
2.Non-Current Liabilities					
(a) Long-term Borrowings		2,00,000	?	10	12
3.**Current Liabilities**					
(a)Trade Payables (Creditors)		5,00,000	?	25	24
Total		**20,00,000**	**25,00,000**	**100**	**100**
II. ASSETS					
1. Non Current Assets					
(a) Fixed Assets (Tangible)		16,00,000	?	80	72
2. Current Assets					
(a)Cash and Cash Equivalents		4,00,000	?	20	28
Total		**20,00,000**	?	**100**	**100.00**

उत्तर : Share Capital- ₹ 12,00,000, Long - term Borrowings - ₹ 3,00,000, Trade Payables (Creditors) - ₹ 6,00,000, Fixed Assets- ₹ 18,00,000, Cash ₹ 7,00,000,

8. निम्नांकित लाभ हानि खाते को समानाकार लाभ हानि खाते में परिवर्तन करो। (Convert the following statement of Profit and Loss in to Common Size Statement of Profit and Loss)

उत्तर :

Particulars	**Note No.**	**31st March 2016 ₹**	**31st March 2017 ₹**
Income	1		
I. Revenue from Operations		20,00,000	30,00,000
II. Other Income		1,00.000	2,00,000
III. Total Revenue (I+II)		21,00,000	32,00,000

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

IV. Expenses			
(a) Purchases of Stock in Trade		12,00,000	6,00,000
(b) Change in Inventories of finished Goods, Work-in-progress and Stock-in-Trade		3,00,000	4,00,000
(c) Employees Benefit Expenses		1,00,000	2,00,000
(d) Other Expenses	2	2,00,000	4,00,000
Total Expenses		**18,00,000**	**26,00,000**
V. Profit Before Tax (III-IV)		3,00,000	6,00,000
VI. Less : Income Tax 30%		90,000	1,80,000
VII. Profit after Tax (V-VI)		**2,10,000**	**4,20,000**

Notes to the Accounts:

Particulars	**Note No.**	**31st March 2016 ₹**	**31st March 2017 ₹**
Revenue from Operations (Sales)	1	21,00,000	30,75,000
Less: Returns		1,00,000	75,000
		20,00,000	**30,00,000**
Other Expenses	2		
(a) Administrative Expenses		1,20,000	2,50,000
(b) Miscellaneous Expenses (Non Operative)		80,000	1,50,000
		2,00,000	**4,00,000**

उत्तर :

	Other income	purchases	Inventoried	employees exp.	other exp.	N.P. before tax	N.P. After tax
31st March 2016 (%)	5.00	60.00	15.00	5.00	10.00	15.00	10.50
31st March 2017 (%)	6.67	53.34	13.33	6.67	13.33	20.00	14.00

9. निम्नांकित सूचनाओं से लाभ हानि खाते की विभिन्न मदों के प्रवृति अनुपात वर्ष 2012-13 को आधार मानते हुए ज्ञात करो। (From the following informations, calculate trend ratio of various items of Profit and Loss Account, taking as base 2012-13)

वर्ष	2012-13	2013-14	2014-15	2015-16	2016-17
कुल आय ₹	10,00,000	11,00,000	12,00,000	15,00,000	18,00,000
कुल व्यय ₹	8,00,000	8,00,000	9,00,000	10,00,000	12,00,000
कर से पूर्व शुद्ध लाभ ₹	2,00,000	3,00,000	3,00,000	5,00,000	6,00,000

उत्तर : प्रवृति अनुपात

	2013-14	2014-15	2015-16	2016-17
Total Revenue	110.00	120.00	150.00	180.00
Total exp.	100.00	112.50	125.00	150.00
N.P.before tax	150.00	150.00	250.00	300.00

10. निम्नांकित सूचनाओं से प्रवृति प्रतिशत की गणना सन् 2012-13 को आधार मानते हुए करो।
Calculate Trend Percentage from the following informations, taking base 2012-13.

	2012-13	**2013-14**	**2014-15**	**2015-16**	**2016-17**
Total Revenue ₹	12,00,000	18,00,000	20,00,000	24,00,000	28,00,000
Total expenses ₹	8,00,000	10,00,000	15,00,000	18,00,000	22,00,000

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

उत्तर

	2012-13	2013-14	2014-15	2015-16	2016-17
Trend Percentage of Total Revenue	--	50	66.67	100	133.33
Trend Percentage of Total Expenses	--	25	87.50	125	175.00

11. निम्नांकित सूचनाओं से 31 मार्च 2012 को समाप्त वर्ष को आधार मानते हुए प्रवृति अनुपातों गणना करो।
(Calculate Trend ratio from the following figures taking the year ending 31 March, 2012 as base)

Year	31 March 2012	31 March 2013	31 March 2014	31 March 2015	31 March 2016
Net Sales ₹	5,00,000	8,00,000	10,00,000	12,00,000	15,00,000
Total Expenses ₹	3,00,000	4,50,000	6,50,000	7,50,000	10,00,000
Net Profit Before Tax ₹	2,00,000	3,50,000	3,50,000	4,50,000	5,00,000

उत्तर : प्रवृति अनुपात

वर्ष	31 March 2012	31 March 2013	31 March 2014	31 March 2015	31 March 2016
कुल बिक्री	100	160	200	240	300
कुल व्यय	100	150	216.67	250	333.33
शुद्ध लाभ (कर से पूर्व)	100	170	175	225	250

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

11

अनुपात विश्लेषण
Ratio Analysis

अध्ययन उद्देश्य (Learning Objectives)

इस अध्याय के अध्ययन के बाद आप जान सकेंगे :

- अनुपात विश्लेषण का अर्थ
- अनुपात का अर्थ एवं अभिव्यक्ति
- अनुपात विश्लेषण का उद्देश्य एवं महत्त्व
- अनुपात विश्लेषण की सीमाऐं
- अनुपातों के प्रयोग में सावधानियाँ
- अनुपातों का वर्गीकरण
  - तरलता अनुपात
  - शोधन क्षमता अनुपात
  - क्रियाशीलता अनुपात
  - लाभदायकता अनुपात
  - विनियोग विश्लेषण अनुपात

वित्तीय विवरणों में दी गई प्रत्येक मद स्वयं में निरर्थक होती है। जब तक कि उसका सम्बन्ध किसी अन्य मद के साथ स्थापित नहीं किया जाए। अंकों का महत्त्व तभी होता है जब उनका सम्बन्ध अन्य अंकों से स्थापित किया जाता है। जैसे–लाभ का सम्बन्ध बिक्री अथवा पूँजी के साथ स्थापित करने से ही ज्ञात होता है कि लाभ कम हुआ है या अधिक । अनुपात विश्लेषण वित्तीय विवरणों की मदों या मदों के समूह का आपस में सम्बन्ध स्थापित कर विवरणों को सरल तथा संक्षिप्त रूप में प्रस्तुत करने की विधि है।

अनुपात का अर्थ (Meaning of Ratio) - दो संख्याओं के पारस्परिक सम्बन्ध को गणितात्मक रूप से प्रकट करना अनुपात कहलाता है।

हंट, विलियम एवं डोनाल्डसन के अनुसार, "अनुपात वित्तीय विवरणों से प्राप्त संख्याओं के सम्बन्ध को अंकगणितीय रूप में प्रदर्शित करने का साधन हैं।"

आर. एन. एन्थोनी के अनुसार, "अनुपात साधारणतया एक संख्या को दूसरी संख्या के संदर्भ में प्रकट करना हैं। यह एक संख्या को दूसरी संख्या से भाग देकर ज्ञात किया जाता हैं।

अनुपातों की अभिव्यक्ति (Expression of Ratios) –अनुपातों को सामान्यतया निम्नलिखित तीन रूपों में प्रदर्शित किया जा सकता है:

1. **शुद्ध अनुपात के रूप में** –इसमें दो मदों के सम्बन्ध को सीधे आनुपातिक रूप में दर्शाया जाता है। यह सम्बन्ध एक मद की संख्या में दूसरी मद की संख्या का भाग देकर ज्ञात किया जाता है। जैसे यदि व्यवसाय में चालू सम्पत्तियाँ ₹ 1,00,000 तथा चालू दायित्व ₹50,000 हो तो चालू सम्पत्तियों का चालू दायित्वों से अनुपात ₹1,00,000 : ₹50,000 = अर्थात 2:1 होगा।
2. **दर अथवा "इतने गुने" के रूप में** – इसमें यह ज्ञात किया जाता है कि एक तिथि पर अथवा अवधि में एक संख्या दूसरी संख्या से कितनी गुनी है। जैसे किसी व्यापारी ने एक वर्ष की अवधि में ₹50,000 की उधार बिक्री की जबकि इस अवधि में उसके औसत देनदार ₹1,00,000 थे, तो देनदार आवर्त अनुपात **(Debtors Turnover Ratio)**5,00,000 / 1,00,000 = 5 हुआ अर्थात् देनदारों की तुलना में उधार बिक्री 5 गुना है।

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

3. **प्रतिशत के रूप में –** इसमें दो मदों के सम्बन्ध को प्रतिशत (सैंकडा) के रूप में व्यक्त किया जाता है। जैसे किसी व्यापारी को वर्ष में ₹3,00,000 की बिक्री पर ₹60,000 का शुद्ध लाभ हुआ तो उसका बिक्री पर शुद्ध लाभ = 20% (60,000 x 100 / 3,00,000) होगा।

अनुपात विश्लेषण का उद्देश्य या महत्त्व (Objectives or Significance of Ratio Analysis)

एक संस्था के वित्तीय विश्लेषण में अनुपात विश्लेषण की महत्त्वपूर्ण भूमिका होती है। अनुपातों के आधार पर विश्लेषण करके संस्था की प्रगति अथवा उन्नति एवं वित्तीय स्थिति की जानकारी प्राप्त की जा सकती है। अनुपातों के आधार पर ही संस्था से सम्बन्धित विभिन्न पक्षकारों यथा स्वामियों, ऋणदाताओं, आपूर्तिकर्ताओं, कर्मचारियों, बैंक एवं सरकार आदि को आर्थिक स्थिति एवं अन्य जानकारी मिल सकती है। अनुपात विश्लेषण के कुछ उद्देश्य निम्न है :–

1. **वित्तीय विश्लेषण में सहायक** – अनुपातों की सहायता से संस्था की वित्तीय स्थिति का विश्लेषण आसानी से किया जा सकता है। संस्था के चिट्ठे एवं लाभ–हानि विवरण के आधार पर किये गये अनुपात विश्लेषण से विनियोक्ता, बैंक तथा ऋणदाता आदि को उस संस्था के बारे में सम्पूर्ण जानकारी उपलब्ध हो जाती है।

2. **आंकड़ों का सरलीकरण –** अनुपात विश्लेषण करके जटिल एवं कठिन आंकड़ों को सरल व संक्षिप्त रूप में परिवर्तित किया जाता है। जिससे वे बोधगम्य हो जाते है।

3. **तरलता स्थिति का ज्ञान** – अनुपात विश्लेषण की सहायता से एक संस्था की तरलता स्थिति का अध्ययन कर निष्कर्ष निकाले जा सकते है। यदि एक संस्था अपने चालू दायित्वों का भुगतान करने में सक्षम हो, तो उसकी तरलता स्थिति अच्छी मानी जाती है। यह अनुपात बैंक आदि के लिए उपयोगी होता है।

4. **शोधन क्षमता का ज्ञान** – अनुपात विश्लेषण संस्था की तरलता क्षमता के साथ–साथ दीर्घकालीन शोधन क्षमता का मूल्यांकन करने में भी उपयोगी है। इससे संस्था की वित्तीय सुदृढ़ता एवं कमजोरी की जानकारी होती हैं। इस हेतु ऋण–समता अनुपात तथा पूँजी संरचना अनुपात उपयोगी होते है।

5. **क्रियाशीलता का ज्ञान** –वर्तमान अनुपातों का विगत अनुपातों से तुलनात्मक अध्ययन कर संस्था की कुशलता का मूल्यांकन किया जा सकता है। विभिन्न क्रियाशीलता अनुपात यथा स्टॉक आवर्त, देनदार आवर्त, सम्पत्ति आवर्त आदि के आधार पर संस्था की कुशलता की जानकारी होती है।

6. **लाभदायकता का ज्ञान** –लाभ–हानि खाते द्वारा प्रदर्शित लाभ की निरपेक्ष राशि का ज्यादा महत्त्व नहीं है जब तक कि उस लाभ का सम्बन्ध संस्था की बिक्री, विनियोजित पूँजी की राशि के साथ स्थापित न किया जाए। ऐसा सम्बन्ध ही लाभदायकता कहलाता है। अतः लेखांकन अनुपात संस्था की लाभदायकता के मापन में उपयोगी है।

7. **तुलनात्मक अध्ययन में सहायक**–अनुपात विश्लेषण के आधार पर एक वर्ष की तुलना अन्य वर्ष से अथवा एक अवधि की तुलना अन्य अवधि के उसी अनुपात से की जा सकती है। इससे कुशलता की जानकारी आसानी से हो सकती है।

8. **प्रवृत्ति अध्ययन में सहायक**–अनेक वर्षों के विभिन्न अनुपातों की तुलना कर संख्या की स्थिति की जानकारी की जा सकती है। अर्थात यह ज्ञात हो सकता है कि संस्था की प्रवृत्ति उन्नति की ओर अग्रसर है या अवनति की ओर ।

अनुपात विश्लेषण की सीमाएँ (Limitations of Ratio Analysis)

एक व्यावसायिक संस्था के वित्तीय विश्लेषण में अनुपात विश्लेषण एक महत्त्वपूर्ण उपकरण है वही दूसरी ओर अनुपात विश्लेषण की कुछ सीमाएँ भी है। अतः अनुपात विश्लेषण का प्रयोग करते समय एक विश्लेषक को इसकी सीमाओं को ध्यान में रखना चाहिए। ये सीमाएँ निम्नलिखित है –

1. **वित्तीय विवरणों की सीमाओं का निहित होना** – अनुपातों की गणना वित्तीय विवरणों के आधार पर ही की जाती है। वित्तीय विवरण लेखांकन की विभिन्न परम्पराओं, अवधारणाओं तथा व्यक्तिगत निर्णय पर आधारित होते हैं। अतः वित्तीय विवरणों में जो कमियाँ व त्रुटियाँ होगी उनका प्रभाव अनुपातों पर भी पड़ेगा परिणामस्वरूप वित्तीय विश्लेषण भी भ्रामक होगा।

2. **दिखावों से प्रभावित** –वित्तीय विवरण कई झूठी दिखावे की सूचना से भी प्रभावित होते है। जैसे वास्तविक मूल्य ह्रास से कम ह्रास काटना, अंतिम स्टॉक का मूल्य बढ़ाकर दिखाना । ऐसा सामान्यतः आर्थिक स्थिति को अच्छा एवं लाभों की मात्रा ज्यादा प्रदर्शित करने के लिए किया जाता है। ऐसी स्थिति में वित्तीय विश्लेषण के परिणाम भी गलत अशुद्ध होगें ।

3. **पृथक–2 लेखांकन नीतियों के आधार पर तुलना** – यदि एक ही संस्था द्वारा दो अलग–2 अवधियों में या दो संस्थाओं द्वारा पृथक–2 लेखांकन नीतियों का प्रयोग किया गया हो तो ऐसी सूचनाओं के आधार पर अन्तः अवधि तुलनात्मक अध्ययन याअन्तः फर्म तुलनात्मक अध्ययन अविश्वसनीय होगा। अतः ऐसी फर्मो के वित्तीय विवरणों की तुलना से प्राप्त परिणाम भ्रमपूर्ण सूचना देंगे।

4. **विश्लेषक की योग्यता एवं पक्षपात का प्रभाव –** अनुपात विश्लेषण के आधार पर निकाले गये निष्कर्षों में वित्तीय विश्लेषक की योग्यता एवं भावनाओं का बड़ा प्रभाव पड़ता है। यदि वित्तीय विश्लेषक पक्षपात से प्रभावित होकर अनुपातों का परिकलन करता है तो निष्कर्ष भी भ्रामक होंगे।

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

5. **गुणात्मक विश्लेषण का अभाव** – वित्तीय लेखांकन के अन्तर्गत समस्त मौद्रिक व्यवहारों का लेखा किया जाता है। इन्हीं वित्तीय विवरणों में दी गई वित्तीय सूचनाओं के आधार पर अनुपातों का परिकलन किया जाता है। अतः अनुपात विश्लेषण परिमाणात्मक पक्ष को अभिव्यक्त करता है, गुणात्मक पक्ष को नहीं। प्रबन्धकों की ईमानदारी, व्यवसाय की प्रसिद्धि, श्रमिकों की संतुष्टि जैसे गुणात्मक तत्वों की तरफ अनुपात विश्लेषण में कोई ध्यान नहीं दिया जाता हैं।

6. **तुलना के लिए अन्य अनुपात आवश्यक** –एक अनुपात से किसी भी प्रकार की न तो तुलना की जा सकती हैं और नहीं निष्कर्ष निकाले जा सकते हैं। अतः अच्छे विश्लेषण के लिए यह आवश्यक हैं कि एक अनुपात का निष्कर्ष निकालते समय संबंधित अन्य अनुपातों पर भी ध्यान दे लेना चाहिए।

7. **भावी अनुमानों में अयोग्य –** अनुपात विश्लेषण भूतकालीन घटनाओं एवं व्यवहारों पर आधारित ऐतिहासिक लेखों से प्राप्त सूचनाओं के आधार पर किया जाता हैं। अतः अनुपातों से प्राप्त निष्कर्षो का प्रयोग भावी अनुमान लगाने में नहीं किया जा सकता।

8. **प्रवृत्ति का ज्ञान न होना** –केवल एक ही वर्ष के वित्तीय विवरणों के आधार पर किया गया विश्लेषण विश्वसनीय नहीं हो सकता हैं, इससे प्रगति या अवनति का ज्ञान नहीं हो सकता हैं। अतः लाभदायकता आदि घटकों की प्रवृत्ति के ज्ञान हेतु आवश्यक है कि कई वर्षो के वित्तीय विवरणों से निष्कर्ष निकाला जाएं।

अनुपातों के प्रयोग में सावधानियाँ (Precautions in Using Ratios)

आज व्यावसायिक जगत में अनुपात विश्लेषण का प्रयोग बहुत अधिक होने लगा हैं, इसकी सहायता से अनेक प्रकार के निष्कर्ष निकाले जा सकते हैं। इसके बावजूद अनुपातों के प्रयोग में लापरवाही बरतने से गलत नतीजे निकालने व भ्रमात्मक स्थिति बनने का खतरा रहता हैं। अतः अनुपातों के प्रयोग में निम्न सावधानियाँ रखनी आवश्यक हैं:

1. अनुपातों के प्रयोग करने वाले व्यक्ति में लेखा समंकों को समझने की योग्यता होनी चाहिये। तभी वह सही अनुपात का प्रयोग कर सही निष्कर्ष निकाल सकता हैं।
2. अनुपातों के सही समय पर परिकलन के लिए यह आवश्यक है कि वित्तीय विवरणों के तैयार होते ही शीघ्रता से सूचनाएँ प्रयोगकर्त्ताओं को उपलब्ध करायी जायें। यदि प्रयोगकर्ताओं को ये सूचनाएँ समय पर उपलब्ध न हों तो इनका महत्त्व या उपयोग समाप्त हो जाता हैं।
3. अनुपातों से प्राप्त होने वाले लाभों के साथ–2 इनके परिकलन में लगने वाले समय व श्रम के रूप में लागत भी आती हैं। जब तक प्राप्त होने वाले लाभ लागत से अधिक हो तब तक ही अनुपातों का प्रयोग करना चाहिए।
4. अनुपातों को प्रस्तुत करते समय किसी भी प्रयोगकर्ता के समक्ष केवल वे ही अनुपात प्रस्तुत किये जाने चाहिए जिनका उससे सम्बन्ध है ताकि वह शीघ्र एवं सही निष्कर्ष निकाल सकें।
5. परिवर्तनशीलता के कारण अनुपातों के क्षेत्र एवं प्रयोग में भी परिवर्तन हो रहा हैं। अतः बदलती हुई व्यावसायिक परिस्थितियों के अनुसार अनुपातों के प्रयोग में भी उचित संशोधन किया जाना वांछनीय हैं।

अनुपातों का वर्गीकरण (Classification of Ratios)

(अ) संरचनात्मक वर्गीकरण (Structural Classification) – संरचनात्मक वर्गीकरण का आधार संस्था के वित्तीय विवरण – चिट्ठा व लाभ – हानि होते हैं। अतः इन वित्तीय विवरणों में दी गई सूचनाओं के आधार पर अनुपातों की गणना की जाती हैं। इस आधार पर अनुपातों को निम्न भागों में वर्गीकृत किया जा सकता हैं:

1. **चिट्ठा अनुपात** –इन्हें वित्तीय अनुपात (Financial Ratio) भी कहते हैं। ये अनुपात जो चिट्ठे में दी गई दो मदों या मदों के समूहों के मध्य ज्ञात किये जाते हैं। इसमें प्रमुख अनुपात – चालू अनुपात, तरल अनुपात, ऋण–समता अनुपात, स्वामित्व अनुपात व पूँजीदंतीकरण अनुपात आदि हैं।
2. **लाभ–हानि विवरण अनुपात**–इन्हें आय विवरण (Income Statement) अनुपात या परिचालन अनुपात (Operating Ratio) भी कहते हैं । ये अनुपात लाभ–हानि विवरण में दी गई मदों या मदों के समूहों के मध्य ज्ञात किये जाते हैं। इसमें प्रमुख अनुपात– सकल लाभ अनुपात, शुद्ध लाभ अनुपात, परिचालन अनुपात, व्यय की विभिन्न मदों के बिक्री से अनुपात, स्कन्ध आवर्त अनुपात आदि हैं।
3. **संयुक्त अनुपात**–वे अनुपात जिनका परिकलन करते समय एक मद चिट्ठे से तथा दूसरी मद लाभ–हानि विवरण से ली गई हो, उन्हें संयुक्त अनुपात कहते हैं । इसमें प्रमुख अनुपात–विनियोजित पूँजी पर प्रत्याय, कुल सम्पत्तियों पर प्रत्याय, कुल सम्पत्ति आवर्त अनुपात, औसत संग्रहण अवधि, प्रति अंश अर्जन आदि हैं।

(ब) कार्यात्मक वर्गीकरण (Functional Classification) : व्यावसायिक संस्था में हित रखने वाले विभिन्न पक्षकारों की आवश्यकतानुसार जब अनुपातों का वर्गीकरण किया जाता हैं। जैसे– बैंक व वित्तीय संस्थाओं की रूचि अल्पकालीन शोधन क्षमता में, ऋणदाताओं की रूचि शोधन क्षमता में, विनियोक्ताओं की रूचि लाभदायकता में अधिक होती हैं । अतः विभिन्न पक्षों के उद्देश्यों को ध्यान में रखकर निम्न प्रकार के अनुपातों का परिकलन किया जाता हैं।

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

1. **तरलता अनुपात** (Liquidity Ratios) -"तरलता" से आशय एक संस्था के चालू दायित्वों को चुकाने की क्षमता से हैं । तरलता अनुपातों से संस्था की अल्पकालीन शोधन क्षमता की जानकारी प्राप्त होती हैं । इन अनुपातों से यह ज्ञात होता है कि संस्था अपनी अल्पकालीन सम्पत्तियों से अल्पकालीन दायित्वों को चुकाने की स्थिति में है या नहीं । इन अनुपातों के रूप में निम्नलिखित अनुपातों की गणना की जाती हैं –

1. चालू अनुपात (Current Ratio) **2.** तरल या त्वरित अनुपात (Liquid or Quick Ratio) **3.**पूर्ण तरलता अनुपात (Absolute Liquidity Ratio)

2. **शोधन क्षमता अनुपात** (Solvency Ratios)-शोधन क्षमता अनुपातों से संस्था की दीर्घकालीन शोधन क्षमता की जानकारी प्राप्त होती हैं । इन अनुपातों को पूँजी संरचना या उत्तोलक अनुपात (Capital Structure or Leverage Ratios)भी कहा जाता हैं। इन अनुपातों से यह ज्ञात होता है कि संस्था में स्वामियों ने कितना धन विनियोजित किया है तथा कितना धन ऋणदाताओं से लिया गया हैं। इन अनुपातों के रूप में निम्नलिखित अनुपातों की गणना की जाती हैं–

1. ऋण–समता अनुपात (Debt-Equity Ratio) 2. स्वामित्व अनुपात (Proprietory Ratio)
3. शोधन क्षमता या ऋण सम्पत्ति अनुपात (Solvency or Debt to Total Assets Ratio)
4. ब्याज व्याप्ति अनुपात (Interest Coverage Ratio) 5. पूँजी दंतीकरण अनुपात (Capital Gearing Ratio)

3. **क्रियाशीलता अनुपात (Activity Ratios)**–क्रियाशीलता अनुपातों से पूँजी या सम्पत्तियों को प्रभावी रूप से उपयोग किया गया हैं या नहीं, इसका ज्ञान होता हैं। उच्च क्रियाशीलता/आवर्त अनुपात संसाधनों के कुशल उपयोग के सूचक हैं परिणामतः लाभों में वृद्धि होती है। इन अनुपातों के रूप में निम्नलिखित अनुपातों की गणना की जाती हैं–

1. स्कन्ध आवर्त अनुपात (Stock Turnover Ratio) 2.व्यापारिक प्राप्य आवर्त अनुपात (Trade Receivables Turnover Ratio) 3. औसत संग्रहण अवधि (Average Collection Period) 4. व्यापारिक देयता आवर्त अनुपात (Trade Payables Turnover Ratio) 5. औसत भुगतान अवधि (Average Payment Period) 6. कुल सम्पत्ति आवर्त अनुपात (Total Assets Turnover Ratio)

4. **लाभदायकता अनुपात (Profitability Ratios)**–"लाभदायकता" से आशय संस्था को लाभार्जन क्षमता से है जिसे बिक्री या विनियोगों से सम्बन्धित कर मापा जाता हैं । वे अनुपात जिनकी सहायता से संस्था की लाभदायकता का मापन किया जाता हैं, लाभदायकता अनुपात कहलाते हैं । इन अनुपातों के रूप में निम्नलिखित अनुपातों की गणना की जाती हैं –

1. सकल लाभ अनुपात (Gross Profit Ratio) 2. परिचालन अनुपात (Operating Ratio)
3. परिचालन लाभ अनुपात (Operating Profit Ratio) 4. शुद्ध लाभ अनुपात (Net Profit Ratio)
5. विनियोगों पर प्रत्याय (Return on Investment ROI) 6. स्वामियों की समता पर प्रत्याय (Return on Proprietor's Fund)

5. **विनियोग विश्लेषण अनुपात (Investment Analysis Ratios)** – ये अनुपात एक अंशधारी द्वारा कम्पनी में किये जाने वाले भावी विनियोगों के विश्लेषण में सहायक होते हैं । ये अनुपात निम्न हैं :

1. प्रति अंश अर्जन (Earning Per Share) 2. प्रति अंश लाभांश (Dividend Per Share) 3. लाभांश भुगतान अनुपात (Dividend Payout Ratio)

(A) तरलता अनुपात (Liquidity Ratios)

1.चालू अनुपात (Current Ratio)

चालू अनुपात एक संस्था की चालू सम्पत्तियों (Current Assets) व चालू दायित्वों (Current Liabilities)के मध्य सम्बन्ध को व्यक्त करता हैं। इसे कार्यशील पूँजी अनुपात (Working Capital Ratio)भी कहते हैं।

$$\textbf{Current Ratio} = \frac{current\ assets}{current\ liabilities}$$

चालू अनुपात के मुख्य घटक चालू सम्पत्तियाँ व चालू दायित्व हैं। चालू सम्पत्तियों से आशय ऐसी सम्पत्तियों से है जो व्यवसाय की सामान्य दशा में सामान्य संचालन या चिट्ठे की तिथि से 12 माह में नकद में परिवर्तित हो जाती हैं। चालू दायित्वों से आशय उन दायित्वों से है जिनका भुगतान सामान्य संचालन चक्र की अवधि में या चिट्ठे की तिथि से 12 माह में करना हैं। चालू सम्पत्तियों में निम्न सम्पत्तियों को शामिल किया जाता हैं–

1. Current Investments **2.** Inventories/Stock [Raw material, WIP & Finished Goods]**3.** Trade Receivables[Sundry Debtors + B/R – Provision for Doubtful & debts] **4.**Cash and cash equivalents [cash, cheques, drafts in hand and cash at bank]**5.**Short term loans and advances, **6.** Other current assets [Prepaid Expenses, Accrued Incomes, Advance Payments, Advance Tax etc.]

चालू दायित्वों में निम्न को शामिल किया जाता हैं :–**1.** Short term borrowings [Loan payable on demand, Bank overdraft, deposits and loans and advances], **2.** Trade creditors [Sundry creditors and bills payable] **3.**

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Other current liabilities: [current maturity of LT debts, interest accrued on borrowing, income received in advance, unpaid dividend, outstanding expenses, calls in advance, unclaimed dividend] **4.** Short terms provisions: [Provision for employees benefits, Provision for tax, proposed dividend etc.]

महत्त्वः– चालू अनुपात यह बताता है कि संस्था के पास 1 रूपये के चालू दायित्व का भुगतान करने के लिए कितनी चालू सम्पत्तियाँ हैं। चालू अनुपात जितना ऊँचा होगा अल्पकालीन लेनदारों के कोषों की सुरक्षा उतनी ही अधिक होगी। सामान्यतः 2:1 के चालू अनुपात को आदर्श अनुपात माना जाता हैं। यदि चालू अनुपात 2:1 से भी ऊँचा है तो वह व्यवसाय प्रबन्धकों की दृष्टि से अच्छा नहीं माना जाता हैं।ऐसी स्थिति में 1. संस्था के स्टॉक में वृद्धि हो तो धन अनुत्पादक माना जाता है। 2. देनदारों से वसूली की गति धीमी हो 3. कमजोर विनियोग नीति से बैंकों में धन निष्क्रिय पड़ा हो। यदि चालू अनुपात 2:1 से नीचा हो तो वह संस्था में कार्यशील पूँजी की कमी का द्योतक है अर्थात संस्था के पास दायित्वों का भुगतान करने के लिए पर्याप्त कोष नहीं हैं।

चालू अनुपात एक संस्था की तरलता स्थिति का परिमाणात्मक सूचक है न कि गुणात्मक। यह सम्पत्तियों के परिमाण के आधार पर परिकलित किया जाता हैं। सम्भव हैं कि एक संस्था के पास चालू दायित्वों की अपेक्षा परिमाण /मात्रा रूप में बहुत चालू सम्पत्तियाँ हो किन्तु उनमें से अधिकतर निष्क्रिय हो तो संस्था के पास दायित्व भुगतान के लिए पर्याप्त कोष उपलब्ध नहीं होंगें। अतः किसी व्यवसाय की तरलता स्थिति ज्ञात करने के लिए अकेले इस अनुपात पर विश्वास नहीं किया जा सकता।

उदाहरण 1 : निम्नलिखित से चालू अनुपात की गणना कीजिए:(From the following calculate current ratio)

कुल सम्पत्तियाँ (Total Assets) ₹ 2,00,000, गैर चालू सम्पत्तियाँ (Non-current Assets) ₹ 1,10,000,अंशधारियों के कोष (Shareholder's funds) ₹ 1,25,000, गैर–चालू दायित्व (Non-Current Liabilities) ₹30,000.

हल :Current Ratio $= \frac{current\ assets}{current\ liabilities} = \frac{90,000}{45,000} = 2:1$

Current assets = Total Assets – Non Current Assets =₹ 2,00,000 – ₹1,10,000 = ₹ 90,000, Current Liabilities = Total Assets–Shareholder's funds–Non Current Liabilities

=₹ 2,00,000– ₹1,25,000-₹30,000 = ₹ 45,000.

2. तरल अनुपात अथवा त्वरित अनुपात (Liquid or Quick Ratio):तरल अनुपात यह जानने के लिए ज्ञात किया जाता हैं कि संस्था अपने अल्पकालीन दायित्वों का तुरन्त भुगतान कर सकती हैं या नहीं । इसे त्वरित अनुपात (Quick Ratio), अम्ल परख अनुपात (Acid Test Ratio) भी कहा जाता हैं। तरल अनुपात संस्था की "तरल सम्पत्तियों"(Liquid Assets)व चालू दायित्वों के मध्य सम्बन्ध को व्यक्त करता हैं।

$$\text{Liquid Ratio} = \frac{liquid\ assets}{current\ liabilities}$$

तरल सम्पत्तियों से आशय उन सम्पत्तियों से है जिन्हें शीघ्र ही नकद अथवा नकद तुल्यों में परिवर्तित किया जा सकता हैं। अतः तरल सम्पत्तियों में स्कन्ध (Stock) तथा पूर्वदत्त व्ययों (Prepaid Expenses) को छोड़कर शेष सभी चालू सम्पत्तियों को शामिल किया जाता हैं। इन मदों को शीघ्र रोकड़ में परिवर्तित नहीं किया जा सकता हैं, अतः इन्हें छोड़ दिया जाता हैं। तरल सम्पत्तियों में निम्न सम्पत्तियों को शामिल किया जाता हैं:

(i) Current Investments, **(ii)** Trade Receivables [Debtors + B/R – Provision for Doubtful debts], **(iii)** Cash and cash equivalents, **(iv)** Short term loans and advances

महत्त्व : तरलता स्थिति का मूल्यांकन करने के लिए यह अनुपात चालू अनुपात से अच्छा माना जाता हैं क्योंकि इसकी गणना में उन्हीं सम्पत्तियों को शामिल किया जाता हैं जो तरल सम्पत्तियाँ हैं। यह अनुपात 1:1 का आदर्श माना जाता है। यह अनुपात 1:1 से अधिक हो तो अच्छा माना जाता हैं किन्तु तरलता अनुपात 1:1 से कम है तो इसका आशय है कि संस्था को चालू दायित्वों के भुगतान के लिए अतिरिक्त धन की व्यवस्था करनी होगी।

चालू अनुपात व त्वरित अनुपात में अन्तर (Difference between Current Ratio and Quick Ratio)

1. **सम्बन्ध** : चालू अनुपात, चालू सम्पत्तियों तथा चालू दायित्वों के बीच सम्बन्ध प्रकट करता हैं, जबकि तरल अनुपात, तरल सम्पत्तियों व चालू दायित्वों के मध्य सम्बन्ध प्रकट करता हैं।
2. **उद्देश्य** : चालू अनुपात का उद्देश्य यह जाँच करना है कि संस्था अपने चालू दायित्वों का एक वर्ष में भुगतान कर सकती हैं या नहीं।
3. **आदर्श अनुपात** : चालू अनुपात 2:1 आदर्श माना जाता हैं, जबकि तरल अनुपात 1:1 आदर्श माना जाता हैं।
4. **सही स्थितिः** चालू अनुपात संस्था की सही तरलता स्थिति को प्रकट नहीं करता हैं क्योंकि चालू सम्पत्तियों में स्टॉक एवं पूर्वदत्त व्यय भी शामिल होते हैं। इनकी अधिक राशि होने पर चालू अनुपात ऊँचा होगा, जबकि तरल अनुपात सही तरलता स्थिति को प्रकट करता हैं क्योंकि इसकी गणना में स्टॉक व पूर्वदत्त व्ययों को शामिल नहीं किया जाता हैं।

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

उदाहरण 2 : नरेश लि. का 31 मार्च, 2017 का चिट्ठा निम्न हैं:–

The balance sheet of Naresh Ltd. as at 31st March, 2017 is as follows:

Particulars	Note No.	Current Year Amount ₹	Previous Year Amount ₹
I Equity and Liabilities			
1. Equity shareholder's Fund		1,20,000	
2. Non current Liabilities			
(a) Long term borrowing (debentures)		50,000	
3. Current Liabilities			
(a) Trade payables		25,000	
(b) Short term provisions (Taxation)		5,000	
Total		**2,00,000**	
II Assets			
1. Non current Assets			
(a) Fixed Assets		1,35,000	
2. Current Assets			
(a) Inventories		30,000	
(b) Trade Receivables		15,000	
(c) Cash and Cash Equivalents		17,500	
(d) Other current assets (Prepaid expenses)		2,500	
Total		**2,00,000**	

उक्त सूचनाओं से गणना कीजिए (अ) चालू अनुपात (ब) तरल अनुपात

From the above informations, calculate (a) Current ratio (b) Liquid Ratio

हल:**(a)** Current Ratio $= \frac{current\ assets}{current\ liabilities} = \frac{₹65,000}{₹30,000} = 2.17:1$

Current Ratio = Inventories+Trade receivables+cash Equivalents+other current assets (Prepaid exp.) =

₹ 30,000 + ₹ 15,000 + ₹ 17,500 + ₹ 2,500 =₹ 65,000

Current Liabilities = Trade Payables + Short Term Provisions = ₹ 25,000+₹5,000= ₹30,000

(b) Liquid Ratio $= \frac{Liquid\ Assets}{Current\ Liabilities} = \frac{₹32,500}{₹30,000} = 1.08:1$

Liquid Ratio = Current Assets – Inventories – Prepaid exp. = ₹ 65,000–₹ 30,000–₹ 2,500= ₹ 32,500

उदाहरण 3 : X Ltd. की निम्नलिखित सूचनाओं से तरलता अनुपात ज्ञात कीजिए:

From the following informations of X Ltd., Find out liquidity ratio :

	₹		₹
दीर्घकालीन ऋण (Long term debts)	5,60,000	ख्याति (Goodwill)	2,00,000
अल्पकालीन ऋण (Short term debt): Bank overdraft	50,000	मूर्त स्थायी सम्पत्तियाँ (Tangible Fixed Assets)	12,00,000
अल्पकालीन आयोजन (Short term Provision):		व्यापारिक विनियोग (Trade Investments)	5,00,000
प्रस्तावित लाभांश (Proposed Dividend)	30,000	विपणन योग्य प्रतिभूतियाँ (Marketable Securities)	80,000
कर आयोजन (Provision for Tax)	80,000	स्टॉक (Inventories)	7,80,000
अग्रिम आयकर (Advance Income Tax)	60,000	देनदार (Debtors) 4,00,000	
व्यापारिक देयताएँ (Trade Payables)	2,40,000	Less : आयोजन (Provision) 40,000	3,60,000
देय किराया (Rent Payables)	20,000	रोकड़ एवं रोकड़ तुल्य (Cash and Cash Equivalents)	1,60,000
देय लाभांश (Dividend Payable)	60,000		

हल: तरलता अनुपातों के रूप में मुख्य रूप से चालू अनुपात व त्वरित अनुपात ज्ञात किये जाते हैं।

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

(a) Current Ratio = $\frac{current\ assets}{current\ liabilities} = \frac{14,40,000}{4,80,000} = 3:1$

Current assets = Marketable securities + Inventories + Debtors – Provision for D/D + Cash & cash equivalents + advance income tax

= 80,000 + 7,80,000 + 4,00,000 – 40,000 + 1,60,000 + 60,000 = ₹ 14,40,000

Current liabilities = Bank O/D + Proposed dividend + Provision for tax + Trade Payables + Rent Payable + dividend payable = 50,000 + 30,000 + 80,000 + 2,40,000 + 20,000 + 60,000 = ₹4,80,000

(b) Quick Ratio = $\frac{Quick\ Assets/Liquid\ Assets}{Current\ liabilities}$

Quick Assets = Current Assets – Inventories – Advance Income Tax

= ₹14,40,000 – ₹7,80,000-₹60,000= ₹6,00,000:

Quick Ratio = $\frac{`\ 6,00,000}{`\ 4,80,000} = 1.25 : 1$

कार्यशील टिप्पणी: 1.व्यापारिक विनियोग गैर–चालू सम्पत्ति हैं। 2.देनदारों में से संदिग्ध ऋणों के लिए आयोजन घटाया गया हैं।

उदाहरण 4 : निम्न परिस्थितियों में चालू अनुपात एवं त्वरित अनुपात का परिकलन कीजिये :–

Calculate Current Ratio and Liquidity Ratio in following cases.

(A) Current Assets ₹ 2,00,000 , Stock ₹ 1,00,000 , Working Capital ₹ 1,20,000

(B) Liquid Assets ₹ 1,00,000; Stock ₹ 15,000 ; Prepaid Exp. ₹ 5,000; Working Capital ₹ 64,000;

(C) Current Liabilities ₹1,00,000 ; Creditors ₹ 10,000; Stock ₹ 1,00,000 Working Capital ₹ 3,00,000;

हल : उपर्युक्त प्रश्नों को हल करने से पूर्व हमें चालू सम्पत्ति, चालू दायित्व, तथा कार्यशील पूँजी के सम्बन्ध को जानना आवश्यक हैं।

Working Capital = Current assets – Current Liabilities

Current Assets = Working capital + Current Liabilities

Current Liabilities = Current Assets – Working Capital

[A] (i) Current Ratio = $\frac{current\ assets}{current\ liabilities} = \frac{`\ 2,00,000}{`\ 80,000} = 2.5 : 1$

Current Liabilities = current Assets – working capital = ₹ 2,00,000 – ₹1,20,000 = ₹ 80,000

(ii) Liquid Ratio = $\frac{Liquid\ assets}{current\ liabilities} = \frac{`\ 2,00,000 - `\ 1,00,000}{`\ 80,000} = \frac{`\ 1,00,000}{`\ 80,000} = 1.25 : 1$

[B] (i) Current Ratio = $\frac{current\ assets}{current\ liabilities} = \frac{`\ 1,20,000}{`\ 56,000} = 2.14 : 1$

(ii) Liquid Ratio = $\frac{liquid\ assets}{current\ liabilities} = \frac{`\ 1,00,000}{`\ 56,000} = 1.79 : 1$

Current Assets = Liquid Assets + Stock + Prepaid Exp. = ₹ 1,00,000 + ₹ 15,000 + ₹ 5,000 = ₹ 1,20,000

Current Liabilities = Current Assets – Working Capital = ₹ 1,20,000 – ₹ 64,000 = ₹ 56,000

[C] (i) Current Ratio = $\frac{current\ assets}{current\ liabilities} = \frac{`\ 4,00,000}{`\ 1,00,000} = 4 : 1$

(ii) Liquid Ratio = $\frac{liquid\ assets}{current\ liabilities} = \frac{`\ 3,00,000}{`\ 1,00,000} = 3: 1$

Current Assets = Working Capital + Current Liabilities = ₹ 3,00,000 + ₹ 1,00,000 = ₹ 4,00,000

Liquid Assets = Current Assets – Stock = ₹ 4,00,000 – ₹ 1,00,000 = ₹ 3,00,000

उदाहरण 5 : **(अ)** –यदि चालू अनुपात 2.5 गुना है और चालू दायित्व ₹80,000 हैं तो चालू सम्पत्तियाँ ज्ञात करें।

(ब) – चालू दायित्वों की गणना कीजिए, यदि चालू सम्पत्तियाँ ₹5,00,000 हैं और चालू अनुपात 2 गुना है।

(a) – If current Ratio is 2.5 times and current liabilities are ₹80,000; find out current assets.

(b) – Calculate current liabilities, if current assets are ₹5,00,000 and current ratio is 2 times.

हल : जैसा कि ज्ञात हैं current ratio = $\frac{current\ assets}{current\ liabilities}$

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

(अ) –Current Assets = Current Liabilities x Current Ratio = ₹ 80,000 x 2 .5 = ₹ 2,00,000

(ब) –Current Liabilities = $\frac{\text{current assets}}{\text{current ratio}} = \frac{₹\ 5,00,000}{2}$ = ₹ 2,50,000

(B) शोधन क्षमता अनुपात (Solvency Ratios)

1. ऋण समता अनुपात (Debt- Equity Ratio) - ऋण समता अनुपात संस्था के बाहरी कोषों(External Equities)एवं आन्तरिक कोषों /अंशधारियों के कोषों (Internal Equities/Shareholder's Fund) के मध्य सम्बन्ध को प्रकट करता हैं। यह अनुपात बताता हैं कि संस्था में अंशधारी कोषों की तुलना में अल्पकालीन एवं दीर्घकालीन ऋणों से कितने कोष प्राप्त कियें हैं। यह अनुपात संस्था कि दीर्घकालीन वित्तीय नीतियों की सुदृढ़ता की जांच हेतु ज्ञात किया जाता हैं।

Debt - Equity Ratio = $\frac{\text{External Equities}}{\text{Internal Equities}}$ या = $\frac{\text{Total Debt}}{\text{Shareholder's Fund or Net Worth}}$

बाहरी कोष(External Equity) से आशय दीर्घकालीन उधार (Long Term Borrowing) तथा दीर्घकालीन आयोजनों (Long Term Provisions)तथा चालू दायित्वों से हैं।

External Equities = Debentures + Bonds + Mortgage Loan + Bank Loan + Loan From Financial Institutions + Public Deposits + Long Term Provisions + ST Loan + Trade Payables + ST Provisions.

अंशधारी कोष (Shareholders Funds) के अन्तर्गत अंश पूँजी तथा संचय एवं आधिक्य (Reserves and Surplus) शामिल किये जाते हैं।

Shareholders Funds = Equity Share Capital + Preference Share Capital+ Capital Reserve+Securities Premium + General Reserve + Redemption Reserve + Other Reserves – (Accumulated Loss + Fictitious Assets.)

जब अंशधारियों के कोषों की गणना करते समय संचित हानियाँ तथा कृत्रिम सम्पत्तियाँ घटा दी जाती है तो शेष बची राशि "शुद्ध सम्पदा"(Net Worth)भी कहलाती हैं। इसे ही समता (Equity),आन्तरिक दायित्व (Internal Liability) या स्वामियों की समता (Owner's Equity) भी कहते हैं।

कृत्रिम सम्पत्तियाँ : अंशों एवं ऋण पत्रों के निर्गमन पर व्यय, ऋणपत्रों के निर्गमन पर बट्टा/हानि, अभिगोपन कमीशन, प्रारम्भिक व्यय आदि।

महत्त्व : यह अनुपात संस्था के दीर्घकालीन ऋणों को भुगतान करने की क्षमता को ज्ञात करने के लिए निकाला जाता हैं यह अनुपात जितना कम होता हैं दीर्घकालीन लेनदारों की सुरक्षा उतनी अधिक होती हैं और यह अनुपात जितना अधिक होता हैं तो दीर्घकालीन ऋणों की दृष्टि से फर्म की जोखिम पूर्ण वित्तीय स्थिति का सूचक होता हैं, लेकिन ऊँचा ऋण–समता अनुपात समता अंशधारियों के अनुकूल होता हैं यदि ऋण पर दिये जाने वाले ब्याज की दर से अर्जन दर (Rate of Earning) अधिक हो।

नोट :–कुछ विद्वान Debt में केवल Long Term Debt को ही शामिल करने के पक्षधर हैं। उस दशा में ऋण–समता अनुपात होगा:Debt_Equity Ratio = $\frac{Debt}{Shareholders\ Fund}$ या $\frac{Long\ Term\ Debt}{Shareholder's Fund}$

उदाहरण 6 :निम्न सूचनाओं से ऋण–समता अनुपात की गणना कीजिए :

Calculate 'Debt-Equity 'Ratio' from the following informations :

समता अंश पूंजी(Equity Share Capital) - ₹ 2,50,000 , 9% पूर्वाधिकार अंश पूँजी (9% Preference Share Capital)- ₹1,50,000,सामान्य संचय (General Reserve) – ₹ 80,000, प्रतिभूति प्रीमियम (Securities Premium) – ₹ 70,000, लाभ–हानि विवरण शेष (Balance of Statement of P&L) – ₹1,00,000, 8% ऋणपत्र (8% Debentures) – ₹6,00,000, बैंक ऋण (Bank Loan) – ₹2,00,000, लेनदार (Creditors)– ₹ 30,000, देय बिल (Bills Payable) – ₹20,000

हल:–Debt-Equity Ratio = $\frac{External\ Equities}{Internal\ Equities} = \frac{₹\ 8,50,000}{₹\ 6,50,000}$ = 1.31 : 1

External Equities = 8% Debentures + Bank Loan + Creditors + Bills Payable

= ₹ 6,00,000 + ₹ 2,00,000+ ₹ 30,000 + ₹ 20,000 = ₹ 8,50,000;

Internal Equities = Equity share capital + 9% Preference share capital + General Reserve + Securities Premium + P & L = ₹ 2,50,000 + ₹ 1,50,000 + ₹ 80,000 + ₹ 70,000 + ₹ 1,00,000 = ₹ 6,50,000

यदि ऋण–समता अनुपात की गणना दीर्घकालीन ऋणों के आधार पर की जाऐं तो –

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Debt-Equity Ratio = $\frac{Long\ Term\ Debt}{Shareholders\ Fund}$ = $\frac{8,00,000}{6,50,000}$ = 1.23 : 1

Long Term Debt = 8% Debentures + Bank Loan = ₹ 6,00,000 + ₹ 2,00,000 = ₹ 8,00,000

उदाहरण 7 : निम्नलिखित सूचनाओं से ऋण–समता अनुपात (दीर्घकालीन ऋणों के आधार पर) की गणना कीजिए:

From the following informations calculate 'Debt-Equity Ratio' (Based on Long Term Debt):

हल:–Shareholders Fund = Total of B/S – Total External Liabilities = ₹ 8,00,000 – ₹ 3,00,000 = ₹ 5,00,000

Long Term Debt = Total External Liabilities – Current Liabilities = ₹ 3,00,000 – ₹ 50,000 = ₹ 2,50,000

Debt-Equity Ratio = $\frac{\text{Long Term Debt}}{\text{Shareholders Fund}}$ = $\frac{2,50,000}{5,00,000}$ = 0.5 : 1

2. स्वामित्व अनुपात :–(Proprietory Ratio) : यह अनुपात संस्था के स्वामियों (Proprietors)के कोषों एवं कुल सम्पत्तियों के मध्य सम्बन्ध को व्यक्त करता हैं। इस अनुपात से यह ज्ञात होता हैं कि संस्था की कुल सम्पत्तियों के अर्थप्रबन्धन में स्वामियों के कोष किस सीमा तक लगे हुऐ हैं।

Proprietory Ratio = $\frac{Proprietor's\ Fund\ or\ Shareholders\ Fund}{Total\ Assets}$

Total Assets = Non-Current Assets (Tangible Assets + Intangible Assets + Non- Current Investments + Long Term Loans and advances + Current Assets.)

महत्त्व :–यह अनुपात जितना ऊँचा होगा उतना अच्छा होगा। यह सुदृढ़ वित्तीय स्थिति का परिचायक हैं अर्थात संस्था में स्वामियों के कोष अधिक लगे हुए हैं। इस अनुपात का नीचा होना लेनदारों की जोखिम पूर्ण स्थिति का द्योतक हैं।

3. **शोधन क्षमता अनुपात** (Solvency Ratio) - यह अनुपात संस्था के कुल बाह्य दायित्वों तथा कुल सम्पत्तियों के मध्य सम्बन्ध को व्यक्त करता हैं। इस अनुपात से संस्था की दीर्घकालीन शोधन क्षमता ज्ञात होती हैं। यदि 1 में से स्वामित्व अनुपात घटा दिया जाये तो शोधन क्षमता अनुपात प्राप्त हो जायेगा।

SolvencyRatio = $\frac{Total\ Debts}{Total\ Assets}$

Total Debts = Debentures + Bonds + Mortagage Loan + Bank Loan + Loan from financial Institutions + Pubic Deposits + Long Term Provisons + ST Loans + Trade Payables + ST Provisions.

महत्त्व:–यह अनुपात यह प्रदर्शित करता हैं कि संस्था के कुल ऋण (दीर्घकालीन एवं अल्पकालीन) संस्था की कुल सम्पत्तियों से कितने सुरक्षित हैं, यदि कुल सम्पत्तियाँ बाह्य दायित्वों से अधिक हैं तो ऋणदाताओं / लेनदारों की सुरक्षा अधिक होगी। इसके विपरीत कुल सम्पत्तियाँ बाह्य दायित्वों से कम हैं तो जोखिमपूर्ण वित्तीय स्थिति का परिचायक हैं।

उदाहरण 8 : निम्नलिखित सूचनाओं से 1. ऋण–समता अनुपात 2. स्वामित्व अनुपात एवं 3. शोधन क्षमता अनुपात की गणना कीजिये :

From the following informations, calculate **(i)** Debt-Equity Ratio **(ii)** Proprietory Ratio &**(iii)** Solvency Ratio :दीर्घकालीन ऋण (Long Term Borrowings) – ₹ 50,000,दीर्घकालीन आयोजन (Long Term Provisions) – ₹75,000,चालू दायित्व (Current Liabilities) –₹37,500, गैर चालू सम्पत्तियाँ (Non-Current Assets) –₹ 2,70,000, चालू सम्पत्तियाँ (Current Assets)–₹67,500

हल:–1. Debt-Equity Ratio = $\frac{Total\ Debt}{Shareholders\ Fund}$ = $\frac{External\ Equities}{Internal\ Equities}$ = $\frac{`1,62,500}{`1,75,000}$ = 0 .93 : 1

Total Debt = Long Term Borrowings + Long Term Provisions + Current Liabilities

= ₹ 50,000 + ₹ 75,000 + ₹ 37,500 = ₹ 162,500

Share holder's funds = Non Current Assets + Current Assets – Total Debt

= ₹ 2,70,000 + ₹ 67,500 – ₹ 1,62,500 = ₹ 1,75,000

2. Proprietory Ratio = $\frac{Proprietor's\ Fund}{Total\ Assets}$ Or = $\frac{Shareholder's\ Funds}{Total\ Assets}$ = $\frac{`1,75,000}{`3,37,500}$ = 0.52 : 1

Total Assets = Non– Current Assets + Current Assets = ₹ 2,70,000 + ₹ 67,500 = ₹ 3,37,500

3. Solvency Ratio = $\frac{Total\ Debt}{Total\ Assets}$ = $\frac{`1,62,500}{`3,37,500}$ = 0.48 : 1

अथवा:–Solvency Ratio = 1 – Proprietory Ratio = 1- 0.52 = 0.48

उदाहरण 9 : रजनी लि. की निम्न सूचनाओं से परिकलित कीजिए:

(अ) ऋण समता अनुपात **(ब)** स्वामित्व अनुपात **(स)** शोधन क्षमता अनुपात।

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

From the following informations of Rajani Ltd., calculate **(a)** Debt Equity Ratio **(b)** Proprietory Ratio **(c)** Solvency Ratio.

	₹
समता अंश पूँजी (Equity Share Capital)	18,00,000
सामान्य संचय(General Reserve)	10,50,000
लाभ–हानि विवरण शेष (Balance of Statement of P & L) (Loss)	1,50,000
8% ऋणपत्र (8% Debentures)	11,00,000
बैंक ऑफ इण्डिया से ऋण (Loan from BOI)	8,00,000
चालू दाायित्व (Current Liabilities)	4,00,000
ख्याति (Goodwill)	5,00,000
अन्य गैर चालू सम्पत्तियाँ(Other Non-Current Assets)	25,00,000
चालू सम्पत्तियाँ(Current Assets)	20,00,000

हलः–(a) Debt-Equity Ratio $= \frac{Total\ Debt}{Shareholder's\ Funds} = \frac{`23,00,000}{`27,00,000} = 0.85:1$

Total Debt = [8% Debentures + Loan from BOI] + Current Liabilities = [₹ 11,00,000 + ₹ 8,00,000] + ₹ 4,00,000 = ₹ 19,00,000 + ₹ 4,00,000 = ₹ 23,00,000

Shareholder's Funds = Equity Share capital + General Reserve + P& L (Loss) = ₹ 18,00,000 + ₹ 10,50,000 + (- ₹ 1,50,000) = ₹ 27,00,000

यदि(Debt-Equity Ratio) की गणना केवल दीर्घकालीन ऋणों के आधार पर की जाए तो–

a**(a) Debt – Equity Ratio** $= \frac{Long\ Term\ Debt}{Shareholder's\ Funds} = \frac{`19,00,000}{`27,00,000} = 0.70:1$

(b) Proprietary Ratio $= \frac{Shareholder's\ Funds}{Total\ Assets} = \frac{`27,00,000}{`50,00,000} = 0.54:1$

Total Assets = Goodwill + Other Non-Current Assets + Current Assets = ₹ 5,00,000 + ₹ 25,00,000 + ₹ 20,00,000 = ₹50,00,000

(c) Solvency Ratio $= \frac{Total\ Debt}{Total\ Assets} = \frac{`23,00,000}{`50,00,000} = 0.46:1$

4. ब्याज व्याप्ति अनुपात (Interest Coverage Ratio) : - इस अनुपात को ब्याज आवरण अनुपात, ऋण–सेवा अनुपात (Debt Service Ratio) के नाम से भी जाना जाता हैं । यह अनुपात संस्था के "कर तथा ब्याज से पूर्व के लाभ"(Profit Before Interest and Tax) एवं दीर्घकालीन ऋणों पर ब्याज (Interest on Long Term Loans) के मध्य सम्बन्ध व्यक्त करता हैं।

$$\text{Interest Coverage Ratio} = \frac{Profit\ before\ charging\ Interest\ \&\ Tax}{Fixed\ Interest\ Charges}$$

महत्त्व :–यह अनुपात संस्था की ऋण–सेवा क्षमता का माप हैं। यह अनुपात बताता हैं कि संस्था के लाभ स्थायी ब्याज की तुलना में कितना गुना हैं। यह अनुपात जितना अधिक होगा संस्था की ऋण–सेवा क्षमता उतनी ही अधिक होगी तथा ऋणदाताओं को अधिक सुरक्षा प्राप्त होगी। इस अनुपात के नीचा होने पर संस्था अपने स्थिर ब्याज प्रभार को पूरा करने में असमर्थ होगी। एक संस्था के लाभ उसके ब्याज की तुलना में 6 या 7 गुने के लगभग होने चाहिए।

उदाहरण 10 : रोहिणी लि. के ₹4,00,000 के 5% ऋणपत्र हैं। ब्याज एवं कर से पूर्व इसका लाभ ₹1,50,000 हैं। ब्याज व्याप्ति अनुपात की गणना करों।

Rohini Ltd. has 5% Debentures of ₹ 4,00,000. Its profit before interest & tax is ₹ 1,50,000, Calculate Interest Coverage Ratio.

हलः Interest Coverage Ratio $= \frac{Profit\ before\ charging\ Interest\ \&\ Tax}{Fixed\ Interest\ Charges} = \frac{`1,50,000}{`20,000} = 7.5$ Times

Interest on Debentures = 5% of ₹ 4,00,000 = ₹ 20,000

उदाहरण 11 : निम्नलिखित सूचनाओं से ऋण सेवा अनुपात की गणना कीजिए एवं उस पर अपनी टिप्पणी लिखिये।

From the following informations, calculate 'Debt-Service Ratio' and write your comment on it.

ब्याज एवं कर के पश्चात् का लाभ (Profit After Interest & Tax) ₹ 1,08000, आयकर की दर (Rate of Income Tax) – ₹ 40% , 8% ऋणपत्र (8% Debentures) – ₹ 2,50,000

हल :–प्रश्नानुसार ऋण सेवा अनुपात ज्ञात करना हैं जो कि ब्याज व्याप्ति अनुपात का ही दूसरा नाम हैं।

Interest Coverage Ratio $= \frac{Profit\ before\ charging\ Interest\ \&\ Tax}{Fixed\ Interest\ Charges} = \frac{`2,00,000}{`2,0000} = 10$ times

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

प्रश्न में लाभ, कर एवं ब्याज के पश्चात् के दिये हैं जबकि यह अनुपात ज्ञात करने के लिए लाभ, कर एवं ब्याज से पूर्व के चाहिए। अतः Profit Before Tax = $\frac{Profit\ After\ Tax}{1-Tax\ Rate}$ = $\frac{`1,08,000}{1-.4}$ = $\frac{`1,08,000}{.6}$ = ₹ 1,80,000

उक्त लाभ ₹1,80,000 कर से पूर्व का तो है लेकिन ब्याज घटाने के पश्चात का हैं क्योंकि कुल लाभ में से समस्त स्वीकृत व्यय घटाने के पश्चात् शेष लाभ पर ही आयकर की गणना की जाती हैं। अतः कर एवं ब्याज से पूर्व का लाभ ज्ञात करने के लिए इसमें ब्याज की राशि जोड़ देंगे।

Profit Before Interest & Tax = Profit Before Tax + Interest Charge =₹ 1,80,000 + ₹ 20,000 = ₹ 2,00,000

टिप्पणी : यह अनुपात बताता हैं कि संस्था ने ब्याज की तुलना से 10 गुना लाभ अर्जित किया हैं जो कि प्रमाप अनुपात 6 या 7 गुने से अधिक हैं। अतः संस्था अपने दीर्घकालीन ऋणों पर ब्याज का भुगतान आसानी से कर सकती हैं।

(C) क्रियाशीलता अनुपात (Activity Ratios)

(1) स्कन्ध आवर्त अनुपात (Stock Turnover Ratio) – स्कन्ध आवर्त अनुपात साल के औसत स्टॉक का संस्था द्वारा बेचे गये माल की लागत (Cost of Goods Sold) अर्थात संचालन क्रियाओं से आगम की लागत (Cost of Revenue from Operations)के मध्य सम्बन्ध स्थापित करता हैं।यह अनुपात बताता हैं कि संस्था द्वारा स्टॉक में विनियोजित धनराशि के औचित्य एवं मात्रा की पर्याप्तता पर विचार करता हैं। इसकी गणना निम्न सूत्र से की जाती है :

$$\text{Inventory Turnover Ratio} = \frac{Cost\ of\ goods\ sold\ i.e. cost\ of\ Revenue\ from\ operations}{Average\ Stock/Inventory}$$

संचालन क्रियाओं से आगम की लागत (Cost of Revenue from Operations)की गणना :

Cost of material consumed + Purchase of stock- in- trade + changes in inventories + direct expenses.

Or Cost of revenue from operations = Revenue from operations – Gross Profit

औसत स्टॉक / स्कन्ध की गणना : Average Stock = $\frac{Opening\ stock+Closing\ stock}{2}$

कभी–2 बेचे गये माल की लागत अर्थात् संचालन से आशय की लागत सम्बन्धी सूचना उपलब्ध नहीं होती हैं और न ही उस लागत की गणना की जा सकती हैं। ऐसी स्थिति में स्कन्ध आवर्त अनुपात की गणना बिक्री/संचालन क्रियाओं से आगम के आधार पर की जाएगी।

$$\text{Inventory Turnover Ratio} = \frac{Sales/Revenue\ from\ Operations}{Average\ Inventory}$$

महत्त्व : इस अनुपात से ज्ञात होता हैं कि संस्था में स्टॉक किस गति से विक्रय में परिवर्तित हो रहा हैं अर्थात् स्कन्ध का उचित उपयोग हो रहा हैं या नहीं। यह अनुपात जितना ऊँचा होता हैं उतना ही अच्छा माना जाता हैं क्योंकि संस्था कम लाभ दर पर भी अधिक लाभ कमा लेती हैं। इसके विपरीत यह अनुपात जितना नीचा होता हैं वहाँ स्टॉक में अनावश्यक पूँजी फँसे होने का सूचक हैं। ऐसी स्थिति बेकार स्टॉक, अत्यधिक स्टॉक या स्टॉक पर अकुशल नियंत्रण का सूचक हैं।

उदाहरण 12: निम्नांकित सूचनाओं से स्कन्ध आवर्त अनुपात ज्ञात करो:

From the following informations, calculate Inventory Turnover Ratio:

वर्ष के क्रय (Purchases during the year) 5,00,000, वर्ष के प्रारम्भ में रहतिया(Inventory at the beginning of the year)- 2,00,000, वर्ष के अन्त में रहतिया (Inventory at the end)- 1,00,000. आवक गाड़ी भाड़ा (Carriage Inward)- 50,000, संचालन से आय (Revenue from operations)- 10,00,000

हल :–Cost of Revenue from operations = 2,00,000+ 5,00,000 + 50,000- 1,00,000 = 6,50,000

$$\text{Average Inventory} = \frac{2,00,000+1,00,000}{2} = 1,50,000$$

$$\text{Inventory Turnover Ratio} = \frac{Cost\ of\ Revenue\ from\ Operations}{Average\ Inventory} = \frac{6,50,000}{1,50,000} = 4.33 \text{ times.}$$

उदाहरण 13:निम्नलिखित सूचना से स्कन्ध आवर्त अनुपात एवं स्कन्ध की औसत अवधि ज्ञात करों :

From the following informations calculate Inventory Turnover Ratio and Average age of Inventory:

प्रारम्भिक रहतिया (Opening Inventory) 58,000, क्रय (Purchases)- 4,84,000, संचालन क्रियाओं से आगम (Revenue from operations) – 6,40,000, सकल लाभ की दर संचालन क्रियाओं से आगम का 25%(Rate of gross profit 25% of Revenue from operations)

हल :–Cost of Revenue from operations = Revenue from operations – Gross Profit = 6,40,000 – 25% of 6,40,000 = 4,80,000

Closing inventory = opening inventory + Purchases – Cost of Revenue from Operations =

58,000 + 4,84,000 – 4,80,000= 62,000

$$\text{Average Inventory} = \frac{Opening\ Inventory+Closing\ Inventory}{2} = \frac{58,000+62,000}{2} = 60,000$$

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

(i) Inventory Turnover Ratio = $\frac{Cost\ of\ Revenue\ from\ Operations}{Average\ Inventory} = \frac{4,80,000}{60,000}$ = 8 Times.

(ii) Inventory Velocity /Average age of Inventory = $\frac{No.of\ days/months\ in\ a\ year}{Inventory\ Turnover\ Ratio}$ = $\frac{365}{8}$ or $\frac{12}{8}$ = 45.63 days or 1.5 months.

उदाहरण 14 : मीनाक्षी लि. के निम्नलिखित समंकों से स्कन्ध आवर्त अनुपात की गणना कीजिए :

From the following data of Minakshi Ltd., calculate Inventory Turnover Ratio :

Particulars		Amount
Revenue from Operations	85,000	
Less : Returns	5,000	80,000
Less : Purchases	39,000	
Change in Inventories (Opening Inventory – Closing Inventory)		
(15,920-14,400)	1,520	
Carriage Inward	1,000	
Wages	2,000	43,520
Gross Profit		36,480

हल :–Inventory Turnover Ratio = $\frac{Cost\ of\ Revenue\ from\ operations}{Average\ Inventory} = \frac{43,520}{15,160}$ = 2.87 Times

Cost of Revenue from Operations = opening inventory + purchases +carriage inwards + wages – closing inventory = 39,000 + 15,920 + 1,000 + 2,000 – 14,400 = 43,520Or Cost of Revenue from operations = Revenue from operations – Gross Profit = 80,000 – 36,480 = 43,520

Average Inventory = $\frac{Opening\ Inventory+closing\ Inventory}{2} = \frac{15,920+14,400}{2}$ = 15,160

(ii)**व्यापारिक प्राप्य आवर्त अनुपात** (Trade Receivables Turnover Ratio):यह अनुपात व्यवसाय के शुद्ध उधार विक्रय का औसत व्यापारिक प्राप्यों के साथ सम्बन्ध स्थापित करता हैं। यह अनुपात बताता हैं कि संस्था उधार वसूली में कहाँ तक सफल हुई हैं। यदि कोई संस्था अपने प्राप्यों से समय पर वसूली नहीं करती हैं तो उसके कोष अनावश्यक रूप से प्राप्यों में फंस जाऐंगें। इसकी गणना निम्न प्रकार की जाती हैं :

Trade Receivables Turnover Ratio = $\frac{Net\ credit\ revenue\ from\ operations}{Average\ Trade\ Receivables}$

नोट :– 1. Net credit revenue from operations = credit sales – sales returns. 2. यदि प्रश्न में उधार विक्रय नहीं हो तो उधार विक्रय = Total sales – cash sales 3. यदि उधार विक्रय से सम्बन्धित किसी भी प्रकार की कोई सूचना न हो तो Net credit revenue from operations के स्थान पर Total Revenue from operations की राशि से व्यापारिक प्राप्य आवर्त अनुपात ज्ञात किया जायेगा। 4. व्यापारिक प्राप्यों में Debtors एवं Bills Receivables को शामिल किया जाएगा किन्तु "अप्राप्य एवं संदिग्ध ऋणों के लिए आयोजन"(Provision for Bad and Doubtful Debts)को व्यापारिक प्राप्यों (Trade Receivables) में से नहीं घटाया जायेगा।

5. औसत व्यापारिक प्राप्यों की गणना : = $\frac{Opening\ (Debtors+B/R)+\ Closing\ (Debtors+B/R)}{2}$

महत्त्व :–इस अनुपात से यह ज्ञात होता हैं कि व्यापारिक प्राप्यों से कितनी शीघ्रता से रोकड़ वसूली हो रही हैं। यह अनुपात जितना अधिक होता हैं उतना ही व्यापारिक प्राप्यों से वसूली में कुशलता का परिचायक होता हैं। इसके विपरीत यह अनुपात जितना नीचा होता हैं उतना ही संस्था की उधार बिक्री की राशि /व्यापारिक प्राप्यों से वसूली में कुशल नहीं होने का सूचक होता हैं। अर्थात् संस्था द्वारा ऐसे ग्राहकों को बिक्री की गई हैं जिनसे राशि वसूल नहीं हो रही हैं।

उदाहरण :15निम्नलिखित सूचनाओं से व्यापारिक प्राप्य आवर्त अनुपात की गणना कीजिए –

From the following informations calculate Trade Receivable Turnover Ratio :-

वर्ष के लिए कुल आगम संचालन क्रियाओं से (Total Revenue from operations for the year) 4,00,000,नकद आगम क्रियाओं से प्राप्ति (cash revenue from operations) 20% of total revenue, 01-04-2016 को व्यापारिक प्राप्य(Trade Receivables on 01-04-2016) 68,000, 31-03-2017 को व्यापारिक प्राप्य (Trade Receivables on 31-03-2017)60,000,

हल : –Trade Receivables Turnover Ratio = $\frac{Net\ credit\ revenue\ from\ operations}{Average\ Trade\ Receivables}$

Trade Receivables turnover ratio = $\frac{3,20,000}{64,000}$ = 5 Times

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Credit revenue from operations = Total Revenue from operations- Cash Revenue from operations = 4,00,000 – (20% of 4,00,000)= 3,20,000

Average Trade Receivables = $\frac{Opening\ Trade\ Receivables + Closing\ Trade\ Receivables}{2}$

$= \frac{68,000+60,000}{2} = 64,000$

(iii) औसत संग्रहण अवधि (Average Collection Period) – औसत संग्रहण अवधि से आशय दिनों की उस संख्या से हैं जिसमें संस्था को उसके व्यापारिक प्राप्यों (Trade Receivables) से धनराशि की वसूली होती हैं। यह अनुपात मुख्यतयाः व्यापारिक प्राप्य आवर्त अनुपात Trade Receivables Turnover Ratio) पर निर्भर करता हैं।

Average Collection Period = $\frac{No.\ of\ days\ in\ a\ year}{Trade\ Receivables\ Turnover\ Ratio}$ अथवा

Average Collection Period = $\frac{Average\ Trade\ Receivables\ X\ No.of\ days\ in\ a\ year}{Net\ Credit\ Revenue\ from\ operations}$

महत्त्वः–औसत संग्रहण अवधि व्यापारिक प्राप्यों से वसूली में लगने वाले समय को प्रकट करती हैं। यह अवधि मुख्यतया व्यापारिक प्राप्य आवर्त अनुपात पर निर्भर करती हैं, व्यापारिक प्राप्य आवर्त अनुपात जितना ऊँचा होगा, औसत संग्रहण अवधि उतनी ही कम होगी। संस्था को डूबत ऋण की हानि भी कम होगी। इसके विपरीत व्यापारिक प्राप्य आवर्त अनुपात जितना नीचा होगा,औसत संग्रहण अवधि उतनी ही अधिक होगी जो संस्था द्वारा व्यापारिक प्राप्यों की वसूली में देरी को प्रकट करता हैं।

उदाहरण 16– शुभम लि. की पुस्तकों से 31 मार्च, 2017 को निम्न शेष लिये गये। व्यापारिक प्राप्य आवर्त अनुपात एवं औसत संग्रहण अवधि की गणना कीजिए। वर्ष में 360 दिन मानिये।

The following balances are extracted from the books of Shubham Ltd. on 31st March, 2017. Calculate Trade Receivables Turnover Ratio and Average Collection Period. (Assume 360 days in a year)

Total Gross Revenue from operations (संचालन से कुल सकल आगम) 3,00,000; Cash Revenue from operations (संचालन से नगद आगम)60,000; Revenue from operations return (संचालन से आगम वापसी)21,000; Total Debtors(कुल देनदार) on 31.03.2016; 8,000, Total Debtors(कुल देनदार) on 31.03.2017 10,000; Bills receivables(प्राप्य बिल) on 31.03.2016 4,500; Bills Receivables (प्राप्य बिल)on 31.03.2017 6,700; Provision for doubtful debts (संदिग्ध ऋणों पर आयोजन)2000; Trade payables (व्यापारिक देयता) on 31.03.2017 20,000.

हल :Trade Receivables Turnover Ratio = $\frac{Net\ Credit\ Revenue\ from\ operations}{Average\ Trade\ Receivables} = \frac{2,19,000}{14,600} = 15$ Times

Net Credit Revenue from operations = Total Gross Revenue from Operations – Cash Revenue from Operations – Returns= 3,00,000 – 60,000 – 21,000 = 2,19,000

Average Trade Receivables = $\frac{Opening\ (Debtors+B/R) + Closing\ (Debtor+B/R)}{2} =$

$\frac{(8,000+4,500)+(10,000+6,700)}{2} = \frac{29,200}{2} = 14,600$

Average collection period = $\frac{No.of\ days\ in\ a\ year}{Trade\ Receivables\ turnover\ ratio} = \frac{360}{15} = 24$ days

उदाहरण 17:निम्न सूचनाओं से प्रारम्भिक तथा अन्तिम व्यापारिक प्राप्यों की गणना कीजिए –

From the following informations, Calculate opening and closing trade receivables :-

व्यापारिक प्राप्य आवर्त अनुपात (Trade Receivables Turnover Ratio) : 7 Times; परिचालन से आगम की लागत (cost of revenue from operations) 7,50,000; सकल लाभ अनुपात (Gross Profit Ratio) 1/3 on cost; परिचालन से नकद आगम (Cash revenue from operations) : 30% of Total Revenue; अन्त के व्यापारिक प्राप्य, प्रारम्भ के व्यापारिक प्राप्यों से 40,000 रूपये अधिक थे।(Closing Trade Receivables were 40,000 more than at the beginning).

हल :–Total Revenue from operations = Cost of Revenue from Operations + Gross Profit = 7,50,000 + (1/3 of 7,50,000) = 10,00,000

Credit Revenue from Operations = Total Revenue from Operations – Cash Revenue from Operations = 10,00,000 – (30% of 10,00,000) = 7,00,000

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Trade reveivables turnover ratio = $\frac{Credit\ revenue\ from\ operations}{Average\ Trade\ Receivables} = \frac{7,00,000}{Average\ Trade\ Receivables}$

Or Average Trade Receivables = $\frac{7,00,000}{7}$ = 1,00,000

Average Trade Receivables = $\frac{Opening\ receivables + closing\ receivables}{2}$

Assume opening trade receivables is = x, than closing trade receivables = x + 40,000

1,00,000 = $\frac{(x) + (x+40,000)}{2}$ or 2,00,000 – 40,000 = 2x or x = 1,60,000/2 = 80,000

प्रारम्भिक व्यापारिक प्राप्य = 80,000 ; **अन्तिम व्यापारिक प्राप्य** =80,000 + 40,000= 1,20,000

(iv) व्यापारिक देयता आवर्त अनुपात (Trade Payables Turnover Ratio) - यह अनुपात व्यवसाय के शुद्ध उधार क्रय का औसत व्यापारिक देयताओं के साथ सम्बन्ध स्थापित करता हैं। यह अनुपात बतलाता हैं कि क्रय के सम्बन्ध में व्यापारिक देयताओं का आवर्त(Turnover)कितनी बार हुआ हैं ।

Trade Payables Turnover Ratio = $\frac{Net\ credit\ purchase}{Average\ Trade\ Payables}$

नोट : 1. जब उधार क्रय के बारे में सूचना उपलब्ध न हो तो कुल क्रय(Total Purchase) के आधार पर ही इस अनुपात की गणना की जाती हैं ।

2. इस अनुपात की गणना हेतु "लेनदारों पर छूट के लिए आयोजन "(Provision for discount on creditors) को लेनदारों में से नहीं घटाया जाता हैं ।

3. Average Trade Payables = $\frac{Opening\ (Creditors + B/P) + Closing\ (Creditors + B/P)}{2}$

महत्त्व : – इस अनुपात के माध्यम से फर्म द्वारा अपनी व्यापारिक देयताओं के भुगतान की गति प्रकट होती हैं। यह अनुपात जितना ऊँचा होगा उतना ही अच्छा माना जायेगा। यह बतलाता हैं कि फर्म अपनी देयताओं का शीघ्र भुगतान कर रही हैं एवं यह फर्म की साख योग्यता को बढ़ाता हैं।

(v) **औसत भुगतान अवधि (Average Payment Period) –** औसत भुगतान अवधि यह जानकारी देती हैं कि संस्था अपने व्यापारिक देयताओं के भुगतान में कितना समय लगाती हैं।यह अनुपात मुख्यतः व्यापारिक देयता आवर्त अनुपात पर निर्भर हैं।

देयता आवर्त अनुपात जितना ऊँचा होगा औसत भुगतान अवधि उतनी ही कम होगी। इसके विपरीत देयता आवर्त अनुपात जितना नीचा होगा औसत भुगतान अवधि उतनी ही अधिक होगी।

Average Payment Period = $\frac{No.of\ days\ in\ a\ year}{Trade\ Payable\ Turnover\ Ratio}$ Or

Average Payment Period = $\frac{No.of\ days\ in\ a\ year\ X\ Average\ trade\ payables}{Net\ credit\ Purchase}$

उदाहरण 17 :– रमेश लि. की निम्नलिखित सूचनाओं से व्यापारिक देयता आवर्त अनुपात एवं औसत भुगतान अवधि की गणना कीजिये :

From the following informations of Ramesh Ltd., Calculate 'Trade Payable Turnover Ratio' and 'Average Payment Period':

Total Purchases during the year(वर्ष के दौरान कुल क्रय) (15,00,000; Cash Purchases(नगद क्रय) 4,00,000; Purchase Returns (out of credit purchase)(उधार क्रय में से वापसी) 5,000, Provision for discount on creditors (लेनदारों पर बटट्ा आयोजन) 50,000; Opening Creditors(प्रारम्भिक लेनदार) 35,000; Opening B/P (प्रारम्भिक देय बिल) 15,000; Closing Creditors(अंतिम लेनदार) 50,000; Closing B/P (अंतिम देय बिल) 20,000.

हल:(i) Trade Payables Turnover Ratio=$\frac{Net\ Credit\ Purchases}{Average\ Trade\ Payables}$= $\frac{10,95,000}{60,000}$ = 18.25 Times

Net Credit Purchase = Total Purchase – Cash Purchase – Purchase Returns = 15,00,000 – 4,00,000- 5,000 = 10,95,000

Average Trade payables = $\frac{(35,000+15,000+50,000+20,000)}{2} = \frac{1,20,000}{2}$ = 60,000

(ii) Average Payment Period = $\frac{No.of\ days\ in\ a\ year}{Trade\ Payable\ Turnover\ Ratio}$

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

or

$$= \frac{No.of\ days\ in\ a\ year\ X\ Average\ Trade\ Payables}{Net\ Credit\ Purchases}$$

Average Collection Period = $\frac{365}{18.25}$ = 20 days or Average Collection Period = $\frac{365\ X\ 60,000}{10,95,000}$ = 20 days

(vi)कुल सम्पत्ति आवर्त अनुपात (Total Assets Turnover Ratio) :यह अनुपात संस्था की कुल सम्पत्तियों तथा उनके आधार पर होने वाले संचालन क्रियाओं से आगम अथवा संचालन क्रियाओं से आगम की लागत के मध्य सम्बन्ध व्यक्त करता हैं। यह कुल विनियोग आवर्त अनुपात (Total Investment Turnover Ratio) भी कहलाता हैं।

Total Assets Turnover Ratio : = $\frac{Revenue\ from\ operations\ or\ cost\ of\ revenue\ from\ operations}{Total\ Assets.}$

Total Assets = Non Current Assets (Tangible Assets + Intangible Assets + Non Current Investment + Long Term Loans and Advances) + Current Assets

महत्त्व :यह अनुपात बतलाता हैं कि संस्था की कुल सम्पत्तियों की तुलना में संचालन क्रियाओं से आगम कितनी बार हुआ हैं। यह अनुपात अधिक हैं तो संस्था प्रबन्धन की कुशलता का परिचायक हैं कि उन्होनें सम्पत्तियों का प्रभावशाली उपयोग किया हैं। इसके विपरीत यह अनुपात नीचा/कम हैं तो इसका आशय हैं कि संस्था विनियोजित सम्पत्तियों की तुलना में पर्याप्त विक्रय नहीं कर पा रही हैं तथा सम्पत्तियों में विनियोग अधिक हैं।

उदाहरण 18 :–निम्न सूचनाओं से "कुल सम्पत्ति आवर्त अनुपात" की गणना कीजिए –From the following informations calculate 'Total Assets Turnover Ratio':Goodwill (ख्याति) 8,000; other Non current Assets (अन्य गैर चालू सम्पत्तियाँ) 22,000; Current Assets (चालू सम्पत्तियाँ) 20,000; Cash Revenue from operations (संचालन से नकद आमद) 1,30,000; Credit Revenue from operations (संचालन से उधार आमद) 3,90,000 and revenue from operations return (संचालन से आमद वापसी) 20,000.

हल :–Total Assets Turnover Ratio = $\frac{Net\ Revenue\ from\ operations}{Total\ Assets.} = \frac{500,000}{50,000}$ = 10 Times

Net Revenue from Operations = Cash Revenue from Operations + Credit Revenue from Operations – Revenue from Operations Return = 1,30,000 + 3,90,000 – 20,000 = 5,00,000

Total Assets = Goodwill + Other Non Current Assets + Current Assets = 8,000 + 22,000 + 20,000 = 50,000.

(D) लाभदायकता अनुपात (Profitability Ratios)

1.सकल लाभ अनुपात (Gross Profit Ratio) : यह अनुपात सकल लाभ और संचालन क्रियाओं से शुद्ध आगम (विक्रय)के मध्य सम्बन्ध को प्रकट करता हैं। सामान्यतः यह अनुपात प्रतिशत के रूप में व्यक्त किया जाता हैं। इसकी गणना निम्न सूत्र से की जाती हैं –Gross Profit Ratio = $\frac{Gross\ Profit}{Revenue\ from\ Operations\ (Net\ Sales)}$x 100

Gross Profit = Revenue from Operations – Cost of Revenue from Operations

Cost of Revenue from Operations= cost of material consumed + purchase of stock in trade + changes in inventories + direct expenses (carriage, wages etc.)

Inventories = Finished goods + work in progress (WIP) + stock in trade;

Net Revenue from Operations = Revenue from Operations – Revenue from Operations Return i.e. (Sales return)

महत्त्व : यह अनुपात संस्था की लाभार्जन क्षमता को ज्ञात करने का अच्छा माप हैं। यह अनुपात जितना अधिक होगा, व्यवसाय के लिए उतना ही लाभप्रद होगा। इसके विपरीत इस अनुपात का कम होना इस बात का प्रतीक हैं कि व्यवसाय में बिक्री की तुलना में लाभ कम हो रहे हैं जिसके प्रमुख कारण–विक्रय मूल्य में कमी होना; क्रय मूल्य तथा गाड़ी भाड़ा, मजदूरी आदि प्रत्यक्ष व्ययों में वृद्धि होना, अंतिम स्टॉक का मूल्यांकन कम होना आदि हैं। इस अनुपात के लिए कोई आदर्श प्रमाप नहीं हैं। किन्तु यह अनुपात इतना अवश्य होना चाहिए जिससे सभी संचालन व्ययों, ह्रास, ऋणों पर ब्याज, लाभांश आदि की व्यवस्था इसमें से हो सके।

उदाहरण 19 : निम्नलिखित सूचनाओं से सकल लाभ अनुपात ज्ञात कीजिए:

From the following informations, calculate Gross Profit Ratio:

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Decrease in inventory (स्कन्ध मे कमी) : 1,60,000, Return Outwords(जावक गाडी भाडा) - 50,000, Purchases(क्रय) -(Cash 2,00,000, Credit - 6,00,000), Wages(मजदूरी)- 80,000, Carriage inwards(आवक गाडी भाडा) - 15,000, Salaries(वेतन) - 1,00,000, Cash Revenue from operations(संचालन से नकद आमद) - 2,50,000, Ratio of cash Revenue from Operations and Credit Revenue from Operations(संचालन से नकद आमद एवं संचालन से उधार आगम के बीच का अनुपात)–1:5

हल :–Gross Profit ratio = $\frac{Gross\ Profit}{Revenue\ from\ Operations}$ x 100 = $\frac{15,00,000-10,05,000}{15,00,0000}$ x 100 = 33%

Revenue from Operations = Cash Revenue from operations + Credit Revenue from operations= 2,50,000 + (2,50,000 x 5) = 15,00,000

Net Purchases = cash purchases + credit purchases – return outwards = 2,00,000 + 6,00,000 – 50,000 = 7,50,000

Cost of revenue from operations = Net Purchases + Changes in Inventory (i.e. opening stock – closing stock) + Direct expenses = 7,50,000 + 1,60,000 + 15,000 + 80,000 = 10,05,000

नोटः Decrease in Inventory का आशय है कि प्रारम्भिक रहतिये की तुलना में अंतिम रहतिया में होने वाली कमी।

2.परिचालन अनुपात (Operating Ratio): परिचालन अनुपात एक संस्था की कुल परिचालन लागत एवं संचालन क्रियाओं से शुद्ध आगम के मध्य सम्बन्ध व्यक्त करता हैं। कुल परिचालन लागत ज्ञात करने हेतु संचालन क्रियाओं से आगम की लागत में मुख्य व्यवसाय से सम्बन्धित समस्त परिचालन व्ययों को जोड़ा एवं अन्य परिचालन आयों को घटाया जाता हैं। परिचालन अनुपात एवं परिचालन लाभ अनुपात का योग 1 होता हैं।

Operating Ratio = $\frac{Operating\ Cost}{Net\ Revenue\ from\ Operations}$ x 100

Operating Cost = Cost of Revenue from Operations + Other Operating Expenses – Other Operating Incomes

अन्य परिचालन व्यय (Other Operating Expenses) : Employee Benefit Expenses, Depreciation, Office and Administrative Expenses, Selling and Distribution Expenses, Discount, Bad Debts, Interest on ST Loans.अन्य परिचालन आय (Other Operating Incomes) : Commission received, discount received.

महत्त्वः परिचालन अनुपात व्यवसाय की कार्यकुशलता एवं लाभोपार्जन क्षमता का माप हैं। यह अनुपात जितना कम होता हैं लाभार्जन की दृष्टि से संस्था उतनी ही कुशल मानी जाती हैं।

ध्यातव्यः परिचालन अनुपात की गणना के समय गैर परिचालन व्ययों–स्थायी सम्पत्तियों के विक्रय पर हानि, असामान्य हानि, दीर्घकालीन ऋणों पर ब्याज, दान, आयकर आदि एवं गैर परिचालन आयों जैसे विनियोगों पर आय आदि को ध्यान में नहीं रखा जाता हैं।

3.परिचालन लाभ अनुपात (Operating Profit Ratio) : यह अनुपात परिचालन लाभ एवं संचालन क्रियाओं से आगम (शुद्ध विक्रय) के मध्य सम्बन्ध स्थापित करता हैं। परिचालन लाभ से आशय उस लाभ से हैं जो संचालन क्रियाओं से आगम में से मुख्य व्यवसाय से सम्बन्धित समस्त परिचालन व्यय घटाकर एवं अन्य परिचालन आय जोड़कर निकाले जाते हैं।

Operating Profit Ratio = $\frac{Operating\ Profit}{Net\ Revenue\ from\ operations\ (Net\ Sales)}$ x 100

Operating Profit = Gross Profit – Other Operating Expenses + Other Operating Incomes

नोटः– यदि Net Profit दिया हो तो परिचालन लाभ की गणना निम्नानुसार की जाएगी –

Operating Profit = Net Profit (Before Tax) + Non Operating Expenses/ Losses – Non Operating Incomes

अन्य परिचालन संचालन व्यय (Other operating Expenses): Employees Benefit Expenses, Depreciation, Office & Administrative Expenses, Selling & Distribution Expenses, Discount, Bad-debts, Interest on ST Loans etc.

अन्य परिचालन/संचालन आय (Other Operating Incomes) : Commission Received and Discount Received.

गैर परिचालन/संचालन व्यय (Non-Operating Expenses) : Loss on sale of Non-current (Fixed) Assets, Loss by Fire, Donation, Income Tax and Interest on Debentures/Long term Loans.

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

गैर परिचालन/संचालन आय (Non-Operating Incomes) : Profit on Sale of Non-current (Fixed) Assets, & Income on Investments.

महत्त्व:यह अनुपात स्पष्ट करता हैं कि संस्था की क्रियात्मक क्षमता कैसी हैं। जितना अधिक यह अनुपात होगा संस्था संचालन क्रियाओं से लाभ कमाने की दृष्टि से उतनी ही कुशल मानी जाएगी। कुछ संस्थाओं में संचालन क्रियाओं से लाभ कम होता हैं किन्तु गैर संचालन क्रियाओं का लाभ अधिक होता हैं। परिणामतः शुद्ध लाभ अनुपात बढ़ जाता हैं। अतः व्यवसाय की कार्यकुशलता तथा लाभार्जन क्षमता को मापने का आधार परिचालन लाभ अनुपात ही हैं।

उदाहरण 20: निम्नलिखित सूचनाओं से परिचालन अनुपात एवं परिचालन लाभ अनुपात की गणना कीजिए –

From the following informations, calculate Operating Ratio and Operating Profit Ratio :

परिचालन से आय (Revenue from opertaions) – 2,25,000, परिचालन से आय वापसी (Revenue from Operations Return) - 25,000, परिचालन से आय की लागत (Cost of Revenue from Operations)- 1,00,000, प्रशासकीय व्यय(Administrative Expenses) - 17,000, विक्रय एवं वितरण व्यय (Selling & Distribution Expenses)- 9,000, ह्रास (Depreciation) - 22,000

हल–(i) Operating Ratio = $\frac{Cost\ of\ Revenue\ from\ operations + Operating\ Expenses}{Net\ Revenue\ from\ operations}$ x 100

= $\frac{1,00,000+(.17,000+9000+22,00,00)}{2,00,000}$x100 =$\frac{1,48,000}{2,00,000}$x 100 = 74%

Net revenue from operations = Revenue from Operations – Revenue from Operations Return

=2,25,000 – 25,000 = 2,00,000

Operating Profit Ratio = $\frac{Operting\ Profit}{Net\ Revenue\ from\ operations}$ x 100 = $\frac{52000}{200,000}$ x 100 = 26%

Net Revenue from Operations = Revenue from Operations – Revenue from Operations Return

= 2,25,000- 25,000 = 2,00,000

नोट: परिचालन लाभ अनुपात की गणना इस सूत्र से भी कर सकते हैं: (100–परिचालन अनुपात) अतः इस प्रश्न में भी(100–74%) = 26%परिचालन लाभ अनुपात होगा।

Operating Profit = Net Revenue from Operations – Cost of Revenue from Operations – Other Operating Expenses (Adm. Exp. + Selling & distribution Exp. + Depreciation) = 2,00,000 – 1,00,000 – (17,000 + 9,000 + 22,000) = 2,00,000 – 1,48,000 = 52,000.

4.शुद्ध लाभ अनुपात (Net Profit Ratio) :यह अनुपात व्यवसाय के शुद्ध लाभ एवं संचालन क्रियाओं से शुद्ध आगम (Net Sales) के मध्य सम्बन्ध व्यक्त करता हैं। शुद्ध लाभ एक व्यावसायिक संस्था के संचालन क्रियाओं से लाभ एवं गैर संचालन क्रियाओं से लाभ का योग होता हैं।

Net Profit Ratio = $\frac{Net\ Profit}{Net\ Revenue\ from\ operations\ (Net\ Sales)}$x 100

Net Profit = Gross Profit – Other Operating Expenses – Other Non Operating Expenses + Other Operating Income + Other Non Operating Incomes

महत्त्व : यह अनुपात व्यवसाय की कुल लाभदायकता तथा कुशलता का परिचायक है। यदि यह अनुपात विगत वर्षो की तुलना में वृद्धि प्रदर्शित करता हैं तो इसका आशय हैं व्यवसाय की लाभप्रदता में सुधार हुआ है। यह अनुपात एक और संचालन क्रियाओं से आगम पर लाभदायकता को दर्शाता है वहीं स्वामियों की पूँजी पर जोखिम के लिए उचित लाभ होने की जानकारी भी देता हैं।

उदाहरण 21: निम्नलिखित सूचनाओं से एक कम्पनी के 31 मार्च, 2017 को समाप्त होने वाले वर्ष के लिए सकल लाभ अनुपात, परिचालन लाभ अनुपात एवं शुद्ध लाभ अनुपात का परिकलन कीजिए –

From the following informations, calculate Gross Profit Ratio, Operating Profit Ratio and NetProfit Ratio for the year ending 31 March, 2017 of a company:

प्रारम्भिक रहतिया (Opening Inventory) 1,20,000; अंतिम रहतिया (Closing Inventory) 2,00,000; क्रय (Purchases) 8,40,000; मजदूरी (Wages) 56,000; आवक गाड़ी भाड़ा (Carriage Inward) 16,000; प्रशासनिक व्यय (Administration Expenses) 96,000; विक्रय एवं वितरण व्यय (Selling & Distribution Exp.) 1,12,000; मशीन के विक्रय से लाभ (Profit on sale of machine) 1,12,000; गैर परिचालन व्यय (Non-Operating Expenses) 30,000;

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

आयकर (Income Tax) 50,000; संचालन क्रियाओं से आगम (Revenue from operations) 16,40,000; संचालन क्रियाओं से आगम वापसी (Revenue from operations return) 40,000.

हल: **(i)** Gross Profit Ratio = $\frac{Gross\ Profit}{Net\ Revenue\ from\ operations}$ x 100 $\frac{7,68,000}{16,00,000}$ x 100 = 48%

Gross Profit = Net Revenue from Operations – cost of Revenue from Operations = Net revenue fromOperations – (opening inventory + Purchases + wages + carriage inwards – closing inventory)

= (16,40,000– 40,000) – (1,20,000+ 8,40,000+56,000+16,000–2,00,000) =16,00,000–8,32,000= 7,68,000

(ii) Operating Profit Ratio = $\frac{Operating\ Profit}{Net\ Revenue\ from\ operations}$ x 100 $\frac{5,60,000}{16,00,000}$ x 100 = 35%

(iii) Net Profit Ratio = $\frac{Net\ Profit}{Net\ Revenue\ from\ operations}$ x 100 $\frac{5,92,000}{16,00,000}$ x 100 = 37%

Net Profit = Operating Profit – Non Operating Exp + Non Operating Incomes = 5,60,000 – (30,000 + 50,000) + 1,12,000 = 5,60,000 – 80,000 + 1,12,000 = 5,92,000

5.विनियोग पर प्रत्याय (Return on Investment or ROI) :इस अनुपात को विनियोजित पूँजी पर प्रत्याय (Return on Capital Employed) भी कहते हैं। एक संस्था में विनियोग करने का मुख्य उद्देश्य पूँजी पर आय अर्जित करना हैं। एक व्यवसाय की सम्पूर्ण लाभदायकता का मापन इसी अनुपात से किया जाता हैं। यह अनुपात संस्था के कर तथा ब्याज से पूर्व के लाभ(PBIT) एवं विनियोजित पूँजी के मध्य सम्बन्ध व्यक्त करता हैं।

विनियोजित पूँजी (Capital Employed) से आशय संस्था में लगाए गये दीर्घकालीन कोषों (Long Term Funds) से हैं। चूँकि विनियोजित पूँजी में दीर्घकालीन ऋण भी शामिल होते है। अतः दीर्घकालीन ऋणों पर दिये गये ब्याज को इस अनुपात की गणना करते समय लाभों में से नहीं घटाया जाता हैं।

Return on Investment = $\frac{Net\ Profit\ before\ interest,Tax\ \&\ Dividends}{Capital\ Employed}$ x 100

विनियोजित पूँजी (Capital Employed)की गणना निम्न में से किसी एक विधि से की जा सकती हैं।

(i) Liabilities side Approach: - Capital Employed = Shareholders Funds + Non-current Liabilities (Long Term Loans + LT Provision-Non Trade Investment – Fictitious Assets)

(ii) Assets Side Approach : Capital Employed = Non-current Assets + Working Capital

Non-Current Assets = Fixed Assets (Tangible Assets + Intangible Assets) + Non-Current Investment + LT Loans & Advances.

Working Capital = Current Assets – Current Liabilities.

नोट: यदि विनियोगों के बारे में स्पष्ट न हो तो उन्हें Trade Investment ही माना जायेगा।

महत्त्व:– यह अनुपात किसी भी व्यावसायिक संस्था की सम्पूर्ण लाभदायकता अर्थात कुशलता को मापने का सर्वोत्तम आधार हैं। यह अनुपात बताता हैं कि संस्था द्वारा विनियोजित पूँजी का कितनी कुशलता के साथ प्रयोग किया जा रहा हैं। इस अनुपात की सहायता से ही दो कम्पनियों की कुशलता की जांच की जा सकती हैं।

उदाहरण 22 :– निम्नलिखित सूचनाओं की सहायता से विनियोग पर प्रत्याय (विनियोजित पूँजी पर प्रत्याय) दर की गणना कीजिये : From the following informations, calculate rate of Return on Investments:

अंश पूँजी (Share Capital) 1,00,000, संचय एवं आधिक्य (Reserves & Surplus) 50,000, मूर्त स्थायी सम्पत्तियाँ (शुद्ध) (Fixed Asset-Tangible) (Net)-4,50,000, गैर चालू व्यापारिक विनियोग (Non-Current Trade Investments)-50,000, चालू सम्पत्तियाँ (Current Assets)- 2,20,000, 10% दीर्घकालीन ऋण (10% Long Term Loans)- 4,00,000, चालू दायित्व (Current Liabilities)- 1,70,000,कर से पूर्व शुद्ध लाभ (Net Profit before Tax)- 1,80,000.

हल:–Return on Investment = $\frac{Net\ Profit\ before\ interest\ \&\ Tax}{Capital\ Employed}$ x 100= $\frac{2,20,000}{5,50,000}$ x 100 = 40%

Net Profit before Interest & Tax = Net profit before Tax + 10% Interest on Loan

= 1,80,000 + 40,000 = 2,20,000.

Capital Employed = Share Capital + Reserves & Surplus + 10% LT Loans

= 1,00,000 + 50,000 + 4,00,000 = 5,50,000

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

(E) विनियोग विश्लेषण अनुपात (Investment Analysis Ratio)

(i) प्रति अंश अर्जन (Earning Per Share – EPS): प्रति अंश अर्जन की गणना समता अंशधारियों के लिए उपलब्ध लाभों में समता अंशों की संख्या का भाग देकर की जाती हैं। यह एक वित्तीय अनुपात हैं जो यह बतलाता हैं कि प्रत्येक समता अंश पर कितनी आय अर्जित की गई हैं। लेखा मानक (AS) - 20 के अनुसार समता अंशधारियों के लिए उपलब्ध लाभों की गणना करते समय पूर्वाधिकार अंश लाभांश को घटाया जायेगा तथा बकाया समता अंशों की संख्या से आशय अवधि में बकाया समता अंशों की भारित औसत संख्या से हैं ।

$$\text{Earning Per Share (EPS)} = \frac{Net\ Profit\ After\ Tax - Preference\ Share\ Dividend}{Number\ of\ Equity\ Shares}$$

महत्त्वः– यह अनुपात समता अंशधारियों की दृष्टि से महत्त्वपूर्ण होता हैं।

यह अनुपात समता अंशों के बाजार मूल्य को भी प्रभावित करता हैं। प्रति अंश अर्जन (EPS) अनुपात जितना ऊँचा होगा कम्पनी के अंशों का मूल्य उतना ही अधिक होगा। परिणामतः कम्पनी को अतिरिक्त पूँजी की व्यवस्था करना आसान होगा तथा कम्पनी की ख्याति में भी वृद्धि होगी।

उदाहरण 23: – निम्न सूचनाओं से प्रति अंश अर्जन (EPS) की गणना करें :–From the following informations, calculate Earning Per Share :- Equity share capital of (समता अंश पूंजी) 10 each fully paid- 5,00,000, 10% Preference share capital of(अधिमान अंश पूंजी) 10 each fully paid - 1,00,000, General Reserve (सामान्य संचय) – 1,50,000,Net Profit Before Tax(कर पूर्व शुद्व लाभ)–3,00,000, Tax Rate Assume (कर की दर मानिये) 30%

हल:Earning Per share $= \frac{Net\ Profit\ After\ Tax - Prefence\ Share\ Dividend}{Number\ of\ Equity\ Shares} = \frac{2,00,000}{50,000} = 4$

Net Profit after tax & preference share dividend

= 3,00,000 – (30% of 3,00,000) – (10% of 1,00,000) = ₹ 2,00,000

No. of Equity Shares = 5,00,000÷ 10 = 50,000 Shares

(ii)प्रति अंश लाभांश (Dividend Per Share DPS):प्रति अंश लाभांश आय का वह भाग है जो समता अंशधारियों में वितरित लाभांश की कुल राशि में समता अंशों की संख्या का भाग देने पर आती हैं।प्रति अंश अर्जन से यह ज्ञात होता हैं कि समता अंशधारी कितना लाभ प्राप्त करने का अधिकारी हैं किन्तु वही सम्पूर्ण राशि उसे प्राप्त नहीं होती। उसके हिस्से के लाभ का एक भाग कम्पनी द्वारा रोक लिया जाता हैं। शेष राशि ही लाभांश रूप में उसे प्राप्त होती हैं।

$$\text{Dividend Per Share} = \frac{Dividend\ paid\ to\ Equity\ Shareholder}{Number\ of\ Equity\ Shares}$$

(iii)लाभांश भुगतान अनुपात (Dividend Payout Ratio): यह अनुपात समता अंशधारियों में वितरित किये गये प्रति अंश लाभांश का सम्बन्ध प्रति अंश अर्जन के साथ स्थापित करता हैं। यह बताता हैं समता अंशधारियों से सम्बन्धित अर्जनों का कितना भाग (अनुपात) उन्हें लाभांश रूप में वितरित किया गया हैं।

$$\text{Dividend Payout Ratio} = \frac{Dividend\ Per\ Share}{Earning\ Per\ Share} \text{x } 100$$

यदि लाभांश भुगतान अनुपात को 100 में से घटा दिया जाऐ तो लाभों की वह राशि जो संस्था ने रोकी है, ज्ञात हो जायेगी। जैसे किसी कम्पनी का लाभांश भुगतान अनुपात 65% हो तो उसका प्रतिधारित अर्जन अनुपात 100– 65% = 35% होगा।

उदाहरण 24: तन्वी लि. की निम्नलिखित सूचनाओं से (1)प्रतिअंश अर्जन (2)प्रतिअंश लाभांश एवं (3) लाभांश भुगतान अनुपात की गणना कीजिये।From the following informations of Tanvi Ltd. calculate **(i)** Earning per share **(ii)** Dividend Per Share &**(iii)** Dividend Payout Ratio:10%, 2000 Preference shares (अधिमान अंश)of 100 each 2,00,000, 50,000 Equity shares (समता अंश) of 10 each- 5,00,000, Profit after tax (कर पश्चात् लाभांश) - 3,80,000, Equity Dividend paid (समता अंश लाभांश) @ 40%.

हल:**(i)** Earning Per Share $= \frac{Net\ Profit\ after\ Tax - Preference\ share\ Dividend}{No.of\ Equity\ Shares}$

$$= \frac{3,80,000 - (10\%\ of\ 2,00,000)}{50,000} = \frac{3,60,000}{50,000} = 7.20 \text{ Per share}$$

(ii) Dividend Per share $= \frac{Dividend\ paid\ to\ Equity\ share\ holders}{No.of\ Equity\ Shares} = \frac{2,00,000}{50,000} = 4$ Per Share

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Dividend Paid to Equity shareholders = 40% of 5,00,000 = 2,00,000Dividend Per Share

(iii) Dividend Payout Ratio = $\frac{Dividend\ Per\ share}{Earning\ Per\ Share}$x 100 = $\frac{4}{7.2}$x 100 = 55.56%

उदाहरण 25 : जॉनी लि. की पुस्तकों से निम्न शेष लिये गये हैं :–Following particulars are extracted from the books of Jony Ltd.:

Share Capital (अंश पूंजी) - 4,00,000, General Reserves (सामान्य संचय) -2,04,000, Profit and Loss A/c Balance (लाभ हानि खाता शेष) - 1,87,000, 11% Debentures (11%ऋण पत्र)- 2,00,000, Current Liabilities(चालू दायित्व)- 2,09,000, Non-Current Assets (गैर चालू सम्पत्तियाँ) - 5,60,000, Inventory (स्कन्ध) - 1,98,000, Trade Receivables (व्यापारिक प्राप्यताए) - 3,70,000, Cash and Cash Equivalents(नकद एवं नकद तुल्य) - 72,000

निम्न अनुपातों की गणना कीजिऐं :–Calculate following Ratios :

(i)चालू अनुपात (Current Ratio),**(ii)**त्वरित अनुपात (Quick Ratio) : **(iii)**ऋण–समता अनुपात (Debt Equity Ratio);**(iv)**स्वामित्व अनुपात (Proprietary Ratio); एवं **(v)**शोधन क्षमता अनुपात (Solvency Ratio)

हल: **(i)**Current Ratio = $\frac{Current\ Assets}{Current\ Liabilities}$ $\frac{6,40,000}{2,09,000}$ = 3.06: 1

Current Assets = Inventory+Trade Receivables + Cash and Cash Equivalents

= 198000 + 370000+ 72000 = 640000

(ii) Quick Ratio = $\frac{Quick\ Assets}{Current\ Liabilities}$= $\frac{4,42,000}{2,09,000}$ = 2.11 : 1

Liquid Assets = Current Assets – Inventory = 6,40,000 - 1,98,000 = 4,42,000

(iii) Debt – Equity Ratio = $\frac{External\ Liabilities}{Internal\ Liabilities}$ = $\frac{4,09,000}{7,91,000}$ = 0.517 : 1

External Liabilities = 11% Debentures + Current Liabilities = 2,00,000 + 2,09,000 = 4,09,000

Internal Liabilities = share capital + General Reserve + Profit & Loss Balance = 4,00,000 + 2,04,000 + 1,87,000= 7,91,000

(iv) Proprietory Ratio = $\frac{Shareholders\ Fund}{Total\ Assets}$ = $\frac{7,91,000}{12,00,000}$ = 0.659 : 1

Share holder's fund or Internal Equity or Internal Liabilitiesi.e.7,91,000

Total Assets = Non current assets + Current Assets = 5,60,000 + (1,98,000 + 3,70,000 + 72,000) = 12,00,000

(v) Solvency Ratio = $\frac{Total\ Debt}{Total\ Assets}$ = $\frac{4,09,000}{1,20,0000}$ = 0.341 : 1

Total Debt = Non current liabilities + Current liabilities = 2,00,000 + 2,09,000 = 4,09,000

उदाहरण 26 : मिराज लि. की पुस्तकों से निम्नलिखित सूचनाएँ प्राप्त की गई हैं :

Following informations have been obtained from the books of Miraj Ltd. :

Particulars	**2015 -16**	**2016-17**
Revenue from operations(संचालन से आगम) (at Gross Profit of 25%)	20,00,000	30,00,000
Trade Receivables on 1st April(व्यापारिक प्राप्यताएँ : 1 अप्रेल)	3,00,000	
Trade Receivables on 31st March(व्यापारिक प्राप्यताएँ : 31 मार्च)	3,50,000	5,00,000
Inventory on 1st April: (स्कन्ध : 1 अप्रेल)	3,20,000	
Inventory on 31st March(स्कन्ध : 31 मार्च)	3,60,000	4,40,000

दोनों वर्षों के लिए व्यापारिक प्राप्य आवर्त अनुपात एवं स्कन्ध आवर्त अनुपात की गणना कीजिए एवं आवश्यक टिप्पणी दीजिए।

Calculate Trade Receivables Turnover Ratio and Inventory Turnover Ratio for both of the years and give necessary comments.

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

हल:Year 2015-16

Trade Receivable Turnover Ratio = $\frac{Net\ Credit\ Revenue\ from\ operations}{Average\ Trade\ Receivables} = \frac{20,00,000}{3,25,000} = 6.15$ times

Average Trade Receivables = $\frac{Opening\ Trade\ Receivables + closing\ trade\ Receivables}{2}$

$= \frac{300,000 + 350,000}{2} = 3,25,000$

Inventory Turnover Ratio = $\frac{Cost\ of\ Revenue\ from\ operations}{Average\ Inventory} = \frac{15,00,000}{3,40,000} = 4.41$ times

Cost of Revenue from Operations = 20,00,000 – 25% of 20,00,000 = 20,00,000 - 5,00,000= 15,00,000

Average Inventory = $\frac{Opening\ Inventory + closing\ Inventory}{2} = \frac{3,20,000 + 3,60,000}{2} = 3,40,000$

Year 2016-17

Trade Receivables Turnover Ratio = $\frac{Net\ Credit\ Revenue\ From\ Operations}{Average\ Trade\ Receivables} = \frac{30,00,000}{4,25,000} = 7.06$ times.

वर्ष 2015–16 के अन्तिम व्यापारिक प्राप्य, वर्ष 2016–17 के प्रारम्भिक प्राप्य होगें।

अतः Average Trade Receivables = $\frac{3,50,000 + 5,00,000}{2} = 4,25,000$

Inventory Turnover Ratio = $\frac{Cost\ of\ Revenue\ from\ Operations}{Average\ Inventory} = \frac{22,50,000}{4,00,000} = 5.625$ times

Cost of Revenue from operations = 30,00,000 – 25% of 30,00,000

= 30,00,000–7,50,000 = 22,50,000

Average Inventory = $\frac{Opening\ Inventory + Closing\ Inventory}{2}$

वर्ष 2015–16 का अन्तिम स्कन्ध , वर्ष 2016–17 का प्रारम्भिक स्कन्ध होगा।

अतः Average Inventory = $\frac{3,60,000 + 4,40,000}{2} = 4,00,000$

टिप्पणी (Comments) :1.वर्ष 2016–17 में व्यापारिक प्राप्य आवर्त अनुपात 6.15 गुने से बढ़कर 7.06 गुना हो गया हैं, अतः संस्था देनदारों से शीघ्रता से रूपया वसूल कर रही हैं।

2.वर्ष 2016–17 में स्कन्ध आवर्त अनुपात 4.41 गुना से बढ़कर 5.625 गुना हो गया हैं, यह भी संस्था की कुशल स्कन्ध नीति को प्रदर्शित करता हैं।

नोट: नकद बिक्री या उधार बिक्री के बारे में कोई सूचना नहीं दी गई हैं। अतः व्यापारिक प्राप्य आवर्त अनुपात की गणना Revenue from Opertaions की दी गई राशि पर ही की गई है।

उदाहरण 27: 31 मार्च 2017 को समाप्त होने वाले वर्ष के लिए उपलब्ध निम्न सूचनाओं से **(i)**सकल लाभ अनुपात **(ii)**परिचालन अनुपात **(iii)**परिचालन लाभ अनुपात एवं **(iv)**शुद्ध लाभ अनुपात की गणना कीजिऐं :

From the following figures available for the year ending 31st March 2017, calculate (i) Gross Profit Ratio (ii) Operating Ratio (iii) Operating Profit Ratio & (iv) Net Profit Ratio,

Cash Revenue from operations (संचालन से नकद आगम)- 50,000, Credit Revenue from operations (संचालन से उधार आगम) - 1,00,000, Purchase (क्रय):(Cash 20,000, Credit 68,000), Return outwards(जावक वापसी) - 5,000, Opening Inventory(प्रारम्भिक स्कंध) - 20,000, Closing Inventory(अंतिम स्कंध) - 10,000, Carriage inwards(आवक गाडी भाडा) - 3,000, Salaries (वेतन) - 3,500, Other Office expenses(अन्य कार्यालय व्यय) - 5,000, Selling Expenses(विक्रय व्यय) - 6,500, Income from Investments(विनियोगों से आय) - 7,000, Interest on Loan(ऋण पर ब्याज) - 8,000, Loss by Fire(आग से हानि) - 4,000, Wages (मजदूरी) - 4,000.

हल :(i) Gross Profit Ratio = $\frac{Gross\ Profit}{Revenue\ from\ operations} \times 100 = \frac{50,000}{1,50,000} \times 100 = 33\frac{1}{3}\ \%$

Revenue from operations = Cash Revenue from Operations + Credit Revenue from operations

= 50,000 + 1,00,000 = 1,50,000

Net Purchases = cash purchase + credit purchase – return outwards

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

= 20,000 + 68,000 - 5,000 = 83,000

Cost of Revenue from Operations = Net purchases + changes in inventory + carriage inwards + wages

= 83,000 + (20,000 - 10,000) + 3,000 + 4,000 = 1,00,000

Gross Profit = Revenue from Operations – cost of Revenue from Operations

= 1,50,000 - 1,00,000 = 50,000

(ii) Operating Ratio = $\frac{Operating\ Cost}{Revenue\ from\ operations}$ x 100 = $\frac{1,15,000}{1,50,000}$ x 100 = 76.67 %

Operating Cost = Cost of Revenue from Operations + Salaries + Other Office Expenses + Selling Expenses = 1,00,000 + 3,500 + 5,000 + 6,500 = 1,15,000

(iii) Operating Profit Ratio = $\frac{Operating\ Cost}{Revenue\ from\ operations}$ x 100=$\frac{35,000}{1,50,000}$ x 100 = 23.33%

Operating Profit = Revenue from operations – operating cost = 1,50,000 - 1,15,000 = 35,000

(iv) Net Profit Ratio = $\frac{Net\ Profit}{Revenue\ from\ operations}$ x 100 =$\frac{30,000}{1,50,000}$ x 100 = 20%

Net Profit = Gross Profit + other operating Income –Other Operating Expenses + Non-Operating Income – Non operating Expenses(या)Net Profit = Operating Profit + Non Operating Income – Non Operating Expenses = 35000 + 7,000 – (4,000 + 8,000) = 30,000

उदाहरण 28 : नीचे दी गई सूचनाओं की सहायता से निम्न अनुपातों की गणना करो :

Calculate the following ratios with the help of the informations given below:

(i) चालू अनुपात (Current Ratio), **(ii)** सकल लाभ अनुपात (Gross Ratio), **(iii)** परिचालन अनुपात (operating Ratio), **(iv)** शुद्ध लाभ अनुपात (Net Profit Ratio), **(v)** विनियोग पर प्रत्याय (Return on Investment)

सूचनाएँ(Informations): संयंत्र एवं मशीन (Plant & Machinery) - 5,00,000, गैर चालू व्यापारिक विनियोग (Non Current Investment Trade) - 2,00,000,चालू सम्पत्तियाँ (Current Assets) 3,00,000, चालू दायित्व (Current Liabilities) 2,00,000, परिचालन से आगम (Revenue from Operations) 10,00,000, क्रय (Purchases)7,50,000, प्रारम्भिक स्कन्ध (Opening Inventory) 45,000, अन्तिम स्कन्ध (Closing Inventory) 55,000,मजदूरी (Wages) 20,000, कार्यालय व्यय (Office Expenses) 40,000, ऋणपत्रों पर ब्याज(Interest on Debentures) 10,000, आयकर (Income Tax) 20,000

हल:–**(i)**Current Ratio = $\frac{Current\ Assets}{Current\ LIabilities}$ = $\frac{3,00,000}{2,00,000}$ = 1.5 : 1

(ii) Gross Profit Ratio = $\frac{Revenue\ from\ opertions – cost\ of\ revenue\ from\ operations}{Revenue\ from\ operations}$ = $\frac{2,40,000}{10,00,000}$ x 100 = 24%

Cost of Revenue from operations = Purchases + changes in Inventory + wages

= 750,000 + (45,000 - 55,000) + 20,000 = 7,60,000

Gross Profit = 10,00,000 - 7,60,000 = 2,40,000

(iii) Operating Ratio = $\frac{Operating\ cost}{Revenue\ from\ operations}$ x 100 = $\frac{8,00,000}{10,00,000}$ x 100 = 80%

Operating cost = Cost of Revenue from Operations + office expenses = 7,60,000 + 40,000 = 8,00,000

(iv) Net Profit Ratio = $\frac{Net\ Profit}{Revenue\ from\ operations}$ x 100 = $\frac{1,70,000}{10,00,000}$ x 100 = 17%

Net Profit = Gross Profit – office exp. – Interest on debentures – Tax = 2,40,000 - 40,000 - 10,000 - 20,000 = 1,70,000

(v) Return on Investment = $\frac{Net\ Profit\ before\ Interest\ \&\ Tax\ and\ Dividends}{Capital\ Employed}$ x 100 = $\frac{2,00,000}{8,00,000}$ x 100 = 25%

Net Profit before interest & tax = Net Profit + InterestOn Debentures + Tax

=1,70,000 + 10,000 + 20,000 = 2,00,000

Capital Employed = Non-current Assets + Working Capital

= (5,00,000 + 2,00,000) + (3,00,000 - 2,00,000) = 7,00,000 + 1,00,000 = 8,00,000

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

उदाहरण 29: 31 मार्च, 2017 को अनुराधा लि. का चिट्ठा निम्न हैं :–

The following is the balance sheet of Anuradha Ltd. , as at 31st March 2017:

Particulars	Note No.	Amount
I Equities and Liabilities		
(i) Shareholder's Funds :		
(a) Share Capital		15,00,000
(b) Reserves and Surplus		10,00,000
(ii) Non-Current Liabilities		
Long Term Borrowings	1	15,00,000
(iii) Current Liabilities		
(a) Trade Payables	2	6,00,000
(b) Other Current Liabilities	3	1,00,000
(c) Short Term Provision		3,00,000
Total		**50,00,000**
II Assets		
(i) Non Current Assets		30,00,000
(ii) Current Assets		
(a) Inventory		10,00,000
(b) Trade Receivables		6,00,000
(c) Cash and Cash Equivaletns		4,00,000
Total		**50,00,000**

Notes :**(i)** Long Term Borrowings : 9% Loans- 10,00,000, 12% Debentures – 5,00,000 , Total= 15,00,000

(ii) Other Current Liabilities: Out standing Expenses – 1,00,000

(iii) Short term Provision:Provision for tax- 3,00,000

अन्य सूचनाएँ निम्न प्रकार हैं (Other informations are as follows):Net Revenue from operations- 75,00,000, Cost of Revenue from Operations- 60,00,000, Operating Expenses- 6,00,000

आपको निम्न अनुपातों की गणना करनी हैं :–You are required to calculate following ratios :-

(i) Current Ratio(चालू अनुपात)**(ii)** Quick Ratio(त्वरित अनुपात), **(iii)** Debt- Equity Ratio(ऋण–समता अनुपात), **(iv)** Inventory Turnover Ratio(स्कन्ध आवर्त अनुपात), **(v)** Proprietory Ratio(स्वामित्व अनुपात), **(vi)** Gross Profit Ratio(सकल लाभ अनुपात), **(vii)** Operating Ratio (परिचालन अनुपात), **(viii)** Operating Profit Ratio (परिचालन लाभ अनुपात)**(ix)** Net Profit Ratio(शुद्ध लाभ अनुपात)

हल :**(i)** Current Ratio = $\frac{Current\ Assets}{Current\ Liabilities}$ X 100 = $\frac{20,00,000}{10,00,000}$ = 2 : 1

Current Assets = Inventory + Trade Receivables + Cash & Cash Equivalents = 10,00,000 + 6,00,000 + 4,00,000 = 20,00,000

Current Liabilities = Trade Payables + Other Current liabilities + Short Term Provision = 6,00,000 + 1,00,000 + 3,00,000 = 10,00,000

(ii) Quick Ratio = $\frac{Current\ Assets}{Current\ Liabilities}$ = $\frac{10,00,000}{10,00,000}$ = 1:1

(iii) Debt Equity Ratio = $\frac{External\ Liabilities}{Internal\ Liabilities}$ = $\frac{25,00,000}{25,00,000}$ = 1:1

External Liabilities = Non-current liabilities + Current Liabilities

= 15,00,000 + 10,00,000 = 25,00,000

Internal Liabilities = Share Capital + Reserves and Surplus = 15,00,000 + 10,00,000 = 25,00,000

(iv) Inventory Turnover Ratio = $\frac{Cost\ of\ Revenue\ from\ operations}{Average\ Inventory}$ = $\frac{60,00,000}{10,00,000}$ = 6 times

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

चूँकि प्रश्न में प्रारम्भिक, अंतिम स्कन्ध की कोई सूचना नहीं हैं, अतः चिट्ठे में प्रदर्शित स्कन्ध के आधार पर ही गणना की गई हैं।

(v) Proprietory Ratio = $\frac{Shareholder's\ Funds}{Total\ Assets} = \frac{25,00,000}{50,00,000} = 0.5:1$

Shareholders funds or Internal Liabilities = 25,00,000

(vi) Gross Profit Ratio = $\frac{Gross\ Profit}{Revenue\ from\ Operations}\ x\ 100 = \frac{15,00,000}{75,00,000} x\ 100 = 20\%$

Gross Profit = Revenue from Operations – Cost of Revenue from Operations

= 75,00,000 - 60,00,000 = 15,00,000

(vii) Operating Ratio = $\frac{Operating\ Profit}{Revenue\ from\ Operations}\ x\ 100 = \frac{66,00,000}{75,00,000} x\ 100 = 88\%$

Operating Cost = Cost of Revenue from Operations + Operating Expenses

= 60,00,000 + 6,00,000 = 66,00,000

(viii) Operating Profit Ratio = $\frac{Operating\ Cost}{Revenue\ from\ Operations}\ x\ 100 = \frac{9,00,000}{75,00,000} x\ 100 = 12\%$

Operating Profit = Revenue from Operations – operating cost = 75,00,000 - 66,00,000 = 9,00,000

(ix) Net Profit Ratio = $\frac{Net\ Profit}{Revenue\ from\ Operations}\ x\ 100 = \frac{750,000}{75,00,000} x\ 100 = 10\%$

Net Profit = Operating Profit – Non Operating Expenses

= 9,00,000 – (9% of 10,00,000 + 12% of 5,00,000) = 9,00,000 – (90,000 + 60,000) = 7,50,000

गैर–परिचालन व्यय के रूप में दीर्घकालीन ऋण एवं ऋणपत्रों पर ब्याज घटाकर शुद्ध लाभ ज्ञात किया गया हैं।

सारांश (Summary)

- **अनुपात–** दो संख्याओं के पारस्परिक सम्बन्ध को गणितात्मक रूप से प्रकट करना अनुपात कहलाता हैं। इससे अर्थपूर्ण सम्बन्धों की अभिव्यक्ति होती हैं।
- **अनुपात विश्लेषण** – वित्तीय विवरणों की मदों या मदों के समूहों का आपस में सम्बन्ध स्थापित कर विवरणों को सरल तथा संक्षिप्त रूप में प्रस्तुत करना अनुपात विश्लेषण हैं।
- **अनुपातों की अभिव्यक्ति** – अनुपातों की तीन प्रकार से प्रदर्शित किया जा सकता हैं: **(i)** शुद्ध अनुपात के रूप में **(ii)** दर/गुने के रूप में **(iii)**प्रतिशत के रूप में।
- **अनुपात विश्लेषण के उद्देश्य –** अनुपातों के आधार पर विश्लेषण के निम्न लाभ हैं : **(i)** वित्तीय विश्लेषण में सहायक **(ii)** आंकड़ों का सरलीकरण **(iii)** तरलता स्थिति का ज्ञान **(iv)** शोधन क्षमता का ज्ञान **(v)** क्रियाशीलता का ज्ञान **(vi)** लाभदायकता का ज्ञान **(vii)** तुलनात्मक अध्ययन में सहायक **(viii)** प्रवृति अध्ययन में सहायक
- **अनुपात विश्लेषण की सीमाऐं –(i)** वित्तीय विवरणों की सीमाओं का निहित होना **(ii)** दिखावे से प्रभावित **(iii)** पृथक–पृथक लेखांकन नीतियों के आधार पर तुलना अविश्वसनीय **(iv)** विश्लेषक की योग्यता एवं पक्षपात का प्रभाव **(v)** गुणात्मक विश्लेषण का अभाव **(vi)** तुलना के लिए अन्य अनुपात आवश्यक **(vii)** भावी अनुमानों में अयोग्य **(viii)** प्रवृत्ति का ज्ञान न होना।
- **अनुपातों के प्रयोग में सावधानियाँ** : **(i)** लेखा समंकों को समझने की योग्यता, **(ii)** वित्तीय विवरणों के तैयार होते ही शीघ्र सूचनाऐं प्रयोगकर्ताओं को उपलब्ध कराई जायें। **(iii)** अनुपातों के प्रयोग से प्राप्त होने वाले लाभों के साथ–2 इनके परिकलन में लगने वाली लागतों को ध्यान में रखना आवश्यक। **(iv)** प्रयोगकर्ता के समक्ष केवल आवश्यक अनुपात प्रस्तुत करना। **(v)** व्यावसायिक परिस्थितियों में परिवर्तन होने पर अनुपातों में भी संशोधन वांछनीय।

(लेखांकन अनुपातों के सूत्र) Formula of Accounting Ratios

अ. तरलता अनुपात **(Liquidity Ratios)**: **1.**Current Ratio = $\frac{Current\ Assets}{Current\ Liabilities}$; **2.**Liquid Ratio = $\frac{Liquid\ Assets}{Current\ Liabilities}$;
ब.शोधन अनुपात **(Solvency Ratios)**:

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

3. Debt-Equity Ratio = $\frac{External\ Liabilities}{Internal\ Liabilities}$ Or $\frac{Total\ Debt}{Shareholder's\ Fund}$;

4. Proprietory Ratio = $\frac{Proprietor'sFund}{Total\ Assets}$; **5.** Solvency Ratio = $\frac{Total\ Debt}{Total\ Assets}$

6. Interest Coverage Ratio = $\frac{Profit\ before\ Interst\ and\ Tax}{Fixed\ Interest\ Charges}$

स.क्रियाशीलता अनुपात **(Activity Ratios):**

7. Stock/Inventory Turnover Ratio = $\frac{Cost\ of\ Revenue\ from\ operations}{Average\ Inventory}$

8. Trade Receivables Tunnover Ratio = $\frac{Net\ Credit\ Revenue\ from\ Operations}{Average\ Trade\ Receivables}$

9. Average Collection Period = $\frac{No.of\ days\ in\ a\ year}{Trade\ Receivables\ \ Turnover\ Ratio}$

10. Trade Payables Turnover Ratio = $\frac{Net\ Credit\ Purchase}{Aveage\ Trade\ Payables}$

11. Average Payment Period = $\frac{No.of\ days\ in\ a\ year}{Trade\ Payables\ Turnover\ Ratio}$

12. Total Assets Turnover Ratio = $\frac{Revenue\ from\ opertions\ or\ Cost\ of\ Revenue\ from\ operations}{Total\ Assets}$

द.लाभदायकता अनुपात **(Profitability Ratios):**

13. Gross Profit Ratio = $\frac{Gross\ Profit}{Net\ Revenue\ from\ operations}$ x 100

14. Operating Ratio = $\frac{Cost\ of\ Revenue\ from\ operations+operating\ expenses}{Net\ Revenue\ from\ operations}$ x 100

15. Operating Profit Ratio = $\frac{Operating\ Profit}{Net\ Revenue\ from\ operations}$ x 100

16. Net Profit Ratio = $\frac{Net\ Profit}{Net\ Revenue\ from\ operations}$ x 100

17. Return on Investment or ROI = $\frac{Net\ Profit\ before\ Interest\ \&\ Tax\ \&\ Dividend}{Net\ Revenue\ from\ operations}$ x 100

य.विनियोग विश्लेषण अनुपात (Investment Analysis Ratios):

18. Earning Per Share or EPS = $\frac{Net\ Profit\ After\ Tax-Preference\ Share\ Dividend}{No.of\ Equity\ Shares}$

19. Dividend Per Share or DPS = $\frac{Dividend\ Paid\ to\ Equity\ Shareholders}{No.of\ equity\ shares}$

20. Dividend Pay-out Ratio = $\frac{Dividend\ Per\ share}{Earning\ Per\ Share}$ x 100

शब्दावली (Glossary)

S.No.	शब्दावली	Glossary	अर्थ
1.	वित्तीय अनुपात	(Financial Ratios)	जो अनुपात चिट्ठे में दी गई दो मदों या मदों के समूह के मध्य ज्ञात किये जाते हैं। इन्हें चिट्ठा अनुपात भी कहते है।
2.	परिचालन अनुपात	(Operating Ratios)	जो अनुपात लाभ–हानि विवरण में दी गई दो मदों या मदों के समूह के मध्य ज्ञात किये जाते हैं।
3.	संयुक्त अनुपात	(Combined Ratios)	वे अनुपात जिनको परिकलित करते समय एक मद चिट्ठे से व दूसरी मद लाभ–हानि विवरण से ली जाती हैं।
4.	तरलता	(Liquidity)	संस्था के अल्पकालीन ऋण एवं दायित्वों को चुकाने की क्षमता।
5.	शोधन क्षमता	(Solvency)	संस्था के दीर्घकालीन ऋण एवं दायित्वों को चुकाने की क्षमता।

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

6.	क्रियाशीलता अनुपात	Activity Ratio	संस्था द्वारा सम्पत्तियों एवं पूँजी के प्रभावी उपयोगिता के सूचक अनुपात।
7.	लाभदायकता	Profitability	संस्था की लाभ अर्जित करने की क्षमता जिसे बिक्री या विनियोगों से सम्बन्धित कर मापा जाता हैं।
8.	चालू सम्पत्तियाँ	Current Assets	वे सम्पत्तियाँ जो व्यवसाय की सामान्य दशा में सामान्य संचालन चक्र की अवधि में या चिट्ठे की तिथि से 12 माह में नकद में परिवर्तित हो जाती हैं।
9.	चालू दायित्व	Current Liabilities	वे दायित्व जिनका भुगतान सामान्य संचालन चक्र की अवधि में या चिट्ठे की तिथि से 12 माह में करना हैं।
10.	तरल सम्पत्तियाँ	Liquid Assets	वे सम्पत्तियाँ जिन्हें शीघ्र ही नकद अथवा नकद तुल्यों में परिवर्तित किया जा सकता हैं। अतः स्कन्ध एवं पूर्वदत्त व्ययों को छोड़कर शेष चालू सम्पत्तियों को तरल सम्पत्ति माना जाता हैं।
11.	बाहरी कोष	External Equity	संस्था के दीर्घकालीन ऋण, दीर्घकालीन आयोजनों तथा चालू दायित्वों का योग बाहरी कोष होगा।
12.	आंतरिक कोष/अंशधारी कोष	Internal Equity/Shareholder's Funds	अंशधारी कोषों में अंशपूँजी तथा संचय एवं आधिक्य का योग शामिल होगा किन्तु संचित हानियाँ तथा कृत्रिम सम्पत्तियों को घटा दिया जाएगा।
13.	कृत्रिम सम्पत्तियाँ	Fictitious Assets	वे खर्चे जो अपलिखित नहीं हो पाये हों। जैसे –अंशों एवं ऋणपत्रों के निर्गमन पर व्यय, ऋणपत्रों के निर्गमन पर बटटा/हानि, अभिगोपन कमीशन एवं प्रारम्भिक व्यय आदि।
14.	कुल सम्पत्तियाँ	Total Assets	संस्था की समस्त गैर–चालू सम्पत्तियों एवं चालू सम्पत्तियों का योग। इसे अंशधारी कोषों में गैर चालू दायित्व तथा चालू दायित्वों का योग कर भी ज्ञात किया जा सकता हैं।
15.	स्थिर ब्याज प्रभार	Fixed Interest Charge	संस्था के दीर्घकालीन ऋणों पर चुकाया जाने वाला ब्याज।
16.	व्यापारिक प्राप्य	Trade Receivables	संस्था द्वारा अपने देनदारों एवं प्राप्य विपत्रों से वसूल की जाने वाली राशि अर्थात् इनका योग। व्यापारिक प्राप्य आवर्त अनुपात की गणना करते समय "संदिग्ध ऋणों के लिए आयोजन" को घटाया नहीं जाएंगा।
17.	व्यापारिक देयताऐं	Trade Payables	संस्था के लेनदारों एवं देय विपत्रों का योग।
18.	संचालन से आगम की लागत	Cost of Revenue from operations	(Cost material consumed + purchase of stock-in-trade + changes in inventory + direct expenses(Carriage, wages etc).
19.	परिचालन व्यय	Operating Expenses	संचालन से आगम की लागत के अतिरिक्त परिचालन से सम्बन्धित अन्य व्यय। जैसे Employee benefit expenses, depreciation, office & administrative expenses, selling & distribution expenses, discount, bad debts, interest on short term loan etc.
20.	अन्य परिचालन आय	Other Operating Incomes	संचालन से आगम के अतिरिक्त परिचालन क्रम में अर्जित अन्य आय,जैसेCommission & discount received
21.	परिचालन लागत	Operating Cost	संस्था के मुख्य व्यवसाय से सम्बन्धित समस्त लागत। इसमें संचालन से आगम की लागत में अन्य परिचालन व्ययों को जोड़ा

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

			तथा अन्य आयों को घटाया जाता हैं।
22.	सकल लाभ	Gross Profit	संचालन क्रियाओं से शुद्ध आगम का संचालन से आगम की लागत पर आधिक्य।
23.	परिचालन लाभ	Operating Profit	संचालन क्रियाओं से शुद्ध आगम का परिचालन लागत पर आधिक्य।
24.	शुद्ध लाभ	Net Profit	एक व्यावसायिक संस्था की संचालन क्रियाओं से लाभ एवं गैर संचालन क्रियाओं से लाभ का योग।
25.	विनियोग पर प्रत्याय	Return on Investment	एक संस्था द्वारा अपने दीर्घकालीन कोषों पर अर्जित की जाने वाली प्रत्याय की दर।
26.	प्रति अंश अर्जन	Earning Per Share – EPS	संस्था द्वारा अपने प्रत्येक समता अंश पर अर्जित की गई लाभ की राशि।
27.	प्रति अंश लाभांश	Dividend Per Share – DPS	संस्था द्वारा अपने प्रत्येक समता अंशधारी को वितरित लाभांश की राशि।

अभ्यासार्थ प्रश्न (Questions for Exercise)

बहुचयनात्मक प्रश्न (Multiple Choice Questions):

1.एक संस्था का स्कन्ध आवर्त अनुपात 6 गुना हैं। अनुपात की यह अभिव्यक्ति हैं:
Stock Turnover Ratio of a concern is 6 times. This expression of the ratio is :
(अ) शुद्ध अनुपात (Pure Ratio) (ब) दर के रूप में (Rate Ratio)
(स)प्रतिशत के रूप में (In the form of the percentage) (द) इनमें से कोई नहीं (None of these)

2.अनुपात विश्लेषण का उद्देश्य हैं :The objective of Ratio analysis is :
(अ) तरलता स्थिति का ज्ञान (Knowledge of liquidity position) (ब) लाभदायकता का ज्ञान(Knowledge of Profitability)
(स) शोधन क्षमता का ज्ञान (Knowledge of solvency position) (द) उपयुर्क्त सभी (All of the above)

3.अनुपात का परिकलन करते समय जब एक मद चिट्ठे से तथा दूसरी मद लाभ–हानि विवरण से ली जाती हैं, तो ऐसा अनुपात कहलाता हैं।At the time of calculating ratio, one item is taken from balance sheet and other item is taken from Statement of Profit and Loss, then the ratio is called :
(अ) चिट्ठा अनुपात (Balance Sheet Ratio) (ब) लाभ–हानि विवरण अनुपात (Statement of Profit and Loss Ratio)
(स) संयुक्त अनुपात (Joint Ratio) (द) इनमें से कोई नहीं (None of these)

4.कार्यशील पूँजी अनुपात का दूसरा नाम हैं :Another name of working capital ratio is :
(अ) तरल अनुपात (Liquid Ratio) (ब)चालू अनुपात (Current Ratio)
(स) पूर्ण तरलता अनुपात (Absolute Liquid Ratio) (द) कार्यशील पूँजी आवर्त अनुपात(Working Capital Turnover Ratio)

5.आदर्श चालू अनुपात माना जाता हैं :Ideal Current Ratio is assumed:
(अ) 3:1 (ब) 1:1 (स) 2:1 (द) 1:2

6.तरल अनुपात की गणना करते समय निम्न में से किस सम्पत्ति को ध्यान नहीं रखा जाता हैं:
Which of the following assets is not taken into consideration to calculate liquid ratio :
(अ)स्कन्ध (Inventory) (ब) देनदार (Debtors) (स)रोकड़ (Cash) (द) प्राप्य विपत्र (Bills Receivables)

7.एक कम्पनी की ग्राहक को उधार अवधि 30 दिन हैं। संग्रहण की दृष्टि से यह खराब संस्था मानी जायेगी, यदि इसकी औसत संग्रहण अवधि हो :
Credit period to customer of a company is 30 days. Its credit collection would be poor if its average collection period is :
(अ) 36 दिन (Days) (ब) 28 दिन(Days) (स) 20 दिन(Days) (द) 15 दिन (Days)

8.यदि 365 दिन में व्यापारिक देयता आवर्त अनुपात का भाग दें तो यह अनुपात होगा:
If the Trade Payable Turnover Ratio is divided by 365 days, it become a ratio of:
(अ)स्कन्ध की औसत अवधि(Average age of Inventory) (ब) औसत संग्रहण अवधि (Average Collection Period)
(स) औसत भुगतान अवधि (Average Payment Period) (द) चैक संग्रहण अवधि (Cheque Collection Period)

9.यदि एक कम्पनी का परिचालन अनुपात 78% है तो उसका परिचालन लाभ अनुपात होगा:

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

If operating ratio of a company is 78%, then operating profit ratio will be :

(अ)100% (ब)22% (स)28% (द)24%

10.एक कम्पनी का स्कन्ध आवर्त अनुपात 4 है तथा इसकी संचालन से आगम की लागत 2,40,000 है तो औसत स्कन्ध होगा:

The inventory turnover ratio of a company is 4 and its cost of revenue from operations is 2,40,000 then average inventory will be:

(अ) 9,60,000 (ब)1,80,000 (स)1,20,000 (द)60,000

11.संस्था के स्वामियों के कोषों एवं कुल सम्पत्तियों के मध्य सम्बन्ध व्यक्त करता हैं :

The relationship between shareholder's funds and total assets of a concern is expressed by:

(अ) ऋण – समता अनुपात (Debt-Equity Ratio) (ब) शोधन क्षमता अनुपात (Solvency Ratio)

(स) स्वामित्व अनुपात (Properietary Ratio) (द) स्वामित्व कोषों पर प्रत्याय (Return on Proprietor's Funds)

12.एक कम्पनी का प्रति अंश अर्जन 6 तथा प्रति अंश लाभांश 4 हो तो लाभांश भुगतान अनुपात होगा :

If earning per share of a company is 6 and dividend per share is 4 then dividend payout ratio would be

(अ)50% (ब) 25% (स) 50% (द) 66.67%

अति लघूत्तरात्मक प्रश्न (Very short answer type questions)

1.अनुपात से क्या आशय हैं ? What is meant by ratio?

2.अनुपात विश्लेषण किसे कहते हैं? What is Ratio Analysis?

3.अनुपात विश्लेषण की दो सीमाएँ बताइये। Give two limitations of Ratio and Analysis.

4.अनुपात विश्लेषण के दो उद्देश्य बताइये।Give two objectives of Ratio Analysis.

5.तरल अनुपात से आप क्या समझते हैं? What do you mean by Liquid Ratio?

6. शोधन क्षमता अनुपात से क्या आशय हैं? What is meant by Solvency Ratio?

7.वित्तीय अनुपात किसे कहते हैं? What is Financial Ratio?

8. स्कन्ध आवर्त अनुपात से क्या आशय हैं? What is meant by Inventory Turnover Ratio?

9.औसत संग्रहण अवधि किसे कहते हैं? What is Average Collection Period?

10. क्रियाशीलता अनुपात क्या प्रदर्शित करते हैं? What do Activity Ratios indicate?

11.औसत व्यापारिक प्राप्यों से क्या आशय हैं? What is meant by Average Trade Receivables?

12.परिचालन अनुपात से क्या आशय हैं? What is meant by Operating Ratio?

13.विक्रय के आधार पर ज्ञात किये जाने वाले दो लाभदायकता अनुपातों के नाम लिखिये।

Name any two Profitability Ratios based on sales.

14.चालू अनुपात व तरल अनुपात में क्या अन्तर हैं? What is difference between Current Ratio and Liquid Ratio?

15.प्रति अंश अर्जन का सूत्र लिखिये? Write formula of Earning Per Share?

16.आदर्श तरल अनुपात क्या हैं? What is ideal Liquid Ratio?

17.एक कम्पनी का ऋण–समता अनुपात 0.75:1 हैं। कम्पनी द्वारा दीर्घकालीन ऋण लेने पर इस अनुपात पर क्या प्रभाव होगा?

The Debt-Equity Ratio of a company is 0.75:1 . If company obtains long term loan, what effect will be on this ratio?

18. ब्याज व्याप्ति अनुपात क्या प्रदर्शित करता हैं? What does Interest Coverage Ratio indicate?

लघूत्तरात्मक प्रश्न (Short Answer Type Questions):

1.चालू अनुपात व तरल अनुपात में अन्तर लिखिये । Write difference between current ratio and liquid ratio.

2.अनुपात विश्लेषण का महत्त्व बताइये । Explain importance of Ratio Analysis.

3.दीर्घकालीन ऋणों के भुगतान करने की क्षमता पर प्रकाश डालने वाले अनुपातों के नाम लिखिये।

Write names of ratios depicting capacity of payment of Long Term Loans.

4.अनुपात विश्लेषण की चार सीमायें बताइये । Write the four limitations of Ratio Analysis.

5.अंशधारियों के कोष में कौन–कौन सी मदें शामिल की जाती हैं?

Which items are included in the Shareholder's funds?

6.सकल लाभ अनुपात एवं शुद्ध लाभ अनुपात को समझाइये। Explain Gross Profit Ratio and Net Profit Ratio.

7.ऊँचा और नीचा व्यापारिक प्राप्य आवर्त अनुपात किन प्रभावों को दर्शाता हैं?

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

What are the implications of high and low Trade Receivables Turnover Ratio?

8.बेचे गये माल की लागत की गणना किस प्रकार की जाती हैं? How the cost of goods sold is calculated?

9.विनियोजित पूँजी का अर्थ बताइये तथा इसकी गणना किस प्रकार की जाती हैं।

Explain meaning of capital employed, and how is it calculated?

10.परिचालन लाभ अनुपात का अर्थ एवं महत्त्व लिखिये। Write meaning and importance of Operating Profit Ratio.

11.एक व्यापारिक संस्था का स्कन्ध आवर्त अनुपात 15 गुना हैं तथा इसके औसत स्कन्ध का मूल्य 20,000 हैं। माल विक्रय मूल्य पर 25% लाभ पर बेचा जाता हैं। लाभ की राशि दीजिये।

Inventory Turnover Ratio of a trading concern is 15 times and value of average inventory is 20,000. Goods are sold at 25% profit on sales. State the amount of profit. **उत्तर** : (लाभ 1,00,000)

12. एक कम्पनी की कार्यशील पूँजी 90,000 हैं। यदि इसका चालू अनुपात 2.5:1 हो तो चालू सम्पत्तियों को गणना करो।

Working capital of a company is 90,000. If its current ratio is 2.5:1, then calculate current Assets.

उत्तर : (1,50,000)

13.एक संस्था का प्रारम्भिक रहतिया 20,000, अन्तिम रहतिया प्रारम्भिक रहतिये का 1.6 गुना हैं। स्कन्ध आवर्त अनुपात 3.5 गुना, विक्रय 1,40,000 हो तो सकल लाभ की गणना कीजिये।

Opening inventory of a concern is 20,000, closing inventory is 1.6 times of opening inventory. Inventory turnover ratio is 3.5 times and sales is 1,40,000. Calculate the Gross Profit.

उत्तर : (GP 49,000)

14.एक कम्पनी की कुल सम्पत्तियाँ 80,000, गैर चालू दायित्व 20,000 तथा चालू दायित्व 1,00,000 हो तो कम्पनी के (1). ऋण–समता अनुपात तथा (2). स्वामित्व अनुपात की गणना करें।

Total Assets, Non-Current Liabilities and CurrentLiabilities of a company are 8,00,000, 2,00,000 and 1,00,000 respectively, then calculate **(i)** Debt-Equity Ratio and **(ii)** Proprietary Ratio.

उत्तर : (**(i)** 0.6:1**(ii)** 0.625 : 1)

निबन्धात्मक प्रश्न (Essay Type Questions)

1.अनुपात विश्लेषण क्या हैं? इसका महत्त्व बताइये।What is Ratio Analysis? Explain its importance.

2.अनुपात विश्लेषण की सीमाएँ लिखिये।Write down limitations of Ratio Analysis.

3.क्रियाशीलता अनुपातों से क्या आशय हैं?तीनक्रियाशीलता अनुपातों को विस्तार से समझाओ।

What is meant by Activity Ratios? Explain in details three activity ratios.

4.विनियोग पर प्रत्याय से क्या आशय हैं? इसका महत्त्व बताते हुऐ उदाहरण सहित इसकी गणना विधि समझाइये।

What is meant by Return on Investment? Give its importance and explain procedure to calculate with the help of an illustration.

5.विनियोग विश्लेषण पर प्रकाश डालने वाले (1).प्रति अंश अर्जन (2).प्रति अंश लाभांश एवं (3). लाभांश भुगतान अनुपातों को समझाइये।

Explain **(i)** EPS **(ii)** DPS and (iii) Dividend Payout Ratios, reflecting investment analysis.

बहुचयनात्मक प्रश्नों के उत्तर:

उत्तर :	(1) ब	(2) द	(3) स	(4) ब	(5) स	(6) अ	(7) अ	(8) स	(9) ब	(10) द	(11) स	(12) द

आंकिक प्रश्न (Numerical Questions)

1.निम्नलिखित परिस्थितियों में चालू अनुपातों एवं तरल अनुपातों का परिकलन कीजिए:

Calculate Current Ratios and Liquid Ratios in following conditions:

(a) Current Liabilities 48,000 ; Inventory 78,000; working capital 96,000

(b) Working Capital 40,000 ; Liquid Assets 10,000

(c) Current Assets 2,00,000 ; Creditors 10,000 ; Current Liabilities 80,000 &Inventory 60,000

उत्तर : (a) 3:1 (b) 2.33:1 (c) 2.5:1, 1.75:1

2- निम्नलिखित को हल कीजिए :–Solve the following:

(a) एक कम्पनी के चालू दायित्व 4,00,000 हैं। इसका चालू सम्पत्तियाँ 2.5:1 है तथा तरल अनुपात 1.5:1 हैं । चालू सम्पत्तियाँ, तरल सम्पत्तियाँ तथा स्कन्ध का मूल्य ज्ञात कीजिये।

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Current Liabilities of a company are 4,00,000. Its current ratio is 2.5:1 and Liquid Ratio is 1.5:1. Calculate the value of current assets, liquid assets and inventories.

(b) यदि चालू अनुपात 2.5, तरलता अनुपात 1.6 तथा कार्यशील पूँजी 90,000 हो तो चालू सम्पत्तियाँ , चालू दायित्व तथा स्टॉक का मूल्य ज्ञात कीजिये।

If the current ratio is 2.5, Liquidity ratio is 1.6 and working capital 90,000. Find the value of current assets, current liabilities and stock.

उत्तरः (a) 10,00,000, 6,00,000, 4,00,000 (b) 1,50,000, 60,000, 54,000

3.गर्ग लि. की निम्नलिखित सूचनाओं से परिकलित कीजिए **(i)**ऋण–समता अनुपात **(ii)**स्वामित्व अनुपात एवं **(iii)** शोधन क्षमता अनुपात।

From the following informations of Garg Ltd. Calculate **(i)** Debt-Equity Ratio **(ii)** Proprietory Ratio **(iii)** Solvency Ratio.

मूर्त सम्पत्तियाँ (Tangible Assets) & 3,00,000,गैर चालू विनियोग (Non-Current Investments) 2,40,000,व्यापारिक प्राप्य (Trade Receivables) 90,000, अन्य चालू सम्पत्तियाँ (Other Current Assets) 70,000, दीर्घकालीन ऋण (Long Term Borrowings) 2,00,000,दीर्घकालीन आयोजन (Long Term Provisions) 1,00,000, अल्पकालीन उधार (Short Term Borrowings) 20,000, अन्य चालू दायित्व (Other Current Liabilities) 60,000

उत्तरः **(i)**1.875:1 **(ii)** 0.457:1 **(iii)** 0.543:1

4.निम्नलिखित विवरणों से **(i)**प्रारम्भिक स्कन्ध , **(ii)** अन्तिम स्कन्ध एवं व्यापारिक प्राप्य आवर्त अनुपात की गणना कीजिएः

From the following details, calculate **(i)** Opening Inventory, **(ii)** Closing Inventory **(iii)** Trade Receivables Turnover Ratio.

परिचालन क्रियाओं से आगम की लागत (Cost of Revenue from operations) 4,00,000,सकल लाभ विक्रय पर 20% (Gross Profit 20% on sales) स्कन्ध आवर्त अनुपात (Stock Turnover Ratio)5 times, अन्तिम स्कन्ध, प्रारम्भिक स्कन्ध से 32,000 अधिक हैं। (Closing Inventory is 32,000 in excess of opening inventory),प्रारम्भिक व्यापारिक प्राप्य 50,000 (Opening Trade Receivables is 50,000),अन्तिम व्यापारिक प्राप्य, प्रारम्भिक व्यापारिक प्राप्य का 1.5 गुना हैं। (Closing Trade Receivables are 1.5 times form opening Trade Receivables)

उत्तरः (i) 64,000 (ii) 96,000 (iii) 8 times.

5.निम्नलिखित से व्यापारिक प्राप्य आवर्त अनुपात एवं औसत संग्रहण अवधि की गणना कीजिएः

Calculate Trade Receivables Turnover Ratio and Average collection period from the following:-

Total Revenue from operations for the year (वर्ष में परिचालन से कुल आगम) - 8,23,000; Cash Revenue from operations being 50% of Total Revenue(कुल आगम का 50% नकद परिचालन आगम); Opening Trade Receivables (प्रारम्भिक व्यापारिक प्राप्य) - 50,000; Cash received from Trade Receivables(व्यापारिक प्राप्य से नकद प्राप्य) - 3,76,500; Discount Allowed to Debtors (देनदारों को बट्टा दिया) - 15,000; Revenue from operations return, out of credit revenue from operations(उधार परिचालन आगम से वापसी) - 10,000

उत्तरः(i) 7.3 times **(ii)** 50 days, Hint : Prepare Receivables Account and find closing balance 60,000

6.निम्नलिखित सूचनाओं से सकल लाभ अनुपात की गणना कीजिए : Calculate Gross Profit Ratio from the following informations- परिचालन से नकद आगम (Cash Revenue from Operations) 40% of Total Revenue;कुल क्रय (Total Purchases) 13,50,000;परिचालन से आगम–उधार (Credit Revenue from Operations) 9,00,000, प्रारम्भिक स्कन्ध से अन्तिम स्कन्ध का आधिक्य (Excess of closing stock over opening stock) 75,000. **उत्तरः** 15%

7. तन्वी लि. की निम्नलिखित सूचनाओं से गणना कीजिए : From the following informations of Tanvi Ltd., Calculate: **(i)**कार्यशील पूँजी अनुपात (Working Capital Ratio), **(ii)**त्वरित अनुपात (Quick Ratio); **(iii)**स्कन्ध आवर्त अनुपात (Inventory Turnover Ratio) ; **(iv)**सकल लाभ अनुपात (Gross Profit Ratio) ; **(v)**शोधन क्षमता अनुपात (Solvency Ratio) **(vi)**सकल लाभ अनुपात (Gross Profit Ratio) ; **(vii)**परिचालन अनुपात (Operating Ratio) **(viii)**परिचालन लाभ अनुपात (Operating Profit Ratio) **(ix)**शुद्ध लाभ अनुपात (Net Profit Ratio)

सूचनाऐं (Informations) : परिचालन से आय (Revenue from operations) 2,00,000 ;क्रय (Purchases) 1,20,000 ; प्रारम्भिक स्कन्ध (Opening Inventory) 12,000; अन्तिम स्कन्ध (Closing Inventory) 18,000; मजदूरी (Wages) 8,000; विक्रय व्यय (Selling Expenses) 2000; मूर्त स्थायी सम्पत्तियाँ (Tangible Fixed Assets) 2,12,000; अन्य चालू सम्पत्तियाँ (Other Current Assets) 50,000;चालू दायित्व (Current Liabilities) 30,000 ; समता अंश पूँजी(Equity

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Share Capital) 1,00,000 ; 7% पूर्वाधिकार अंश पूँजी (7% Preference Share Capital) 80,000 ; संचय (Reserves) 10,000 ; तथा 8% ऋणपत्र (8% Debentures) 60,000.

उत्तर :**(i)** 2.27:1 **(ii)** 1.67:1 **(iii)** 8.13 times **(iv)** 0.47:1 **(v)** 0.32:1 **(vi)** 39% **(vii)** 62% **(viii)** 38% **(ix)** 35.6%

8. ऋषभ लि. की निम्नलिखित सूचनाओं से ज्ञात कीजिए :–

From the following informations of Rishabh Ltd. Find out :

(i) सकल लाभ अनुपात (Gross Profit Ratio) , **(ii)**परिचालन अनुपात (Operating Ratio), **(iii)**परिचालन लाभ अनुपात (Operating Profit Ratio), **(iv)** शुद्ध लाभ अनुपात (Net Profit Ratio), **(v)** विनियोग पर प्रत्याय (Return on Investment), **(vi)**ब्याज व्याप्ति अनुपात (Interest Coverage Ratio)

सूचनाऐं (Informations) : संचालन क्रियाओं से आगम (Revenue from operations) 4,00,000, संचालन क्रियाओं से आगम की लागत (Cost of Revenue from operations) 2,25,000, अल्पकालीन ऋणों पर ब्याज (Interest on Short Term Loan) 5,000, कार्यालय व्यय (Office Expenses) 25,000, विक्रय व्यय (Selling Expenses) 50,000, प्राप्त किराया (Rent Received) 4000, अग्नि से हानि (Loss by Fire) 10,000, दीर्घकालीन ऋणों पर ब्याज (Interest on Long Term Loan) 10,000, कमीशन प्राप्त (Commission Received) 5,000, विनियोजित पूँजी (Capital Employed)6,00,000, आयकर की दर 30 % (Income Tax rate may assume 30%)

उत्तर :**(i)** 43.75% **(ii)** 75% **(iii)** 25% **(iv)** 14.7% **(v)** 15.67% **(vi)** 9.4 times

9.निम्नलिखित सूचनाओं से **(i)**प्रति अंश अर्जन, **(ii)**प्रति अंश लाभांश,तथा**(iii)** लाभांश भुगतान अनुपात की गणना कीजिए:

From the following informations, calculate **(i)** Earning Per Share EPS, **(ii)** Dividend Per Share – DPS, &**(iii)** Dividend Payout Ratio,

कर व ब्याज से पूर्व लाभ (Profit Before Interest & Tax)-5,00,000, दीर्घकालीन ऋणों पर ब्याज (Interest on Long Term Loans)-2,00,000, कर के लिये आयोजन (Provision for Tax) - 30%, रोकी गई आय (Retained Earnings)-60,000, समता अंश पूँजी–₹10 प्रति अंश में विभाजित (Equity Share Capital-Divided into shares of ₹10 each)

उत्तर : **(i)**7 **(ii)**5 **(iii)**71.43%

10.आपको निम्न सूचनाऐं दी जाती हैं: Following informations are given to you :

Revenue from operations		6,00,000
Less : Purchases	3,00,000	
Changes in Inventories (Opening Inventory –Closing Inventory) (60,000 – 40,000)	20,000	
Direct Expenses	80,000	4,00,000
Gross Profit		2,00,000

Balance Sheet as at 31st March, 2017

Particulars	**Note. No.**	**Amount ₹**
IEquity and Liabilities:		
(1) Shareholder's Funds:		
(a) Share Capital		4,00,000
(b) Reserves and Surplus	1	2,00,000
(2) Non Current Liabilities (10% Debentures)		1,00,000
(3) Current Liabilities		
(a) Trade Payables		2,00,000
(b) Other Current Liabilities		1,00,000
Total		**10,00,000**
II Assets :		
(1) Non Current Assets		5,00,000
(2) Current Assets		
(a) Inventory		40,000
(b) Trade Receivables		2,60,000
(c) Cash and Cash Equivalents		2,00,000
Total		**10,00,000**

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

	Reserves and Surplus:	₹
Note : 1	General Reserve :	50,000
	Profit & Loss:	1,50,000
		2,00,000

ऊपर दी गई सूचनाओं के आधार पर गणना कीजिए : **(i)** चालू अनुपात **(ii)** तरल अनुपात **(iii)** स्वामित्व अनुपात **(iv)** ऋण समता अनुपात **(v)** स्कन्ध आवर्त अनुपात **(vi)** व्यापारिक प्राप्य आवर्त अनुपात **(vii)** व्यापारिक देयता आवर्त अनुपात **(viii)** सकल लाभ अनुपात

On the basis of the informations given above, calculate:

(i) Current Ratio **(ii)** Liquid Ratio **(iii)** Proprietory Ratio **(iv)** Debt-Equity Ratio **(v)** Inventory Turnover Ratio **(vi)** Trade Receivables Turnover Ratio **(vii)** Trade Payables Turnover Ratio **(viii)** Gross Profit Ratio.

उत्तर :**(i)** 1.67 : 1 **(ii)** 1.53 : 1 **(iii)** 0.60 : 1 **(iv)** 0.67 : 1 **(v)** 8 times **(vi)** 2.3 times **(vii)** 2 times **(viii)** $33\frac{1}{3}$ %

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

12

लेखाशास्त्र में नैतिकता
(Ethics in Accountancy)

इस अध्याय को पढ़ने के बाद आप निम्न के बारे में जान सकेंगे –

- नैतिकता की अवधारणा
- नीतिशास्त्र की परिभाषा
- नीतिशास्त्र की प्रकृति
- नैतिकता के स्रोत
- नैतिकता एवं पेशेवर लेखाकार
- लेखा व्यवहारों में नैतिकता
- दिखावटी लेनदेन

परिचय –

नैतिकता कोई आधुनिक खोज नहीं है। शताब्दियों से दर्शनशास्त्री मानव व्यवहार को समझने के क्रम में इसके विभिन्न आयामों की पहचान करते रहे। नैतिकता के लिए अंग्रेजी में प्रयुक्त शब्द एथिक्स (Ethics) ग्रीक शब्द ईथोस (Ethos) से उत्पन्न हुआ माना जाता है, जिसका अर्थ है "जीने का तरीका"। नैतिकता का शास्त्र या नीति शास्त्र दर्शन शास्त्र की एक शाखा है जो व्यक्तियों के सामाजिक व्यवहार से संबंधित है। यह हमारे आचरण संबंधी निर्णयों के तर्कसंगत औचित्य का परीक्षण करता है। यह बताता है कि नैतिक दृष्टि से क्या सही अथवा गलत है, क्या उचित अथवा अनुचित है, क्या न्याय संगत है या नहीं।

परिभाषा :–

नीति शास्त्र की विभिन्न परिभाषाएँ दी गई हैं, जिनमें से कुछ निम्न प्रकार हैं :–

आर. वायने. मोंडी के अनुसार – "नीतिशास्त्र एक विषय है जो नैतिक कर्त्तव्य के बारे में अच्छा तथा बुरा अथवा सही तथा गलत से संबंधित है।"

पॉल एवं एल्डर के अनुसार – "नीति शास्त्र अवधारणाओं एवं सिद्धान्तों का एक समूह है जो हमें बताता है कि कौनसा व्यवहार जीवों की सहायता करेगा अथवा उन्हें हानि पहुँचायेगा।"

दर्शन शास्त्र के कैम्ब्रिज शब्दकोष के अनुसार – "नीति शास्त्र का अर्थ प्रायः किसी विशेष परम्परा, समूह अथवा व्यक्ति के नैतिक सिद्धान्तों से लिया जाता है।"

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

वैबस्टर न्यू वर्ड्स शब्दकोष के अनुसार – "नीतिशास्त्र आचरण के मानकों तथा नैतिक निर्णयों का विषय है। यह एक विशेष उद्देश्य, धर्म, समूह या पेशे के लिए सदाचरण की संहिता या पद्धति है।"

निष्कर्ष रूप में कहा जा सकता है कि नीतिशास्त्र ऐसे नियम या सिद्धान्तों का समूह है, जिससे सभी के हितों के लिए सभी व्यक्तियों के पारस्परिक संबंधों को इस प्रकार शासित किया जाये जिससे सभी की आवश्यकताओं के प्रति परस्पर आदर बना रहे।

प्रकृति –

नीतिशास्त्र की प्रकृति को निम्न प्रकार समझा जा सकता है :–

1. नैतिकता का संबंध केवल मानव से है। इसमें व्यक्ति तथा समाज दोनों सम्मिलित हैं। ऐसा इसलिए है क्योंकि व्यक्ति ही अच्छे एवं बुरे में भेद कर सकता है तथा नैतिक आधार पर बेहतर का चयन कर सकता है।
2. यह व्यवस्थित ज्ञान की एक शाखा है जो सामाजिक विज्ञान से संबंधित हैं। यह मूल्य आधारित निर्णयों तथा व्यक्तिगत व सामाजिक आचरण की एक नियामक पद्धति है।
3. यह मानव के स्वैच्छिक आचरण एवं व्यवहार से संबंधित है। अज्ञानतावश तथा परिस्थितियों के दबाव में किए गये आचरण इसके अपवाद होते हैं। उदाहरणार्थ एक सैनिक द्वारा देश की रक्षा के समय दुश्मनों को मारना अहिंसा की नीति का उल्लंघन नहीं माना जा सकता है।
4. इसमें सार्वभौमिक रूप से स्वीकार्य मानवीय आचरण एक व्यवहार के नियम सम्मिलित होते हैं। जैसे सत्य बोलना, अहिंसा, पवित्रता, नम्रता, सहानुभूति, अपरिग्रह, ईर्ष्यालु न होना आदि।
5. नैतिकता के सिद्धान्त समय एवं स्थान की सीमाओं से बँधे नहीं होते। ये सदैव एवं सभी जगहों पर वैध होते हैं। कोई भी धर्म, देश, समाज ये कभी नहीं कहेगा कि सत्य तथा अहिंसा बुरे तथा अनावश्यक होते हैं। नैतिकता मानव–मूल्यों के आधारभूत तत्त्व हैं। इसीलिए इन्हें सनातन धर्म भी कहा गया है।
6. किसी भी निर्णय के नीतिगत होने के लिए उसमें निम्न विशेषताएँ होनी चाहिए :–
   (i) सभी संबंधित के लिए सबसे अच्छा
   (ii) ईमानदार
   (iii) उपयुक्त तथा स्वीकार्य
   (iv) न्याय मात्र होना ही नहीं चाहिए अपितु होता हुए प्रतीत भी होना चाहिए।
   (v) नैतिक रूप से सही
   (vi) न्यायसंगत एवं समरूप

नैतिकता के स्रोत :–

अमेरिका के दो नीतिशास्त्र विशेषज्ञों, जॉर्ज एवं जॉन स्टीवर ने नैतिकता के निम्न मूल स्रोत बताए हैं :–

1. **कानून प्रणाली** :– किसी देश में लागू कानून वहां के नैतिक मानकों का मौटे तौर पर प्रतिनिधित्व करते हैं। इस प्रकार कानून के द्वारा जीवन के नैतिक पक्षों की शिक्षा भी प्राप्त होती है।
2. **धर्म** :– सभी धर्मों में व्यक्तियों को नैतिक व्यवहार करने की शिक्षाऐं दी गयी है। ये शिक्षाएँ नैतिक व्यवहार का महत्वपूर्ण एवं प्रभावी स्रोत होती है।
3. **आनुवांशिक धरोहर** :– आधुनिक युग में किये गये अनुसंधानों से जीव विज्ञानियों को ऐसे प्रमाण मिले हैं जो बताते हैं कि अच्छाई के गुण, जो किसी व्यक्ति के नैतिक आचरण से संबंधित होते हैं, उसकी आनुवांशिक धरोहर हो सकते हैं।
4. **दार्शनिक प्रणालियाँ** :– प्राचीन काल से ही विद्वानों ने जीवन एवं कर्त्तव्य के प्रति कई दार्शनिक प्रणालियाँ विकसित की है। ये प्रणालियाँ नैतिक व्यवहार के विभिन्न आयामों को बताती हैं।

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

5. **आचार संहिता** :– ये तीन प्राथमिक वर्गों में बाँटी जा सकती हैं :–

   (i) **कम्पनी की आचार संहिता** :– ये सामान्यतः संक्षिप्त, अधिक सामान्यीकृत तथा उचित व्यवहार के बारे में मोटे तौर पर की गई अपेक्षाएँ दर्शाती है।

   (ii) **कम्पनी की परिचालन नीतियाँ** :– इनमें ग्राहकों की शिकायतों के निवारण, नियुक्तियाँ करने, उपहार देने आदि से संबंधित कम्पनी की नीतियाँ सम्मिलित हैं जो अनैतिक व्यवहारों से सुरक्षा प्रदान करती है।

   (iii) **पेशेवर आचार संहिताएँ** :– पेशेवर संस्थाओं जैसे भारतीय चार्टर्ड अकान्टेन्ट संस्थान ने अपने सदस्यों के लिए आचार संहिताएँ बनाई है जो इनके नैतिक व्यवहार को सुनिश्चित करने का महत्वपूर्ण कार्य करती है।

6. **सांस्कृतिक अनुभव** :– कई ऐसे सांस्कृतिक नियम, परम्पराएँ एवं मानक होते हैं जो पीढ़ी–दर–पीढ़ी आचार–व्यवहार को नियमित करते हैं। व्यक्तिगत मूल्यों को उचित आकार प्रदान करने में समाज के ये नियम बड़ी भूमिका निभाते हैं।

लेखांकन में नैतिकता –

लेखांकन वित्तीय सूचनाओं को प्रदान करने वाला शास्त्र है। इसी के माध्यम से व्यवसाय में हित रखने वाले सभी पक्षकार जैसे अंशधारी, ऋणदाता, ग्राहक, कर्मचारी, सरकार आदि संस्था की वित्तीय स्थिति की सही जानकारी प्राप्त कर पाते हैं। इससे उन्हें सही निर्णय लेने में सहायता प्राप्त होती है। वित्तीय सूचनाएँ प्रदान करने के अतिरिक्त लेखांकन व्यवसाय की सम्पत्तियों की सुरक्षा करने का भी एक महत्वपूर्ण साधन है। लेखों में जब सम्पतियाँ सही मूल्य पर लिखी जाती है तो उनकी चोरी अथवा अन्य प्रकार का दुरुपयोग संभव नहीं होता।

इसी कारण लेखाकार की लेखनी को बहुत शक्तिशाली कहा जाता है। यह आवश्यक है कि लेखाकार अपनी इस क्षमता तथा उत्तरदायित्व को पहचाने तथा लेखांकन करते समय सदैव नैतिक आचरण करे। वास्तव में लेखांकन में सम्पूर्ण नैतिकता अपनाने से ही व्यवसाय में लाभों का विभिन्न पक्षों में न्याससंगत बँटवारा हो पाता है तथा व्यवसाय की आर्थिक सुरक्षा भी सुनिश्चित होती है। ऐसे अनेक उदाहरण भारत में तथा विदेशों में देखने को मिले है जिनमें लेखांकन में नैतिकता नहीं अपनाऐ जाने के कारण बड़े–बड़े व्यवसाय ध्वस्त हो गये तथा उनके कई हितधारियों को आर्थिक अन्याय सहना पड़ा।

नैतिकता तथा पेशेवर लेखाकार –

एक लेखाकार की सबसे मूल्यवान संपत्ति उसकी ईमानदार छवि होती है। पेशेवर लेखाकार की समाज में महत्वपूर्ण भूमिका होती है। विनियोगकर्ता, कर्मचारी, ऋणदाता, सरकार तथा जनसामान्य पेशेवर लेखाकारों पर अनेक प्रकार से निर्भर करते हैं। इनमें अच्छी गुणवत्ता के वित्तीय प्रतिवेदन, प्रभावशाली वित्तीय प्रबंध तथा व्यवसाय व कर से संबंधित मामलों में प्रभावपूर्ण सलाह आदि प्रमुख है। पेशेवर लेखाकारों का ऐसी सेवाओं को प्रदान करने में आचरण एवं व्यवहार देश की आर्थिक खुशहाली पर प्रभाव डालता है। दुनियाभर के पेशेवर लेखाकारों से यह अपेक्षा की जाती है कि वे समाज को अपनी सर्वश्रेष्ठ सेवाएँ देंगे जो नैतिक आवश्यकताओं के सर्वथा अनुकूल होगी। पेशेवर लेखाकारों के विभिन्न संस्थानों जैसे अमेरिकन इन्स्टीट्यूट ऑफ सर्टिफाइड पब्लिक अकाउन्टेन्ट्स ;।प्ब्।द्ध भारतीय चार्टर्ड अकाउन्टेन्ट संस्थान ;प्ब्।प्द्ध आदि ने अपने सदस्यों के लिए विस्तृत आचार संहितायें लागू कर रखी है, जिससे पेशेवर लेखाकारों का उच्च नैतिक व्यवहार सुनिश्चित किया जा सके।

लेखा व्यवहारों में नैतिकता –

लेखांकन करते समय यह सुनिश्चित किया जाना चाहिए कि सभी प्रविष्टियाँ नियमानुसार हों तथा उचित प्रमाणकों के आधार पर की गई हों। ऐसी प्रक्रिया अपनाई जानी चाहिए जिससे लेखों में कपटपूर्ण तरीके से प्रविष्टि करने अथवा हेराफेरी करने की संभावना न रहे। विभिन्न व्यवहारों के संबंध में इसे निम्न प्रकार समझा जा सकता है :–

(अ) रोकड़ प्राप्ति के संबंध में –

(i) रोकड़ प्राप्ति से संबंधित सभी प्रमाणकों पर क्रमांक लगे हों तथा उन्हें क्रमवार व्यवस्थित किया जाये।

(ii) सभी प्रमाणकों पर सक्षम अधिकारियों के हस्ताक्षर हों।

(iii) सभी प्रविष्टियों के साथ प्रमाणक का क्रमांक दिखाया जायें।

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

(iv) सभी रोकड़ प्राप्तियाँ व्यवसाय से संबंधित हों।

(v) बैंक में जमाएँ जमा पर्ची के प्रतिपर्ण अथवा अन्य प्रमाणक के आधार पर प्रविष्ट की जायें।

(आ) रोकड़ भुगतान के संबंध में –

(i) प्रत्येक भुगतान का लेखा प्राप्तकर्ता द्वारा जारी की गई छपी हुई रसीद के आधार पर होना चाहिए, जिसको संस्था के किसी वरिष्ठ अधिकारी ने हस्ताक्षर करके अधिकृत किया हो।

(ii) भुगतान व्यवसाय से संबंधित होना चाहिए।

(इ) माल के संबंध में –

(i) माल के क्रय का लेखा करते समय लेखाकार को बीजक की सत्यता की जाँच कर लेनी चाहिए। यह देख लेना चाहिए कि बीजक पर विक्रेता का नाम, तिथि तथा धनराशि लिखी हो तथा वह संबंधित व्यवसाय के नाम से ही काटा गया हो।

(ii) माल की क्रय वापसी के संबंध में लेखाकार को आपूर्तिकर्ताओं को भेजे गये डेबिट नोट की उपयुक्तता देख लेनी चाहिए। ऐसे नोट पर आपूर्तिकर्ता का नाम, तिथि, वापस किए गए माल का विवरण, धनराशि स्पष्ट रूप से अंकित होनी चाहिए तथा सक्षम अधिकारी के हस्ताक्षर भी होने चाहिए।

(iii) बेचे गये माल का लेखा विक्रय बीजकों के आधार पर किया जाता है। ऐसे बीजकों पर ग्राहक का नाम व पता, तिथि, माल का विवरण, दर, व्यापार बट्टे की दर तथा धनराशि स्पष्ट रूप से लिखी होनी चाहिए तथा सक्षम अधिकारी के हस्ताक्षर होने चाहिए।

(iv) विक्रय वापसी के लेखन हेतु संस्था द्वारा माल लौटाने वाले ग्राहक को भेजे गये क्रेडिट नोट को आधार बनाया जाता है। इस क्रेडिट नोट पर ग्राहक का नाम, तिथि, लौटाये गये माल का विवरण, दर तथा धनराशि स्पष्ट रूप से अंकित होनी चाहिए तथा सक्षम अधिकारी द्वारा हस्ताक्षर होने चाहिए।

ऐसा पाया गया है कि अनैतिक लेखाकार माल के विभिन्न व्यवहारों की प्रविष्टियाँ बिना उपयुक्त आधार के कर देते हैं। प्रायः इनका उद्देश्य विक्रय को बढ़ा–चढ़ा कर दिखाना होता है।

(ई) अन्य संपतियों एवं दायित्वों के संबंध में :–

(i) अन्य संपतियों जैसे प्लांट, मशीनरी, भवन आदि का लेखा करते समय लेखाकार के पास सक्षम अधिकारी से हस्ताक्षरित ऐसे प्रमाणाक होने चाहिए जो बताते हों कि :–

1. सम्पत्ति का स्वामित्व संस्था के पास है।

2. सम्पत्ति वास्तव में अस्तित्व में है।

(ii) विभिन्न दायित्वों जैसे व्यक्तियों तथा संस्थाओं से लिये गये ऋण का लेखा करते समय लेखाकार के पास प्रमाणक के रूप में पर्याप्त आधार होना चाहिए जो यह बताता हो कि :–

1. दायित्व व्यवसाय से संबंधित है।

2. यह उपयुक्त रूप से अधिकृत है।

दिखावटी लेनदेन (Window Dressing) -

वित्तीय स्थिति को वास्तविक से बेहत्तर दिखाने के लिए कई बार लेखाकार दिखावटी लेनदेनों का सहारा लेते हैं। विशेषकर लेखा वर्ष की समाप्ति के समय पर ऐसा किया जाता है। इसके कुछ उदाहरण निम्न प्रकार है–

* देनदारों को लेखा वर्ष की समाप्ति से कुछ समय पूर्व भुगतान करने के लिए प्रेरित करने हेतु बट्टे का प्रस्ताव दिया जाता है। इससे देनदार शीघ्र भुगतान कर देते हैं तथा नकद राशि में वृद्धि होने से तरलता की स्थिति वास्तविक से बेहतर दिखाई देती है।

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

- रहतिये या स्टॉक की मूल्यांकन विधियों में इसलिए परिवर्तन करना कि उसका मूल्य बढ़ सके तथा अधिक लाभ दिखाये जा सकें।
- सम्पत्तियों पर ह्रास की विधियों में इस प्रकार परिवर्तन करना कि ह्रास कम प्रदर्शित हो तथा सम्पत्ति की आय अधिक हो जाये एवं लाभ अधिक प्रदर्शित हो।

इस प्रकार के लेनदेन करने का उद्देश्य लेखों की वास्तविक स्थिति को बदलकर प्रदर्शित करना होता है। अतएव यह नैतिक नहीं है। इससे लेखों द्वारा व्यवसाय के हितधारियों को सही सूचना प्रदान करने में बाधा उत्पन्न होती है।

महत्वपूर्ण शब्दावली

नीतिशास्त्र	Ethics
मूल्य	Values
दर्शनशास्त्र	Philosophy
आचरण	Conduct
न्यायसंगत	Just
समरूप	Equal
आनुवांशिक धरोहर	Genetic Inheritance
पेशेवर	Professional
आचार संहिताएँ	Codes of Conduct
प्रमाणक	Voucher
माल	Goods

अभ्यासार्थ प्रश्न

अति लघूत्तरात्मक प्रश्न (Very Short Answer Type Questions)

1. नैतिकता क्या है?
2. नैतिकता के लिए अंग्रेजी शब्द ;म्जीपबेद्ध की उत्पत्ति कैसे हुई?
3. नैतिकता का संबंध किससे है?
4. नैतिकता के आनुवांशिक होने की खोज किन्होंने की?
5. किसी लेखाकार की सबसे मूल्यवान सम्पत्ति क्या होती है?

लघूत्तरात्मक प्रश्न (Short Answer Type Questions)

1. किसी निर्णय के नीति संगत होने के लिए उसमें क्या विशेषताएँ होनी चाहिये?
2. आचार संहिता प्रायः कितने प्रकार की होती है?
3. पेशेवर लेखाकार का नैतिकता से क्या सरोकार है?
4. माल के सम्बन्ध में नैतिक आधार पर लेखांकन करते समय क्या ध्यान में रखा जाना चाहिये?
5. दिखावटी लेनदेन पर टिप्पणी लिखिये।

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

निबन्धात्मक प्रश्न (Essay Type Questions)

1. नीतिशास्त्र की परिभाषा देते हुए अवधारणा को समझाइए।
2. नीतिशास्त्र की प्रकृति पर प्रकाश डालिए।
3. नैतिकता के विभिन्न स्रोतों को समझाइए।
4. रोकड़ प्राप्ति एवं रोकड़ भुगतान के संबंध में नैतिक आधार पर लेखांकन किस प्रकार किया जाता है?

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

13

इलेक्ट्रोनिक स्प्रेडशीट का लेखांकन में प्रयोग
(Application of Electronic Spreadsheet in Accounting)

अध्ययन के उद्देश्य (Learning Objective)

इस अध्याय के अध्ययन के पश्चात आप

- एम.एस. एक्सल की उपयोगिता एवं तत्त्वों के बारे में जान पायेंगे।
- एम.एस. एक्सल की विशेषताओं को सीख पायेंगे।
- स्प्रेडशीट के सूत्रों को समझना एवं उनका उपयोग लेखांकन में करना सीखेंगे।
- स्प्रेडशीट द्वारा वित्तीय विश्लेषण करना सीखेंगे।
- एक्सल स्प्रेडशीट के तत्वों को समझेंगे।
- स्प्रेडशीट एवं वर्कबुक में अन्तर को जानेंगे।

एक्सेल का परिचय

माइक्रोसॉफ्ट एक्सेल माइक्रोसॉफ्ट द्वारा विकसित एक स्प्रेडशीट एप्लीकेशन है। यह डेटा का भंडारण, आयोजन और विश्लेषण करने के लिए प्रयोग में ली जाती है। यह गणना, ग्राफिंग टूल, पिवट टेबल, और मैक्रो प्रोग्रामिंग भाषा का प्रयोग करने (जिसे विजुअल बेसिक्स कहते है) इत्यादि की सुविधा प्रदान करता है। एक्सेल माइक्रोसॉफ्ट ऑफिस का हिस्सा है।

एक्सेल यह अनेक खानों में बना स्प्रेडशीट प्रोग्राम होता है, जिसकी सहायता से आप विभिन्न डाटाओं को सारणीबद्ध तरीके से रख तथा देख सकते है। एक्सेल की विशेषता यह भी है कि वह आपके लिए विभिन्न प्रकार की गणनाओं को भी स्वतः ही कर देता है। यह एक विण्डो संचालित (Window based) सॉफ्टवेयर हैं जिसमें एक बहुत बड़ी स्प्रेडशीट होती हैं। इस स्प्रेडशीट के प्रत्येक खाने में एक डेटा इनपुट करते हैं और वो सभी कार्य कर सकते है जो Dos आधारित सॉफ्टवेयर लोटस द्वारा किए जाते थे। एक्सल की वर्कशीट को माउस द्वारा प्रयोग करते हैं अतः इसे फारमेट करना बहुत आसान होता है। एक्सल सॉफ्टवेयर Microsoft office (MS-office) का एक भाग होता हैं अतः उसके अन्य भाग जैसे MS-Word, Access अथवा Power Point के Contents का आदान–प्रदान करना भी एक्सल की एक उपलब्धता है। एक्सल को लोड करने पर एक वर्कशीट स्क्रीन पर दिखायी देती है।

एक्सेल के प्रत्येक फाइल को वर्कबुक के नाम से जाना आता है। किसी भी वर्कबुक के अन्तर्गत अनेकों वर्कशीट हो सकते है। किसी वर्कशीट को कॉलम्स तथा रोज से निर्मित जाली समझा जा सकता है। प्रत्येक कॉलम को अंग्रेजी क अक्षर से प्रदर्शित किया जाता है जबकि रो को संख्या से कॉलम्स तथा रोज के द्वारा बने किसी खाने को सेल कहा जाता है। किसी सेल की पहचान उसके कॉलम के अक्षर (A, B, C, D) और रो (1, 2, 3, 4) की संख्या द्वारा होती है, जैसे यदि किसी सेल का कॉलम E है और रो 5 है तो E5 सेल कहलायेगा। किसी भी सेल में टैक्स्ट, संख्या या गणितीय सूत्र की प्रविष्टि की जा सकती है।

स्टेटसबार के ठीक ऊपर स्थित किसी भी वर्कशीट को क्लिक करके उसमें जाया जा सकता है। डीफॉल्ट तौर पर एक्सेल में तीन वर्कशीट पहले से ही बने होते है। तथा वर्कशीट बनाने के लिए इंसर्ट/वर्कशीट का चयन करें। वर्कशीट का नाम बदलने के लिये उसके नाम वाले टैब पर दायां क्लिक करें और रीनेम को चुन कर नया नाम टाईप कर के एन्टर कुंजी दबा दें। इसके प्रमुख तत्त्वों एवं क्रियाओं को निम्न प्रकार से आगे समझाया गया है।

एम.एस. एक्सेस का उपयोग करने पर उपयोगकर्ता को चित्र : 1 में प्रदर्शित स्क्रीन दिखाई देगी। इस स्क्रीन को मूलभूत युजर इंटरफेस के नाम से जाना जाता है।

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

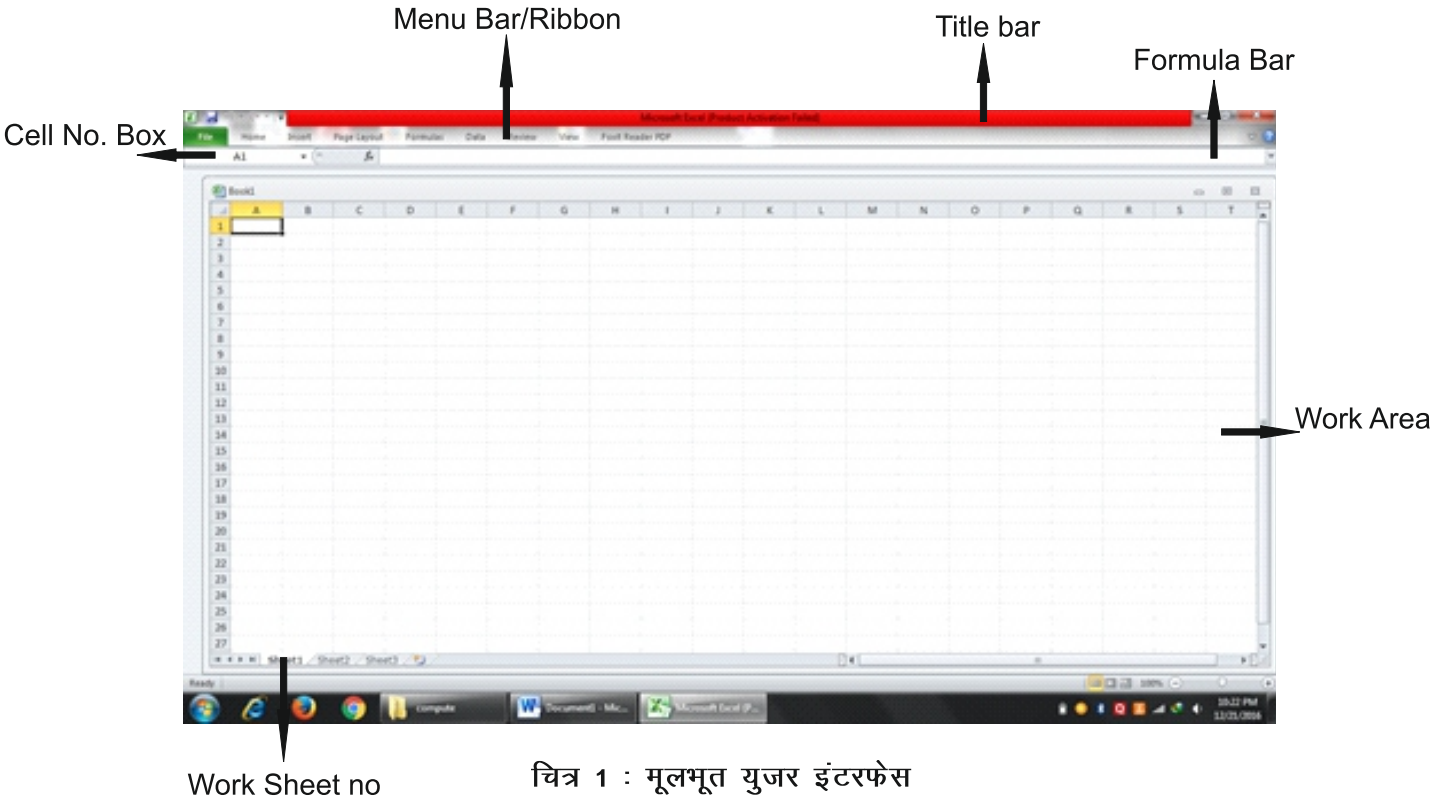

चित्र 1 : मूलभूत युजर इंटरफेस

1. बैकस्टेज व्यू

ऑफिस बेकस्टेज व्यू सेव, ओपन, प्रिंट और दस्तावेज साझा करने के लिए विकल्प देता है। फाईल टेब पर क्लिक करने के पश्चात् माईक्रोसॉफ्ट एक्सल के बैंक स्अेज व्यू को देखा जा सकता है। इसमें फाईल मीनू के द्वारा फाईल को सेव, खोलना, प्रिन्ट आदि के विकल्प दिए होते है। फाईल से संबंधित विभिन्न प्रकार के निर्देशों को नीचे समझाया गया है।

नया (New) – नया वर्कबुक बनाने के लिए मेनूबार में फाइल/न्यू का चयन करें या कंट्रोल + एन (CTRL+N) कुंजियों को दबाये या टूलबार में न्यू बटन को क्लिक करें।

खोलना (Open) – पहले से ही बने हुये किसी वर्कबुक को खोलने के लिये मेनूबार में फाइल/ओपन का चयन करें या कंट्रोल + ओ (CTRL+O) कुंजियों का दबाये या टूलबार में खोलना (Open) बटन पर क्लिक करें।

सेव (Save) किसी वर्कबुक को सुरक्षित करने के लिये मेनूबार में फाइल/सेव का चयन करें या कंट्रोल + एस (CTRL+S) कुंजियों को दबाये या टूलबार में सेव (Save) बटन को क्लिक करें।

प्रिन्ट (Print) किसी वर्कबुक को छापने के लिये मेनूबार में फाइल/प्रिंट का चयन करें या कंट्रोल + पी (CTRL+P) कुंजियों को दबाये या टूलबार में प्रिंट (Print) बटन को क्लिक करें।

प्रिन्ट के पहले देखना (Print Preview) किसी वर्कबुक को छपाई के पहले देखने के लिये मेनूबार में फाइल/प्रिंट प्रिव्हियू का चयन करें या टूलबार में छपाई के पहले देखना (Print Privew) बटन को क्लिक करें।

काटना, कॉपी तथा पेस्ट करना (Cut, Copy, Paste) इन क्रियाओं पर वर्कशीट को मॉडीफाई करना (Modifying A Worksheet) अनुभाग (section) में चर्चा की गई है।

अनडू, रीडू (Undo, Redo) – अनडू अर्थात किये गये परिवर्तन को हटा कर पुनः पहले वाला वर्कशीट पाने के लिये तथा रीडू अर्थात किये गये परिवर्तन को पुनः प्राप्त करने के लिये पीछे तथा आगे की ओर तीर से निशान वाली अनडू और रीडू (Undo and Redo) बटन को क्लिक करें।

हाइपरलिंक डालना (Insert Hyperlink) – हाइपरलिंक डालने के लिये किसी खाने में टैक्स्ट को टाइप करके हाइपरलिंक डालना (Insert Hyperlink) बटन को क्लिक करें तथा जिस वेबसाइट का हाइपरलिंक देना हो उसका पता प्रविष्ट करें और **OK**

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

को क्लिक कर दें।

ऑटोसम, फंक्शन विजार्ड तथा छाटना (Autosum, Function Wizard, and Sorting) – इन क्रियाओं पर फंक्शन Function अनुभाग Section में चर्चा की गई है।

जूम (Zoom) – किसी वर्कबुक को जूम करके अर्थात् बड़ा या छोटा करके देखने के लिये टूलबार में जूम (Zoom) बटन को क्लिक करें।

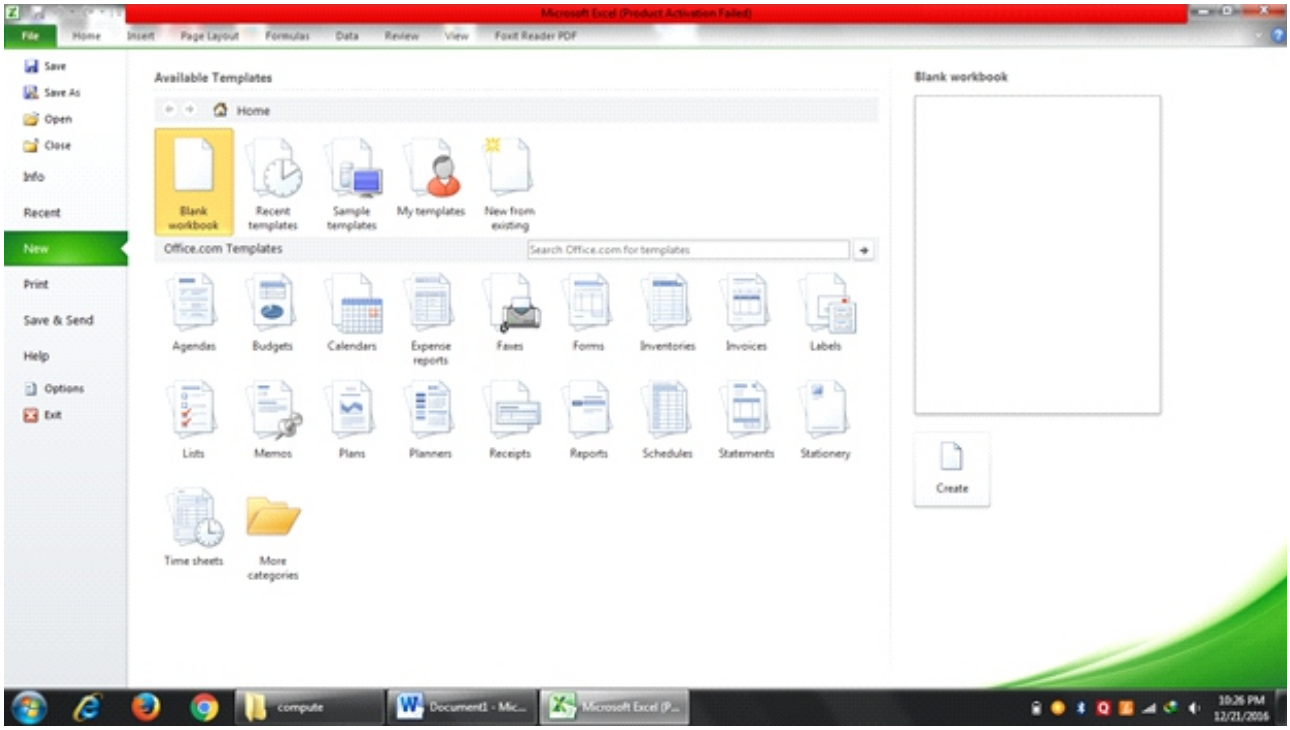

चित्र 2 : एक्सल बेकस्टेज व्यू

2. एम.एस. एक्सेल स्प्रेडशीट के का महत्व एवं प्रयोग (Importance and uses of MS Excel Spreadsheet)

यह बहुत ही सरल एवं तेजी से कार्य करने वाला सॉफ्टवेयर है। व्यापार एवं पेशे में इसकी काफी उपयोगिताऐं है। इसमें लम्बे हिसाब–किताब को एक ही पेज (स्प्रेड शीट) पर बनाया जा सकता है। सभी प्रकार के अंकों एवं आंकड़ों की तुरन्त गणितीय गुणना करने के लिए इसका प्रयोग किया जा सकता है। इसमें कई प्रकार के सुत्रों का प्रयोग कर, उन सुत्रों को सेव किया जा सकता है। इन सूत्रों को सेव करने के पश्चात् अनेकों बार आप डेटा फीड करके उन्हें प्रोसेस कर सकते है। स्प्रेडशीट को एक प्रोग्राम के रूप में जाना जाता है। स्प्रेडशीट का उपयोग एक व्यवसाय में निम्न प्रयोगों के लिये किया जा सकता है।

(i) स्कन्ध प्रबन्धन : एम.एस. एक्सल में स्प्रेडशीट के माध्यम से एक व्यवसाय के स्कन्ध (stock) का प्रबन्ध एवं नियंत्रण किया जा सकता है। स्कन्ध के क्रय एवं निर्गमन को स्प्रेडशीट द्वारा गणना की जा सकती है।

(ii) कार्य समय की गणना : स्प्रेड शीट में डेटा को पहले से स्टोर किया जा सकता है। एक कार्य को कितनी देर में समाप्त किया जा सकता है, इसकी गणना की जा सकती है। जैसे एक इकाई को बनाने के लिए दस मिनट का समय एक मजदूर द्वारा लिया जाता है, इस दशा में पाँच सौ इकाईयों का उत्पादन करने के लिए कितना समय लगेगा इसकी गणना तेजी से स्प्रेडशीट द्वारा की जा सकती है। इसी प्रकार मजदूरों एवं कर्मचारियों को दिए जाने वाले वेतन की गणना भी की जा सकती है।

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

(iii) लेखांकन एवं एक्सेल : एक्सेल के द्वारा आय एवं व्यय का लेखा रखा जा सकता है। सेल्स (cells) में आय एवं व्यय संबंधित आंकड़ों को भरा जाता है। भविष्य में होने वाले लाभ अथवा हानि को पूर्वानुमानित किया जा सकता है। इसका उपयोग बजट बनाने के लिए भी किया जा सकता है। इसके द्वारा एक से अधिक इकाइयों के लेखा विवरणों की तुलना की जा सकती है।

(iv) बिल का प्रारूप : कम्प्यूटराईज्ड युग में क्रय–विक्रय के बिल को मेल द्वारा भेजा जा सकता है। इस बिल अथवा इनवाईज का प्रारूप एक्सल में बनाया जा सकता है। इस बिल में वर्ग एवं पंक्तियों की माध्यम से माल का विवरण, प्रकार, मात्रा प्रति इकाई मूल्य अंकित की जा सकती हैं।

(v) ग्राहकों का विवरण : एक व्यापारिक संस्था में सबसे महत्वपूर्ण व्यक्ति, ग्राहक होता है। ग्राहकों का विवरण एक्सेल में रखा जा सकता है। इससे व्यापार की परियोजनाओं एवं प्रस्ताव ग्राहकों को बताऐ जा सकते है। स्प्रेडशीट में कई ग्राहकों के नाम, पते, मोबाईल नम्बर आदि स्टोर किऐ रहते है। इसी प्रकार जो ग्राहक उधार माल खरीदते है उनका विवरण भी रखा जा सकता है, जिससे कुल देनदारों की गणना की जा सकें।

3. वर्कबुक और स्प्रेडशीट की संकल्पना (Structure of Workbook & Spreadsheet)

एकाधिक वर्कशीट और चार्ट से मिलकर एक एक्सेल दस्तावेज का निर्माण होता है। जिसे वर्कबुक भी कहा जाता है। वर्कबुक एक ऐसी फाइल होती है जिसमें स्प्रेडशीट और चार्ट रखते हैं। एक वर्कबुक में हम एक ही प्रकार की अथवा एक कार्य से संबंधित अनेक स्प्रेडशीट रख सकते है। जब आप ऊपर बताए चरणों का पालन माइक्रोसॉफ्ट एक्सेल खोलने के लिए करते है तो एक वर्कबुक खुलती है जिसमें डिफॉल्ट रूप से तीन वर्कशीट शामिल होती हैं। एक्सल स्क्रीन का मुख्य और सबसे बड़ा भाग स्प्रेडशीट होता है जो देखने में ग्राफ पेपर की तरह लगता है। स्प्रेडशीट यद्यपि आकार में बहुत बड़ी होती है और पूरी स्प्रेडशीट एक साथ स्क्रीन पर दिखायी नहीं देती है परन्तु उसका ऊपरी बायां भाग स्क्रीन पर अवश्य दिखाया जाता है जहां से हम अपना डेटा इनपुट करना आरम्भ कर सकते है। जिसे हम अपना डेटा के आकार और प्रकार के अनुसार छोटा–बड़ा और फॉरमेट कर सकते है एवं सूत्र का प्रयोग भी कर सकते हैं।

एक एक्सल स्प्रेडशीट पंक्तियों एवं स्तम्भों (rows & columns) की एक मैट्रिक्स है। यह एक प्रकार की शीट है, जिससे खड़ी एवं क्षितिज के समानांतर रेखायें होती है, जिसने एक आयताकार ग्रिड बनती है जिसे वर्ग (cell) कहते है, जिसमें डेटा को फीड किया जाता है। हम इस सेल में सूत्र का प्रयोग भी कर सकते है। यह माइक्रोसॉफ्ट द्वारा बनाया गया एक सॉफ्टवेयर प्रोग्राम है। आवश्यकता के अनुसार तीन से अधिक वर्कशीट हो सकता है। अतिरिक्त वर्कशीट को जोड़ने के लिए शॉर्टकट कुंजी Shift +F1 के संयोजन का इस्तेमाल किया जाता है। एक वर्कशीट में कुल 1,048,576 रोव्स (rows) और 16,384 कॉलम्स या पक्तियाँ (Columns) होते है। एक्सेल की सबसे छोटी इकाई या मूल रूप से पंक्ति और स्तंभ का प्रतिच्छेदन बिंदु है उसे सेल कहते है। उदाहरण के लिए चित्र 3 में दिखाया गए शीर्ष पर सबसे बायां सेल का पता A1 है। A स्तंभ है। और 1 पंक्ति संख्या है।

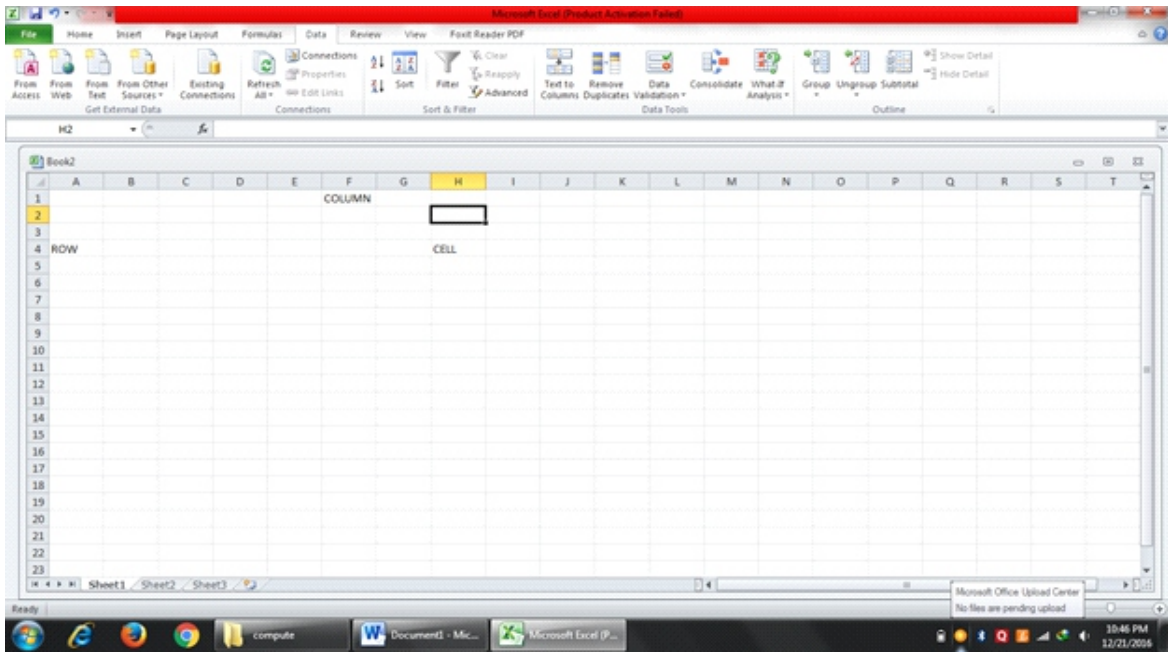

चित्र 3 : वर्कशीट

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

एक वर्कबुक की संरचना को निम्न बिन्दुओं द्वारा समझा जा सकता है।

(i) वर्कबुक के तल पर प्रदर्शित शीट 1, शीट 2, और शीट 3 (Sheet 1, Sheet 2 & Sheet 3) अलग–अलग शीट को दर्शाती है। एक नए वर्कशीट को जोड़ने के लिए, शीट 3 टेब के बाद वाले टेब पर क्लिक करें। आप राईट (Right) क्लिक करके और रीनेम (Rename) विकल्प को चुन कर वर्कशीट का नाम बदल सकते है। जैसा कि चित्र दर्शाया गया है।

(ii) सेल का चयन करने के लिए सेल पर क्लिक करें, पहली सेल, A1 से अपने कर्सर को रखे। सूत्र पट्टी (formula bar) के बायीं ओर नेम बॉक्स (Name Box) में सेल का पता प्रदर्शित होगा। शीट में चारों और घुमने पर सेल का पता भी परिवर्तित होता है। आप आसानी से टैब दबाने या तीन (arrow) कुंजियों का उपयोग करके एक सेल से दूसरे सेल पर जा सकते है।

(iii) अपने माउस बटन को क्लिक कर खींचने पर एक समय में एक से ज्यादा सेल चुनी जा सकती हैं तथा चुनी गई सेल्स हाईलाइट हो जाती है। माइक्रोसॉफ्ट एक्सेल में एक सेल में निम्न वस्तुओं को शामिल कर सकते है :

- एक नंबर (और काई अल्पविराम जैसे की दशमलव अंक, मुद्रा प्रतीकों विराम चिन्ह)
- शाब्दिक सामग्री (जिसमें अक्षर, संख्या और प्रतीकों जो उस नंबर से संबंधित ना हो वे आते है।
- एक सूत्र (फार्मूला), जो एक गणित समीकरण है।
- एक फंक्शन (function), जो जटिल ऑपरेशन का शॉर्टकट के रूप में दर्शाने वाला नामांकित समीकरण है।

(iv) एक्सेल में नई वर्कबुक को बनाना : वर्कबुक बनाने के लिए निम्न प्रक्रिया अपनाई जाती है :

- माइक्रोसॉफ्ट ऑफिस एक्सेल 2010 (Microsoft office Excel 2010) पर क्लिक करने के बाद माइक्रोसॉफ्ट ऑफिस (Microsoft Office) बटन पर क्लिक करें।
- न्यू (New) पर क्लिक करे और उसके बाद
- ब्लेंक वर्कबुक (Blank Workbook) पर क्लिक करें (एक्सेल डिफॉल्ट रूप में एक रिक्त वर्कबुक खोलता है।)

(v) ''सेव'' और ''सेव ऐज'' ("Save" & "Save As") :

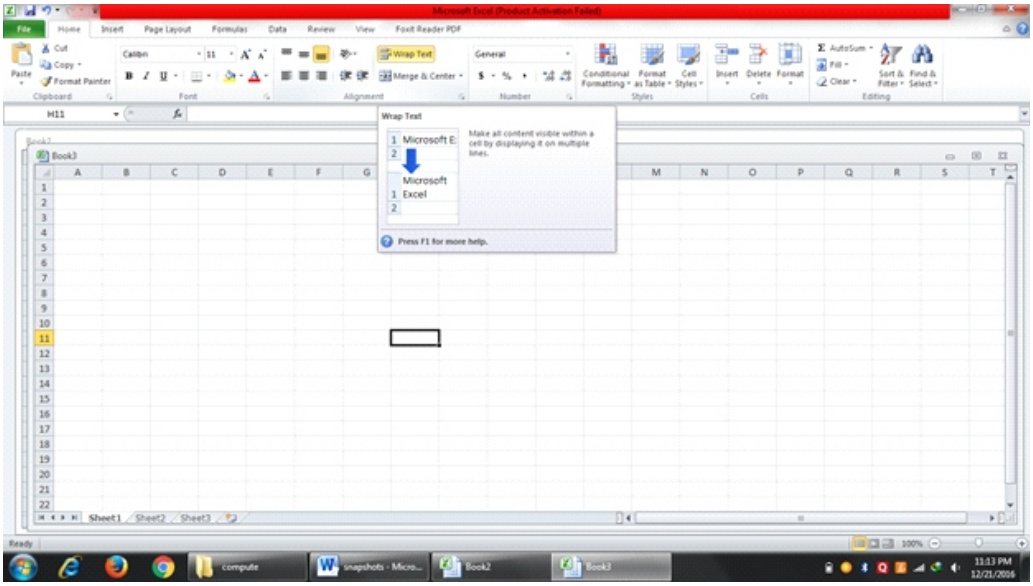

चित्र 4 : व्रेप टेक्स्ट

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

डिफॉल्ट रूप से एक्सेल 2010 (*.xlsx) प्रारूप में नई वर्कबुक का निर्माण करता हैं। वर्कबुक बनाने के बाद इस उपयोग करने के बाद कम्प्यूटर में सेव किया जा सकता है। एक नव निर्मित वर्कबुक को सेव करने के लिए फाइल टैब पर जाये

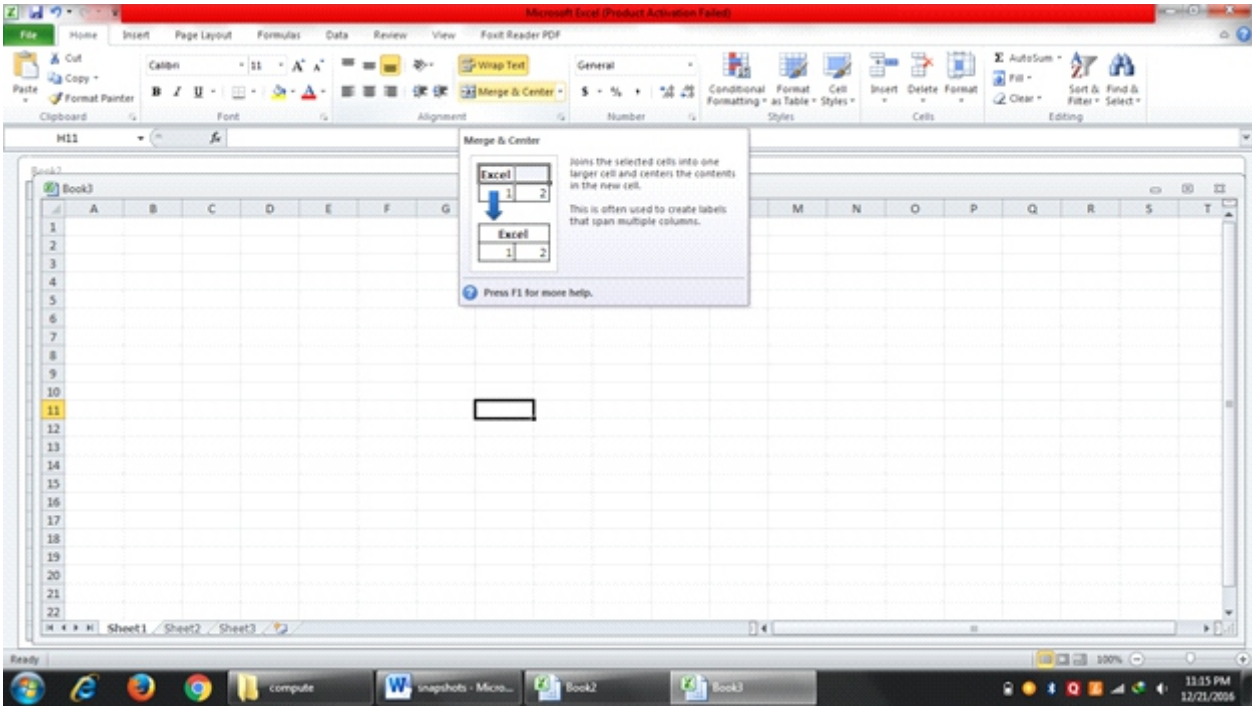

चित्र 5 : मर्ज सेल

और ''सेव ऐज'' का चयन करें।

(vi) **एलाइनमेंट ग्रुप (Alignment Group)** : टेक्स्ट की क्षैतिज (horizontal) और ऊर्ध्वाधर (vertical) ऐलाइनमेंट (alignment) बदलने, टेक्स्ट कों व्रेपिंग (wrapping) और विलप (merging) करे आदि में उपयोग होती है। व्रेप टेक्सट (wrap text) सुविधा का उपयोग करके, सेल की सभी सामग्री कई लाइनों में प्रदर्शित हो जाएगी जैसा की चित्र में दिखाया गया हैं।

- **मर्ज सेल (Merge Cell) :** सेल को मर्ज करने के लिए, उस सेल का चयन करें जिस सेल को मर्ज करने चाहते है और ''मर्ज और सेण्टर'' पर क्लिक करें। इसे चित्र 5 में दर्शाया गया है।

(vii) **सॉर्ट और फिल्टर (Short & Filter) :** अपने वर्कशीट के डेटा का एक विशेष क्रम में आयोजन मूल रूप से सोर्टिंग कहलाता है। उदाहरण के लिए, एक स्कूल के छात्रों की सूची वर्णमाला के क्रम, कक्षा वार या जन्म के क्रम में वर्ग–वार या किसी दूसरे क्रम में किया जा सकता हैं।

वर्णमाला के क्रम में सोर्टिंग : एक्सल में कॉलम का चयन करें जिसे आप सॉर्ट करना चाहते है। होम टैब पर एडिटिंग ग्रुप में सॉर्ट और फिल्टर कमांड पर क्लिक करें। ए से जेड का चयन करें अब श्रेणी (केटेगरी) कॉलम में जाकर वर्णमाला में क्रम में आयोजित हो जायेगी।

छोटे से बड़े क्रम में सॉर्ट करने के लिए

- एक कॉलम में सेल का चयन करे जिसे आप (स्तंभ जिसमें संख्या प्रविष्ट हो) सॉर्ट करना चाहते है।
- होम टैब पर एडिटिंग ग्रुप में सॉर्ट और फिल्टर कमांड पर क्लिक करें।
- छोटे से बड़े (Smallest to largest) को चयन करें। अब जानकारी छोटी से बड़ी संख्या के लिए आयोजित हो गयी है। बड़ा से छोटा (largest to smallest) करने के लिए रिवर्स संख्यात्मक क्रम में भी कर सकते है।

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

- होम टैब पर एडिटिंग समूह में सॉर्ट और फिल्टर आदेश पर क्लिक करें।

स्प्रेडशीट को वर्कशीट भी कहते है। वर्कशीट एक आयताकार शीट होती हैं जिसमें छोटे–छोटे खाने बने होते है। वर्कशीट के प्रत्येक खाने में टेबल के रूप में डेटा स्टोर करके रखते हैं और आवश्यकतानुसार उसे कॉपी, मूव आदि कर सकते है। इस डेटा को अपने कार्य के अनुसार फार्मूला देकर कैलकुलेट भी कर सकते है।

(viii) नई वर्कशीट बनाना एवं रो और कॉलम जोड़ना (Adding New Worksheets, Rows & Columns)

- वर्कशीट – नई वर्कशीट जोड़ने के लिए मेनूबार में इन्सर्ट / वर्कशीट का चयन करें।
- रोज – नई रो जोड़ने के लिए मेनूबार में इंसर्ट / रोज का चयन करें या रो लेवल पर क्लिक कर के किसी रो को हाईलाइट करें तथा माउस में दायां क्लिक करके इंसर्ट चुनें।
- कॉलम – नया कॉलम जोड़ने के लिये मेनूबार में इंसर्ट / कॉलम का चयन करें या कॉलम लेवल पर क्लिक कर के किसी कॉलम को हाईलाइट करें तथा माउस से दायां क्लिक करके इंसर्ट चुनें।

(ix) रोज और कॉलम का आकार घटाना एवं बढ़ाना (Resizing Rows ad Column)

रोज और कॉलम के आकार को घटाने या बढ़ाने की दो विधियाँ है।

- सेल लेवल के नीचे की लाइन पर ड्रैग करके किसी रो को रीसाईज किया जा सकता है। इसी प्रकार के दायीं ओर के लाईन का ड्रैग करके किसी कॉलम को रीसाईज किया जा सकता है। या
- रो या कॉलम लेवल को सेलेक करके मेनूबार में फॉर्मेट / रो / हाईट अथवा फॉमेट / कॉलम / विद्थ का चयन करें ओर रो या कॉलम की ऊँचाई या चौड़ाई का मान प्रविष्ट कर दें।

(x) सेल को हटाना और कॉपी करना Moving and Coping Cells

सेल को हटाना (Moving Cells) : किसी सेल को एक स्थान से काट कर दूसरे स्थान में ले जाने के लिए मेनूबार में एडिट / कट का चयन करें या कट बटन पर क्लिक करें।

सेल को कॉपी करना (Copying Cells) **:** किसी सेल को कॉपी करने के लिए मेनूबार में एडिट / कॉपी का चयन करे या कट बटन को क्लिक करें।

काटे गये या कॉपी किये गये सेल को पेस्ट करना (Pasting cut and copied cells) **:** किसी काटे गये या कॉपी किये गये सेल को पेस्ट करने के लिये मेनूबार में एडिट / पेस्ट का चयन करें या पेस्ट बटन को क्लिक करें।

ड्रेग करके ड्रॉप करना (Drag and Drop) : यदि आपको किसी सेल को सिर्फ थोड़ी दूर ही ले जाना हो तो ड्रेग तथा ड्रॉप विधि अधिक सरल है। जिस सेल को उसके स्थान से कुछ ले जाना है। उस पर क्लिक करें और माउस के बायें बटन को दबाये हुये खींच कर वांछित स्थान पर पहुंचा दें।

(xi) पेन्स को फ्रीज करना (Freeze Panes)

यदि आपका वर्कशीट बहुत बड़ा है और उसमें रोज तथा कॉलम्स की संख्या बहुत अधिक है जिसके कारण वर्कशीट को स्क्रोल करने पर आपको शीर्षक दिखाई नहीं पड़ता तो आप उसके पेन्स को फ्रीज कर दें। इसकी प्रक्रिया निम्न प्रकार से आयेंगी।

- जिस रो को फ्रीज करना है अर्थात स्क्रोल करने पर भी जिस रो को दिखाई देते रहना है, उसके लेवल पर क्लिक करें।
- अब मेनूबार में विन्डो / फ्रीज पेन्स का चयन कर लें।
- फ्रीज हटाने के लिये मेनूबार में विन्डो / अनफ्रीज पेन्स का चयन करें।

4. एम एस एक्सल स्प्रेडशीट की विशेषताऐं

स्प्रेडशीट की विशेषताओं का वर्णन निम्न प्रकार से किया जा सकता हैं :–

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

1. एक बड़ी मात्रा में कई प्रकार के डेटा का प्रबन्धन एवं उपयोग किया जा सकता है।
2. डेटा को ग्राफ या चार्ट के माध्यम से प्रदर्शित किया जा सकता है।
3. डेटा को सॉफ्टवेयर के माध्यम से स्प्रेडशीट में लाया एवं भेजा जा सकता है।
4. डेटा की गणना को तीव्र गति से किया जा सकता है।
5. एक बार सूत्र प्रयोग करने पर ही समस्त गणना हो जाती है। सूत्र बदलने पर नये सेल में स्वतः सूत्र लग जाता है।
6. स्प्रेडशीट का प्रयोग भिन्न–भिन्न प्रयोगों के लिये किया जा सकता है। जैसे वित्तीय प्रतिवेदन, वैज्ञानिक, अनुसंधान, कर की गणना, बजट बनाना, व्यावसायिक विवरणों को बनाना आदि।
7. स्प्रेडशीट में स्वनिर्मित विश्लेषणात्मक क्षमताऐं रहती हैं।

5. बुनियादी सूत्र (Formule) और क्रियाऐं (Functions)

Formulas (सूत्र) वो समीकरण है जो आप की वर्कशीट में मूल्यों पर गणना का प्रदर्शन करते हैं। लेखांकन में इन सूत्रों का उपयोग विभिन्न प्रकार की गणना करने हेतु किया जाता है। माइक्रोसॉफ्ट एकसेल में निम्न बुनियादी फार्मूले है :

- जोड़ना (+)
- घटना (–)
- गुणा करना (*)
- विभाजन (/)

एक साधारण गणना करने के लिए आपको एक सूत्र. के आगे बराबर (=) प्रतीक के बाद गणना लिखनी होगी। उदाहरण के लिए (= 5 + 80) सेल में परिणाम 85 दे देंगे। इसी तरह कई आपरेशनों को भी तरह एक सूत्र में किया जा सकता है। (= 5 + 80 * 88/8) फॉर्मूला में वास्तविक मूल्य या संख्या के स्थान पर संदर्भ (cell reference) का भी उपयोग किया जासकता है। सेल संदर्भ के साथ फार्मूला लागू करने के लिए बराबर (=) प्रतीक के बाद सेल कोआर्डिनेट और संबद्ध आपरेशन लिख सकते हैं। इसके लिए सिन्टेक्स (Syntax) का प्रयोग किया जाता है। सिन्टेक्स का तात्पर्य, सूत्र को सेल के संबंधों द्वारा सीमित करने से है।

एक सूत्र संपादित (एडिट) करने के लिए एक सेल पर क्लिक करें, संबंधित सूत्र, सूत्र बॉक्स (फार्मूला बॉक्स) में प्रदर्शित होगा सूत्र बदलें और एंटर प्रेस करें।

एक्सेल में कुछ पूर्व निर्धारित फार्मूले होते है जिसे फंक्शन (functions) कहते हैं। फंक्शन का लाभ यह है कि इसमें आपको सूत्र नहीं लिखना पड़ेगा जिससे समय की बहुत बचत होगी।

जोड़ फंक्शन (addition function) का सिंटेक्स (syntax) नीचे दिखाया गया है। चित्र 6 (Sum Formula)

=SUM (B1, B2, B3)

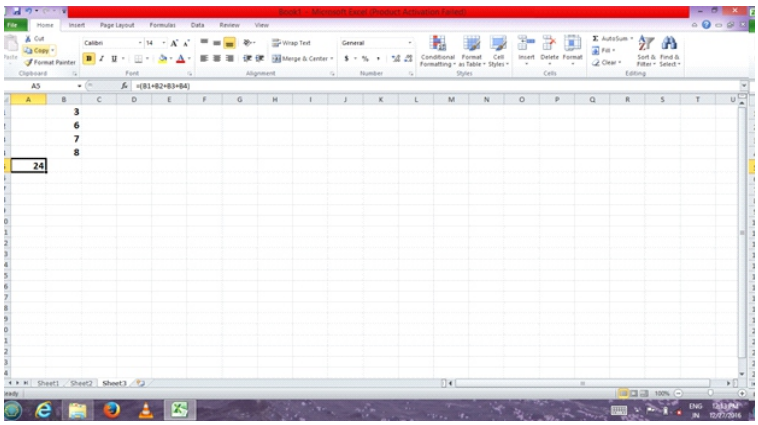

चित्र 6 : सम फार्मूला

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

यह सेल में B1, B2 और B3 में उपलब्ध मूल्यों का जोड़ दे देंगा। इसमें सम (sum) फंक्शन कहते है और कोष्ठक के भीतर सामग्री को आर्गुमेंट कहा जाता है। इसी प्रकार कई फंक्शन को एक्सेल शीट में गणना करने के लिए इस्तेमाल किया जा सकता है। आप फार्मूला टैब में फंक्शन लाइब्रेरी (Function library) में उपलब्ध फंक्शन का पता लगा सकते हैं। कुछ महत्वपूर्ण फंक्शन नीचे चित्र द्वारा दशाऐं गए है :

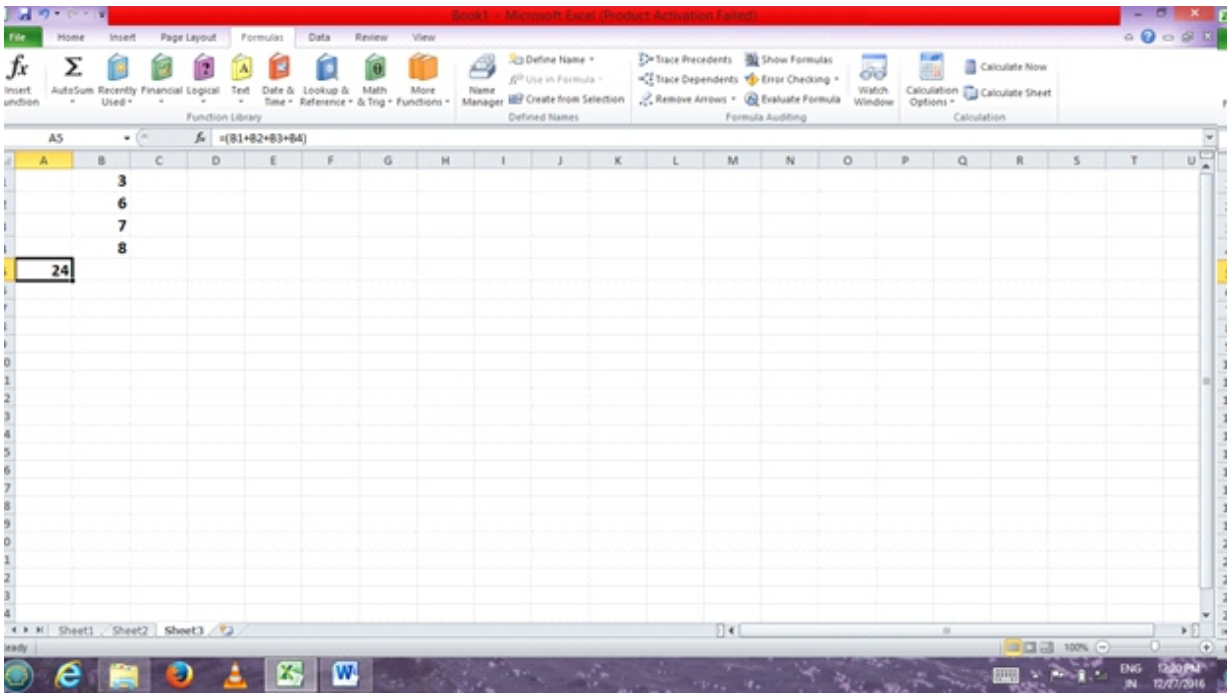

चित्र 7 : लाईब्रेरी फंक्शन

स्प्रेडशीट का लेखांकन में प्रयोग

(Application for Spreadsheet in Accounting)

लेखांकन में स्प्रेडशीट का उपयोग लाभ अथवा हानि की गणना करने के लिये किया जा सकता है। स्प्रेडशीट द्वारा एक चिट्ठे का निर्माण भी किया जाता है। इसका उपयोग आने वाले वर्षो में वित्तीय आंकड़ों जैसे लाभ, विक्रय, लागत, खर्चो आदि का पूर्वानुमान लगाने के लिये किया जाता है। यह कार्य बजट के माध्यम से भी किया जा सकता है। इस प्रक्रिया को निम्न प्रकार से समझा जा सकता हैं–

1. **लेखांकन के टेक्स्ट एवं नम्बर** : स्प्रेडशीट में टेक्स्ट एवं नम्बर को एक ही साथ सेल में दर्ज किया जा सकता है। सेल में अंको एक टेक्स्ट को अलग–अलग प्रयोगों के लिये फारमेट किया जा सकता है। लेखांकन में इसका उपयोग ज्यादा होता है। टेक्स्ट को टाईप करने के लिये, उस सेल का चयन करना है जहां टेक्स्ट टाईप करना है। एक्सल सॉफ्टवेयर टेक्स्ट एवं अंको में अन्तर स्पष्ट बड़े ही आसानी से कर लेता है। इसलिए नम्बर को प्रविष्ट करने की प्रक्रिया भी टेक्स्ट जैसी ही है। उदाहरण द्वारा इसे समझा जा सकता है। सेल पोइन्टर को सेल A1 है। माऊस या ऐरो की (Key) द्वारा ले जाईए और टाईप किजिए। XYZ Ltd सेल A2 में (Rs) टाईप कीजिए। सेल A3 का चयन कर "2005 to 2000" टाईप कीजिए। A3 की एन्ट्री एक्सल द्वारा टेक्स्ट ही मानी जायेगी।

   सेल A4 से F4 में वित्तीय वर्षो को प्रविष्ट करना है। A4 सेल में "2005" एवं B4 में "2004" टाईप करने के पश्चात् A4: B4 का चयन कर पोईन्टर को दाहिनी तरफ ले जाईए। इससे ऑटोफिल फीचर तैयार हो जाता है। माउस को ड्रेग कर दाये तरफ ले जाये। जिससे शोध वर्ष आ जायेगें। तत्पश्चात् सेल A5 से F5 तक विक्रय के डेटा को भरा जा सकता है। यह वर्कशीट निम्न प्रकार से प्रदर्शित की जा सकती है।

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

	A	B	C	D	E	F
1	XYZ Ltd.					
2	(Rs.)					
3	2005 to 2000					
4	2005	2004	2003	2002	2001	2000
5	50000	60000	30000	15000	10000	5000

चित्र 7 : टेक्स्ट एवं नंबर

2. **खर्चों की गणना** : चित्र 8 में त्रैमासिक खर्चो का विवरण दिया गया है। हर महीने का कुल खर्च सेल E12, F12 एवं G12 में दर्शाया गया है। इसी प्रकार किसी एक खर्चे का तीनों माह का कुल खर्चे को I6 से I10 तक दर्शाया गया है। इसकी गणना करने के लिये SUM सूत्र का प्रयोग किया गया है। जैसे Rent की तीनों महीनों की राशि निकालने के लिये =SUM(E6 : G6) को सेल I6 में टाईप किया गया है। इसी प्रकार जनवरी माह के कुल खर्चो की गणना सूत्र = SUM(E6 : E10) के द्वारा की गई है।

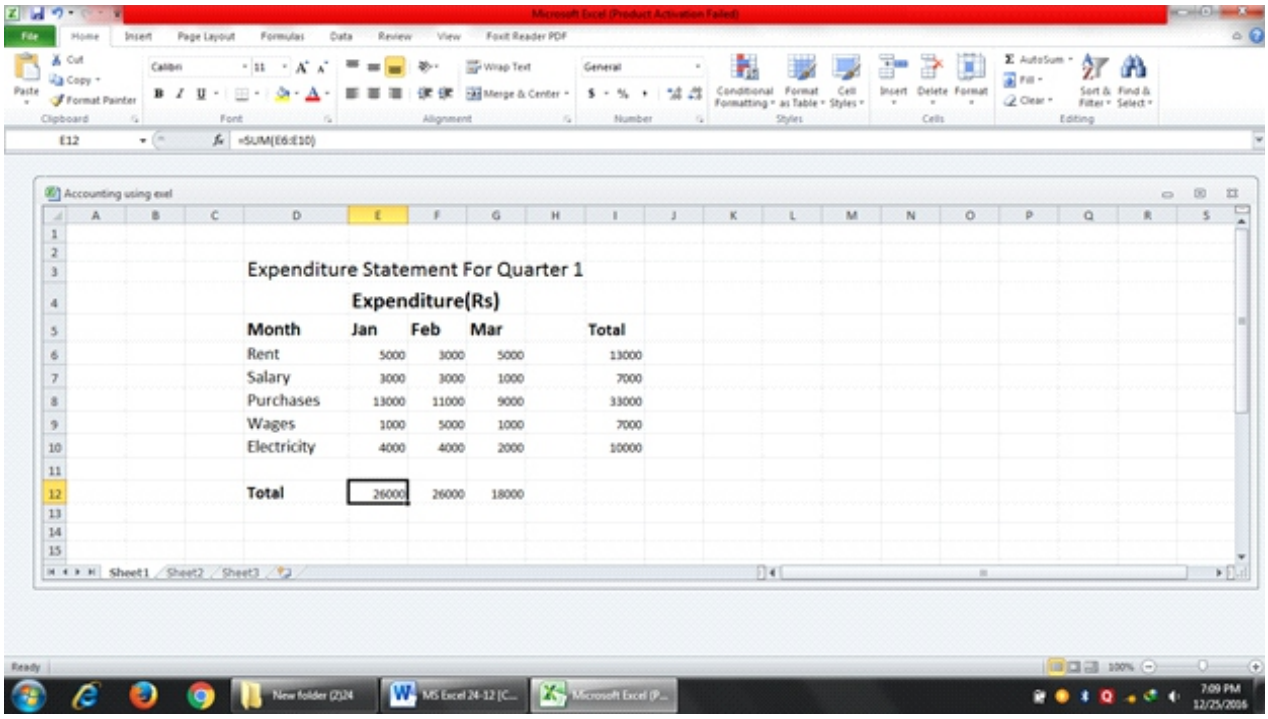

चित्र 8 : त्रैमासिक खर्चे

3. **आय की गणना** : व्यापार में होने वाली आय की गणना भी स्प्रेडशीट द्वारा कि जा सकती है। यह गणना वार्षिक, अर्द्धवार्षिक, त्रैमासिक आदि के अनुसार की जा सकती है। आय या व्यय से संबंधित किसी भी प्रकार का बजट बनाने हेतु एक्सल स्प्रेडशीट से डेटा को हस्तांतरित किया जा सकता है। इसी प्रकार किसी महिने में कम या ज्यादा खर्च को भी चिन्हित किया जा सकता है। इसी प्रकार चित्र 9 में त्रैमासिक आय की गणना को दर्शाया गया हैं इस सारणी में भी SUM सूत्र का प्रयोग किया गया है।

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

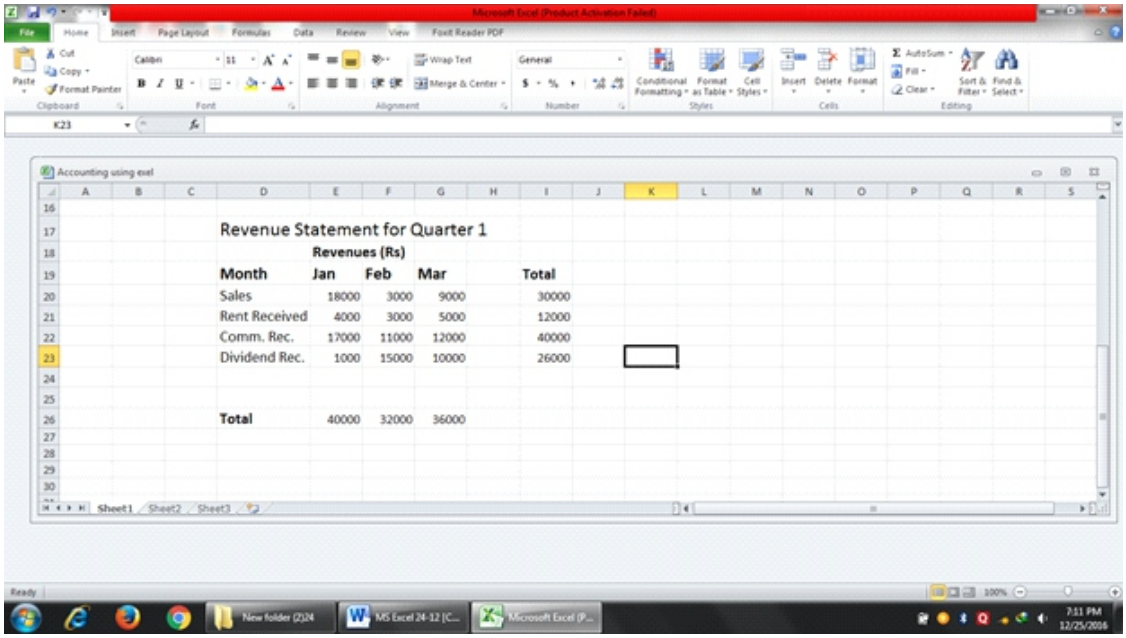

Revenue Statement for Quarter 1

Month	Revenues (Rs) Jan	Feb	Mar	Total
Sales	18000	3000	9000	30000
Rent Received	4000	3000	5000	12000
Comm. Rec.	17000	11000	12000	40000
Dividend Rec.	1000	15000	10000	26000
Total	40000	32000	36000	

चित्र 9 : त्रैमासिक आय

4. **व्यापार खाता (Trading Account)** को बनाना : व्यापार खाते में प्रत्यक्ष खर्चो को डेबिट किया जाता है। इसमें क्रय–विक्रय, प्रारंभिक स्टॉक एवं अंतिम स्टॉक मुख्य प्रविष्टियां होती है। इसके क्रेडिट का कुल यदि डेबिट के कुल से ज्यादा है तो सकल लाभ आता है और यदि डेबिट का कुल क्रेडिट से ज्यादा है तो सकल हानि होती है। इसे स्प्रेडशीट द्वारा भी बनाया जा सकता है। चित्र 10 के अनुसार, सेल J6 एवं J7 बिक्री एवं अंतिम स्कन्ध को दर्शातें है। इसका कुल = SUM (J6 : J7) के सूत्र द्वारा सेल J23 में प्रविष्ट किया गया है। द्वितीय चरण में सभी प्रत्यक्ष खर्चो की गणना की गई है, इनकी जोड़ की गणना में की गई है। इसके बाद B21 को J23 से घटा कर = (J23 – B21) जिसे F21 में लिखा गया है।

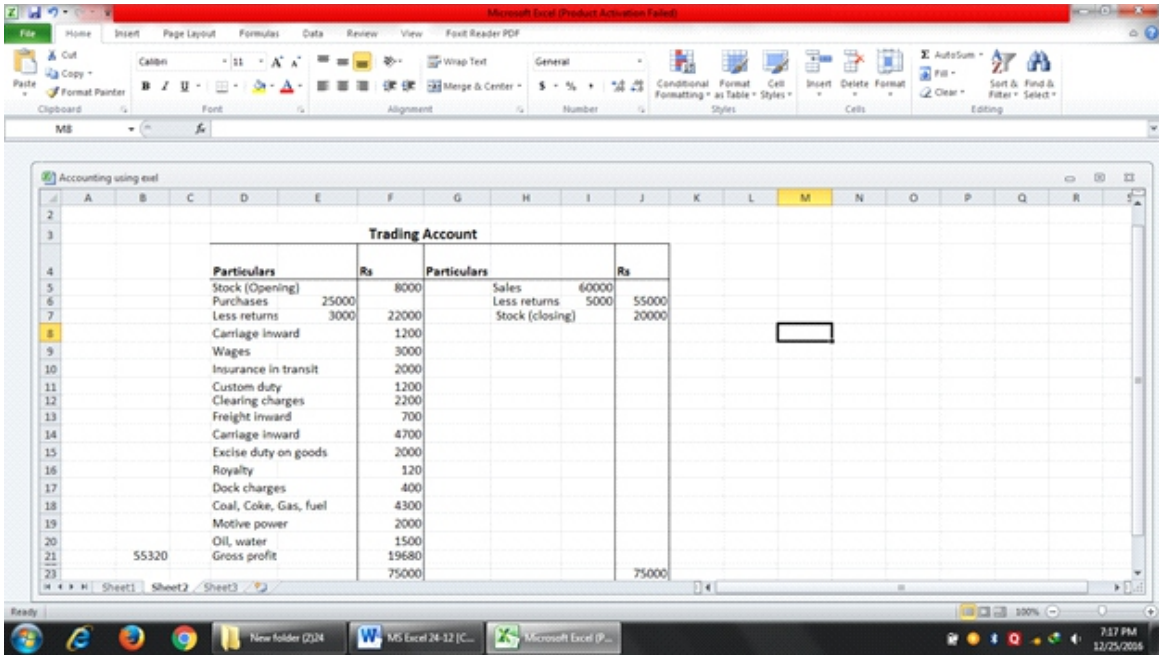

Trading Account

Particulars		Rs	Particulars		Rs
Stock (Opening)		8000	Sales	60000	
Purchases	25000		Less returns	5000	55000
Less returns	3000	22000	Stock (closing)		20000
Carriage Inward		1200			
Wages		3000			
Insurance in transit		2000			
Custom duty		1200			
Clearing charges		2200			
Freight Inward		700			
Carriage inward		4700			
Excise duty on goods		2000			
Royalty		120			
Dock charges		400			
Coal, Coke, Gas, fuel		4300			
Motive power		2000			
Oil, water		1500			
	55320	Gross profit		19680	
				75000	75000

चित्र 10 : व्यापार खाता

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

5. **लाभ हानि खाते को बनाना (Profit & Loss Account)** : लाभ – हानि खाते में अप्रत्यक्ष खर्चे एवं अप्रत्यक्ष आय को हस्तान्तरित किया जाता है। यह अंतिम खाता शुद्ध लाभ अथवा शुद्ध हानि की गणना के लिये किया जाता है। यदि क्रेडिट पक्ष, डेबिट पक्ष से ज्यादा है तो शुद्ध लाभ की स्थिति बनती है और यदि डेबिट पक्ष ज्यादा है तो शुद्ध हानि की स्थिति बनती है। स्प्रेडशीट शीट के माध्यम से इसे निम्न प्रकार से समझा जा सकता है। L5 से L7 सभी मदे आय से संबंधित है। जिसका कुल L19 में = SUM(L5 : L7) द्वारा दर्शाया गया है। G5 से G17 खर्चो की मदें है जिसका कुल योग C16 में लिखा गया है, इसके बाद L19 में से C16 को घटाकर G18 में शुद्ध लाभ की गणना की गई है। लाभ–हानि खाते को निम्न चित्र द्वारा दर्शाया गया है।

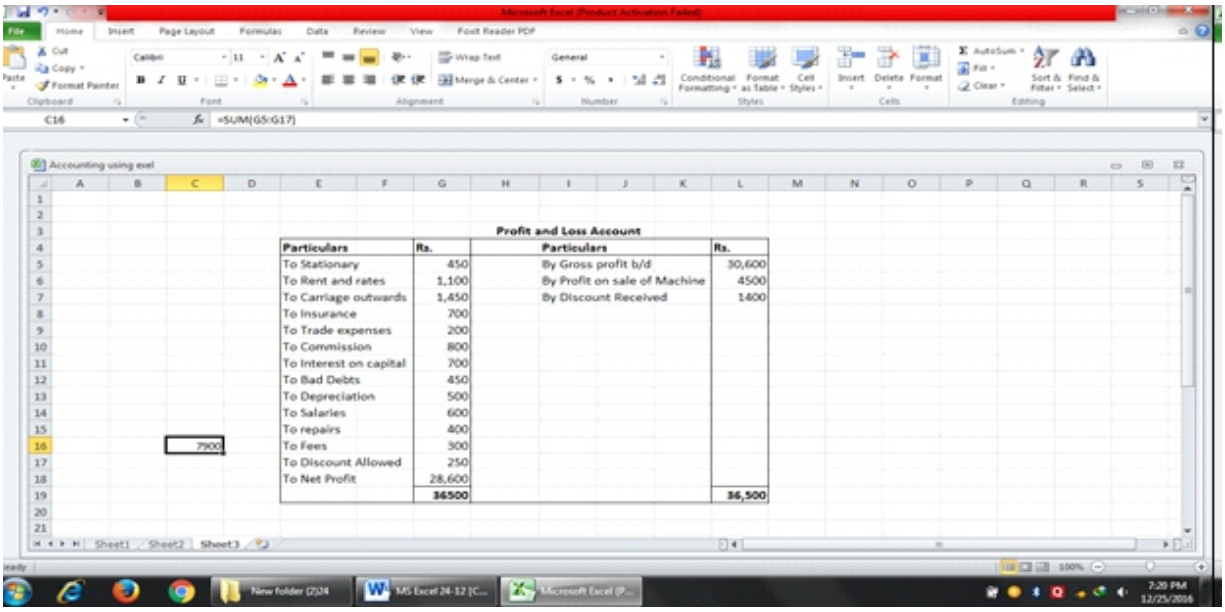

Profit and Loss Account

Particulars	Rs.	Particulars	Rs.
To Stationary	450	By Gross profit b/d	30,600
To Rent and rates	1,100	By Profit on sale of Machine	4500
To Carriage outwards	1,450	By Discount Received	1400
To Insurance	700		
To Trade expenses	200		
To Commission	800		
To Interest on capital	700		
To Bad Debts	450		
To Depreciation	500		
To Salaries	600		
To repairs	400		
To Fees	300		
To Discount Allowed	250		
To Net Profit	28,600		
	36500		36,500

चित्र 11 : व्यापार खाता

6. **तलपट (Trial Balance)** : इसी प्रकार तलपट का निर्माण भी स्प्रेडशीट को द्वारा किया जा सकता है।

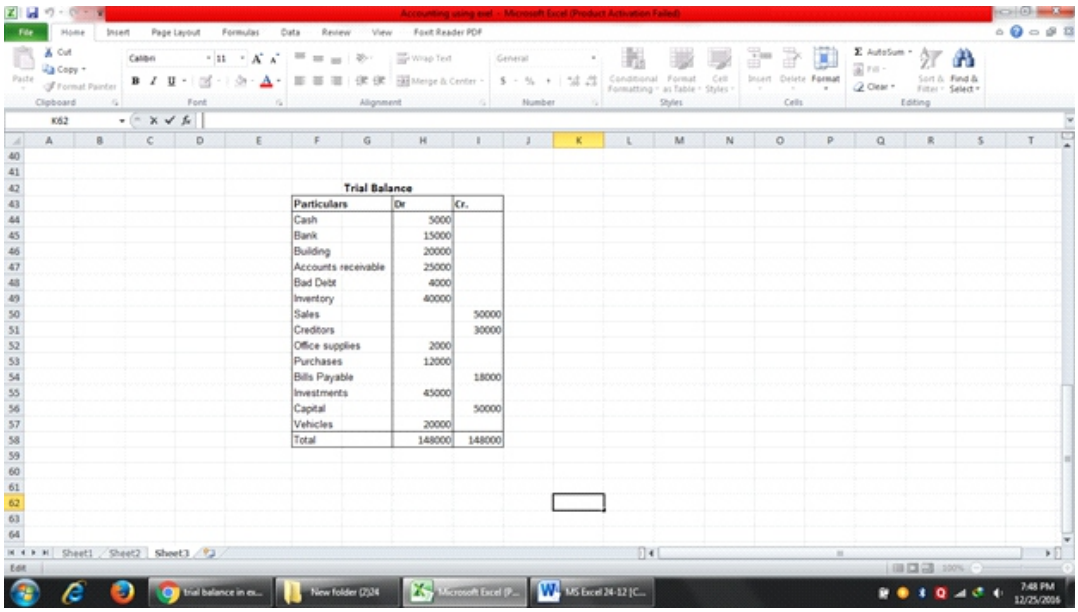

Trial Balance

Particulars	Dr	Cr.
Cash	5000	
Bank	15000	
Building	20000	
Accounts receivable	25000	
Bad Debt	4000	
Inventory	40000	
Sales		50000
Creditors		30000
Office supplies	2000	
Purchases	12000	
Bills Payable		18000
Investments	45000	
Capital		50000
Vehicles	20000	
Total	148000	148000

चित्र 12 : तलपट

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

7. **चिट्ठा (Balance Sheet)** : चिट्ठे के सम्पत्तियों एवं दायित्वों का योग बराबर होना चाहिए। किसी भी प्रकार के वित्तीय डेटा जो सेल में डाले गये है यदि हम उनमें परिवर्तन करते है तो इसका प्रभाव सूत्रों द्वारा गणना किये गये अंकों पर पड़ता है। संपत्तियों की जोड़ को E4 से E9 तक बताया गया है, कि जिसका योग E10 में दर्शाया गया है। इसका सिन्टेक्स है =SUM(E4:E9)

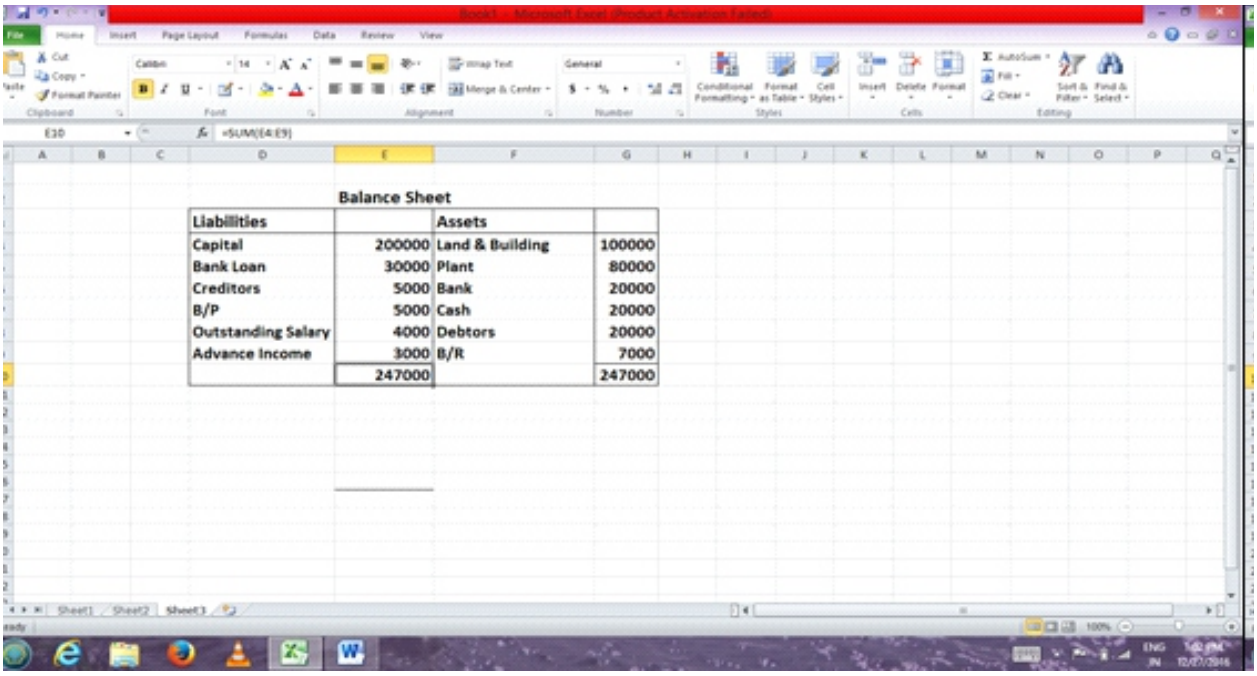

Balance Sheet

Liabilities		Assets	
Capital	200000	Land & Building	100000
Bank Loan	30000	Plant	80000
Creditors	5000	Bank	20000
B/P	5000	Cash	20000
Outstanding Salary	4000	Debtors	20000
Advance Income	3000	B/R	7000
	247000		247000

चित्र 13 : चिट्ठा

एक्सल स्प्रेडशीट द्वारा उपर्युक्त सभी लेखा विवरणों को बनाने के पश्चात् किसी भी मद में परिवर्तन करने पर उसका प्रभाव अंतिम शेष जैसे लाभ–हानि आदि पर तुरन्त प्रभाव से प्रदर्शित हो जायेगा। इस सुविधा का उपयोग लेखांकन समंकों के पुर्वानुमानों के लिए प्रभावी रूप से किया जा सकता है। इसे हम वित्तीय विवरणों का विश्लेषण के नाम से जानते है। स्प्रेडशीट के माध्यम से ऐसे विवरण काफी अल्प समय में बनाये जा सकते हैं। जिससे लेखा विशेषकों को निवेश आदि निर्णय लेने में आसानी रहती है।

8. **स्प्रेडशीट के अन्य उपयोग (Other uses of Spreadsheet)** : वित्तीय विवरणों के विश्लेषण के अतिरिक्त लेखाकारों एवं निवेशकों द्वारा स्प्रेडशीट का प्रयोग अन्य कई लेखा एवं वित्त सम्बन्धी कार्यों के लिए किया जा सकता है। कुछ महत्वपूर्ण वित्तीय कार्यों का उल्लेख निम्नलिखित में किया गया है :

(i) **कर की गणना (Calculation of Tax)** : स्प्रेडशीट द्वारा विभिन्न प्रकार के कर जैसे आयकर विक्रय कर, कस्टम ड्युटी, सर्विस टैक्स, आदि कि गणना एवं उनसे संबंधित स्रोतों के आधार पर करों का पूर्वानुमान लगाया जा सकता है। इसे निम्नलिखित उदाहरण द्वारा समझाया गया है। कॉलम A में बिक्री सम्बन्धी आंकड़े दिये हुए है। जिस पर 10 प्रतिशत कि दर से बिक्री कर लगाया है। जिसकी गणना निम्न मूल सूत्र द्वारा की गई है : (बिक्री कि राशि * कर का प्रतिशत)। एक्सल सूत्र के अनुसार दी गई सारणी में इस सूत्र को निम्न प्रकार से लगाया गया है। इसका सिन्टेक्स है, $=(A1 * 0.5)$ जिसकी गणना कि राशि को सेल B1 में दर्शाया गया हैं।

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

	A	B
	Sales	Tax
1	20	10
2	30	15
3	40	20
4	50	25
5	30	15
6	40	20
7	70	35
8	80	40
9	60	30
10	100	50

चित्र 14 : कर की गणना

(ii) **ऋण के किस्त कि गणना (Calculation of Insatallment)** : किसी निश्चित लोन राशि पर चक्रवृत्ति ब्याज लगने कि दशा में मासिक किश्त कि गणना में PMT सूत्र द्वारा प्रतिमाह देय किश्त की गणना कि जा सकती है। PMT फंक्शन का मूल सूत्र है। PMT(rate, nper, pv, [fv], [type]) यहां पर,

r=rate of interest

nper = Total Payments for Loan

pv=Principal amount

उदाहरण के लिए यदि व्यवसाय ने 6.75 प्रतिशत कि दर पर 200000 रूपये का ऋण बैंक से 30 वर्ष के लिया है। तो प्रतिमाह दी जाने वाली किश्त कि गणना निम्न सूत्र से की जायेंगी। = PMT(B4/B5, B3*5,-B2) । इस निम्न चित्र में दर्शाया गया है। प्रतिमाह देय राशि को B6 में अंकित किया गया है।

	A	B
1	Loan Data	Rs
2	Principal Amount	200000
3	Loan Term	30
4	Intrest Rate	6.75%
5	Payment per Year	12
6	Installment(Rs)	1297.2

चित्र 15 : किश्त की गणना

(iii) यदि प्रतिमाह दी जाने वाली किस्त में से ''मूल राशि'' (Principal Amount) की गणना करनी हो, तो इस दशा में PPMT फंक्शन का प्रयोग किया जायेगा:

= PPMT(rate/payment in a year, 1, years * payment in a year, Amount)

उदाहरण: यदि ब्याज दर 10 प्रतिशत है, एवं ऋण की किश्त प्रतिमाह के आधार पर देय है और ऋण की कुल राशि 100000 रू. व भुगतान अवधि 5 वर्ष के लिए है, तो प्रतिमाह दी जाने वाली किस्त में ''मूल राशि'' की गणना निम्न सूत्र से की जायेगी। = PPMT(10/12, 1,5*12, 100000) इस सूत्र द्वारा किश्त में 1291.37 रू. होगी। इसे निम्नलिखित चित्र द्वारा दर्शाया गया है। = PPMT (B1/B3, A7, B2 * B3, B4)

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

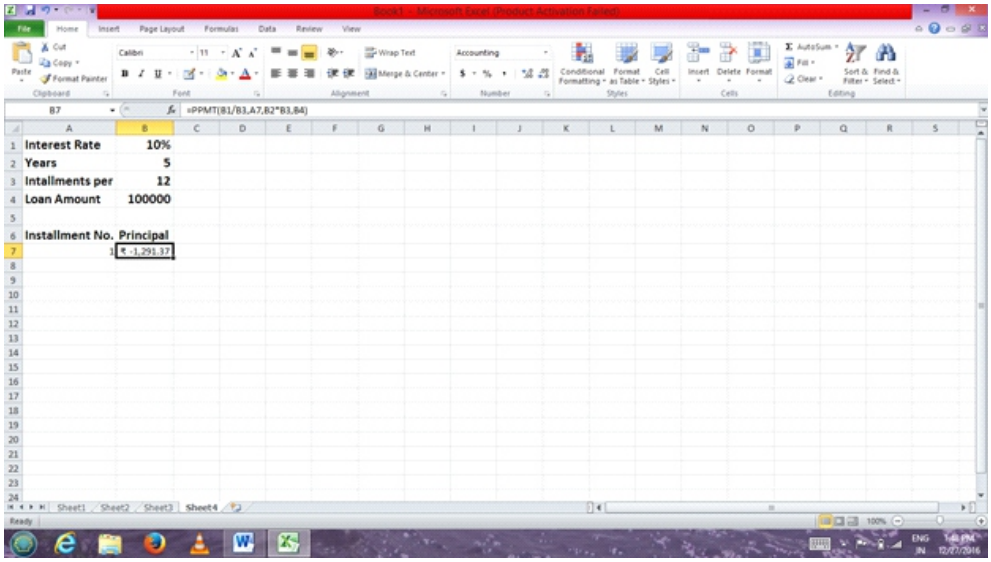

चित्र 16 : किस्त में मूल राशि की गणना

(iv) इसी प्रकार प्रतिमाह की जाने वाली ''किस्त'' में ब्याज की गणना करने हेतु IPMT फंक्शन का प्रयोग किया जायेगा, उपर्युक्त उदाहरण में इसका उपयोग निम्न सूत्र द्वारा किया जायेगा।

$=IPMT(10/12, 1, 5*12, 100000) = IPMT(B1/B3, A7, B2*B3, B4)$

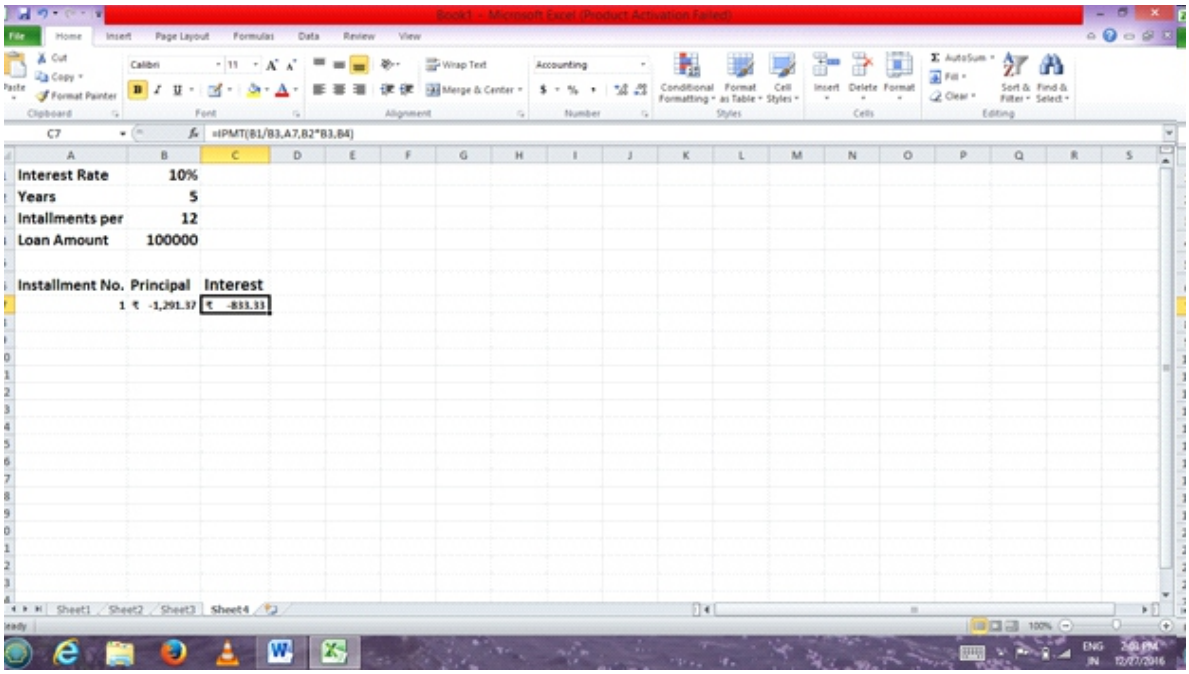

चित्र 17 : किस्त में ब्याज राशि की गणना

(v) पूँजी अथवा ऋण पर साधारण ब्याज की गणना करना (Caluculation of simple interest on Capital and loan)
पूंजी अथवा ऋण पर ब्याज की गणना मूल राशि (Principal Amount) पर एक निर्धारित दर की जाती है। इसके लिए निम्न सूत्र का प्रयोग होता है :

(Principal amount) x Rate/100.

यह निम्नः उदाहरण द्वारा समझा जा सकता है –

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

यदि 100000की राशि 8 प्रतिशत ब्याज दर पर 5 वर्षों के लिए ली गई है, तो ब्याज गणना करने के लिए (100000* 8/100) = 8000 प्रतिवर्ष के हिसाब से ब्याज देय होगा। 5 वर्षों के ब्याज की गणना के लिए (100000* 8/100) *5 करना होगा। चित्र के अनुसार पांच वर्षों के ब्याज की गणना हेतु सिन्टेक्स होगा :

=(B1/B2)*B3 अथवा = B1*.08

	A	B	C	D
1	Principal Amount	100000		
2	Rate	.08 %		
3	Year	5		
4				

चित्र 18 : ब्याज की गणना

(vi) **निवेश पर कुल आय की गणना** (Calculation of Total Income on Investment) : ब्याज पर कुल आय की गणना करने के लिए मूल राशि को जितने वर्षों बाद मूल राशि परिपक्व हो रही है उतने वर्षों के कुल ब्याज प्रतिशत (चक्रवर्तीय) से गुणा कर दिया जाता है। उदाहरण के लिए 1 वर्ष बाद 8 प्रतिशत की दर से यदि 100 रू निवेश किए जाता है तो एक वर्ष बाद वह कुल 108 रू हो जाएंगे। यह निम्न सारणी द्वारा दर्शाया गया है।

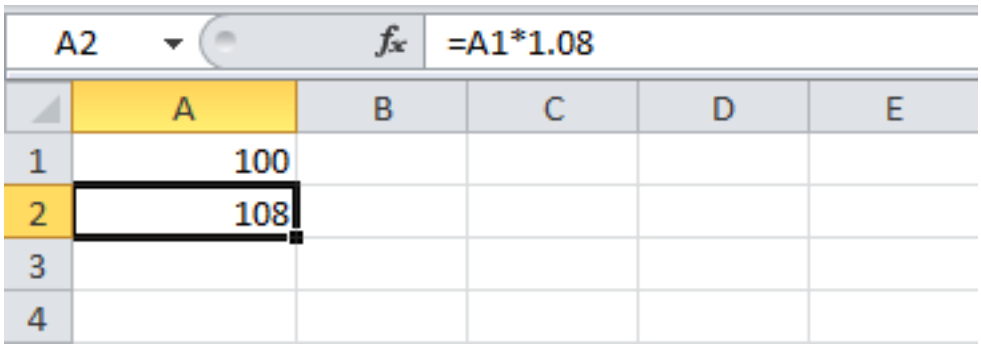

चित्र 19 : आय की गणना

यदि एक से अधिक वर्षों के लिए निवेश किया गया हो, करसर को ड्रेग करके जितने वर्षों के लिए, निवेश किया गया हो, उससे एक सेल आगे करसर को छोड देंगे। जैसे A1 पर मूल राशि है तो करसर को A6 तक ड्रेग करना होगा। उदाहरण : यदि किसी व्यक्ति ने 100 रू, 5 वर्षों के लिए निवेश किए हैं तो A2 तक निवेश का मूल्य ज्ञात कर करसर को A6 तक लाया जायेगा निम्न सारणी द्वारा दर्शाया गया है।

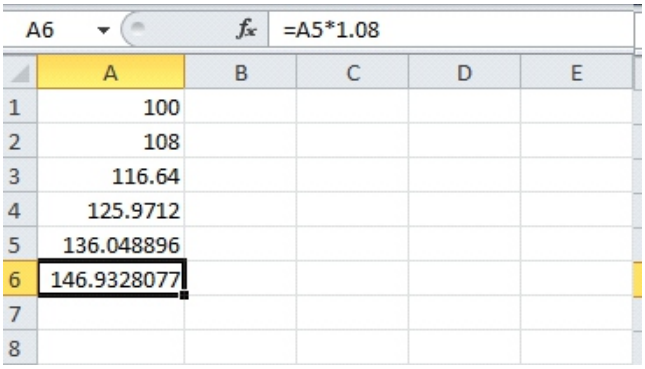

चित्र 20 : आय की गणना (एक से अधिक वर्ष)

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

(vii) मासिक आधार पर चक्रवृद्धि ब्याज की गणना (Calculation of Monthly Compound interest)

चक्रवृद्धि ब्याज की गणना में मूल एवं ब्याज की राशि पर ब्याज की गणना की जाती है। इसका मूल सूत्र होगा। उदाहरण : यदि 10,000 रू का निवेश 10 वर्ष के 5 प्रतिशत चक्रवृद्धि वार्षिक ब्याज पर किया जाता है जिस पर ब्याज की गणना मासिक आधार पर होगी तो निम्न सूत्र 10 वर्ष के अंत में मिलने वाली राशि ज्ञात की जायेगी

Principal amount x (1+Interest/compounding period in year) ^ (Compunding period x years)

निम्न चित्र द्वारा दर्शाया गया है।

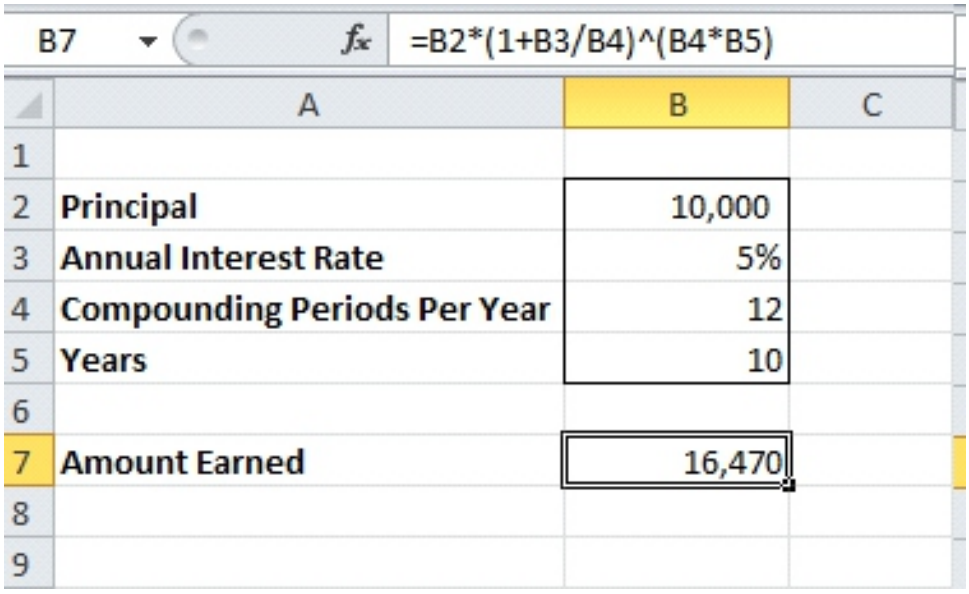

चित्र 21 : मासिक आधार पर आय की गणना

यदि गणना त्रैमासिक आधार पर की जाती है तो कुल मिलने वाली राशि की गणना निम्न सारणी द्वारा प्रस्तुत की गई है।

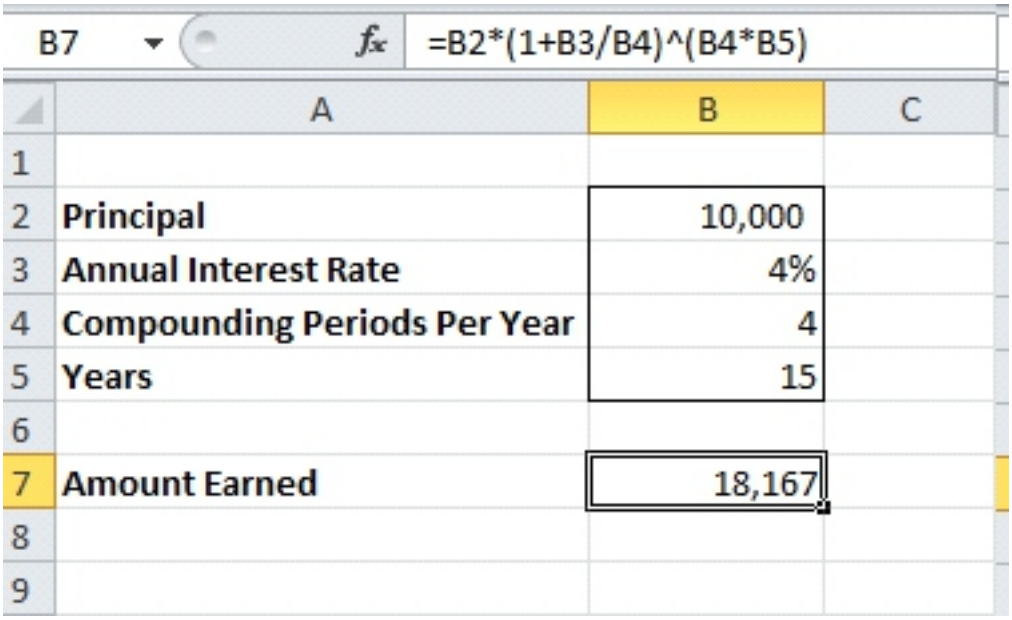

चित्र 22 : त्रेमासिक आधार पर आय की गणना

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

(viii) **सम्पत्तियों पर ह्रास की गणना (Deprication on Assets)** : व्यावसायिक संपत्तियों की ह्रास की गणना करने की अनेक विधियां प्रचलित है। स्प्रेडशीट के सूत्रों द्वारा ह्रास की गणना करना, इस बात पर निर्भर करता है कि संपत्ति पर ह्रास किस विधि से लगाया गया है।

(a) स्थाई संपत्ति मूल्य विधि (Straight Line Method) : इस विधि के अनुसार प्रतिवर्ष ह्रास को मूल्य स्थाई रहता है। इसकी SLN फंक्शन द्वारा की जा सकती है। इसका सिन्टेक्स सूत्र है :

=SLN(cost, salvage, life)

उदाहरण– यदि एक स्थाई संपत्ति की लागत 10000 रू. है, जिस पर 1000 रूपये सेलवेज मूल्य 1000 रूपये है। संपत्ति 10 वर्षों तक उपयोग में आयेगी। इस पर ह्रास की सिन्टेक्स गणना सूत्र के अनुसार होगी ।

=SLN(B12, B13, B14) जों कि 9000 रूपये होगी।

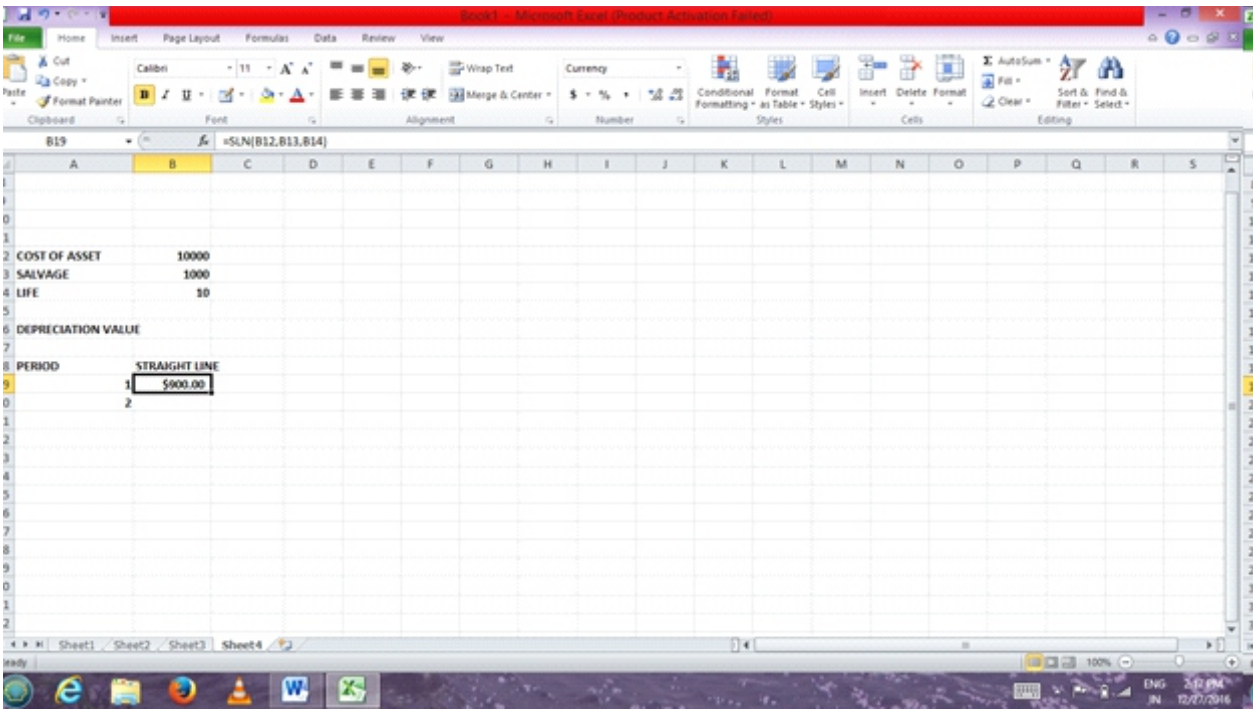

चित्र 23 : एसएलएन सूत्र पर आधारित ह्रास आय की गणना

(b) क्रमागत ह्रास पद्धति (Written Down Value Method) इस विधि के अनुसार क्रमागत ह्रास की गणना DB फंक्शन द्वारा की जायेगी जिसका सिन्टेक्स है :

=DB(cost of asset, salvage, life,1)

स्प्रेडशीट पर सूत्र के प्रयोग की दशा में पूर्व के उदाहरण में सूत्र होगा।

=DB(B24, B25, B26, A29)

इसके अनुसार ह्रास का मूल्य 2060 रूपये होगा।

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

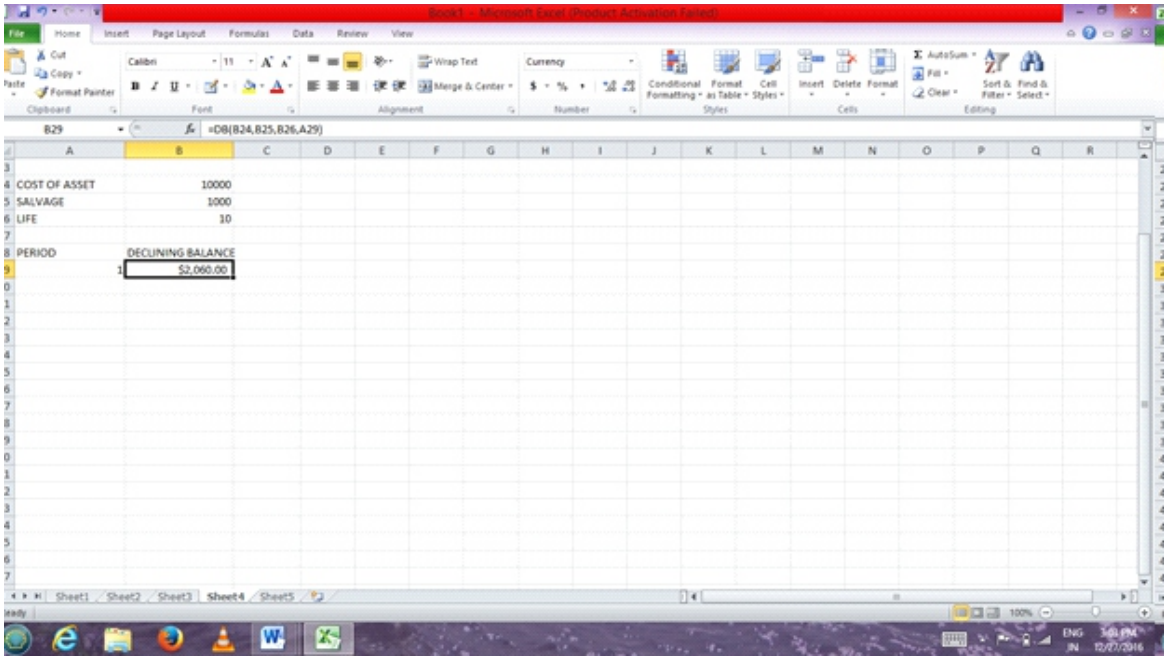

चित्र 24 : ह्रास की गणना

वित्तीय पूर्वानुमान (Financial Forcasting)

वित्तीय पूर्वानुमानों के लिये भी एक्सल स्प्रेडशीट का उपयोग किया जाता है। यह बजट एवं प्रोजेक्ट प्लानिंग का एक हिस्सा होता है। इसका विश्लेषण वित्तीय प्रबन्धन में किया जाता है। इसके लिये प्रमुख रूप से दो प्रकार के विश्लेषणात्मक वित्तीय विवरण स्प्रेडशीट में बनाए जाते है।

पूर्वानुमानित लाभ हानि खाता :

इस वित्तीय विवरण के माध्यम से भविष्य में होने वाले लाभ अथवा हानि की गणना की जा सकती है। स्प्रेडशीट में खर्चो एवं आय के आंकड़े सेल में प्रविष्ट किये जाते है। किसी भी सेल के आंकड़ो को बदलने पर उसका प्रभाव तुरन्त प्रभाव से अंतिम गणक (लाभ अथवा हानि) पर पड़ता है। उदाहरण के लिये यदि वेतन में 500 रू की वृद्धि कर दी जाती है। तब शुद्ध लाभी भी स्वतः 500 रू कम हो जायेगा। पूर्वानुमानों की गणना प्रतिशत के माध्यम से भी की जा सकती है। जैसे विक्रय में 10 प्रतिशत की वृद्धि करने पर लाभ अथवा हानि पर पड़ने वाले प्रभाव की गणना की जा सकती है।

पूर्वानुमानित चिट्ठा :

इस प्रकार के चिट्ठे द्वारा हम भविष्य में हमारे दायित्व एवं सम्पत्तियों की स्थिति को पूर्वानुमानित किया जा सकता है। जैसे लाभ में 10 प्रतिशत बढ़ोतरी होने पर पूँजी पर एवं कुल दायित्वों पर पड़ने वाले प्रभाव की गणना की जा सकती है। इसी प्रकार से भविष्य में नकद, चल एवं अंचल सम्पत्तियों की स्थिति का पूर्वानुमान भी लगाया जा सकता है।

एक व्यावसायिक संगठन में बैंक अथवा अन्य वित्तीय संस्था से ऋण लेने की आवश्यकता रहती है। भविष्य में प्रस्तावित योजनाओं के अनुसार श्रण का अनुमान लगाया जाता है। बैंक पूर्वानुमानित वित्तीय विवरणों के अनुसार ही ऋण प्रदान करता है। इससके एम एम एक्सल स्प्रेडशीट की उपयोगिता एवं महत्व का पता चलता है। इसका उपयोग कर एक संस्था अपनी वित्तीय निर्णयों को तीव्रता एवं सटीकता से ले सकती है।

पाठ का सार

एक्सेल यह अनेक खानों में बना स्प्रेडशीट प्रोग्राम होता है, जिसकी सहायता से आप विभिन्न डाटाओं को सारणीबद्ध तरीके से रख तथा देख सकते है। इसका उपयोग व्यावसायिक एवं गैर व्यावसायिक दोनों ही कार्यों के लिए हो सकती है।

एक्सेल के प्रत्येक फाइल को वर्कबुक के नाम से जाना आता है। किसी भी वर्कबुक के अन्तर्गत अनेकों वर्कशीट हो

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

सकते है। किसी वर्कशीट को कॉलम्स तथा रोज से निर्मित जाली समझा जा सकता है।

एम.एस. एक्सेल स्प्रेडशीट के का महत्व : स्कन्ध प्रबन्धन, कार्य समय की गणना, लेखांकन एवं एक्सेल, बिल का प्रारूप, ग्राहकों का विवरण

बुनियादी सूत्र (Formulae) और क्रियाऐं (Function) जोड़ना (+), घटना (–), गुना करना (*), विभाजन (/) वित्तीय पूर्वानुमानों में भी स्प्रेडशीड का प्रयोग किया जाता है। जैसे पूर्वानुमानित लाभ–हानि खाता एवं चिट्ठा स्प्रेडशीड के द्वारा विभिन्न फंक्शन एवं सूत्रों के द्वारा लेखांकन संबंधी आंकड़ों की गणना की जा सकती है।

अभ्यासार्थ प्रश्न (Questions for Exercise)

बहुचयनात्मक प्रश्न

1. ऋण की किश्त में सम्मिलित ब्याज की गणना हेतु कौनसा फंक्शन लिया जायेगा–

   (अ) PPMT (ब) IPMT (स) FAPM (द) उपर्युक्त कोई नहीं

2. सेल A1, A2 एवं A3 के कुल योग को ज्ञात करने के लिए सूत्र होगा–

   (अ) SUM = (A1+A2+A3) (ब) SUM (A1, A2, A3)

   (स) =SUM (A1 : A3) (द) उपर्युक्त में से कोई नहीं

3. एक्सल वर्कबुक के संयोजक हैं :

   (अ) वर्कबुक (ब) वर्कशीट (स) चार्ट (द) वर्कशीट एवं चार्ट

4. वर्कशीट में रो तथा कॉलम टाईटल को स्थिर करने हेतु, जिससे जब स्प्रेडशीट को स्क्रॉल किया जाएं तो, वे स्क्रॉल न हो, निम्न में से क्या उपयोग में लिया जायेगा :

   (अ) फ्रीज पैन्स कमाण्ड (ब) अन–फ्रीज पैन्स कमाण्ड

   (स) होल्ड टाइटल कमाण्ड (द) मर्ज कमाण्ड

5. विन्डोस के किस जगह पर वेल्यू अथवा सूत्रों को टाईप किया जाता हैं :

   (अ) टाईटल बार पर (ब) सॉर्ट स्क्रीन मीनू कमाण्ड द्वारा

   (स) फॉर्मूला बार पर (द) स्टेन्र्ड बार पर

6. डेटा या सूत्रों को कॉपी किया जा सकता हैं :–

   (अ) ऐडिट मीनू पर कट, कॉपी पेस्ट कमाण्ड द्वारा

   (ब) सॉर्ट स्क्रीन मीनू कमाण्ड द्वारा

   (स) स्टेन्डर्ड टूलबार के बटनों द्वारा

   (द) उपर्युक्त सभी

7. निम्न में से कौनसा सूत्र सही नहीं है–

   (अ) =(10+50) (ब) =(B7xB1) (स) =(B7+14) (द) 14+15

8. स्थाई ह्रास की गणना करने के लिए कौनसा फंक्शन काम में लिया जायेगा–

   (अ) SLN (ब) PRF (स) DVD (द) LTF

9. क्रमागत ह्रास पद्धति गणना के लिए सिन्टेक्स क्या होगा?

   (अ) =DB (cost, salvage, life, 1) (ब) = FB (cost, 25, 1)

   (स) =PFB (cost, salvage, life) (द) उपर्युक्त में से कोई नहीं

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

10. किश्त की राशि से मूल राशि ज्ञात करने के लिए फंक्शन होगा–

(अ) RPT (ब) PMT (स) PPMT (द) IPMFT

उत्तर–

1	2	3	4	5	6	7	8	9	10
ब	स	द	अ	स	द	द	अ	अ	स

लघुत्तरात्मक प्रश्न

1. एम.एस. एक्सेल के मूल तत्वों की व्याख्या कीजिए।
2. स्प्रेडशीट की प्रमुख विशेषताओं का वर्णन कीजिए।
3. लेखांकन ने स्प्रेडशीट के महत्व को समझाईयें।
4. स्प्रेडशीट एवं वर्कबुक में अन्तर स्पष्ट कीजिए।
5. निम्न फंक्शनस (Functions) को उदाहरण देकर समझाईये :
   (i) PMT
   (ii) SUM
   (iii) IPMT
6. महेश ने 5 प्रतिशत की ब्याज दर पर कार खरीदने हेतु 500000 रूपये का ऋण लिया। इस ऋण का भुगतान 10 वर्षों में त्रैमासिक आधार पर करना है। स्प्रेडशीट में प्रति त्रैमासिक आधार पर दी जाने वाली किस्त की गणना कीजिए।

अतिलघुत्तरात्मक प्रश्न

1. स्प्रेडशीट क्या है?
2. PPMT फंक्शन का सिन्टेक्स बताईऐं।
3. स्प्रेडशीट में फाईल को सेव करने की क्या प्रक्रिया है?
4. सेल एवं रो किसे कहते है?
5. एक 500000 रूपये की लागत वाली मशीन की आयु 10 वर्ष की है। स्प्रेडशीट पर मूल ह्रास की गणना की प्रक्रिया बताईएं।
6. चक्रवर्तीय ब्याज की गणना का उदाहरण द्वारा समझाईए।

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

14

कम्प्यूटरीकृत लेखांकन पद्धति
(Computerized Accounting System)

अध्ययन के उद्देश्य (Learning Objective)

इस अध्याय के अध्ययन के पश्चात आप

- कंप्यूटर प्रणाली का अर्थ, मुख्य भाग व क्षमताऐं जान सकेंगे।
- लेखाकंन में कंप्यूटर की उपयोगिता एवं लाभ को समझ सकेंगे।
- लेखांकन प्रक्रिया के स्वचालन का विवरण, जान सकेंगे।
- कम्प्यूटरीकृत लेखांकन पद्धति की संरचना को समझ सकेंगे।
- विभिन्न प्रबन्धन सूचना प्रणाली एवं लेखांकन सूचना प्रणाली को समझ सकेंगे।
- कम्प्यूटरीकृत लेखांकन सॉफ्टवेयर के बारे में जान पायेंगे।
- मानवीय (Manual) एवं कम्प्यूटरीकृत लेखा प्रणाली को समझ सकेंगे।

किसी भी व्यापारिक संस्था एवं व्यावसायिक संगठन में समस्त वित्तीय लेन–देन, स्कंध एवं संपत्तियों का मूल्याकन, भण्डारण, कर्मचारियों के वेतन आदि का लेखा मैन्युअल (मानवीय) लेखा प्रणाली द्वारा पूर्ण किया जाता है। लेखापाल या अन्य लेखाधिकारी द्वारा, रोकड़बही, खाताबही तलपट, लाभ–हानि खाता एवं चिट्टे बनाये जाते है। इस प्रकार से तैयार किए गऐ लेखों के माध्यम से व्यापार की वास्तविक स्थिति ज्ञात की जाती है। यह अंतिम खाते व्यवसायी द्वारा निर्णय लेने हेतु काम में आते हैं। इन्हीं पुस्तकों एवं लेखों के माध्यम से प्रतिवेदन तैयार किए जाते है। उपर्युक्त सभी प्रकार के वित्तीय विवरण मेनुअल प्रणाली अथवा हस्तरूपी तौर पर तैयार किये जाते है। इस प्रकार के लेखांकन पद्धति के उपयोग से समय की हानि होती है, साथ ही कई प्रकार की त्रुटियों होने की संभावना रहती है। ऐसी अन्य कई प्रकार की परेशानीयॉ एवं जटीलताऐं परमपरांगत लेखा प्रणाली में आती हे। इन सभी जटिलताओं एवं समस्याओं का समाधान एक बेहतर तकनीक के द्वारा किया जा सकता है। सूचना एवं प्रौद्योगिकी के विकास के साथ–साथ व्यवसाय की गतिविधिओं में तीव्रता लाने के लिए लेखांकन की दृष्टि से कई मशीनें विकसित की गई। ये सभी मशीने अप्रत्यक्ष रूप से लेखांकन संबंधित कार्यों को गति प्रदान करने में आंशिक रूप से सफल रही। उदाहरण के लिए बिलिंग मशीन जिसमें ग्राहक की कुछ सीमित जानकारीयां अंकित रहती थी। यह मशीन साधारण अंक गणित जैसे जोड़, बाकी, गुणा भाग आदि करने में सक्षम थी एवं वह ग्राहक की जानकारी एवं बिल की राशि को निकाल सकती थी। प्रचालक (Operator) द्वारा रसीद स्वचालित रूप से तैयार कर दी जाती थी। एक प्रकार से यह मशीन केल्कूलेटर एवं टंकण (टाईपराईटर) दोनों का ही कार्य एक छोटे स्तर पर कर सकती थी। ऐसी मशीनों द्वारा कुछ सीमित कार्य ही किए जा सकते थे। वित्तीय लेन–देन की बढ़ोतरी के साथ नई तकनीकों का भी विस्तार हुआ। गति, स्टोरेज एवं प्रोसेसिंग क्षमता में बदलाव एवं बढ़ोतरी के कारण ऐसी मशीनों को कम्प्यूटर द्वारा चलाया जाता था। तुरन्त निर्णय लेने एवं लेन–देन की प्रक्रियाओं में जटिलता कम करने हेतु इन मशीनों को साध्य बनाया गया।

कम्प्यूटर प्रौद्योगिकी और इसके उपयोग ने पिछले कुछ दशकों से एक महत्वपूर्ण स्थान प्राप्त किया है। ऐतिहासिक दृष्टि से इसका प्रयोग प्रभावी ढंग से विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी में तार्किक समस्याओं के निदान के लिए किया गया है। इसका प्रयोग आर्थिक योजनाओं एवं पूर्वानुमानों के लिये किया गया है। इसके अत्यधिक प्रचलन से व्यापार एवं वाणिज्य में भी इसके उपयोग की आवश्यकता बढ़ गई हैं कम्प्यूटर का सबसे महत्वपूर्ण प्रभाव द्वारा प्रस्तुत डेटा की प्रोसेसिंग एवं उसका स्टोरेज है। वर्तमान में अकांउटिंग के अलावा एम.आई.एस का संचालन एवं उपयोग कम्प्यूटर के बिना असंभव है। तीव्र प्रतिस्पर्द्ध एवं बढ़ते व्यापारिक लेन–देन की जटिलताओं को हल करने के लिए विभिन्न प्रकार के डेटा को परिचालन (Manipulate) एक बड़ी समस्या है। लेखा संमकों को इस प्रकार लिपिबद्ध करना आवश्यक हो गया है कि आवश्यकता पड़ने पर उनका सही समय पर उपयोग किया जा सके। लेखा जानकारी को इस प्रकार लिपिबद्ध करना केवल कम्प्यूटरीकृत लेखा प्रणाली द्वारा ही संभव हो सकता है।

कम्प्यूटर लेखा पद्धति की अवधारणा (Concept of Computer Accounting System)

कम्प्यूटर की उत्पत्ति के पहले वित्तीय लेन–देन का विवरण मैन्युअल लेखा बही के माध्यम से ही किया जाता है। लेखांकन की प्रक्रिया के अनुसार एक लेखाधिकारी रोकड़ बही, खाता बही आदि पुस्तकें तैयार करते है। इन्हीं पुस्तकों को माध्यम से हस्तलिखित अंतिम खाते तैयार किए जाते हे। जिसमें लाभ–हानि खाता एवं चिट्ठा तैयार होता है।

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

कम्प्यूटरीकृत लेखा पद्धति का आशय : ''कम्प्यूटरीकृत लेखा पद्धति ऐसी तकनीक है, जिसके द्वारा सम्पूर्ण लेखांकन की गतिविधियों का कम्प्यूटर के माध्यम से संचालित किया जाता हैं''।

इस पद्धति के क्रियान्वन हेतु निम्न आवश्यकताऐं रहती है।

1. कम्प्यूटर (Computer)
2. सॉफ्टवेयर (Software)
3. हार्डवेयर (Hardware)
4. उपयोगकर्ता (User)
5. नेटवर्किंग प्रक्रिया (Networking Procedures)

1. **कम्प्यूटर (Computer)** : कम्प्यूटर शब्द अंग्रेजी के ''Compute" शब्द से बना है, जिसका अर्थ ''गणना'', करना होता है इसलिए इसे गणक या संगणक भी कहा जाता है। ''कम्प्यूटर एक इलेक्ट्रोनिक मशीन है जिसमें समकों को स्वीकार करके उसका परिचालन करने एवं समस्याओं का समाधान करने की क्षमता होती है। इसका आविष्कार गणना करने के लिये हुआ था। पुराने समय में कम्प्यूटर का कार्य केवल गणना करने के लिये किया जाता था किन्तु आजकल इसका प्रयोग डाक्यूमेन्ट बनाने, ई–मेल, ऑडियो, विडियो, इलेक्ट्रोनिक गेम्स, डेटाबेस बनाने के लिए किया जाता है। इसका उपयोग बैंकों में शैक्षणिक संस्थानों में, कार्यालयों में, घरों में, दुकानों में कम्प्यूटर का उपयोग बहुतायत रूप से किया जा रहा है, कम्प्यूटर केवल वह काम करता है जो हम उसे करने को कहते हैं यानी केवल उन निर्देशों को मानता है जो पहले से कम्प्यूटर के अन्दर डाले गये है :–

2. **सॉफ्टवेयर (Software)** : सॉफ्टवेयर कम्प्यूटर को चलाने के लिए अथवा कोई निश्चित परिणाम प्राप्त करने के लिए कम्प्यूटर को दिए गए निर्देश प्रोग्राम्स का एक समूह है, जो हार्डवेयर के माध्यम से कार्य करता है। यह सारे निर्देश कोड के माध्यम से कम्प्यूटर में स्टोर किए जाते है। सॉफ्टवेयर में सबसे प्रमुख ओपरेटिंग सिस्टम होता है, जिससे पूरी कम्प्यूटर प्रणाली प्रचलित होती है। यह ओपरेटिंग सिस्टम कम्प्यूटर एवं उपयोगकर्ता के बीच संबंध स्थापित करता है, जिसके द्वारा कम्प्यूटर के स्रोत व्यवस्थित हो जाते है, एवं इस पर कार्य करना उपयोगकर्ता के लिए आसान हो जाता है। सॉफ्टवेयर को तीन प्रकार से विभाजित किया गया है:–

   (i) कम्प्यूटर पर कुछ निश्चित प्रकार के कार्य करने के लिए यूटिलिटी प्रोग्राम्स बनाऐ जाते है, जिसके माध्यम से मुख्य कार्य के अतिरिक्त कुछ सहयोगी संक्रियाओं का कार्य होता है। यह सभी प्रोग्राम्स भी सॉफ्टवेयर की श्रेणी में आते है। इस प्रकार के प्रोग्राम द्वारा किसी फाईल को हस्तांतरित करना, डेटा को डिलिट करना, स्टोर करना कापी करना आदि के कार्य किए जाते हैं।

   (ii) इसी प्रकार लेंगुऐज प्रोसेसस एक सॉफ्टवेयर है जो एक स्रोत प्रोग्राम को मशीन की भाषा में परिवर्तित करता है। मशीन भाषा वह भाषा है जिसके द्वारा कम्प्यूटर को दिए गये निर्देशों को कम्प्यूटर अपनी भाषा में परिवर्तित करता है।

   (iii) अनुप्रयोग (application) सॉफ्टवेयर एक प्रोग्रामों का समूह जिसकी द्वारा किसी एक निश्चित प्रक्रिया को किया जाता है, ऐसे सॉफ्टवेयर को अनुप्रयोग सॉफ्टवेयर अथवा (application software) कहा जाता है। उदाहरण के तौर पर वित्तीय लेखांकन, पे–रोल (वेतन की गणना), स्कंध की लेखा आदि। इसी प्रकार से सिस्टम सॉफ्टवेयर मशीन की आतंरिक क्रियाओं को नियंत्रित एवं संचालित करता है।

3. **हार्डवेयर** (Hardware) : कम्प्यूटर यंत्र के वो अंग जिससे इस मशीन को चलित किया जाता है, ऐसे सभी अंगों को हार्डवेयर कहते है। ये सभी अंगों (यंत्रों) का संचालन विद्युत द्वारा किया जाता है। ये दो प्रकार के होते है। इनपुट यंत्र जिसके माध्यम से सूचनाओं को कम्प्यूटर में फीड किया जाता है, जैसे की–बोर्ड, माऊस, पेन ड्राईव। आऊटपुट यंत्र वे यंत्र है जिसके माध्यम से सूचनाओं को प्रकट (Display) किया जाता है। मॉनीटर एवं प्रीटर इसके उदाहरण है।

4. **उपयोगकर्ता एवं परिचालनकर्ता** (Users & Operators) : यह उन व्यक्तियों का समूह है जो कम्पयूटर के संचालन में अपना योगदान देते है। इसमें प्रमुख रूप से सिस्टम विश्लेषक (System Analyst) होते है, जो डेटा प्रोसेसिंग सिस्टम के प्रारूप को तैयार करते है। इसके अतिरिक्त प्रोग्रामर वे लोग है जो डेटा प्रोसेसिंग की प्रारूप ने कुछ प्रोग्रामिंग की भाषा द्वारा लागू करते है। अन्त में संचालक (Operaters) जो कम्प्यूटर को संचालित करने का कार्य करते है।

5. **डेटा (Data)** : डेटा, संमकों को कहा जाता है जो किसी भी प्रकार के अंकों या लेख के रूप में कम्प्यूटर में किसी निश्चित उपयोग के लिए स्टोर किए जाते है। जैसे एक स्कूल के डेटा में छात्रों से संबंधित सभी प्रकार की जानकारी उपलब्ध रहती है। कम्प्यूटर डेटा को व्यवस्थित एवं वर्गीकृत कर इसका समन्वय करता है। किसी भी प्रकार का निर्णय लेने में डेटा का उपयोग किया जाता है।

6. **संयुक्तिकरण** (**Networking**) : सूचनाओं के आदान–प्रदान हेतु, कम्प्यूटर को कई उपकरणों से जोड़ा जाता है। इसमें इंटरनेट प्रमुख है। एक छोटे नेटवर्क के रूप में इसे लोकल ऐरिया नेटवक (LAN) के माध्यम से जोड़ा जा सकता है। बड़े नेटवर्क

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

के लिए WAN (Wide Area Network) का प्रयोग किया जाता है।

कम्प्यूटर के अंग (Parts of Computers)

कम्प्यूटर के अंगों का तीन प्रकार से बांटा जा सकता है –

1. इनपुट इकाई
2. आऊटपुट इकाई
3. केन्द्रीय प्रोसेसिंग इकाई (Central Processing Unit)

1. **इनपुट यंत्र (Input Device)** यह वह हार्डवेयर डिवाइस होती है जिसे हमें कम्प्यूटर से कोई भी डाटा या कमाण्ड इनपुट करा सकते है। इनपुट डिवाइस के उदाहरण है माऊस, की–बोर्ड, स्केनर, डी.वी.डी. ड्राईव, पेन ड्राईव, कार्डरीडर, माइक्रोफोन।
2. **आऊट यंत्र (Output Device)**: यह वह हार्डवेयर डिवाइस होती है जिसे हमें कम्प्यूटर से कोई भी डाटा या कोई भी आउटपुट प्राप्त होती है। उदाहरण के लिये मोनीटर, स्पीकर, प्रिन्टर, प्रोजेक्टर, हैडफोन। जैसे लेखा संमकों को कम्प्यूटर में फीड करने के पश्चात उनकी प्रोसेसिंग द्वारा लाभ–हानि खाता एवं तलपट निकाला जाता है। जिसे मोनीटर के माध्यम से प्रदर्शित किया जा सकता है।
3. **केन्द्रीय प्रोसेसिंग इकाई (Central Processing Unit) :** कंप्यूटर का मुख्य भाग है, इसे आप कंप्यूटर का मस्तिष्क भी कह सकते है, इसका कार्य है कंप्यूटर पर आने वाले इनपुट और निर्देशों को प्रोसेस करना है।

कंप्यूटर की यह यूनिट अंकगणित, तार्किक, नियंत्रण से जुड़े कार्य, इनपुट कार्य, आउटपुट कार्य संपन्न करती है। इसे आम तौर पर प्रोसेसर के रूप में भी जाना जाता है।कम्प्यूटर को ठीक प्रकार से कार्य करने के लिए सॉफ्टवेयर और हार्डवेयर दोनों की आवश्यकता होती है। यह दोनों एक दूसरे के पूरक है। कम्प्यूटर सॉफ्टवेयर से हार्डवेयर कमांड दी जाती है किसी हार्डवेयर को कैसे कार्य करना है उसकी जानकारी सॉफ्टवेयर के अन्दर पहले से ही स्टोर कर दी जाती है। कम्प्यूटर के सीपीयू से कई प्रकार के हार्डवेयर जुड़े रहते हैं, इन सब के बीच तालमेल बनाकर कम्प्यूटर को ठीक प्रकार से चलाने का काम करता है।

इसे कंप्यूटर में मदर बोर्ड पर लगाया जाता है और मदर बोर्ड के माध्यम से ही कंप्यूटर के अन्य घटक एक दूसरे से जुड़े होते है।

CPU के मुख्य घटक**:**

(i) अंकगणितीय तर्क इकाई (Arithmetic Logic Unit)

(ii) प्रोसेसर रजिस्टर (Processor Register)

(iii) नियन्त्रण इकाई (Control Unit)– कम्प्यूटर के कार्यप्रणाली की प्रक्रिया एक चरणबद्ध तरीके से होती है –

इनपुट (Input) ––––– प्रोसेसिंग (Processing) ––––– आउटपट (Output)

कम्प्यूटर की पूर्ण प्रक्रिया निम्न चरणों में समझी जा सकती हैं।

- इनपूट के लिये आप की–बोर्ड, माउस इत्यादि इनपुट डिवाइस का प्रयोग करते हैं साथ ही कम्प्यूटर को सॉफ्टवेयर के माध्यम से कमांड या निर्देश देते हैं या डेटा एंटर करते है।
- यह इस प्रक्रिया का दूसरा भाग है इसमें आपके द्वारा दी गयी कमांड या डाटा को प्रोसेसर द्वारा सॉफ्टवेयर में उपलब्ध जानकारी और निर्देशों के अनुसार प्रोसेस कराया जाता है।
- तीसरा और अंतिम भाग आउटपुट इसमें आपके द्वारा दी गयी कमाण्ड के आधार पर प्रोसेस की गयी जानकारी का आउटपुट, कम्प्यूटर द्वारा आपको दिया जाता है, जो आपको आउटपुट डिवाइस द्वारा प्राप्त हो जाता है।

कम्प्यूटर के प्रकार (Types of Computer)

कार्य या उपयोग करने के उद्देश्य के आधार पर कम्प्यूटर को अलग–अलग प्रकारों में बांटा गया है। हर क्षेत्र में क्षमता के अनुसार अलग–अलग कम्प्यूटरों का उपयोग किया जाता है। कुछ कम्प्यूटर शक्तिशाली, बड़े, अधिक गति, या लंबे समय तक चलने वाले हो सकते है।

1. **एनालॉग कम्प्यूटर (Analog Computer)** – एनालॉग कम्प्यूटर वे कम्प्यूटर होते हे जो भौतिक मात्राओं, जैसे दाब, तापमान, लम्बाई आदि को मापकर उनके परिमाप को अंकों में व्यक्त करते है। ये कम्प्यूटर किसी राशि का परिमाप तुलना के आधार पर करते है। एनालॉग कम्प्यूटर मुख्य रूप से विज्ञान और इंजीनियरिंग के क्षेत्र में प्रयोग किये जाते हैं क्योंकि इन क्षेत्रों

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

में मात्राओं का अधिक उपयोग होता है। उदाहरण के लिए एक पेट्रोल पम्प में लगा एनालॉग कम्प्यूटर, पम्प से निकले पैट्रोल की मात्रा को मापता हैं और लीटर में दिखाता है तथा उसके मूल्य की गणना करके स्क्रीन पर दिखाता है।

2. **डिजिटल कम्प्यूटर (Digital Computer)** – डिजिटल कम्प्यूटर वह कम्प्यूटर होता है, जो अंकों की गणना करता है। कम्प्यूटर का प्रयोग घर का बजट तैयार करना, पत्र लिखना, चित्र बनाना, संगीत सुनना, फोटो व वीडियों देखना, गेम खेलना आदि होता है। डिजिटल कम्प्यूटर बायनरी अंकों (0–1) पर आधारित होता है। यह कम्प्यूटर शत प्रतिशत शुद्धता से गणना कर सकती है। डिजिटल कम्प्यूटर Data और Program को 0 तथा 1 में परिवर्तित करके इलेक्ट्रानिक रूप में ले आता है।
3. **हायब्रिड कम्प्यूटर (Hybrid Computer)** – हायब्रिड का अर्थ – एनालॉग और डिजिटल दोनों के गुण (features) होना है। अर्थात् कम्प्यूटर जिनमें एनालॉग कम्प्यूटर और डिजिटल कम्प्यूटर दोनों का विशेषता हो, Hybrid Computer कहलाते है। जैसे – कम्प्यूटर की एनालॉग डिवाईस किसी रोगी के लक्षणों अर्थात् तापमान, रक्तचाप आदि को मापती है। ये परिमाप बाद में डिजिटल के द्वारा अंकों में बदले जाते है। इस प्रकार रोगी के स्वास्थ्य में आये उतार–चढ़ाव का तत्काल इलाज किया जा सकता है।

उद्देश्य के आधार पर कम्प्यूटरों के प्रकार (Types of Computer based on Purpose)

उद्देश्य के आधार पर कम्प्यूटरों को निम्न प्रकार से बांटा जा सकता है :

1. **सामान्य उद्धेशीय कम्प्यूटर (General Purpose Computer)** – General purpose Computer ऐसे कम्प्यूटर है जिनमें अनेक प्रकार के कार्य करने की क्षमता होती हे। लेकिन ये Word Processing से पत्र व दस्तावेज तैयार करना, दस्तावेजों को छापना, डेटाबेस बनाना आदि जैसे सामान्य कार्यों को ही सम्पन्न करते है। साथ ही मनोरंजन करना जैसे – फिल्म देखना, गीत सुनना, गेम खेलना, नेट चलाना आदि किया जाता है। अक्सर विद्यालय, घर या ऑफिस में उपयोग किये जाते है। प्रयोगकर्ता अपने बजट या कार्य के अनुसार कम्प्यूटर खरीद सकता है। भविष्य में सामान्य से विशिष्ट कम्प्यूटर में बदलने के लिए असेम्बल्ड पद्धति के द्वारा बदला जा सकता है।
2. **विशिष्ट उद्देशीय कम्प्यूटर (Special Purpose Computer)** – विशिष्ट उद्देशीय कम्प्यूटर ऐसे कम्प्यूटर है जिन्हें किसी विशेष कार्य के लिए तैयार किया जाता है। इनके सीपीयू की क्षमता उस कार्य के अनुरूप होती है। इसी श्रेणी के कम्प्यूटर जैसे High Configuration वाले Personal Computer, मिनी कम्प्यूटर, सुपर कम्प्यूटर आदि आते हे। इसका मुख्य कार्य जैसे – Audio Mixing, Video Editing, Space control, Medical आदि किये जाते है। यह कम्प्यूटर आम पीसी के तुलना महंगें होते है। इसका नियंत्रण किसी विशिष्ट प्रयोगकर्ता के द्वारा नियन्त्रित किये जाते है।

कम्प्यूटर लेखा प्रणाली की आवश्यकताऐं एवं विशेषताऐं (Need and Importance of Computer Accounting System) :

कम्प्यूटर लेखे सॉफ्टवेयर के माध्यम से रखे जाते हैं। यह सॉफ्टवेयर डेटाबेस पर निर्धारित होते है। इसमें मानवीय लेखा प्रणाली की तरह जनरल, खाता बही तलपट, लाभ–हानि विवरण तैयार नहीं किये जाते। इस प्रणाली में प्रविष्टियाँ डेटा के माध्यम से की जाती है। सामान्यतः कम्प्यूटर लेखा प्रणाली की आवश्यकता निम्न कारणों से उत्पन्न हुई है –

1. लेखांकन का कार्य तीव्र गति से एवं सटिकता के साथ किया जा सकता है।
2. लेखा समंकों को संचयन किया जा सकता है।
3. बड़े व्यावसायिक संगठन ERP (इंटरप्राईज रिसोर्स प्लानिंग) पैकेजस का उपयोग कर सकते है।
4. सभी प्रकार के वित्तीय विवरणों की सॉफ्टकॉपी रखी जा सकती है।
5. खातों का सामूहीकरण प्रारंभ से ही किया जा सकता है।
6. लेखों को कोड के माध्यम से प्रविष्ठ किया जा सकता है।
7. वित्तीय लेखों की सुरक्षा रहती है।
8. लेखांकन प्रतिवेदनों के प्रिन्ट आऊट लिए जा सकते है।

लेखांकन के अतिरिक्त अन्य कई विवरण सॉफ्टवेयर पैकेज के माध्यम से रखे जा सकते है जैसे – कर्मचारियों के पे–रोल, माल का भण्डारण, वेतन रजिस्टर, लेनदार डायरी, देनदार डायरी, वेट रिटर्न, रजिस्टर आदि।

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

कम्प्यूटर लेखा प्रणाली की विशेषताऐं (Importance of Computer Accounting System) :

एक कम्प्यूटर अपनी कुछ विशिष्टताओं के कारण, मेन्युअल सिस्टम से ज्यादा कार्य दक्षता रखता है। तीव्र प्रतिस्पर्धा एवं बढ़ते व्यापारिक लेन–देन की जटिलताओं को कम करने के लिए इस प्रणाली को महत्व बढ़ता जा रहा है। प्रमुख रूप से इसकी निम्नलिखित विशेषताऐं है –

1. **सटिकता (Accuracy)** – इसका तात्पर्य कम्प्यूटर द्वारा की गई गणना एवं संक्रिया के संपूर्ण स्तर से है। इसे परिशुद्धता भी कहा जा सकता है। उपयोगकर्ता द्वारा की गई गणना की त्रुटियों को कम्प्यूटर प्रोग्रामिंग के माध्यम से कुछ ही समय में शुद्ध कर दिया जाता है। मेनुअल प्रणाली में इस प्रक्रिया में काफी समय लगता है। कम्प्यूटर सभी त्रुटियों एवं अशुद्धियों को शुद्ध करने का कार्य बड़ी तीव्रता से करता है। त्रुटियों के निवारण के बाद, परिणामों में सटिकता रहती है।

2. **गति (Speed)** : किसी निश्चित कार्य को करने के लिए कम्प्यूटर द्वारा लिए समय को गति कहा जाता है। मेनुअल लेखांकन प्रक्रिया में खाता बही बनाने से लेकर तलपट, लाभ–हानि खाता एवं चिट्ठा बनाने में काफी समय की बर्बादी होती है। कम्प्यूटर लेखांकन के सॉफ्टवेयर द्वारा यह कार्य काफी कम समय में कर दिया जाता है। ऐसा इसके प्रोसेसिंग के कारण होता है। साधारणतः समय की गणना मिनिट या सेकण्ड में की जाती है, परन्तु कम्प्यूटर द्वारा समय की गणना सेकण्ड के अंशों तक करने की क्षमता रखता है।

3. **विश्वसनीयता (Reliability)** – कम्प्यूटर द्वारा, उपयोगकर्ता को प्रदान की जाने वाली सेवा की निपुणता को विश्वसनीयता कहते है। कम्प्यूटर एक मशीन है, जो की अप्राकृतिक बुद्धिमतता के माध्यम से क्रियाशील रहता है। यह मशीन किसी भी प्रकार के मानवीय भावों से मुक्त होती है, जैसे छल या कपट करना आदि। यह कई घण्टों तक बिना किसी व्यवधान के कार्य कर सकते है इसलिए ये मनुष्यों से ज्यादा विश्वसनीय साबित हुई है। प्रोग्रामिंग के तहत दिये गये निर्देशों के अनुसार ही नतीजों की प्रोसेसिंग होती है।

4. **बहुआयामी (Multi Purpose)** – कम्प्यूटर विविध प्रकार के कार्य कर सकता है। इसका प्रयोग किसी एक या दो कार्यों के लिए नहीं, वरन, कई कार्यो को एक ही मशीन पर किया जा सकता है। एक साधारण कम्प्यूटर का उपयोग विज्ञान, व्यवसाय, तकनीकी संचार, रक्षा, उद्योग गवर्नेन्स आदि कई क्षेत्रों के लिए किया जा सकता है। यह अपनी बहुआयामी क्षमता की वजह से कई कार्यों को कर सकता है। इसके लिए विशिष्ट कार्यो के लिए उससे संबंधित विशिष्ट प्रोग्रामिंग तैयार की जाती है। उदाहरण के लिए हम एक कम्प्यूटर पर लेखांकन संबंधी कार्य कर सकते हैं एवं उसी कम्प्यूटर पर कर्मचारियों के पे–रोल संबंधी कार्य भी किए जा सकते है। उपयोगकर्ता कम्प्यूटर पर ऑन लाईन टिकट, ऑन लाईन क्रय, विक्रय, ई–मेल आदि अनेक कार्य कर सकता है। इस प्रकार कम्प्यूटर अपनी क्षमता का पूर्ण रूप से उपयोग करता है।

5. **स्वचालन (Automation)** – एक कम्प्यूटरीकृत लेखा प्रणाली कई बोझिल और समय लगने वाली मेनुअल प्रक्रियाओं को समाप्त अथवा कम कर देता है। गणना करने के अतिरिक्त यह लेखांकन सॉफ्टवेयर के माध्यम से एक बटन के क्लिक करने पर ही वर्ष के अन्त में सभी लेखा प्रतिवेदनों को बना सकता है। घण्टों में तैयार होने वाले लेखाबही को सेकण्ड में तैयार कर सकता है। लेखा प्रक्रिया को स्वचालित करने के अतिरिक्त यह लेखांकन प्रतिवेदनों एवं सूचनाओं को विभिन्न उपयोगकर्ताओं को साझा करने की क्षमता भी रखता है। लेखांकन सूचनाओं को स्वतंत्र रूप से अधिकृत उपयोगकर्ताओं द्वारा कम्प्यूटर में प्रविष्ठ की जा सकती है। इसके अतिरिक्त वित्तीय सूचनाओं एवं दस्तावेजों को कुछ ही क्षणों में ई–मेल किया जा सकता है।

6. **अनुकुलता (Compatibility)** – एक कम्प्यूटरीकृत लेखा प्रणाली, अलग–अलग व्यापारिक गतिविधियों के अनुसार कार्य करने की क्षमता रखती है। यह दो व्यवसाय के मध्य सूचनाओं के आदान–प्रदान का अनुकूल बनाती है। जैसे यदि दो कंपनियों कम्प्यूटरकृत प्रणाली का उपयोग करती है तो दोनों कम्पनियों के एकीकरण की अवस्था में सभी लेखों को एक दूसरे में समायोजित किया जा सकता है। दो अलग अलग प्रकार के व्यापार के लिए उस व्यापार के अनुसार लेखांकन के सॉफ्टवेयर तैयार किए जा सकते है।

7. **संचयन (Storage)** – कम्प्यूटर कई प्रकार की जानकारियों एवं समकों को अपने स्टोरेज मिडिया के माध्यम से संचय कर सकता है। यह डेटा को फाईलों के माध्यम से संचय करता है। यह फाईल मीडिया, ऑडियों, विडियो, लेख, सॉफ्टवेयर आदि की हो सकती है। आवश्यकता पड़ने पर इन समंकों अथवा फाईलों का उपयोग उपयोगकर्ता द्वारा किया जा सकता है। कंपनी में कई प्रकार के डेटा का संचयन किया जा सकता है, जैसे स्टॉक, वेतन, क्रय, विक्रय, कर आदि के समकों की संचय करके रखा जा सकता है। कम्प्यूटर में समकों को स्टोर करना, उसकी स्टोरेज क्षमता पर निर्भर करता है। डेटा के स्टोरेज क्षमता का मापन टीबी (टेराबाईट), जीबी (गीगा बाईट), केबी (किलोबाईट) द्वारा किया जाता है। संमकों का संचयन स्टोरेज मिडिया के द्वारा किया जाता है जैसे कम्प्यूटर में लगी हार्ड डिस्क एक स्टोरेज मिडिया है। इसी प्रकार डेटा को पेन ड्राईव, सीडी रोम, में भी स्टोर किया जा सकता है। इन सभी संमकों एवं फाईलों को इन्टरनेट के माध्यम से हस्तांतरित किया जा सकता है। यदि एक कम्पनी की दो शाखाऐं, अलग–अलग शहरों में स्थित है जो एक शाखा के संमकों को इन्टरनेट के माध्यम से दूसरी शाखा में हस्तांतरित किया जा सकता है।

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

कम्प्यूटरीकृत लेखांकन पद्धति की मूल संरचना
(Structure of Computerized Accounting System)

कम्प्यूटरीकृत लेखा पद्धति प्रमुख रूप से एक संगठित प्रणाली है। जिसके माध्यम से लेखा निर्णय लिए जाते है। इस प्रणाली के अंतर्गत सर्वप्रथम लेखा संबंधित विभिन्न डेटा को एकत्र किया जाता है। एक सुदृढ़ कम्प्यूटरीकृत लेखांकन प्रणाली की संरचना को निम्न बिन्दुओं से समझा जा सकता है :

1. **लेखांकन ढांचा (Accounting Framework)** – यह कम्प्यूटरीकृत लेखांकन प्रणाली को लागू करने के लिए वातावरण तैयार करती है। यह लेखांकन की आधारभूत संरचना को तैयार करती है। इसमें लेखांकन के सिद्धांतों, प्रक्रियाओं, डेटा बेस, डेटा एवं खातों का वर्गीकरण आदि के मिश्रण को तैयार किया जाता है। डेटा इनपुट की प्रक्रिया, डेटा की प्रोसेसिंग, युजर के अनुसार परिणाम, प्रतिवेदनों के प्रारूप आदि को निश्चित किया जाता है।

2. **संचालन प्रक्रिया (Operating Procedure)** – एक अच्छी तरह से परिकल्पना की गई संचालन प्रक्रिया एवं उसके साथ एक उपर्युक्त लेखांकन के संचालन का वातावरण कम्प्यूटरीकृत लेखांकन प्रणाली के लिए अतिआवश्यक है। एक कम्प्यूटरीकृत लेखांकन प्रणाली कम्प्यूटरीकृत लेखांकन का डेटाबेस उन्मुख अनुप्रयोगों में से एक है। लेन–देन से संबंधित डेटा संग्रहित किया जाता है। उपयोगकर्ता आवश्यक इंटरफेस का उपयोग कर डेटाबेस से लेखांकन संबंधित सूचनाओं एवं प्रतिवेदनों को प्राप्त कर सकता है एवं उनका संग्रहण कर सकता है। इसलिए कम्प्यूटरीकृत लेखांकन प्रणाली के मूल सिद्धान्तों में डेटाबेस उन्मुख अनुप्रयोग की मूल आवश्यकताएँ ही सम्मिलित होती है।

3. **लेखांकन क्वेरी (Accounting Query)** – कम्प्यूटरीकृत लेखांकन प्रणाली में किसी भी प्रकार की कोई जानकारी प्राप्त करने के लिए क्वेरी का उपयोग किया जाता है। क्वेरी एक प्रश्न है, जो किसी निश्चित सुचना प्राप्त करने के लिए सॉफ्टवेयर के माध्यम से डेटाबेस में डाला जा सकता है। उदाहरण के लिए एक लेखाकार या उपयोगकर्ता को उन सभी देनदारों या उपभोक्ताओं की पहचान करनी है, जिन्होंने क्रेडिट सीमा की अवधि के भीतर भुगतान नहीं किया है तो इस प्रकार की सूचना को स्ट्रक्चर्ड क्वेरी लेंगुऐज के माध्यम से ज्ञान किया जा सकता है। इस प्रकार की सुविधा मानवीय लेखांकन पद्धति में सम्मिलित नहीं होती है।?

4. **डेटा एवं सूचनाएँ (Data & Information) -** सर्वप्रथम कम्प्यूटर लेखा प्रणाली संपूर्ण रूप से लेन–देन की सूचनाओं पर निर्भर करती है। यह एक व्यवसाय में सूचनाओं के माध्यम से निर्णय लेने की प्रणाली हैं। यह एक संगठित एवं सुव्यवस्थित प्रक्रिया के माध्यम से उपयोगकर्ता को लेखांकन से संबंधित निर्णय लेने एवं लेखें तैयार करने की सुविधा प्रदान करता है। सर्वप्रथम लेखांकन से संबंधित आंकड़ों को एकत्र किया जाता है। तत्पश्चात उनका वर्गीकरण कर आंकड़ों को ऐडिट किया जाता है। यह प्रक्रिया आंकड़ों को अनुकूल सूचनाओं में रूपांतरित करती है। डेटा क्रय, विक्रय, आय, व्यय, लेनदार, देनदार, संपति आदि से संबंधित होते है। यह डेटा विभिन्न विभागों द्वारा एकत्र कर एक मास्टर फाईल तैयार की जाती है। डेटा को एक सॉफ्टवेयर के माध्यम से काम में लिया जाता है। एक व्यावसायिक संगठन के आवश्यकतानुसार सॉफ्टवेयर पैकेज बनाए जाते है। यह सॉफ्टवेयर लेन–देन प्रक्रम प्रणाली के माध्यम से संचालित होता है। इस प्रणाली में डेटा को सूचनाओं से परिवर्तित करने हेतू सभी सूचनाओं को शुद्ध, पूर्ण एवं अधिकृत किया जाता है। यह प्रणाली इनपुट प्रोसेसिंग एवं आऊटपुट पर आधारित होते है। सही सूचनाओं के रूप में सटीक निर्णय लेने के लिए, सहीं प्रकार के डेटा का इनपुट के तौर पर निर्धारण करना आवश्यक होता है।

5. **कम्प्यूटरीकृत लेखांकन प्रक्रिया (Compterized Accounting Process)** – यह प्रक्रिया लेन–देन प्रक्रम प्रणाली के माध्यम से संचालित होती है। यह प्रणाली व्यापार में होने वाले लेन–देन (Transcations) को रिकार्ड, प्रोसेस, वैद्य एवं संग्रहण करने का कार्य करती है। यह लेन–देन कारोबार की प्रक्रियाओं जैसे क्रय–विक्रय, बिलिंग, उत्पादन, पेरोल आदि से संबंधित होते है। यह लेन–देन आंतरिक अथवा बाह्य हो सकते है। जब उत्पादन विभाग, कच्चे माल की खरीद के लिए क्रय विभाग को निवेदन करता है, या एक विक्रय केन्द्र से दूसरे विक्रय केन्द्र में माल का हस्तांतरण होता है तो इसे आंतरिक लेन–देन की परिभाषा में लिया जायेगा। जब विक्रय विभाग, किसी ग्राहक को माल बेचता है तो यह बाह्य लेन–देन है। सामान्यतः वित्तीय लेखा विभाग का लेखा बाहर के लेन–देन से ही सीमित रहता है। इस प्रकार के निम्न चरणों में विभाजित किया जा सकता है :

   (I) **डेटा का संग्रहण (Collection of Data)** : लेखांकन संबंधी संमकों का संगहण का तात्पर्य सभी प्रकार के आंकड़ों को एक जगह किसी फाईल में इक्ट्ठा करना है। यह संमक बिक्री, क्रय, लागत आदि से संबंधित हो सकते है। इन सभी एकत्र किए गये डेटा के माध्यम से ही लेखा विवरण तैयार किऐ जाते है।

   (ii) **डेटा संपादन (Data Editing)** : इस प्रक्रिया में एकत्र किए गये समंकों का पूनः सर्वेक्षण कर, अनुपयोगी आंकड़ों को हटा दिया जाता है, जिससे समंकों का विश्लेषण करते समय कोई बाधा उत्पन्न न हो।

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

(iii) **डेटा पुष्टिकरण (Data Validation)** : डेटा पुष्टिकरण कम्प्यूटर द्वारा स्वचालित एक जाँच प्रक्रिया है, जिससे डेटा में इनपुट त्रुटियों को कम करने में मदद मिलती है। यह आंकडों की टाईपिंग त्रुटियां एवं अन्य भाषा संबंधित त्रुटियों को सही कर उनकी पुष्टि करता है। यह डेटा की शुद्धता कि जांच कर उनके उपयोग करने की क्षमता को बढ़ाता है। इस प्रक्रिया से सही प्रकार के निष्कर्ष निकालने में मदद मिलती है।

(iv) **डेटा मेनिपुलेशन (Data Manipulations)** : इस प्रक्रिया के अन्तर्गत संमकों में आवश्यकता अनुसार कुछ बदलाव किए जाते हैं, जिससे उनका उपयोग आसानी से किया जा सके। इससे संमकों के उपयोगकर्ता के लिए उन्हें समझना एवं उनका विश्लेषण करना आसान हो जाता है।

(v) **डेटा संचयन (Data Storage)** : संमकों का संचयन कम्प्यूटर में विभिन्न स्टोरेज उपकरणों द्वारा किया जा सकता है। जैसे पेन ड्राइव, हार्ड डिस्क या सीडी। आवश्यकता अनुसार इन संमकों का उपयोग डेटा स्टोरेज उपकरण से ऐक्सस कर किया जा सकता है। समंकों का उपयोग करते समय, प्राईमरी स्टोरेज, में डेटा रहता है। जिसे रेन्डम एसेस मेमोरी (RAM) कहा जाता है।

(vi) **डेटा कोडिंग (Data Coding)** : डेटा कोडिंग,त्र एकत्र किए गए डेटा को एक संक्षिप्त पहचान देना है। यह बड़े पैमाने पर एकत्र कि गई सूचनाओं को पहचान हेतु, चिन्हित करने कि प्रक्रिया है। कोड एक लघु शब्द या अंक हो सकता है। कोड के माध्यम से लेखांकन की विश्लेषण प्रक्रिया सरल हो जाती है। जैसे Cash Sales के लिए कोड CS एवं Credit Sales के लिए CRS हो सकता है। उसी प्रकार जनवरी में की गई Sales को JS कोड दिया जा सकता है।

(vii) **डेटा का वर्गीकरण (Data Classifications)** : समंकों को किसी निश्चित वर्ग के आधार पर समूहों में बांट दिया जाता है, जिससे उनका उपयोग प्रभावशाली रूप में किया जा सकें। लेखांकन प्रक्रिया में लेखों एवं लेन–देन की गतिविधियों को विभिन्न पूर्व निर्धारित वर्गों में बाँट दिया जाता है। जैसे पचास हजार एवं उससे अधिक के लेनदारों अथवा देनदारों का एक समूह, दस साल से अधिक उपयोग वाली संपतियों का एक समूह अथवा निश्चित दर पर दिए जाने वाले ह्रास से संबंधित अचल संपतियों का एक समूह।

6. प्रबन्ध सूचना प्रणाली (Management Information System)

एक व्यावसायिक प्रणाली का प्रबंधन उसके द्वारा लिए गये निर्णयों पर आधारित होता है। यह निर्णय समय पर प्राप्त होने वाली सूचनाओं पर आधारित होते है। एक व्यवसाय की सूचना प्रणाली जितनी सुदृढ़ होगी, वह निर्णयों में उतनी ही सटिकता एवं पारदर्शिता रहेगी। यह सब एक कुशल प्रबंधन सूचना प्रणाली द्वारा संभव है। प्रबंधन सूचना प्रणाली वह प्रणाली है, जो एक संस्था की बाकी प्रणालियों का आधार तैयार करती है। लेखांकन सूचना प्रणाली में सूचनायें समयानुकूल, सटीक तथा व्यवस्थित होती है। अन्य शब्दों में प्रबंधन सूचना प्रणाली एक ऐसी प्रणाली है, जो निर्णय लेने एवं किसी व्यवसाय के सुचारू रूप से प्रबंधन के लिए जरूरी सूचना तैयार करती है। लेनदेन परितंत्र लेन–देन वृत्त में खरीद बही, विक्रेता/सप्लायर की अग्रिम, सूची को बढ़ाना, खाते की देनदारी आदि सभी कुछ होती है। ये सभी सूचनायें प्रबंध सूचना प्रणाली संस्था के अन्य विभागों को वितरित करता है। अतः यह निर्णय लेने वाले व्यक्तियों को जरूरी वित्तीय डेटा की सूचना देता है जोकि कंप्यूटरीकृत सूचना प्रणाली का एक उप भाग है। इस विवरण की मांग नियमित अथवा विशिष्ट भी हो सकती है। संस्था के दीर्घकालीन नीतिगत लक्ष्यों एवं उद्देश्यों को पूरा करने में यह प्रणाली सहयोग करती है। प्रबंधकीय सूचना प्रणाली को मुख्य रूप से निम्न बिन्दूओं में परिभाषित किया जा सकता है।

- एक एकीकृत युजर मशीन सिस्टम है।
- सूचना उपलब्ध कराती है।
- प्रबंधन, संचालन विश्लेषण
- व्यवसाय द्वारा उपयोग

7. लेखांकन सूचना प्रणाली (Accounting Information System)

लेखांकन में सूचना एवं प्रौद्योगिकी के उपयोग को लेखा सूचना प्रणाली कहते है। इसके माध्यम से कम्प्यूटर का प्रयोग वित्तीय लेखांकन से जूड़े विभिन्न क्षेत्रों, जैसे कर, अंकेषण, बजटिंग आदि। इन सभी क्षेत्रों की सूचनाओं का उपयोग प्रबंधकीय निर्णयों के लिए किया जाता है। लेखांकन सूचना प्रणाली अन्य क्रियाशील सूचना प्रणालियों के लिए सूचनाओं का आदान–प्रदान करती है। इस प्रणाली में संस्था द्वारा किए गये व्यवसाय का सामूहिक, क्रमबद्ध लेखा–जोखा होता है। जैसे, व्यवसाय द्वारा किसी माल के विक्रय पर उसका बीजक बनाना, विक्रय आदेश लेना एवं उसका क्रियान्वयन करना,

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

स्टाफ की स्थिति, परिवहन की स्थिति, कर्मचारियों का वेतन आदि। लेखांकन सूचना प्रणाली के अंतर्गत वित्त से संबंधित सभी सूचनाओं का उच्च प्रबंधन से लेकर, मध्य एवं निचले प्रबंधन तक आदान–प्रदान किया जा सकता है। इस प्रणाली के द्वारा किसी व्यक्ति या वस्तु के बारे में आर्थिक सूचना को अनेक प्रकार के उपभोक्ताओं के लिए पहचान, संग्रह एवं प्रक्रम तैयार करती है। वित्तीय सूचनाओं से संबंधित डेटा इस तरह से व्यवस्थित होते है कि उनका उपयोग कर सही निर्णय लिया जा सकें। इसके अतिरिक्त लेखांकन सूचना प्रणाली समस्त संसाधनों का एक मिश्रण है, जिससे वित्तीय एवं अन्य डेटा को सूचना में परिवर्तित करने के लिए डिजाइन किया गया है। यह सूचनाऐं विभिन्न प्रकार के उपयोगकर्ताओं एवं निर्णयकर्ताओं का उनकी सुविधानुसार प्रदान की जाती हे। इस प्रणाली का प्रयोग इस बात की सुनिश्चितता प्रदान करता है, विभिन्न प्रकार के वित्तीय लेन–देन एवं सौदों का नियंत्रण किया जा सके। कम्प्यूटर के प्रयोग के साथ इस प्रणाली में तीव्रता से सूचनाओं का आदान प्रदान करना एवं सुविधानुसार वित्तीय प्रतिवेदनों को निकालना है। प्रबंधन निर्णय लेने के लिए जानकारी का उपयोग करने के लिए, उस जानकारी को सही तरह से प्रबंधन करना चाहिए। अतः सूचना प्रबंधन में शामिल हैं।

– जरूरी जानकारी निर्धारित करना,

– जानकारी एकत्रित करना और उसका विश्लेषण करना,

– जानकारी को भण्डारित करना और जब जरूरत हो, पुनः प्राप्त करना,

– उपयोग करना और जानकारी को फेलाना।

प्रबन्ध सूचना प्रक्रिया के कार्य (Functions of MIS)

(i) **प्रबंधन के लिए आवश्यक सूचना को निर्धारित करना** : परियोजना के आयोजन, कार्यान्वन और निरीक्षण के दौरान बहुत सारी जानकारी उत्पन्न होती हैं, कुछ जानकारी तत्काल फैसले लेने के लिए आवश्यक है और कुछ बाद में लिए जाने वाले प्रबधन निर्णयों के लिए जरूरी है, इसलिए एक अच्छी प्रबंध सूचना प्रणाली, परियोजना के प्रबंधकों को यह जानने में मदद करती है कि, अलग अलग समय पर विविध प्रबंध निर्णय लेने के लिए किस तरह की जानकारी को प्राप्त करना चाहिए।

(ii) **सूचना प्रबंधन के लिए जानकारी को प्राप्त करके उसका विश्लेषण करना** : जानकारी इन स्रोत से प्राप्त की जा सकती हैं – तकनीकी रिपोर्ट, ग्रामीण पुस्तकें, विभिन्न कर्त्ताओं द्वारा पूरे किए गये फार्म या प्रपत्र, सामूहिक बैठक या सम्मलेन, भेंट, प्रेक्षण और सामूहिक ढांचे।

(iii) **सूचना भंडारित करना** : यह जरूरी है कि प्राप्त किए गये जानकारी को एक जगह सुरक्षित किया जाए जिससे बाद में इसका उपयोग किया जा सकें, जानकारी ग्रामीण पुस्तकों या दस्तावेजों, परियोजना विवरण, फार्म या प्रपत्र और हमारे दिमाग में रखा जा सकता हैं, सूचना को सुरक्षित या भंडारित करने का मूल सिद्धांत यह है कि इस जानकारी को आसानी से पुनः प्राप्त किया जा सकें।

(iv) **जानकारी का उपयोग करना** : जानकारी के कई उपयोग है सामूहिक समस्याओं का सुलझाना, संसाधन निर्धारित करना (मात्रा और प्रकार) सहयोग प्राप्त करना और आने वाले परियोजनाऐं निर्धारित करना।

(v) **सूचना का प्रवाह** : जानकारी का पर्याप्त रूप में उपयोग होने के लिए यह जरूरी है कि उसे सभी हिस्सेदार और उपभोक्ताओं के साथ बांटा जाए, बाकी हिस्सेदार इस जानकारी का प्रबंध निर्णय लेने में प्रयोग कर सकते है, वे जानकारी संग्रहित करने वाले को उस जानकारी का मतलब और उपयोग निर्धारित करने में मदद कर सकते है, जिसका प्रबंधन प्रक्रियाओं में प्रयोग किया जा सकता है। निरीक्षण जानकारी अधिकारियों से हो या हिस्सेदारों से हो इसका समर्थ रूप से प्राप्त करने के लिए वार्षिक समीक्षा का उपयोग किया जा सकता है। इसका विवरण सहभागी प्रबंधन सूचना प्राप्त करने के तरीकों में किया गया है, मगर निरीक्षण सूचना प्राप्त करने में भी यह लागू है।

8. **लेखांकन के प्रतिवेदन (Accounting Reports)** – लेखांकन सुचना प्रणाली द्वारा विभिन्न प्रकार की वित्तीय प्रतिवेदन निकाले जा सकते है। इस प्रणाली के प्रारम्भ में डेटा विभिन्न प्रक्रियाओं से होता हुआ, सूचना में परिवर्तित होता है। इन सूचनाओं को उपयोगकर्त्ताओं की आवश्यकता अनुसार संक्षेप में प्रतिवेदन के माध्यम से प्रस्तुत किया जाता है। प्रतिवेदन का विषय एवं प्रारूप हर स्तर के लिए अलग–अलग होता है। एक प्रतिवेदन की उपयोगिता, इस तथ्य पर निर्भर करती है कि वह उपयोगकर्ता को निर्णय लेने में कितनी सहायता प्रदान करती है। कम्प्यूटरीकृत लेखांकन सूचना प्रणाली में समयबद्धता रहती है। एक क्लिक के माध्यम से ही हम आवश्यक प्रतिवेदन निकाल सकते है।

लेखा संमकों से ही लेखा प्रतिवेदन तैयार किए जाते है। उसकी प्रक्रिया निम्न प्रकार से है।

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

(i) प्रतिवेदनों के उद्देश्य निर्धारित करना।

(ii) प्रतिवेदनों के उपयोगकर्ता निर्धारित करना।

(iii) समंकों एवं प्रतिवेदनों का ढांचा तैयार करना।

(iv) डेटा बेस संबंधित क्वेरी तैयार करना।

(v) प्रतिवेदनों का अंतिम रूप देना।

एक अच्छी लेखा प्रणाली के प्रारूप में निम्न तत्वों का समावेश होना जरूरी है जिससे प्रतिवेदनों का महत्व, निर्णय लेने हेतु बना रहता है।

– शुद्धता

– प्रासंगिक

– समयबद्धता

– संक्षिप्तता

– सुपाठ्य

– परिपूर्ण

सॉफ्टवेयर द्वारा तैयार किया गया प्रतिवेदन अलग–अलग प्रकार के उपयोगकर्ताओं के लिए होता है। जैसे विक्रय विभाग को पिछले एक महीने की विक्रय के बारे में जानकारी चाहिए तो वह विक्रय प्रतिवेदन निकाल सकता है। कार्मिक विभाग को छः महीने के वेतन का डेटा चाहिए तो वह पे–रोल का प्रतिवेदन प्राप्त कर सकता है। लेनदारों या देनदारों से संबंधित प्रतिवेदन पार्टी के नाम के अनुसार या राशि है। अनुसार प्राप्त किये जा सकते। कोई प्रतिवेदन संक्षिप्त हो सकता है, तो कोई विस्तृत हो सकता हे। कुछ प्रतिवेदन समय के अनुसार निकाले जा सकते है जेसे त्रेमासिक विक्रय, मासिक वेतन, वार्षिक लाभ आदि। इसी प्रकार से प्रतिवदेन मांग के अनुसार भी निकाले जा सकते है, जैसे डूबत ऋण प्रतिवेदन आदि। एक बड़ी संस्था के प्रतिवेदन, प्रबंधन सूचना प्रणाली के अनुसार निम्न प्रकार के हो सकते है –

(i) सारांश प्रतिवेदन (Summary Reports)

लेखांकन की गतिविधियों को संक्षिप्त में प्रस्तुत किया जाता है। यह प्रतिवेदन मुख्य रूप से एक लेखांकन अवधि, व्यापार इकाई, शाखा या एक उत्पाद का कुल डेटा होता है। इसमें सूचनाओं को संयुक्त रूप से प्रस्तुत किया जाता है। उदाहरण के लिए लाभ–हानि खाता, स्कंध की सामग्री, बिक्री सारांश, लेनदार एवं देनदारों का सारांश आदि।

(ii) प्रवृति प्रतिवेदन (Trend Reports)

प्रवृति प्रतिवेदन दो या दो से अधिक इकाईयों, उत्पाद, शाखाओं की तुलना करने के उद्देश्य से बनाऐ जाते है। यह प्रतिवेदन पूर्व के लेखा आँकड़ों के अनुसार भविष्य में होने वाले आँकड़ों को ज्ञात कर सकता है। जैसे पीछे पांच वर्षों की बिक्री के माध्यम से यह ज्ञात किया जा सकता है कि भविष्य में होने वाली बिक्री किस दिशा में जा सकती है। यह व्यापार इकाई या उत्पाद इकाई औसत से कम बिक्री या उत्पाद कर रही है तो उसकी बिक्री बढ़ाने के लिए प्रबंधकीय निर्णय लिए जा सकते है।

(iii) अपवाद प्रतिवेदन (Exception Reports)

इस प्रकार के प्रतिवेदन में सूचनाओं को सामान्य सूचनाओं से अलग कर दर्शाया जाता है। अपवाद प्रतिवेदन असामान्य परिस्थितियों की सूचनाओं को ही प्रस्तुत करते है। अपवाद की स्थिति में किसी भी प्रकार के प्रबंधकीय निर्णयों में तत्काल निर्णय लेने हेतु यह प्रतिवेदन काफी सहायक होते है। प्रबंधक को अन्य किसी भी प्रकार की रिपोर्ट को देखने की जरूरत नहीं रहती है। जिससे समय एवं संसाधनों की बचत होती है। उदाहरण के लिए किन्हीं साधारण दिवस पर असामान्य बिक्री होने की दशा में ऐसे दिनों की एक रिपोर्ट अपवाद रिपोर्ट की श्रेणी में आती है। जिससे उन दिनों में क्रय का विवेचन किया जा सके एवं अल्प समय में ही कुछ ठोस निर्णय लिए जा सकें।

(iv) मांग प्रतिवेदन (Demand Reports)

यह प्रतिवेदन प्रबंधन के आग्रह पर ही तैयार की जाती है। इसकी अवधि की कोई निश्चितता नहीं होती है। इन प्रतिवेदनों

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

का प्रारूप मांग पर निर्धारित रहता है। इसका प्रारूप सारांश प्रतिवेदन, प्रवृति प्रतिवेदन या अपवाद प्रतिवेदन जेसा हा सकता है। जैसे प्रबंधकों को अपने देनदारों को नकद बट्टा प्रदान करना है, तो वह कुल देनदारों में से डुबते ऋणों की जानकारी ले सकते है, जिससे उन्हें निर्णय लेने में सहायता रहे। यह डूबते ऋणों की जानकारी एक मांग प्रतिवेदन होगी।

(v) व्यक्तिगत प्रतिवेदन (Personal Reports)

यह प्रतिवेदन किसी व्यक्ति विशेष, समूह अथवा संस्था से संबंधित होता है। जैसे देनदार, लेनदार, बैंक, ग्राहक, कच्चे माल का आपूर्तिकर्ता के बारे लेखों को व्यक्तिगत प्रतिवेदन के माध्यम से प्रस्तुत किया जा सकता है। उदाहरण के लिए रमेश एण्ड कम्पनी की छः माही बिक्री रिपोर्ट एक व्यक्तिगत प्रतिवेदन का उदाहरण है।

9. प्रबंधकीय सूचना प्रणाली एवं डेटा इंटरफेस

प्रबंधकीय सूचना प्रणाली का प्रमुख कार्य, एक संस्था के विभिन्न उपयोगकर्ताओं को कम्प्यूटर के माध्यम से सूचनाओं को प्रदान करता है। इन सूचनाओं द्वारा प्रबंधकीय निर्णय लेने में सहायता मिलती है। इस प्रकार की प्रणाली में कई विभागों एवं क्रियाशील क्षेत्रों में समन्वय स्थापित करना पड़ता है। इसका कारण यह है कि किसी एक ही विभाग या क्रियाशील क्षेत्र को सूचना के आधार पर संपूर्ण व्यावसायिक संगठन के बारे में निर्णय नहीं लिया जा सकता। इसमें हर विभाग या क्रिया की अपनी एक अलग सूचना प्रणाली तैयार की जाती है, जिसे उप अव्यय (Sub-Component) कहते है। किन्हीं दो या दो से अधिक उप–अवयवों में संयुक्त रूप से निर्णय लेने हेतु सूचनाओं के आदान–प्रदान को डेटा इन्टरफेज कहते है। इसे निम्न विभागों के सूचनातंत्रों के माध्यम से समझा जा सकता है :

(i) लेखांकन सूचना प्रणाली, विनिर्माण सूचना प्रणाली व मानव संसाधन सूचना प्रणाली

उत्पादन विभाग मानव संसाधन विभाग से मजदूरों का ब्यौरा लेता है। यह मजदूरों के द्वारा उत्पादन प्राप्त करने की जानकारी मानव संसाधन विभाग व लेखा–विभाग को भेजता है ताकि उनका पारिश्रमिक देय हो। लेखांकन विभाग द्वारा देय पारिश्रमिक का विवरण उत्पादन विभाग व मानव संसाधन विभाग को दिया जाता है ताकि मजदूरों की कार्यशैली पर नजर रख सकें। मानव संसाधन विभाग उन मजदूरों की अच्छी व खराब कार्यशैली की जानकारी अन्य विभाग को देता है।

(ii) लेखांकन सूचना प्रणाली और विपणन सूचना प्रणाली

व्यापार की प्रगति में विपणन व विक्रय विभाग निम्नलिखित कार्य सक्रियता का पालन करते हैं:

- पूछताछ
- संपर्क स्थापना
- प्रवेश का क्रम
- माल भेजना
- उपभोक्ता रसीद

लेखांकन परितंत्र के लेन–देन के कार्यो में विक्रय विवरण, प्रतिष्ठा प्राधिकृत, तालिका सुरक्षा, तालिका स्थान, परिवहन सूचना, प्राप्तांक आदि भी होते हैं। इसके अतिरिक्त उपभोक्ता के खातों पर नजर रखना उदाहरणार्थ एजिंग प्रतिवेदन, जो कि प्रणाली द्वारा उत्पन्न की जानी चाहिए।

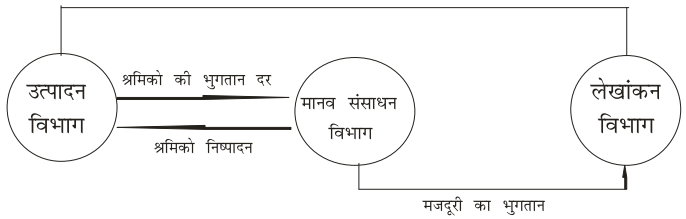

चित्र 1 : लेखांकन सूचना प्रणाली वित्तीय सूचना प्रणाली और मानव सूचना प्रणाली के मध्य संबंध

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

(iii) लेखांकन सूचना प्रणाली और निर्माण सूचना प्रणाली

इसी तरह व्यापार प्रगति में उत्पादन विभाग निम्नलिखित कार्य करता है:

- योजना की तैयारी व सूची
- वस्तुमांग की विज्ञप्ति और नौकरीधारक
- तालिका सूची
- कच्चे माल की खरीद की विज्ञप्ति का आदेश
- विक्रेता बीजक को संभालना
- विक्रेताओं का भुगतान

लेखांकन सॉफ्टवेयर

(Accounting Software)

कम्प्यूटरीकृत लेखांकन प्रणाली के लिए लेखांकन प्रक्रिया सामग्री अर्थात् लेखांकन सॉफ्टवेयर एक प्रमुख अंग है। इसके अभाव में कम्प्यूटर द्वारा लेखांकन कार्य सरलता से नहीं हो सकता है। कम्प्यूटर लेखांकन के लिए लेखांकन के लिए लेखांकन सॉफ्टवेयर की आवश्यकता निम्न दो स्थितियों में होती है –

- जब वर्तमान में कम्प्यूटरीकृत प्रणाली को नई आवश्यकतानुसार बदला लाए।
- जब मानवीय प्रणाली को कम्प्यूटरीकृत लेखांकन प्रणाली में बदला जाए।

बाजार में अनेक लेखांकन सॉफ्टवेयर उपलब्ध है जो कि विभिन्न प्रकार के व्यवसायों के लिए अपना अलग–अलग महत्व रखते है। लेखांकन सॉफ्टवेयर के उपयोग से पहले निम्नलिखित सामान्य परिस्थितियों पर ध्यान देना चाहिए –

1. **लचीलापन** – आँकड़ों को, डाटा को उपयोगकर्ता हार्डवेयर तथा सॉफ्टवेयर की मदद से अपनी आवश्यकतानुसार प्रयोग में ले सकें। सॉफ्टवेयर तथा उपयोगकर्ता के मध्य कुछ लचीलापन होना चाहिए एवं हार्डवेयर तथा सक्रिय प्रणाली और उपयोगकर्ता में भी लचीलापन होना चाहिए।
2. **संस्थापन तथा देखभाल की लागत** – संस्था के उद्देश्यों के आधार पर ही सॉफ्टवेयर का चुनाव करना चाहिए। ऐसे सॉफ्टवेयर जो मितव्ययी हों उनकी रख रखाव आदि में अधिक खर्चा न हो, का उपयोग किया जाना चाहिए।
3. **सरलता से समायोजित तथा प्रशिक्षण की आवश्यकता** – ऐसे लेखांकन सॉफ्टवेयर का चुनाव करना चाहिए जो उपयोग में सरल हों और जिनके लिए अधिक प्रशिक्षण की आवश्यकता नहीं हो। कुछ सॉफ्टवेयर उपयोगकर्ता के अनुकूल होते हैं और आसान प्रशिक्षण द्वारा पूर्ण हो जाते है। पर कुछ जटिल सॉफ्टवेयर पैकेज जो किसी दूसरी संचार प्रणाली से जुड़े होते हैं, उनके लिए व्यापक प्रशिक्षण की आवश्यकता होती हैं।
4. **गोपनीयता का स्तर** – यदि गोपनीयता को ध्यान में नहीं रखा जाए तो संस्था से संबंधित महत्वपूर्ण प्रलेख सार्वजनिक हो सकते हैं जो कि किसी भी संस्था के लिए घातक हो सकते हैं। गोपनीयता का स्तर जितना अधिक होना, उतना ही संस्था से संबंधित सूचनाओं को सुरक्षित रखा जायेगा।
5. **संगठन का आकार** – संगठन का आकार जितना बड़ा होगा, वहाँ लेखांकन सॉफ्टवेयर अधिक जटिल एवं खर्चीला होगा। छोटे संगठन जहाँ लेखांकन सौदों की संख्या ज्यादा नहीं होती है।ऐसे संगठन सरल व सकल उपयोगकर्ता वाले सॉफ्टवेयर को ले सकते है जबकि बड़े संगठनों में उपयोगकर्ता की जरूरतों को पूरा करने के लिए विशेष सॉफ्टवेयर की आवश्यकता होती है।
6. **उपयोगिता** – यदि प्रबन्धन सूचना प्रणाली का स्तर उच्च है तो वहां सॉफ्टवेयर भी उच्च सतर का ही चाहिए। किसी संगठन में प्रबन्धन सूचना प्रणाली तथा उसकी उपयोगिता की दर से सॉफ्टवेयर की आवश्यकता को मालूम किया जाता है।
7. **विक्रेताओं की जानकारी** – अर्थात् विक्रेताओं से संबंधित जानकारी हमेशा क्रेता को रखनी चाहिए। जैसे कि उसका नाम तथा उसकी सुविधा देने की क्षमता की आवश्यक जानकारी ले लेनी चाहिए कि वह कितने समय में सॉफ्टवेयर तैयार करने के व्यापार में संलग्न है।
8. **डेटा का आदान प्रदान**– कभी–कभी लेखांकन सॉफ्टवेयर के डाटा बेस को एक प्रणाली या सॉफ्टवेयर से दूसरी प्रणाली या सॉफ्टवेयर में बदलने की जरूरत हो जाती है। संस्था का खाताबही की सूचनाओं को सीधे स्प्रैडशीट सॉफ्टवेयर में बदलना

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

पड़ता है। लेखांकन सॉफ्टवेयर को ऐसा होना चाहिए जो डाटा को मूलरूप से हस्तांतरित कर सकें। प्रयोग के लिए तैयार (ready-to-use) कुछ लेखांकन सॉफ्टवेयरों में आयात निर्यात की सुविधा उपलब्ध होती है लेकिन ये MS Office तक ही सीमित होते हैं। उपयुक्त (tailored) सॉफ्टवेयर को ऐसे तरीके से तैयार किया जाता है कि वह सभी सूचनाओं को प्रबन्ध सूचना प्रणाली (MIS) के विभिन्न उपघटकों के साथ पारस्परिक आदान–प्रदान कर सकें।

सॉफ्टवेयर के प्रकार (Types of Accounting Software)

कम्प्यूटरीकृत लेखांकन प्रणाली में लेखांकन कार्य तथा उसका प्रतिवेदन संस्था की आवश्यकतानुसार तैयार किया जाता है। लेखांकन सॉफ्टवेयर जिन्हें लेखांकन पैकेज भी कहते है, निम्नलिखित प्रकार की होती है –

1. **उपयोग के लिए तैयार सॉफ्टवेयर (Ready to use Software)** – इनका निर्माण किसी विशेष उपयोगकर्ता के अनुसार नहीं किया जाता है। यह छोटे व्यापारियों के लिए उपयोगी सॉफ्टवेयर है, जिनके बहुत कम मात्रा में व्यवहार होते है। इनमें गोपनीयता का अभाव होता है परन्तु यह सीखने में सरल तथा कम खर्चीलें होते है। इसका प्रशिक्षण सरल होता हे और प्रशिक्षण लागत भी नहीं लगती क्योंकि विक्रेता स्वयं ही बिना किसी लागत की प्राप्त किये प्रशिक्षण दे देता है। इनका संबंध दूसरी सूचना प्रणाली से सामान्यतया नहीं होता है। इस समय बाजार में लोकप्रिय प्रक्रिया सामग्री में टेली (Tally) है। इस सॉफ्टवेयर में धोखे की सम्भावना अधिक रहती हैं क्योंकि गोपनीयता निम्न स्तर की रहती हैं।

2. **व्यवस्थित सॉफ्टवेयर (Customized Software)** – यह मध्यम एवं बड़े व्यापारियों के लिए उपयोगी होती है। इनकी स्थापना एवं देखरेख की लागत अधिक आती है क्योंकि तैयार सॉफ्टवेयर में उपयोगकर्ता की आवश्यकता के अनुसार परिवर्तन करना पड़ता हैं। इसमें गोपनीयता बढ़ जाती है तथा अधिकृत व्यक्ति ही इसका उपयोग कर सकता है। ये सब सुविधाएँ उपलब्ध करवाने के कारण उपयोगकर्ता के प्रशिक्षण तथा बिक्री के बाद की सेवा की लागतें अधिक आती हैं।

3. **आवश्यकतानुसार या उपयुक्त सॉफ्टवेयर (Tailored Software)** – यह पूर्णतया उपयोग करने वाले के निर्देशों के अनुरूप तैयार किया जाता है। इसकी मांग बड़े व्यापारिक प्रतिष्ठानों में होती है। जो भौगोलिक रूप से दूर–दूर विभिन्न स्थानों पर होते हैं। इसके उपयोगकर्ता अधिक होते हैं, और बिना उचित प्रशिक्षण के इनका उपयोग नहीं किया जा सकता है। प्रबन्धकीय सूचना प्रणाली में इनका महत्वपूर्ण योगदान रहता है। इनमें गोपनीयता, अधिकृतता या प्रामाणिकता की जाँच करने के लिए एक सुदृढ़ पद्धति होती हैं।

कंप्यूटरीकृत लेखांकन प्रणाली से लाभ (Advantages of Computerized Accounting System)

मानवीय लेखांकन की अपेक्षा कंप्यूटरीकृत लेखांकन के बहुत से लाभ हैं। इन्हें संक्षेप में नीचे दिया गया है।

1. **परिशुद्धता (Error less)** : गलतियाँ कंप्यूटरीकृत लेखांकन प्रणाली में विलुप्त हो जाती हैं क्योंकि प्रारम्भिक लेखांकन डेटा को एक बार में प्रविष्टि कर दिया जाता है फिर इनका उपयोग लेखांकन विवरणों को तैयार करने में किया जाता है। मानवीय लेखांकन प्रणाली में गलतियों की संभावना होती है क्योंकि विभिन्न लेखांकन प्रलेखों को तैयार करने के लिये संमको को कई बार समान प्रविष्टियों के लिये प्रयोग में लाया जाता है। कम्प्यूटर पूर्ण शुद्धता से लेखा संबंधी कार्य करता है। इसके द्वारा त्रुटियों की संभावनाऐं न्यून स्तर पर रहती है।

2. **अद्यतन सूचना (Automated Information)** : लेखांकन अभिलेख कम्प्यूटरीकृत लेखांकन प्रणाली में स्वतः ही अद्यतन हो जाते हैं। अतः नवीनतम जानकारी के लिये खातों के विवरणों को तैयार कर उनका मुद्रण कर लिया जाता है। उदाहरण के लिए जब लेखांकन डाटा में सामान की खरीद पर नगद भुगतान को प्रविष्ट कर भण्डारित किया खाता, नगद खाता, क्रय खाता, और अन्तिम खाता (व्यापार, लाभ व हानि खाता) पर इन सौदों का प्रभाव तुरन्त ही प्रदर्शित हो जाता है। कम्प्यूटर लेखों का प्रभाव प्राथमिक प्रविष्टि के तुरन्त बाद ही हो जाता है। इसमें खाता बही या तलपट में दोबारा प्रतिलिपि प्रविष्टियां करने की आवश्यकता नहीं रहती है। किसी भी तिथि तक के प्रलेखों का विवरण हर समय तैयार मिलता है।

3. **डेटा का आदान–प्रदान (Import Export of Data)** – लेखांकन प्रणालियों के आपस में संबंध होते हैं। लोकल ऐरिया नेटवर्क के माध्यम से डेटा को एक कम्प्यूटर से दूसरे कंप्यूटर पर शेयर किया जा सकता है। इससे विभिन्न उपयोगकर्ताओं के पास एक ही समय में कई सूचनाऐं होती हैं जिन्हें वे आपस में उपलब्ध कराते हैं।

4. **दस्तावेजों को तैयार करना (Preparation of Documents)** : अधिकतर कंप्यूटरीकृत लेखांकन प्रणाली के मापदण्ड होते हैं जो उपयोगकर्ता के आवश्कतानुसार लेखांकन प्रतिवेदन को स्वतः ही तैयार कर देता है लेखांकन प्रतिवेदन एक रोकड़ पुस्तक, तलपट, खाते के वर्णन को केवल माउस द्वारा क्लिक मात्रा से प्राप्त हो सकता है।

5. **सुपाठ्य (Clearity)** : कंप्यूटर के मॉनीटर पर डाटा जब आता है तो वह सुपाठ्य होता है। क्योंकि टाइपिंग के मानक फॉन्ट लिये गये हैं। ये मानवीय लेखांकन प्रणाली में संख्याओं को हाथ से लिखने की प्रक्रिया द्वारा होनेवाली गलती को खत्म करता है।

6. **प्रतिवेदन (Reports)** : कंप्यूटरीकृत–लेखांकन प्रणाली प्रबंधन के लिये सूचनाओं तुरन्त प्रभाव से उपलब्ध कराता है। जो

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

व्यापार के प्रबंधन व नियंत्रण के लिये कारगर साबित होता है। देनदारों का विश्लेषण धन डूबने की संभावना (डूबत ऋणों) को अंकित करता है। उदाहरण के लिए, यदि किसी कंपनी की निजी उधार विक्रय की अधिकतम राशि पर प्रतिबंध लगाती है तो यह जानकारी तुरंत कंप्यूटर पर उपलब्ध होगी जब भी प्रत्येक प्रमाणक डाटा प्रविष्टि आलेख द्वारा प्रवेशित होगा। जब कि इस गलती को ढूंढने के लिये मानवीय लेखांकन प्रणाली में समय लग जाता है। सुस्पष्ट जानकारी भी प्राप्त नहीं हो सकती है।

7. **भण्डारण एवं पुनः प्राप्ति (Storage and Access)** : कंप्यूटरीकृत लेखांकन प्रणाली एक पद्धति के अनुरूप डाटा को भण्डारित करती है। इसके लिये वस्तुतः ज्यादा जगह की आवश्यकता नहीं होती है। ऐसा इसलिये होता है क्योंकि हार्डडिस्क, सी.डी. रोम, फ्रलापी आदि बहीयों की तुलना में बहुत कम जगह लेती है। इसके अतिरिक्त डाटा एवं सूचनाओं को अतिशीघ्र प्राप्त कर सकते हैं।

8. **प्रोत्साहन और कर्मचारियों का हित (Motivation and Benefits of Employees)** : कंप्यूटर प्रणाली में कर्मचारियों को विशेष प्रशिक्षण की आवश्यकता होती है जिससे वे अपने आप को अधिक मूल्यवान मानने लगते हैं। ये प्रोत्साहन उनकी नौकरी में रूचि को बनाये रखता है। जब कि वे इसका विरोध भी उत्पन्न करते हैं। जब मानवीय लेखांकन प्रणाली से कंप्यूटरीकृत लेखांकन प्रणाली में इसे बदला जाता है।

मानवीय एवं कम्प्यूटरीकृत लेखा पद्धति
(Manual and Computerized Accounting System)

मानवीय एवं कम्प्यूटरीकृत लेखा प्रणाली एवं अन्तर को निम्न बिन्दुओं में समझा जा सकता है।

1. **मानवीय लेखा प्रणाली के तत्त्व :**

   (i) लेन–देन वाले वित्तीय व्यवहारों की पहचान मेनुअल रूप से होती है।

   (ii) लेन–देन को रिकार्ड एवं उनकी पुनः प्राप्ति मूल प्रविष्टियों की पुस्तकों से प्राप्त होती है।

   (iii) लेन–देन की प्रविष्टि सर्वप्रथम जरनल में की जाती है, उसके बाद उसे बही खातों में पोस्ट किया जाता है। इस प्रकार वित्तीय लेन–देन को दो बार दर्ज किया जाता है।

   (iv) खाता बही बनाने के बाद, खातों का संक्षिप्तिकरण करने हेतु, तलपट तैयार किया जाता है।

   (v) तलपट के माध्मय से अंतिम खाते तैयार किए जाते है, जिसमें लाभ–हानि खाता एवं चिट्ठा बनाया जाता है।

   (vi) यदि किसी प्रकार की प्रविष्टियों या खाता बही में गलतियाँ रह जाती है, तो उसमें सुधार हेतु समायोजन किए जाते है। इसके लिए त्रुटियों में प्रविष्टियों द्वारा सुधार किऐ जाते है।

   (vii) वर्ष के अन्त में लेखा खातों को बन्द कर दिया जाता है एवं उनके खाता शेष को अगले साल एवं उनके खाता शेष को अगले साल हस्तांतरित कर दिया जाता है।

2. **कम्प्यूटरीकृत लेखा प्रणाली**

   (i) लेन–देन वाले वित्तीय व्यवहारों की पहचान कम्प्यूटर द्वारा स्वचालित पूर्व निर्धारित प्रोग्रामिंग के द्वारा की जाती है।

   (ii) वित्तीय व्यवहारों को डेटाबेस के माध्यम से रिकार्ड किया जाता है।

   (iii) संग्रहित किया हुआ डेटा खाता बही में अपने आप प्रोसेस हो जाता है।

   (iv) तलपट बनाने के लिए खाता बही की जरूरत नहीं पड़ती है। हर प्रविष्टि स्वतः ही खाता बही शेष निकाल सकती है। हर प्रविष्टि के बाद खाता बही शेष स्वतः ही तैयार हो जाता है।

   (v) अंतिम खाते जैसे लाभ–हानि खाता एवं चिट्ठा प्रविष्टियों के बाद ही बन जाता है। इसका कारण यह है कि कोई भी प्रविष्टि सीधे प्रोसेस होकर अंतिम खाते बनाने के लिए तलपट पर निर्भर नहीं रहना पड़ता है।

   (vi) त्रुटि सुधार के लिए किसी प्रकार की मेनुअल प्रविष्ठी दर्ज करने की आवश्यकता नहीं होती है। बाऊचर के माध्यम से त्रुटि सुधार स्वतः ही हो जाता है।

   (vii) प्रारम्भिक एवं अंतिम खाता शेष डेटा बेस में जमा हो जाते हैं।

3. **क्रियावयन के उद्देश्य से मानवीय लेखा प्रणाली एवं कम्प्यूटरीकृत लेखा प्रणााली के मुख्य अंतर निम्न प्रकार से**

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

स्पष्ट किए जा सकते है :

(i) गति (Speed) – मानवीय लेखा एवं कम्प्यूटरीकृत लेखा प्रणाली में मुख्य अंतर गति का है। लेखांकन, सॉफ्टवेयर डेटा संसाधित रहता है और मेनुअल प्रणाली की तुलना में बहुत तेजी से लेखा एवं वित्तीय विवरण तैयार करता है। सॉफ्टवेयर के माध्यम से लेखों की गणना आदि गणितीय कार्य स्वचालित हो जाता है। मानवीय लेखा पद्धति में प्रविष्टी से लेकर अंतिम खातों तक कार्य श्रृंखलाबद्ध तरीकें से लेखाकार द्वारा हस्तलिखित होते हैं, जिनमें त्रुटियां होने की संभावना बनी रहती है। इन्हीं कारणों से लेखांकन प्रक्रिया पूरी होने में भी समय लग जाता है। कम्प्यूटरीकृत प्रणाली से त्रुटियों की संभावनाऐं भी कम होती है और यदि हो भी जाऐं तो उन्हें सुधारने में मेनुअल लेखा प्रणाली से काफी कम समय लगता है। कम्प्यूटरीकृत प्रणाली में त्रुटियों की संभवनाऐं भी कम होती है और यदि हो भी जाऐं तो उन्हें सुधारने में मेनुअल लेखा प्रणाली से काफी कम समय लगता है। कम्प्यूरकृत प्रणाली में सिर्फ एक ही बार डेटा इनपुट किया जाता है और एक ही बटन के क्लिक पर समूचे लेखा विवरण तैयार हो जाते है।

(ii) लागत (Cost) : मानवीय एवं कम्प्यूटरीकृत सिस्टम के बीच दूसरा अंतर लागत होती है। कागज एवं पेंसिल से मेनुअल लेखांकन की तुलना में सॉफ्टवेयर आधारित कम्प्यूटरीकृत प्रणाली ज्यादा खर्चीली होती है। कम्प्यूटरीकृत प्रणाली के रख रखाव की लागत भी अधिक आती है। इसे चलाने के लिए दक्ष कर्मचारियों की आवश्यकता होती है एवं उनकी प्रशिक्षण पर भी काफी खर्च आता है। कम्प्यूटर के अतिरिक्त अन्य हार्डवेयर जैसे पेन ड्राईव, यू.पी.एस., सर्वर, प्रिन्टर, हार्ड डिस्क, आदि की आवश्यकता रहती है। जिसके रख–रखाव में भी काफी खर्च आता है। इस प्रकार यह लेखा प्रणाली, मानवीय लेखा प्रणाली से अधिक खर्चीली होती है।

(iii) बैक अप (Back up) : मानवीय और कम्प्यूटराईज्ड प्रणाली में तीसरा अंतर वित्तीय विवरणों के बेक अप से है। इस प्रणाली में कई प्रकार के विवरणों को कही दूसरी जगह पर स्टोर किया जा सकता है। किसी प्रकार की दुर्घटना घटने पर उन विवरणों को सुरक्षित रखा जा सकता है। कागजों के रिकार्ड के साथ ऐसा करना संभव नहीं होता है।

(iv) सुरक्षा (Security) : कम्प्यूटरीकृत प्रणाली में लेखा विवरणों एवं प्रतिवेदनों को पासवर्ड के माध्यम से सुरक्षित रखा जा सकता है। इन कम्प्यूटराईजड विवरणों को चुराना या अन्य किसी प्रकार से गलत उपयोग में लाना संभव नहीं होता है। मेनुअल प्रणाली के अंतर्गत तैयार की गई पुस्तकों को चुराना अथवा उनकी किसी अनाधिकृत व्यक्ति द्वारा उपयोग करने की संभावनाऐं बनी रहती है।

(v) वर्गीकरण (Classification) : मानवीय लेखांकन प्रणाली में, लेन–देन को प्रारंभिक पुस्तकों में रिकार्ड करने के पश्चात् पुनः बहीयों में वर्गीकृत किया जाता है। इसके फलस्वरूप लेन–देन डाटा की प्रतिलिपि तैयार हो जाती है। जबकि कंप्यूटरीकृत लेखांकन प्रणाली में, वर्गीकृत सौदों को प्रतिलिपि में तैयार नहीं हो पाती है। बहियाँ तैयार करने के लिए भण्डारित सौदों के डाटा को प्रलेख के रूप में वर्गीकृत कर प्रदर्शित किया जाता है। एक समान लेन–देन संबंधी डाटा को विभिन्न प्रलेखों (Statement) द्वारा दिखाया जाता है।

(vi) संक्षिप्तीकरण (Summarization) : मानवीय लेखांकन प्रणाली में लेन–देनों को संक्षिप्त रूप से बहियों में दिखाया जाता है, तत्पश्चात् उनके खाता शेष को तलपट में हस्तांतरित कर दिया जाता है। जबकि कंप्यूटरीकृत लेखांकन प्रणाली में, प्रारम्भिक तौर पर एकत्रित डाटों को विभिन्न खातों के शेष तैयार कर ली जाती है जिसे अंततः तलपट प्रलेख में दर्शाया जाता है। तलपट के निर्माण हेतु बहीयों को तैयार करना कंप्यूटरीकृत लेखांकन प्रणाली के अंर्तगत् आवश्यक स्थिति नहीं होती है।

(vii) समायोजन प्रविष्टि (Adjustment Entity : मानवीय लेखांकन प्रणाली में, यह प्रविष्टियाँ आगम–लागत मिलान के सिद्धांत पर अभिलेखित की जाती है। दूसरे शब्दों में यह कहा जा सकता है कि इन प्रविष्टियों का अभिलेखन एक लेखांकन अवधि में किये गए व्ययों का उसी समयावधि के दौरान प्राप्त आगम के मिलान के रूप में किया जाता है। इसके अतिरिक्त कुछ अन्य समायोजित प्रविष्टियाँ त्रुटियों और उनके सुधार के लिए भी की जाती हैं। जबकि कंप्यूटरीकृत लेखांकन में आगम–व्यय मिलान सिद्धांत की पूर्ति के लिए प्रमाणक तैयार किया जाता है और सिद्धांत अशुद्धि को छोड़ बहियों में दिखाया जाता है। तत्पश्चात उन्हें खाता शेष को तलपट में हस्तांतरित कर दिया जाता है।

कम्प्यूटरीकृत लेखांकन पद्धति के प्रकार (Types of Computer Accounting System) –

कंप्यूटरीकृत लेखांकन प्रणाली एक बहु विकल्पीय लेखा प्रणाली है जिसमें डेटा के माध्यम प्रविष्टियां की जाती है और स्वतः ही लेखा बही, तलपट, लाभ–हानि खाता एवं चिट्ठा तैयार हो जाता है। यह प्रणाली लेखांकन के विभिन्न सह–कार्यों को ही संचालित करती है। इन सभी क्षेत्रों का उल्लेख निम्न प्रकार से है :–

1. **प्रबन्धकीय लेखांकन (Management Accounting)** – प्रबन्धकीय लेखांकन का उद्धेश्य, व्यापार को सुचारू रूप से चलाने हेतु, प्रबन्धकों को वित्तीय सूचनाऐं प्रदान करना है। इन सूचनाओं के द्वारा प्रबन्धक व्यापारिक गतिविधियों की योजना बना उन गतिविधियों को नियंत्रित कर सकते है। यह लेखांकन की वह शाखा है, जो व्यापारिक निर्णय लेने हेतु प्रबन्धकों के

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

मध्य सूचनाओं का आदान प्रदान करती है। यह वास्तविक लागत को रिकार्ड करती है, एवं विभिन्न लागत नियंत्रण तकनीकों द्वारा लागत कम करने का प्रयत्न करती है जैसे – प्रमाप लागत, बजटरी कंट्रोल, सीमान्त लागत लेखांकन आदि। यह प्रणाली कम्प्यूटर के द्वारा नियोजित लागत एवं वास्तविक लागत में तुलना कर उनमें विवरण ज्ञात करती है। इस पद्धति का एक सह–भाग अनुमानित लेखांकन है, जिसमें किसी प्रक्रिया में कम लागत का उपयोग कर किस प्रकार से अधिक लाभ अर्जित किया जाए, इस बात पर परिक्षण किया जाता है। इसे संसाधनों कि बर्बादी को नष्ट करने एवं ज्यादा लाभ अर्जित करने पर बल दिया जाता है। डेटा का उपयोग कर कम्प्यूटर के माध्यम से यह कार्य प्रबंधकों द्वारा तीव्र गति से किया जा सकता है।

2. **स्कंध लेखांकन (Inventory Accounting)** – स्कंध लेखा प्रणाली सामग्रियों के मूल्यांकन एवं उनके स्तर को ज्ञात करने के लिए प्रयोग में ली जाती है। जब माल को क्रय किया जाता है। तो उसकी प्रविष्टि इनवर्ड में कर दी जाती है। वह प्रविष्टि इकाई के कोड के अनुसार की जाती हे। इसे डेटा इन्टरफेस के माध्यम से उत्पादन विभाग एवं क्रय विभाग से जोड़ दिया जाता है। इस प्रकार उपयोग में लेने हेतु कितनी मात्रा में सामग्री उपलब्ध है, इसकी जानकारी सदैव स्टोर प्रबन्धक के पास उपलब्ध रहती है। यदि कई प्रकार को सामग्री उपयोग में ली जाती है, तो हर सामग्री का वर्गीकरण कर उसे कोड दिए जाते है। निर्मित इकाईयों के संदर्भ में बार कोडिंग की जाती है। बार कोडिंग से सामग्री को चिन्हित किया जा सकता है। स्कंध के मूल्यांकन हेतु भी विभिन्न निर्गमन के नियमों के अनुसार अंतिम स्कंध (Closing Stock) का मूल्यांकन किया जा सकता है।

3. **उद्योग विशेष लेखांकन (Industry specific accounting)**– लेखांकन प्रणाली में उद्योग विशेष अनुप्रयोग (Application) भी शामिल है। एक खुदरा व्यापारी के लिए लेखांकन की आवश्यकताऐं अन्य उद्योगों से अलग होती है। इसी प्रकार एक किराणा व्यापारी के लिए यह प्रणाली खुदरा व्यापारी से अलग होगी। ऐसा इसलिए क्योंकि किराणा व्यापारी की बिक्री नकद में ज्यादा होगी एवं उसके स्कंध का मूल्यांकन एक जटील प्रक्रिया होगी क्योंकि स्कंध में कई प्रकार की सामग्रियाँ सम्मिलित होती है। एक कॉरियर व्यवसाय के लिए भेजे गए सामान कि ट्रेकिंग आवश्यक होते है जिससे यह सुनिश्चित किया जा सकें कि भेजा गया सामान सही व्यक्ति के पास पहुंचा है या नहीं। इसी प्रकार किसी भी उद्योग विशेष का प्रचलित सामान्य व्यावहारिक परिस्थितियों को ध्यान में रखकर विशेष लेखांकन सॉफ्टवेयर तैयार किये जाते है, जिससे उनके संचालन में साध्यता लायी जा सके। एक व्यवसाय सुचारू रूप से चल सकें।

कंप्यूटरीकृत लेखांकन प्रणाली की सीमायें (Limitations of Computerized Accounting System)

कंप्यूटरीकृत लेखांकन प्रणाली की मुख्य सीमाओं का उदय उसके प्रचालकों के वातावरण में कार्य करने के द्वारा होता है। ये सीमायें नीचे दी गयी है :

1. **प्रशिक्षण की लागत** : कंपयूटरीकृत लेखांकन पैकेज के लिये सामान्यतः प्रशिक्षित कर्मचारियों की आवश्यकता होती है। फलतः कंप्यूटर लेखांकन प्रणाली को प्रभावशाली एवं कार्यदक्षता के लिये, हार्डवेयर व सॉफ्रटवेयर के प्रयोग करने की तकनीक की जानकारी को प्राप्त करने के लिये प्रशिक्षण की आवश्यकता होती है। जिस पर कापफी ज्यादा लागत आती है।

2. **कर्मचारियों का विरोध** : जब कभी भी लेखांकन को कंप्यूटरीकृत किया जाता है तब लेखा कर्मचारियों द्वारा इसका विरोध किया जाता है ये कर्मचारी इसकी पूर्व धारणा से ग्रसित होते हैं कि संगठन में उनकी महत्वता कम हो जायेगी तथा इनकी संगठन में संख्या पर भी प्रभाव पड़ेगा।

3. **विघटन** : जब कोई संगठन कंप्यूटरीकृत लेखांकन प्रणाली की ओर अग्रसर होता है तो उसे लेखांकन प्रणाली के कार्य में समय की बर्बादी के दौर से गुजरना पड़ता है। यह केवल कार्य के वातावरण में परिवर्तन के कारण होता है एवं इसके लिये ऐसे लेखा कर्मचारियों की आवश्यकता होती है जो इस प्रणाली व उसके कार्य करने के तरीके को अपना सके।

4. **प्रणाली की विपफलता** : कंप्यूटरीकृत लेखांकन प्रणाली की गंभीर सीमा तब आती है जब प्रणाली में टकराव के कारण हार्डवेयर की विपफलता और अनुवर्ती कार्य की हानि के कारण भयानक स्थिति उत्पन्न हो जाती है। जब कि बैक–अप व्यवस्था द्वारा इस स्थिति से निजात पाया जा सकता है। सॉफ्टवेयर की विपफलता उस पर वाइरस के आक्रमण के कारण आ सकती है। ऐसी स्थिति वस्तुतः लेखांकन प्रणाली संक्रिया में इंटरनेट का व्यापक ऑनलाइन प्रयोग के कारण आती है। सॉफ्टवेयर वाइरस के आक्रमण को रोकने के लिये कोई भी त्रुटिरहित या सुस्पष्ट हल उपलब्ध नहीं है।

5. **गलती की जाँच में असमर्थ** : चूंकि कंप्यूटर में न्याय करने की क्षमता का आभाव होता है जैसा कि मानव जाति में विद्यमान है। कंप्यूटर स्वयं अनिरुपित गलती को ढूढ़ नहीं सकते हैं। ऐसा इसलिये होता है क्योंकि सॉफ्रटवेयर के प्रोग्राम में पहचान की गई गलतियों का समूह होता है जिसे यह सॉफ्टवेयर पकड़ सकता है।

6. **सुरक्षा में दरार** : कंप्यूटर से संबंधित अपराधों को खोजना एक कठिन कार्य है किसी भी डाटा की प्रतिलिपि की सूचना के बिना आगे बढ़ा जा सकता है। मानवीय लेखांकन प्रणाली में इसे प्रथम दृष्टि में ही साधरण रूप से ही ढूढ़ लिया जाता है। कंप्यूटरीकृत लेखांकन प्रणाली में धोखाधड़ी और गबन को डाटा या प्रोग्रामों के फेरबदल द्वारा संपादित किया जाता है। लेखांकन अभिलेखों को उपयोगकर्ता के पासवर्ड (Password) की चोरी या अधिकृत जानकारी में फेरबदल कर इसे प्राप्त कर सकते हैं। इसे दूर–संचार की टेपिंग, लाइन टेपिंग अथवा प्रोग्रामों (क्रमादेशों) को पुनः खोलकर प्राप्त किया जाता है।

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

मानवीयकृत प्रणाली में इन कार्यों को सरलता से किया जाता है।

7. **स्वास्थ्य पर बीमारी का प्रभाव :** कंप्यूटर के व्यापक प्रयोग से कई स्वास्थ्य संबंधी समस्यायें उत्पन्न हो जाती हैं जैसे कमर दर्द, आंखो पर तनाव, मांसपेशियों में दर्द। एक और लेखांकन कर्मचारियों की कार्य दक्षता पर इसका प्रतिकूल प्रभाव पड़ता है और दूसरी ओर कर्मचारियों के चिकित्सा संबंधी व्यय बढ़ जाते हैं।

8. **सामान्य चेतना की शून्यता** : कम्प्यूटर की प्रोग्रामिंग इस प्रकार से की जाती है कि वह उसकी के अनुसार निर्णय देता है। यदि हमारे निर्देशों में किसी भी प्रकार की कोई छोटी गलती भी, परिणामों पर बहुत बड़ा नकारात्मक प्रभाव डाल सकती है। मशीन में यह क्षमता नहीं होती है कि वो स्वतः ही उस छोटी त्रुटि में सुधार कर सही परिणाम उपयोगकर्ता को दे सकें। इसलिए सामान्य चेतना के अभाव के कारण गलत परिणामों की संभावनायें रहती है।

9. **निर्णय लेने की असमर्थता** : कम्प्यूटर किसी भी प्रकार का निर्णय स्वयं नहीं ले सकता क्योंकि वह उपयोगकर्ता द्वारा प्रोग्राम किए गये निर्देशों के अनुसार कार्य करता है। उसे हर प्रकार की स्थिति से निपटने के लिए प्रोग्राम के द्वारा निर्देश देने होते है। कम्प्यूटर में मनुष्यों जैसे स्वयं निर्णय लेने की क्षमता नहीं होती है। किसी भी प्रकार के छोटे से छोटे निर्णय लेने हेतु कम्प्युटर को निर्देश देने पड़ते है।

10. **खर्चीली प्रणाली** : कम्प्यूटर प्रणाली को व्यवसाय मे स्थापित करने के लिए बड़े व्यय करनी की आवश्यकता होती है। मेनुअल प्रणाली में होने वाले खर्चे सीमित होते हैं। समय–समय पर सॉफ्टवेयर का नवीनीकरण भी करना पड़ता है जिससे व्ययों के बढ़ने की संभावना रहती है। किसी छोटे व्यापारी के लिए यह खर्च वहन करना सम्भव नहीं होता है। इसके अतिरिक्त कर्मचारियों का प्रशिक्षण भी करना पड़ता है।

11. **सुरक्षा की कमी** : कम्प्युटर में संचित किया हुआ डेटा एक व्यवसाय की सारी गुप्त सूचनाओं का समावेश होता है। कोई भी अनाधिकृत व्यक्ति उस डेटा को निकाल कर उसका तर्कुपयोग कर सकता है।

सारांश

कम्प्यूटरीकृत लेखा पद्धति का आशय : ''कम्प्यूटरीकृत लेखा पद्धति ऐसी तकनीक है, जिसके द्वारा सम्पूर्ण लेखांकन की गतिविधियों का कम्प्यूटर के माध्यम से संचालित किया जाता हैं''।

इस पद्धति के क्रियान्वन हेतु निम्न आवश्यकताऐं रहती है।

1. कम्प्यूटर (Computer)
2. सॉफ्टवेयर (Software)
3. हार्डवेयर (Hardware)
4. उपयोगकर्ता (User)
5. नेटवर्किंग प्रक्रिया (Networking Procedures)

कम्प्युटर के अंग (Parts of Computers)

कम्प्युटर के अंगों का तीन प्रकार से बांटा जा सकता है –

1. इनपुट इकाई
2. आऊटपुट इकाई
3. केन्द्रीय प्रोसेसिंग इकाई (CPU)

कम्प्यूटर लेखा प्रणाली की आवश्यकता एवं उपयोगिता (Need and Utitlity) :

कम्प्यूटर लेखे सॉफ्टवेयर के माध्यम से रखे जाते हैं। यह सॉफ्टवेयर डेटाबेस पर निर्धारित होते है। सामान्यतः कम्प्यूटर लेखा प्रणाली की आवश्यकता निम्न कारणों से उत्पन्न हुई है –

1. लेखांकन का कार्य तीव्र गति से एवं सटिकता के साथ किया जा सकता है।
2. लेखा समंकों को संचयन किया जा सकता है।
3. सभी प्रकार के वित्तीय विवरणों की सॉफ्टकॉपी रखी जा सकती है।

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

4. खातों का सामूहिकरण प्रारंभ से ही किया जा सकता है।

5. लेखों को कोड के माध्यम से प्रविष्ठ किया जा सकता है।

6. वित्तीय लेखों की सुरक्षा रहती है।

7. लेखांकन प्रतिवेदनों के प्रिन्ट आऊट लिए जा सकते है।

कम्प्यूटर लेखा प्रणाली की विशेषताऐं : एक कम्प्यूटर अपनी कुछ विशिष्टताओं के कारण, मेन्युअल सिस्टम से ज्यादा कार्य दक्षता रखता है। तीव्र प्रतिस्पर्धा एवं बढ़ते व्यापारिक लेन–देन की जटिलताओं को कम करने के लिए इस प्रणाली को महत्व बढ़ता जा रहा है। सटिकता, गति, विश्वसनीयता, बहुआयामी, स्वचालन, अनुकूलता एवं संचयन इसकी प्रमुख विशेषताऐं है।

विभिन्न प्रकार के प्रतिवेदनों को निकालने में सहायक होता है।

अभ्यासार्थ प्रश्न (Questions for Exercise)

वस्तुनिष्ठ प्रश्न :

1. निम्नलिखित उपकरणों में से निवेश युक्ति (Input Device) है–
   (अ) की–बोर्ड (ब) मॉनिटर
   (स) हार्डडिस्क (स) प्रिन्टर

2. कम्प्यूटर में मेमोरी (Memory) का मुख्य कार्य है–
   (अ) प्रोग्राम को चलाना (ब) हार्डवेयर को नियंत्रित करना
   (स) स्टोरेज करना (स) उपर्युक्त सभी

3. सी.पी.यू. का पूरा नाम है–
   (अ) कन्ट्रोल प्रोसेस यूनिट (Control Process Unit) (ब) सेन्ट्रल प्रोडक्सन यूनिट (Central Production Unit)
   (स) सेन्ट्रल प्रोसेसिंग यूनिट (Central Processing Unit) (द) कन्ट्रोल प्रोग्रोम यूनिट (Control Programme Unit)

4. कम्प्यूटर निर्देशों का एक समूह जो समंकों को प्रभावी रूप से व्यवस्थित व संगठित करता है, उसे कहते हैं–
   (अ) प्रोग्राम (ब) सूचना प्रणाली
   (स) डाटाबेस (Database) (स) समंक (Data)

5. कम्प्यूटरीकृत लेखांकन प्रणाली के लाभ हैं–
   (अ) गति (ब) विश्वसनीयता
   (स) सुपाठ्य (स) उपर्युक्त सभी

6. किसी संस्था के व्यापारिक खाता, लाभ–हानि खाता आदि कार्यों का प्रतिवेदन होता है–
   (अ) अपवाद प्रतिवेदन (ब) प्रतिवेदन का ढाँचा
   (स) उत्तरदायित्व प्रतिवेदन (द) संक्षिप्त प्रतिवेदन

7. निम्नलिखित में से प्रबन्धकीय प्रक्रिया है–
   (अ) योजना बनाना (ब) निर्देश देना
   (स) नियंत्रण (द) उपर्युक्त सभी

8. सॉफ्टवेयर (Software) है–
   (अ) भाषा (ब) क्रमादेश
   (स) कम्प्यूटर के भौतिक भाग (द) उपर्युक्त में से कोई नहीं

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

9. निम्नलिखित में से कौनसी भाषा को कम्प्यूटर सीधा समझ लेता है–
(अ) मशीन भाषा (ब) असेम्बली भाषा
(स) अंग्रेजी भाषा (द) उच्च स्तरीय भाषा

10. कम्प्यूटरीकृत लेखांकन की सॉफ्टवेयर के संघटक है–
(अ) विक्रय (ब) क्रय
(स) खाताबही (द) उपर्युक्त सभी

11. लेखांकन (कम्प्यूटरीकृत) प्रणाली की विशेषता है–
(अ) क्रय–विक्रय छपे हुए रूप में (ब) लेखा समंकों का ऑनलाइन निवेश
(स) उपर्युक्त दोनों (द) कोई नहीं

उत्तर–

1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11
अ	स	स	अ	द	द	द	ब	अ	स	स

लघूत्तरात्मक प्रश्न :

1. हार्डवेयर एवं सॉफ्टवेयर में अन्तर स्पष्ट कीजिए।
2. कम्प्यूटर लेखा प्रणाली की सीमाएं बताईयें।
3. कम्प्यूटर लेखा प्रणाली की विशेषताओं का वर्णन कीजिए।
4. कम्प्यूट प्रणाली के विभिनन अंगों का वर्णन कीजिए।
5. कम्प्यूटर लेखा प्रणाली किसे कहते है इसकी क्या उपयोगिताएं हैं ?
6. मेनुअल लेखा प्रणाली एवं कम्प्यूटरीकृत लेखा प्रणाली में अन्तर स्पष्ट कीजिए।
7. लेखांकन प्रतिवेदन किसे कहते है? उदाहरण द्वारा स्पष्ट कीजिए?
8. लेखांकन में कम्प्यूटर के योगदान को समझाइये।
9. कम्प्यूटर संबंधित विभिन्न सूचना प्रणालियों को समझाइये।
10. लेखांकन के सॉफ्टवेयर पैकेजस कितने प्रकार के होते है समझाइये ?

अतिलघूत्नात्मक प्रश्न :

1. कम्प्यूटर लेखा प्रणाली के कोई दो लक्षण बताईये।
2. कम्प्यूटरकृत लेखा प्रणाली किसे कहते है?
3. प्रबन्धन सूचना प्रणाली किसे कहते है?
4. कस्टमाईज्ड लेखांकन सॉफ्टवेयर किसे कहते है?
5. कम्प्यूटर के विभिन्न घटकों के नाम लिखिए।
6. सेन्ट्रल प्रोसेसिंग यूनिट क्या हैं?
7. लेखांकन सूचना प्रणाली किसे कहते है?

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

15

डेटाबेस मैनेजमेन्ट सिस्टम
(Database Management System)

अध्ययन के उद्देश्य (Learning Objective)

इस अध्याय के अध्ययन के पश्चात आप :

- डेटा, डेटाबेस में अन्तर को पहचानेंगे
- डेटाबेस मैनेजमेन्ट सिस्टम की प्रमुख विशेषताओं को जानेंगे
- एम.एस.एक्सल के घटकों को समझेंगे
- स्ट्रक्चरर्ड क्वेरी लेंग्गुऐज को समझेंगे
- डेटाबेस के लिए सारणी तैयार कर पायेंगे
- डी.बी.एम.एस. के विभिन्न प्रकार सीख पायेंगे

एक व्यावसायिक संगठन में दैनिक स्तर पर विभिन्न प्रकार के लेन–देन किये जाते है। ये सभी लेन–देन वित्तीय प्रकृति के होते है। इस प्रकार के लेन–देन विभिन्न वित्तीय विवरणों एवं लेखा पुस्तकों के माध्यम किये जाते है। वर्ष के अंत में इन लेखों को अंतिम रूप देकर लाभ एवं हानि की गणना की जाती है। लेखांकन की इस प्रक्रिया में विभिन्न प्रकार के आंकडों (Data) से उपयुक्त प्रकार का निर्णय लेने में समय लगता है, क्योंकि यह सभी आंकड़े अलग–अलग पुस्तकों में होते है। ये सभी लेखा पुस्तकें अलग–अलग वर्ष से ही संबंधित होती है। इन पुस्तकों के आंकड़े एक दूसरे से संबंधित होते है अर्थात् एक दूसरे पर प्रभाव डालते है। इस प्रकार के आंकड़ों को ज्यादा समय तक संग्रहीत करने में कई प्रकार की बाधाऐं आती है। जैसे पिछले दस वर्षों के लाभ अथवा हानि के आधार पर, आने वाले वर्षों के लिए लाभ–हानि का तुरन्त अनुमान लगाना कठिन हो जाता है। जिससे व्यावसायिक निर्णयों को लेने में विलम्ब हो जाता है। इन सभी प्रकार की चुनौतियों को दूर करने के लिए कम्प्यूटरीकृत सूचना प्रबंधन प्रणाली का निर्माण किया गया है।

डी.बी.एम.एस. की अवधारणा (Concept of DBMS) :

यह सूचना प्रणाली विभिन्न प्रकार के डेटा के माध्यम से प्रबंधन के निर्णयों हेतु सूचनाऐं प्रदान करती है। इन सभी डेटा को व्यवस्थित कर उन्हें आवश्यकता अनुसार सूचनाओं में परिवर्तित करने का कार्य डेटाबेस मैनेजमेन्ट सिस्टम के माध्यम से किया जाता है। यह प्रणाली सह–सम्बन्धित आंकड़ों को उपयोग करने के लिए बनाए गए प्रोग्राम्स का एक समूह है। इसका उद्देश्य सॉफ्टवेयर के माध्यम से डेटा को एकत्र कर आवश्कतानुसार उसके प्रबंधन के कार्य को करना है। यह एकत्रित किए गए डेटा को निश्चित सूचनाओं में भी परिवर्तित करता है। इसका प्रयोग विभिन्न क्षेत्रों में किया जाता है। जैसे रेलवे आरक्षण, बस आरक्षण, परीक्षा नियंत्रण, स्कंध, पेरोल भण्डारण, कर्मचारियों संबंधित वेतन, उपस्थिति आदि।

डेटाबेस मैनेजमेन्ट प्रणाली प्रमुख रूप से तीन क्रियाओं को नियन्त्रित करता है।

(i) डेटा बेस इंजन : यह डेटा प्रदान करता है एवं उसमें आवश्यकता अनुसार संशोधन करता है। डेटा को पूर्ण रूप से नियंत्रण करने का कार्य, डेटाबेस इंजन पर निर्भर करता है।

(ii) डेटा : ये सूचनाओं के स्रोत है।

(iii) डेटा बेस स्कीम : यह सम्पूर्ण प्रक्रिया की संरचना को चलाता है।

इस प्रकार यह एक केन्द्रीयकृत सूचना प्रणाली है, जिसमें कई प्रकार के आंकड़ों को उपयोगकर्ता अपनी सुविधानुसार विभिन्न प्रकार के निर्णयों में इसका प्रयोग कम्प्यूटर के माध्यम से करते है।

डेटाबेस मैनेजमेन्ट सिस्टम के कार्य (Functions of DBMS)

1. डेटाबेस मैनेजमेन्ट सिस्टम का प्रमुख कार्य विभिन्न प्रकार के आँकड़ों की जानकारी को उपयुक्त माध्यम से संग्रहण कर पुनः प्राप्त (access) करने का तरीका प्रदान करता है। जैसे एक स्कूल में पढ़ने वाले विद्यार्थियों की जानकारियों को निम्न प्रकार से संग्रहित कि जा सकती है, विद्यार्थी का नाम, अनुक्रमांक, पता, पिता का नाम, कक्षा, वर्ग, जन्म–तिथि

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

आदि।

2. यह प्रणाली किसी संस्था की बड़ी सूचनाओं को समूह में विकसित कर इन सभी सूचनाओं को सुनियोजित तरीके से प्रबंधन करती है।
3. अपने उपयोगकर्त्ता के लिए डेटा का निर्माण, उसमें बदलाव (edit) एवं उसमें सुधार की सुविधा प्रदान करती है।
4. यह एक समवर्ती प्रणाली है, जो एक ही समय पर अलग–अलग उपयोगकर्त्ताओं को एक ही डेटाबेस पर कार्य करने की सुलभता प्रदान करता है। इस प्रकार से डी.बी.एम.एस. मल्टीयूजर वातावरण को प्रेरित करता है।
5. यह डेटा की सुरक्षा की दृष्टि से इसके वास्तविक उपयोगकर्त्ता को ही डेटा के प्रयोग करने की अनुमति प्रदान करता है। इस सुविधा के अनुसार उपयोगकर्त्ता अपने ही विभाग के डेटा पर कार्य कर पाता है, जिससे दूसरे विभागों की सूचनाओं की सुरक्षा बनी रहती है।
6. यह डेटा में सामंजस्य स्थापित करता है एवं अनावश्यक डेटा को कम करता है, जिससे डेटा विस्तृत हो जाते है। इस विस्तृत डेटा से निर्णय लेने में आसानी रहती है।
7. डी.बी.एम.एस. अपने उपयोगकर्त्ता को विविध व्यूज (views) उपलब्ध करता है। जैसे सेल्स (sales) विभाग को उपयोगकर्त्ता को स्क्रीन अलग दिखाई देगी एवं लेखा शाखा के उपयोगकर्त्ता को अलग। इसके अनुसार एक ही डेटाबेस के माध्यम से उपयोगानुसार डेटा को काम में लिया जा सकता है।

डी.बी.एम.एस. के लाभ (Advantages of DBMS)

1. डी.बी.एम.एस. आँकड़ों में सामजस्य (coordination) स्थापित करता है एवं अनावश्यक आँकड़ों को कम करता है। इससे निर्णय लेने में स्पष्टता रहती हैं।
2. डी.बी.एम.एस. कुछ विशेष तकनीकों के उपयोग द्वारा डेटा को संग्रहित कर उसको उपयोगकर्ता को ऐक्सस कराता है। यह जटील डेटा का सरलीकरण एवं उसे विस्तृत भी करता है।
3. विविध उपयोगकर्त्ता को उनके आवश्यकतानुसार डेटा पर कार्य करने की सुलभता प्रदान करता है।
4. डी.बी.एम.एस. डेटा को संग्रहित कर, विभिन्न प्रयोगों के लिए पुनः प्राप्त करने की सुविधा प्रदान करता है।
5. डेटा का डी.बी.एम.एस. के माध्यम से आदान प्रदान होता है। डी.बी.एम.एस. डेटा की प्रमाणिकता एवं स्थिरता को लागू करता है। जिससे डेटा की विश्वसनीयता बढ़ती है।
6. यह कम से कम समय में डेटा का विश्लेषण करता है, जिससे तुरन्त निर्णय लेने में सहायता मिलती है।
7. डी.बी.एम.एस. का उपयोग एक ये ज्यादा उपयोगकर्ता कर सकते है। एक ही डेटाबेस में एक संस्था के क्रय एवं विक्रय विभाग एक ही समय पर डेटा का उपयोग कर सकते है। उत्पादन विभाग का डेटा इस पर निर्भर करता है किसी वित्तीय वर्ष में कितनी बिक्री कि जायेगी।
8. डी.बी.एम.एस. में प्रयुक्त होने वाले सम्पूर्ण डेटा को इलेक्ट्रोनिक सुरक्षा प्रदान की जाती है। इसे उपयोग करने के लिए एक निश्चित पासवर्ड दिया जाता है। उपयोगकर्ता एक दूसरे डिपार्टमेन्ट की सूचनाओं को बिना अनुमति के उपयोग नहीं कर सकता। विभिन्न विभागों द्वारा DBMS अलग–अलग स्तर पर डेटा का सुरक्षा के प्रदान करता है। अनाधिकृत व्यक्ति सूचनाओं का उपयोग नहीं कर पाता है।

डेटाबेस मैनेजमेन्ट सिस्टम के तत्व (Components of DBMS)

डेटाबेस मैनेजमेन्ट सिस्टम के प्रमुख तत्वों को निम्न प्रकार से समझा जा सकता है :

1. **डेटाबेस (Data Base)** : एक संग्रहित किए हुए आँकड़ों का एक समूह है जो एक दूसरे से आपस में संबंधित होते है, जिनके द्वारा निश्चित सूचनाओं का निर्माण किया जाता है। उदाहरण के लिए एक स्कूल के सभी विद्यार्थियों द्वारा परीक्षा में अर्जित किए गये अंक एक डेटा बेस है। इन आँकड़ों के माध्यम से हम प्रथम श्रेणी, द्वितीय श्रेणी, तृतीय श्रेणी से उत्तीर्ण होने वाले कुल विद्यार्थियों की गणना कर सकते है। इसी प्रकार किसी एक कक्षा में फेल होने वाले विद्यार्थियों की गणना

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

भी कि जा सकती है। उपर्युक्त डेटा में विद्यार्थियों की कक्ष में उपस्थिति आदि की गणना भी कि जा सकती है। डेटा बेस के माध्यम डी.बी.एम.एस. का प्रोसेसिंग सिस्टिम निम्न कार्य करता है :

- संमकों का संग्रहण (Datas Collection)
- संमकों का संपादन (Datas Editing)
- संमकों का परिचालन (Datas Manipulation)
- संमकों का भण्डारण (Datas Storage)
- संमकों का समीक्षा (Datas Analysis)
- प्रक्षेपण (Output)

2. **प्रशासक (Administrator)** : DBMS को संचालित करने का उत्तरदायित्व प्रशासक होता है। ये प्रोफाईल का निर्माण करते है। जिनका उपयोग विभिन्न उपयोगकर्ता करते है। उदाहरण के लिए, जिसे किसी स्कूल के विद्यार्थियों को डेटा का उपयोग, विद्यार्थी, अध्यापक एवं स्कूल प्रशासन द्वारा किया जा सकता है। इसके लिए डी.बी.एम.एस. प्रशासक तीन प्रकार के अलग–अलग प्रोफाईल बना सकता है। विद्यार्थी का प्रोफाईल, अध्यापकों का प्रोफाइल, स्कूल प्रशासन का प्रोफाईल। डेटा की सुरक्षा की दृष्टि से यह निश्चित किया जाता है कि कौनसा डेटा किस उपयोग में लाने की छूट दी जाए। जैसे एक विद्यार्थी उसकी कक्षा में कुल उपस्थिति देख सकता है, एवं वह किसी दूसरे विद्यार्थी की भी उपस्थिति देख सकता है। किन्तु वह किसी अन्य विद्यार्थी के अंक नहीं देख सकता।

3. **डेटा (Data)** : डेटा किसी भी प्रकार की सूचना हो सकती है, जिसका प्रयोग हम कम्प्यूटर के माध्यम से एक सूचीबद्ध तरीके से काम में लिया जाता है। इस प्रकार के डेटा एक दूसरे से संबंधित होते है। जैसे नाम, रोल नं. पता, शहर जिला आदि एक प्रकार का डेटा है। एक व्यावसायिक संस्था में क्रय, विक्रय, लाभ, हानि, व्यय आदि एक प्रकार का डेटा है, जो एक दूसरे से संबंधित है। फोन बुक में उपलब्ध नंबर, बैंक के खाते, फैक्ट्री में कार्य करने वाले मजदूरों के नाम एवं किताबों की सूची आदि कुछ डेटा के उदाहरण है।

4. **सॉफ्टवेयर (Software)** : किसी न किसी प्रकार की सूचनाओं डेटा का प्रबंधन सॉफ्टवेयर के माध्यम से किया जाता है। यह सॉफ्टवेयर डेटा को स्टोर करना, प्रोसेस करना, सॉफ्टवेयर मेन्युअल बनाने आदि का कार्य करता है। उदाहरण के लिए एम.एस. एक्सेस, एम.एस. एक्सल।

5. **यूजर इनटरफेस (User Interface)** : उपयोगकर्ता से संबंध स्थातिप करने वाले स्क्रीन्स को तैयार करना। जिसको उपयोगकर्त्ता देखेंगा। जिससे युजर संबंध स्थापित करेगा और अपने कुछ आकड़ों को इनपुट करेगा या कुछ आऊटपुट देखना चाहेगा। जैसे पुस्तकालय के लिए कोई सॉफ्टवेयर बनाना है। इस सिस्टम को यूज करने वाले उपयोगकर्ता, पुस्तकालय विद्यार्थी, आदि को जो स्क्रीन दिखेगी। जिस पर वो काम करेगा, उसे हमें युजर इंटरफेस कहते है। उस संबंध के माध्यम प्रशासक को यह ज्ञात होगा कि वो क्या–क्या काम कर सकता है, जैसे उसे डेटा कहा फिड करना है, कहा क्लिक करना है, पिछली स्क्रीन पर कैसे आना है आदि।

6. **डेटा प्रोसेसिंग (Data Processing)** : यूजर इंटरफेस के द्वारा कम्प्युटर को दी गई जानकारी के आधार पर उपयोगकर्त्ता आउटपुट निकालना चाहता है। पहले से प्रोग्राम की गई सूचनाओं के आधार पर सिस्टम आउटपुट निकालता है। इस पुरी प्रक्रिया को डेटा प्रोसेसिंग कहते है। यह डेटा मेनिपुलेशन की प्रक्रिया है।

7. **फाईल हेंडलिंग प्रोग्राम्स (File Handling Programmes)** : इसके माध्यम से हम डेटा को संग्रहण करके रखते है। नई फाईल ढूंढना, फाईल बनाना एवं फाईल को मैनेज करने का कार्य इन प्रोग्राम के माध्यम से किया जाता है। यह डेटा के स्टोर करने की एक प्रक्रिया है। स्टोरेज में हमारी एपलिकेशन से संबंधित सारा डेटा रखा हुआ होता है। यही से आवश्यकता अनुसार आकड़ों को लिया जाता है।

डेटाबेस मैनेजमेन्ट सिस्टम **के प्रकार (Types of DBMS)**

(1) हायरार्कीकल (2) नेटवर्क (3) रिलेशनल

1. **हायरार्कीकल (Hierarchical)** – पूर्व में डिजाइन किये हुए डेटाबेस हायराकींकल होते थे, जिनकी संरचना treelike structure में होती थी इनमें एक मेन रूट तथा शेष शाखाऐं मानी जाती है। उसके शाखाऐं (nodes) होते है तथा एक से अनेक (one to many) के रूप में ही फ्लो होता है। इससे यह एक परिवर्तनशीन संरचना नहीं हैं।, कोई भी node, root को पुनः संपर्क नहीं कर सकती तथा डेटा का flow एक ही दिशा में होता है। इन्हीं कमियों की वजह से आगे डेटाबेस का डिजाइन बदला गया जिससे डेटा का सही समय पर पूर्ण एवं उचित प्रयोग किया जा सकें। इसे निम्न चित्र द्वारा दर्शाया गया है।

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

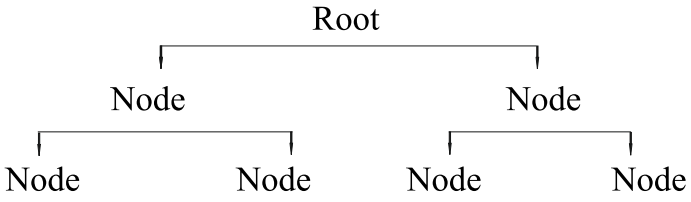

चित्र 1 : हायरार्कीकल डी.बी.एम.एस

2. **नेटवर्क (Network)** – नेटवर्क सिस्टम में डेटाबेस की सारी nodes एक–दूसरे से जुड़ी हुई हैं, जिससे जहाँ पर डेटा जिस node से चाहिए वहाँ से उपलब्ध करा दिया जाये अर्थात् यह अनेक से अनेक (many to many relationship) है जिसमें कई बार उच्च डेटा उपलबधता की वजह से डेटा क्लटर की स्थिति आ जाती है, जैसे दो nodes के एक साथ डेटा release करने की स्थिति में जिससे डेटा या तो आपस में ही उलझकर रह जाता है या उचित स्थान तक नहीं पहुँच पाता। इसे निम्न चित्र में दर्शाया गया है।

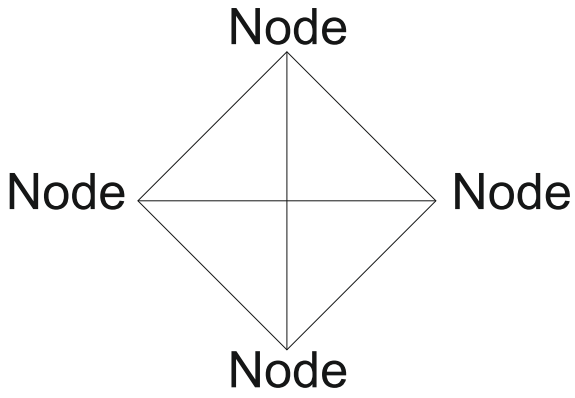

चित्र 2 : नेटवर्क डी.बी.एम.एस. का उदाहरण

3. **रिलेशनल (Relational)** – रिलेशनल डेटाबेस में हायराकींकल और नेटवर्क की सभी असुविधाओं को ध्यान में रखकर तीनों तरह का डेटा flow रखा गया जो एक से एक, एक से अनेक तथा अनेक से अनेक फार्म में होता है। जिससे आवश्यकतानुसार इनका प्रयोग कर डेटाबेस सम्बन्धी समस्याओं को सुलझाया जाता है।

डेटाबेस की संरचना
(Data Base Structure)

डेटाबेस की संरचना को तैयार करने में प्रयुक्त किये जाने वाले प्रमुख तत्व निम्न प्रकार है –

1. **वास्तविकता (Reality)** – साधारणतया संस्था के कार्यकलापों के अनुसार डेटा की एक संरचना तैयार की जाती है। जिसमें सभी तरह के कार्यों से संबंधित आंकड़ों का समावेश सुनिश्चित हो जाये। उदाहरण के लिए लेखांकन एक कार्य है, जिससे संबंधित डेटा लिए जायेंगे।

2. **समंक (Data)** – मूल आंकडे, तथ्य तथा सांख्यिकी आंकड़े जिनके आधार पर निर्णय नहीं लिया जा सकें उसे समंक कहते है। ये विभिन्न विभागों से एकत्र किये जाते हैं।

3. **समंक आधार (Data base)** – कम्प्यूटर में समंक संग्रहित (Store) करने के लिए सबसे छोटी इकाई एक अक्षर (जैसे 1, 2, 3, 4, **A, B, C, D,** क, ख, ग, अ) होती है और अक्षरों के समूह से डेटा आइटम बनते हैं, जैसे Name, Address आदि।

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

डेटा आइटम्स के समूह की रिकॉर्ड (Record) कहते है। जैसे विद्यार्थियों के रिकार्ड में रोल नम्बर, नाम, विषय आदि। रिकार्डों के समह को डेटा फाइल (Data file) कहते है तथा डेटा फाइलों के समूहों को समंक आधार कहा जाता है।

4. **सूचना (Information)** – डेटा का प्रक्रियांकन (Process) करने पर प्राप्त परिणामों के आधार पर यदि कोई निर्णय लिया जा सके तो इसे सूचना कहते हैं। यदि इन परिणामों के आधार पर यदि कोई निर्णय नहीं हो सकते तो उन्हें दुबारा (Process) करते हैं। यह प्रक्रिया तब तक चलती रहेगी जब तक सूचना लायक परिणाम न मिले।

5. **समंक आधारित प्रबन्ध प्रणाली (Database Management System)** – यह एक सॉफ्टवेयर है जो डेटाबेस को काम में लेते हुए उपयोगकर्त्ता द्वारा मांगी गई सभी क्वेरीज के परिणाम ज्ञात करने में सहायक हो। डेटाबेस में डेटा को संग्रहित करना, उनकी संरचना तैयार करना, आवश्यकता के अनुसार परिवर्तन करना, अनावश्यक डेटा को हटाना, इच्छित परिणामों के लिए प्रोसेस करना तथा आवश्यकता अनुसार डेटा को क्रम में व्यवस्थित करना आदि कार्य करने में समंक आधारित प्रबंध प्रणाली सहायक होती है।

6. **डेटा मॉडल (Data Modal)** : डेटा एक तथ्यों का संकलन है। यह डेटा उपयोगकर्ताओं को उनकी उपयोग के अनुसार सूचना प्रदान करता है। डेटा मॉडल डी.बी.एम.एस के तर्कसंगत संरचना को परिभाषित करता है। एक सिस्टम के अन्दर डेटाबेस यह परिभाषित करता है कि डेटा आपस में किस प्रकार से जुड़ा है।

7. **ईन्टीटी संबंध मॉडल (Entity Relationship Model)** : ईन्टीटी संबंध मॉडल, इंटीटी मॉडल इंटीटी एवं उसके गुणों पर आधारित होता है। इंटीटी एक वस्तु व्यक्ति विशेष पर आधारित है। उदाहरण के लिए एक हॉस्पिटल के डेटाबेस में एक मरीज एन्टीटी (ईन्टीटी) है और उसके गुण (attribute) है, उसका नाम, जन्मतिथि, पिता का नाम, हॉस्पीटल में भर्ती होने की तिथि, रोग का नाम, आदि। ER मॉडल आधारित होता है :

- ईन्टीटी (एंटीटी) और उसके गुण (एट्रीब्यूट)
- एंटीटी के आपसी संबंध। यह विस्तृत रूप से नीच बतलाए गये है।

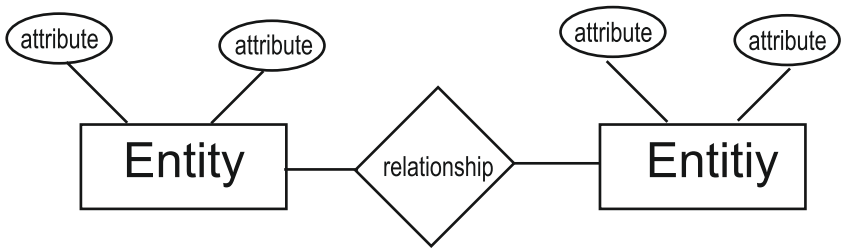

चित्र 3 : ER मॉडल

(i) एंटीटी (Entity) :

एंटीटी ER मॉडल के वस्तु विशेष पर आधारित वास्तविक परिस्थितियों की संरचना होती है तथा उसके गुणों को एट्रीब्यूट कहते है। हर एट्रीब्यूट के पारिभाषित संगृहीत मान को डोमेन कहते है। जब कभी एक ईन्टीटी प्रकार (जैसे प्रमाणक) का एक गुण (जैसे देय खाता) एक दूसरे ईन्टीटी प्रकार (जैसे खाते) के मध्य इन ईन्टीटी कोई भी वस्तु जिसका स्वतंत्र अस्तित्व होता है वह ईन्टीटी कहलाती है। जैसे कि एक वस्तु भौतिक अस्तित्व के साथ जैसे कार, घर या एक अभौतिक अस्तित्व लेकिन लेखांकन वास्तविकता के संदर्भ पाँच के ईन्टीटी होते है। जैसे–लेखा, कर्मचारी, खातों के प्रकार तथा सहायक दस्तावेज। लेखांकन डेटा को ईन्टीटी द्वारा तैयार किया जाता है। उदाहरण एक कॉलेज के डेटाबेस में छात्र एक एंटीटी है और उसके एंट्रीब्यूट है उसका नाम, पिता का नाम, जन्मतिथि, लिंग, कक्षा इत्यादि।

(ii) संबंध (Relation) :

वस्तु विशेष के परस्पर तर्कसंगत संगति को संबंध कहते है। संबंधों का एंटीटी के साथ अनेक रूपों में चित्रण किया जा सकता है। वस्तु विशेष के आपस में तर्कसंगत संगति को संबंध कहते है। यह संबंध दो एंटीटी के मध्य हो सकता है। इसके अतिरिक्त दो या दो से अधिक ईन्टीटी प्रकारों के संबंध यह प्रदर्शित करते है कि संबद्ध ईन्टीटी के मध्य आपसी संबंध है। दो एंटीटी के मध्य संबंधों को चित्रण अनेक प्रकार से संभव है। जैसा नीचे दर्शाया गया है।

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

One to one 1 : 1	Entity	1	Relationship	1	Entity
One to Many 1 : N	Entity	1	Relationship	*	Entity
Many to one N: 1	Entity	*	Relationship	1	Entity
Many to Many N: N	Entity	*	Relationship	*	Entity

चित्र 4 – दो एंटीटी के बीच रिलेशशिप के प्रकार

उपर्युक्त चित्र में 1 का तात्पर्य (एक) से है, एवं * का तात्पर्य (Many) से है।

(iii) Entity Relatonship (इन्टीटी संबंध) :

मॉडल की अवधारणा का प्रयोग सबसे ज्यादा डेटाबेस अनुप्रयोगों में होता है। इन्टीटी संबंध मॉडल के प्रमुख अंगों ईन्टीटी, विशेषता, पहचानकर्ता तथा संबंधों का प्रयोग वास्तविकता के लिए किया है। डेटाबेस का प्रारूप, इस मॉडल के संकेतों के द्वारा समझ सकते है। निम्नलिखित संकेतों का प्रयोग विभिन्न प्रकार के ईन्टीटी, लक्षण, पहचान तथा संबंधों को व्यक्त करने में होता है –

अर्थ	चिन्ह
ईन्टीटी आयताकार अर्थ बक्से के रूप में	
कमजोर ईन्टीटी दोहरी लाइन वाले आयताकार	
संबंधपरक हीरे के आकार वाले बक्से के रूप में	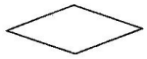
संबंधों की पहचान दोहरी लाइन के हीरे की आकृति का रूप लक्षण (विशेषता)	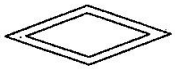
अण्डाकार आकृति में ईन्टीटी को संलग्न करके सीधी लाइन के माध्यम से नाम के साथ	
मूल लक्षण नाम को अण्डाकार आकृति में संलग्न करके उसके ईन्टीटी को सीधी लाइन के साथ रखकर	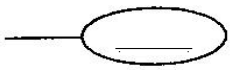
बहुमूल्य लक्षण दोहरे अण्डाकार रूप में	
रूपान्तरित लक्षण बिन्दुसार अण्डाकार	

(iv) **पहचानक** : सभी ईन्टीटी प्रकार के एक ही तरह के गुण है जिसका कि अलग मूल्य होता है, जिससे ईन्टीटी उल्लेख की पहचान होती है। उदाहरणार्थ, रोल नं, विद्यार्थी ईन्टीटी प्रकार का गुण है, जिसका कि अपना एक कोड नम्बर होता है, जिसके द्वारा खास विद्यार्थी की पहचान होती है। इसे निम्न चित्र द्वारा दर्शाया जा सकता है।

(v) **कमजोर ईन्टीटी (Weak Entity)** : कभी–कभी दो या दो से अधिक ऐसे गुण एक साथ मिलकर इस तरह से विभिन्न मूल्यों की रचना करते है। कुछ ईन्टीटी एक से अधिक गुण वाले हो सकते हैं। वह ईन्टीटी प्रकार जिसका कोई भी मुख्य गुण नहीं होता हैं उसे कमजोर ईन्टीटी कहते है।

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

(vi) गुण (Attribute) : यह किसी भी व्यक्तित्व का वह गुण है जो कि उस ईन्टीटी के बारे में विस्तृत करता है; जैसे कि ऊँचाई, वजन और जन्म तिथि में सभी गुण व्यक्ति पर लागू होते हैं और लेखांकन की स्थिति में लेखा कोड व नाम आदि की जानकारी होती हे। प्रत्येक गुण के लिए एक ईन्टीटी होता है जिसका अपना मूल्य होता हैं जो कि डेटा के रूप में डेटाबेस में एकत्र रहता है। किसी भी ईन्टीटी के अनेक प्रकार के लक्षण होते हैं जो निम्न प्रकार से है–

गुण के प्रकार (Types of Attributes) :

(a) साधारण गुण : साधारण गुणों को विभाजित नहीं किया जा सकता है। जैसे एक मशीन द्वारा एक वर्ष में उत्पादन की गई इकाइयाँ, साधारण गुण है।

(b) मिश्रित गुण : यह गुण कुछ छोटे–छोटे उपभागों में विभाजित होते है। यह गुण अपने मूल अर्थ को प्रकट करते है। जैसे स्थाई सम्पत्तियाँ एक मिश्रित गुण है, इसमें कई प्रकार की स्थाई संपत्तियाँ हो सकती है।

(c) एकल मूल्य गुण : ऐसा गुण जिसका एक इकाई के लिए ही मान होता है, वह एकल मूल्य कहलाता है। जैसे किसी कंपनी का किसी एक वर्ष का शुद्ध लाभ एक मूल्य गुण है।

(d) बहुमूल्य गुण : ऐसे गुण जिनका एक इकाई के लिए एक से अधिक मान होते है, बहु–मूल्य गुण कहलाते हे। जैसे एक कंपनी में कार्यरत कर्मचारी की योग्यताऐं बहुमूल्य गुण है।

(e) संचित बनाम प्राप्ति गुण : इसमें दो या दो से अधिक गुण एक दूसरे से इस प्रकार से संबंधित होते है, कि एक गुण मुख्य गुण तथा दूसरा आश्रित गुण बन जाता हैं।

लेखांकन का डेटाबेस

(Database in Accounting)

एक लेखांकन प्रक्रिया में कई प्रकार के डेटा का उपयोग किया जाता है। लेखांकन डेटा की मात्रा इस बात पर निर्भर करती है कि व्यापार का प्रारूप क्या है एवं उसके लेन–देन का विस्तार करना है। यदि एक एंकाकी व्यापार है तो डेटा लेन–देन कम होने के कारण कम मात्रा में होंगे। इसी प्रकार यदि साझेदारी फर्म है अथवा कंपनी है तो डेटा की मात्रा ज्यादा होगी।

लेखांकन के लिये डेटाबेस का प्रारूप (Structure of Accounting database)

कम्प्यूरीकृत एवं कम्प्यूटर पर आधारित लेखांकन सूचना प्रणाली में डेटा का भंडारण के लिए स्पष्ट डेटा–संरचनाओं की आवश्यकता लेखा के लिए किया जाता है। जैसा कि स्पष्ट कर चुके हैं, डेटाबेस का प्रयोग लेखा संबंधी डेटा के भण्डारण के लिए किया जाता है। डेटाबेस (लेखांकन के लिए) के प्रारूप की प्रक्रिया की शुरूआत वास्तविकता से (लेखांकन की वास्तविकता) होती है जो डेटा प्रारूप की अवधारणा तत्त्वों के रूप में व्यक्त की जाती है।

(i) वास्तविकता (Reality) : यह वास्तविक रूप से सांसारिक स्थिति के कुछ पहलूओं को प्रदर्शित करती है, जिसके लिये डेटाबेस का प्रारूप तैयार किया जाता है। लेखांकन के संदर्भ में, यह लेखांकन की वास्तविकता ही है, जिसे संपूर्ण वर्णन सहित व्यक्त किया जाता है। एक संस्था के वास्तविक लेन–देन को निम्न प्रकार से समझा जा सकता है।

- एक संस्था के लेखांकन लेन–देन को प्रमाणक के द्वारा दस्तावेजित किया जाता है।
- प्रत्येक प्रमाणक की एक क्रम संख्या होती है जो कि '01' से प्रारम्भ होती है, साथ ही यह संकेत करती है कि वह लेखांकन काल का प्रथम प्रमाणक है। आदान–प्रदान की दस्तावेजित करने के लिए मात्र एक साधारण प्रमाणक का प्रयोग किया जाता है।
- प्रत्येक प्रमाणक पर लेन–देन की तिथि, खाता संख्या, कोड के साथ आय–व्यय दोनों प्रकार की प्रविष्टियों का प्रयोग किया जाता है।
- प्रत्येक प्रमाणक लेखांकन लेन–देन की राशि व प्रकथन को प्रदर्शित करता है।
- सहायक दस्तावेज जैसे–बिल, प्राप्ति, संविदा आदि भी लेखांकन प्रमाणक के साथ संलग्न किये जाते है।
- प्रत्येक लेखांकन एक निश्चित कर्मचारी द्वारा तैयार किया जाता है और दूसरे कर्मचारी द्वारा अधिकृत किया जाता है।

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

– प्रत्येक लेखांकन एक लेख प्रकार में वर्गीकृत होता है– व्यय, आय, परिसम्पत्तियाँ और देनदारियाँ।

(ii) **ईन्टीटी संबंध प्रारूप (Entity Relationship)** : यह औपचारिक रूप से सचित्र प्रस्तुतीकरण सहित ब्लू प्रिंट है, जिसमें वास्तविकता के वर्णन को प्रस्तुत करने के लिए ईन्टीटी संबंध मॉडल का प्रयोग किया है। प्रमाणकों व खातों का संबंध होता है। उदाहरणार्थ प्रमाणक व खाता एक दूसरे से दो प्रकार से जुड़े हुए है – प्रमाणक में लाभ खाता व जमा खाता दोनों होते है। मॉडल में ये संदर्भ गुणों के बजाय सुस्पष्ट संबंधों से निरूपित होते है।

(iii) **संबंधपरक डेटा मॉडल (Relationship Data Model)** : यह मॉडल डेटाबेस के संबंधों को समूह के रूप में दर्शाता है जिसके द्वारा ईन्टीटी संबंध के प्रारूप को अंतर पारस्परिक डेटा सारणियों में बदलाव करके डेटा की क्रमबद्धता एवं विश्वसनीयता को सुनिश्चित करता है। जब कभी एक ईन्टीटी प्रकार (जैसे प्रमाणक) के एक गुण (जैसे पूँजी खाता) एवं एक दूसरे ईन्टीटी प्रकार (जैसे खाते) के मध्य संबंध होता है तो उन्हें संबंध समूह कहते हैं। दो या दो से अधिक ईन्टीटी प्रकारों के संबंध यह प्रदर्शित करते है कि संबंध तत्त्वों के मध्य आपसी संबंध है। जैसे प्रमाणक व खाता एक–दूसरे से दो प्रकार से जुड़े हुए हैं – प्रमाणक में लाभ खाता व पूँजी खाता दोनों होते है।

(iv) **प्रसामान्यक (Normalisation)** – डेटा के संचय प्रारूप में दोहरे, अनुपयोगी एवं अशुद्ध डेटा को हटाने के लिए प्रसामान्यक प्रक्रिया का प्रयोग किया जाता है।

डेटा प्रक्रम चक्र (Data Processing Cycle)

कम्प्यूटरीकृत लेखांकन प्रक्रिया में एक खाते के लेन–देन के डेटा को पहचानना, संचय और उसे पुनः प्राप्त करना शामिल है। इसके लिए जरूरत है एक ऐसी प्रक्रिया को जो प्रमाणकों की डेटा संबंधी विषय वस्तु का भण्डारण इस तरह से करें कि आवश्यकतानुरूप उसे पुनः प्राप्त किया जा सकें। इसको लेखांकन के लिए उपयुक्त डेटा बेस का प्रारूप तैयार कर प्राप्त किया जा सकता है। इस प्रकार के डेटा बेस में आन्तरिक रूप से जुड़ी डेटा सूची, जो इस प्रकार से व्यवस्थित होती है कि डेटों के सामंजस्य व अखंडता को सुनिश्चित किया जा सके। डेटा बेस प्रारूप की गतिशील को समझने से पहले डेटा संसाधन चक्र को लेखांकन के संदर्भ में समझाना चाहिए। लेखांकन डेटा वे डेटा है जो स्रोत प्रपत्रों से निकाले जाते है, तथा जिसकी सहायता से प्रमाणक तैयार किए जाते है। यह डेटा एक निश्चित प्रक्रिया के माध्यम से प्रयुक्त किये जाते है। इस प्रक्रिया के क्रम को डेटा प्रक्रम चक्र कहते है। इसमें आँकड़ों का संग्रहण, वर्गीकरण, संबंध तथा गणना इस प्रकार से संबंधित होती है, जिससे तुरन्त निर्णय लेने में अथवा किसी भी प्रकार की सूचना लेने में आसानी रहती है। वित्तीय कथन में सूचना विभिन्न स्तरों से रूपान्तरित होकर अंतिम क्रम में प्रस्तुत होती है। ये स्तर निम्न प्रकार है –

(i) **तथ्यों के स्रोत** – लेखांकन के लिए सर्वप्रथम प्रमाणकों को तैयार किया जाता है। जिससे कि लेखांकन प्रक्रिया क्रमबद्ध तरीके से हो सके। इन्हें ही तथ्यों के स्रोत (Source Document) भी कहते है। इन प्रमाणकों में लेखांकन से संबंधित सभी सूचनाएँ उपलब्ध होती है।

(ii) **आँकड़ों को प्रविष्ट करना** – प्रमाणकों में उपलब्ध लेखांकन आँकड़ों को कम्प्यूटर के भण्डारण युक्ति (Storage Device) में प्रविष्ट करेंगे। डेटा प्रविष्टि प्रपत्र इस प्रकार प्रारूपित किया जाता है कि वह भौतिक प्रमाणक के समान हो। डेटा प्रारूप को तैयार करने के लिए प्रक्रिया सामग्री का उपयोग किया जाता है। जो कि कम्प्यूटर के मॉनिटर पर दिखाई पड़ता है। तथा उसे देखकर डेटा को प्रविष्ट किया जाता है।

(iii) **आँकड़ों का भण्डारण** – आँकड़ों का भण्डारण करने के लिए सर्वप्रथम एक ऐसी संरचना की आवश्यकता होती है। जिसमें खाते की प्रकृति का संकेताक्षर, खाते का नाम तथा खाते के वर्ग का संकेताक्षर लिखना पड़ता है। आँकड़ों का भण्डारण आँकड़ा संचय का ही भाग होता है। आँकड़ों भण्डारण का प्रारूप इस प्रकार है –

कोड का प्रयोग	नाम	खाता वर्ग

चित्र 5 : आँकड़ों भण्डारण का प्रारूप

उपरोक्त रिक्त डेटा अभिलेख का प्रयोग में खाते का कोड, खाते का नाम और खाता वर्ग संबंधी मदों के निवेश के लिए किया जाता है। जैसा कि नीचे स्पष्ट किया गया है :

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

कोड	नाम	प्रकार
120001	पूँजी खाता	4
150001	क्रय खाता	1
160001	विक्रय खाता	3
170001	संपत्ति खाता	2
180001	दायित्व खाता	5

चित्र 6 : खातों का प्रकार

काल्पनिक तौर पर, वर्ग प्रकार–4 देनदारियों और 1 व्ययों 3 विक्रय को, 2 संपत्ति को एवं 5 दायित्व को अंकित करती है। लेखांकन के लिये डेटा भण्डारण संरचना (जिसे आंकड़ा सूची भी कहते है) की उत्पत्ति डेटा बेस संरचना के भाग के रूप में होती है।

(i) डेटा रूपांतरण : संकलित डेटा में आवश्यक बदलाव करके अंतिम रिपोर्ट तैयार की जाती है। इस प्रकार के रूपांतरित डेटा अलग से संकलित हो सकते है और उनका प्रयोग करके अन्तिम रिपोर्ट बनायी जा सकती है। वैकल्पिक तौर पर, रूपान्तरित डेटा को रिपोर्ट के रूप में प्रस्तुत किया जा सकता है।

(ii) डेटा का निर्गम : रूपांतरित डेटा के प्रयोग से बही खाता, तलपट आदि लेखांकन प्रतिवेदनों को पूर्व प्रतिरूपित प्रारूप के अनुसार प्राप्त किया जा सकता है।

लेखांकन के ईन्टीटी एवं गुण

1. **खातों के प्रकार** : यह एक अवधारणा पूर्व ईन्टीटी है जो लेखांकन प्रणाली के विभिन्न प्रकार के लेखाओं को व्यक्त करने के लिये है। वर्ग (ID) एक खाता प्रकार का ईन्टीटी लक्षण है, जिसके द्वारा खातों के वर्गीकरण को पहचाना जाता है।

2. **खाता** : खाता एक अवधारणापूर्व ईन्टीटी है जो कि विभिन्न खातों के वर्गीकरण की पहचान के लिए होती है। नाम, लक्षण खाते के नाम को व्यक्त करता हैं, तथा खाते के प्रकार को ऊपर की तरह व्यक्त करता है।

क्र.सं.	इकाई का प्रकार (Entity Type)	गुण (Attributes)
1.	लेखों के प्रकार (Accounts Type)	वर्ग श्रेणी (Category-ID) वर्गीकरण।
2.	खाते (Accounts)	कोड, नाम, प्रकार।
3.	कर्मचारी (Emloyees)	कर्मचारी श्रेणी (ID), प्रथम नाम, मध्य नाम, अंतिम नाम, सुपर श्रेणी (ID)
4.	प्रमाणक (Voucher)	संख्या, दिनांक, आय–व्यय, जमा–नाम, खाता, विवरण किसके, द्वारा बनाया गया, किसने अधिकृत किया।
5.	सहायक दस्तावेज (Support Document)	क्रम संख्या, दिनांक, नाम।

चित्र 7 : लेखांकन इकाई के गुण

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

3. **कर्मचारी** : कर्मचारी एक भौतिक ईन्टीटी है जिसके द्वारा विभिन्न प्रकार के कर्मचारियों को जो लेखांकन प्रणाली से किसी भी तरह से संबंध है जिसे यह व्यक्त करता है। कर्मचारी ID से किसी भी कर्मचारी को पहचाना जा सकता है, जिसे कर्मचारी के प्रथम, नाम, मध्यम नाम, अंतिम नाम को व्यक्त करता है। सुपर आई.डी. कर्मचारी के अधिकारी को पहचानों को व्यक्त करता है।

4. **प्रमाणक** : यह एक ईन्टीटी है जो कि विभिन्न प्रकार के लेन–देन के डेटों को संरचना के रूप में उपलब्ध कराता है।

5. **सहायता दस्तावेज** : यह एक सत्य है जो कि विभिन्न प्रकार के सहायक दस्तावेजों को व्यक्त करता है जो कि किसी खाता के लेन–देन के प्रमाणक के साथ संलग्न किया जाता है।

6. **तिथि** : क्रम संख्या गुणों में संलग्न सहायक दस्तावेज को क्रम संख्या को व्यक्त करती है। दस्तावेज तिथि को व्यक्त करता है और नाम लेख के नाम को व्यक्त करता हैं जो कि प्रमाणक के साथ संलग्न रहता है।

7. **ईन्टीटी प्रकार व ईन्टीटी समूह** : सत्य प्रकार वह समूह है जिसकी उनके गुणों के संदर्भ में एक निश्चित व्याख्या होती है। प्रत्येक ईन्टीटी प्रकार को एक नाम दिया जाता है। जिससे उसे पहचाना जाता है। ईन्टीटी प्रकार के गुणों को डेटा बेस में वर्णित किया जाता है। किसी ईन्टीटी के गुणों का मूल्य जो ईन्टीटी प्रकार से सहित है उसे ईन्टीटी उल्लेख कहते है। उदाहरण (11001 पूँजी खाता 4) एक खाते का ईन्टीटी जिसका कि कोड 11001, नाम – पूँजी खाता और प्रकार – 4)

   ईन्टीटी समूह : एक विशेष प्रकार के ईन्टीटी में निहित सभी प्रकार के ईन्टीटी उल्लेखों का समूह है। ऐसे समूह को व्यक्त करने के लिए गुणों का समूह होता है जिसे 'विवरणिका' कहते है। एक विशेष प्रकार के ईन्टीटी प्रकार से संबंधित ईन्टीटी समूह उसी समूह गुणों को आपस में बांधता है। एक विशेष प्रकार के ईन्टीटीों का संग्रह जो कि ईन्टीटीों के समूह में होता है ईन्टीटी प्रकार का विस्तार कहलाता है। उदारण :

कोड	नाम	प्रकार

चित्र 8 : ईन्टीटी प्रकार की संरचना

ईन्टीटी समूह : यह ईन्टीटी प्रकार 'खाता' की खास ईन्टीटी उदाहरणों का समूह है।

ईन्टीटी प्रकार की संरचना या ईन्टीटी प्रकार का विस्तार

11001	पूँजी खाता	4
221019	जैन क.	4
221020	जयराम ब्रदर्स	4

चित्र 9 : ईन्टीटी प्रकार और ईन्टीटी समूह

पहचानक (ईन्टीटी प्रकार के महत्वपूर्ण गुणों)

लगभग सभी ईन्टीटी प्रकार एक तरह के गुण है जिसका कि एक अलग मूल्य होता है। जिससे ईन्टीटी उल्लेख की पहचान होती है। उदाहरणार्थ, रोल नं. विद्यार्थी ईन्टीटी प्रकार का गुण है जिसका कि अपना एक मूल्य होता है। जिसके द्वारा खास विद्यार्थी की पहचान होती है। इसी प्रकार ईन्टीटी प्रकार खातों का मुख्य गुण का कोड है जिससे कि इसके डेटा मूल्यों को अलग किया जाता है।

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

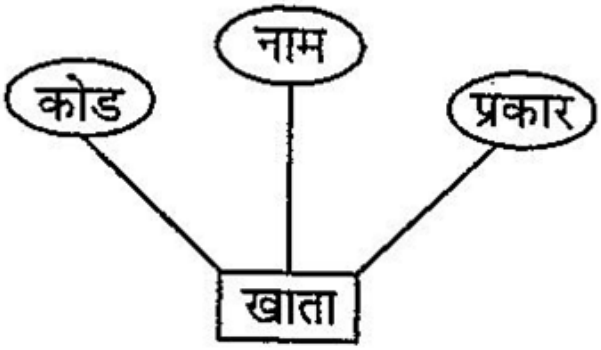

चित्र 10 : खाता प्रकार का कोड उसके मुख्य गुण

कभी–कभी दो या दो से अधिक ऐसे गुण एक साथ मिलकर इस तरह के विभिन्न मूल्यों की रचना करते है। उदाहरणार्थ किसी स्कूल को एक कक्षा की विभिन्न उपकक्षाओं में विद्यार्थियों के ईन्टीटी प्रकार हेतु गुणों की संयुक्त कुंजी (उपकक्षा एवं रोल नं.) की आवश्यकता होती है। वस्तु किसी भी रूप में एक समय पर मुख्य गुणों के समान (same) मूल्य वाले किन्हीं दो ईन्टीटी उल्लेख की अनुमति नहीं देता है। कुछ ईन्टीटी एक से अधिक मुख्य गुण वाले हो सकते हे। वह ईन्टीटी प्रकार जिसका कोई भी मुख्य गुण नहीं होता है। उसे कमजोर ईन्टीटी कहते है।

लेखांकन डेटाबेस (Accounting Database)

लेखांकन में लेन–देन के खाते सिर्फ चार वर्गों में ही विभाजित किऐ जाते है। व्यय आय, संपत्ति एवं दायित्व। लेखांकन के नियमों एवं प्रक्रिया के अनुसार सर्वप्रथम एक लेन–देन की जरनल प्रविष्टि की जाती है। उसके बाद उसकी खातों में खतौनी (posting) की जाती है, इन खातों के शेष को तलपट में हस्तांतरित किया जाता है। तलपठ से लाभ–हानि खाता और चिट्ठे को बनाया जाता है। उदाहरण के लिए यदि पाँच हजार रूपये का माल सुनील को उधार बेचा गया है तो जरनल प्रविष्टि को बाऊचर के माध्यम से लिखी जायेगी। जनरल में इसकी प्रविष्टि निम्न प्रकार से होगी।

Sunil A/c Dr To Sales A/c (goods sold to sunil)	5000	 5000

चित्र 11 : जनरल की प्रविष्टि

वाउचर प्रविष्टि

मैसर्स दिनेश एण्ड कम्पनी
लेन–देन प्रमाणक

प्रमाणक सं. 05	:	दिनांक 10 अप्रेल, 2015
नाम खाता 69001	:	सुनील खाता
जमा खाता 69002	:	बिक्री खाता
राशि रू. में	:	5,00,000

द्वारा अधिकृत – विवेक द्वारा तैयार – रवि

चित्र 12 : एक नाम एक जमा

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

इस प्रकार की लेखा प्रविष्टि को एक जमा बाऊचर द्वारा भी प्रस्तुत किया जा सकता है।

इस लेन–देन के लिये एक जमा प्रमाणक का प्रयोग करते हुए निम्न प्रकार से लिखा जा सकता है जो कि एक से अधिक जमा राशि को एक व्यय के साथ लिखने में सक्षम है। इसे नीचे दर्शाया गया है :

जमा प्रमाणक

प्रमाणक सं. 05 — दिनांक : 01 अप्रेल, 2016

नाम खाता : 69001 — बैंक खाता : मैसर्स आइडियल कम्प्यूटर्स

जमा खाता

क्रम संख्या	कोड	खाते का नाम	राशि	प्रकथन
1.	69002	बिक्री खाता	5,00,001	माल बेचा
		कुल योग	5,00,001	

अधिकृत द्वारा : विवेक — तैयार किया : रवि

चित्र 13 : अनेक आय एवं एक देय हेतु नमूना रसीद

उदाहरण : अब निम्नलिखित लेन–देन को देखे :

मै. एस.के. एण्ड सन्स ने 5 अप्रैल, 2016 को 10000 रू. की मशीन, मै. पी.के. एण्ड सन्स से खरीदी, 500 रू. मैसर्स शर्मा ट्रांसपोर्ट को माल भाड़ा दिया। इस लेन–देन में अनेक नाम खाते तथा एक जमा खाता सम्मिलित है। इस लेन–देन हेतु प्रयुक्त नाम प्रमाणक निम्न रूप से तैयार किया जाएगा।

देय प्रमाणक

प्रमाणक सं.: 10 — दिनांक : 05 अप्रेल, 2016

नाम खाता : 642001 — बैंक खाता : एस.के. एण्ड सन्स

व्यय खाता

क्रम संख्या	कोड	खाते का नाम	राशि	आख्यान
1.	711004	क्रय	10000	पी.के. एण्ड सन्स से क्रय
2.	711034	ढूलाई प्रविष्टि	500	मैसर्स शर्मा ट्रांसपोर्ट को माल भाड़े का भुगतान किया गया
		कुल योग	10501	

अधिकृत द्वारा : विवेक — तैयार किया : रवि

चित्र 14 : एक जमा मद और बहु नाम मद के नाम प्रमाणक का प्रारूप

लेखांकन डेटाबेस को एक उदाहरण द्वारा समझाया जा सकता है। एक लेखांकन प्रक्रिया में लेन–देन का रिकार्ड करने के लिए संबंधित बाऊचर्स सहायक दस्तावेज, खाता (ledger) एवं पूर्व से समायोजित, कर्मचारियों, देनदार, लेनदानों, बैंक एवं संबंधित व्यक्तियों का डेटा बेस होता है। इस डेटा बेस से लेन–देन को लेखों में रिकार्ड करना एवं संबंधित प्रतिवेदनों को निकालना होता है। जैसे यदि राकेश को माल उधार बेचा गया है, तो राकेश जो कि देनदार है, उसका नाम देनदारों की सूची में पूर्व में ही डेटाबेस के माध्यम से स्टोर किया जायेगा। इसी प्रकार विक्रय जो की आय का स्रोत है, इसका भी डेटा बनाया जायेगा। विक्रय का प्रभाव स्टॉक पर पड़ेगा इसलिए स्टॉक का डेटा भी, डेटाबेस की संरचना में पूर्व में ही स्टोर कर दिया जायेगा। इसे निम्नलिखित लेन–देन द्वारा समझा जा सकता है।

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

तिथि	लेन–देन
1 जून, 2016	₹1,00,000 द्वारा व्यापार शुरू किया गया
1 जून, 2016	₹25,000 द्वारा बैंक में जमा कराऐं गए।
5 जून, 2016	₹10,000 का माल खरीदा गया।
10 जून,2016	₹8,000 का माल खरीदा गया, जिसका भुगतान चैक क्रमांक 89654 के द्वारा किया गया।
15 जून, 2016	₹10,000 कर्मचारियों को वेतन दिया गया।
30 जून, 2016	दिनेश से माल खरीदा ₹ 10000
30 जून, 2016	₹ 5,000 का भाडा चेक क्रमांक 053842 द्वारा किया गया।

डेटाबेस की संरचना निम्न प्रकार से की जायेगी।

नाम	पिता का नाम	आई.डी.	विभाग आई.डी.
सुनील क्रान्ती	दिनेश रोहित	S002 K002	MK08
रमेश विकास योगेश	विमल शर्मा सुरेश दोशी गोपाल सिंह	R001 V001 Y003	FN08

चित्र 15 : कर्मचारियों का डेटाबेस

बाऊचर संख्या	देय	रूपये ₹	दिनांक	जमा	लेन–देन
005	65001	1,00,000	1 जून, 2016	63002	व्यापार शुरू किया गया।
006	64001	25,000	1 जून, 2016	65001	बैंक में जमा कराये गए।
007	66001	10,000	5 जून, 2016	66001	माल खरीदा गया।
008	66001	8,000	10 जून, 2016	64002	माल खरीदा गया।
009	67001	10,000	15 जून, 2016	64002	वेतन दिया गया।
010	66001	10,000	30 जून, 2016	67002	दिनेश से माल खरीदा
011	69001	5000	30 जून, 2016	64001	भाड़े का भुगतान

चित्र 16 : वाऊचर्स (प्रमाणंक)

बाऊचर संख्या	क्रम संख्या	सहायक का विवरण
006	1	बैंक की नगद जमा की रसीद
007	1	खरीद बीजक (invoice)
008	1	खरीद बीजक
009	1	प्राप्त रजिस्टर पर हस्ताक्षर
010	1	खरीद बीजक

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

कोड	नाम	प्रकार आई.डी.
65001	नकद लेखा	3
63002	पूंजी खाता	4
64001	बैंक खाता	3
66001	खरीद खाता	1
67001	वेतन खाता	1
67002	दिनेश खाता	2
69001	भाड़ा खाता	1

चित्र 17 : खाता

प्रकार आई.डी.	वर्ग
1	खर्च
2	दायित्व
3	सम्पत्ति
4	पूंजी
5	आय

चित्र 18 : खातों के प्रकार

उपर्युक्त सभी प्रकार के लेनदेन को कोडिंग दी गई है। इसमें खातों के प्रकार का वर्गीकरण कर कोड प्रदान किए गए है।

डी.बी.एम.एस. से हानि (Disadvantages of DBMS) :

1. **अधिक लागत (High Cost)** : डी.बी.एम.एस. कम्प्यूटर प्रोग्रामिंग पर आधारित है। इस प्रोग्राम को बनाने में लागत उत्पन्न होती है। यह लागत सामान्य लागत के अतिरिक्त होती है। यदि एक संस्था इस प्रणाली को लागू करना चाहती है, तो उसे इसके प्रतिष्ठापन (installation) एवं रख–रखाव पर खर्चा वहन करना होता है। हर संस्था के लिए यह लागत वहन करना मुश्किल होता है।

2. **कुशल कर्मचारियों की आवश्यकता (Skilled Employees)** : डी.बी.एम.एस. पर कार्य करने के लिए एवं इसका संचालन करने के लिए पेशेवर एवं दक्ष कार्मिकों की आवश्यकता होती है। वर्तमान में कार्यरत कर्मचारियों को डी.बी.एम. एस. पर कार्य करने के लिए प्रशिक्षण की अनिवार्यता रहती है।

3. **जटिलता (Complex)** : डी.बी.एम.एस. का मुख्य आधार डेटाबेस है, जो डेटा को संग्रहण, भण्डारण एवं परिचालन करता है। कभी–कभी ऐसे आंकड़ों का भी संग्रहण किया जाता है, जिसकी आवश्यकता नहीं होती है। जिसमें विभिन्न प्रकार के उपयोगकर्ताओं को डेटा उपयोग में परेशानी हो सकती है।

इस सॉफ्टवेयर के माध्यम से डेटा बेस मैनेजमेन्ट से संबंधित प्रक्रियाओं का नियंत्रित किया जाता है। इस सॉफ्टवेयर प्रणाली से डेटा का संचयन, नियंत्रण, हस्तांतरण आदि की प्रक्रिया का प्रभावी रूप से क्रियान्वन किया जाता है। एक्सेस तत्वों का प्रयोग विभिन्न प्रकार के व्यावसायिक संगठनों के लिए, उनकी व्यवसाय की सुविधानुसार उपलब्ध कराता है। इन तत्वों का निर्माण उपयोगकर्ता के उद्देश्यों को ध्यान में रखकर किया गया है। एम.एस. एक्सेस के तत्वों को निम्न प्रकार से परिभाषित किया गया है । इन्हें अभिलक्ष्य वर्ग (objects) के माध्यम से बताया गया है।

एम. एस. एक्सेस के तत्व (Elements of MS Excess)

(i) **टेबल** : यह डेटाबेस के प्रारूप को डाटा सारणी में बदलने का कार्य करता है। इनमें उनसे संबंधित फिल्ड का नाम, डाटा प्रकार उनकी विशेषताऐ होती हैं।

(ii) **क्वेरी** : स्ट्रेक्चर्ड क्वेरी लैंगवेज (SQL) के क्वेरी कथनों के साथ अथवा इसके बिना उपयोगकर्ता को इंटरफेस की सहायता से सारणी को परिभाषित, डाटा भंडारण और डाटा तथा सूचना की पुनः प्राप्ति करते हैं।

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

(iii) **प्रपत्र** : इसके द्वारा यूजर इंटरफेस का निर्माण किया जाता है। यह उपयोगकर्ता को बेक एण्ड डेटाबेस के उपयोग करने में सहायक होते है।

(iv) **प्रतिवेदन** : इस अभिलक्ष्य वर्ग द्वारा विभिन्न प्रकार की प्रतिवेदन को तैयार किया जाता है। इनका सूचना स्रोत सारणी, क्वेरी या इन दोनों पर ही आधरित होता है। ऐसे प्रतिवेदनों को एक्सेस में अन्तिम उपयोगकर्ता की आवश्यकतानुसार बनाऐं जाते है।

(v) **पृष्ठ** : इस अभिलक्ष्य वर्ग द्वारा डाटा अभिगत पृष्ठों को बनाने के लिये जिसे इंटरनेट के प्रयोग द्वारा किसी भी संगठन की वेबसाइट पर उपयोग के लिए भेजा जा सकता है अथवा ई–मेल द्वारा कुछ उपयोगकर्ताओं के नेटवर्क पर भी भेजा जा सकता है।

(vi) **मेक्रो प्रोग्राम्स** : मेक्रो प्रोग्राम्स में अलग निर्देशों का प्रयोग करने वाले छोटे कार्यों की सूची होती है, ये कार्यों के एक यूनिट के रूप में होते हैं।

(vii) **प्रतिरूपक** : ये किसी भी ऐपलिकेशन के लिये मुख्य आकार होते हैं और प्रारूप इनकी सहायता से (प्रोग्रामिंग) निर्देशों के समूह को तैयार कर सकता है। एक्सेस के माध्यम से ऐसे ही प्रतिरूपकों को तैयार किया जाता है।

प्रत्येक अभिलक्ष्य वर्ग के डाटाबेस फाईल (किसी नाम में) को प्रसारित एम.वी.डी. के साथ करते हैं। जब भी यह फाईल खोली जाती है तो एक डाटाबेस विन्डो (Windows) प्रदर्शित होता है। इनमें बाई ओर से तैयार सभी उपरोक्त अभिलक्ष्य वर्गों के साथ खुलता है। जब कभी भी विशेष अभिलक्ष्य वर्गो को बनाया जाता है तो ये दाईं ओर से इस विन्डो पर प्रत्येक अभिलक्ष्य क्लास (वर्ग) के सामने आ जाते हैं।

एम.एस. एक्सेस की क्षमताएँ (Efficiencies of MS Excess)

एक्सेस में विशेष उपयोगिताऐं होती है, जिसके कारण किसी भी प्रकार के संगठन में यह लागू किया जा सकता है। इसके प्रमुख कार्य निम्न प्रकार से है :

- व्यवस्थित भण्डारण करना।
- डाटा के मध्य जटिल संबंधों को प्रतिनिधित्व करना।
- डाटाबेस तक अनाधिकृत उपयोगकर्ताओं पंहुच पर रोक लगाता है।
- स्ट्रक्चर्ड क्वेरी लेंगुऐज डाटा के साथ अथवा बिना इसके शीध्र पुनः प्राप्ति की अनुमति देता है।
- एक से ज्यादा उपयोगकर्ताओं के मध्य इंटरफेस बनाना।
- डेटा शेयर करता है।
- डाटा और सूचना के बहुदर्शकों को बढ़ावा देता हैं।

एक्सेस में डेटाबेस

जब अव्यवस्थित डाटा से एक नया डाटाबेस तैयार किया जाता है वो डाटाबेस अभिलक्ष्य पर उनकी विशेषतायें संबंध पर पूर्ण नियंत्रण होता है। बिना नया डाटाबेस बनाने के लिये (यह एक्सेंस में स्वतः प्रक्रिया है) निम्नलिखित पदों का पालन करना जरूरी है :

- खाली एक्सेस डाटाबेस चुनने के लिये एक्सेस विन्डो खोलें और ओ.के. की बटन को क्लिक करें।
- एक्सेस फाईल डाटाबेस डाइलॉग बाक्स दिखायेगा जिसमें डिजाइनर को फाईल का नाम और डेटाबेस का नाम लिखना होगा इसके उपरान्त क्रिएट बटन अवश्य क्लिक करना चाहिए।
- यदि कार्य पेन (Task Pane) नहीं खुलता है तो मेन्यू सूची से फाईल में जायें ओर 'न्यू' पर क्लिक करें ताकि नया डाटाबेस बन सके। नीचे चित्र में एस.एस. एक्सेस कि फाईल बनाने कि विण्डो प्रदर्शित किया गया है।

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

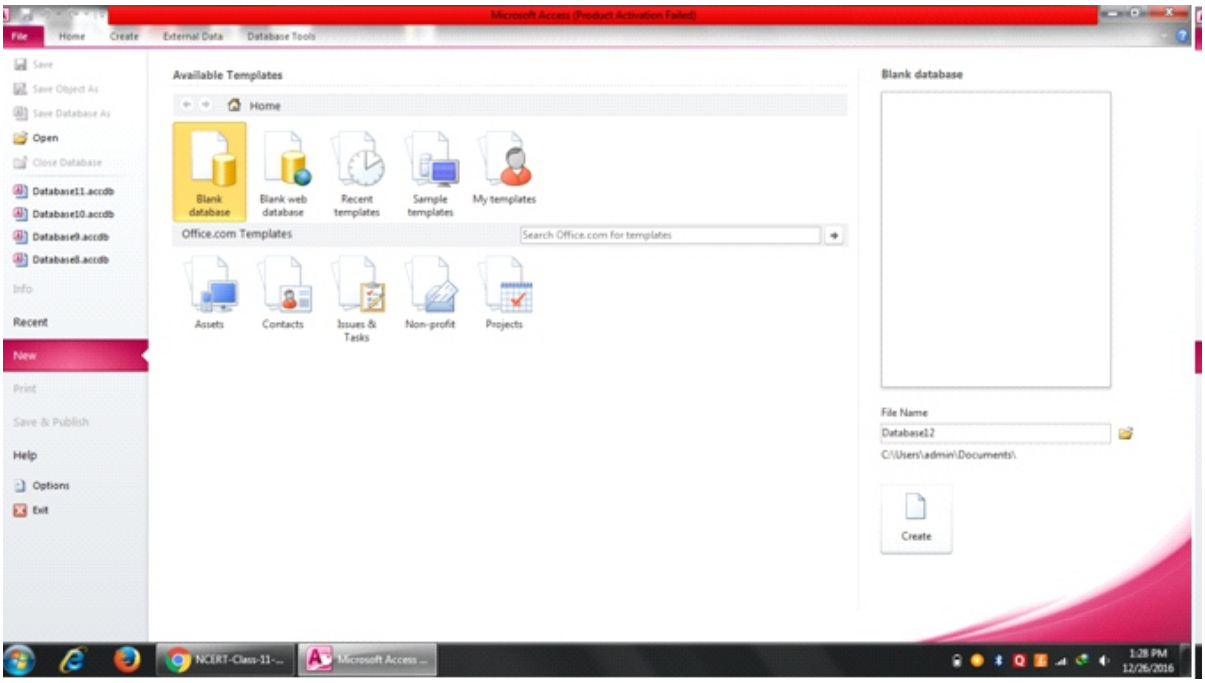

चित्र 19 : नई फाईल बनाने कि विण्डो

एक्सेस में सारणी बनाना

एक्सेस में सारणी बनाने के लिये निम्नलिखित पदों तथा सारणी उद्देश्य के घटकों को समझना आवश्यक है। एक्सेस में सारणी पर क्लिक करें, प्रारूप के अनुसार बनायी गयी सारणी (Table by Design View) पर दो बार क्लिक करें फलतः इस पर सारणी विन्डो आयेगी जिसके ऊपर वाले भाग में तीन कालमः क्षेत्रों (Fields) का नाम, डाटा प्रकार और विश्लेषण होते हैं। ये बनायी जाने वाली सारणी की योजना तथा उसकी विवरणिका को परिभाषित करते हैं। इसकी प्रत्येक लाइन बनायी जाने वाली सारणी के कॉलम के अनुरूप होती है। किसी भी सारणी के दो प्रमुख अंग – क्षेत्रों का नाम और डाटा प्रकार होते हैं। नीचे दिये गये चित्र में फाईल विण्डों को दर्शाया गया है।

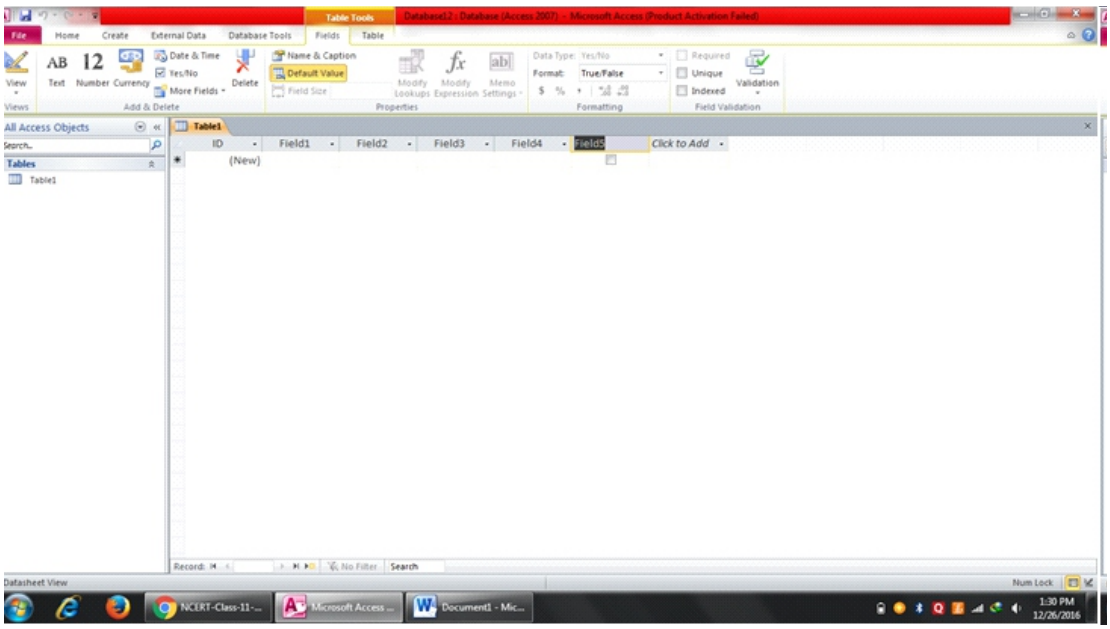

चित्र 20 : एम.एस. एक्सेस में फाईल का निर्माण

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

फिल्ड का नाम : यह सारणी के कॉलम का नाम होता है। कॉलम का नाम उसके सटे हुए वर्ण के अनुसार होना चाहिए। फिल्ड नाम के कॉलम को पहचानने के लिये होता है जिसके बाद कॉलम का डेटा प्रकार आता है प्रारूप तैयार करने वाले की इच्छानुसार भी कॉलम का विवरण दे सकते हैं। एक बार डेटा परिभाषित होने के उपरान्त प्रारूप तैयार करने वाला व्यक्ति सारणी विन्डो के नीचे वाले भाग में प्रत्येक कॉलम के बारे में दोबारा वर्णित कर सकता है।

डेटा प्रकार का प्रकार (Data Type) : एक्सेस विभिन्न डाटा प्रकारों की सहायता करता है जिनका विवरण नीचे दिया गया है:

टेक्स्ट (Text): यह अनेक वर्णों, शब्दों या संख्याओं के लिये प्रयोग किया जाता है। जिन्हें अंकगणितीय कॉलम में प्रयोग नहीं किया जा सकता है।

मेमो (Memo) : इसका प्रयोग कमेन्टस को भंडारित करने के लिये होता है, वर्ण को समायोजित कर सकता है। लेकिन इस डाटा प्रकार के क्षेत्रा से डाटा अभिलेख की छटनी या संशोधित का भण्डारण नहीं हो सकता है।

संख्या : इसे संख्या के भण्डारण के लिये प्रयोग मे लाया जाता है ये पूर्ण संख्या (–32768 से 32767) बड़ी पूर्ण संख्याएं (–2, 147, 483, 648 से 2, 147, 883, 647), बाहर (0–255), एकल (दशमलव तक के मान की कुछ सीमा तक का भण्डारण), डबल (दशमलव वाली बड़ी संख्याओं को ठीक प्रकार से भण्डारित करने के लिये किया जाता है।

तिथि / समय : इसका प्रयोग तिथि, समय अथवा दोनों के समूह का भण्डारण करने के लिये किया जाता है।

मुद्रा : इसका प्रयोग डॉलर, रूपया और अन्य देशों की मुद्राओं की संख्या के रूप में भण्डारित करने के लिये किया जाता है।

स्वतः संख्या : यह संख्यात्मक डाटा होता है जिसे एक्सेस द्वारा स्वतः ही प्रविष्ट कर दिया जाता है। इसका उस स्थिति में विशेष महत्व होता है जबकि सारणी में विभिन्न क्षेत्र अथवा संयुक्त क्षेत्रों के समुच्चय विशिष्ट रूप से नहीं होते हैं।

हाईपरलिंक : यह इन्टरनेट के माध्यम से डेटा को भेजने का कार्य करता है।

स्ट्रेक्चर्ड क्वेरी लेंगवेज (Structured Query Language)

जब डेटाबेस में किसी डेटा को हटाना (delete) जोड़ना (Add) बदलाव (Change) करना हो तो क्वेरी के माध्यम से किया जाता है। क्वेरी का उपयोग कर डेटा बेस से संबंधित किसी भी प्रकार के विशेष प्रश्नों का उत्तर प्राप्त किया जा सकता है। डेटाबेस टेबल को देखकर, उसमें से आवश्यकता अनुसार डेटा को सीधे निकालना संभव नहीं होता है। क्वेरी के द्वारा डेटा को फिल्टर किया जा सकता है, उनकी गणना की जा सकती है एवं उसका संक्षिप्तीकरण किया जा सकता है। क्वेरी के माध्यम से डेटा प्रबन्धन के कार्यों को स्वचलित (Automatic) किया जा सकता है। डेटा में किसी भी प्रकार के बदलाव के पहले, डेटा को रिव्यू किया जा सकता है। यह कार्य स्ट्रक्चर्ड क्वेरी लेंगुऐज के माध्यम से किया जाता है, जो एम.एस. एक्सस की एक कार्य प्रणाली है। व्यापारिक डेटाबेस की सफलता का प्रमुख कारण उसकी SQL भाषा है। इसके कारण SQL को संबंध डेटाबेस का मानक माना गया है। इसके फलस्वरूप, उपयोगकर्ता को डेटाबेस के अनुप्रयोग हेतु एक डेटा बेस में दूसरे डेटाबेस तक जाने की बहुत कम चिंता करनी होती है। उपयोगकर्ता को SQL के प्रयोग का दूसरा लाभ एक डेटा बेस के अनुप्रयोग के प्रारूप में कथन (Statement) लिख सकते हैं, इन डेटों को पुनः प्राप्त कर सकते है। ये डेटा दो या दो से अधिक संबंध (DBMS) को बिना बदले उस डेटाबेस की उपभाषा (SQL), जो कि एक विशेष SQL के मानक द्वारा दोनों DBMS को सहायता करता है।

SQL नाम के लिये भाषा प्रश्नोतरी की संरचना, जिसको SEQUEL (Structured English Query Language) के नाम से जाना जाता है। आई.बी.एम. अनुसंधान केन्द्र पर एक इंटरफेस के प्रायोगिक डेटा बेस संबंध प्रणाली, जिसे SYSTEM-R के द्वारा जाना जाता है, के प्रारूप को तैयार कर उसे लागू किया गया।

उपयोगकर्ता द्वारा आवश्यक सूचना को डेटाबेस मं से क्रमबद्ध आदेशों द्वारा प्राप्त कराने वाली भाषा को स्ट्रक्चर्ड क्वेरी लैंग्वेज कहते है। इसके द्वारा आसानी से डेटाबेस में से एक कमाण्ड के माध्यम से सूचना प्राप्त, डिलीट या एड की जा सकती हैं, तथा इस लैंग्वेज की सहायता से ऐसे उपयोगकर्ता जो कम्प्यूटर का उपयोग नहीं करना जानते हैं वह भी आसानी से सूचना प्राप्त कर सकते है।

SQL (एस.क्यू.ऐल) के कार्य

- डेटा मेनिपुलेशन के कार्य करता है।
- क्वेरी को प्रदर्शित करता है।
- रिकार्ड्स को इनसर्ट करता है।

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

– रिकार्ड्स को डिलिट कर सकता है।

– रिकार्ड्स को अपडेट कर सकता है।

सारणी (Table)

डेटाबेस में डेटा सारणी (Tables) के माध्यम से तैयार की जाती है। एक डेटाबेस में एक से ज्यादा सारणी हो सकती है।

Customer ID	Name	Address	City	Pincode

चित्र 21 : सारणी का प्रारूप

SQL की आधारभूत प्रश्नोतरी (Basic Queries in SQL) डेटा प्रश्नोतरी भाषा (Data Query language) जो कि SQL (Stand Query language) का उप समुच्चय के लिये SELECT FROM WHERE का प्रयोग निम्न प्रकार से किया गया है।

SELECT (विशिष्ट) इसका प्रयोग विशेष डेटा या सूचना से अपेक्षित प्रश्नों के उत्तर के लिये किया जाता है।

FROM : इसका प्रयोग एक विशेष डेटा स्रोत से प्रश्नों के उत्तर के लिये किया जाता है। प्रयोग की गयी प्रश्नोत्तरी डेटा सारणी में भी हो सकती है।

WHERE: इसका अर्थ विशेष परिस्थिति से होता है। जिसका कि प्रयोग SELECT में आपेक्षित सूचनाओं के डेटा से चुनने में किया जाता है।

SQL विवरण (SQL Select) Statement : Select स्टेटमेन्ट का उपयोग डेटा को डेटा बेस से चुनने में काम आता है। उदाहरण के लिए यदि किसी डेटा को एक टेबल से चुनना है तो उसके लिए सिन्टेस कमाण्ड होगा।

SELECT Coloum - NAME, Colum - NAME Form Table - NAME

SQL द्वारा डेटा प्राप्त करने की विधि

Employee			
Employee ID	First Name	Last Name	Address
001	Anil	Sharma	25, Adarsh Nagar
002	Sunil	Khandelwal	8, Amal Park
003	Rajat	Sharma	10, Apex Avenue
004	Sunder	Agarwal	7, Smart Nagar

चित्र 22 : कर्मचारियों की सारणी

उपर्युक्त सारणी में यदि हमें ऐसे व्यक्ति का सम्पूर्ण रिकार्ड चाहिये जिसका आईडी 002 है तो SQL Command होगी।

SELECT

FROM Employee (जहाँ Employee सारणी का नाम है।)

WHERE Employee ID = 002

डेटाबेस की भाषा के व्यापक रूप से संमकों की परिभाषा क्वेरी, अपडेशन होता है। इसके अलावा ये उपयोगकर्ता के आदेशों पर कार्य करता है।

बहुत सी कम्प्यूटर क्रमादेश की भाषा एक अच्छे मेजबान भाषा की तरह SQL के सभी कथनों की सहायता करता है। इस संदर्भ में, डेटा बेस प्रोग्रामिंग के संदर्भ में इसे एक उपभाषा की तरह प्रयोग में लाया जा सकता है।

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

पाठ का सारांश

यह सूचना प्रणाली विभिन्न प्रकार के डेटा के माध्यम से प्रबंधन के निर्णयों हेतु सूचनाऐं प्रदान करती है। इन सभी डेटा को व्यवस्थित कर उन्हें आवश्यकता अनुसार सूचनाओं में परिवर्तित करने का कार्य डेटाबेस मैनेजमेन्ट सिस्टम के माध्यम से किया जाता है। यह प्रणाली सह–सम्बन्धित आंकड़ों को उपयोग करने के लिए बनाए गए प्रोग्राम्स का एक समूह है। इसका उद्देश्य सॉफ्टवेयर के माध्यम से डेटा को एकत्र कर आवश्कतानुसार उसके प्रबंधन के कार्य को करना है।

डेटाबेस मैनेजमेन्ट सिस्टम का प्रमुख कार्य विभिन्न प्रकार के आँकड़ों की जानकारी को उपयुक्त माध्यम से संग्रहण कर पुनः प्राप्त (access) करने का तरीका प्रदान करता है। जैसे एक स्कूल में पढ़ने वाले विद्यार्थियों की जानकारियों को निम्न प्रकार से संग्रहित कि जा सकती है।

डेटा बेस को हटाने, संसोधन करे एवं उन्हें पुनः प्राप्त करने के लिए एस.क्यू.एल का प्रयोग किया जाता है। एस.क्यू.एल. आदेशित भाषा का प्रयोग कर उपयोग करता को उसके निर्देशानुसार सूचनाऐं प्रदान करती है।

अभ्यासार्थ प्रश्न (Questions for Exercise)

बहुचयनात्मक प्रश्न :

1. समंक (Data) है–
   (अ) सूचना (ब) तथ्यों का संकलन
   (स) अ तथा ब दोनों (द) उपर्युक्त में से कोई नहीं

2. सूचना है–
   (अ) समंकों का सार्थक रूप (ब) समंकों का मूल (Textual)
   (स) समंक (द) उपर्युक्त में से कोई नहीं

3. प्रोसेस (Process) की गई सूचनाओं का परिणाम है–
   (अ) आगत (Input) (ब) निर्गत (Output)
   (स) उपर्युक्त दोनों (द) उपर्युक्त में से कोई नहीं

4. निम्न में क्वेरी तैयार करने की विधि है–
   (अ) SQL विधि (ब) JHL विधि
   (स) RST विधि (द) DBH विधि

5. DBMS का पूरा नाम हैं–
   (अ) डाटाबेस मार्कअप सिस्टम (ब) डाटाबेस मैनेजमेण्ट सिस्टिम
   (स) डाटाबेस मैनेजमेण्ट सैक्शन (द) उपर्युक्त में से कोई नहीं

6. डाटाबेस की हानियां है–
   (अ) डेटा का पुनरावर्तन (ब) डेटा की असंगति होना
   (स) डेटा प्राप्त करने में कठिनाई (द) उपर्युक्त में से कोई नहीं

उत्तर–

1	2	3	4	5	6
ब	अ	ब	अ	ब	द

अति लघुत्तरात्मक प्रश्न :

1. लेखांकन की दृष्टि से डेटा प्रोसेसिंग साईकल को समझाईये।
2. लेखांकन डेटा से आप क्या समझते है।

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

3. डेटाबेस मैनेजमेन्ट प्रणाली को विस्तारपूर्वक समझाइये।
4. उदाहरण सहित निम्नलिखित शब्दों को समझाईये
   a. एन्टीटी
   b. ऐट्रीब्यूट
   c. रिलेश्नल
5. एन्टीटी रिलेशनशीप मॉडल को समझाईये।
6. डेटाबेस से आप क्या समझते है? पुरानी फाईल हैंडलिंग सिस्टम से इसकी तुलना कीजिए।

लघुत्तरात्मक प्रश्न :

1. डेटा किसे कहते है?
2. डेटा प्रोसेसिंग क्या होती है?
3. स्ट्रक्चर्ड क्वेरी लेंगुऐज (SQL) क्या होती है?
4. इ.आर मॉडल क्या होता है?
5. संबंध से आप क्या क्या समझते है?
6. सूचना किसे कहते है?
7. क्वेरी किसे कहते है?

Downloaded from https:// www.studiestoday.com